पुस्तक की क्रियाकर्मों

अन्य

के

एक्क्लेसिया

और

परिचर्य्या

सम्बन्धी समक्रामेनटों

और

प्रार्थना साधारण

LONDON
SOCIETY FOR PROMOTING CHRISTIAN KNOWLEDGE

इस पुस्तक का सूचीपत्र ॥

भूमिका ॥

एक्लीसियों में की उपासना के विषय में।

सच है कि नियम कितनी ही स्पष्टता से क्यों न बताया गया होवे तौ भी उस के व्यवहार के विषय में सन्देह हो सकते हैं। इसलिये इस पुस्तक के विधानों के विषय में भी सन्देह हो सकते हैं कि उन का क्या अर्थ समझा जावे और उन का अनुष्ठान किस प्रकार से होवे और इन विषयों में भिन्न भिन्न मत भी हो सकते हैं। सो जिन लोगों में ऐसा विभेद वा ऐसे सन्देह होवें सो उस दियोकेसि के बिशप से निर्णय चाहे और बिशप ऐसा निर्णय करे जिस से वे सन्देह मिटें और वे विभेद शान्त होवें। केवल निर्णय ऐसा होवे कि इस पुस्तक की किसी बात के विरुद्ध न होवे। और यदि बिशप को भी सन्देह होवे तो वह आर्च् बिशप से उसका निवारण करालेवे ॥

यह जो ठहराया गया है कि एक्लीसिया में सब कुछ देशभाषा ही में कहा और गाया जावे जिस्तें मण्डली लाभ उठावे इस का तात्पर्य्य यह नहीं कि जब लोग प्रातःकाल और संध्याकाल की प्रार्थना अपने घर में कहते हैं तो वे उसे किसी भाषा में जो वे आप समझते हैं नहीं कह सकते ॥

सब प्रीस्टों और डीकनों को चाहिये कि यदि रोग वा और किसी अनिवार्य्य कारण से रोके न जावें तो प्रतिदिन प्रातःकाल और संध्या काल की प्रार्थना को चाहे अपने घर में चाहे एक्लीसिया में कहा करें।

और जो पालक किसी परोकिया की मुख्य एक्लीसिया में वा और किसी एक्लीसिया में उपासना का काम करता है सो जब घर पर है और किसी योग्य कारण से रोका न जावे तो उसी एक्लीसिया में जिस में वह उपासना करता है प्रातःकाल और संध्याकाल की प्रार्थना को कहा करे और उस से यथोचित समय पहिले एक घंटा बजवाया

भूमिका ॥

करे जिस्तें मण्डली के लोग ईश्वर का बचन सुनने ओर उस के साथ प्रार्थना करने के लिये आ सकें ॥

स्तोत्रसंहिता के पढ़ने के क्रम के विषय में ।

स्तोत्रसंहिता प्रतिमास एक बार सम्पूर्ण पढ़ी जावे जैसा उस में प्रातःकाल ओर संध्याकाल की प्रार्थना के लिये विधि लिखी ऊई है । परन्तु फेब्रुवरी में वह केवल २८ वें वा २९ वें दिन लों पढ़ा जावे ॥

जनुवरी मार्च मई जूलै ओगुस्त अक्तोबर ओर डिसेम्बर मासों में ३१ । ३१ दिन होते हैं इसलिये यह विधि है कि जो स्तोत्र उन मासों में के तीसवें दिन पढ़े जाते हैं सोई एकतीसवें दिन फिर पढ़े जावें ऐसा कि स्तोत्रसंहिता दूसरे मांस के पहिले दिन फिर आरम्भ किई जावे ॥

११९ वां स्तोत्र २२ खण्डों में विभाग हुआ है ओर ऐसा लम्बा है कि सब एक बार नहीं पढ़ा जा सकता है इसलिये यह विधि है कि एक एक बार उस के चार वा पांच खण्डों से अधिक न पढ़े जावें ॥

प्रत्येक स्तोत्र वा ११९ वें स्तोत्र के प्रत्येक उक्तखण्ड के अन्त में यह गीत कहा वा गाया जावे ।

पिता की ओर पुत्र की । ओर पवित्रात्मा की महिमा होवे ॥

जैसी आदि में थी ओर अब है । ओर सदा वरन युगान युग रहेगी — आमेन् ॥

स्तोत्रसंहिता व्यतिरिक्त पवित्र शास्त्र के अवशिष्ट भाग के पढ़ने के क्रम के विषय में ।

पुरानी बाचा प्रातःकाल ओर संध्याकाल की प्रार्थना के पहिले पाठ के लिये ठहराई गई है ऐसा कि वह प्रायः सम्पूर्ण प्रतिवर्ष एक बार पढ़ी जावे जैसा कि जंत्री में विधि लिखी ऊई है ॥

भूमिका ॥

नई बाचा प्रातःकाल और संध्याकाल की प्रार्थना के दूसरे पाठ के लिये ठहराई गई है और प्रति वर्ष दो बार क्रम से पढ़ी जावे अर्थात् प्रातःकाल में एक बार और संध्याकाल में एक बार (यह नियुक्त पत्रियों और सुसमाचारों के व्यतिरिक्त होवे)। परन्तु प्रकटीकरण में से केवल कई एक पाठ बरस के अन्त ही में पढ़ने के लिये नियुक्त हुए हैं। और कितने विशेष तेवहारों के लिये भी कितने विशेष पाठ उसी में से नियुक्त हुए हैं ॥

यदि कोई जानने चाहे कि आज कौन पाठ पढ़े जावेंगे तो वह इस नीचे लिखी हुई यंची में मास के दिन को खोजे तब वह उसी के साम्हने यह लिखा हुआ पावेगा कि प्रातःकाल और संध्याकाल की प्रार्थना के पाठों के लिये कौन अध्याय अथवा अध्यायों के अंश पढ़ना चाहिये। केवल चल तेवहारों के पाठ यंची में नहीं मिलेंगे और अचल तेवहारों के पाठ भी यंची में नहीं लिखे गये पर उन का स्थान शून्य छोड़ा गया है सो दोनों प्रकार के तेवहारों के पाठ विशेष पाठों के चक्र में पाये जावेंगे ॥

यदि एक ही उपासना स्थान में संध्याकाल की प्रार्थना किसी इतवार को दो बार कही जावे तो दूसरी बार सेवक दूसरे पाठ के लिये चार सुसमाचारों में से कोई अध्याय अथवा उन में से कोई पाठ जो यंची में ठहराया गया अपनी समझ के अनुसार पढ़ सकता है। परन्तु जिस इतवार की संध्याकाल की प्रार्थना के लिये दो दूसरे पाठ विकल्प की रीति से यंची में ठहराये गये हैं उस में पढ़ना चाहिये ॥

विशेष विशेष अवसरों में यदि बिशप की अनुमति होवे तो यंची में नियुक्त किये हुए पाठों की सन्ती दूसरे पाठ जिन में वह भी सम्मत होवे पढ़े जा सकते हैं ॥

यह भी स्मरण रहे कि जिस किसी दिन के लिये विशेष स्तोत्र वा पाठ नियुक्त हुए हैं उस दिन स्तोत्रसंहिता और यंची में जो स्तोत्र

भूमिका ॥

और पाठ नियुक्त हैं सो यदि उन विशेष स्तोत्रों और पाठों से भिन्न होवें तो छोड़ दिये जावें ॥

यह भी जान रक्खो कि विशेष अवसरों में जब बिशप आज्ञा दे तब स्तोत्रसंहिता में जो स्तोत्र ठहराये गये हैं उन की सन्ती दूसरे स्तोत्र जिन में वह सम्मत होवे काम में आसकते हैं ॥

यदि कोई तेवहार जिस के लिये चक्र में विशेष पाठ नियुक्त हुए हैं इन चार इतवारों में से किसी में पड़े अर्थात् आगमन के पहिले इतवार वा पुनरूत्थान के दिन वा पेन्तेकोष्ठा वा त्रय के इतवार को पड़े तो वेही पाठ जो उस इतवार के लिये नियुक्त हैं पढे जावें। परन्तु यदि तेवहार किसी दूसरे इतवार में पडे तो चाहे वे पाठ जो इतवार के लिये ठहराये गये हैं चाहे वे जो तेवहार के लिये ठहराये गये हैं जैसा सेवक अच्छा समझे पढ़े जा सकते हैं ॥

यह भी स्मरण रहे कि किसी इतवार के लिये जो प्रार्थना पत्री और सुसमाचार नियुक्त हुए हैं सो उस के अनन्तर के समस्त सप्ताह में भी जब इस पुस्तक में दूसरी आज्ञा न होवे काम में आवें ॥

———:o:———

विशेष पाठ ॥

जो बरस भर के इतवारों और दूसरे तेवहारों में प्रातःकाल और संध्याकाल की प्रार्थना में पढ़े जावें ॥

इतवारों के विशेष पाठ ॥

	प्रातःकाल	संध्याकाल
आगमन के इतवार ।		
पहिला	यशया १	यशया २ वा यशया ४।२
दूसरा	५	११।११ लों वा २४
तीसरा	२५	२६ वा २८। ५ – १६
चौथा	३०।२७ लों	३२ वा ३३ । २ – २३
जन्मदिन के उपरांत के इतवार		
पहिला	३५	३८ वा ४०
दूसरा	४२	४३ वा ४४
एपिफनिया के उपरांतके इतवार		
पहिला	५१	५२।१३ – ५३।१२ वा ५४
दूसरा	५५	५७ वा ६१
तीसरा	६२	६५ वा ६६
चौथा	इय्योब २७	इय्योब २८ वा २६
पांचवां	कहावतें १	कहावतें ३ वा ८
छठवां	६	११ वा १५
सेपत्वागेसिमा	उत्पत्ति १।१-२।४	उत्पत्ति २।४ वा इय्योब ३८
दूसरा पाठ	प्रकटीकरण २१।६लों	प्रकटीकरण २१।६ – २२ । ६

विशेष पाठ ॥

	प्रात:काल	संध्याकाल
सेप्तागेसिमा	उत्पत्ति ३	उत्पत्ति ६ वा ८
सेक्सागेसिमा	९।२० लों	१२ वा १३
क्वद्रागेसिमा ।		
पहिला इतवार	१९।१२-३०	२२।२०लों वा २३
दूसरा	२७।४१ लों	२८ वा ३२
तीसरा	३७	३९ वा ४०
चौथा	४२	४३ वा ४५
पांचवां	निर्गम ३	निर्गम ५ वा ६।१४ लों
छठवां	९	१० वा ११
दूसरा पाठ	मत्तय २६	लूका १९।२८ वा लूका २०।९-२१
पुनरूत्थान का दिन	निर्गम १२।२९ लों	निर्गम १२।२९ वा निर्गम १४
दूसरा पाठ	प्रकटीकरण १।१०-१९	योहानान् २०।११ – १९ वा प्रकटीकरण ५
पुनरूत्थान के अनन्तर के इतवार		
पहिला	गिनती १६।३६ लों	गिनती १६।३६ वा गिनती २७।१२लों
दूसरा पाठ	कोरिंथियों १५।२६लों	योहानान् २०।२४ – ३०
दूसरा	गिनती २०।१४ लों	गिनती २०।१४ – २१।१० वा २१।१०
तीसरा	गिनती २२	गिनती २३ वा गिनती २४
चौथा	द्वितीय व्यवस्था ४।२३ लों	द्वितीय व्यवस्था ४।२३ – ४१ वा ५
पांचवां	६	९ वा १७

विशेष पाठ ॥

	प्रातःकाल	संध्याकाल
स्वर्गारोहण के अनन्तर का इतवार	३०	३४ वा योशू १
	द्वितीय व्यवस्था	द्वितीय व्यवस्था
पेन्तेकोष्टा	१६।१८ लों	यशया ११ वा यहिजकेल् ३६।२५
दूसरा पाठ	रोमियों ८।१८ लों	गलातियों ५।१६ वा कर्म १८।२४-१९।२१
त्रयका इतवार	यशया ६।११ लों	उत्पत्ति १८ वा उत्पत्ति १।१-२।४
दूसरा पाठ	प्रकटीकरण १।३ लों	एफेसियों ४।१७ लों वा मत्तय ३
त्रय के उपरांत के इतवार।		
पहिला	योशू ३।७ – ४।१५	योशू ५।१३ – ६।२१ वा योशू २४
दूसरा	न्यायी ४	न्यायी ५ वा न्यायी ६।११
तीसरा	१ शमूएल् २।२७ लों	१ शमूएल् ३ वा १ शमूएल् ४।१६ लों
चौथा	१२	१३ वा रूत् १
पांचवां	१५।२४ लों	१६ वा १७
छठवां	२ शमूएल् १	२ शमूएल् १२।२४ लों वा २ शमूएल् १८
सातवां	१ परिशिष्ट २१	१ परिशिष्ट २२ वा १ परिशिष्ट २८।२१ लों
आठवां	१६।३ – २६	२ परिशिष्ट १ वा १ राजा ३
नवां	१ राजा १०।२५ लों	१ राजा ११।१५ लों वा ११।२६
दशवां	१२	१३ वा १७
ग्यारहवां	१८	१६ वा २१
बारहवां	२२।४१ लों	२ राजा २।१६ लों वा २ राजा ४।८-३८
तेरहवां	२ राजा ५	६।२४ लों वा ७

विशेष पाठ ॥

	प्रातःकाल	संध्याकाल
चय के उपरान्त का इतवार		
चौदहवां	२ राजा ६	२ राजा १०।३२ लों वा १३
पंद्रहवां	१८	१६ वा २३।३१ लों
सोलहवां	२ परिशिष्ट २६	नेहेम्या १।१-२।६ वा नेहेम्या ८
सत्तरहवां	यिर्मया ५	यिर्मया २२ वा यिर्मया ३५
अठारहवां	३६	यहिज्केल् २ वा यहिज्केल् १३।१७ लों
उन्नीसवां	यहिज्केल् १४	१८ वा २४।१५
बीसवां	३४	३७ वा दानिय्येल् १
एक्कीसवां	दानिय्यल् ३	दानिय्येल् ४ वा ५
बाईसवां	६	७।६ वा १२
तेईसवां	होशे १४	योएल् २।२१ वा योएल् ३।६
चौबीसवां	आमोस् ३	आमोस् ५ वा आमोस् ६
पचीसवां	मीका ४।१-५।८	मीका ६ वा मीका ७
छब्बीसवां	हबक्कूक् २	हबक्कूक् ३ वा सपन्या ३
सताईसवां	उपदेशक ११ और १२	हग्गै २।१० लों वा मलाकी ३ और ४

स्मरण रहे कि इस चक्र में जो पाठ चय के उपरांत के सताईसवें इतवार के लिये ठहराये गये हैं सो सदा उस इतवार को जो आगमन से पहिला होता है पढ़े जावें।

—:o:—

तेवहारों के विशेष पाठ ॥

	प्रातःकाल	संध्याकाल
पवित्र अंद्रिया	यशया ५४	यशया ६५।१७ लों
दूसरा पाठ	योहानान् १।३५-४२	योहानान् १२।२०—४२
पवित्र तोमा	इय्योब् ४२।७ लों	यशया ३५
दूसरा पाठ	योहानान् २०।१९-२४	योहानान् १४।८ लों
ख्रीष्टकाजन्मदिन	यशया ९।८ लों	यशया ७।१०—१७
दूसरा पाठ	लूका २।१५ लों	तित ३।४—९
पवित्र स्तेफ़न	उत्पत्ति ४।११ लों	२ परिशिष्ट २४।१५—२३
दूसरा पाठ	कर्म्म ६।	कर्म्म ८।९ लों
पवित्रयोहानान् सुसमाचारी	निर्गम ३३।९	यशया ६
दूसरा पाठ	योहानान् १३।२३-३६	प्रकटीकरण १
निर्दोषोंका दिन	यिर्मया ३१।१८लों	बारूक ४।२१—३१
परिच्छेद	उत्पत्ति १७।९	द्वितीय व्यवस्था १०।१२
दूसरा पाठ	रोमियों २।१७	कोलोस्सियों २।८—१८
एपिफ़निया	यशया ६०	यशया ४९।१३—२४
दूसरा पाठ	लूका ३।१५-२३	योहानान् २।१२ लों
पवित्र पौलका परिवर्त्तन	यशया ४९।१३ लों	यिर्मया १।११ लों
दूसरा पाठ	गलतियों १।११	कर्म २६।२१ लों
कुमारीमिर्यम् का शुद्धीकरण	निर्गम १३।१७ लों	हाग्गै २।१० लों
पवित्रमत्तित्त्या	१ शमूएल् २।२७-३६	यशया २२।१५
हमारीस्वामिनी का समाचारपाना	उत्पत्ति ३।१६ लों	यशया ५२।७—१३
क्वद्रागेसिमा	यशया ५८।१३ लों	योना ३
दूसरा पाठ	मार्क २।१८-२३	इब्रियों १२।३—१९

तेवहारों के विशेष पाठ ॥

	प्रातःकाल	संध्याकाल	
पुनरूत्थान से पहिले सोमवार	विलाप १।१५ लों	विलाप	२।१३
दूसरा पाठ	योहानान्१४।१५लों	योहानान्	१४।१५
पुनरूत्थान से पहिले मंगल	विलाप ३।२४ लों	विलाप	३।३४
दूसरा पाठ	योहानान्१५।१४लों	योहानान्	१५।१४
पुनरूत्थान से पहिले बुध	विलाप ४।२१ लों	दानिय्येल्	९।२०
दूसरा पाठ	योहानान्१६।१६लों	योहानान्	१६।१६
पुनरूत्थान से पहिले बृहस्पतिवार	होशे १३।१५ लों	होशे १४	
दूसरा पाठ	योहानान् १७	योहानान्	१३।३६ लों
शुभ शुक्रवार	उत्पत्ति २२।२० लों	यशया	५२।१३—५३।१२
दूसरा पाठ	योहानान् १८	१ पेत्र २	
पुनरूत्थान का जागरण	जकर्या ६	होशे	५।८—६।४
दूसरा पाठ	लूका २३।५०	रोमियों	६।१४ लों
पुनरूत्थान के अनन्तरसोमवार	निर्गम १५।२२ लों	कान्तिका	२।१०
दूसरा पाठ	लूका २४।१३ लों	मत्तय	२८।१० लों
पुनरूत्थान के अनन्तर मंगल	२ राजा १३।१४-२२ लों	यहिज्केल्	३७।१५ लों
दूसरा पाठ	योहानान् २१।१५लों	योहानान्	२१।१५

तेवहारों के विशेष पाठ ॥

	प्रातःकाल	संध्याकाल	
पवित्र मार्क	यशया ६२।६	यहिज्केल्	१।१५ लों
पवित्रफिलिप्प और याकोब्	यशया ६१।	जकर्या	४
दूसरा पाठ	योहानान् १।४३		
स्वर्गारोहण का दिन	दानिय्येल् ७।९-१५	२ राजा	२।१६ लों
दूसरा पाठ	लूका २४।४४	इब्रियों	४
पेन्तेकोष्टा के अनन्तर सोमवार	उत्पत्ति ११।१० लों	गिनती	११।१६-३१
दूसरा पाठ	१कोरिंथियों१२।१४लों	१कोरिंथियों	१२।२७-१३।१३
पेन्तेकोष्टा के अनन्तर मंगल	योएल् २।२१	मीका	४।८ लों
दूसरा पाठ	१ थेस्सलोनीकियों-५।१२-२४	१ योहानान्	४।१४ लों
पवित्रबर्णबूआ	द्वितीय व्यवस्था-३३।१२ लों	नहूम्	१
दूसरा पाठ	कर्म्म ४।३१	कर्म्म	१४।८
पवित्र योहानान् बप्तिस्ता	मलाकी ३।७ लों	मलाकी	४
दूसरा पाठ	मत्तय २	मत्तय	१४।१३ लों
पवित्र पेत्र	यहिज्केल् ३।४-१५	जकर्या	३
दूसरा पाठ	योहानान् २१।१५-२३	कर्म्म	४।८-२३
पवित्र याकोब्	२ राजा १।१६ लों	यिर्मेया	२६।८-१६
दूसरा पाठ	लूका ६।५१-५७		
पवित्र बर्त्तल्मै	उत्पत्ति २८।१०-१८	द्वितीय व्यवस्था	१८।१५

तेवहारों के विशेष पाठ ॥

	प्रातःकाल	संध्याकाल	
पवित्र मत्तय	१ राजा १६।१५	१ परिशिष्ट	२६।२० लों
पवित्र मीकायल्	उत्पत्ति ३२।	दानिय्येल्	१०।४
दूसरा पाठ	कर्म्म १३।५-१८	प्रकटी करण	१४।१४
पवित्र लूका	यशया ५५	सीरह	३८।१५ लों
पवित्र शिमोन् और यहूदा।	यशया २८।६-१७	यिर्मया	३।१२-१६
समस्त पवित्र	ज्ञान ३।१० लों	ज्ञान	५।१७ लों
दूसरा पाठ	इब्रियों ११।३३-१२।७	प्रकटी करण	१६।१७ लों

-----:o:-----

विशेष दिनों के लिये विशेष स्तोत्र ॥

	प्रातःकाल	संध्याकाल
खीष्टका जन्मदिन	१९।४५।८५	८६।११०।१३२
क्वाद्रागेसिमा	६।२२।२८	१०२।१३०।१४३
शुभ शुक्रवार	२२।४०।५४	६९।८८
पुनरुत्थान का-दिन	२।५७।१११	११३।११४।११८
स्वर्गारोहण का-दिन	८।१५।२१	२४।४७।१०८
पेन्ते कोष्टा	४८।६८	१०४।१४५

——:o:——

यन्त्री पाठों के चक्र समेत ॥

जनुवरी में एकतीस दिन होते हैं

		प्रातःकाल की प्रार्थना		संध्याकाल की प्रार्थना	
		पहिलापाठ	दूसरा पाठ	पहिलापाठ	दूसरा पाठ
१	परिच्छेद	उत्पत्ति १।१३	रोमियों २।१७	द्विती: व्यवस्था१०।१२	कालोस्सियों २।८-१८
२		१।२० लों	मत्तय १।१८	उत्पत्ति १।२०-२।४	कर्म्म १
३		२।४	२	३।२० लों	२।२२ लों
४		३।२०-४।१६	३	४।१६	२।२२
५		५।२८ लों	४।२३लों	५।२८-६।९	३
६	एपिफनिया	यशया ६०	लूका ३।१५-२३	यशया ४९।१३-२४	योहानान् २।१२ लों
७		उत्पत्ति ६।९	मत्तय ४।२३-५।१३	उत्पत्ति ७	कर्म्म ४।३२ लों
८	लूक्यानप्रीष्ट औ साक्षी	८	५।१३-३३	९।२० लों	४।३२-५।१७
९		११।१०लों	५।३३	१२	५।१७
१०		१३	६।१९ लों	१४	६
११		१५	६।१९-७।७	१६	७।३५ लों
१२		१७।२३ लों	७।७	१८।१७ लों	७।३५-८।५
१३	ह्लिलर्य्यविशप औ अंगीकारी	१८।१७	८।१८ लों	१९।१२-३०	८।५-२६
१४		२०	८।१८	२१।२२लों	८।२६
१५		२१।३३-२२। २०	९।१८लों	२३	९।२३ लों

१६		२४।२६लों	६।१८	२४।२६-५२	६।२३
१७		२४।५२	१०।२४ लों	२५।५-१६	१०।२४ लों
१८	प्रिस्काकुमारी औ साक्षी	२५।१६	१०।२४	२६।१८लों	१०।२४
१९		२६।१८	११	२७। ० लों	११
२०	फब्यान्‌बिशप औ साक्षो	२७।.०	१२।२२ लों	२८	१२
२१	अग्नेस कुमारी और साक्षी	२६।२१लों	१२।२२	३१।२५ लों	१३।२६ लों
२२	विंकेन्त्य डीकन औ साक्षी	३१।३६	१३।२४लों	३२।२२लों	१३।२६
२३		३२।२२	१३।२४-५३	३३	१४
२४		३५।२१ लों	१३।५३-१४।१३	३७।१२ लों	१५।३० लों
२५	पवित्र पौलका परिवर्त्तन	यशया ४६।१३ लों	गलतियों १।११	यिर्मया १।११ लों	२६।२१ लों
२६		उत्पत्ति ३७।१२	मत्तय १४।१३	उत्पत्ति ३६	१५।२०-१६।१६
२७		४०	१५।२१ लों	४१।१७ लों	१६।१६
२८		४१।१७-५३	१५।२१	४५।५३-४२।२५	१७।१६ लों
२९		४२।२५	१६।२४ लों	४३।२५ लों	१७।१६
३०		४३।२५-४४।१४	१६।२४-१७।१४	४४।	१८।२४ लों
३१		४५।२५ लों	१७।१४	४५।२५-४६।८	१८।२४-१६।२१

यन्त्री पाठों का चक्र समेत ॥

फेब्रुवरी में अठाईस वा उनतीस दिन होते हैं

		प्रातःकाल की प्रार्थना		संध्याकाल की प्रार्थना	
		पहिला पाठ	दूसरा पाठ	पहिलापाठ	दूसरा पाठ
१	उपवास	उत्पत्ति ४६। २६-४७।१३	मत्तय १८।२१ लों	उत्पत्ति ४७।१३	कर्म्म १६।२१
२	कुमारीमिर्याम्‌का शुद्धी करण	निर्गम १३।१७लों	१८।२१-१६।३	हग्गै २।१० लों	२०।१७ लों
३	ब्लास्य विशप औ साक्षी	उत्पत्ति ४८	१६।३-२७	उत्पत्ति ४६	२०।१७
४		५०	१६।२७-२०।२७	निर्गम १	२१।१७ लों
५	अगथा कुमारी औ साक्षी	निर्गम २	२०।१७	३	२१।१७-३७
६		४।२४ लों	२१।२३लों	४।२७-५।१५	२१।३७-२२।२३
७		५।१५-६।१४	२१।२३	६।२८-७।१४	२२।२३-२३।१२
८		७।१४	२२।१५लों	८।२० लों	२३।१२
९		८।२०-९।१३	२२।१५-४१	९।१३	२४
१०		१०।२१लों	२२।४१-२३।१३	१०।२१-११।१०	२५
११		१२।२१ लों	२३।१३	१२।२१-४३	२६
१२		१२।३३-१३।१७	२४।२६ लों	१३।१७-१४।१०	२७।१८ लों
१३		१[illegible]।१०	२४।२६	१५।[illegible]२ लों	२७।१८
१४	वलेन्तीनविशप और साक्षी	१५।२२-१६।११	२५।३१ लों	१६।११	२८।१७ लों

१५		१७	२५।३१	१८	२८।१७
१६		१६	२६।३१लों	२०।२२लों	रोमियों १
१७		२१।१८लों	२६।३१-५७	२२।२१-२३।१०	२।१७ लों
१८		२३।१४	२६।५७	२४	२।१७
१९		२५।२३ लों	२७।२७ लों	२८।१८ लों	३
२०		२८।२९-४२	२७।२७-५७	२९।३५-३०।११	४
२१		३१	२७।५७	३२।१५लों	५
२२		३३।१५	२८	३३।१२ लों	६
२३	उपवास	३३।१२-३४।१०	मार्क १।२१ लों	३४।१०-२७	७
२४	पवित्र मत्तित्या प्रेरित	१ शमूएल् २।२७।३६	१।२१	यशया २२।१५	८।१८ लों
२५		निर्गम ३४।२७	२।२३ लों	निर्गम ३५।२९-३६।८	८।१८
२६		३९।३०	२।२३-३।१३	४०।१७ लों	९।१९ लों
२७		४०।१७	३।१३	लेवीय व्यवस्था ९।२२-१०।१२	९।१९
२८		लेवीय व्यवस्था १४।२३ लों	४।३५ लों	१९।२ . लों	१०
२९		१९।१९ लों	मत्तय ७	१९।३०-२०।९	१२

यन्त्री पाठों का चक्र समेत ॥

मार्च में एकतीस दिन होते हैं

		प्रातःकाल की प्रार्थना		संध्याकाल की प्रार्थना	
		पहिला पाठ	दूसरा पाठ	पहिला पाठ	दूसरा पाठ
१	दावीद् आर्च्-बिशप	लेवीय व्यवस्था २५।१८लों	मार्क ४।३५-५।२१	लेवीय व्यवस्था २५।१८-४४	रोमियों ११।२५ लों
२	चाद् बिशप	२६।२१ लों	५।२१	२६।२१	११।२५
३		गिनती ६	६।१४ लों	गिनती ६। १५-१०।११	१२
४		१०।११	६।१४-३०	११।२४ लों	१३
५		११।२४	६।३०	१२	१४।१-१५।८
६		१३।१७	७।२४ लों	१४।२६लों	१५।८
७	पेर्पेत्वा साक्षी	१४।२६	७।२४-८।१०	१६।२३लों	१६
८		१६।२३	८।१०-६।२	१७	१ कोरिंथियों १।२६ लों
९		२०।१४ लों	९।२-३०	२०।१४	१।२६-२।१६
१०		२१।१० लों	९।३०	२१।१०-३२	३
११		२२।२२ लों	१०।३२ लों	२२।२२	४।१८ लों
१२	ग्रेगोर्य्य महान् बिशप	२३	१०।३२	२४	४।१८-५।१३
१३		२५	११।२७ लों	२७।१२	६
१४		द्वितीयव्यवस्था १।१९ लों	११।२७-१२।१३	द्वितीयव्यवस्था १।१९	७।२५ लों
१५		२।२६ लों	१२।१३-३५	२।२६-३।१८	७।२५

१६		३।१८	१२।३५-१३।१४	४।२५ लौं	८
१७		४।२५-४१	१३।१४	५।२२ लौं	९
१८	एड्वर्ड् पछांके साक्सनोंका राजा	५।२२	१४।२७ लौं	६	१०।१-११।२
१९		७।१२ लौं	१४।२७-५३	७।१२	११।२-१७
२०		८	१४।५३	१०।८	११।१७
२१	बनेदिक्त महन्त	११।१८ लौं	१५।४२ लौं	११।१८	१२।२८ लौं
२२		१५।१६ लौं	१५।४२-१६।२०	१७।८	१२।२८-१३।१३
२३		१८।३	लूका १।२६ लौं	२४।५	१४।२० लौं
२४	उपवास	२६	१।२६-४६	२७	१४।२०
२५	कुमारी मिर्याम् का समाचार	उत्पत्ति ३।१६ लौं	१।४६	यशया ५२।७-१३	१५।३५ लौं
२६		द्वितीयव्यवस्था २८।१५ लौं	२।२१ लौं	द्वितीयव्यवस्था २८।१५-४०	१५।३५
२७		२८।४७	२।२१	२६।६	१६
२८		३०	३।२३ लौं	३१।१४ लौं	२ कोरिंथियों १।२३ लौं
२९		३१।१४-३०	४।१६ लौं	३१।३०-३२।४४	१।२३-२।१४
३०		३२।४४	४।१६	३३	२।१४-२।१८
३१		३४	५।१७ लौं	योशू १	४

यन्त्री पाठों के चक्र समेत ॥

एप्रिल में तीस दिन होते हैं

		प्रातःकाल की प्रार्थना		संध्याकाल की प्रार्थना	
		पहिलापाठ	दूसरा पाठ	पहिलापाठ	दूसरा पाठ
१		योशू २	लूका ५।१७	योशू ३	२ कोरिंथियों ५
२		४	६।२० लों	५	६।१-७।२
३	रिचार्ड् बिशप	६	९।२०	७	७।२
४	पवित्र अम्ब्रोस्य बिशप	९।३	७।२४ लों	१०।१६ लों	८
५		२१।४३-२२।११	७।२४	२२।११	९
६		२३	८।२६ लों	२४	१०
७		न्याइयों २	८।२६	न्याइयों ४	११।३० लों
८		५	९।२८ लों	६।२४ लों	११।३०-१२।१४
९		६।२४	९।२८-५१	७	१२।१४-१३।१४
१०		८।३२-९।२५	९।५१-१०।१७	१०	गलतियों १
११		११।२९ लों	१०।१७	११।२९	२
१२		१३	११।२९ लों	१४	३
१३		१५	११।२९	१६	४।२१ लों
१४		रूत् १	१२।३५ लों	रूत् २	४।२१-५।१३
१५		३	१२।३५	४	५।१३
१६		१ शमूएल् १	१३।१८ लों	१ शमूएल् २।२१ लों	६
१७		२।२१	१३।१८	३	एफेसियों १
१८		४	१४।२५	५	२

१९	अल्फेज आर्च बिशप	६	१४।२५-१५। ११	७	३
२०		८	१५।११	९	४।२५ लों
२१		१०	१६	११	४।२५-५।२२
२२		१२	१७।२० लों	१३	५।२२-६।१०
२३	पवित्र गेयोर्ग्य साक्षी	१४।२४ लों	१७।२०	१४।२४-४७	६।१०
२४		१५	१८।३१ लों	१६	फिलिप्पियों १
२५	पवित्र मार्क सुसमाचारी	यशया ६२।३	१८।३१-१९। ११	यहिज्केल १।१५ लों	२
२६		१शमूएल् १७।३१ लों	१९।११-२८	१शमूएल् १७।३१-५५	३
२७		१७।५५-१८। १७	१९।२८	१९	४
२८		२०।१८ लों	२०।२७ लों	२०।१८	कोलोस्सियों १।२१ लों
२९		२१	२०।२७-२१। ५	२२	१।२१-२।८
३०		२३	२१।५	२४।१-२५।२	२।८

यन्त्री पाठों के चक्र समेत ॥

मेई में एकतीस दिन होते हैं।

		प्रातःकाल की प्रार्थना		संध्याकाल की प्रार्थना	
		पहिलापाठ	दूसरापाठ	पहिलापाठ	दूसरा पाठ
१	पवित्र फिलिप्प औ पवित्र याकोब् प्रेरित	यशया ६१	योहानान् १।४३	जकर्य्या ४	कोलोस्सियों ३।१८ लों
२		१ शमूएल् २६	लूका २२।३१ लों	१ शमूएल् २८।३	३।१८-४।७
३	क्रूस की प्राप्ति	३१	२२।३१-५४	२शमूएल् १	४।७
४		२ शमूएल् ३।१७	२२।५४	४	१ थेस्सलो नीकियों १
५		६	२३।२६ लों	७।१८ लों	२
६	पवित्र योहानान् सुसमाचारी लतीनी फाटक के साम्हने	७।१८	२३।२६-५०	६	३
७		११	२३।५०-२४।१३	१२।२४ लों	४
८		१३।३८-१४।२६	लूका।२४।१३	१५।१६ लों	५
९		१५।१६	योहानान् १।२६ लों	१६।१५ लों	२ थेस्सलो-नीकियों १
१०		१६।१५-१७।२४	१।२६	१७।२४-१८।१९	२

		२ शमूएल्	योहानान्	२ शमूएल्	२ थेस्सलोनीकियों
११		१८।१८	२	१६।२४ लों	३
१२		१६।२४	३।२२ लों	२१।१५ लों	१तीमथेय१।१८लों
१३		२२।२४ लों	३।२२	२४	१।१८-२
१४		१ राजा १।२८ लों	४।३१ लों	१ राजा १।२८-४९	३
१५		१ परिशिष्ट २९।१०	४।३१	३	४
१६		१राजा।४।२०	५।२४ लों	५	५
१७		६।१५ लों	५।२४	८।२२ लों	६
१८		८।२२-५४	६।२२ लों	८।५४-९।१०	२ तीमथेय १
१९	डंष्टनआर्च् विशप	१०	६।२२-४१	११।२६ लों	२
२०		११।२६	६।४१	१२।२५ लों	३
२१		१२।२५-१३।११	७।२५ लों	१३।११	४
२२		१४।२१ लों	७।२५	१५।२५-१६।८	तित १
२३		१६।८	८।३१ लों	१७	२
२४		१८।१७ लों	८।३१	१८।१७	३
२५		१९	९।३९ लों	२१	फिलेमोन्
२६	आगुस्तीन आर्च् विशप	२२।४१ लों	९।३९-१०।२२	२ राजा १	इब्रियों १
२७	मान्य बेडा प्रीष्ट	२ राजा २	१०।२२	४।८	२।१-३।७
२८		५	११।१७ लों	६।२४ लों	३।७-४।१४
२९		६।२४	११।१७।०७ लों	७	४।१४-५
३०		८।१६ लों	११।४७-१२।२० लों	९	६
३१		१०।१८ लों	१२।२०	१०।१८	७

यन्त्री पाठों के चक्र समेत ॥

जून में तीस दिन होते हैं।

		प्रातःकाल की प्रार्थना		संध्याकाल की प्रार्थना	
		पहिलापाठ	दूसरापाठ	पहिलापाठ	दूसरा पाठ
१	नीकमेद्य साक्षी	२ राजा १३	योहानान् १३।२१ लों	२ राजा १७।२४ लों	इब्रियों ८
२		१७।२४	१३।२१	२ परिशिष्ट १२	६
३		२ परिशिष्ट १३	१४	१४	१०।१६ लों
४		१५	१५	१६।१।१७।१४	१०।१६
५	बोनिफक्य विशप	१६	१६।१६ लों	२०।३१ लों	११।१७ लों
६		२०।३१-२१।२०	१६।१६	२२	११।१७
७		२३	१७	२४	१२
८		२५	१८।२८ लों	२६ और २७	१३
९		२८	१८।२८	२ राजा १८।६ लों	याकोब् १
१०		२८।३-२१	१६।२५ लों	२ परिशिष्ट ३०।१।३१।२	२
११	पविचबर्णा बूअा प्रेरित और साक्षी	द्विती: व्यवस्था ३३।१२ लों	कर्म्म ४।३१	नहूम् १	कर्म्म १४।८
१२		२ राजा १८।१३	योहानान् १६।२५	२ राजा १६।२० लों	याकोब् ३

		२ राजा	योहानान्	२ राजा	याकोब
१३		१६।२०	२०।१६ लों	२०	४
१४		यशया ३८।९-२१	२०।१६	२ परिशिष्ट ३३	५
१५		२ राजा २२	२१	२ राजा २३।२१ लों	१ पेत्र १।२२लों
१६		२३।२१-२४।८	कर्म्म १	२४।८-२५।८	१।२२-२।११
१७	पवित्रअल्बानसाची	२५।८	२।२२ लों	एज्रा १ और ३	२।११-३।८
१८		एज्रा ४	२।२२	५	३।८-४।७
१९		७	३	८।१५	४।७
२०	एड्वर्ड् राजाका स्थानान्तरीकरण	९	४।३२ लों	१०।२० लों	५
२१		नेहेम्या १	४।३२-५।१७	नेहेम्या २	२ पेत्र १
२२		४	५।१७	५	२
२३	उपवास	६।१-७।५	६	७।७३-८।१८	३
२४	पवित्र योहानान् बप्तिस्ता	मलाकी ३।७ लों	मत्तय ३	मलाकी ४	मत्तय १४।१३लों
२५		नेहेम्या १३।१५ लों	कर्म्म ७।३५ लों	नेहेम्या १३।१५	१ योहानान् १
२६		एस्तेर् १	७।३५-८।५	एस्तेर् २।१५-३।१५	२।१५ लों
२७		४	८।५-२६	५	२।१५
२८	उपवास	६	८।२६	७	३।१६ लों
२९	पवित्रपेत्रप्रेरित	यहिज्केल् ३।४-१५	योहानान् २१।१५-२३	जकर्या ३	कर्म्म ४।८-२३
३०		इय्योब् १	कर्म्म ९।२३ लों	इय्योब् २	१ योहानान् ३।१६-४।७

यन्त्री पाठों के चक्र समेत ॥

जूलै में एकतीस दिन होते हैं ।

		प्रातःकाल की प्रार्थना		संध्याकाल की प्रार्थना	
		पहिलापाठ	दूसरापाठ	पहिलापाठ	दूसरा पाठ
१		इय्योब् ३	कर्म्म ६।२३	इय्योब् ४	१योहानान्४।७
२	कुमारी मिर्याम् का भेंट करना	५	१०।२४लों	६	५
३		७	१०।२४	९	२ योहानान्
४	पवित्रमार्त्तीनका स्थानान्तरीकरण	१०	११।	११	३ योहानान्
५		१२	१२	१३	यहूदा
६		१४	१३।२६ लों	१६	मत्तय १।१८
७		१७	१३।२६	१९	२
८		२१	१४	२२।१२-२९	३
९		२३	१५।३० लों	२४	४।२३ लों
१०		२५और२६	१५।३०-१६।१६	२७	४।२३-५।१३
११		२८	१६।१६	२९।१-३०।२	५।१३-३३
१२		३०।१२-२७	१७।१६ लों	३१।१३	५।३३
१३		३२	१७।१६	३८।३९ लों	६।१९ लों
१४		३८।३९-३९।३०	१८।२४ लों	४०	६।१९-७।७
१५	स्विथन विशप	४१	१८।२४-१९।२१	४२	७।७
१६		कहावतें १।२० लों	१९।२१	कहावतें १।२०	८।१८ लों

		कहावतें	कर्म्म	कहावतें	मत्तय
१७		२	२०।१७ लों	३।२७ लों	८।१८
१८		३।२७-४-२०	२०।१७	४।२०-५।१५	६।१८ लों
१९		५।१५	२१।१७ लों	६।२० लों	६।१८
२०	मार्गरेताकुमारी श्रौ साध्वी	७	२१।१७-३७	८	१०।२४ लों
२१		६	२१।३७-२२। २३	१०।१६	१०।२४
२२	पवित्र मिर्याम् मग्दलिया	११।१५ लों	२२।२३ । ३। १२	११।१५	११
२३		१२।१०	२३।१२	१३	१२।२२ लों
२४	उपवास	१४।६-२८	२४	१४।२८-१५। १८	१२।२२
२५	पवित्र याकोब् प्रेरित	२ राजा १।१६ लों	लूका ६। ५१-५७	यिर्मया २६।८।१६	१३।२४ लों
२६	पवित्र अन्ना	कहावतें १५।१८	कर्म्म २५	कहातें १६।२० लों	१३।२४-५३
२७		१६।३१-१७। १८	२६	१८।१०	१३।५३-१४।१३
२८		१६।१३	२७	२०।२३ लों	१४।१३
२९		२१।१७ लों	२८।१७ लों	२२।१७ लों	१५।२१ लों
३०		२३।१०	२८।१७	२४।२१	१५।२१
३१		२५	रोमियों १	२६।२१ लों	१६।२४ लों

यन्त्री पाठों के चक्र समेत ॥

आगुस्त में एकतीस दिन होते हैं ।

		प्रातःकाल की प्रार्थना		संध्याकाल की प्रार्थना	
		पहिलापाठ	दूसरा पाठ	पहिलापाठ	दूसरा पाठ
१	लाम्मस दिन	कहावतें २७।२३ लों	रोमियों २।१७ लों	कहावतें २८।१५ लों	मत्तय१९।२४-१७।१४
२		३०।१८ लों	२।१७	३१।१०	१७।१४
३		एक्लीसियस्ता १	३	एक्लीसियस्ता२।१२लों	१८।२१ लों
४		३	४	४	१८।२१-१९।३
५		५	५	६	१९।३ २७
६	रूपान्तरी भाव	७	६	८	१९।२७-२०।१७
७	येशू का नाम	९	७	११	२०।१७
८		१२	८।१८ लों	यिर्मया १	२१।२३ लों
९		यिर्मया २।२४ लों	८।१८	५।१९ लों	२१।२३
१०	पवित्र लौरेन्त्य साक्षी	५।१९	९।१९ लों	६।२२ लों	२२।१५ लों
११		७।१७ लों	९।१९	८।४	२२।१५-४१
१२		९।१७ लों	१०	१३।८-२४	२२।४१-२३।१३
१३		१५	११।२५ लों	१७।१९ लों	२३।१३
१४		१८।१८ लों	११।२५	१९	२४।२९ लों
१५		२१	१२	२२।१३ लों	२४।२९
१६		२२।१३	१३	२३।१६ लों	२५।३१ लों
१७		२४	१४।१-१५।८	२५।१५ लों	२५ ३१
१८		२६	१५।८	२८	२६।३१ लों

		यिर्मया	रोमियों	यिर्मया	मत्तिय
१९		२६।४-२०	१६	३०	२६।३१-५७
२०		३१।१५ लों	१कोरिंथियों१।२६लों	३१।१५-३८	२६।५७
२१		३२।१४ लों	१।२६-२।१६	३३।१४	२७।२७ लों
२२		३५	३	३६।१४ लों	२७।२७-५७
२३	उपवास	३६।१४	४।१८ लों	३८।१४ लों	२७।५७
२४	पवित्र बर्त्तल्मै	उत्पत्ति २८।१०-१८	४।१८-५।१३	द्विती:व्यवस्था१८।१५	२८
२५		यिर्मया ३८।१४	६	यिर्मया३९	मार्क १।२१ लों
२६		५०।२१ लों	७।२५ लों	५१।५४	१।२१
२७		यहिज्केल् १।१५ लों	७।२५	यहिज्केल् २।१५	२।२३ लों
२८	पवित्र औगुस्तीन विशप	२	८	३।१५ लों	२।२३-३।१३
२९	पवित्र योहानान् का शिरश्छेद	३।१५	९	८	३।१३
३०		९	१०।१-११।२	११।१४	४।३५ लों
३१		१२।१९	११।२-१७	१३।१७ लों	४।३५-५।२१

यन्त्री पाठों के चक्र समेत॥

सेप्टेम्बर में तीस दिन होते हैं

		प्रातःकाल की प्रार्थना		संध्याकाल की प्रार्थना	
		पहिला पाठ	दूसरा पाठ	पहिला पाठ	दूसरा पाठ
१	ऐगिद्य महन्त औ साक्षी	येहिज्केल १३।१७	१ कोरिंथियों ११।१७	येहिज्केल् १४।१२लों	मार्क ४।२१
२		१४।१२	१२।२८ लों	१६।४४	६।१४ लों
३		१८।१६ लों	१२।२८-१३।१३	१८।१६	६।१४-३०
४		२०।१८ लों	१४।२० लों	२०।१८।३३	६।३०
५		२०।३३-४४	१४।२०	२२।२३	७।२४ लों
६		२४।१५	१५।३५ लों	२६	७।२४-८।१०
७	एनूर्ख बिशप	२७।२६ लों	१५।३५	२७।२६	८।१०-९।२
८	कुमारी मिर्याम् का जन्म	२८।२० लों	१६	३१	९।२-३०
९		३२।१७ लों	२ कोरिंथियों १।२३लों	३३।२१ लों	९।३०
१०		३३।२१	१।२३-२।१४	३४।१७ लों	१०।३२ लों
११		३४।१७	२।१४।३।१८	३६।१६-३३	१०।३२
१२		३७।१५ लों	४	३७।१५	११।२७ लों
१३		४७।१३ लों	५	दानिय्येल् १	११।२७-१२।१३
१४	पवित्र क्रूस का दिन	दानिय्येल् २।२४ लों	६।१-७।२	२।२४	१२।१३-३५
१५		३	७।२	४।१९ लों	१२।३५-१३।१४
१६		४।१९	८	५।१७ लों	१३।१४

१७	लाम्बेर्ट बिशप श्रौ साक्षी	दानिय्येल ५।१७	२ कोरिं थि-यों ६	दानिय्येल ६	मार्क १४।२७ लों
१८		७।१५ लों	१०	७।१५	१४।२७-५२
१९		६।२० लों	११।३० लों	६।२०	१४।५३
२०	उपवास	१०।२० लों	११।३०-१२।१४	१२	१५।४२ लों
२१	पवित्र मत्तय प्रेरित	१ राजा १६।१५	१२।१४-१३।१४	१ परिशिष्ट २६।२० लों	१५।४२-१६।२०
२२		होशे२।१४	गलातियों १	होशे ४।१३ लों	लूका १।२६ लों
२३		५।८-६।७	२	७।८	१।२६-५७
२४		८	३	६	१।५७
२५		१०	४।२१ लों	११।१-१२।७	२।२१ लों
२६	पवित्र कुप्रियान आर्च् बिशप	१३।१५ लों	४।२१-५।१३	१४	२।२१
२७		योएल् १	५।१३	योएल् २।१५ लों	३।२३ लों
२८		२।१५-२८	६	२।२८-३।६	४।१६ लों
२९	पवित्र मीकाएल् और समस्त दूत	उत्पत्ति ३२	कर्म्म १२।५-१८	दानिय्येल १०।४	प्रकटी करण १४।१४
३०	पवित्र ह्येरोनुम अंगीकारी औ पण्डित	योएल् ३।९	एफेसियों १	आमोस् १।१-२।४	लूका ४।१६

यन्त्री पाठों के चक्र समेत ॥

अक्तोबर में एकतीस दिन होते हैं

		प्रातःकाल की प्रार्थना		संध्याकाल की प्रार्थना	
		पहिलापाठ	दूसरा पाठ	पहिलापाठ	दूसरा पाठ
१	रेमिग्य बिशप	आमोस् २।४-३।९	एफेसियों २	आमोस् ४।४	लूका ५।१७ लों
२		५।१८ लों	३	५।१८-६।९	५।१७
३		७	४।२५ लों	८	६।२० लों
४		९	४।२५-५।२२	ओबद्या	६।२०
५		योना १	५।२२-६।१०	योना २	७।२४ लों
६	फो दे कुमारी औ साक्षी	३	६।१०	४	७।२४
७		मीका १।१० लों	फिलिप्पियों १	मीका २	८।२६ लों
८		३	२	४	८।२६
९	पवित्र दियेनूस्य बिशप औ साक्षी	५	३	६	९।२८ लों
१०		७	४	नहूम् १	९।२८-५१
११		नहूम् २	कोलोस्सियों १।२१लों	३	९।५१-१०।१७
१२		हबक्कुक् १	१।२१-२।८	हबक्कुक् २	१०।१७
१३	एड्वर्ड् राजा का स्थानान्तरीकरण	३	२।८	जपन्या १।१४ लों	११।२९ लों
१४		जपन्या १।१४-२।४	३।१८ लों	२।४	११।२९
१५		३	३।१८-४।१८	हग्गै १	१२।३५ लों

१६		हग्गै २।१० लों	१ थेस्सलो नीकियों १	हग्गै २।१०	लूका १२।३५
१७	यथेल् ड्रेडा कुमारी	जकर्य्या १।१८ लों	२	जकर्य्या १।१८-२।१३	१३।१८ लों
१८	पवित्र लूका सुसमाचारी	यशया ५५	३	सीरह ३८।१५ लों	१३।१८
१९		जकर्य्या ३	४	जकर्य्या ४	१४।२५ लों
२०		५	५	६	१४।२५-१५।११
२१		७	२ थेस्सलो नीकियों १	८।१४ लों	१५।११
२२		८।१४	२	६।६	१६
२३		१०	३	११	१७।२० लों
२४		१२	१ तीमथेय १।१८ लों	१३	१७।२०
२५	क्रिस्पीन साक्षी	१४	१।१८-२।१५	मलाकी १	१८।३१ लों
२६		मलाकी २	३	३।१३ लों	१८।३१-१६।११
२७	उपवास	३।१३-४।६	४	ज्ञान १	१६।११-२८
२८	पवित्र शिमोन् और यहूदा	यशया २८।६-१७	५	यिर्मया ३।१२-१६	१६।२८
२९		ज्ञान २	६	ज्ञान ४।७	२०।२७ लों
३०		६।२२ लों	२तीमथेय१	६।२२-७।१५	२०।२७-२१।५
३१	उपवास	७।१५	२	८।१६ लों	२१।५

यन्त्रो पाठों के चक्र समेत ॥

नेवेम्बर में तीस दिन होते हैं ।

		प्रातःकाल की प्रार्थना		संध्याकाल की प्रार्थना	
		पहिलापाठ	दूसरा पाठ	पहिलापाठ	दूसरा पाठ
१	समस्त पवित्रों का दिन	ज्ञान ३।१० लों	इब्रियों ११। ३३-१२।७	ज्ञान ५।१७ लों	प्रकटीकरण १९।१७ लों
२		९	२तीमथेयः	११।१५ लों	लूका२२।३१लों
३		११।१५-१२। ३	४	१७	२२।३१-५४
४		सीरह १।१४ लों	तित १	सीरह २	२२।५४
५		३।१७-३०	२	४।१०	२३।२६ लों
६	लेओनार्ड अंगीकारी	५	३	७।२७	२३।२६-५०
७		१०।१८	फिलेमोन्	१४।२० लों	२३।५०-२४।१३
८		१५।९	इब्रियों १	१६।१७	२४।१३
९		१८।१५ लों	२।१-३।७	१८।१५	योहानान् १।२९लों
१०		१९।१३	३।७-४।१४	२२।६-२४	१।२९
११	पवित्रमार्त्तीनबिशपऔरअंगीकारी	२४।२४ लों	४।१४-५।१४	२४।२४	२
१२		३३।७-२३	६	३४।१५	३।२२ लों
१३	ब्रित्य बिशप	३५	७	३७।८-१९	३।२२
१४		३९।१३ लों	८	३९।१३	४।३१ लों
१५	मखूत बिशप	४१।१४ लों	९	४२।१५	४।३१
१६		४४।१६ लों	१०।१९ लों	५०।२५ लों	५।२४ लों
१७	हूघ बिशप	५१।१०	१०।१९	बारूक ४।२१ लों	५।२४

१८		बारूक्	इब्रियों	यशया	योहानान्
		४।३६-५।६	११।१७ लों	१।२१ लों	६।२२ लों
१६		यशया१।२१	११।१७	२	६।२२-४१
२०	पड्मुण्ड राजा	३।१६ लों	१२।	४।२	६।४१
२१		५।१८ लों	१३	५।१८	७।२५ लों
२२	केकिल्या कुमारी औा साक्षी	६	याक्राब् १	७।१७ लों	७।२५
२३	पवित्र क्लेमेन्त् बिशप औा साक्षी	८।५-१८	२	८।१८-६।८	८।३१ लों
२४		६।८-१०।५	३	१०।५-२०	८।३१
२५	कथरीनाकुमारी औा साक्षी	१०।२०	४	११।१० लों	६।३६ लों
२६		११।१०	५	१२	६।३६-१०।२२
२७		१३	१ पेत्र १।२२ लों	१४।२४ लों	१०।२२
२८		१०	१।२२-२।११	१८	११।१७
२६	उपवास	१६।१६ लों	२।११-३।८	१६।१६	११।१७-४७
३०	पवित्र अंद्रिया प्रेरित	५४	योहानान् १।३५-४३	६५।१७ लों	१२।२०-४२

यन्त्रो पाठों के चक्र समेत ॥

डिसेम्बर में एकतीस दिन होते हैं।

		प्रातःकाल की प्रार्थना		संध्याकाल की प्रार्थना	
		पहिलापाठ	दूसरापाठ	पहिलापाठ	दूसरा पाठ
१		यशया २१।१३ लों	१ पेच ३।८-४।७	यशया २२।१५ लों	योहानान् ११।४७-१२।२०
२		२२।१५	४।७	२३	१२।२०
३		२४	५	२५	१३।२१ लों
४		२६।२०लों	२ पेच १	२६।२०-२७। १३	१३।२१
५		२८।१४ लों	२	२८।१४	१४
६	नीकलावविशप	२९।९ लों	३	२९।९	१५
७		३०।१८ लों	१योहानान्१	३०।१८	१६।१६ लों
८	कुमारी मिर्याम् का गर्भागमन	३१	२।१५ लों	३२	१६।१६
९		३३	२।१५	३४	१७
१०		३५	३।१६ लों	४०।१२ लों	१८।२८ लों
११		४०।१२	३।१६-४।७	४१।१७ लों	१८।२८
१२		४१।१७	४।७	४२।१८ लों	१९।२५ लों
१३	लूक्या कुमारी औ साक्षी	४२।१८-४३। ८	५	४३।८	१९।२५
१४		४४।२१ लों	२योहानान्	४४।२१-४५।८	२०।१९ लों
१५		४५।८	३योहानान्	४६	२०।१९
१६	औ सप्येन्त्या	४७	यहूदा	४८	२१
१७		४९।१३ लों	प्रकटी-करण १	४९।१३	प्रकटीकरण २।१८ लों

१८		यशया ५०	प्रकटीकरण २।१८-३।७	यशया ५१।६ लों	प्रकटीकरण ३।७
१६		५१।६	४	५२।१३ लों	५
२०	उपवास	५२।१३-५३।१२	६	५४	७
२१	पवित्र तोमा प्रेरित	इय्योब् ४२।७ लों	योहानान् २०।१६-२४	३५	योहानान् १४।८ लों
२२		यशया ५५	प्रकटीकरण ८	५६	प्रकटीकरण १०
२३		५७	११	५८	१२
२४	उपवास	५६	१४	६०	१५
२५	प्रभु का जन्म दिन	६।८ लों	लूका २।१५ लों	७।१०-१७	तित ३।४-६
२६	पवित्र स्तेफन साक्षी	उत्पत्ति ४।११ लों	कर्म्म ६	२ परिशिष्ट २४।१५-२३	कर्म्म ८।६ लों
२७	पवित्र योहानान् सुसमाचारी	निर्गम ३३।६	योहानान् १३।२३-३६	यशया ६	प्रकटीकरण १
२८	निर्दोषों का दिन	यिर्मया ३१।१८ लों	प्रकटीकरण १६	बारूक् ४।२१-३१	१८
२६		यशया ६१	१६।११ लों	यशया ६२	१६।११
३०		६३	२०	६४।१-६५।८	२१।१५ लों
३१	सिल्वेस्त्र बिशप	६५।८	२१।१५-२२।६	६६	२२।६

चल और अचल तेवहारों के लिये चक्र और नियम और सम्पूर्ण बरस के उपवास के दिन ।

चल तेवहारों और पवित्र दिनों के निकालने के नियम ।

पुनरूत्थान का दिन (जिस के और सब अधीन हैं) सर्बदा वह इतवार होता है जो मार्च के २१ दिन की अथवा उस के अनन्तर की पूर्णिमा के उपरान्त पहला होता है और जब पूर्णिमा इतवार को पड़ती है तब पुनरूत्थान का दिन उसके अनन्तर का इतवार होता है। आगमन का इतवार वह इतवार होता है जो पवित्र अंद्रिया के तेवहार के अत्यन्त निकट पड़ता है चाहे आगे पड़े चाहे पीछे ।

सेप्त्वा गेसिमा इतवार पुनरूत्थान के दिन के ९ सप्ताह पहिले पड़ता है ।
सेचागेसिमा ....८.... ....
क्विंक्वागेसिमा ....७.... ....
क्वद्रागेसिमा ....६.... ....
बिनती का इतवार पुनरूत्थान के दिन के ५ सप्ताह पीछे पड़ता है
स्वर्गारोहण का दिन .. .. ४० दिन .. ..
पेन्ते कोष्टा .. .. ७ सप्ताह .. ..
त्रय का इतवार ८ .. ..

अंग्लखण्ड की एक्लीसिया में सम्पूर्ण बरस जितने तेवहारों का मानना उचित है उनका चक्र

बरस भर के सब इतवार ।
हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के परिच्छेद के तेवहार
एपिफनिया

पवित्र पौल के परिवर्त्तन
धन्य कुमारी के शुद्धी करण
पवित्र मत्तित्या प्रेरित्त
धन्य कुमारी के समाचार पाने
पवित्र मार्क सुसमाचारी
पवित्र फिलिप्प और पवित्र याकोब् प्रेरितों
हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के स्वर्गारोहण
पवित्र बर्णा बूआ
पवित्र योहानान् बप्तिस्ते के जन्म
पवित्र पेत्र प्रेरित
पवित्र याकोब् प्रेरित
पवित्र बर्त्तल्मै प्रेरित
पवित्र मत्तय प्रेरित
पवित्र मीकाएल् और समस्त दूतों
पवित्र लूका सुसमाचारी
पवित्र शिमोन् और यहूदा प्रेरितों
समस्त पवित्रों
पवित्र अंद्रिया प्रेरित
पवित्र तोमा प्रेरित
हमारे प्रभु के जन्म
पवित्र स्तेफन साक्षी
पवित्र योहानान् सुसमाचारी
पवित्र निर्दोषों

पुनरूत्थान के सप्ताह में का सोमवार और मङ्गलवार के तेवहार के दिन पेन्ते कोष्टा के सप्ताह

सम्पूर्ण बरस जितने जागरण उपवास और अल्पाहार के दिनों को मानना उचित है उनका चक्र ।

हमारे प्रभु के जन्मदिन से पहला जागरण
धन्य कुमारी मियम् के शुद्धीकरण
धन्य कुमारी के समाचार पाने
पुनरूत्थान के दिन
स्वर्गारोहण के दिन
पेन्तेकोष्टा
पवित्र मत्तित्या
पवित्र योहानान् बप्तिस्ते
पवित्र पेत्र
पवित्र याकोब्
पवित्र बर्त्तल्मै
पवित्र मत्तय
पवित्र शिमोन् और यहूदा
पवित्र अंद्रिया
पवित्र तोमा
समस्त पवित्रों से पहले जागरण

जानना चाहिये कि यदि इन तेवहारों में से कोई सोमवार को पड़े तो जागरण वा उपवास का दिन उससे पहिले इतवार को नहीं पर शनिवार को मानना उचित है ।

उपवास वा अल्पाहार के दिन ।

१ क्वद्रागेसिमा के चालीसों दिन
२ चारों समयों में जो एम्बर के दिन पड़ते हैं अर्थात् क्वद्रागेसिमा

के पहले इतवार और पेन्तेकोष्ट्रा के तेवहार और १४ सेप्टेम्बर और १३ डिसेम्बर के अनन्तर का बुध शुक्र और शनिवार।

३ बिनती के तीनों दिन अर्थात् पवित्र बृहस्पतिवार से अर्थात् हमारे प्रभु के स्वर्गारोहण से पहिला सोमवार मंगलवार और बुधवार।

ख्रीष्ट के जन्मदिन को छोड़ बरस भर के सब शुक्रवार।

एक विशेष दिन जिसके लिये विशेष उपासना ठहराई गई है।

२० वीं जून जिस में महारानी अपना मंगल राज्य करने लगीं।

प्रातःकाल और संध्याकाल की प्रार्थना की विधि जो सम्पूर्ण बरस प्रति दिन पढ़ी और बरती जावे।

प्रातःकाल और संध्याकाल की प्रार्थना जब बिशप और प्रकार की आज्ञा न दे तब एक्लेसिया वा चांसल के नियतस्थान में किई जावे और चांसल ज्यों के त्यों बने रहें।

और जानना चाहिये कि एक्लेसिया और उसके सेवकों के जितने अलङ्कार और आभूषण छठवें एडवर्ड् राजा के राज्य के दूसरे बरस में पार्लमेंट की अनुमति से अंग्लखण्ड की एक्लेसिया में थे वही उन की सेवा के प्रति समय में ज्यों के त्यों काम में आवें॥

-----:o:-----

प्रातःकाल की प्रार्थना की विधि

बरस के प्रति दिन के लिये ॥

प्रातःकाल की प्रार्थना के आरम्भ में सेवक शास्त्र के इन नीचे लिखे हुए एक वा कई एक वाक्यों में से ऊंचे स्वर से पढ़े और तब जो इन वाक्यों के अनन्तर लिखा हुआ है उसे कहे ।

जब दुष्ट अपनी दुष्टता से जो उसने किई है फिरे और जो बात न्याय और धर्म्म की है उसे करे तब वह अपने प्राण को जीता रक्खेगा । यहिज्केल् १८।२७ ॥

मैं अपने अपराधों को जानता हूं और मेरा पाप निरन्तर मेरे साम्हने है । स्तोत्र ५१।३ ॥

मेरे पापों से अपना मुंह छिपा और मेरे सब अधर्म्मों को मिटा दे । स्तोत्र ५१।६ ॥

ईश्वर के बलिदान चूर्ण आत्मा हैं हे ईश्वर तू चूर्ण और कुचले हृदय को तुच्छ न समझेगा । स्तोत्र ५१।१७ ॥

अपने बस्त्र नहीं पर अपने हृदय को फाड़ो और प्रभु अपने ईश्वर की ओर फिरो क्योंकि वह अनुग्राही और दयालु है क्रोध करने में धीमा दया में धनी और दुःख देने से पछताता है । याएल् २।१३ ॥

प्रभु हमारे ईश्वर में बहुत दया और क्षमा है यद्यपि हम उसके बिरुद्ध उठे और हमने प्रभु अपने ईश्वर का कहना न माना कि जो व्यवस्थाएं उसने हमारे साम्हने रक्खीं उन पर चलते । दानिय्येल् ६।६,१० ॥

हे प्रभु मेरी ताड़ना कर पर बिचार से अपने कोप से नहीं न हो कि तू मुझे नाश कर डाले । यिर्मया १०।२४। स्तोत्र ६।१ ॥

पश्चात्ताप करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है । मत्तय ३।२ ॥

मैं उठ कर अपने पिता के पास जाऊंगा और उस से कहूंगा कि

प्रातःकाल की प्रार्थना

हे पिता मैंने स्वर्ग के बिरुद्ध और तेरे साम्हने पाप किया है और अब इस योग्य नहीं कि तेरा पुत्र कहलाऊं। लूका १५।१८,१९॥

हे प्रभु अपने दास को न्याय स्थान में न लेजा क्योंकि कोई जीवता प्राणी तेरे साम्हने धर्म्मी न ठहरेगा। स्तोत्र १४३।२॥

यदि हम कहें कि हम निष्पाप हैं तो हम अपने को धोखा देते हैं और हम में सच्चाई नहीं पर यदि हम अपने पापों को अंगीकार करें तो वह ऐसा विश्वस्त और न्यायी है कि हमारे पापों को क्षमा करे और हम को सारे अधर्म्म से शुद्ध करे।१। योहानान् १।८,९॥

हे अति प्रिय भाइयो शास्त्र कई स्थलों में हम को उभारता है कि अपने नाना प्रकार के पापों और दुष्टता को स्वीकार और अंगीकार करें और उन के विषय में अपने स्वर्गीय पिता सर्वशक्तिमान् ईश्वर के साम्हने बहाना न करें और न उन्हें छिपावें पर नम्र दीन पश्चातापी और आज्ञाकारी मन से उन्हें मान लेवें जिस्तें उस की अपार कृपा और दया से उन की क्षमा पावें। और यद्यपि हमें उचित है कि सर्वकाल ईश्वर के साम्हने नम्रता से अपने पापों को स्वीकार करें तथापि विशेष करके उस समय ऐसा करना उचित है जब हम इसलिये एकट्ठे होते हैं कि उसने जो जो बड़े उपकार हम पर किये हैं उन के लिये धन्यवाद करें उस की अति योग्य स्तुति करें उसके अति पवित्र बचन को सुनें और जो जो बस्तु हमारे शरीर और आत्मा के लिये आवश्यक हैं उन को मांगें। इसलिये जितने यहां उपस्थित हो मैं सब से बिनती और प्रार्थना करता हूं कि शुद्ध मन और नम्र बाणी से स्वर्गीय अनुग्रह के सिंहासन के साम्हने मेरे साथ होके मेरे पीछे पीछे कहो॥

साधारण पापांगीकार जिसे सारी मण्डली सेवक के पीछे पीछे कहे।

सब घुटने टेकें।

प्रात:काल की प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् और अत्यन्त दयालु पिता। हमने पाप किया है। और खोई हुई भेड़ों के समान तेरे मार्गों से भटक गये हैं। हम अपने अपने मन के विचार और इच्छा के अनुसार बहुत ही चले हैं। हमने तेरी पवित्र व्यवस्थाओं का उल्लंघन किया है। जो हम को करना उचित था सो हमने नहीं किया। और जो हमें करना उचित न था सो हमने किया है। और हम में कुछ आरोग्य नहीं। परन्तु हे प्रभु। हम दुर्गत अपराधियों पर दया कर। हे ईश्वर। जो अपने पापों को मान लेते हैं उन को छोड़ दे। जो पश्चाताप करते हैं उन्हें फिर ग्रहण कर। अपनी उन प्रतिज्ञाओं के अनुसार। जो हमारे प्रभु येशू खीष्ट में मनुष्य जाति पर प्रगट किई गई हैं। और हे अत्यन्त दयालु पिता। उस के कारण यह वर दे। कि आगे को हम भक्ति धर्म्म और संयम से चलें। जिस्तें तेरे पवित्र नाम की महिमा होवे। आमेन्॥

पाप मोचन अर्थात् पापों की क्षमा जिसे केवल प्रीष्ट खड़ा होके सुनावे। मण्डली के लोग घुटने टेके रहें।

सर्वशक्तिमान् ईश्वर हमारे प्रभु येशू खीष्ट का पिता किसी पापी की मृत्यु नहीं चाहता वरन यह कि वह अपनी दुष्टता से फिरे और जीवे और उस ने अपने सेवकों को यह अधिकार और आज्ञा दिई है कि उस के निज लोगों को जो पश्चाताप करते हैं उन के पापों का मोचन और क्षमा प्रगट करें और सुनावें सो जितने सत्य पश्चाताप करते और उस के पवित्र सुसमाचार पर निष्कपट होके बिश्वास करते हैं वह उन सब को क्षमा करता और छुटकारा देता है। इस कारण हम उस से बिनती करें कि वह हमें सत्य पश्चा-ताप और अपना पवित्रात्मा देवे जिस्तें जो कुछ हम इस समय करते हैं उसे भावे और आगे को हमारा अवशिष्ट जीवन शुद्धता और

पवित्रता से बीते ऐसा कि अन्त को हम उस का अक्षय आनन्द प्राप्त करें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा ॥

मण्डली के लोग यहां और दूसरी सब प्रार्थनाओं के अन्त में आमेन् कहें ।

तब सेवक घुटने टेक कर प्रभु की प्रार्थना ऐसे स्वर से कि सब सुन सकें कहे । मण्डली के लोग भी घुटने टेके हुए उसको उसके साथ साथ कहें । और ईश्वर की उपासना में जहां जहां प्रभु की प्रार्थना आवे तहां तहां वे ऐसाही करें ॥

हे हमारे पिता । तू जो स्वर्ग में है । तेरा नाम पवित्र किया जावे । तेरा राज्य आवे । तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है पृथ्वी पर भी होवे । हमारी प्रति दिन की रोटी आज हमें दे । और हमारे अपराधों को क्षमा कर । जैसे हम ने भी अपने अपराधियों को क्षमा किया है । और हमें परीक्षा में न ला परन्तु बुराई से बचा । क्योंकि राज्य और सामर्थ्य और महिमा युगान युग तेरीही है । आमेन् ॥

तब वह यह भी कहे ।

प्रीष्ट । हे प्रभु तू हमारे होठों को खोल ॥
उत्तर । तो हमारा मुंह तेरा गुणानुवाद करेगा ॥
प्रीष्ट । हे ईश्वर हमारे बचाने में शीघ्रता कर ॥
उत्तर । हे प्रभु शीघ्र हमारी सहायता कर ॥

यहां सब खड़े होवें और प्रीष्ट कहे ।

पिता की और पुत्र की । और पवित्रात्मा की महिमा होवे ॥

जैसी आदि में थी और अब है । और सदा वरन युगान युग रहेगी ॥—आमेन् ॥

प्रातःकाल की प्रार्थना

प्रीष्ट । प्रभु की स्तुति करो ॥
उत्तर । प्रभु के नाम की स्तुति होवे ॥

तब नीचे का स्तोत्र कहा वा गाया जावे । केवल पुनरूत्थान के दिन के लिये दूसरा स्तोत्र ठहराया गया है । श्रौर प्रतिमास के १९ दिन यह स्तोत्र इस स्थान में नहीं पर स्तोत्र संहिता के साधारण क्रम में पढ़ा जावे ॥

स्तोत्र ९५ ।

आश्रो हम प्रभु के लिये ऊंचे स्वर से गावें । अपने त्राण की चटान के लिये आनन्द से ललकारें ॥

उस के सन्मुख धन्यवाद करते हुए उपस्थित हों । स्तुतिगान करते हुए उस के लिये आनन्द से ललकारें ॥

क्योंकि प्रभु महान् परमेश्वर है । श्रौर सब देवताओं के ऊपर महान् राजा है ॥

पृथिवी की गहिराइयां उस के हाथ में हैं । श्रौर पहाड़ों की ऊंचाइयां उस की हैं ॥

समुद्र उस का है श्रौर उसी ने उसे बनाया । श्रौर स्थल को उसी के हाथों ने रचा ॥

आश्रो हम दण्डवत करें श्रौर झुकें । श्रौर अपने कर्त्ता प्रभु के साम्हने घुटने टेकें ॥

क्योंकि वह हमारा ईश्वर है श्रौर हम उस के चराव के लोग श्रौर उस के हाथ की भेड़ें हैं । हाय कि तुम आज उस का शब्द सुनते ॥

अपने हृदय को कठोर मत करो । जैसा मरीबा में मस्सा के दिन बन में किया था ॥

जब तुम्हारे पुरखाओं ने मुझे परखा । मुझ को जांचा यद्यपि मेरे कर्म्मों को देखा ॥

प्रातःकाल की प्रार्थना

चालीस बरस लो मैं उस पीढ़ी से उदास रहा । और मैंने कहा कि यह लोकगण मन का भूला है उन्होंने मेरे मार्गों को नहीं चीन्हा ॥

इस पर मैंने अपने कोप में किरिया खाई कि ये मेरे विश्राम में प्रवेश न करेंगे ॥

पिता की और पुत्र की । और पवित्रात्मा की महिमा होवे ॥
जैसी आदि में थी और अब है । और सदा वरन युगानयुग रहेगी ॥--आमेन्॥

तब स्तोत्र जिस क्रम से ठहराये गये हैं उसी क्रम से कहे वा गाये जावें और सम्पूर्ण बरस में प्रत्येक स्तोत्र के अन्त में और तीन तरुणों के गीत जकर्य्या के गीत धन्य कुमारी मिर्याम् के गीत और शिमोन् के गीत के अन्त में भी यह वाक्य कहा वा गाया जावे ॥

पिता की और पुत्र की । और पवित्रात्मा की महिमा होवे ॥
जैसी आदि में थी और अब है । और सदा वरन युगानयुग रहेगी ॥—आमेन् ॥

तब पहला पाठ जो पुरानी बाचा में से यन्त्री के अनुसार लिया जाता है स्पष्ट और सुश्राव्य स्वर से पढ़ा जावे परन्तु जिस दिन के लिये कोई विशेष पाठ ठहराया गया हो उस दिन वही पढ़ा जावे । पढ़ने वाला खड़ा होके ऐसे ढब से मण्डली की ओर फिरे कि जितने उपस्थित हैं सो भली भांति सुन सकें । और इस के उपरान्त तुझ ईश्वर की हम स्तुति करते हैं नामक गीत बरस के प्रति दिन भाषा में कहा वा गाया जावे ।

जानना चाहिये कि प्रत्येक पाठ के अनन्तर सेवक कहे कि अमुक पुस्तक का अमुक अध्याय अथवा अमुक अध्याय का अमुक पद अब आरम्भ होता है और प्रत्येक पाठ के अनन्तर कहे कि अब पहला अथवा दूसरा पाठ समाप्त हुआ ॥

तुझ ईश्वर की हम स्तुति करते हैं ॥

तुझ ईश्वर की हम स्तुति करते हैं ॥
तुझे हम प्रभु करके मानते हैं ॥
तुझ सनातन पिता का । सारा भूमण्डल सन्मान करता है ॥

प्रातःकाल की प्रार्थना

तुझे सारे दूतगण । तुझे स्वर्ग और समस्त शक्तियां ॥
तुझे करूबीम् और सराफीम् । निरन्तर पुकारते हैं ॥
पवित्र पवित्र पवित्र । प्रभु सेनाओं के ईश्वर ॥
स्वर्ग और पृथ्वी । तेरी महिमा के प्रताप से परिपूर्ण हैं ॥
तुझे प्रेरितों का तेजस्वी समाज । सराहता है ॥
तुझे प्रवक्ताओं का स्तुत्यगण । सराहता है ॥
तुझे साक्षियों की श्वेतवस्त्र सेना । सराहती है ॥
तुझे समस्त भूमण्डल में । पवित्र एक्लेसिया मानती है ॥
तुझ पिता को । जिस का प्रताप अनन्त है ॥
तेरे पुत्र को । जो मान्य सत्य और एकलौता है ॥
और पवित्रात्मा को । जो पराक्लेत है ॥
हे खीष्ट । तू महिमा का राजा है ॥
तू पिता का । सनातन पुत्र है ॥

जब तू ने मनुष्य के छुड़ाने के लिये मनुष्य बनना स्वीकार किया । तो तू ने कुमारी के गर्भ से घिन्न न किई ॥

जब तू मृत्यु के डङ्क पर जयवन्त हुआ । तब तू ने स्वर्ग का राज्य सब विश्वासियों के लिये खोल दिया ॥

तू ईश्वर की दहिनी ओर । पिता की महिमा में विराजमान है ॥

हमें विश्वास है कि तू । न्यायी होके आनेहारा है ॥

इसलिये हम तुझ से बिनती करते हैं अपने दासों की सहाय कर । जिन्हें तू ने अपना बहुमूल्य लहू दे के छुड़ा लिया है ॥

उन्हें अनन्त महिमा के प्रति फल में । अपने पवित्रों के संग भागी कर ॥

हे प्रभु अपने निज लोगों की रक्षा कर । और अपने निज भाग को आशीस दे ॥

उन का प्रवन्ध कर । और उन्हें सर्वदा के लिये उन्नत कर ॥

प्रतिदिन हम तुझे । धन्य कहते हैं ॥

प्रातःकाल की प्रार्थना

और तेरे नाम की स्तुति । सदा वरन युगानयुग करते रहेंगे ॥
आज हे प्रभु कृपा करके । पाप से हमारी रक्षा कर ॥
हे प्रभु हम पर दया कर । हम पर दया कर ॥
हे प्रभु तेरी दया हम पर होवे । कि हमारी आशा तुझी से है ॥
हे प्रभु मेरी आशा तुझी से है । मुझे कभी लज्जित न होने दे ॥

अथवा यह गीत ।

तीन तरुणों का गीत ॥

हे प्रभु की सारी कृतियो प्रभु को धन्य कहो । उसको सराहो और सदा उसकी अति महिमा करते रहो ॥

हे स्वर्गो प्रभु को धन्य कहो । उस को सराहो और सदा उस की अति महिमा करते रहो ॥

हे प्रभु के दूतो प्रभु को धन्य कहो । उस को सराहो और सदा उसकी अति महिमा करते रहो ॥

हे सब जलो तुम जो आकाश के ऊपर हो प्रभु को धन्य कहो । उसको सराहो और सदा उसकी अति महिमा करते रहो ॥

हे प्रभु की सारी शक्तियो प्रभु को धन्य कहो । उस को सराहो और सदा उस की अति महिमा करते रहो ॥

हे सूर्य्य और चंद्रमा प्रभु को धन्य कहो । उस को सराहो और सदा उस की अति महिमा करते रहो ॥

हे आकाश के तारो प्रभु को धन्य कहो । उसको सराहो और सदा उस की अति महिमा करते रहो ॥

हे सब मेंह और ओस प्रभु को धन्य कहो । उस को सराहो और सदा उसकी अति महिमा करते रहो ॥

हे सब पवनो प्रभु को धन्य कहो । उस को सराहो और सदा उसकी अति महिमा करते रहो ॥

प्रातःकाल की प्रार्थना

हे अग्नि और तपन प्रभु को धन्य कहो। उस को सराहो और सदा उस की अति महिमा करते रहो ॥

हे जाड़े और ग्रीष्म प्रभु को धन्य कहो। उस को सराहो और सदा उस की अति महिमा करते रहो ॥

हे ओसो और हिमवृष्टियो प्रभु को धन्य कहो। उस को सराहो और सदा उस की अति महिमा करते रहो ॥

हे रात्रियो और दिनो प्रभु को धन्य कहो। उस को सराहो और सदा उसकी अति महिमा करते रहो ॥

हे उजाले और अन्धेरे प्रभु को धन्य कहो। उसको सराहो और सदा उस की अति महिमा करते रहो ॥

हे पालो और हिमो प्रभु को धन्य कहो। उस को सराहो और सदा उस की अति महिमा करते रहो ॥

हे बिजलियो और बादलो प्रभु को धन्य कहो। उस को सराहो और सदा उस की अति महिमा करते रहो ॥

पृथ्वी प्रभु को धन्य कहे। उस को सराहे और सदा उस की अति महिमा करती रहे ॥

हे पहाड़ो और पहाड़ियो प्रभु को धन्य कहो। उस को सराहो और सदा उस की अति महिमा करते रहो ॥

हे पृथ्वी पर की सब उगनेवालो वस्तुओ प्रभु को धन्य कहो। उस को सराहो और सदा उस की अति महिमा करते रहो ॥

हे सोतो प्रभु को धन्य कहो। उस को सराहो और सदा उस की अति महिमा करते रहो ॥

हे समुद्र और नदियो प्रभु को धन्य कहो। उस को सराहो और सदा उस की अति महिमा करते रहो ॥

हे बड़ी मछलियो और सब जलचरो प्रभु को धन्य कहो। उस को सराहो और सदा उस की अति महिमा करते रहो ॥

प्रातःकाल की प्रार्थना

हे आकाश के सब पक्षियो प्रभु को धन्य कहो। उस को सराहो और सदा उस की अति महिमा करते रहो॥

हे सब बनपशुओ और ग्रामपशुओ प्रभु को धन्य कहो। उस को सराहो और सदा उस की अति महिमा करते रहो॥

हे मनुष्य बंशियो प्रभु को धन्य कहो। उस को सराहो और सदा उस की अति महिमा करते रहो॥

यिस्राएल् प्रभु को धन्य कहे। उस को सराहे और सदा उसकी अति महिमा करता रहे॥

हे याजको प्रभु को धन्य कहो। उस को सराहो और सदा उस की अति महिमा करते रहो॥

हे प्रभु के दासो प्रभु को धन्य कहो। उसको सराहो और सदा उसकी अति महिमा करते रहो॥

हे धर्म्मियों के आत्माओ और जीवो प्रभु को धन्य कहो। उस को सराहो और सदा उस की अति महिमा करते रहो॥

हे पवित्र और हृदय के नम्र मनुष्यो प्रभु को धन्य कहो। उस को सराहो और सदा उस की अति महिमा करते रहो॥

हे हनन्या अजर्या और मीशाएल् प्रभु को धन्य कहो। उस को सराहो और सदा उस की अति महिमा करते रहो॥

पिता की और पुत्र की। और पवित्रात्मा की महिमा होवे॥
जैसी आदि में थी और अब है। और सदा वरन युगानयुग
रहेगी॥—आमेन्॥

तब दूसरा पाठ जो नई बाचा में से लिया जाता है उसी प्रकार से पढ़ा जावे और उस के अनन्तर नीचे का स्तोत्र परन्तु जब यह उसी दिन के पाठ में अथवा पवित्र योहानान् बप्तिस्ता के दिन के सुसमाचार में आता है तब वह यहां न पढ़ा जावे॥

प्रात:काल की प्रार्थना

जकर्य्या का स्तोत्र ॥

पवित्र लूका १।६८।

धन्य होवे प्रभु यिस्राएल् का ईश्वर । कि उसने अपने निज लोगों पर दृष्टि किई और उन्हें छुड़ा लिया है ॥

और हमारे लिये त्राण का सींग । अपने सेवक दावीद् के घर में स्थापित किया है ॥

जैसा वह अपने पवित्र प्रवक्ताओं के मुख से बोला । जो प्राचीन काल से होते आये हैं ॥

हमारे शत्रुओं से । और हमारे सब बैरियों के हाथ से त्राण ॥

हमारे पुरखाओं पर दया करने को । और अपनी पवित्र बाचा स्मरण करने को ॥

जिस किरिया को उसने हमारे पिता अब्राहाम् से खाया । कि वह हमें यह देवेगा ॥

कि हम अपने शत्रुओं के हाथ से छुटकारा पाके । निर्भयता से ॥

उसके साम्हने पवित्रता और धार्मिकता से । अपने जीवन भर उस की उपासना करें ॥

और तू हे बालक परात्पर का प्रवक्ता कहावेगा । क्योंकि तू प्रभु के मार्ग बनाने के लिये उसके आगे आगे चलेगा ॥

कि उस के निज लोगों को उनके पापमोचन के द्वारा । त्राण का ज्ञान देवे ॥

हमारे ईश्वर के अति छोह के कारण । जिस के द्वारा सूर्य्योदय ऊपर से हम पर भया ॥

उन्हें प्रकाशित करने को जो अन्धेरे और मृत्यु की छाया में बैठे हैं । हमारे पांव शान्ति के मार्ग में सीधा पहुंचाने को ॥

प्रातःकाल की प्रार्थना

पिता की और पुत्र की। और पवित्रात्मा की महिमा होवे॥
जैसी आदि में थी और अब है। और सदा वरन युगानयुग रहेगी॥--आमेन्॥

अथवा यह स्तोत्र॥

स्तोत्र १००।

हे सारी पृथिवी के लोगो। प्रभु के लिये आनन्द से ललकारो॥

आनन्द से प्रभु की सेवा करो। उस के सन्मुख ऊंचे स्वर से गाते हुए आओ॥

निश्चय जानो कि प्रभु जो है वही ईश्वर है। उसी ने हम को बनाया न कि हमने आप को हम उस के निज लोग और उस के चराव की भेड़ें हैं॥

धन्यवाद करते हुए उस के फाटकों में स्तुति करते हुए उस के आंगनों में प्रवेश करो। उस का धन्यवाद करो उस के नाम को धन्य कहो॥

क्योंकि प्रभु भला है उस की दया सनातन। और उसकी विश्वस्तता पीढ़ी से पीढ़ी लों रहती है॥

पिता की और पुत्र की। और पवित्रात्मा की महिमा होवे॥

जैसी आदि में थी और अब है। और सदा वरन युगानयुग रहेगी॥—आमेन्॥

तब सेवक और मण्डली खड़े होके प्रेरितों का विश्वास बचन गावें वा कहें। परन्तु जिन दिनों के लिये पवित्र अथनस्य का विश्वास बचन ठहराया गया है उनमें वही गाया वा कहा जावे।

मैं विश्वास रखता हूं ईश्वर सर्वशक्तिमान् पिता पर। जो स्वर्ग और पृथ्वी का सिरजनहार है॥

प्रातःकाल की प्रार्थना

और येशू ख्रीष्ट पर । जो उसका एकलौता पुत्र और हमारा प्रभु है । वह पवित्रात्मा की शक्ति से गर्भ में आया । कुमारी मिर्याम् से जन्मा । पोन्त्य पीलात के अधिकार में दुःख भोगा । क्रूस पर चढ़ाया गया । मर गया । और समाधि में रक्खा गया । पाताल में उतर गया । तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा । स्वर्ग पर चढ़गया । और सर्वशक्तिमान् ईश्वर पिता की दाहिनी ओर बैठा है । वहां से वह जीवतों और मृतकों का न्याय करने को आनेहारा है ॥

मैं विश्वास रखता हूं पवित्रात्मा पर । पवित्र कथोलिक एक्लेसिया पर । पवित्रों की सहभागिता पर । पापमोचन पर । शरीर के पुनरूत्थान पर । और अनन्तजीवन पर । आमेन् ॥

और इसके अनन्तर नीचे की प्रार्थनाएं कही जावें और सब भक्ति से घुटने टेकें परन्तु सेवक पहले ऊंचे स्वर से यह कहे ।

प्रभु तुम्हारे साथ रहे ॥
उत्तर । और तेरे आत्मा के साथ भी ॥
सेवक । प्रार्थना करें
हे प्रभु हम पर दया कर ॥
हे ख्रीष्ट हम पर दया कर ॥
हे प्रभु हम पर दया कर ॥

तब सेवक और गायक लोग और मण्डली प्रभु की प्रार्थना ऊंचे स्वर से कहें ॥

हे हमारे पिता । तू जो स्वर्ग में है । तेरा नाम पवित्र किया जावे । तेरा राज्य आवे । तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है पृथ्वी पर भी होवे । हमारी प्रति दिन की रोटी आज हमें दे । और हमारे अपराधों को क्षमा कर । जैसे हमने भी अपने अपराधियों

को क्षमा किया है । और हमें परीक्षा में न ला । परन्तु बुराई से बचा । आमेन् ॥

तब प्रीष्ट खड़ा होके कहे ।

हे प्रभु अपनी दया हम पर प्रगट कर ।
उ० । और अपना त्राण हमें दे ।
प्री० । हे प्रभु महारानी की रक्षा कर ॥
उ० । और जब हम तुझे पुकारें कृपा करके हमारी सुन ॥
प्री० । अपने सेवकों को धर्म्म का वस्त्र पहिना ॥
उ० । और अपने चुने हुए लोगों को आनन्दित कर ॥
प्री० । हे प्रभु अपने निज लोगों की रक्षा कर ॥
उ० । औ अपने निज भाग को आशीष् दे ॥
प्री० । हे प्रभु हमारे दिनों में मेल रहे ॥
उ० । क्योंकि तुझे छोड़ हे ईश्वर दूसरा कोई नहीं जो हमारे लिय लड़े ॥
प्री० । हे ईश्वर हमारे अन्तःकरण को शुद्ध कर ॥
उ० । और अपना पवित्रात्मा हम से न ले ले ॥

तब तीन प्रार्थनाएं कही जावें पहली उस दिन की सो वही होवे जो सहभागिता के लिये ठहराई गई है दूसरी मेल के लिये तीसरी अनुग्रह के लिये कि हम सुचाल चलें । दूसरी और तीसरी कभी न छूटें पर सम्पूर्ण वर्ष प्रतिदिन प्रातःकाल की प्रार्थना में कही जावें । और सब घुटने टेके रहें ।

दूसरी प्रार्थना मेल के लिये ॥

हे ईश्वर मेल के कर्त्ता और एकमता के चाहनेहारे तुझ को जानना अनन्त जीवन है तेरी सेवा पूरी निर्बन्धता है जब जब हमारे शत्रु हम पर चढ़ाई करें तब तब अपने नम्र दासों की रक्षा कर कि हम

तेरी रक्षा पर पूरा भरोसा रख के किसी बैरी के बल से न डरें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

तीसरी प्रार्थना अनुग्रह के लिये ॥

हे प्रभु हमारे स्वर्गीय पिता सर्वशक्तिमान् और सनातन ईश्वर तूने हम को आज के प्रातःकाल लों सुरक्षित पहुंचाया है अपने बड़े सामर्थ्य से दिन भर हमारी रक्षा कर और यह वर दे कि हम आज किसी पाप में न फंसें और न किसी प्रकार की जोखिम में पड़ें परन्तु तेरे शासन से हमारे सब कर्म्मों का ऐसा प्रबन्ध होवे कि जो कुछ तेरी दृष्टि में भला है सोई सदा करते रहें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

जिन एक्क्लीसियायों में गान होता है उन में गीत अभी गाया जावे । तब नीचे की ५ प्रार्थनाएं पढ़ी जावें परन्तु जब लितानिया पढ़ी जाती है तब इन में से केवल अन्त की दो प्रार्थनाएं पढ़ी जावें जैसे वे लितानिया में लिखी हुई हैं ॥

श्रीमती महारानी के लिये प्रार्थना ॥

हे प्रभु हमारे स्वर्गीय पिता महान् और शक्तिमान् राजाधिराज प्रभुओं के प्रभु भूपतिन का केवल तूही अध्यक्ष है तू अपने सिंहासन पर से सब पृथ्वीबासियों पर दृष्टि करता है । हम सारे अन्तःकरण से बिनती करते हैं कि तू हमारी अति अनुग्राहिणी महास्वामिनी महारानी विक्टोरिया पर अनुग्रह की दृष्टि कर और अपने पवित्रात्मा के अनुग्रह से उस को ऐसा परिपूर्ण कर कि वह अपना मन तेरी इच्छा की ओर सदा लगाए रहे और तेरे मार्ग पर चले उस को स्वर्गीय वरदानों से भरपूर कर उस को आरोग्य और कुशल क्षेम से

चिरंजीव रख उस को ऐसा सामर्थ्य दे कि वह अपने सारे शत्रुओं पर जयवन्त होवे और अन्त को इस जीवन के अनन्तर वह सदा का आनन्द मंगल प्राप्त करे हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

राज कुटुम्ब के लिये प्रार्थना ॥

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर सारी भलाई के सोते हम नम्रता से बिनती करते हैं कि तू अल्बर्ट एड्वर्ड् युवराज युवराज पत्नी और समस्त राजकुटुम्ब को आशीष् दे उन को अपने पवित्रात्मा से भरपूर कर अपने स्वर्गीय अनुग्रह से उन्हें धनी कर सारे मंगल से उन्हें भाग्य-वान कर और अपने सदा के राज्य में पहुंचा हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

सेवकों और मण्डलियों के लिये प्रार्थना ॥

हे सर्वशक्तिमान् और सनातन ईश्वर केवल तूहीं बड़े बड़े अद्भुत काम करता है हमारे बिशपों और पालकों पर और जितनी मण्ड-लियां उन के हाथ में सौंपी गई हैं उन पर अपने अनुग्रह का आरोग्य दायक आत्मा ऊपर से भेज और जिस्तें वे सचमुच तुझे प्रसन्न रक्खें उन पर अपनी आशीष् की ओस सदा गिराया कर। हे प्रभु हमारे पक्षवादी और मध्यस्थ येशू ख्रीष्ट की प्रतिष्ठा के लिये यह बर दे। आमेन् ॥

पवित्र ख्रुसास्तोम की प्रार्थना ॥

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू ने हम को ऐसा अनुग्रह दिया है कि हमने इस समय एक मन होके तुझ से अपनी साधारण बिनतियां किई हैं और तू प्रतिज्ञा करता है कि जब दो वा तीन मेरे नाम पर एकट्ठे होवें तब मैं उनका मांगा वर देऊंगा । अब हे प्रभु अपने दासों के

मनोरथ और विनतियां इस रीति से पूर्ण कर जिस से उन का परम लाभ होवे इस लोक में अपने सत्य का ज्ञान और परलोक में अनन्त जीवन हमें दान दे । आमेन् ॥

२ करिंथियों १३ ॥ १४ ॥

हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट का अनुग्रह और ईश्वर का प्रेम और पवित्रात्मा की सहभागिता हम सब के संग सर्वदा रहे । आमेन् ॥

सम्पूर्ण वर्ष की प्रातःकाल की प्रार्थना की
विधि यहां समाप्त भई ॥

सन्ध्या काल की प्रार्थना की विधि

बरस के प्रतिदिन के लिये ॥

सन्ध्याकाल की प्रार्थना के आरम्भ में सेवक शास्त्र के इन नीचे लिखे हुए वाक्यों में से एक वा कई एक ऊंचे स्वर से पढ़े और तब जो इन वाक्यों के अनन्तर लिखा हुआ है उसे कहे ॥

जब दुष्ट अपनी दुष्टता से जो उसने किई है फिरे और जो बात न्याय और धर्म्म की है उसे करे तब वह अपने प्राण को जीता रक्खेगा । यहिज्केल् १८ । २७ ॥

मैं अपने अपराधों को जानता हूं और मेरा पाप निरन्तर मेरे साम्हने है । स्तोत्र ५१ । ३ ॥

मेरे पापों से अपना मुंह छिपा और मेरे सब अधर्म्मों को मिटा दे । स्तोत्र ५१ । ६ ॥

ईश्वर के बलिदान चूर्ण आत्मा हैं हे ईश्वर तू चूर्ण और कुचले हृदय को तुच्छ न समझेगा । स्तोत्र ५१ । १० ॥

अपने वस्त्र नहीं पर अपने हृदय को फाड़ो और प्रभु अपने ईश्वर की ओर फिरो क्योंकि वह अनुग्राही और दयालु है क्रोध करने में धीमा दया में धनी और दुःख देने से पछताता है । योएल् २।१३ ॥

प्रभु हमारे ईश्वर में बहुत दया और क्षमा है यद्यपि हम उसके विरुद्ध उठे और हमने प्रभु अपने ईश्वर का कहना न माना कि जो व्यवस्थाएं उसने हमारे साम्हने रक्खीं उन पर चलते । दानिय्येल् ६।६,१०॥

हे प्रभु मेरी ताड़ना कर पर विचार से अपने कोप से नहीं न हो कि तू मुझे नाश कर डाले । यिर्मया १० । २४ । स्तोत्र ६ । १ ॥

संध्याकाल की प्रार्थना

पश्चात्ताप करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है। मत्तय ३।२॥

मैं उठ कर अपने पिता के पास जाऊंगा और उस से कहूंगा कि हे पिता मैंने स्वर्ग के विरुद्ध और तेरे साम्हने पाप किया है और अब इस योग्य नहीं कि तेरा पुत्र कहलाऊं। लूका १५।१८,१६॥

हे प्रभु अपने दास को न्याय स्थान में न लेजा क्योंकि कोई जीवता प्राणी तेरे साम्हने धर्म्मी न ठहरेगा। स्तोत्र १४३।२॥

यदि हम कहें कि हम निष्पाप हैं तो हम अपने को धोखा देते हैं और हम में सच्चाई नहीं पर यदि हम अपने पापों को अंगीकार करें तो वह ऐसा विश्वस्त और न्यायी है कि हमारे पापों को क्षमा करे और हम को सारे अधर्म्म से शुद्ध करे। १ योहानान् १।८,६॥

हे अति प्रिय भाइयो शास्त्र कई स्थलों में हम को उभारता है कि अपने नाना प्रकार के पापों और दुष्टता को स्वीकार और अंगीकार करें और उन के विषय में अपने स्वर्गीय पिता सर्वशक्तिमान् ईश्वर के साम्हने बहाना न करें और न उन्हें छिपावें पर नम्र दीन पश्चात्तापी और आज्ञाकारी मन से उन्हें मान लेवें जिस्तें उसकी अपार कृपा और दया से उन की क्षमा पावें। और यद्यपि हमें उचित है कि सर्वकाल ईश्वर के साम्हने नम्रता से अपने पापों को स्वीकार करें तथापि विशेष करके उस समय ऐसा करना उचित है जब हम इसलिये एकट्ठे होते हैं कि उसने जो जो बड़े उपकार हम पर किये हैं उनके लिये धन्यवाद करें उसकी अति योग्य स्तुति करें उस के अति पवित्र वचन को सुनें और जो जो वस्तु हमारे शरीर और आत्मा के लिये आवश्यक हैं उन को मांगें। इसलिये जितने यहां उपस्थित हो मैं सब से बिनती और प्रार्थना करता हूं कि शुद्धमन और नम्रवाणी से स्वर्गीय अनुग्रह के सिंहासन के साम्हने मेरे साथ होके मेरे पीछे पीछे कहो॥

साधारण पापांगीकार जिसे सारी मण्डली सेवक के पीछे पीछे कहे। सब घुटने टेकें।

सध्याकाल की प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् और अत्यन्त दयालु पिता। हमने पाप किया है। और खोई हुई भेड़ों के समान तेरे मार्गों से भटक गये हैं। हम अपने अपने मन के विचार और इच्छा के अनुसार बहुत ही चले हैं। हमने तेरी पवित्र व्यवस्थाओं का उल्लंघन किया है। जो हम को करना उचित था सो हमने नहीं किया। और जो हमें करना उचित न था सो हमने किया है। और हम में कुछ आरोग्य नहीं। परन्तु हे प्रभु। हम दुर्गत अपराधियों पर दया कर। हे ईश्वर। जो अपने पापों को मान लेते हैं उनको छोड़ दे। जो पश्चात्ताप करते हैं उन्हें फिर ग्रहण कर। अपनी उन प्रतिज्ञाओं के अनुसार। जो हमारे प्रभु येशू खीष्ट में मनुष्य जाति पर प्रगट किई गई हैं। और हे अत्यन्त दयालु पिता। उस के कारण यह वर दे। कि आगे को हम भक्ति धर्म्म और संयम से चलें। जिस्तें तेरे पवित्र नाम की महिमा होवे। आमेन्॥

पाप मोचन अर्थात पापों को क्षमा जिसे केवल प्रीष्ट खड़ा होके सुनावे। मण्डली के लोग घुटने टेके रहें

सर्वशक्तिमान् ईश्वर हमारे प्रभु येशू खीष्ट का पिता किसी पापी की मृत्यु नहीं चाहता वरना यह कि वह अपनी दुष्टता से फिरे और जीवे और उसने अपने सेवकों को यह अधिकार और आज्ञा दिई है कि उस के निज लोगों को जो पश्चात्ताप करते हैं उन के पापों का मोचन और क्षमा प्रगट करें और सुनावें। सो जितने सत्य पश्चात्ताप करते और उसके पवित्र सुसमाचार पर निष्कपट होके विश्वास करते हैं वह उन सब को क्षमा करता और छुटकारा देता है। इस कारण हम उससे विनती करें कि वह हमें सत्य पश्चात्ताप और अपना पवित्रात्मा देवे जिस्तें जो कुछ हम इस समय करते हैं उसे भावे और आगे को हमारा अवशिष्ट जीवन शुद्धता और पवित्रता से

बीते ऐसा कि अन्त को हम उसका अक्षय आनन्द प्राप्त करें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा ॥ आमेन् ॥

तब सेवक घुटने टेक कर प्रभु की प्रार्थना कहे। मण्डली के लोग भी घुटने टेके हुए उस को उसके साथ साथ कहें।

हे हमारे पिता। तू जो स्वर्ग में है। तेरा नाम पवित्र किया जावे। तेरा राज्य आवे' तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है पृथ्वी पर भी होवे' हमारी प्रतिदिन की रोटी आज हमें दे। और हमारे अपराधों को क्षमाकर। जैसे हमने भी अपने अपराधियों को क्षमा किया है। और हमें परीक्षा में न ला। परन्तु बुराई से बचा। क्योंकि राज्य और सामर्थ्य और महिमा युगान युग तेरीही है ॥ आमेन् ॥

तब वह यह भी कहे।

प्रीष्ट । हे प्रभु तू हमारे होठों को खोल ॥
उत्तर। तो हमारा मुंह तेरा गुणानुवाद करेगा ॥
प्रीष्ट । हे ईश्वर हमारे बचाने में शीघ्रता कर ॥
उत्तर। हे प्रभु शीघ्र हमारी सहायता कर ॥

यहां सब खड़े होवें और प्रीष्ट कहे।

पिता की और पुत्र की। और पवित्रात्मा की महिमा होवे ॥
जैसी आदि में थी और अब है। और सदा वरन युगानयुग रहेगी ॥—आमेन् ॥
प्रीष्ट । प्रभु की स्तुति करो ॥
उत्तर। प्रभु के नाम की स्तुति होवे ॥

संध्याकाल को प्रार्थना

तब स्तोत्र जिस क्रम से ठहराये गये हैं उसी क्रम से कहे वा गाये जावें तब पुरानीबाचा में से ठहराया हुआ पाठ पढ़ाजावे इस के अनन्तर धन्य कुमारी मिर्याम् का स्तोत्र भाषा में जैसे नीचे लिखा हुआ है कहा वा गाया जावे ।

धन्य कुमारी मिर्याम् का स्तोत्र

प० लूका १।४६ ।

मेरा जीव प्रभु की बड़ाई करता है। और मेरा आत्मा मेरे त्राता ईश्वर से आनन्दित भया ॥

क्योंकि उसने अपनी दासी की छोटाई पर । दृष्टि किई है ॥

क्योंकि देखो अब से लेके सारी पीढ़ियां मुझे धन्य कहेंगी । क्योंकि शक्तिमान् ने मेरे साथ बड़े बड़े कार्य्य किये हैं । और उसका नाम पवित्र है ॥

और उस की दया उस के डरवैयों पर। पीढ़ी से पीढ़ी लों बनी रहती है ॥

उसने अपना बाहुबल प्रगट किया । उसने अभिमानियों को उनके मन के बिचारों में छिन्न भिन्न किया है ॥

उसने अधिकारियों को उन के सिंहासनों पर से उतार दिया । और छोटों को उन्नत किया है ॥

उसने भूखों को उत्तम बस्तुन से तृप्त किया । और धनवन्तों को छूछे हाथ निकाल दिया है ॥

उसने अपने सेवक यिस्राएल् को सम्भाल लिया । कि जैसे उसने हमारे पुरखाओं से कहा था ॥

अब्राहाम् और उसके वंश के निमित्त । अपनी दया को सदा के लिये स्मरण करे ॥

पिता की और पुत्र की । और पवित्रात्मा की महिमा होवे ॥
जैसी आदि में थी और अब है। और सदा वरन युगानयुग रहेगी॥ आमेन्॥

संध्याकाल की प्रार्थना

अथवा यह स्तोत्र परन्तु मास के १९ वें दिन जब वह स्तोत्रों के क्रम में पढ़ा जाता है तब यहां न पढ़ा जावे ।

स्तोत्र ९८ ।

प्रभु के लिये नया गीत गाओ क्योंकि उसने आश्चर्य्य कर्म्म किये हैं । उसके दहिने हाथ और उसकी पवित्र भुजाने उसके लिये त्राण सिद्ध किया है ॥

प्रभु ने अपना त्राण विदित किया । उसने अन्यजातियों की दृष्टि में अपना धर्म्म प्रगट किया है ॥

उसने यिस्राएल् के घर के लिये अपनी दया और विश्वस्तता स्मरण किई । पृथिवी के सब अन्त देशों ने हमारे ईश्वर का त्राणदेखा है ॥

हे सारी पृथिवी के लोगो प्रभु के लिये ऊंचे स्वर से गाओ । पुकारो ललकारो और स्तुतिगान करो ॥

प्रभु के लिये बीणा बजा के स्तुतिगान करो । बीणा बजा के स्तुतिगान का शब्द करो ॥

तुरहियां और नरसिंहे फूंक के । प्रभु महाराज के साम्हने आनन्द से ललकारो ॥

समुद्र और उसकी भरपूरी गरजे । जगत और उसके बासी महाशब्द करें ॥

महानद तालियां बजावें । पहाड़ मिल के ऊंचे स्वर से गावें ॥

प्रभु के साम्हने क्योंकि वह पृथिवी का न्याय करने आता है । वह जगत का धर्म्म से और लोकगणों का सच्चाई से न्याय करेगा ॥

पिता की और पुत्र की । और पवित्रात्मा की महिमा होवे ॥
जैसी आदि में थी और अब है । और सदा वरन युगानयुग रहेगी ॥ आमेन्

तब नई बाचा में से ठहराया हुआ पाठ पढ़ा जावे और उसके अनन्तर शिमोन् का स्तोत्र भाषा में जैसे नीचे लिखा है कहा वा गाया जावे

संध्याकाल की प्रार्थना।

शिमोन् का स्तोत्र।

प० लूका २।२९

हे स्वामी अब तू अपने दास को। अपने बचन के अनुसार शान्ति से बिदा करता है॥

क्योंकि मेरी आंखों ने। तेरे त्राण को देखा है॥

जिस को तू ने सब जातियों के साम्हने। सिद्ध किया है॥

अन्यजातियों के प्रकाशित करने के लिये ज्योति। और अपने निज लोकगण यिस्रायल् की महिमा॥

पिता की और पुत्र की। और पवित्रात्मा की महिमा होवे॥

जैसी आदि में थी और अब है। और सदा वरन युगान युग रहेगी॥—आमेन्॥

अथवा यह स्तोत्र परन्तु मास के १२ वें दिन यह काम में न आवे।

स्तोत्र ६७।

ईश्वर हम पर करुणा करे और हमको आशीष देवे। और अपने मुंह का प्रकाश हम पर चमकावे॥

जिस्तें तेरा मार्ग पृथिवी पर। तेरा त्राण सब जातियों में जाना जावे॥

हे ईश्वर लोकगण तेरा धन्यवाद करें। जातिगण सब के सब तेरा धन्यवाद करें॥

लोकगण हर्ष करें और ऊंचे स्वर से गावें। क्योंकि तू धर्म्म से जातिगण का न्याय और पृथिवी पर लोकगणों की अगुवाई करेगा॥

हे ईश्वर लोकगण तेरा धन्यवाद करें। जातिगण सब के सब तेरा धन्यवाद करें॥

भूमिने अपनी उपज दिई है। ईश्वर हमारा ईश्वर हमें आशीष देवेगा॥

संध्याकाल की प्रार्थना

ईश्वर हम को आशीष देगा। और पृथिवी के सब अन्तदेश उसका भय मानेंगे॥

पिता की और पुत्र की। और पवित्रात्मा की महिमा होवे॥
जैसी आदि में थी और अब है। और सदा वरन युगानयुग रहेगी॥—आमेन्॥

तब सेवक और मण्डली खड़े होके प्रेरितों का विश्वास बचन गावें वा कहें।

मैं विश्वास रखता हूं ईश्वर सर्वशक्तिमान् पिता पर। जो स्वर्ग और पृथ्वी का सिरजनहार है॥

और येशू ख्रीष्ट पर। जो उसका एकलौता पुत्र और हमारा प्रभु है। वह पवित्रात्मा की शक्ति से गर्भ में आया। कुमारी मिर्याम् से जन्मा। पोन्त्य पीलात के अधिकार में दुःख भोगा। क्रूस पर चढ़ाया गया। मर गया। और समाधि में रक्खा गया। पाताल में उतर गया। तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा। स्वर्ग पर चढ़ गया। और सर्वशक्तिमान् ईश्वर पिता की दहिनी और बैठा है। वहां से वह जीवतों और मृतकों का न्याय करने को आनेहारा है॥

मैं विश्वास रखता हूं पवित्रात्मा पर। पवित्र कथोलिक एक्लेसिया पर पवित्रों की सहभागिता पर। पापमोचन पर। शरीर के पुनरुत्थान पर। और अनन्त जीवन पर। आमेन्॥

और इसके अनन्तर नीचे की प्रार्थनाएं कही जावें और सब भक्ति से घुटने टेकें। परन्तु सेवक पहले ऊंचे स्वर से यह कहे।

प्रभु तुम्हारे साथ रहे॥
उत्तर। और तेरे आत्मा के साथ भी॥

संध्याकाल की प्रार्थना

सेवक । प्रार्थना करें ॥
हे प्रभु हम पर दया कर ॥
हे ख्रीष्ट हम पर दया कर ॥
हे प्रभु हम पर दया कर ॥

तब सेवक और गायक लोग और मण्डली प्रभु की प्रार्थना ऊंचे स्वर से कहें ।

हे हमारे पिता । तू जो स्वर्ग में है । तेरा नाम पवित्र किया जावे । तेरा राज्य आवे । तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है पृथ्वी पर भी होवे । हमारी प्रतिदिन की रोटी आज हमें दे । और हमारे अपराधों को क्षमा कर । जैसे हमने भी अपने अपराधियों को क्षमा किया है । और हमें परीक्षा में न ला । परन्तु बुराई से बचा । आमेन् ॥

तब प्रीष्ट खड़ा होके कहे ।

हे प्रभु अपनी दया हम पर प्रगट कर ।
उत्तर । और अपना त्राण हमें दे ।
प्री० । हे प्रभु महारानी की रक्षा कर ।
उ० । और जब हम तुझे पुकारें कृपा करके हमारी सुन ॥
प्री० अपने सेवकों को धर्म्म का वस्त्र पहिना ॥
उ० और अपने चुने हुए लोगों को आनन्दित कर ॥
प्री० हे प्रभु अपने निज लोगों की रक्षा कर ॥
उ० । और अपने निज भाग को आशीष दे ॥
प्री० । हे प्रभु हमारे दिनो में मेल रहे ॥
उ० । क्योंकि तुझे छोड़ हे ईश्वर दूसरा कोई नहीं जो हमारे लिये लड़े ॥
प्री० । हे ईश्वर हमारे अन्तःकरण को शुद्ध कर ॥
उ० । और अपना पवित्रात्मा हम से न ले ले ॥

संध्याकाल की प्रार्थना

तब तीन प्रार्थनाएं कही जावें पहली उस दिन की दूसरी शान्ति के लिये तीसरी सब जोखिमों से रक्षा पाने के लिये जैसी नीचे लिखी हुई हैं। दूसरी और तीसरी प्रार्थनाएं सन्ध्याकाल की प्रार्थना में प्रतिदिन बिना छूटे कही जावें॥

संध्याकाल की प्रार्थना में दूसरी प्रार्थना॥

हे ईश्वर सब पवित्र मनोरथ सब उत्तम बिचार और सब धर्म्म के कर्म्म तेरीही ओर से होते हैं जो शान्ति संसार नहीं दे सक्ता सोई अपने दासों को दे कि हमारे हृदय तेरी आज्ञाओं के पालने में लवलीन रहें और हम अपने शत्रुओं के डर से तेरे हाथ की रक्षा पाकर अपना समय विश्राम और चैन से बितावें हमारे त्राता येशू खीष्ट के पुण्य के द्वारा। आमेन्॥

तीसरी प्रार्थना सब जोखिमों से रक्षा पाने के लिये॥

हे प्रभु हम तुझ से बिनती करते हैं हमारे अंधकार को प्रकाश कर दे और अपनी बड़ी दया से इस रात के सारे जोखिमों से हमारी रक्षा कर अपने एकलौते पुत्र हमारे त्राता येशू खीष्ट के प्रेम के कारण से। आमेन्॥

श्रीमती महारानी के लिये प्रार्थना॥

हे प्रभु हमारे स्वर्गीय पिता महान् और शक्तिमान् राजाधिराज प्रभुओं के प्रभु भूपतिन का केवल तूही अध्यक्ष है तू अपने सिंहासन पर से सब पृथ्वी बासियों पर दृष्टि करता है। हम सारे अन्तःकरण से विनती करते हैं कि तू हमारी अति अनुग्राहिणी महास्वामिनी महारानी विक्टोरिया पर अनुग्रह की दृष्टि कर और अपने पवित्रात्मा के अनुग्रह से उसको ऐसा परिपूर्ण कर कि वह अपना मन तेरी इच्छा

की ओर सदा लगाए रहे और तेरे मार्ग पर चले उसको स्वर्गीय वर-दानों से भरपूर कर उसको आरोग्य और कुशल क्षेम से चिरंजीव रख उस को ऐसा सामर्थ्य दे कि वह अपने सारे शत्रुओं पर जयवन्त होवे और अन्त को इस जीवन के अनन्तर वह सदा का आनन्द मंगल प्राप्त करे हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

राजकुटुम्ब के लिये प्रार्थना॥

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर सारी भलाई के सोते हम नम्रता से विनती करते हैं कि तू अल्बर्ट एड्वर्ड युवराज युवराज पत्नी और समस्त राजकुटुम्ब को आशीष दे उनको अपने पवित्रात्मा से भरपूर कर अपने स्वर्गीय अनुग्रह से उन्हें धनी कर सारे मंगल से उन्हें भाग्य-वान कर और अपने सदा के राज्य में पहुंचा हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

सेवकों और मण्डलियों के लिये प्रार्थना॥

हे सर्वशक्तिमान् और सनातन ईश्वर केवल तूही बड़े बड़े अद्भुत काम करता है हमारे बिशपों और पालकों पर और जितनी मण्ड-लियां उनके हाथ में सौम्पी गई हैं उन पर अपने अनुग्रह का आरोग्य दायक आत्मा ऊपर से भेज और जिस्तें वे सचमुच तुझे प्रसन्न रक्खें उन पर अपनी आशीष की ओस सदा गिराया कर हे प्रभु हमारे पक्ष-वादी और मध्यस्थ येशू खीष्ट की प्रतिष्ठा के लिये यह वर दे। आमेन्॥

पवित्र खुसोस्तोम की प्रार्थना॥

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू ने हम को ऐसा अनुग्रह दिया है कि हमने इस समय एक मन होके तुझ से अपनी साधारण बिनतियां

किई हैं और तू प्रतिज्ञा करता है कि जब दो वा तीन मेरे नाम पर एकट्ठे होवें तब मैं उनका मांगा बर देऊंगा । अब हे प्रभु अपने दासों के मनोरथ और बिनतियां इस रीति से पूर्णकर जिस से उनका परम लाभ होवे इस लोक में अपने सत्य का ज्ञान और परलोक में अनन्त जीवन हमें दान दे । आमेन् ॥

२ कोरिन्थियों १३ ॥ १४ ॥

हमारे प्रभु येशू खीष्ट का अनुग्रह और ईश्वर का प्रेम और पवित्रात्मा की सहभागिता हम सब के संग सर्वदा रहे । आमेन् ॥

सम्पूर्ण वरस की सन्ध्याकाल की प्रार्थना की
विधि यहां समाप्त भई ।

हमारे खीष्टीय विश्वास के इस अंगीकार को जो पवित्र अथनस्य का विश्वास वचन करके प्रसिद्ध है

इन तेवहारों में अर्थात् प्रभु के जन्म दिन एपिफनिया पवित्र मत्तित्या के दिन पुनरुत्थान के दिन स्वर्गारोहण के दिन पेन्तेकोष्टा के दिन पवित्र योहानान् बप्तिस्ता पवित्र याकोब् प० बर्त्तलमै प० मत्तय प० शिमोन् और यहूदा और प० अन्द्रिया के दिनों में और त्रय के इतवार को प्रातःकाल की प्रार्थना में प्रेरितों के विश्वास बचन की सन्ती सेवक और मण्डली खड़े होके गावें वा कहें।

जो कोई त्राण का अधिकारी बना रहना चाहता है। उसको सब बातों से पहिले अवश्य है कि कथोलिक विश्वास को धरे रहे ॥

इस विश्वास को जो कोई सम्पूर्ण और अविकृत न रक्खे। सो निःसन्देह सर्वदा के लिये नष्ट होगा ॥

और कथोलिक विश्वास तो यह है। कि हम त्रय में एक ईश्वर का और एक में त्रय की आराधना करें ॥

न पुरुषों को मिश्रित करें। न तत्त्व का विभाग करें ॥

क्योंकि पिता भिन्न पुरुष, पुत्र भिन्न पुरुष। पवित्रात्मा भिन्नपुरुष है ॥

परन्तु पिता और पुत्र और पवित्रात्मा मिल के एक ही ईश्वर है। उन की महिमा तुल्य उनका प्रताप तुल्य रीति से सनातन ॥

जैसा पिता है वैसाही पुत्र है। और वैसाही पवित्रात्मा भी है॥

पिता अस्टष्ट पुत्र अस्टष्ट। पवित्रात्मा अस्टष्ट है ॥

पिता असीम पुत्र असीम। पवित्रात्मा असीम है ॥

पिता सनातन पुत्र सनातन। पवित्रात्मा सनातन है ॥

तिस पर भी तीन सनातन नहीं। पर एकही सनातन है ॥

ऐसेही तीन अस्टष्ट नहीं न तीन असीम। पर एकही अस्टष्ट और एकही असीम है ॥

पवित्र अथनस्य का विश्वास बचन

उसी प्रकार से पिता सर्वशक्तिमान् पुत्र सर्वशक्तिमान् । और पवित्रात्मा सर्वशक्तिमान् है ॥

तिस पर भी तीन सर्वशक्तिमान् नहीं । पर एकही सर्बशक्तिमान् है ॥

ऐसेही पिता ईश्वर पुत्र ईश्वर । और पवित्रात्मा ईश्वर है ॥

तिस पर भी तीन ईश्वर नहीं । पर एकही ईश्वर है ॥

ऐसेही पिता प्रभु पुत्र प्रभु । और पवित्रात्मा प्रभु है ॥

तिस पर भी तीन प्रभु नहीं । पर एकही प्रभु है ॥

क्योंकि जिस प्रकार से खीष्टीय सत्य के कारण हम को मानना पड़ता है । कि प्रत्येक पुरुष एक एक करके ईश्वर और प्रभु है ॥

उसी प्रकार से कथोलिक धर्म्म यह कहना बरजता है । कि तीन ईश्वर अथवा तीन प्रभु हैं ॥

पिता किसी से कृत नहीं भया । न स्टष्ट न जनित ॥

पुत्र केवल पिताही से है । न कृत न स्टष्ट परन्तु जनित ॥

पवित्रात्मा पिता और पुत्र से है । न कृत न स्टष्ट न जनित पर निकलता है ॥

सो तीन पिता नहीं पर एकही पिता है । तीन पुत्र नहीं पर एकही पुत्र है तीन पवित्रात्मा नहीं पर एकही पवित्रात्मा है ॥

और इस त्रय में आगे पीछे कुछ नहीं । छोटा बड़ा कुछ नहीं ॥

परन्तु सम्पूर्ण तीनों पुरुष आपस में एक दूसरे की नाईं सनातन । और एक दूसरे के तुल्य हैं ॥

ऐसा कि सब बातों में जैसा कि ऊपर कहा गया है । त्रय में एक की और एक में त्रय की आराधना करना चाहिये ॥

सो जो कोई त्राण का अधिकारी बना रहना चाहता है । वह त्रय के विषय में ऐसाही समझे ॥

फिर सदा के त्राण के लिये यह भी अवश्य है । कि वह हमारे प्रभु येशू खीष्ट के शरीर धारण के विषय में पूर्ण विश्वास रक्खे ॥

और यथार्थ विश्वास यह है कि हम विश्वास और अंगीकार करें ।

पवित्र अथनस्य का विश्वास बचन

कि हमारा प्रभु येशू खीष्ट जो ईश्वर का पुत्र है सो ईश्वर और मनुष्य है ॥

ईश्वर है पिता के तत्त्व से काल से पहिले जनित। और मनुष्य है अपनी माता के तत्त्व से काल में उत्पन्न ॥

पूर्ण ईश्वर और पूर्ण मनुष्य है। बुद्धियुक्त जीव और मानुषी शरीर से बना हुआ ॥

ईश्वरत्व के अनुसार वह पिता के तुल्य है। और मनुष्यत्व के अनुसार पिता से छोटा ॥

और यद्यपि वह ईश्वर और मनुष्य भी है। तौभी दो नहीं पर एकही खीष्ट है ॥

इस प्रकार से तो एक नहीं कि ईश्वरत्व शरीर बन गया। पर इस प्रकार से कि मनुष्यत्व ईश्वर में ले लिया गया ॥

सर्वथा एक है। तत्त्व के मिश्रित होने से नहीं पर पुरुष की एकता से ॥

क्योंकि जैसे बुद्धियुक्त जीव और शरीर एक मनुष्य होता है। वैसेही ईश्वर और मनुष्य एक खीष्ट है ॥

जिस ने हमारे त्राण के लिये दुःख भोगा। पाताल में उतर गया तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा ॥

स्वर्ग पर चढ़ गया सर्वशक्तिमान् ईश्वर पिता की दहिनी ओर बैठा है। वहां से वह जीवतों और मृतकों का न्याय करने को आनेहारा है ॥

उसके आगमन पर सब मनुष्यों को अपनी अपनी देह के साथ उठना। और अपने अपने कर्म्मों का लेखा देना पड़ेगा ॥

और जिन्होंने सुकर्म्म किये सो सदा के जीवन में। और जिन्होंने कुकर्म्म किये सो सदा की अग्नि में जावेंगे ॥

कथोलिक विश्वास यही है। जिसका यदि कोई दृढ़ विश्वास न रक्खे तो वह त्राण का अधिकारी बना नहीं रह सकेगा ॥

पिता की और पुत्र की। और पवित्रात्मा की महिमा होवे ॥
जैसी आदि में थी और अब है। और सदा वरन युगानयुग रहेगी। आमेन्॥

लितनिया ॥

लितनिया अर्थात् साधारण बिनती जो इतवार और बुध और शुक्रवार को प्रातःकाल की प्रार्थना के अनन्तर और जब कभी बिशप इसकी आज्ञा देवे तब भी गाई वा कही जावे।

हे ईश्वर पिता स्वर्गबासी। हम दुर्गत पापियों पर दया कर ॥

हे ईश्वर पिता स्वर्गबासी। हम दुर्गत पापियों पर दया कर ॥

हे ईश्वर पुत्र जगत्त्राता। हम दुर्गत पापियों पर दया कर ॥

हे ईश्वर पुत्र जगत्त्राता। हम दुर्गत पापियों पर दया कर ॥

हे ईश्वर पवित्रात्मा तू जो पिता और पुत्र से निकलता है। हम दुर्गत पापियों पर दया कर ॥

हे ईश्वर पवित्रात्मा तू जो पिता और पुत्र से निकलता है। हम दुर्गत पापियों पर दया कर ॥

हे पवित्र धन्य और तेजस्वी त्रय तीन पुरुष और एक ईश्वर। हम दुर्गत पापियों पर दया कर ॥

हे पवित्र धन्य और तेजस्वी त्रय तीन पुरुष और एक ईश्वर। हम दुर्गत पापियों पर दया कर ॥

हे प्रभु हमारे अपराधों को स्मरण न कर और न हमारे पुरखाओं के अपराधों को और न हमारे पापों का पलटा ले। हे दयालु प्रभु हम को छोड़ दे अपने निज लोगों को जिन्हें तू ने अपना अनमोल लहू देके छुड़ा लिया है छोड़ दे और सदा लों हम से कुपित न रह ॥

हे दयालु प्रभु हमें छोड़ दे ॥

सारी बुराई और हानि से पाप से दुष्टात्मा के छलबल और हल्लों से अपने कोप और सदा के दण्ड से ॥

हे दयालु प्रभु हमें बचा ॥

मन के अंधेपन से अहंकार से व्यर्थ महिमा की अभिलाषा और कपट से डाह बैर दुष्टबुद्धि और सब प्रकार की अप्रीति से ॥

हे दयालु प्रभु हमें बचा ॥

लितनिया

व्यभिचार और दूसरे सब मृत्युकारक पाप से और संसार शरीर और दुष्टात्मा की सारी माया से ॥

हे दयालु प्रभु हमें बचा ॥

बिजली और आंधी से मरी और अकाल से लड़ाई और हत्या और अचानक मृत्यु से ॥

हे दयालु प्रभु हमें बचा ॥

बलवे कपटप्रबन्ध और राजद्रोह से झूंठी शिक्षा पाखण्ड और फूट से मन की कठोरता और अपने बचन और आज्ञा के तुच्छ समझने से ॥

हे दयालु प्रभु हमें बचा ॥

अपने पवित्र शरीरधारण के रहस्य के कारण अपने पवित्र जन्म और परिच्छेद के कारण अपने बप्तिस्मा उपवास और परीक्षा के कारण ॥

हे दयालु प्रभु हमें बचा ॥

अपनी अति व्याकुलता और लहू के पसीने के कारण अपने क्रूस और दुःख भोगके कारण अपनी बहुमूल्य मृत्यु और समाधि में रक्खे जाने के कारण अपने महिमायुक्त पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के कारण और पवित्रात्मा के आगमन के कारण ॥

हे दयालु प्रभु हमें बचा ॥

हमारे प्रत्येक दुःख के समय हमारे प्रत्येक सुख के समय मरण-काल और न्याय के दिन में ॥

हे दयालु प्रभु हमें बचा ॥

हे प्रभु परमेश्वर हम पापी तुझ से बिनती करते हैं हमारी सुन और कृपा करके अपनी पवित्र सार्व एक्लीसिया की सुमार्ग पर प्रेरणा और अगुवाई कर ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके अपनी दासी विक्टोरिया हमारी परम अनुग्राहिणी महा-

लितनिया

रानी और शासनकर्त्ता को अपनी यथोचित आराधना और चाल चलन की धार्मिकता और पवित्रता में रख और दृढ़ कर ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके उसके मन को अपने बिश्वास और भय और प्रेम की ओर तत्पर रख और ऐसा कर कि वह सदा तुझ पर भरोसा रक्खे और सब बातों में तेरी प्रतिष्ठा और महिमा के लिये यत्न करे ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके उसके सब शत्रुओं से उसकी आड़ हो और उसका रक्षक रह और उन पर उसे जयवन्त कर ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके अल्बर्ट एड्वर्ड युवराज और युवराजपत्नी और समस्त राजकुटुम्ब को आशीष दे और कुशल से रख ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके सब बिशपों और प्रीष्टों और डीकनों को अपने बचन के यथार्थ ज्ञान और समझ से प्रकाशित कर और ऐसा कर कि वे अपने उपदेश से उसको प्रचारें और अपनी चाल चलन से उसको प्रगट करें ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके राजमंत्रियों और सब उच्चपदधारियों को अनुग्रह बुद्धि और समझ से परिपूर्ण कर ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके इस देश के वैसराय गवर्नरों और जजों की रक्षा कर और अनुग्रह करके अपने परामर्श से उनकी अगुवाई कर ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके मजिष्ट्रेटों को आशीष दे और उनकी रक्षा कर और उन पर ऐसा अनुग्रह कर कि वे न्याय करें और सत्य को स्थिर रक्खें ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

लितनिया

कृपा करके अपने सब लोगों को आशीष दे और उनकी रक्षा कर ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके सब जातियों को एकता संधि और मेल मिलाप प्रदान कर ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके हम को ऐसा मन दे कि हम तुझ से प्रेम रक्खें और तेरा भय मानें और तेरी आज्ञाओं के अनुसार यत्न करके चलें ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके अपने सब लोगों में अपना अनुग्रह ऐसा बढ़ा कि वे तेरा बचन नम्रता से सुनें और मन के शुद्ध भाव से उसको अंगीकार करें और आत्मा के फल फलें ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके सब भटके और भरमाये हुओं को सत्य के मार्ग पर फेर ले आ ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके स्थिरों को दृढ़ कर कच्चे मनवालों को ढाढ़स दे और सम्भाल गिरे हुओं को उठा और अन्त में सातान् को हमारे पांव तले कुचल डाल ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके जितने जोखिम में हैं उन्हें सम्भाल जो संकट में हैं उनकी सहाय कर और जो बिपत्ति में हैं उनको शान्ति दे ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके जल थल के सब यात्रियों की सब स्त्रियों की जिन्हें पीरें लगी हैं सब रोगियों और नन्हे बच्चों की रक्षा कर और सब बन्धुओं पर और शत्रुओं के बश में पड़े हुए लोगों पर अपनी करुणा प्रगट कर ॥

लिर्तानिया

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके पितृहीन बालकों और विधवाओं और सब अनाथों और अंधेर उठानेहारों की आड़ हो और उनकी सुधि ले ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके समस्त मनुष्यजाति पर दया कर ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके हमारे बैरियों सतानेहारों और अपवाद लगानेहारों को क्षमा कर और उनके मन को फेर ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके भूमि की नाना भांति की उपज को उपजा के हमारे लिये उनकी ऐसी रखवाली कर कि समय पर वे हमारे काम आवें ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके हमें सच्चा पश्चात्ताप दे हमारे सब पाप निश्चिन्तता और अज्ञानता क्षमा कर और अपने पवित्रात्मा के अनुग्रह से हमें ऐसा परिपूर्ण कर कि हम अपनी चाल चलन तेरे पवित्र बचन के अनुसार सुधारें ॥

हे दयालु प्रभु हम बिन्ती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

हे ईश्वर के पुत्र हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

हे ईश्वर के पुत्र हम विनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

हे ईश्वर के मेम्ने तू जो जगत के पाप उठा ले जाता है ॥

अपनी शान्ति हमें दे ॥

हे ईश्वर के मेम्ने तू जो जगत के पाप उठा ले जाता है ॥

हम पर दया कर ॥

हे ख्रीष्ट हमारी सुन ॥

हे ख्रीष्ट हमारी सुन ॥

हे प्रभु हम पर दया कर ॥

लितनिया

हे प्रभु हम पर दया कर ॥
हे ख्रीष्ट हम पर दया कर ॥
हे ख्रीष्ट हम पर दया कर ॥
हे प्रभु हम पर दया कर ॥
हे प्रभु हम पर दया कर ॥

तब ख्रीष्ट मण्डली समेत प्रभु की प्रार्थना कहे।

प्रभु की प्रार्थना

हे हमारे पिता। तू जो स्वर्ग में है। तेरा नाम पवित्र किया जावे। तेरा राज्य आवे। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है पृथ्वी पर भी होवे। हमारी प्रतिदिन की रोटी आज हमें दे। और हमारे अपराधों को क्षमा कर। जैसे हमने भी अपने अपराधियों को क्षमा किया है। और हमें परीक्षा में न ला। परन्तु बुराई से बचा। आमेन् ॥

प्रो० हे प्रभु हमारे पापों के अनुसार हम से व्यवहार न कर ॥
उ० और न हमारे अधर्म्मों के अनुसार हमें प्रतिफल दे ॥

प्रार्थना करें ॥

हे ईश्वर दयालु पिता तू चूर्ण मन की हाय और शोक करनेहारों की अभिलाषा को तुच्छ नहीं जानता जब कभी दुःख और कष्ट का भार हम पर पड़े तब जो जो प्रार्थना हम तेरे आगे करें उनमें दया करके उपस्थित हो और अनुग्रह करके हमारी सुन कि दुष्टात्मा वा मनुष्य अपने छल और चतुराई से हमारी बुराई के लिये जितने यत्न करें सब व्यर्थ निकलें और तेरी दया के प्रबन्ध से छिन्न भिन्न हो जावें कि हम तेरे दास किसी के सताने से हानि न उठाके तेरी पवित्र एक्लेसिया में निरन्तर तेरा धन्यवाद करते रहें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा ॥

लितानिया

हे प्रभु उठ हमारी सहाय कर और अपने नाम के लिये हमें छुड़ा ॥

हे ईश्वर हमने अपने कानों सुना और हमारे पुरखाओं ने हम से वर्णन किया कि तूने उनके दिनों में और उनसे पहिले प्राचीन-काल में क्याही अनूप कार्य्य किये थे ॥

हे प्रभु उठ हमारी सहाय कर और अपनी प्रतिष्ठा के लिये हमें छुड़ा ॥

पिता की और पुत्र की । और पवित्रात्मा की महिमा होवे ॥

उ॰ जैसी आदि में थी और अब है । और सदा वरन युगानयुग रहेगी । आमेन् ॥

हे ख्रीष्ट हमारे शत्रुओं से हमारी आड़ हो ॥

हमारे कष्टों पर अनुग्रह की दृष्टि कर ॥

करुणा करके हमारे मन के शोक को देख ॥

दया करके अपने निज लोगों के पापों को क्षमा कर ॥

हमारी प्रार्थनाओं को अनुग्रह करके सुन ॥

हे दाविद् के पुत्र हम पर दया कर ॥

हे ख्रीष्ट अब और सदा कृपा करके हमारी सुन ॥

हे ख्रीष्ट अनुग्रह करके हमारी सुन हे प्रभु ख्रीष्ट अनुग्रह करके हमारी सुन ॥

प्रीष्ट हे प्रभु तेरी दया हम पर होवे ॥

उत्तर कि तुझी से हमारी आशा है ॥

प्रार्थना करें ॥

हे पिता हम नम्रता से बिनती करते हैं हमारी दुर्बलता पर दया की दृष्टि कर और जिन दुःखों के भोगने के हम न्याय के अनु-सार अति योग्य ठहरे हैं अपने नाम की महिमा के लिये उन सब को हम से टाल दे और यह वर दे कि हम अपने सब कष्टों में तेरी दया पर अपना पूरा आसरा और भरोसा रक्खें और पवित्र और शुद्ध चाल

चलन से निरन्तर तेरी सेवा करते रहें जिस्तें तेरी प्रतिष्ठा और महिमा होवे हमारे एकही मध्यस्थ और पक्षवादी हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पवित्र खुसोस्तोम की प्रार्थना।

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू ने हम को ऐसा अनुग्रह दिया है कि हम ने इस समय एक मत होके तुझ से अपनी साधारण विनतियां किई हैं और तू प्रतिज्ञा करता है कि जब दो वा तीन मेरे नाम पर एकट्ठे होवें तब मैं उनका मांगा वर देऊंगा अब हे प्रभु अपने दासों के मनोरथ और विनतियां इस रीति से पूर्ण कर जिस से उनका परम लाभ होवे इस लोक में अपने सत्य का ज्ञान और परलोक में अनन्त-जीवन हमें दान दे। आमेन्॥

२ कोरिन्थियों १३॥१४॥

हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट का अनुग्रह और ईश्वर का प्रेम और पवित्रात्मा की सहभागिता हम सब के संग सर्वदा रहे। आमेन्॥

यहां लितनिया समाप्त हुई॥

प्रार्थनाएं और धन्यवाद

जो लितनिया अथवा प्रातःकाल और संध्याकाल की प्रार्थना की दो अन्तिम प्रार्थनाओं से पहिले नाना विशेष अवसरों में काम आवें ।

प्रार्थनाएं ॥

वृष्टि के लिये ।

हे ईश्वर स्वर्गीय पिता तूने अपने पुत्र येशू ख्रीष्ट के द्वारा अपने राज्य और उस के धर्म्म के सब ढूंढ़नेहारों से प्रतिज्ञा किई है कि जो कुछ उनके पोषण के लिये आवश्यक हो सो उन्हें मिलेगा हम विनती करते हैं हमारी इस आवश्यकता के समय में ऐसे परिमाण से जल बरसा कि हम अपने सुख और तेरी प्रतिष्ठा के लिये भूमि की उपज को प्राप्त करें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

आकाश की फरछाई के लिये ।

हे सर्वशक्तिमान् प्रभु परमेश्वर तू ने एक समय मनुष्य के पाप के कारण आठ जनों को छोड़ सारे संसार को डुबा दिया और पीछे अपनी बड़ी दया से प्रतिज्ञा किई कि फिर कभी उसको इस प्रकार से नाश न करूंगा हम नम्रता से बिनती करते हैं कि यद्यपि हम अपने अधर्म्मों के कारण अति वृष्टि के दण्ड के योग्य हुए हैं तथापि हमने जो सच्चा पश्चात्ताप किया है इसलिये आकाश को ऐसा फरछा कर कि हम समय पर भूमि की उपज को प्राप्त करें और तेरे दण्ड देने से अपनी चाल चलन सुधारना और तेरी कोमलता से तेरी स्तुति और महिमा करना सीखें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन् ॥

महंगी और अकाल के समय ।

हे ईश्वर स्वर्गीय पिता तेरेही वरदान से जल बरसता और

भूमि फलवन्त होती है और पशुओं की वृद्धि और मछलियों की बढ़ती होती है हम विनती करते हैं अपने निज लोगों के क्लेशों पर दृष्टि कर और यह वर दे कि जो महंगी और अकाल हमारे अधर्म्म के कारण हम पर ठीक न्याय की रीति से आ पड़ा है सो तेरी करुणा और दया से सस्ती और सुकाल होजावे हमारे प्रभु येशू खीष्ट के प्रेम के कारण जिसकी तेरे और पवित्रात्मा के समेत सारी प्रतिष्ठा और महिमा अब और सदा होती रहे । आमेन् ॥

अथवा यह ।

हे ईश्वर दयालु पिता तूने एलीशा प्रवक्ता के समय शोमरोन में बड़ी महंगी और अकाल को अचानक सस्ती और सुकाल कर दिया हम पर दया कर कि हम जो वैसाही क्लेश पाने में अपने पापों का दण्ड भोग रहे हैं उसी प्रकार से समय पर इस दुःख से छुटकारा पावें । अपने स्वर्गीय आशीर्वाद से पृथ्वी की उपज को बढ़ा और यह वर दे कि हम तेरी अत्यंत उदारता के दान पाके उनको तेरी महिमा और दरिद्रों की सहायता और अपने सुख के लिये काम में ले आवें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

लड़ाई और बलवे के समय ।

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर समस्त राजाओं के राजा और सब बस्तुन के शासनकर्त्ता तेरे सामर्थ्य का साम्हना कोई प्राणी नहीं कर सकता पापियों को उचित दण्ड देना और सत्य पश्चात्ताप करनेहारों पर दया करना तेराही काम है हम नम्रता से विनती करते हैं हम को हमारे शत्रुन के हाथ से बचा और छुड़ा उनके अभिमान को दबा उनकी दुष्टबुद्धि को घटा और उनकी युक्तियों को व्यर्थ कर दे कि हम तेरी

रक्षा की ढाल के द्वारा सदा सब जोखिमों से सुरक्षित रह के तेरी महिमा करें कि तूही सारे विजय का दाता है तेरे एकलौते पुत्र हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के पुण्य के द्वारा। आमेन् ॥

मरी वा किसी रोग के फैलने के समय।

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर जब तेरे निज लोग मरुभूमि में हठ करके मोशे और अहरोन् के विरोध में उठे तब तूने अपने कोप से उन पर मरी भेजी और फिर दावीद् राजा के समय सत्तर सहस्र मनुष्यों को मरी भेज के नाश किया और फिर भी अपनी दया को स्मरण करके शेष लोगों को बचाया हम दुर्गत पापियों पर जिन पर अब बड़ा रोग और मरी पड़ी है दया कर कि जिस भान्ति से तूने प्रायश्चित ग्रहण करके नाशक दूत को दण्ड देने से हाथ उठाने की आज्ञा दिई थी उसी भान्ति तू अब कृपा करके यह मरी और भयानक रोग हम से दूर कर हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन् ॥

यह प्रार्थना।

एम्बर के सप्ताहों के प्रतिदिन उनके लिये कही जावे जो किसी पवित्र पद पर स्थापित होनेहारे हैं ·

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर हमारे स्वर्गीय पिता तूने अपने प्रिय पुत्र के बहुमूल्य लहू से एक सार्व एक्लेसिया अपने लिये मोल लिई है उस पर दया दृष्टि कर और इस समय अपने सेवक बिशपों के मन को जो तेरी झुण्ड के पालक हैं ऐसी प्रेरणा और अगुवाई कर कि वे किसी मनुष्य पर उतावली करके हाथ न रक्खें पर विश्वस्तता और विवेक से ऐसे योग्य जनों को चुन लेवें जो तेरी एक्लेसिया की पवित्र सेवकाई

में लगे रहें और जो किसी पवित्र कार्य्य पर स्थापन किये जावेंगे उनको अपना अनुग्रह और स्वर्गीय आशीर्वाद दे कि वे अपनी चाल और शिक्षा के द्वारा तेरी महिमा को प्रचारें और सब मनुष्यों के त्राण के लिये यत्न करें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

अथवा यह।

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर सब उत्तम पदार्थों के दाता तूने अपने ईश्वरीय प्रबन्ध से अपनी एक्लेसिया में भिन्न भिन्न पद ठहराये हैं हम नम्रता से विनती करते हैं कि जितने उस में किसी पद वा सेवकाई के लिये बुलाए जाने पर हैं उन्हें अपना अनुग्रह दे और उनको अपनी शिक्षा के सत्य से ऐसा परिपूर्ण और चाल चलन की निर्दोषता से ऐसा आभूषित कर कि वे तेरे सन्मुख विश्वस्तता से सेवा करें जिस्तें तेरे बड़े नाम की महिमा और तेरी पवित्र एक्लेसिया का लाभ होवे हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

एक प्रार्थना जो ऊपर की प्रार्थनाओं में से किसी के अनन्तर कही जा सकती है।

हे ईश्वर तेरा स्वभाव सदा दया और क्षमा करनी है हमारी नम्रता की विनतियां ग्रहण कर और यद्यपि हम अपने पापों की सिकड़ी में जकड़े हुए हैं तौ भी अपनी अत्यन्त करुणा से हमें खोल दे हमारे मध्यस्थ और पक्षवादी येशू ख्रीष्ट की प्रतिष्ठा के लिये। आमेन्॥

पार्लमेंट की श्रेष्ठ सभा के लिये जो तब लों पढ़ी जावे जब लों यह एकट्ठी रहे।

हे अत्यन्त अनुग्राही ईश्वर हम सम्पूर्ण राज्य के लिये और विशेष करके पार्लमेंट की श्रेष्ठ सभा के लिये जो इस समय हमारी

अति धर्म्मिणी और अनुग्राहिणी महारानी की आज्ञा से एकट्ठी हुई है और यहां भारतवर्ष में हम वैसराय गवर्नरों कौन्सिलों हाईकोटों के जजों और जितनों को इस देश में अधिकार सौम्पा गया है उन सभों के लिये नम्रता से विनती करते हैं कि तू कृपा करके उनको ऐसी प्रेरणा कर और उन के परामर्शों को ऐसा सुफल कर कि तेरी महिमा की वृद्धि तेरी एक्लेसिया की भलाई और हमारी महारानी और उसके समस्त राज्य की रक्षा प्रतिष्ठा और कुशल होवे जिस्तें उनके यत्न से सब बातें उत्तम और दृढ़ नेवों पर ऐसी ठहराई और स्थिर किई जावें कि मेल और मंगल सच्चाई और न्याय धर्म्म और भक्ति हमारे बीच में पीढ़ी से पीढ़ी लों बनी रहें। ये बातें और जो कुछ उनके और हमारे और तेरी सम्पूर्ण एक्लेसिया के लिये आवश्यक है उसको हम अपने परम धन्य प्रभु और त्राता येशू खीष्ट के नाम और मध्यस्थता के कारण नम्रता से मांगते हैं। आमिन्॥

एक प्रार्थना सब प्रकार के मनुष्यों के लिये जो उस समय काम में आवे जब लितनिया का पढ़ना नहीं ठहराया गया।

हे ईश्वर समस्त मनुष्यजाति के सिरजनहार और पालनकर्त्ता हम नम्रता से सब प्रकार और दशा के मनुष्यों के लिये विनती करते हैं कि तू कृपा करके अपने मार्ग उनको बता और अपना त्राण सब जातियों पर प्रगट कर। विशेष करके हम कथोलिक एक्लेसिया की भलाई के लिये प्रार्थना करते हैं कि तेरे दयामय आत्मा से उसकी ऐसी प्रेरणा और अगुवाई होवे कि जितने अपने को खीष्टियान कहते और बताते हैं सो सत्य के मार्ग पर पहुंचाये जावें और विश्वास को आत्मा की एकता और मेल के बन्धन और चाल चलन की धार्म्मिकता से धरे रहें। निदान जितने तन वा मन वा धन के किसी क्लेश वा दुःख में पड़े हैं उन्हें हम तेरी पैतृक दया को सौम्पते हैं

प्रार्थनायें

* यह वाक्य उस समय कहा जावे जब कोई मण्डली की प्रार्थना चाहे। [* विशेष करके उन्हें जिन के लिये हमारी प्रार्थना चाही गई है] कि तू कृपा करके जैसी उनकी आवश्यकता है वैसीही उनको शान्ति और छुटकारा देवे उनके दु:खों में उन्हें धीरज दे और उनके सब क्लेशों से उनको सुख के साथ पार कर दे यह हम येशू खीष्ट के निमित्त मांगते हैं। आमेन् ॥

खीष्टीय धर्म्म के फैलने के लिये प्रार्थना।

हे दयालु ईश्वर तू ने सब मनुष्यों को बनाया और अपनी किसी कृति से बैर नहीं रखता और किसी पापी की मृत्यु नहीं चाहता वरन यह कि वह फिरे और जीवे जितनों को तेरे सत्य का ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ उन पर दया करके उन से सारी अज्ञानता मन की कठोरता और अपने बचन का अपमान दूर कर और हे धन्य प्रभु उनको ऐसा अपनी झुण्ड में फिर समेट ले कि वे सच्चे यिस्राएल् के बचे हुए लोगों के संग त्राण पावें और एक गड़ेरिये हमारे प्रभु येशू खीष्ट के हाथ में एक झुण्ड बन जावें वह तेरे और पवित्रात्मा के संग एक ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता है। आमेन् ॥

अथवा यह।

हे ईश्वर तू ने सब जाति के मनुष्यों को एकही लहू से सारी पृथ्वी पर बसने के लिये उत्पन्न किया और अपने धन्य पुत्र को इसलिये भेजा कि जो दूर हैं और जो निकट हैं दोनों को मेल का प्रचार करे यह वर दे कि इस देश के सब लोग तुझे टटोलके पावें और हे स्वर्गीय पिता उस प्रतिज्ञा को शीघ्र पूरा कर जो तू ने किई है कि मैं सारे मनुष्यों पर अपना आत्मा उडेलूंगा हमारे त्राता येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन् ॥

धन्यवाद

साधारण धन्यवाद

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर समस्त दया के पिता हम तेरे अयोग्य दास तेरी उस सारी कृपा और प्रीति के लिये जो तूने हम से और सब मनुष्यों से किई है

[* विशेष करके उनसे जिन पर तूने अभी दया किई है और जो उसके लिये अब तेरी स्तुति और धन्यवाद करने चाहते हैं]

अति नम्रता के साथ अन्तःकरण से तेरा धन्यवाद करते हैं। हम अपनी सृष्टि पालन और इस जीवन की सब अच्छी बस्तुन के लिये। पर निज करके उस अनमोल प्रेम के लिये। जिस से तू ने हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा जगत को छुड़ा लिया। और अनुग्रह के द्वारों। और महिमा की आशा के लिये। तेरा धन्यवाद करते हैं। और हम तुझ से विनती करते हैं। अपनी सारी दया का ऐसा यथोचित ज्ञान हमें दे कि हम निष्कपट मन से तेरा धन्यवाद करते रहें। और तेरी स्तुति केवल मुंह से नहीं पर अपने चाल चलन से भी करें। ऐसा कि अपने को तेरी सेवा में सौम्प देवें। और तेरे साम्हने पवित्रता और धार्म्मिकता से जीवन भर चलें। हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। जिसकी तेरे और पवित्रात्मा के समेत सारी प्रतिष्ठा और महिमा युगानयुग होती रहे। आमेन्॥

* यह वाक्य उस समय कहा जावे जब कोई जन जिस के लिये प्रार्थना किई गई हो धन्यवाद करने चाहे।

वृष्टि के लिये।

हे ईश्वर हमारे स्वर्गीय पिता तू अपने अनुग्रह के प्रबन्ध से अगली और पिछली वर्षा को भूमि पर देता है जिस्तें वह मनुष्य के काम के लिये फलवन्त होवे। हम नम्रता से तेरा धन्यवाद करते हैं

धन्यवाद

कि तू ने कृपा करके हमारी इस बड़ी आवश्यकता के समय इस देश की भूमि पर अब सुखदायक मेंह बरसाया और जब वह सूख गई थी तब उसे प्रफुल्लित किया है जिस से हम तेरे अयोग्य दासों को बड़ा सुख भया और तेरे पवित्र नाम की महिमा हुई तेरी उस दया के द्वारा जो हमारे प्रभु येशू खीष्ट में हम पर होती हैं। आमेन्॥

आकाश की फरछाई के लिये।

हे प्रभु परमेश्वर तू ने अभी अति वृष्टि से हम को न्याय की रीति से दीन किया और दया करके इस लाभदायक फरछाई से जो समय पर आई है हमें दुःख से छुड़ाया और शान्ति दी है हम तेरी इस दया के लिये तेरे पवित्र नाम की स्तुति और महिमा करते हैं और पीढ़ी से पीढ़ी लों तेरी प्रीति का बखान करते रहेंगे हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

सस्ती के लिये।

हे अत्यन्त दयालु पिता तू ने कृपा करके अपने अनुग्रह से अपनी एक्लेसिया की भक्तियुक्त प्रार्थनाओं को सुनके हमारी महंगी और अकाल को सस्ती और सुकाल कर दिया है हम तेरी इस बड़ी उदारता के लिये नम्रता से तेरा धन्यवाद करते हें और बिनती करते हैं कि तेरी प्रीति हम पर बनी रहे जिस्तें हमारी भूमि अपनी उपज हम को दिया करे कि तेरी महिमा और हमारा सुख होवे हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

सन्धि और शत्रुन से बचाव पाने के लिये।

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू अपने दासों का उनके शत्रुन से बचने के लिये दृढ़ गढ़ है हम तेरी स्तुति और धन्यवाद करते हैं कि हम

धन्यबाद

जिन बड़ी और प्रत्यक्ष जोखिमों से घिरे हुए थे उनसे बच गये हैं हम मानते हैं कि हम जो उनके हाथ के अहेर न हुए यह केवल तेरी कृपाही है और तुझसे विनती करते हैं कि तू हम पर अपनी दया ऐसी करता रह कि सारा संसार जाने कि तू हमारा त्राता और सामर्थी छुड़ानेहारा है हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

देश में बलवे के मिट जाने के लिये।

हे सनातन ईश्वर हमारे स्वर्गीय पिता तू ही घर में एकमता करता और दङ्गैत औ स्वेच्छाचारी लोगों के उपद्रवों को थाम देता है हम तेरे पवित्र नाम का धन्यवाद करते हैं कि जो बलवा और हुल्लड़ हमारे बीच में उठे थे तू ने कृपा करके उस को शान्ति किया है हम अत्यन्त नम्रता से विनती करते हैं कि तू हम सभों को ऐसा अनुग्रह दे कि आगे को तेरी पवित्र आज्ञाओं के अनुसार अधीनता से चलें और अपना जीवन सिधाई और शान्ति के साथ पूरी भक्ति और गम्भीरता से बिता के तेरी इस दया के लिये जो हम पर हुई है स्तुति और धन्यवाद का अपना बलिदान निरन्तर तुझको चढ़ाया करें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

मरी अथवा किसी फैले हुए रोग से छुटने के लिये।

हे प्रभु परमेश्वर तू ने उस भारी और भयानक दण्ड के द्वारा जो अभी हम पर पड़ा था हम को हमारे पापों के कारण घायल किया और हमारे अपराधों के कारण हम को क्षीण किया था और अब दण्ड देते हुए अपनी दया को स्मरण करके हम को काल के दान्तों के बीच से छुड़ाया है हम अपने को अपने जीव और शरीर समेत जिनको तू ने बचाया है तेरी पैतृक दया के आगे भेंट चढ़ाते हैं कि तेरे लिये जीवता

धन्यवाद

बलिदान होके तेरी एक्लीसिया के बीच तेरी दया के निमित्त तेरी स्तुति और महिमा सदा करते रहें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

अथवा यह।

हे अत्यन्त दयालु पिता हम तेरे साम्हने नम्रता से मान लेते हैं कि हमारे नाना प्रकार के अपराधों और मन की कठोरता के कारण जितने दण्ड तेरी व्यवस्था में लिखे हुए हैं यदि वे सब हम पर पड़ते तो न्यायही होता तौभी तूने कृपा करके अपने छोह से हमारे अधूरे और अयोग्य पश्चात्ताप पर इस स्पर्शज रोग को जिस से हमको बड़ा कष्ट हुआ था दूर करके हमारे घरों में मंगलाचार फिर कराया है इसलिये हम तुझ महान् ईश्वर के आगे स्तुति और धन्यवाद का बलिदान चढ़ाते हैं और तू ने जो हमारी ऐसी रक्षा किई और हमारी ऐसी सुधि लिई है इस हेतु हम तेरे महिमायुक्त नाम की स्तुति और बड़ाई करते हैं हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

प्रार्थनाएं पत्रियां और सुसमाचार

जिन्हें सम्पूर्ण बरस काम में ले आना चाहिये

जानना चाहिये कि जो प्रार्थना किसी इतवार अथवा किसी ऐसे तेवहार के लिये जिसका जागरण हो ठहराई गई है सो उससे पहिले सन्ध्याकाल की उपासना में भी कहनी चाहिये ।

आगमन का पहला इतवार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर हम को यह अनुग्रह दे कि अभी इस नाशवन्त जीवन के समय जिस में तेरा पुत्र येशू खीष्ट बड़ी नम्रता के साथ हम से भेंट करने आया था हम अन्धकार के कर्म्मों को त्याग करके ज्योति के शस्त्र बांध लेवें ऐसा कि पिछले दिन जब वह अपने महिमायुक्त प्रताप से जीवतों और मृतकों का न्याय करने को फिर आवे हम अविनाशी जीवन के लिये जी उठें उसके द्वारा जो तेरे और पवित्रात्मा के समेत अब और सदा जीता और राज्य करता है । आमेन्

यह प्रार्थना आगमन की दूसरी प्रार्थनाओं समेत जन्मदिन के जागरण लों प्रतिदिन पढ़नी चाहिये ।

पत्री । रोमियों । १३।८ ।

आपस के प्रेम को छोड़ किसी विषय में किसी के ऋणी न रहो क्योंकि जो अपने पड़ोसी से प्रेम रखता है सो व्यवस्था को पूरा कर

चुका है। क्योंकि यह कि परस्त्रीगमन न करना हत्या न करना चोरी न करना लोभ न करना अरु और जो कोई आज्ञा हो सब का सारांश इसी बचन में है कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना। प्रेम पड़ोसी का बुरा नहीं करता इसलिये प्रेम व्यवस्था का पूरा करना है। और यह समय को पहचानके करना चाहिये क्योंकि अब नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची कि हमने जब विश्वास किया उस समय से हमारा त्राण अब अधिक निकट है। रात बहुत बीत गई दिन निकट आया है सो हम अन्धकार के कर्म्मों को त्याग के ज्योति के शस्त्र बांधें। हम योग्य रीति से चलें जैसा दिन को चलते हैं हंसी ठट्ठे और मतवालेपन में नहीं लम्पटता और कामातुरता में नहीं झगड़े और डाह में नहीं। परन्तु प्रभु येशू ख्रीष्ट को पहिन लेओ और शरीर की अभिलाषाएं पूरी करने को उसके लिये प्रबन्ध मत करो॥

सुसमाचार। प० मत्तय। २१।१।

जब वे यरूशलेम् के निकट आये और बेत्पगे में जैत पर्व्वत पर पहुंचे तब येशू ने दो शिष्यों को यह कहके भेज दिया कि तुम्हारे साम्हने जो गांव है उस में जाओ तो पहुंचतेही एक गदही को बंधी और एक बच्चा उसके संग पाओगे उन्हें खोलके मेरे पास ले आओ। और यदि कोई तुम से कुछ कहे तो कहो प्रभु को उन का प्रयोजन है तो वह तुरन्त उन्हें आने देगा। और यह इसलिये हुआ कि जो बात प्रवक्ता के द्वारा कही गई सो पूरी होवे कि सिय्योन् की पुत्री से कहो कि देख तेरा राजा सौम्यस्वभाव और एक गदही पर और लादू गदही के बच्चे पर चढ़ा हुआ तेरे पास आता है। सो शिष्य चले गये और जैसा येशू ने उन्हें आज्ञा दिई तैसाही करके उस गदही और उस बच्चे को ले आये और अपने वस्त्र उन पर डाल दिये और वह उन पर बैठ

गया। और भीड़ में से अधिकों ने अपने वस्त्र मार्ग में बिछाये और और लोग वृक्षों से डालियां काटके मार्ग में छितराने लगे। और जो भीड़ उस के आगे आगे जाती थी और जो उसके पीछे पीछे आती थी सो यह कह कहके चिल्लाती गई कि दावीद् के पुत्र को होशन्ना धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है अत्यन्त ऊर्द्धलोक में होशन्ना। और जब उस ने यरूशलेम् में प्रवेश किया तब सारे नगर में खरबर मची और लोग कहने लगे यह कौन है। तब भीड़ ने कहा यह येशू प्रवक्ता है जो गालील् के नासरा का है। और येशू ने ईश्वर के मन्दिर में प्रवेश करके जितने लोग मन्दिर में बेंचते और कीनते थे सब को निकाल दिया और सर्राफों के मंचों को और कबूतरों के बेंचने-हारों के आसनों को उलट दिया और उन से कहा लिखा है कि मेरा घर प्रार्थना का घर कहावेगा पर तुम उसे डाकुओं का खोह बनाते हो॥

आगमन का दूसरा इतवार

प्रार्थना

हे धन्य प्रभु तू ने पवित्र शास्त्र की सब पुस्तकों को हमारी शिक्षा के लिये लिखवाया यह वर दे कि हम उन को इस प्रकार से सुनें पढ़ें सोचें सीखें और अन्तःकरण में मनन करें कि तेरे पवित्र वचन से धीरज और शान्ति प्राप्त करके अनन्त जीवन की उस धन्य आशा को जिसे तूने हमारे त्राता येशू ख्रीष्ट में हमें दिया है स्वीकार करें और सदा थाम्भे रहें। आमेन्॥

पत्री। रोमियों। १५। ४।

जितनी बातें आगे लिखी गईं सो हमारी शिक्षा के लिये लिखी गईं जिस्तें हम धीरज के द्वारा और शास्त्र के प्रबोध के द्वारा आशा को

रक्खें। और धीरज और प्रबोध का ईश्वर तुम को यह वर देवे कि तुम खीष्ट येशू के अनुसार आपस में एक मन होओ जिस्तें तुम एक चित्त से एक मुंह होके हमारे प्रभु येशू खीष्ट के ईश्वर और पिता की महिमा करो। इसलिये एक दूसरे को ग्रहण करो जैसा खीष्ट ने भी तुम को ईश्वर की महिमा के लिये ग्रहण किया। क्योंकि मैं कहता हूं कि खीष्ट ईश्वर की सच्चाई के निमित्त परिच्छेद का परिचारक बन गया जिस्तें वह पुरखाओं से किई हुई प्रतिज्ञाओं को दृढ़ करे और अन्यजातियां ईश्वर की दया के निमित्त उसकी महिमा करें जैसा लिखा है इसलिये मैं अन्यजातियों में तेरा अंगीकार करूंगा और तेरे नाम का स्तुतिगान करूंगा। और फिर वह कहता है हे अन्यजातियो उस के लोकगण के संग आनन्द करो। और फिर हे सब अन्यजातियो प्रभु की स्तुति करो और समस्त लोकगण उस को सराहें। और फिर यशया कहता है यिशै की जड़ होगी और वह जो अन्यजातियों पर प्रभुता करने को उठता है उसी पर अन्यजातिगण आशा धरेंगे। और आशा का ईश्वर तुम को विश्वास करने के द्वारा समस्त आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण करे जिस्तें तुम पवित्रात्मा की शक्ति से आशा में बढ़ते चले जाओ॥

सुसमाचार। प० लूका। २१। २५।

और सूर्य्य चन्द्रमा और तारागण में चिन्ह होंगे और पृथिवी पर जातियों का क्लेश जो समुद्र और ढेउओं के गरजने के कारण घबराहट में रहेंगी और मनुष्य डर के मारे और जो बातें जगत पर आनेहारी हैं उनके जोहने के हेतु मूर्छित होते जावेंगे क्योंकि आकाश की शक्तियां डोल जावेंगी। और तब लोग मनुष्य के पुत्र को मेघ में शक्ति और बड़ी महिमा के साथ आते देखेंगे। पर जब ये बातें होने लगेंगी तब ऊपर देखो और अपने सिर ऊपर उठाओ क्योंकि तुम्हारा

छुटकारा निकट चला आता है। उसने उनसे यह दृष्टान्त कहा अंजीर के पेड़ और सब पेड़ों को देखो जब वे पनपने लगते हैं तब तुम देखके आप से आप जान लेते हो कि ग्रीष्मकाल निकट है। उसी प्रकार से तुम भी जब इन बातों को होते देखोगे जानो कि ईश्वर का राज्य निकट है। मैं तुम से सच कहता हूं कि जबलों सब कुछ पूरा न होले तब लों यह पीढ़ी जाती न रहेगी। स्वर्ग और पृथिवी तो जाती रहेंगी पर मेरे वचन कभी जाते न रहेंगे ॥

आगमन का तीसरा इतवार

प्रार्थना

हे प्रभु येशू खीष्ट तू ने अपने पहिले आगमन के समय अपने दूत को अपने आगे अपना मार्ग बनाने के लिये भेजा यह वर दे कि तेरे रहस्यों के सेवक और भण्डारी भी आज्ञाभंजकों के मन को फेरके उन को धर्म्मियों की सी समझ देने से तेरा मार्ग ऐसा बनावें और सिद्ध करें कि जब तेरा दूसरा आगमन जगत का न्याय करने के लिये होवे तब हम तेरे साम्हने एक ग्राह्य लोकगण ठहरें तू पिता और पवित्रात्मा के संग सदा एक ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता है। आमेन् ॥

पत्री । १ कोरिन्थियों । ४।१ ।

मनुष्य हम को ऐसाही समझें कि खीष्ट के सेवक और ईश्वर के रहस्यों के भण्डारी हैं। फिर यहां भण्डारियों में इस बात की खोज किई जाती है कि वे विश्वस्त पाये जावें। परन्तु मेरे लेखे यह बहुत ही छोटी बात है कि मेरा विचार तुम से अथवा मनुष्य के विचार से किया जावे वरन मैं अपना विचार भी नहीं करता। क्योंकि मैं अपने में कोई दोष नहीं देखता परन्तु इस से मैं निर्दोष नहीं ठहरा पर

मेरा विचार करनेहारा प्रभु ही है। इसलिये समय से पहिले जब लों प्रभु न आवे तब लों किसी बात का विचार मत करो कि वही अन्धकार की गुप्त बातों को प्रकाश करेगा और हृदयों के अभिप्रायों को प्रगट करेगा और तब ही प्रत्येक को ईश्वर की ओर से उसके योग्य प्रशंसा मिलेगी ॥

सुसमाचार। प० मत्तय। ११।२।

और जब योहानान् ने बन्दीगृह में खीष्ट के कर्म्मों की चर्चा सुनी तो उस ने अपने शिष्यों के द्वारा उस से यह कहला भेजा कि जो आनेहारा था सो क्या तूही है अथवा हम दूसरे की बाट जोहें। और येशू ने उन्हें उत्तर देके कहा जो बातें तुम सुनते और देखते हो उनका समाचार जाके योहानान् को देओ कि अन्धे देखते और लंगड़े चलते हैं कोढ़ी शुद्ध होते और बहिरे सुनते हैं और मृतक जिलाये जाते हैं और दरिद्रों को सुसमाचार सुनाया जाता है और धन्य है वह जो मेरे कारण ठोकर न खावे। और जब ये लोग चले जाते थे तब येशू भीड़ से योहानान् के विषय में कहने लगा तुम बन में क्या देखने को निकले थे क्या पवन से हिलते हुए सरकण्डे को। फिर तुम क्या देखने को निकले थे क्या कोमल वस्त्र पहिने हुए एक मनुष्य को देखो जो कोमल वस्त्र पहिनते हैं सो राजभवनों में रहते हैं। परन्तु तुम क्यों निकले थे क्या प्रवक्ता को देखने के लिये। हां मैं तुम से कहता हूं वरन एक मनुष्य को जो प्रवक्ता से बहुत बढ़कर है। यह वही है जिस के विषय में लिखा है देख मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं जो तेरे मार्ग को तेरे आगे बनावेगा ॥

आगमन का चौथा इतवार

प्रार्थना

हे प्रभु हम विनती करते हैं तू अपनी शक्ति को प्रगट करके हमारे

बीच आ और बड़े सामर्थ्य से हमारी सहाय कर कि हम जो अपने पापों और दुष्टता के कारण इस दौड़ में जो हमारे लिये ठहराई गई बहुत ही अटके और रुके हुए हैं तेरे अत्यन्त अनुग्रह और दया से शीघ्र सहायता और छुटकारा पावें तेरे पुत्र हमारे प्रभु के प्रायश्चित्त के द्वारा जिसकी तेरे और पवित्रात्मा के समेत प्रतिष्ठा और महिमा युगानयुग होती रहे। आमेन्॥

पत्री। फिलिप्पियों। ४। ४।

प्रभु में सदा आनन्दित रहो मैं फिर कहूंगा आनन्दित रहो। तुम्हारी कोमलता सब मनुष्यों को विदित होवे। प्रभु निकट है। किसी बात की चिन्ता न करो पर सब बातों में तुम्हारे मनोरथ प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ ईश्वर को विदित किये जावें। तो ईश्वर की शान्ति जो सम्पूर्ण समझ से परे है तुम्हारे हृदयों और तुम्हारे विचारों की ख्रीष्ट येशू में रक्षा करेगी॥

सुसमाचार। प० योहानान्। १। १९।

योहानान् की साक्षी यही है कि जब यहूदियों ने यरूशलेम् से उसके पास याजक और लेवी यह पूछने के लिये भेजे कि तू कौन है तब उसने अंगीकार किया और नहीं मुकरा पर अंगीकारही किया कि मैं ख्रीष्ट नहीं हूं। और उन्होंने उस से पूछा तो क्या। क्या तू एलिया है और उसने कहा मैं नहीं हूं। क्या तू वह प्रवक्ता है और उसने उत्तर दिया कि नहीं। सो उन्होंने उससे कहा तू कौन है जिस्तें हम अपने भेजनेहारों को उत्तर दे सकें तू अपने विषय में क्या कहता है। वह बोला मैं बन में पुकारनेहारे की वाणी हूं कि प्रभु का मार्ग सीधा करो जैसा यशया प्रवक्ता ने कहा। और वे फरीशियों की ओर से भेजे

गये थे। और उन्होंने यह कहके उस से प्रश्न किया कि जब तू न खीष्ट न एलिया न वह प्रवक्ता है तो तू क्यों बप्तिस्म देता है। योहानान् ने उन्हें यह उत्तर दिया कि मैं तो जल से बप्तिस्म देता हूं पर तुम्हारे बीच में एक खड़ा है जिसे तुम नहीं जानते वह मेरे पीछे आता है मैं उसकी जूती के बन्धन को खोलने के योग्य नहीं। ये बातें यर्दन् के पार बेथीने में हुईं जहां योहानान् बप्तिस्म देता था॥

हमारे प्रभु येशू खीष्ट का जन्मदिन

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू ने अपना एकलौता पुत्र हम को दिया कि वह हमारी प्रकृति को अपने में ले लेवे और मानों इस समय एक शुद्ध कुमारी से जन्मे यह वर दे कि हम जो पुनर्जनित भये और लेपालकपन और अनुग्रह से तेरे लड़के बन गये हैं तेरे पवित्रात्मा से प्रतिदिन नये होते जावें उसी प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा जो तेरे और उसी पवित्रात्मा के संग सदा एक ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता है। आमेन्॥

पत्री ' इब्रियों।१।१।

ईश्वर जब प्राचीनकाल में नाना अंशों में और नाना प्रकार से प्रवक्ताओं के द्वारा पुरखाओं से बोल चुका तो इन दिनों के अन्त में पुत्र के द्वारा हम से बोला है। इस को उस ने सब का अधिकारी ठहराया और इसी के द्वारा उसने समस्त लोकों को बनाया। वह जब उस के तेज का प्रकाश और उसके तत्त्व की मूर्त्ति है और सब वस्तुन को अपनी शक्ति के वचन से सम्भालता है तो पापों का परिशोधन करके उच्चस्थान

में प्रताप की दहिनी ओर विराजमान भया कि वह दूतों से इतना उत्कृष्ट हो गया जितना वह उन से उत्तम नाम का अधिकारी भया है। क्योंकि दूतों में से उसने किस से कभी कहा कि तू मेरा पुत्र है मैं ही ने आज तुझे जन्माया है। और फिर मैं उस का पिता होऊंगा और वह मेरा पुत्र होवेगा। और जब वह पहिलौंठे को भूमण्डल में फिर ले आता है तब कहता है कि ईश्वर के सब दूत उसे दण्डवत करें। और दूतों के विषय में वह कहता है कि जो अपने दूतों को पवन और अपने सेवकों को अग्निज्वाला बनाता है। पर पुत्र के विषय में कहता है कि हे ईश्वर तेरा सिंहासन युगानयुग रहेगा और तेरे राज्य का राजदण्ड सीधाई का दण्ड है। तू ने धर्म्म से प्रीति रक्खी और अधर्म्म से घिन्न इस लिये ईश्वर ने जो तेरा ईश्वर है तेरे सहभागियों से अधिक तुझे हर्ष के तेल से अभिषेक किया है। और फिर हे प्रभु तू ने आदि में पृथिवी की नेव डाली और आकाशमण्डल तेरा हस्तकृत है। वे तो नष्ट होवेंगे पर तू बना रहेगा और वे सब वस्त्र की नाईं पुराने हो जावेंगे और तू उन्हें ओढ़ने के समान लपेटेगा और वे वस्त्र की नाईं बदल जावेंगे पर तू वही है और तेरे बरस न घटेंगे॥

सुसमाचार। प० योहानान् १।१।

आदि में वचन था और वचन ईश्वर के पास था और वचन ईश्वर ही था। वह आदि में ईश्वर के पास था। सब कुछ उस के द्वारा बन गया और जो कुछ बना है उस में से कुछ उस के बिना नहीं बना। उस में जीवन था और वह जीवन मनुष्यों का उंजियाला था। और उंजियाला अंधियारे में चमकता है और अंधियारे ने उसे ग्रहण नहीं किया। एक मनुष्य हुआ जो ईश्वर की ओर से भेजा गया था उस का नाम योहानान् था। यह साक्षी के लिये आया कि उंजियाले के विषय में साक्षी देवे जिस्तें उस के द्वारा सब विश्वास करें। वह

पवित्र स्तिफ़न का दिन

उंजियाला नहीं था पर उंजियाले के विषय में साक्षी देने को आया। सत्य उंजियाला जो प्रत्येक मनुष्य को उंजियाला करता है जगत में आनेहारा था। वह जगत में था और जगत उसी के द्वारा बना पर जगत ने उसे न जाना। वह अपने यहां आया और अपनों ने उसे ग्रहण न किया। पर जितनों ने उसे ग्रहण किया उन को उस ने ईश्वर के लड़के होने को अधिकार दिया अर्थात् उन को जो उस के नाम पर विश्वास करते हैं। वे न लहू से न शरीर की इच्छा से न पुरुष की इच्छा से पर ईश्वर ही से उत्पन्न हुए। और वचन शरीर भया और अनुग्रह और सत्य से परिपूर्ण होके हमारे बीच में डेरा किया और हमने उसकी महिमा पर दृष्टि किई जो उस एकलौते की सी जो पिता की ओर से आया हो महिमा थी॥

पवित्र स्तिफ़न का दिन

प्रार्थना

हे प्रभु यह वर दे कि जब कभी हम पृथ्वी पर तेरे सत्य पर साक्षी देने के हेतु दुःख उठावें तब हम स्वर्ग की ओर टकटकी लगाके दृष्टि करें और प्रगट होनेहारी महिमा को विश्वास से देखें और पवित्रात्मा से परिपूर्ण होके अपने सतानेहारों से प्रेम करना और उन को ऐसा आशीर्वाद देना सीखें जैसा तेरे प्रथम साक्षी पवित्र स्तिफ़न ने किया कि उसने अपने घातकों के लिये तुझ से प्रार्थना किई हे धन्य येशू जो उन सब की सहाय करने के लिये जो तेरे निमित्त दुःख उठाते हैं ईश्वर की दहिनी ओर खड़ा है तू ही हमारा मध्यस्थ और पक्षवादी है। आमेन्॥

इसके अनन्तर जन्मदिन की प्रार्थना कही जावे और यह उसी बरस के अन्त्य दिन लों भी प्रतिदिन कही जावे।

पवित्र स्तिफन का दिन

पत्री की सन्ती। प्रेरितों के कर्म्म।७।५५।

स्तिफन ने पवित्रात्मा से परिपूर्ण होके स्वर्ग की ओर टकटकी बांध के ईश्वर की महिमा को ओर येशू को ईश्वर की दहिनी ओर खड़ा देखा और कहा देखो मैं स्वर्ग को खुला और मनुष्य के पुत्र को ईश्वर की दहिनी ओर खड़े देखता हूं। और उन्होंने बड़े शब्द से चिल्लाके अपने कान मूंदे और एकमन होके उस पर लपके और उसे नगर के बाहर निकालके पत्थराव करने लगे और साक्षियों ने अपने वस्त्र एक तरुण के पैरों के पास धर दिये जिस का नाम शाऊल् था। और वे स्तिफन को पत्थराव करते रहे और वह प्रभु को पुकारता और यह कहता रहा कि हे प्रभु येशू मेरा आत्मा ग्रहण कर। तब उसने घुटने टेकके बड़े शब्द से पुकारा कि हे प्रभु यह पाप उन पर न धर। और यह कहके वह सो गया॥

सुसमाचार। प० मत्तय।२३।३४।

देखो मैं तुम्हारे पास प्रवक्ता और ज्ञानी और शास्त्री भेजता हूं और तुम उन में से कितनों को घात करोगे और क्रूस पर चढ़ाओगे और कितनों को अपने सभास्थानों में कोड़े मारोगे और नगर नगर रगेदोगे जिस्तें जितना निर्दोष लहू पृथिवी पर बहाया गया सब तुम पर आवे वरन धर्म्मी हेबेल् के लहू से ले बरेक्या के पुत्र जकर्या के लहू लों जिस को तुम ने मन्दिर और वेदी के बीच घात किया मैं तुम से सत्य कहता हूं यह सब कुछ इसी पीढ़ी पर आवेगा। हे यरू-शलेम् हे यरूशलेम् तू जो प्रवक्ताओं को घात करती और जो तेरे पास भेजे गये उनको पत्थराव करती है मैं ने कितनी बार तेरे लड़कों को ऐसा समेटने चाहा जैसे पक्षी अपने बच्चों को अपने पंखों के तले समेट लेती है और तुम ने न चाहा। देखो तुम्हारा घर तुम्हारे लिये

उजाड़ छोड़ दिया जाता है। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि तुम अब से तब लों मुझे न देखोगे जब लों न कहोगे कि धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है॥

पवित्र योहानान् सुसमाचारी का दिन

प्रार्थना

हे दयालु प्रभु हम विनती करते हैं अपनी ज्योति की चमकती हुई किरणें अपनी एक्लीसिया पर डाल कि वह तेरे धन्य प्रेरित और सुसमाचारी पवित्र योहानान् की शिक्षा से प्रकाशित होके तेरे सत्य की ज्योति में ऐसी चले कि वह अंत को अनन्तजीवन की ज्योति लों पहुंचे हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। १ योहानान्। १।१।

जो आदि से था जिसे हम ने सुना है जिसे हम ने अपनी आंखों से देखा है जिसपर हम ने दृष्टि किई और हमारे हाथों ने टटोला अर्थात् जीवन के वचन के विषय में। और जीवन प्रगट हुआ और हमने देखा है और साक्षी देते हैं और तुम को उस सनातन जीवन का समाचार देते हैं जो पिता के पास था और हमपर प्रगट हुआ। जो हम ने देखा और सुना है उसी का समाचार तुम को भी देते हैं जिस्तें तुम भी हमारे संग सहभागिता रक्खो और हमारी सहभागिता तो पिता के साथ और उस के पुत्र येशू खीष्ट के साथ है। और हम ये बातें इसलिये लिखते हैं कि तुम्हारा आनन्द पूर्ण होवे। और यह वह समाचार है जो हमने उस से सुना है और फिर तुम्हें देते हैं कि ईश्वर ज्योति है और अन्धकार उस में कुछ भी नहीं। यदि हम

कहें कि हम उस के संग सहभागिता रखते हैं और अन्धकार में चलते हैं तो हम झूठ बोलते हैं और सत्य के अनुसार कर्म्म नहीं करते। पर यदि हम उंजियाले में चलें जैसे वह उंजियाले में है तो हम एक दूसरे के साथ सहभागिता रखते हैं और उस के पुत्र येशू का लहू हम को समस्त पाप से शुद्ध करता है। यदि हम कहें कि हम में पाप नहीं तो हम अपने को धोखा देते हैं और सत्य हम में नहीं। यदि हम अपने पापों को अंगीकार करें तो वह ऐसा विश्वस्त और धर्म्मी है कि हमारे पापों को क्षमा करे और हम को सारे अधर्म्म से शुद्ध करे। यदि हम कहें कि हम ने पाप नहीं किया तो हम उस को झूठा बनाते हैं और उसका वचन हम में नहीं है॥

सुसमाचार। प० योहानान्। २१। १९।

येशू ने पेत्र से कहा मेरे पीछे हो ले। पेत्र ने फिरके उस शिष्य को पीछे आते देखा जिस से येशू प्रेम रखता था और जिस ने व्यारी के समय उस की छाती पर उठंगके कहा था हे प्रभु जो तुझे पकड़वाता है सो कौन है। सो पेत्र ने इसे देखके येशू से पूछा हे प्रभु इस का क्या होगा। येशू ने उस से कहा यदि मैं चाहूं कि वह मेरे आने लों ठहरा रहे तो तुझे क्या तू मेरे पीछे हो ले। इस कारण यह बात भाइयों में फैल गई कि वह शिष्य न मरेगा परन्तु येशू ने उस से यह नहीं कहा कि वह न मरेगा पर यह कि यदि मैं चाहूं कि वह मेरे आने लों ठहरा रहे तो तुझे क्या। यह वही शिष्य है जो इन बातों के विषय में साक्षी देता है और जिस ने ये बातें लिखीं और हम जानते हैं कि उसकी साक्षी सत्य है। अरु और भी बहुत से काम हैं जो येशू ने किये पर यदि वे एक एक करके लिखे जाते तो मेरी समझ में जो पुस्तकें लिखी जातीं सो जगत में भी न समातीं॥

निर्दोषों का दिन

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू ने बच्चों और दूधपीवकों के वचन के द्वारा सामर्थ्य की नेव डाली और बच्चों से उन की मृत्यु के द्वारा अपनी महिमा कराई हमारी सब बुराइयों को मृतक कर और मार डाल और हम को अपने अनुग्रह से इतनी शक्ति दे कि हम अपनी चाल चलन की निर्दोषता और अपने विश्वास की ऐसी दृढ़ता से जो मृत्यु में भी अचल रहे तेरे पवित्र नाम की महिमा करें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

पत्री की सन्ती प्रकटीकरण । १४ । १ ।

मैं ने दृष्टि किई और क्या देखा कि मेम्ना सिय्योन् पर्व्वत पर खड़ा है और उस के संग एक लाख चौवालीस सहस्र जिन के माथों पर उस का नाम और उस के पिता का नाम लिखे हुए हैं । और मैं ने स्वर्ग में से एक शब्द सुना मानो बहुत जल का शब्द और बड़े गर्जन का शब्द हुआ और जो शब्द मैं ने सुना सो मानो वीणावादकों का था जो अपनी वीणाएं बजाते थे । और वे सिंहासन के साम्हने और उन चार जीवधारियों के और उन पुरनियों के साम्हने मानो नया गीत गाते थे । और उन एक लाख चौवालीस सहस्रों को छोड़ जो पृथिवी पर से मोल लिये गये थे कोई उस गीत को सीख न सकता था । ये वेही हैं जो स्त्रियों के संग अशुद्ध न भये क्योंकि वे कुमार हैं ये वेही हैं जो मेम्ने के पीछे पीछे जहां कहीं वह जावे चलते हैं ये मनुष्यों में से मोल लिये गये कि ईश्वर और मेम्ने के लिये पहिले फल होवें। और उन के मुख में झूठ न पाया गया वे निष्कलंक हैं ॥

सुसमाचार । प० मत्तय । २ । १३ ।

प्रभु के एक दूत ने येसेफ् को स्वप्न में दर्शन देके कहा उठ और

जन्मदिन के अनन्तर का इतवार

बालक और उस की माता को लेके मिसर में भाग जा और जब लों मैं तुझ से न कहूं तब लों वहीं रह क्योंकि हेरोदा बालक को नाश करने के लिये ढूंढ़ने पर है। सो उस ने उठके बालक और उस की माता को लिया और मिसर में चला गया और हेरोदा की मृत्यु लों वहीं रहा जिस्तें जो बात प्रभु ने प्रवक्ता के द्वारा कही थी सो पूरी होवे कि मैं ने अपने पुत्र को मिसर में से बुलाया। तब हेरोदा यह देखके कि मगों ने मुझ से ठट्ठा किया अत्यन्त क्रुद्ध भया और लोगों को भेजके जितने लड़के बेत्लेहेम् और उस के आसपास के सारे देश में दो बरस के और उस से छोटे थे उस समय के अनुसार जो उस ने मगों से यत्न करके बूझा था सब को मरवा डाला। तब जो बात यिर्मया प्रवक्ता के द्वारा कही गई थी सो पूरी हुई कि रामा में एक शब्द सुना गया रोने और बहुत विलाप करने का अर्थात् राहेल् अपने लड़कों के लिये रोती थी और शान्त होने नहीं चाहती थी इसलिये कि वे थेही नहीं॥

जन्मदिन के अनन्तर का इतवार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू ने अपना एकलौता पुत्र हम को दिया कि वह हमारी प्रकृति को अपने में ले लेवे और मानों इस समय एक शुद्ध कुमारी से जन्मे यह वर दे कि हम जो पुनर्जनित भये और लेपालकपन और अनुग्रह से तेरे लड़के बन गये हैं तेरे पवित्रात्मा से प्रतिदिन नये होते जावें उसी प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा जो तेरे और उसी पवित्रात्मा के संग सदा एक ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता है। आमेन्॥

जन्मदिन के अनन्तर का इतवार

पत्री । गलातियों । ४ । १ ।

पर मैं कहता हूं कि दायाद जब लों बच्चा रहता है तब लों यद्यपि सब का अधिकारी है तथापि उस में और दास में कुछ भेद नहीं रहता परन्तु पिता के ठहराये हुए समय लों वह प्रतिपालकों और कार्य्याध्यक्षों के अधीन रहता है। उसी प्रकार से हम भी जब बच्चे थे तब संसार की प्रथम शिक्षणीय बातों के अधीन होके दासत्व में पड़े थे पर जब समय की पूर्णता आ पहुंची तब ईश्वर ने अपने पुत्र को भेज दिया जो स्त्री से जन्मा और व्यवस्था की अधीनता में उत्पन्न हुआ कि उन को जो व्यवस्था के अधीन थे मोल लेवे जिस्तें हम लेपालकपन को प्राप्त करें। और इसलिये कि तुम पुत्र हो ईश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को हमारे हृदयों में भेजा जो यह पुकारता है अब्बा हे पिता। इस कारण तू अब दास नहीं पर पुत्र है और जब कि पुत्र तो ईश्वर के द्वारा दायाद भी है॥

सुसमाचार । प० मत्तय । १ । १८ ।

येशू ख्रीष्ट का जन्म इस प्रकार से भया कि जब उस की माता मिर्याम् की योसेफ् के संग मंगनी हुई तो उन के एकट्ठे होने से पहिले वह पवित्रात्मा की शक्ति से गर्भिणी पाई गई। और उस के पति योसेफ् ने जो धर्म्मी था और लोगों में उसे प्रगट करना नहीं चाहता था उसे चुपके से छोड़ देने को ठाना। पर जब वह इन बातों के सोच में था तब देखो प्रभु के दूत ने स्वप्न में उसे दर्शन देके कहा हे योसेफ् दावीद् के पुत्र अपनी स्त्री मिर्याम् को अपने यहां ले आने से मत डर क्योंकि जो उस के गर्भ में आया सो पवित्रात्मा से है। और वह पुत्र जनेगी और तू उस का नाम येशू रखना क्योंकि वही अपने निज लोगों को उन के पापों से त्राण देवेगा। पर यह

ख्रीष्ट का परिच्छेद

सब इसलिये हुआ कि जो बात प्रभु ने प्रवक्ता के द्वारा कही थी सो पूरी होवे कि देख वह कुमारी गर्भिणी होगी और पुत्र जनेगी और उस का नाम इम्मानूएल् रक्खेंगे जिस का अर्थ यह है कि ईश्वर हमारे संग। सो योसेफ् ने नींद से जागके जैसा प्रभु के दूत ने उस को आज्ञा दिई थी वैसाही किया। और वह अपनी स्त्री को अपने यहां ले आया और जब लों वह पुत्र को न जनी तब लों उस को न जाना और उस ने उस का नाम येशू रक्खा ॥

ख्रीष्ट का परिच्छेद

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू ने मनुष्य के निमित्त अपने धन्य पुत्र का परिच्छेद कराया और उस को व्यवस्था के अधीन कर दिया हम को आत्मा के सच्चे परिच्छेद का वर दे कि हमारा मन और हमारे सब इन्द्रिय सब सांसारिक और शारीरिक इच्छाओं की ओर से मृतक होवें और हम सब बातों में तेरी धन्य इच्छा के अधीन रहें उसी तेरे पुत्र हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन् ॥

पत्री। रोमियो। ४। ८।

धन्य है वह मनुष्य जिस के लेखे में प्रभु पाप को न गिने। तो क्या यह धन्य कहना परिच्छेद ही पर लगता है अथवा अपरिच्छेद पर भी क्योंकि हम कहते हैं कि अब्राहाम् का विश्वास उस के लिये धर्म्म गिना गया। तो वह किस दशा में गिना गया क्या जब वह परिछिन्न था अथवा जब वह अपरिछिन्न था। परिछिन्नता की अवस्था में नही पर अपरिछिन्नता ही की अवस्था में। और उस ने परिच्छेद

रूपी चिन्ह पाया जो उस धर्म्म की छाप थी जो उस की अपरिछिन्नता की अवस्था के विश्वास का फल था जिस्तें वह उन सब का जो अपरिछिन्नता की अवस्था में विश्वास करते हैं पिता होवे कि धर्म्म उन के लेखे में भी गिना जावे। और वह परिच्छेद का पिता उन के लिये होवे जो न केवल परिच्छेदवाले हैं पर हमारे पिता अब्राहाम् के उस विश्वास की लीक पर भी चलते हैं जो अपरिछिन्नता की अवस्था में उस का था। क्योंकि यह प्रतिज्ञा कि तू जगत का अधिकारी होवेगा अब्राहाम् वा उस के बंश से व्यवस्था के द्वारा नहीं पर विश्वास ही के धर्म्म के द्वारा किई गई। क्योंकि यदि व्यवस्था वाले अधिकारी हैं तो विश्वास व्यर्थ और प्रतिज्ञा निष्फल ठहरी॥

सुसमाचार। प० लूका।२।१५।

और ऐसा हुआ कि जब दूतगण उन के पास से स्वर्ग में चले गये तब गड़ेरियों ने आपस में कहा चलो हम बेत्लेहेम् लों जाके इस बात को जो हुई है जो प्रभु ने हमें जताई है देखें। और वे शीघ्र गये और मिर्याम् और योसेफ् को और बच्चे को चरनी में पड़ा पाया। और यह देखके उन्हों ने वह बात जो उस बालक के विषय में उन से कही गई थी विदित किई। और जितनों ने सुना सभों ने उन बातों के कारण जो गड़ेरियों ने उन से कहीं अचम्भा किया। पर मिर्याम् इन सब बातों को मन में रक्खे रही और अपने हृदय में उन्हें सोचा करती थी। और गड़ेरिये उन सब बातों के कारण से जो उन्हों ने सुनीं और देखीं जैसे उन से कहा गया था ईश्वर की महिमा और स्तुति करते हुए लौट गये। और जब आठवां दिन जिस में उस का परिच्छेद करना था आया तब उस का नाम येशू रक्खा गया जो उस के गर्भ में आने से पहिले दूत ने रक्खा था॥

यह प्रार्थना पत्री और सुसमाचार एपिफनिया लों प्रतिदिन काम में आवे।

एपिफनिया

अर्थात् खीष्ट का अन्यजातियों पर प्रगट होना

प्रार्थना

हे ईश्वर तू ने एक तारे की अगुवाई से अपने एकलौते पुत्र को अन्यजातियों पर प्रगट किया दया से यह वर दे कि हम जो अभी तुझे विश्वास से जानते हैं इस जीवन के अनन्तर तेरी महिमायुक्त ईश्वरता के प्रत्यक्षदर्शन का सुख भोगें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। एफेसियों। ३। १

इस कारण मैं पौल जो तुम अन्यजातियों के लिये खीष्ट येशू का बंधुवा हूं। यदि ईश्वर का जो अनुग्रह मुझे तुम्हारे निमित्त दिया गया तुम ने उस के भण्डारीपन का समाचार सुना हो कि उस ने प्रकटीकरण की रीति से मुझे रहस्य विदित किया जैसा मैं संक्षेप में लिख चुका भी हूं। और तुम उसे पढ़के उस से समझ सकते हो कि मैं खीष्ट के उस रहस्य में कैसी समझ रखता हूं जो और पीढ़ियों में मनुष्यवंशियों को ऐसा विदित नहीं किया गया था जैसे अभी उस के पवित्र प्रेरितों और प्रवक्ताओं के आत्मा के द्वारा विदित किया गया है। अर्थात् यह कि अन्यजातिगण संगी दायाद और एक ही देह के अंग और जो प्रतिज्ञा खीष्ट येशू में सुसमाचार के द्वारा किई गई उस के साझी हैं। उस सुसमाचार का मैं ईश्वर के उस अनुग्रह के दान के अनुसार जो उस की शक्ति की कार्य्यकारिता के अनुसार मुझे दिया गया परिचारक किया गया। मैं जो सब पवित्रों में से छोटे से भी छोटा हूं मुझ को यह अनुग्रह दिया गया कि मैं अन्यजातियों को

खीष्ट के अथाह धन का सुसमाचार सुनाऊं। और सब को दिखाऊं कि उस रहस्य का भण्डारीपन क्या है जो युगानयुग से सब के सिरजनहार ईश्वर में छिपा रहा था। जिस्तें अभी स्वर्गीय स्थानवासी प्रभुताओं और अधिकारों को ईश्वर की नानारूपी बुद्धि एक्लेसिया के द्वारा विदित होवे। उस सनातन संकल्प के अनुसार जो उस ने हमारे उस प्रभु येशू खीष्ट में किया था जिस में हम को उस के विश्वास के द्वारा ढाढ़स और भरोसे के साथ प्रवेश प्राप्त हुआ है॥

सुसमाचार। प० मत्तय।२।१।

जब येशू हेरोदा राजा के दिनों में यहूदा के बेत्‌लेहेम् में उत्पन्न हुआ तब देखो पूरब से मग यरूशलेम् में यह कहते हुए उपस्थित हुए कि जो यहूदियों का राजा उत्पन्न हुआ है सो कहां है क्योंकि हम ने पूरब में उस का तारा देखा और उसे दण्डवत् करने को आये हैं। यह सुनके हेरोदा और उस के संग सारी यरूशलेम् घबराई। और वह प्रजा के सब महायाजकों और शास्त्रियों को एकट्ठा करके उन से पूछने लगा कि खीष्ट कहां उत्पन्न होनेहारा है। और उन्हों ने उस से कहा कि यहूदा के बेत्‌लेहेम् में क्योंकि प्रवक्ता के द्वारा ऐसा ही लिखा गया है कि तू हे यहूदा देश के बेत्‌लेहेम् यहूदा के अधिपतियों में कदापि सब से छोटा नहीं क्योंकि तुझ में से एक अधिपति निकलेगा जो मेरे निज लोकगण यिस्रायल् को पालेगा। तब हेरोदा ने मगों को चुपके से बुला के उन से यत्न करके बूझा कि तारा किस समय दिखाई दिया। और उस ने उन्हें बेत्‌लेहेम् में यह कहके भेजा कि जाके उस बालक के विषय में यत्न करके खोज करो और जब उस को पाओ तब मुझे फिर समाचार दो कि मैं भी जाके उसे दण्डवत् करूं। सो वे राजा की सुनके चले गये और

देखा जो तारा उन्हों ने पूरब में देखा था सो उन के आगे आगे चला यहां लों कि जहां बालक था उसी स्थान के ऊपर ठहर गया। और वे तारे को देखके अत्यन्त आनन्दित हुए। और घर में प्रवेश करके बालक को उस की मा मियाम् के साथ देखा और गिरके उसे दण्डवत् किया और अपना धन निकालके उस को भेंट चढ़ाई अर्थात् सोना और लुबान और गन्धरस। और स्वप्न में चितौनी पाके कि हेरोद के पास न लौट जावें वे दूसरे मार्ग से अपने देश को फिरे॥

ईपिफनिया के उपरान्त पहला इतवार

प्रार्थना

हे प्रभु हम विनती करते हैं तू अपने लोगों की प्रार्थना जो तुझे पुकारते हैं दया से ग्रहण कर और यह वर दे कि जो कार्य्य उन्हें करना चाहिये वे उन को बूझें और जानें और यह भी कि वे उन को विश्वस्तता से करने के लिये अनुग्रह और शक्ति पावें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। रामियों। १२। १।

इस लिये हे भाइयो मैं ईश्वर के समस्त छोह के कारण से तुम से विनती करता हूं कि तुम अपने शरीरों को जीवता पवित्र और ईश्वर को ग्राह्य बलिदान करके चढ़ाओ कि यही तुम्हारी बुद्धियुक्त उपासना है। और इस संसार के समानरूप मत होओ परन्तु तुम्हारे अन्तःकरण के नये होने से तुम्हारा रूप बदल जावे जिस्तें तुम जांच सको कि ईश्वर की उत्तम और ग्राह्य और पूर्ण इच्छा क्या है। क्योंकि मैं उस अनुग्रह के द्वारा जो मुझे दिया गया तुम में से प्रत्येक

जन से कहता हूं कि अपने विषय में जो कुछ समझना चाहिये उस से अधिक कुछ मत समझो परन्तु ऐसा समझो कि मर्य्यादा से बाहर न समझो जैसा ईश्वर ने प्रत्येक को विश्वास को परिमाण से बांट दिया। क्योंकि जैसा हमारी एक ही देह में बहुत से अंग हैं और सब अंगों का एक ही काम नहीं उसी रीति से हम जो बहुत हैं ख्रीष्ट में एक ही देह और एक एक करके एक दूसरे के अंग हैं॥

सुसमाचार। प० लूका। २।४१।

और उस के माता पिता प्रतिवर्ष पस्खा के पर्व्व के समय यरूशलेम् को जाते थे। और जब वह बारह बरस का हुआ तब वे पर्व्व की रीति के अनुसार चढ़ गये और जब वे उन दिनों को पूरा करके लौटे आते थे तब बालक येशू यरूशलेम् में रह गया और उस के माता पिता ने न जाना। परन्तु यह समझके कि वह यात्रियों की जथा में होगा वे एक दिन का मार्ग गये और अपने कुनबों और जानपहिचानों में उस को ढूंढ़ते रहे और उसे न पाके उस को ढूंढ़ते ढूंढ़ते यरूशलेम् को फिरे। और तीन दिन के अनन्तर यों हुआ कि उन्हों ने उस को मन्दिर में शिक्षकों के बीच बैठे उन की सुनते और उन से प्रश्न करते पाया और जितने उस की सुनते थे सब उस की बुद्धि और उस के उत्तरों से अचम्भा कर रहे थे। और उस को देखके उन्हों ने आश्चर्य्य किया और उस की माता ने उस से कहा हे लड़के तू ने हम से ऐसा व्यवहार क्यों किया देख तेरा पिता और मैं तुझे कुढ़ते हुए ढूंढ़ते थे। और उस ने उन से कहा तुम क्यों मुझे ढूंढ़ते थे क्या नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के घर में रहना अवश्य है। और उन्हों ने यह बात जो उस ने उन से कही न समझी। और वह उन के साथ उतर गया और नासरा में आया और उन के अधीन रहा। और उस की माता

इन सब बातों को अपने हृदय में रक्खे रही। और येशू बुद्धि और डील में और ईश्वर और मनुष्यों की प्रसन्नता में बढ़ता गया ॥

एपिफनिया के उपरान्त दूसरा इतवार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् और सनातन ईश्वर तू स्वर्ग और पृथ्वी की सब वस्तुन का शासनकर्ता है दया करके अपने लोगों की विनतियां सुन और हमारे जीवन के सब दिन अपनी शान्ति का वर हमें देता रह हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन् ॥

पत्री। रोमियों।१२।६।

पर जब कि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया हम को भिन्न भिन्न दान मिले हैं इस लिये यदि प्रवचन हमें मिला होवे तो विश्वास के परिमाण के अनुसार प्रवचन करें यदि परिचर्य्या मिली हो तो परिचर्य्या ही में लौलीन रहें और जो सिखाता है सो शिक्षा में लौलीन रहे जो उपदेश देता है सो उपदेश ही में लगा रहे जो दान देता है सो उदारता से देवे जो प्रधानता करता है सो यत्न करके करे जो दया करता है सो आनन्द से दया करे। प्रेम निष्कपट होवे। जो बुरा है उस से घिन्न करो जो भला है उस से लिपटे रहो। भाइयों के प्रेम में एक दूसरे से मया रक्खो। आदरभाव में एक दूसरे को अपने से श्रेष्ठ समझो। यत्न करने में आलस मत करो। आत्मा में उद्योगी रहो। प्रभु की सेवा करो। आशा में आनन्दित रहो। क्लेश में धीरज धरो। प्रार्थना में लौलीन रहो। पवित्रों की दरिद्रता को बांट लेओ। अतिथि की सेवा में लगे रहो। जो तुम्हें सताते हैं उन को

एपिफनिया के उपरान्त दूसरा इतवार

आशीर्वाद देओ आशीर्वाद देओ और स्राप मत देओ। आनन्द करनेहारों के संग आनन्द करो रोनेहारों के संग रोओ। एक दूसरे की ओर एक सा मन रक्खो। अपने मन ऊंची बातों की ओर मत लगाओ पर छोटों के संग छोटे बनो॥

सुसमाचार। प० योहानान्। २। १।

और तीसरे दिन गालील के काना में एक विवाह हुआ और येशू की माता वहां थी और येशू और उस के शिष्य विवाह में बुलाये गये थे। और जब दाखमधु घट गया तब येशू की माता ने उस से कहा कि उन के पास दाखमधु नहीं रहा। और येशू ने उस से कहा हे नारी मुझे तुझ से क्या काम मेरी घड़ी अबलों नहीं आई। उसकी माता ने परिचारकों से कहा जो कुछ वह तुम से कहे सो करो। वहां यहूदियों के शुद्ध होने की रीति के अनुसार पत्थर के छः मटके धरे हुए थे जिन में दो दो वा तीन तीन मन अटते थे। येशू ने उन से कहा मटकों को जल से भर देओ। और उन्हों ने उन को मुंहा मुंह भर दिया। और उस ने उन से कहा अब निकालके भोज के प्रधान के पास ले जाओ। और वे ले गये। और जब भोज के प्रधान ने उस जल को जो दाखमधु बन गया था चखा और नहीं जानता था कि वह कहां से है (परन्तु जिन परिचारकों ने जल को निकाला था सो जानते थे) तब भोज के प्रधान ने दुलहे को बुलाके उस से कहा कि सब मनुष्य तो पहिले उत्तम दाखमधु परोसते हैं और जब लोग पीके छक गये तब मध्यम को पर तू ने उत्तम दाखमधु को अब लों रख छोड़ा है। अपने आश्चर्य्य कर्म्मों का यह आरम्भ येशू ने गालील के काना में किया और अपनी महिमा को प्रगट किया और उस के शिष्यों ने उस पर विश्वास किया॥

एपिफ़निया के उपरान्त तीसरा इतवार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् और सनातन ईश्वर हमारी दुर्बलता पर दया की दृष्टि कर और हमारे सब जोखिम और आवश्यकता के समय हमारी सहाय और रक्षा के लिये अपना दहिना हाथ बढ़ाया कर हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

पत्री । रोमियों । १२ । १६

अपनी समझ में बुद्धिमान न होओ । बुराई के पलटे में किसी की बुराई मत करो । सब मनुष्यों की दृष्टि में जो बातें भली हैं उन की चिन्ता आगे से किया करो । यदि हो सके जहां लों तुम से बन पड़े सब मनुष्यों के संग मेल से रहो । हे प्यारो अपना पलटा मत लेओ और कोप का साम्हना मत करो क्योंकि लिखा है कि प्रभु कहता है कि पलटा लेना मेरा ही काम है मैं ही बदला दूंगा । वरन यदि तेरा शत्रु भूखा होवे तो उसे खिला यदि प्यासा हो तो उस को पिला क्योंकि ऐसा करने से तू उस के सिर पर अंगारों का ढेर करेगा । बुराई तुझे जीतने न पावे पर भलाई से बुराई को जीत ॥

सुसमाचार । प० मत्तय । ८ । १ ।

जब वह पहाड़ पर से उतर आया तब बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई । और देखो एक कोढ़ी ने निकट आके यह कहके उसे दण्डवत् किया कि हे प्रभु यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है । और उस ने अपना हाथ बढ़ाके यह कहके उसे छूआ कि मैं चाहता हूं तू शुद्ध हो जा । और तत्क्षण उस का कोढ़ जाता रहा । और येशू ने उस से कहा देख किसी से न कह पर जा अपने तईं याजक को दिखा और जिस दान की आज्ञा मोशे ने दिई सो चढ़ा जिस्तें उन पर साक्षी

होवे। और जब उस ने कपर्णहूम् में प्रवेश किया तब एक शतपति उस की विनती करता और यह कहता हुआ निकट आया कि हे प्रभु मेरा दास घर में अर्द्धाङ्ग रोग और बड़ी पीड़ा में पड़ा है। और उस ने उस से कहा मैं आके उसे चंगा करूंगा। और शतपति ने उत्तर देके कहा हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं कि तू मेरे छत तले आवे पर केवल वचन कह तो मेरा दास चंगा हो जायेगा। क्योंकि मैं भी पराधीन मनुष्य हूं और मेरे अधीन योद्धा हैं और मैं एक से कहता हूं कि जा तो वह जाता है और दूसरे को कि आ तो वह आता है और अपने दास को कि यह कर तो वह करता है। और येशू ने यह सुनके आश्चर्य्य किया और जो पीछे आते थे उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि यिस्राएल् में भी मैं ने ऐसा बड़ा विश्वास नहीं पाया। और मैं तुम से कहता हूं कि पूरब और पच्छिम से बहुतेरे आवेंगे और स्वर्ग के राज्य में अब्राहाम् और यिस्हाक् और याकोब् के संग भोजन पर बैठेंगे पर राज्य के पुत्र बाहर के अंधेरे में डाल दिये जावेंगे वहां रोना और दांत पीसना होवेगा। और येशू ने शतपति से कहा जा जैसा तू ने विश्वास किया वैसा ही तेरे लिये होवे। और वह दास उसी घड़ी चंगा हो गया॥

एपिफनिया के उपरान्त चौथा इतवार

प्रार्थना

हे ईश्वर तू जानता है कि हम इतने और ऐसे बड़े जोखिमों से घिरे हैं कि अपनी प्रकृति की दुर्बलता के कारण सदा सीधे खड़े नहीं रह सकते हमें ऐसी शक्ति दे और हमारी ऐसी रक्षा कर कि हम सब जोखिमों में सम्भाले जावें और सब परीक्षाओं के पार पहुंच जावें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

एपिफनिया के उपरान्त चैाथा इतवार

पत्री । रोमियों । १३ । १ ।

प्रत्येक प्राणी अधिकारियों के अधीन रहे क्योंकि ऐसा कोई अधि-कार नहीं जो ईश्वर की ओर से न हुआ हो और जो अधिकार हैं सो ईश्वर ही से ठहराये हुए हैं । इस लिये जो अधिकारी का साम्हना करता है सो ईश्वर के प्रवन्ध का साम्हना करता है और साम्हना करनेहारे अपना दण्ड पावेंगे । क्योंकि अधिपति भले कर्म्म के करने हारे को भय के कारण नहीं होते पर बुरा कर्म्म करनेहारे ही के और क्या तू चाहता है कि अधिकारी से डरना न पड़े तो भलाई कर तो उस से प्रशंसा पावेगा क्योंकि वह तेरी भलाई के लिये ईश्वर का परिचारक है । पर यदि तू बुराई करे तो डर क्योंकि वह खड्ग को वृथा धरे नहीं रहता क्योंकि वह ईश्वर का परिचारक और बुरा करने हारे पर ईश्वर का कोप प्रगट करने के लिये पलटा लेनेहारा है । इस कारण अधीन रहना अवश्य है केवल कोप के हेतु नहीं पर अन्तर्विवेक के हेतु भी । क्योंकि इसी कारण से तुम कर भी देते हो क्योंकि वे ईश्वर के सेवक होके इसी कार्य्य में लौलीन रहते हैं । सब के ऋण उन को भर दिया करो जिस को कर चाहिये उस को कर जिस को शुल्क चाहिये उस को शुल्क देओ जिस का भय मानना चाहिये उस का भय मानो जिस का आदर करना चाहिये उस का आदर करो ॥

सुसमाचार । प० मत्तय । ८ । २३

और जब वह एक नाव पर चढ़ा तब उस के शिष्य उस के पीछे हो लिये । और देखो समुद्र में एक बड़ी आंधी उठी यहां लों कि नाव लहरों से ढंपने लगी पर वह सोया था और उन्हों ने पास आके और उसे जगाके कहा हे प्रभु बचा हम नष्ट होते हैं । और उस ने

उन से कहा हे अल्पविश्वासियो क्यों कायर हुए हो। तब उस ने उठके बयार और समुद्र को डांटा तो बड़ा नीवा हो गया। और वे मनुष्य अचम्भा करके कहने लगे यह कैसा मनुष्य है कि बयार और समुद्र भी उस की आज्ञा मानते हैं। और जब वह उस पार गदरियों के देश में आया तब दो पिशाचग्रस्त समाधियों में से निकलते हुए उसे मिले जो अति क्रूर थे यहां लों कि उस मार्ग से कोई चल नहीं सकता था। और देखो उन्हों ने चिल्लाके कहा हे ईश्वर के पुत्र हमें तुझ से क्या काम क्या तू समय से पहिले हमें पीड़ा देने आया है। और उन से दूर बहुत से सुअरों की झुण्ड चर रही थी सो पिशाचों ने यह कहके उस से विनती किई कि यदि तू हम को निकालता है तो हमें सुअरों की उस झुण्ड में भेज दे। और उस ने उन से कहा जाओ। सो वे निकलके सुअरों में पैठ गये और देखो समस्त झुण्ड कड़ारे पर से समुद्र में दौड़के कूद पड़ी और जल में डूब मरी और उन के चरानेहारे भागे और नगर में जाके यह सब बातें और पिशाचग्रस्तों का बृत्तान्त सुना दिया। और देखो सारे नगर के लोग येशू से मिलने को निकले और उस को देखके उस से विनती किई कि हमारे देश से पधार ॥

एपिफनिया के उपरान्त पांचवां इतवार

प्रार्थना

हे प्रभु हम विनती करते हैं कि तू एक्लेसिया की जो तेरा परिवार है अपने सत्य धर्म्म में निरन्तर ऐसी रक्षा कर कि जो केवल तेरे स्वर्गीय अनुग्रह की आशा पर टेकन करते हैं सो सदा तेरे बड़े सामर्थ्य से सुरक्षित रहें। हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन ॥

एपिफनिया के उपरान्त पांचवां इतवार

पत्री । कोलोस्सियों । ३ । १२ ।

इस लिये तुम ईश्वर के चुने हुए और पवित्र और प्रिय होके दया तथा कृपालुता नम्रता सौम्यस्वभावता धीरजरूपी वस्त्र पहिनो और एक दूसरे की सहा करो और यदि कोई किसी से उदास होने का कुछ कारण पावे तो उस को क्षमा करे जैसे प्रभु ने तुम को क्षमा किया तैसे ही तुम भी करो । और इन सब के ऊपर प्रेम पहिन लेओ जो पूर्णता का बन्धन है । और खीष्ट की शान्ति तुम्हारे हृदयों में न्यायी बन के रहे क्योंकि तुम उसी में भागी होने के लिये एक ही देह में बुलाये भी गये । और कृतज्ञ हुआ करो । खीष्ट का वचन तुम में समस्त बुद्धि के साथ बहुतायत से बसे और तुम स्तोत्रों और भजनों और आत्मिक गीतों के द्वारा एक दूसरे को सिखाया और चिताया करो और अपने हृदयों में अनुग्रह के साथ ईश्वर की स्तुति में गीत गाया करो । और वचन से वा कर्म्म से जो कुछ करो सो सब प्रभु येशू के नाम में करो और उस के द्वारा ईश्वर पिता का धन्यवाद किया करो ॥

सुसमाचार । प० मत्तय । १३ । २४ ।

स्वर्ग का राज्य एक मनुष्य के समान है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया पर जब मनुष्य सोते थे तब उस का शत्रु आया और गेहूं के बीच कड़वे दाने बोके चला गया । और जब अंकुर निकला और बालें फूटने लगीं तब कड़वे दाने भी दिखाई दिये । और घर के स्वामी के दासों ने उस के पास आके कहा हे प्रभु क्या तू ने अपने खेत में अच्छा बीज नहीं बोया तो उस में कड़वे दाने कहां से आये । उस ने उन से कहा किसी शत्रु ने यह किया है । और दासों ने उस से कहा क्या तू चाहता है कि हम जाके उन्हें उखाड़ के बटोर लेवें

एपिफनिया के उपरान्त छठवां इतवार

उस ने कहा नहीं ऐसा न हो कि कड़वे दाने बटोरने में तुम उन के संग गोहूं को भी उखाड़ लोगे। दोनों को कटनी लों बढ़ने देओ और कटनी के समय मैं लवनेहारों से कहूंगा पहिले कड़वे दानों को बटोरो और जलाने के लिये उन के गट्ठे बांधो पर गोहूं को मेरे खत्ते में एकट्ठा करो॥

एपिफनिया के उपरान्त छठवां इतवार

प्रार्थना

हे ईश्वर तेरा धन्य पुत्र इस लिये प्रगट भया कि दुष्टात्मा के कर्म्मों को नष्ट करके हम को ईश्वर के पुत्र और अनन्त जीवन के अधिकारी बनावे हम विनती करते हैं यह वर दे कि हम जो यह आशा रखते हैं अपने को शुद्ध करें जैसा वह शुद्ध है ऐसा कि जब वह शक्ति और बड़ी महिमा के साथ फिर प्रगट होवे तब हम उस के सनातन और महिमायुक्त राज्य में उस के समान बन जावें जहां वह तेरे संग हे पिता और तेरे संग हे पवित्रात्मा सदा एक ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता है। आमेन्॥

पत्री। १ योहानान्। ३। १।

देखो पिता ने हम पर कैसा प्रेम प्रगट किया है कि हम ईश्वर के लड़के कहलावें और हम ऐसे ही हैं भी। इस लिये संसार हम को नहीं जानता कि उसने उस को नहीं जाना। हे प्रियो अभी हम ईश्वर के लड़के हैं और अब लों प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होवेंगे पर हम जानते हैं कि यदि वह प्रगट होवे तो हम उस के समान होवेंगे क्योंकि हम उस को जैसा वह है तैसाही देखेंगे। और जो कोई उसपर यह आशा रखता है

सो अपने को शुद्ध करता है जैसा वह भी शुद्ध है। जो कोई पाप करता है सो व्यवस्थाभंग भी करता है और पाप तो व्यवस्थाभंग ही है। और तुम जानते हो कि वह इस लिये प्रगट हुआ कि पापों को उठा दे और पाप उस में है ही नहीं। जो कोई उस में रहता है सो पाप नहीं करता जो कोई पाप करता है उसने न उस को देखा न जाना है। हे बच्चो कोई तुम्हें धोखा न देवे जो धर्म्म करता है सोई धर्म्मी है जैसा वह भी धर्म्मी है। जो कोई पाप करता है सो दुष्टात्मा से है क्योंकि दुष्टात्मा आरम्भ ही से पाप करता है। ईश्वर का पुत्र इसी लिये प्रगट हुआ कि दुष्टात्मा के कर्म्मों को नाश करे॥

सुसमाचार। प० मत्तय। २४। २३।

उस समय यदि कोई तुम से कहे कि देखो खीष्ट यहां है वा वहां है तो उस की प्रतीति मत करना क्योंकि झूठे खीष्ट और झूठे प्रवक्ता उठेंगे और बड़े चिन्ह और अचम्भे दिखावेंगे यहां लों कि यदि हो सकता तो चुने हुओं को भी भरमाते। देखो मैं ने तुम को आगे से कह दिया है। सो यदि वे तुम से कहें कि देखो वह बन में है तो मत निकलना देखो वह कोठरियों में है तो प्रतीति मत करना। क्योंकि जैसे बिजली पूरब से निकल के पच्छिम लों चमकती है तैसाही मनुष्य के पुत्र का आगमन भी होगा। जहां कहीं लोथ होवे तहां गिद्ध एकट्ठे होवेंगे। पर उन दिनों के क्लेश के अनन्तर ही सूर्य्य अंधेरा हो जायगा और चन्द्रमा अपना प्रकाश न देवेगा और तारागण आकाश में से गिरेंगे और स्वर्ग की शक्तियां डोल उठेंगी और तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा और तब पृथिवी के सब गोत्र छाती पीटेंगे और मनुष्य के पुत्र को आकाश के मेघों पर सामर्थ्य और बड़ी महिमा के साथ आते देखेंगे। और वह अपने दूतों को

नरसिंघे के बड़े शब्द के साथ भेज देगा और वे उस के चुने हुओं को आकाश की एक ओर से उस की दूसरी ओर लों चारों दिशाओं से एकट्ठा करेंगे ॥

सेप्त्वागेसिमा नामक इतवार

अर्थात् क्वद्रागेसिमा से पहिले तीसरा इतवार

प्रार्थना

हे प्रभु हम विनती करते हैं अपने लोगों की प्रार्थनाओं को प्रसन्नता से सुन कि हम जो न्याय के अनुसार अपने अपराधों का दण्ड पाते हैं तेरी दया से तेरे नाम की महिमा के निमित्त छुटकारा पावें हमारे त्राता येशू ख्रीष्ट के द्वारा जो तेरे और पवित्रात्मा के संग सदा एक ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता है। आमेन् ॥

पत्री । १ कोरिन्थियों । ९ । २४ ।

क्या तुम नहीं जानते कि जो दौड़स्थान में दौड़ते हैं सो दौड़ते तो सब हैं पर जयका फल एक ही पाता है। तुम ऐसे ही दौड़ो जिस्तें जीत सको। पर जो कोई जीतने के लिये यत्न करता है सो सब बातों में संयम से रहता है। सो वे तो इस लिये ऐसा करते हैं कि नाशमान मुकुट प्राप्त करें पर हम इस लिये कि अविनाशी को पावें। इस कारण मैं ऐसा दौड़ता हूं कि बेठिकाने नहीं दौड़ता मैं ऐसा मुक्के लड़ता हूं कि पवन को नहीं मारता वरन मैं अपनी देह को घूसे मारता और दासत्व में लाता हूं न होवे कि कहीं औरों को प्रचार करके मैं आप अग्राह्य ठहरूं ॥

सेप्त्वागेसिमा नामक इतवार

सुसमाचार । प० मत्तय । २० । १ ।

स्वर्ग का राज्य एक गृहस्थ के समान है जो भार होते ही अपनी दाखबारी में बनिहार लगाने के लिये निकला । और बनिहारों के संग दिन भर की एक एक अधेली ठहरा के उस ने उन को अपनी दाखबारी में भेज दिया । और पहर दिन चढ़े उस ने निकल के और लोगों को हाट में बिना कार्य्य खड़े पाया और उन से कहा तुम भी दाखबारी में जाओ तो जो कुछ उचित हो सो मैं तुम्हें दूंगा । और वे गये । फिर दोपहर और तीसरे पहर को उस ने निकल के वैसाही किया । और जब एक ही घंटा दिन रहा तब उस ने निकल के औरों को खड़े पाया और उन से कहा यहां दिन भर क्यों बिना कार्य्य खड़े रहे हो । उन्हों ने उस से कहा इस लिये कि किसी ने हमें बनी पर नहीं लगाया । उस ने उन से कहा तुम भी दाखबारी में जाओ । जब सांझ भई तब दाखबारी के स्वामी ने अपने भण्डारी से कहा बनिहारों को बुलाओ और पिछलों से लेके पहिलों तक उन की बनी उन को देओ और जो एक घंटा दिन रहे लगाये गये थे उन्हों ने आके एक एक अधेली पाई । तब पहिलों ने आके समझा कि हम अधिक पावेंगे परन्तु उन्हों ने भी एक एक अधेली पाई । और पाके वे उस गृहस्थ पर कुड़कुड़ाने लगे और कहा इन पिछलों ने एक ही घंटा काम किया और तू ने उन को हमारे तुल्य किया है जिन्हों ने दिन भर का भार और लूह को सहा । पर उस ने उत्तर देके उन में से एक से कहा हे मित्र मैं तुझ से अन्याय नहीं करता क्या तू ने मुझ से एक अधेली लेने को नहीं ठहराया था अपना उठा ले और चला जा मेरी इच्छा है कि जितना तुझ को देता हूं उतना इस पिछले को भी देऊं । क्या जो मेरा है उस से मैं जो चाहूं सो नहीं कर सकता क्या तेरी आंख इसी लिये बुरी है कि मैं भला हूं । इसी प्रकार से जो पिछले हैं सो पहिले होंगे और जो पहिले हैं सो पिछले होवेंगे ॥

सेक्सागेसिमा नामक इतवार

अर्थात् क्वद्रागेसिमा से पहिले दूसरा इतवार

प्रार्थना

हे प्रभु परमेश्वर तू देखता है कि हम अपनी किसी करणी पर भरोसा नहीं रखते दया से यह वर दे कि हम तेरी शक्ति के द्वारा सारी हानि से सुरक्षित रहें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। २ कोरिन्थियों। ११। १९।

तुम आनन्द से निर्बुद्धियों की सहते हो इस लिये कि तुम बुद्धिमान हो। क्योंकि यदि कोई तुम को दासत्व में लाता वा निगल जाता वा पकड़ लेता वा अपने को बड़ा करता वा तुम को थपेड़ा मारता है तब तो तुम सहलेते हो। मैं अपने को अप्रतिष्ठित करके कहता हूं मानो हम निर्बल हुए हैं परन्तु मैं निर्बुद्धि बन के बोलता हूं कि जिस किसी बात में कोई ढीठ है उस में मैं भी ढीठा हूं। क्या वे इब्री हैं मैं भी हूं क्या वे यिस्राएलबंशी हैं मैं भी हूं क्या वे अब्राहाम् के बंश हैं मैं भी हूं क्या वे ख्रीष्ट के परिचारक हैं मैं बौड़हा बन के बोलता हूं कि मैं इस से अधिक हूं परिश्रमों में बहुत अधिक बन्दीगृहों में बहुत अधिक मार खाने में बहुत अधिक मृत्यु में बहुत अधिक। पांच बार मैं ने यहूदियों से उनतालीस उनतालीस बेत खाये तीन बार मैं ने कोड़े खाये एक बार मैं पत्थराव किया गया तीन बार मैं नौकाभंग की विपत्ति में पड़ा एक रात दिन मैं ने गहिरे जल में बिताया। यात्रा में मैं बारबार रहा हूं नदियों के जोखिमों में डाकुओं के जोखिमों में अपनी जाति की ओर से जोखिमों में अन्यजातियों की ओर से जोखिमों में नगर में के जोखिमों में बन में के जोखिमों में समुद्र के जोखिमों में झूठे भाइयों की ओर से जोखिमों में रहा हूं

सेक्षागेसिमा नामक इतवार

श्रम श्रोर थकाहट में बार बार जागरण में भूख श्रोर प्यास में बार बार उपवासों में जाड़े श्रोर नंगेपन में रहा हूं। बाहर की बातों के छोड़ जो बात प्रतिदिन मुझ पर श्राती है सो सब एक्लीसियाश्रों की चिन्ता है। कैान निर्बल है कि मैं निर्बल नहीं किस के ठोकर खिलाई जाती है कि मैं नहीं जलता। यदि मुझे घमण्ड करना चाहिये ते मैं अपनी निर्बलता की बातों पर घमण्ड करूंगा। प्रभु येशू का ईश्वर श्रोर पिता जो युगानयुग धन्य है जानता है कि मैं झूठ नहीं बोलता

सुसमाचार। प० लूका। ८।४।

जब बड़ी भीड़ एकट्ठी भई श्रोर सब नगरों के लोग उसके पास चले आते थे तब उस ने दृष्टान्त में कहा एक बोनेहारा अपना बीज बोने के निकला श्रोर बोते बोते कुछ मार्ग की श्रोर गिरा सो रैंदा गया श्रोर आकाश के पंछी उसे खागये। श्रोर कुछ चटान पर गिरा सो उगके तरावट न पाने के हेतु सूख गया। श्रोर कुछ कांटों के बीच गिरा श्रोर कांटों ने उस के संग उग के उस के दबा लिया। श्रोर कुछ अच्छी भूमि में गिरा सो उग के सै। गुणा फल फला। यह कह के उस ने पुकारा कि जिस के सुनने के कान हैं सो सुने। तब उस के शिष्य उस से पूछने लगे कि इस दृष्टान्त का अर्थ क्या होगा। उसने कहा तुम के तो यह दिया गया कि ईश्वर के राज्य के रहस्य जानो पर श्रोरों के दृष्टान्तों में सब कहा जाता है जिस्तें वे देखते हुए न देखें श्रोर सुनते हुए न समझें। दृष्टान्त तो यह है। बीज ईश्वर का वचन है। श्रोर मार्ग की श्रोर वाले वे हैं जिन्हों ने सुना तब दुष्टात्मा आके उन के हृदय में से वचन के निकाल लेता है न होवे कि वे विश्वास करके त्राण पावें। श्रोर चटान पर वाले वे हैं कि जब सुनते हैं तब वचन के आनन्द से ग्रहण करते हैं श्रोर ये जड़ नहीं रखते

पर कुछ बेर के लिये विश्वास करते हैं और परीक्षा के समय हट जाते हैं। और जो बीज कांटों के बीच गिरा सो वे लोग हैं जो सुनते हैं और जाके चिन्ताओं और धन और इस जीवन के सुखों से दब जाते हैं और पूरा फल नहीं फलते। पर जो बीज अच्छी भूमि में पड़ा सो वे हैं जो वचन को अच्छे और भले हृदय से सुन के धारण करते और धीरज धरते हुए फल फलते हैं॥

क्विंक्वागेसिमा नामक इतवार

अर्थात् क्वद्रागेसिमा से पहिला इतवार

प्रार्थना

हे प्रभु तू ने हमें सिखाया है कि प्रेम के बिना हमारे सब कर्म्म निकम्मे हैं अपना पवित्रात्मा भेज के हमारे हृदय में प्रेम का वह अत्युत्तम दान भर दे कि वह तो मेल और सब भलाईयों का बन्धन ही है और उस बिना जो कोई जीता है सो तेरे साम्हने मृतक ठहरता है अपने एकलौते पुत्र येशू ख्रीष्ट के निमित्त यह वर दे। आमेन्॥

पत्री। १ कोरिन्थियों। १३। १।

यदि मैं मनुष्यों और दूतों की भाषाएं बोलूं और प्रेम न रक्खूं तो ठनठनाता पीतल वा झनझनाती झांझ होगया हूं। और यदि मैं प्रवचन की शक्ति रक्खूं और समस्त रहस्य और समस्त ज्ञान जानूं और यदि मेरा इतना विश्वास होवे कि पहाड़ों को टला दूं पर प्रेम न रक्खूं तो मैं कुछ नहीं हूं। और यदि मैं अपना सर्वस्व दान कर-देऊं और यदि मैं अपनी देह को जलाये जाने के लिये सौंप दूं पर

क्विंक्वागेसिमा नामक इतवार

प्रेम न रक्खूं तो मुझे कुछ लाभ नहीं। प्रेम धीरज धरता और भलाई करता है प्रेम डाह नहीं करता प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता फूलता नहीं अयोग्य काम नहीं करता स्वार्थी नहीं होता चिढ़ता नहीं बुराई को लेखे में नहीं ले आता अधर्म्म से आनन्दित नहीं होता पर सत्य के साथ आनन्द करता है सब कुछ पी लेता है सब कुछ सच मानता सब की आशा रखता सब कुछ सहता है। प्रेम कभी टलता नहीं पर चाहे प्रवचन हों तो वे लोप हो जावेंगे चाहे भाषाएं हों तो वे बंद होंगी चाहे ज्ञान होवे तो वह लोप हो जावेगा। क्योंकि हम अंशमात्र ज्ञान रखते हैं और अंशमात्र प्रवचन करते हैं पर जब पूर्ण आवेगा तब अंशमात्र लोप होवेगा। जब मैं बच्चा था तब बच्चे की सी बात बोलता था बच्चे का सा मन रखता था बच्चे का सा विचार करता था पर जब से सयाना हुआ तब से मैं ने बच्चे की बातों से हाथ उठाया। क्योंकि अब हम दर्पण में धुंधला सा देखते हैं पर तब आम्हने साम्हने देखेंगे अब तो मैं अंशमात्र जानता हूं पर तब ऐसा पहिचानूंगा जैसा मैं आप पहिचाना गया हूं। पर अब तो विश्वास आशा प्रेम ये तीन बने रहते हैं और इन में से जो बड़ा है सो प्रेम ही है॥

सुसमाचार। प० लूका। १८। ३१

और येशू ने बारह प्रेरितों को अपने पास बुलाके उन से कहा देखो हम यरूशलेम् को चढ़ जाते हैं और मनुष्य के पुत्र के विषय में प्रवक्ताओं के द्वारा जो कुछ लिखा गया सो पूरा होगा। क्योंकि वह अन्यजातियों के हाथ सौंपा जावेगा और ठट्ठों में उड़ाया जावेगा और निरादर किया जावेगा और लोग उसपर थूकेंगे और उसे कोड़े मारके घात करेंगे और तीसरे दिन वह जी उठेगा। और उन्हों ने इन में से कोई बात न समझी और यह बात उन से गुप्त रही और

जो कहा गया था सो उन की बुद्धि में नहीं आया। और ऐसा हुआ कि जब वह यरीहो के निकट आता था तो एक अंधा मार्ग की ओर बैठा भीख मांगता था। और जाती हुई भीड़ का आहट पाके वह पूछने लगा कि यह क्या है। और लोगों ने उस को बताया कि येशू नासरी चला जाता है। तब उस ने चिल्लाके कहा हे येशू दावीद् के पुत्र मुझ पर दया कर। और जो आगे आगे जाते थे सो यह कहके उस को डांटने लगे कि चुप रह परन्तु वह बहुत अधिक पुकारने लगा हे दावीद् के पुत्र मुझ पर दया कर। तब येशू ठहरा और आज्ञा दिई कि उस को मेरे पास लाओ और जब वह निकट आया तब उस ने उस से पूछा तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं। उस ने कहा हे प्रभु मैं अपनी दृष्टि पाऊं। और येशू ने उस से कहा अपनी दृष्टि पा तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है। और तत्क्षण उस ने दृष्टि पाई और ईश्वर की महिमा करता हुआ उस के पीछे हो लिया। और सब लोगों ने देखके ईश्वर की स्तुति किई॥

क्वद्रागेसिमा का पहला दिन

जो भस्मबुधवार के नाम से प्रसिद्ध है

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् और सनातन ईश्वर तू अपनी किसी कृति से बैर नहीं रखता और जितने पश्चात्ताप करते हैं उन के पापों को क्षमा करता है हम में नये और चूर्ण मन सिरज ऐसा कि हम अपने पापों के विषय में योग्य रीति से विलाप करके और अपनी दुर्गति को मान लेके तुझ सम्पूर्ण दया के ईश्वर से पुरा पापमोचन और क्षमा प्राप्त करें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्

क्वद्रागेसिमा का पहला दिन

यह प्रार्थना क्वद्रागेसिमा के प्रतिदिन उसी दिन की ठहराई हुई प्रार्थना के अनन्तर पढ़ी जावे

पत्री की सन्ती । योएल् । २ । १२ ।

प्रभु कहता है कि उपवास करके और आंसू बहाके और विलाप करके अपने सारे हृदय से मेरी ओर फिरो और अपने वस्त्र नहीं पर अपना हृदय फाड़ो और प्रभु अपने ईश्वर की ओर फिरो क्योंकि वह करुणामय और दयालु है क्रोध करने में धीमा और दया में धनी और दुःख देने से पछताता है क्या जाने वह फिरे और पछतावे और ऐसी आशीष दे जावे जिस से प्रभु हमारे ईश्वर के लिये भेंट और तपावन होवे । सिय्योन् में तुरही फूंको उपवास ठहराओ पवित्र समाज एकट्ठा करो लोगों को बटोरो मण्डली को पवित्र करो पुर-नियों को एकट्ठा करो बालकों और दूधपीवकों को बटोरो दुलहा अपनी कोठरी से और दुलहिन अपने कोहबर से निकले । याजक जो प्रभु के परिचारक हैं देहलो और वेदी के बीच रोवें और कहें हे प्रभु अपने निज लोगों को छोड़ दे और अपने निज भाग को दुर्नाम न होने दे कि अन्यजातिगण उसपर प्रभुता करें लोगगणों में लोग क्यों कहने पावें कि उन का ईश्वर कहां है ॥

सुसमाचार । प० मत्तय । ६ । १६

जब तुम उपवास करो तब कपटियों के समान अपने मुख मलिन मत करो क्योंकि वे अपने मुख इस लिये बिगाड़ते हैं कि मनुष्यों को उपवासी देख पड़ें मैं तुम से सत्य कहता हूं कि वे अपना प्रतिफल पा चुके हैं । पर जब तू उपवास करे तब अपने सिर में तेल लगा और अपना मुख धो जिस्तें तू मनुष्यों को नहीं पर अपने पिता को जो गुप्त में रहता है उपवासी देख पड़े तो तेरा पिता जो गुप्त में

देखता है तुझे प्रतिफल देवेगा। धन अपने लिये पृथिवी पर मत संचय करो जहां कीड़ा और काई खा जाती है और चोर सेंध देते और चुराते हैं पर अपने लिये स्वर्ग में धन संचय करो जहां न कीड़ा न काई खा जाती है और न चोर सेंध देते न चुराते हैं क्योंकि जहां तेरा धन है तहां तेरा मन भी लगा रहेगा॥

क्विंक्वागेसिमा का पहला इतवार

प्रार्थन

हे प्रभु तू ने हमारे निमित्त चालीस दिन और चालीस रात उपवास किया हम को ऐसा संयम करने के लिये अनुग्रह दे कि हमारा शरीर आत्मा के अधीन होवे और हम धार्म्मिकता और सच्ची पवित्रता से तेरी ईश्वरीय प्रेरणा के अनुसार चलते रहें जिस्तें तेरी प्रतिष्ठा और महिमा होवे तू पिता और पवित्रात्मा के संग एक ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता है। आमेन्॥

पत्री। २ कोरिन्थियों। ६।१।

और हम जो उस के सहकर्म्मी हैं यह विनती भी करते हैं कि तुम ईश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ न ग्रहण करो। क्योंकि वह कहता है कि सुग्राह्य समय में मैं ने तेरी सुनी और त्राण के दिन में मैं ने तेरी सहाय किई देखो सुग्राह्य समय अभी है देखो त्राण का दिन अभी है। हम किसी विषय में किसी को ठोकर नहीं देते न होवे कि हमारी परिचर्य्या पर कलंक लगे पर सब विषयों में अपने को ईश्वर के परिचारक होने के योग्य दिखाते हैं अर्थात् बहुत सहनशीलता में क्लेशों में आपदों में सकेतियों में मार खाने में बन्दीगृहों में हुल्लड़ों

क्नुद्रागेसिमा का पहला इतवार

में श्रमों में जागरणों में उपवासों में पवित्रता में ज्ञान में धीरज में कृपालुता में पवित्रात्मा में निष्कपट प्रेम में सत्य के वचन में ईश्वर के सामर्थ्य में धर्म्म के शस्त्रों के द्वारा जो दहिने बायें हैं महिमा और अनादर के द्वारा दुर्नाम और सुनाम होने के द्वारा। हम भरमानेहारे समझे जाते तो हैं पर सच्चे हैं हम मानो अनजान हैं पर भली भांति जाने जाते हैं हम मानो मरा करते हैं पर देखो जीते हैं हम मानो ताड़ना पाते हैं पर बध नहीं किये जाते हम मानो शोक करते हैं पर सदा आनन्दित रहते हैं हम मानो दरिद्र हैं पर बहुतों को धनी करते हैं मानो हमारे पास कुछ है ही नहीं तौ भी हम सब कुछ रखते हैं॥

सुसमाचार। म० मत्तय।४।१।

तब आत्मा येशू को बन में ले गया कि दुष्टात्मा से उस की परीक्षा होवे। और चालीस दिन और चालीस रात उपवास करके पीछे वह भूखा भया। और परीक्षक ने पास आके उस से कहा यदि तू ईश्वर का पुत्र है तो आज्ञा कर कि ये पत्थर रोटी बन जावें। पर उस ने उत्तर देके कहा लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं पर प्रत्येक वचन से जो ईश्वर के मुख से निकलता है जीवेगा। तब दुष्टात्मा उस को पवित्र नगर में ले गया और मन्दिर के कलश पर खड़ा करके उस से कहा यदि तू ईश्वर का पुत्र है तो अपने को नीचे गिरा दे क्योंकि लिखा है कि वह अपने दूतों को तेरे विषय में आज्ञा देवेगा और वे तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे न होवे कि तेरे पांव को पत्थर से ठेस लगे। येशू ने उस से कहा फिर लिखा है कि तू प्रभु अपने ईश्वर की परीक्षा मत करना। फिर दुष्टात्मा उस को एक अति ऊंचे पहाड़ पर ले गया और जगत के समस्त राज्य और उन का विभव उस को दिखाया और उस से कहा यदि तू गिरके मुझे दण्डवत् करे

तो मैं यह सब कुछ तुझे देऊंगा। तब येशू ने उस से कहा रे सातान् दूर हो क्योंकि लिखा है कि प्रभु अपने ईश्वर को तू दण्डवत् कर और केवल उसी की उपासना कर। तब दुष्टात्मा उस को छोड़ गया और देखो दूत पास आके उस की टहल करने लगे॥

क्वद्रागेसिमा का दूसरा इतवार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू देखता है कि हम अपनी सहाय करने के लिये अपने में कुछ शक्ति नहीं रखते बाहर हमारे तन और भीतर हमारे मन की रक्षा कर ऐसा कि जितनी विपत्तियां शरीर पर आया चाहें और जितने बुरे विचार आत्मा पर चढ़ाई और उस की हानि किया चाहें हम उन सब से सुरक्षित रहें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। १ थेस्सलोनीकियों। ४। १।

हे भाइयो हम प्रभु येशू में तुम से बिनती और तुम्हें उपदेश करते हैं कि जैसे तुम ने हम से सीखा कि तुम को किस प्रकार से चलना और ईश्वर को प्रसन्न करना चाहिये जैसे तुम चलते भी हो तैसे ही तुम और भी बढ़ते जाओ। क्योंकि तुम जानते हो कि हम ने तुम को प्रभु येशू के द्वारा कैसे आदेश दिये। क्योंकि ईश्वर की यही इच्छा है कि तुम पवित्र बनो और वेश्यागमन से परे रहो और तुम में से प्रत्येक जन अपने पात्र को पवित्रता में और आदर से रखना जाने कामातुरता में नहीं जैसे अन्यजातिगण जो ईश्वर को जानते नहीं करते हैं। और कोई अपने भाई को इस विषय में छल न देवे

क्वद्रागेसिमा का तीसरा इतवार

न उस पर अंधेर करे क्योंकि प्रभु ऐसे सब कामों का पलटा लेनेहारा है जैसे हम ने पहिले तुम से कहा और साक्षी दिई। क्योंकि ईश्वर ने हमें अशुद्धता के लिये नहीं बुलाया परन्तु पवित्रता में बुलाया है। इस कारण जो अस्वीकार करता है सो मनुष्य का नहीं पर ईश्वर ही का अस्वीकार करता है जो अपना पवित्रात्मा तुम में देता है॥

सुसमाचार। प० मत्तय। १५। २१।

येशू वहां से निकलके सोर और सीदोन् के देशों में चला गया। और देखो एक कनानी स्त्री उधर से निकली और चिल्लाके कहा हे प्रभु दावोद् के पुत्र मुझ पर दया कर मेरी कन्या पिशाच से अति पीड़ित है। पर उस ने उस को कुछ उत्तर न दिया। और उस के शिष्य पास आके उस से विनती करके कहने लगे उस को विदा कर क्योंकि वह हमारे पीछे चिल्लाती है। पर उस ने उत्तर दिया कि मैं यिस्राएल् की खोई हुई भेड़ों को छोड़ और किसी के पास नहीं भेजा गया। पर वह आई और उस को दण्डवत् करके कहने लगी हे प्रभु मेरी सहाय कर। उस ने उत्तर देके कहा यह अच्छा नहीं कि लड़कों की रोटी को लेके कुत्तों के आगे फेंक दें। उस ने कहा हां प्रभु अच्छा है क्योंकि कुत्ते भी जो टुकड़े उन के स्वामियों के भोजनमंच पर से गिरते हैं उन्हें खा लेते हैं। तब येशू ने उत्तर देके उस से कहा हे नारी तेरा विश्वास बड़ा है जैसा तू चाहती है तैसा ही तेरे लिये होवे। और उस की कन्या उसी घड़ी चंगी हो गई॥

क्वद्रागेसिमा का तीसरा इतवार
प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर हम विनती करते हैं अपने नम्र दासों की बड़ी अभिलाषाओं पर दृष्टि करके अपना प्रतापवन्त दहिना हाथ बढ़ा

कि वह हमारे सब शत्रुओं से हमारी आड़ होवे। हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। एफेसियों।५।१।

सो तुम प्रिय लड़के होके ईश्वर के अनुकारी होओ और प्रेम में चलो जैसे खीष्ट ने भी तुम से प्रेम किया और अपने को तुम्हारे निमित्त सौंप दिया कि वह ईश्वर के लिये भेंट और सुगन्धित बलिदान होवे। पर वेश्यागमन और सब अशुद्धता और लोभ का नाम लों तुम्हारे बीच न लिया जावे जैसे पवित्रों को फबता है। और न फूहर बातें न मूढ़ता की बातें न ठट्ठे जो योग्य नहीं तुम में होवें वरन धन्यवाद ही होवे। क्योंकि इस को तुम निश्चय करके जानते हो कि कोई वेश्यागामी वा अशुद्ध वा लोभी जो मूर्त्तिपूजक है खीष्ट और ईश्वर के राज्य में कुछ भाग नहीं पाता। कोई तुम को व्यर्थ बातों से धोखा न देवे। क्योंकि इन्हीं कामों के कारण से ईश्वर का कोप आज्ञाभंग के पुत्रों पर पड़ता है। सो तुम उन के संग भागी मत होओ। क्योंकि तुम आगे अंधियारा थे पर अब प्रभु में उंजियाला हो सो ऐसे चलो जैसे उंजियाले के लड़कों को चाहिये। क्योंकि उंजियाले का फल सब प्रकार की भलाई और धर्म्म और सच्चाई में प्रगट होता है। और जांचा करो कि प्रभु की प्रसन्नता किस में है। और अंधियारे के निष्फल कर्म्मों में सहभागी मत होओ वरन उन को दूषाही करो। क्योंकि जो काम उन से गुप्त में होते हैं उन की चर्चा करना भी लज्जा की बात है। पर सब काम जब दूषे जाते हैं तब उंजियाले से पगट किये जाते हैं क्योंकि जो कुछ प्रगट किया जाता है सो उंजियाला ही होता है। इस लिये वह कहता है अरे सोनेहारे जाग और मृतकों में से उठ तो खीष्ट तुझ पर प्रकाशमान होवेगा॥

क्वद्रागेसिमा का तीसरा इतवार

सुसमाचार । प० लूका ।११।१४।

येशू एक गूंगा पिशाच निकालता था और ऐसा हुआ कि जब पिशाच निकला तब गूंगा बोला और भीड़ ने आश्चर्य्य किया पर उन में से कितनों ने कहा वह पिशाचों के प्रधान बाल्जबूल् ही की शक्ति से पिशाचों को निकालता है। अरु और लोग उस की परीक्षा करने की इच्छा से आकाश में का एक चिन्ह उस से मांगने लगे। पर उस ने उन के विचार जानके उन से कहा प्रत्येक राज्य जब उस में फूट पड़ती है तब उजड़ जाता है और घर में जब फूट पड़ती है तब वह नष्ट होता है। और यदि सातान् अपना ही विरोध करे तो उस का राज्य कैसे स्थिर रहेगा क्योंकि तुम कहते हो कि मैं पिशाचों को बाल्जबूल् की शक्ति से निकालता हूं। भला यदि मैं पिशाचों को बालजबूल् की शक्ति से निकालता हूं तो तुम्हारे पुत्र किस की शक्ति से उन्हें निकालते हैं इस लिये वेही तुम्हारे न्यायी होवेंगे। पर यदि मैं पिशाचों को ईश्वर की अंगुली से निकालता हूं तो ईश्वर का राज्य तुम पर आ गया। जब बलवन्त पुरुष शस्त्र बांधे हुए अपनी हवेली की रक्षा करता है तब उस की सम्पत्ति कुशल से रहती है पर जब उस से एक बलवन्त पुरुष उसपर चढ़के उसे जीतता है तब वह उस के सारे शस्त्रों को जिन पर वह भरोसा रखता था ले लेता और उस का धन लूटके बांट देता है। जो मेरी ओर नहीं सो मेरे विरुद्ध है और जो मेरे संग नहीं बटोरता सो तितर बितर करता है। जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाता है तब वह निर्जल स्थानों में बिश्राम ढूढ़ता हुआ घूमता है और न पाके कहता है मैं अपने घर को जहां से मैं निकल आया लौट जाऊंगा। सो आके वह उस को झाड़ा बुहारा और संवारा पाता है। तब वह जाके सात और आत्मा जो उस से अधिक दुष्ट हैं संग लेता है और वे प्रवेश करके वहां बसते हैं और उस मनुष्य की पिछली अवस्था पहिली से बुरी होती है। और

क्वद्रागेसिमा का चौथा इतवार

ऐसा हुआ कि जब वह यह बातें कह रहा था तब भीड़ में से एक स्त्री ने बड़े शब्द से कहा धन्य है वह गर्भ जिस में तू रहा और वे स्तन जिन्हें तू ने पीया। पर उस ने कहा हां परन्तु अधिक धन्य वेही हैं जो ईश्वर का वचन सुनते और पालते हैं॥

क्वद्रागेसिमा का चौथा इतवार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर हम बिनती करते हैं यह वर दे कि हम जो अपने कुकर्म्मों के कारण न्याय के अनुसार दण्ड के योग्य हुए हैं दया की रीति से तेरे शान्ति दायक अनुग्रह से चैन प्राप्त करें हमारे प्रभु और त्राता येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। गलतियों। ४। २१।

तुम जो व्यवस्था के अधीन होने चाहते हो मुझ से कहो क्या तुम व्यवस्था की नहीं सुनते। क्योंकि लिखा है कि अब्राहाम् के दो पुत्र भये एक तो लौंडी से और एक निर्बन्ध स्त्री से। पर जो लौंडी से उत्पन्न हुआ सो शरीर की रीति से उत्पन्न हुआ और जो निर्बन्ध से उत्पन्न हुआ सो प्रतिज्ञा के द्वारा जन्मा। इन बातों में दृष्टान्त है क्योंकि ये दो बाचाएं हैं एक तो सीनै पहाड़ से है जो दासत्व के लिये लड़के जनती है सो हागार् है। और यह हागार् अरब का सीनै पहाड़ है और अब की यरूशलेम् का प्रतिरूप है क्योंकि यह अपने लड़कों समेत दासत्व में पड़ी है। पर ऊपर की यरूशलेम् निर्बन्ध है सोई हमारी माता है। क्योंकि लिखा है हे बांझ तू जो जनती नहीं आह्लादित हो तू जिसे जनने की पीर नहीं होती ललकार और ऊंचे स्वर से गा क्योंकि उजड़ी हुई के लड़के सुहागिन के लड़कों से अधिक

हैं। और हम हे भाइयो यिस्हाक् के समान प्रतिज्ञा ही के लड़के हैं पर जैसे उस समय जो शरीर की रीति से जन्मा सो आत्मा की रीति से उत्पन्न हुए को सताता था वैसे ही अब भी होता है। पर शास्त्र क्या कहता है यह कि लौंड़ी और उस के पुत्र को निकाल दे क्योंकि लौंड़ी का पुत्र निर्बन्ध स्त्री के पुत्र के संग अधिकारी न होगा। इस कारण हे भाइयो हम लौंड़ी के नहीं पर निर्बन्ध ही के लड़के हैं॥

सुसमाचार। प० योहानान्। ६। १।

येशू गालील् के समुद्र के जो तिबेर्यद् का समुद्र है उस पार चला गया। और बड़ी भीड़ उस के पीछे आने लगी इस लिये कि जो आश्चर्य्य कर्म्म वह रोगियों पर करता था उन्हें वे देखते थे। और येशू पहाड़ पर चढ़ा और वहां अपने शिष्यों समेत बैठ गया। और पस्खा जो यहूदियों का पर्ब्ब है निकट था। सो येशू ने अपनी आंखें उठाके और यह देखके कि बड़ी भीड़ मेरे पास चली आती है फिलिप्प से कहा हम कहां से रोटी कीनें कि ये खा सकें। और यह उस ने उस की परीक्षा करने के लिये कहा क्योंकि वह आप जानता था कि मैं क्या करने पर हूं। फिलिप्प ने उस को उत्तर दिया सौ रुपैयों की रोटी से यदि एक एक मनुष्य थोड़ा थोड़ा पावे तौभी पूरा नहीं पड़ेगा। उस के शिष्यों में से एक ने अर्थात् शिमोन् पेत्र के भाई अन्द्रिया ने उस से कहा यहां एक छोकरा है जिस के पास जव की पांच रोटियां और दो मछलियां हैं पर इतनों के लिये ये क्या हैं। येशू ने कहा लोगों को बैठा देओ। और उस स्थान में बहुत सी घास थी। सो वे पुरुष जो गिनती में कोई पांच सहस्र थे बैठ गये। तब येशू ने उन रोटियों को लिया और धन्यवाद करके उन को जो बैठे थे बांट दिया और उसी भांति मछलियों में से जितना वे चाहते थे उतना उन को

बांट दिया। और जब वे तृप्त हुए तब उसने अपने शिष्यों से कहा बचे हुए टुकड़े बटोरो कि कुछ नष्ट न होवे। सो उन्हों ने बटोरा और जो टुकड़े जव की उन पांच रोटियों में से खानेहारों से बचे थे उन से बारह टोकरे भरे। और उन मनुष्यों ने इस आश्चर्य्य कर्म्म को जो उस ने किया था देखके कहा जो प्रवक्ता जगत में आनेहारा था सो निश्चय यही है॥

क्वद्रागेसिमा का पाचवां इतवार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर हम बिनती करते हैं अपने निज लोगों पर दया दृष्टि कर कि तेरी बड़ी कृपा से उन के शरीर और आत्मा दोनों तेरे शासन और तेरी रक्षा में सदा बने रहें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। इब्रियों।६।११।

ख्रीष्ट जब आनेहारे उत्तम पदार्थों का महायाजक होके आया तब अधिक बड़े और अधिक पूर्ण तम्बू के द्वारा जो हस्तकृत नहीं अर्थात् इसी सृष्टि का नहीं है और बकरों और बछरों के लहू के द्वारा नहीं पर अपने निज लहू के द्वारा उस ने सदा का छुटकारा कमाके पवित्रस्थान में सदा के लिये एक ही बार प्रवेश किया। क्योंकि यदि बकरों और सांड़ों का लहू और बछिया की राख जिस से अशुद्ध भये हुए लोग छिड़के जाते हैं शरीर की शुद्धता के लिये पवित्र करती है तो कितना अधिक ख्रीष्ट का लहू जिस ने सनातन आत्मा के द्वारा अपने तईं निष्कलंक बलि ईश्वर को चढ़ा दिया तुम्हारे अन्तर्विवेक

को मृतक कर्म्मों से शुद्ध करेगा जिस्तें तुम जीवते ईश्वर की उपासना करो। और इसी लिये वह नई बाचा का मध्यस्थ है कि पहिली बाचा के समय में जो अपराध भये उन के मोचन के लिये जब एक की मृत्यु हुई तब जो बुलाये गये सो सदा के भाग की प्रतिज्ञा प्राप्त करें॥

सुसमाचार। प० योहानान् ।८।४६।

येशू ने कहा तुम में से कौन मुझ पर पाप का दोष ठहराता है। यदि मैं सत्य बोलता हूं तो तुम क्यों मेरी प्रतीति नहीं करते। जो ईश्वर से है सो ईश्वर की बातों को सुनता है तुम इस लिये नहीं सुनते कि तुम ईश्वर से नहीं हो। यहूदियों ने उत्तर देके उस से कहा क्या हम अच्छा नहीं कहते कि तू शोमरोनी है और तुझे पिशाच लगा है। येशू ने उत्तर दिया मुझे पिशाच नहीं लगा पर मैं अपने पिता का आदर करता हूं और तुम मेरा अनादर करते हो। पर मैं अपनी महिमा नहीं चाहता एक है जो चाहता और बिचार करता है। मैं तुम से सत्य सत्य कहता हूं कि यदि कोई मेरा वचन पाले तो वह सदा लों कभी मृत्यु को न देखेगा। यहूदियों ने उस से कहा अब हम जान गये कि तुझे पिशाच लगा है अब्राहाम् और प्रवक्तागण मर गये और तू कहता है कि यदि कोई मेरे वचन को पाले तो वह सदा लों मृत्यु का स्वाद कभी न चखेगा। क्या तू हमारे पिता अब्राहाम् से जो मर गया बड़ा है प्रवक्ता भी मर गये तू अपने तईं क्या ठहराता है। येशू ने उत्तर दिया यदि मैं अपनी महिमा करता हूं तो मेरी महिमा कुछ नहीं है पर जो मेरी महिमा करता है सो मेरा पिता ही है जिस को तुम कहते हो कि वह हमारा ईश्वर है और तौभी तुम ने उस को नहीं जाना परन्तु मैं उसे जानता हूं और यदि मैं कहूं कि मैं उसे नहीं जानता तो मैं तुम्हारे समान झूठा ठहरूंगा परन्तु मैं उसे जानता और उस के वचन को पालता हूं। तुम्हारा

पिता अब्राहाम् मेरा दिन देखने की आशा से आह्लादित हुआ और उस ने उस को देखा और आनन्दित भया। तब यहूदियों ने उस से कहा तू अब लों पचास बरस का नहीं हुआ और क्या तू ने अब्राहाम् को देखा है। येशू ने उन से कहा मैं तुम से सत्य सत्य कहता हूं उस से पहिले कि अब्राहाम् हुआ मैं हूं। तब उन्हों ने पत्थर उठाये कि उसपर फेंकें पर येशू ने अपने को छिपाया और मन्दिर में से निकल गया॥

पुनरुत्थान से पहला इतवार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् और सनातन ईश्वर तू ने उस छोह से जो मनुष्यजाति से रखता था अपने पुत्र हमारे त्राता येशू ख्रीष्ट को भेजा है कि वह हमारे शरीर को धारण करके क्रूस पर मरे जिस्तें सारी मनुष्यजाति उस की बड़ी नम्रता का अनुकरण करे दया से यह वर दे कि हम उसके धीरज का अनुकरण करें और उसके पुनरुत्थान में भी भागी होवें उसी येशू ख्रीष्ट हमारे प्रभु के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। फिलिप्पियों। २। ५।

ख्रीष्ट येशू में जो मन था सो तुम में भी होवे कि उस ने ईश्वर के रूप में होके ईश्वर के तुल्य रहने को लोभनीय बस्तु न समझा परन्तु अपने को छूछा किया और दास का रूप धरा और मनुष्यों के समान बना और मनुष्य के से आकार में प्रगट होके उस ने अपने को नम्र किया और यहां लों आज्ञाकारी हुआ कि मृत्यु वरन क्रूस पर की मृत्यु भी सही। इस कारण से ईश्वर ने उस को अति उन्नत किया

और वह नाम दान दिया जो सब नामों से श्रेष्ठ है जिस्तें येशू के नाम से सब घुटने क्या स्वर्ग में के क्या पृथिवी पर के क्या पृथिवी के नीचे के टेके जावें। और प्रत्येक जीभ अंगीकार करे कि येशू खीष्ट प्रभु है जिस्तें ईश्वर पिता की महिमा होवे॥

सुसमाचार। प० मत्तय। २७।१।

जब भोर भया तब सब महायाजकों और लोगों के पुरनियों ने येशू के विरुद्ध परामर्श किया कि उस को मार डालें और उस को बांधके ले गये और पीलात अधिपति को सौंप दिया। तब यहूदा ने जिस ने उस को पकड़वाया था यह देखके कि उसपर दण्ड की आज्ञा किई गई पछताके वे तीस रुपैये महायाजकों और पुरनियों को फेर दिये और कहा मैं ने जो निर्दोष लहू को पकड़वा दिया सो पाप किया। पर उन्हों ने कहा इस से हम को क्या काम तू जान। और वह रुपैयों को मन्दिर में डालके चला गया और जाके अपने को फांसी दिई। और महायाजकों ने रुपैयों को लेके कहा उन्हें पवित्र भण्डार में डालना उचित नहीं क्योंकि वह लहू का दाम है। और उन्हों ने परामर्श करके उन से कुम्हार के खेत को मोल लिया जिस्तें उस में परदेशियों को गाड़ें इस लिये वह खेत आज के दिन लों लहू का खेत कहलाता है। तब जो बात यिर्मया प्रवक्ता के द्वारा कही गई सो पूरी हुई कि उन्हों ने वे तीस रुपैये अर्थात् उस मुलाये हुए का मोल जिसे कितने यिस्राएल् वंशियों ने मुलाया ले लिया और उसे कुम्हार के खेत के लिये दिया जैसे प्रभु ने मुझे आज्ञा दिई थी। और येशू अधिपति के साम्हने खड़ा था सो अधिपति ने उस से पूछा क्या तू यहूदियों का राजा है येशू ने उस से कहा तू कहता है। और जब महायाजक और पुरनिये उस पर दोष लगाते थे तब उसने कुछ उत्तर नहीं दिया। तब पीलात ने उस से कहा क्या तू नहीं सुनता

कि वे तेरे विरुद्ध कितनी बातों में साक्षी देते हैं। और उसने उस से उत्तर में एक बात भी न कही यहां लों कि अधिपति अति अचम्भा करता गया। और उस पर्व्व में अधिपति की यह रीति थी कि लोगो के लिये एक बंधुवे को जिसे वे चाहते थे छोड़ देवे। और उस समय उन का एक प्रसिद्ध बंधुवा था जिस का नाम बरब्बा था। सो जब वे एकट्ठे भये तब पीलात ने उन से कहा तुम किस को चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ देऊं बरब्बा को अथवा येशू को जो खीष्ट कहावता है। क्योंकि वह जानता था कि उन्हों ने उस को डाह ही के कारण सौंपा है। और जब वह न्यायगद्दी पर बैठा था तब उस की स्त्री ने उस के पास यह कहला भेजा कि तू उस धर्म्मी से कुछ काम न रखना क्योंकि मैं ने आज स्वप्न में उस के कारण बहुत दुःख उठाया। पर महायाजकों और पुरनियों ने लोगों को उभारा कि वे बरब्बा को मांगें और येशू को नाश करें। सो अधिपति ने उत्तर देके उन से कहा तुम इन दो में से किस को चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ दूं। उन्हों ने कहा बरब्बा को। पीलात ने उन से कहा तो मैं येशू को जो खीष्ट कहावता है क्या करूं। सभों ने कहा वह क्रूस पर चढ़ाया जावे। उस ने कहा क्यों उस ने कौन सी बुराई किई। पर वे अधिक चिल्लाके कहने लगे वह क्रूस पर चढाया जावे। और पीलात ने यह देखके कि कुछ बन नहीं पडता वरन हुल्लड़ ही मचने चाहता है जल लेके लोगों के साम्हने अपने हाथ धोये और कहा मैं इस धर्म्मी के लहू से निर्दोष हूं तुम ही जानो। और समस्त लोकगण ने उत्तर देके कहा उस का लहू हम पर और हमारे लड़कों पर होवे। तब उस ने उन के लिये बरब्बा को छोड़ दिया और येशू को कोड़े मरवाके सौंप दिया कि वह क्रूस पर चढाया जावे। तब अधिपति के योद्धाओं ने येशू को न्यायशाला में ले जाके उस के पास समस्त जथा को एकट्ठा किया। और उस के बस्त्र उतारके उस को बैंजनी

बागा पहिराया और कांटों का मुकुट गूंथके उस के सिर पर रक्खा और उस के हाथ में एक नरकट दिया और उस के सम्मुख घुटने टेकके यह कहके उस को ठट्ठों में उड़ाने लगे कि हे यहूदियों के राजा प्रणाम और उसपर थूका और उस नरकट को लेके उस के सिर पर मारा। और जब वे उस से ठट्ठा कर चुके तब उन्हों ने उस बागे को उतार लिया और उसी के वस्त्र पहिराके उस को क्रूस पर चढ़ाने के लिये ले चले। और जब वे निकलते थे तब उन्हों ने एक कुरेनी मनुष्य को जिस का नाम शिमोन् था पाया इस को उन्हों ने बरबस पकड़ा कि उस के क्रूस को उठा ले चले। और जब वे गुल्गुलता नामक एक स्थान पर जिस का अर्थ खोपड़ी का स्थान है आये तब उन्हों ने उस को पित्त मिला हुआ दाखमधु पिलाया और उस ने चखके पीने न चाहा। और उन्हों ने उस को क्रूस पर चढ़ाके उस के वस्त्रों को चिट्ठी डालके आपस में बांट लिया और वहां बैठके उस का पहरा देने लगे। और उन्हों ने उस के सिर के ऊपर उस का यह दोषपत्र लिखके लगा दिया कि यह यहूदियों का राजा येशू है। तब उस के साथ दो डाकू क्रूसों पर चढ़ाये गये एक तो उस की दहिनी ओर और दूसरा उस की बाईं ओर। और जो आते जाते थे सो अपने सिर हिला हिलाके और यह कहके उस की निन्दा करते थे कि अरे तू जो मन्दिर को ढादेता और तीन दिन में उसे बनाता है अपने को बचा यदि तू ईश्वर का पुत्र है तो क्रूस पर से उतर आ। उसी रीति से महायाजक भी शास्त्रियों और पुरनियों समेत ठट्ठा कर कर के कहते थे उस ने औरों को तो बचाया पर अपने को नहीं बचा सकता। वह यिस्राएल् का राजा तो है सो अभी वह क्रूस पर से उतर आवे तो हम उसपर विश्वास करेंगे। उस ने ईश्वर पर भरोसा तो रक्खा यदि वह उसे चाहता है तो अभी उसे बचावे क्योंकि उस ने कहा कि मैं ईश्वर का पुत्र हूं। और डाकू भी जो उस के संग क्रूसों

पर चढ़ाये गये थे उसी भांति उस की निन्दा करते रहे। और छटवें घंटे से लेके नवें घंटे लों उस समस्त भूमि पर अंधकार छाया रहा। और नवें घंटे के लगभग येशू ने बड़े शब्द से चिल्लाके कहा एली एली लामा शबक्तनी अर्थात् हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तू ने क्यों मुझे त्यागा है। और जो वहां खड़े थे उन में से कितनोंने यह सुनके कहा यह एलिया को पुकारता है। और तुरन्त उन में से एक ने दौड़के और बादल का एक टुकड़ा सिरके में भिंगोके और उसे नरकट पर रख के उस को पिलाया। पर औरों ने कहा रहने दो हम देखें कि एलिया उसे बचाने आता है कि नहीं। और येशू ने फिर बड़े शब्द से चिल्ला के अपना आत्मा त्याग दिया। और देखो मन्दिर का ओट ऊपर से नीचे लों फटके दो टुकड़े हो गया और भूमि कांपी और चटानें तड़कीं और समाधियां खुलीं और जो पवित्र सोये हुए थे उन में से बहुतों की लोथें जी उठीं और वे उस के पुनरुत्थान के अनन्तर अपनी समाधियों से निकलके पवित्र नगर में आये और बहुतों को दिखाई दिये। और शतपति और उस के साथ जो येशू का पहरा देते थे सो भुईंडोल और जो कुछ हुआ था उस को देखके निपट डर गये और कहा निश्चय यह ईश्वर का पुत्र था॥

पुनरुत्थान से पहिले सोमवार

पत्री की सन्ती। यशया। ६३।१।

यह कौन है जो एदोम् से और रंगे हुए कपड़े पहिने बोस्रा से आता है यह कौन है जो तेजस्वी वस्त्र पहिने हुए अपने बड़े बल के साथ चला आता है मैं हूं जो धर्म्म से बोलता हूं और त्राण देने में शक्तिमान हूं। तेरा वस्त्र क्यों रक्तवर्ण है और तेरे कपड़े ऐसे जैसे

दाखरसकुण्ड के रौन्दनेहारे के होते हैं। मैं ने दाखरसकुण्ड को अकेले रौन्दा और लोकगणों में से कोई मेरे संग न था और मैं उन को अपने क्रोध से रौंदूंगा और अपने रोष से लताडूंगा और उन के लहू के छींटें मेरे कपड़ों पर पड़ेंगे और मैं अपने सब वस्त्र मलिन करूंगा। क्योंकि पलटा लेने का दिन मेरे मन में है और मेरे छुड़ा लिये हुओं का बरस आ पहुंचा। और मैं देखता हूं तो कोई सहायक नहीं और मैं अचम्भा करता हूं कि कोई सम्भालनेहारा नहीं सो मेरी ही भुजा ने मेरे लिये त्राण सिद्ध किया और मेरा रोष जो है उसी ने मुझे सम्भाला। और मैं लोकगणों को अपने कोप से लताडूंगा और उन्हें अपने रोष से मतवाला करूंगा और उन के लहू को भूमि पर गिराऊंगा। मैं प्रभु की समस्त दया और प्रभु के गुणों की चर्चा करूंगा उस सारे व्यवहार के अनुसार जो प्रभु ने हम से किया है और मैं उस सारी भलाई का वर्णन करूंगा जो उस ने यिस्राएल् बंशियों से अपने छोह और अपनी बड़ी दया के अनुसार किई है। और उस ने कहा निश्चय ये मेरे निज लोग हैं वे ऐसे लड़के हैं जो धोखा न देंगे इस प्रकार से वह उन का त्राता हुआ। उन के सारे कष्ट में वह बैरी न रहा वरन उस की उपस्थिति के दूत ने उन्हें त्राण दिया अपने प्रेम से और अपनी मया से उस ने उन्हें छुड़ा लिया और समस्त प्राचीन काल में उन को उठाके लिये फिरा। परन्तु वे दंगइत हुए और उस के पवित्रात्मा को उदास किया सो वह पलट के उन का शत्रु भया और उन से लड़ने लगा। तब उस ने प्राचीन काल और मोशे और अपने निज लोगों को स्मरण करके कहा कहां है वह जो उन को अपनी झुण्ड के गड़ेरिये समेत समुद्र में से ऊपर चढ़ा लाया कहां है वह जिस ने उन के अन्तर में अपना पवित्रात्मा रक्खा। कहां है वह जिस ने अपनी महिमायुक्त भुजा को मोशे की दाहिनी ओर उस के संग संग चलाया जिस ने उन के साम्हने जल को

दो भाग किया जिस्तें अपने लिये सदा का नाम प्राप्त करे। कहां है वह जिस ने उन को गहिरे जल में ऐसा चलाया जैसे घोड़े को बन में चलाते हैं कि उन्हों ने ठोकर नहीं खाई। उन ढोरों के समान जो तराई में उतर जाते हैं प्रभु के आत्मा ने उन को विश्राम दिया इस रीति से तू अपने निज लोगों को ले चला कि अपने लिये महिमायुक्त नाम प्राप्त करे। स्वर्ग पर से दृष्टि कर और अपनी पवित्रता और सुन्दरता के स्थान में से देख तेरा ज्वलन और पराक्रम कहां है तेरी अंतड़ियों का ममोड़ना और तेरा स्नेह जो मेरी ओर था सो बंद हो गया। क्योंकि तू हमारा पिता है यद्यपि अब्राहाम् हम को नहीं पहिचानता और यिस्राएल् हमारा अंगीकार नहीं करता तौभी तू हे प्रभु हमारा पिता है हमारा सदा से छुड़ानेहारा तेरा नाम है। हे प्रभु तू हम को अपने मार्गों से क्यों भटकाता और हमारे हृदय को ऐसा कठोर करता है कि हम तेरा भय नहीं मानते अपने दासों के निमित्त जो तेरे निज भाग के गोत्र हैं फिर आ। तेरे पवित्र निज लोग थोड़े ही दिन लों अधिकारी रहे हमारे रिपुओं ने तेरे पवित्र स्थान को लताड़ दिया है। हम ऐसे हो गये हैं कि मानो तू ने कभी हमारे ऊपर प्रभुता नहीं किई मानो हम तेरे नाम से नहीं कहलाये॥

सुसमाचार। प० मार्क। १४। १।

और पस्खा और बिनखमीर रोटी का पर्व्व दो दिन के अनन्तर होनेवाला था और महायाजक और शास्त्री इस की खोज में थे कि क्योंकर उस को छल से पकड़के मार डालें क्योंकि वे कहते थे पर्व्व में तो नहीं न हो कि लोगों में हुल्लड़ मचे। और जब वह बेथीने में शिमोन् कोढ़ी के घर में भोजन पर बैठा था तब एक स्त्री बहुमूल्य पिस्तक सुगन्ध तेल को उजले पत्थर के एक पात्र में ले आई और

पात्र को तोड़के तेल को उस के सिर पर ढाल दिया। और कितने रिसियाके आपस में कहने लगे कि सुगन्ध तेल का यह नाश काहे को भया क्योंकि यह सुगन्ध तेल डेढ़ सौ रुपैयों से अधिक दाम में बिक सकता और कंगालों को दिया जा सकता। और वे उस स्त्री पर कुड़कुड़ाने लगे। पर येशू ने कहा उस को रहने दो तुम क्यों उस को दुःख देते हो उसने मेरे लिये एक अच्छा काम किया है। क्योंकि कंगाल तो सदा तुम्हारे पास रहते हैं और जब चाहो तब उन का उपकार कर सकते हो परन्तु मैं तुम्हारे पास सदा न रहूंगा। जो उस से बन पड़ा सो उस ने किया उस ने मेरी देह पर समाधि में रक्खे जाने के लिये आगे से सुगन्ध तेल लगाया है। और मैं सत्य कहता हूं कि समस्त जगत में जहां कहीं सुसमाचार प्रचार किया जावेगा तहां जो इस स्त्री ने किया सो भी उस का स्मारक होने के लिये कहा जावेगा। और यहूदा इस्कर्य्योता जो बारह प्रेरितों में से था महायाजकों के पास गया कि उस को उनके हाथ पकड़ा देवे। और जब उन्हों ने सुना तो आनन्दित हुए और उस को रुपैये देने की प्रतिज्ञा किई। और वह इस को खोज करने लगा कि क्योंकर उस को सुभीते से पकड़वा देवे। और बिनखमीर रोटी के पर्व्व के पहिले दिन जिस में पस्खा का पशु वध करते थे उस के शिष्यों ने उस से कहा तू कहां चाहता है कि हम जाके सजाव करें कि तू पस्खा को खावे। और उस ने अपने शिष्यों में से दो को यह कहके भेज दिया कि नगर में जाओ और तुम को एक मनुष्य जल का घड़ा लिये हुए मिलेगा उस के पीछे हो लेओ और जहां वह प्रवेश करे उस घर के स्वामी से कहो कि गुरु कहता है कि मेरी अतिथिशाला कहां है जिस में मैं अपने शिष्यों समेत पस्खा खाउं। और वह तुम को एक बड़ी बिछी और सजी हुई अटारी दिखावेगा। और वहां तुम हमारे लिये सजाओ। सो शिष्य चले गये और नगर में आये और जैसा उस ने

उन से कहा था तैसाही पाया और उन्हों ने पस्खा को सिद्ध किया। और जब सांझ भई तब वह बारह प्रेरितों समेत आया। और जब वे बैठे हुए खा रहे थे तब येशू ने कहा मैं तुम से सत्य कहता हूं कि तुम में से एक अर्थात् वही जो मेरे संग खाता है मुझे पकड़वावेगा। वे शोकित होने और एक एक करके उस से कहने लगे क्या मैं हूं। उस ने उन से कहा बारहों में से एक है जो मेरे साथ कटोरे में अपना हाथ डालता है। क्योंकि मनुष्य का पुत्र जैसे उस के विषय में लिखा है जाता तो है परन्तु जिस मनुष्य के द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है उस पर हाय यदि वह मनुष्य उत्पन्न न होता तो उस के लिये अच्छा होता। और जब वे खा रहे थे तब उस ने रोटी लिई और आशीर्वाद देके तोड़ी और उन को देके कहा लेओ यह मेरी देह है। और कटोरा लेके धन्यवाद करके उन को दिया और उन सभों ने उस से पीया और उस ने उन से कहा यह नई बाचा का मेरा लहू है जो बहुतों के लिये बहाया जाता है। मैं तुम से सत्य कहता हूं कि मैं दाख लता के फल का रस अब से उस दिन लों न पीऊंगा जिस में मैं उस को ईश्वर के राज्य में नया पीऊंगा। और वे भजन गाके जैत पर्व्वत पर गये। और येशू ने उन से कहा तुम सब ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है मैं गड़ेरिये को मारूंगा तब भेड़ें तितर बितर हो जावेंगी। परन्तु मैं जी उठने के अनन्तर तुम्हारे आगे गालील् को चलूंगा। और पेत्र ने उस से कहा यद्यपि सब ठोकर खावें तो भी मैं न खाऊंगा। और येशू ने उस से कहा मैं तुझ से सत्य कहता हूं आज इसी रात को कुक्कुट के दो बार बोलने से पहिले तू तीन बार मुझ को मुकरेगा। परन्तु वह अति दृढ़ता से कहने लगा यदि मुझे तेरे संग मरना भी होवे तथापि मैं तुझ को कदापि न मुकरूंगा। और सभों ने भी वैसाही कहा। और वे एक स्थान पर जिस का नाम गत्शेमेन् था आये और उस ने अपने शिष्यों से कहा

यहां बैठे रहो जब लों मैं प्रार्थना करूं । और उस ने पेत्र और याकोब् और योहानान् को संग लिया और अति चकित और बहुत व्याकुल होने लगा । और उस ने उन से कहा मेरा जीव यहां लों अति शोकित है कि मरने पर हूं तुम यहां ठहरो और जागते रहो । और तनिक दूर बढ़के वह भूमि पर गिरा और प्रार्थना करने लगा कि यदि हो सके तो वह घड़ी उस से टल जावे । और उस ने कहा अब्बा हे पिता तुझ से तो सब कुछ हो सकता है मुझ से यह कटोरा टाल दे परन्तु जो मैं चाहता हूं सो नहीं पर जो तू चाहता है सोई होवे । और उस ने आके उन को सोते पाया और पेत्र से कहा हे शिमोन् क्या तू सोता है क्या तू घड़ी भर जाग न सका । जागते और प्रार्थना करते रहो न होवे कि तुम परीक्षा में फंसो आत्मा तो सिद्ध है पर शरीर निर्बल है । और फिर जाके उस ने वही बात कहके प्रार्थना किई । और फिर आके उस ने उन्हें सोते पाया क्योंकि उन की आंखें भारी थीं और वे नहीं जानते थे कि उस को क्या उत्तर देवें । और वह तीसरी बार आया और उन से कहा अब सोते रहो और विश्राम करो बस घड़ी आ पहुंची देखो मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथों में पकड़-वाया जाता है उठो चलें देखो जो मुझे पकड़वाता है सो निकट आया है। और तत्क्षण जब वह बोलही रहा था तो यहूदा जो बारह प्रेरितों में से एक था आ गया और उसके संग एक भीड़ जो महायाजकों और शास्त्रियों और पुरनियों की ओर से खड्ग और लाठियां लेके आई थी। और उस के पकड़वानेहारे ने उन को यह कहके पता दिया था कि जिस को मैं चूमूं सोई है उस को पकड़ो और चौकसी से ले जाओ । और जब पहुंचा तब तुरन्त उस के पास आके कहा हे रब्बी और उस को चूमा । तब उन्हों ने उसपर हाथ डाले और उस को पकड़ लिया । पर जो पास खड़े थे उन में से एक ने अपना खड्ग खींचके महायाजक के दास पर चलाया और उस के कान को उड़ा दिया । और येशू ने उत्तर देके उन से कहा

पुनरुत्थान से पहिले सोमवार

क्या मुझ को डाकू समझके खड्ग और लाठियां लेके मुझे पकड़ने को निकले हो मैं तो प्रतिदिन तुम्हारे पास मन्दिर में सिखाता रहा और तुम ने मुझ को न पकड़ा परन्तु यह इस लिये हुआ कि शास्त्र की बात पूरी होवे। और वे सब उस को छोड़के भाग गये। और एक तरुण अपने नंगे शरीर पर मलमल का चद्दर ओढ़े हुए उस के संग चला और उन्हों ने उस को पकड़ा और वह चद्दर छोड़के नंगा भाग गया। और वे येशू को महायाजक के पास ले गये और सब महायाजक और पुरनिये और शास्त्री उस के पास एकट्ठे भये। और पेत्र दूर दूर उस के पीछे महायाजक की न्यायशाला के भीतर लों हो लिया और प्यादों के संग बैठा हुआ आग तापता रहा। और महायाजक और समस्त विचारसभा येशू के विरुद्ध साक्षी खोजते थे जिस्तें उस को घात कर सकें परन्तु नहीं पाते थे क्योंकि झूठी साक्षी तो बहुत लोग उसके विरुद्ध देते थे पर उन की साक्षियां आपस में मिलती न थीं। तब कितने उठके यह कहके उस के विरुद्ध झूठी साक्षी देने लगे कि हमने इस को यह कहते हुए सुना कि मैं इस हस्तकृत मन्दिर को ढा दूंगा और तीन दिन के भीतर एक और मन्दिर जो हस्तकृत नहीं बनाऊंगा। पर यूं भी उन की साक्षी एक समान न थी। तब महायाजक ने बीच में खड़े होके येशू से पूछा कि क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता ये तेरे विरुद्ध क्या साक्षी देते हैं। पर वह चुप रहा और कुछ उत्तर नहीं दिया। फिर महायाजक ने उस से पूछा और कहा क्या तू उस धन्य का पुत्र ख्रीष्ट है। येशू ने कहा मैं हूं और तुम मनुष्य के पुत्र को सामर्थ्य की दहिनी ओर विराजमान और आकाश के मेघों के साथ आते देखोगे। तब महायाजक ने अपने वस्त्रों को फाड़के कहा अब हम को साक्षियों का क्या प्रयोजन है तुम ने यह ईश्वरनिन्दा सुनी तुम्हारे बिचार में क्या आता है। तब उन सभों ने अपनी यह मति दिई कि वह घात के योग्य है। और कितने

उसपर थूकने और उस का मुंह ढांपके उसको थपेड़ा मारने और यह कहने लगे प्रवचन कर और प्यादों ने उस को घूंसे मारे। और जब पेत्र नीचे शाला में था तब महायाजक की एक लौंड़ी आई और पेत्र को आग तापते देखके उस पर दृष्टि करके कहा तू भी उस नासरी येशू के संग था। पर उसने मुकरके कहा मैं नहीं जानता और न समझता हूं कि तू क्या कहती है। तब वह बाहर डेवढ़ी पर गया और कुक्कुट बोला। और वह लौंड़ी उसको देखके फिर उनसे जो पास खड़े थे कहने लगी कि यह उन में से है। पर वह फिर मुकरा। और थोड़ी बेर के अनन्तर जो पास खड़े थे उन्हों ने पेत्र से कहा निश्चय तू उन में से है क्योंकि तू गालीली है। तब वह कोसने और किरिया खाके कहने लगा जिस मनुष्य को तुम कहते हो उसको मैं नहीं जानता। और तत्क्षण कुक्कुट दूसरी बार बोला। और जो बात येशू ने पेत्र से कही थी कि कुक्कुट के दो बार बोलने से पहिले तू तीन बार मुझ को मुकरेगा सो उस को स्मरण आई। और इस को सोचके वह रोने लगा॥

पुनरुत्थान से पहिले मंगलवार

पत्री की सन्ती। यशया। ५०। ५।

प्रभु भगवान ने मेरा कान खोला और मैं दंगइत नहीं हुआ और पीछे नहीं हटा। मैं ने अपनी पीठ मारनेहारों को और अपने गाल बाल नोचनेहारों को दिये मैं ने अपना मुख निन्दा और थूक से नहीं छिपाया। क्योंकि प्रभु भगवान् मेरी सहाय करेगा इस लिये मैं लज्जित न हुआ इस लिये मैं ने अपना मुख चकमाक के समान दृढ़ किया और मुझे निश्चय हुआ कि नहीं लजाऊंगा। जो मुझे धर्म्मी ठहराता है सो निकट है कौन मुझ से झगड़ेगा हम एक साथ खड़े होवें मेरा

बिरोधी कौन है सो मेरे पास आवे। देखो प्रभु भगवान् मेरी सहाय करेगा वह कौन है जो मुझे दोषी ठहरावेगा देखो वे सब वस्त्र की नाईं पुराने हो जावेंगे कीड़ा उन को खा जावेगा। तुम में से कौन है जो प्रभु से डरता और उस के दास की बात सुनता है पर अन्धकार में चलता और उंजियाला नहीं पाता सो प्रभु के नाम पर भरोसा रक्खे और अपने ईश्वर पर उठेंगे। देखो तुम सब जो आग बारते और लुकटियों से अपने को घेर रखते हो अपनी आग के प्रकाश में और जो लुकटियां तुम ने बारी हैं उन में चलो मेरी ओर से तुम्हारी यह गति होवेगी कि तुम शोक में लेट जाओगे॥

सुसमाचार। प० मार्क। १५।१।

और तुरन्त भोर को महायाजकों ने पुरनियों और शास्त्रियों समेत और समस्त विचारसभासदों ने परामर्श करके येशू को बांधा और उसे ले जाके पीलात को सौंप दिया। और पीलात ने उस से पूछा क्या तू यहूदियों का राजा है। और उस ने उत्तर देके उस से कहा तू कहता है। और महायाजक उसपर बहुत दोष लगाते रहे। तब पीलात ने फिर उस से पूछा कि तू कुछ उत्तर नहीं देता देख ये तुझ पर कितने दोष लगाते हैं। पर येशू ने फिर भी कुछ उत्तर नहीं दिया यहां लों कि पीलात ने आश्चर्य्य किया। और उस पर्ब्ब में वह उन के लिये एक बंधुवा जिसे वे उस से मांगते थे छोड़ देता था। और बरब्बा नामक एक जन था जो अपने संगी बलवा करनेहारों के साथ जिन्हों ने बलवे में हत्या किई थी बन्दीगृह में था। और भीड़ ऊपर चढ़के बिनती करने लगी कि जैसा तू हम से करता आया है तैसेही कर और पीलात ने उत्तर देके उन से कहा क्या तुम्हारी इच्छा है कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के राजा को छोड़ देऊं। क्योंकि वह जानता

था कि महायाजकों ने उसे डाह ही के कारण से सौंपा है। पर महा-याजकों ने भीड़ को उभाड़ा जिस्तें वह उन के लिये बरब्बा ही को छोड़ देवें। सो पीलात ने फिर उत्तर देके उन से कहा तो जिस को तुम यहूदियों का राजा कहते हो उस को मैं क्या करूं। और उन्हों ने फिर चिल्लाके कहा उस को क्रूस पर चढ़ा। पर पीलात ने उन से कहा क्यों उस ने क्या बुराई किई है। परन्तु उन्हों ने और भी अधिक चिल्लाके कहा उस को क्रूस पर चढ़ा। तब पीलात ने भीड़ को सन्तुष्ट करने की इच्छा से बरब्बा को उन के लिये छोड़ दिया और येशू को कोड़े मरवाके क्रूस पर चढ़ाये जाने के लिये सौंप दिया। और योद्धा उस को उस शाला के भीतर जो प्रैतोर्य्य कहावता है ले गये और समस्त जथा को एकट्ठा बुलाया। और उन्हों ने उस को एक बैंजनी वस्त्र पहिनाया और कांटों का एक मुकुट गूंथके उस के सिर पर रक्खा और यह कहके उस को नमस्कार करने लगे कि हे यहूदियों के राजा प्रणाम। और वे उस के सिर पर नरकट से मारते और उसपर थूकते थे और घुटने टेक टेकके उस को दण्डवत करते थे। और जब वे उस से ठट्ठा कर चुके तब उन्हों ने वह बैंजनी वस्त्र उतारके उसी के वस्त्र उस को पहिना दिये और उस को क्रूस पर चढ़ाने के लिये ले चले। और उन्हों ने शिमोन् नामक एक कुरेनी जन को जो अलेक्सन्द्र और रूफ का पिता था और गंवईं से आके उधर से जाता था बरबस पकड़ा कि वह उस के क्रूस को उठा ले चले। और वे उस को गुल्गु-ल्ता नामक एक स्थान पर जिस का अर्थ खोपड़ी का स्थान है ले गये। और वे उस को गन्धरस मिला हुआ दाखमधु देने लगे पर उस ने नहीं लिया। और उन्हों ने उस को क्रूस पर चढ़ाया और उस के वस्त्रों पर चिट्ठी डालके कि कौन क्या पावे उन्हें बांट लिया। और जब उन्हों ने उस को क्रूस पर चढ़ाया तब तीसरा घंटा था। और उस का यह दोषपत्र ऊपर लिखा हुआ था कि यहूदियों का राजा।

पुनरुत्थान से पहिले बुध

और उस के संग उन्हों ने दो डाकू क्रूसों पर चढ़ाये एक उस की दहिनी ओर और दूसरा उस की बाईं ओर। और जो आते जाते थे सो अपने सिर हिला हिलाके और यह कह कहके उस की निन्दा करते थे कि अरे मन्दिर के ढादेनेहारे और तीन दिन में बनानेहारे क्रूस पर से उतरके अपने को बचा। उसी प्रकार से महायाजकों ने शास्त्रियों समेत आपस में ठट्ठा करके कहा उस ने औरों को तो बचाया पर अपने को नहीं बचा सकता खीष्ट जो यिस्राएल् का राजा है अभी क्रूस पर से उतर आवे जिस्तें हम देखें और विश्वास करें। और जो उस के संग क्रूसों पर चढ़ाये गये थे सो भी उस की निन्दा करते थे। और जब छठवां घंटा आया तब समस्त देश पर अन्धकार छा गया और नवें घंटे लों रहा। और नवें घंटे में येशू ने बड़े शब्द से पुकारा कि एलोही एलोही लामा शबक्तनी अर्थात् हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तू ने क्यों मुझ को तजा। और जो पास खड़े थे उन में से कितनों ने यह सुनके कहा देखो वह एलिया को पुकारता है। और किसी ने दौड़के बादल के एक टुकड़े को सिरके में भिंगोके और नरकट पर रखके उस को पिलाया और कहा रहने दो देखें कि एलिया उसे उतारने को आता है कि नहीं। और येशू ने बड़े शब्द से पुकारके प्राण छोड़ा। और मन्दिर की ओट ऊपर से नीचे लों फटके दो टुकड़े हो गई। और जो शतपति उस के साम्हने खड़ा था उस ने यह देखके कि उस ने यूं प्राण छोड़ दिया कहा निश्चय यह मनुष्य ईश्वर का पुत्र था॥

पुनरुत्थान से पहिले बुध

पत्री। इब्रियों। ९। १६।

जहां बाचा है तहां अवश्य है कि बाचा करनेहारे की मृत्यु सिद्ध होवे। क्योंकि बाचा तो तब ही दृढ़ होती है जब मृतकों के ऊपर किई जाती है वरन जब लों बाचा करनेहारा जीता है तब लों क्या

कभी वाचा किसी काम की होती है। इस लिये प्रथम वाचा का भी लहू बिना संस्कार नहीं हुआ। क्योंकि जब मोशे समस्त लोकगण को व्यवस्था के अनुसार सब आज्ञाएं सुना चुका तब उस ने बछड़ों और बकरों का लहू जल और लाल ऊन और एजोब् समेत लेके पुस्तक पर और समस्त लोकगण पर छिड़का और कहा यह उस वाचा का लहू है जिस की आज्ञा ईश्वर ने तुम्हारे लिये दिई। और तम्बू पर भी और सेवकाई के समस्त पात्रों पर भी उस ने उसी प्रकार से लहू छिड़का। वरन मैं ऐसा कह सकता हूं कि व्यवस्था के अनुसार सब वस्तें लहू ही से शुद्ध किई जाती हैं और लहू बहाने बिना पापमोचन नहीं होता। सो अवश्य तो था कि स्वर्ग में की वस्तुन के प्रतिरूप इन से शुद्ध किये जावें पर स्वर्ग में की वस्तें आप इन से उत्तम बलिदानों से शुद्ध किई जावें। क्योंकि खीष्ट ने उस हस्तकृत पवित्रस्थान में प्रवेश नहीं किया जो वास्तविक पवित्रस्थान का प्रतिरूप है परन्तु स्वर्ग ही में जिस्तें वह अब ईश्वर के सम्मुख हमारे लिये उपस्थित होवे। और यह इस लिये नहीं कि वह अपने को बार बार चढ़ावे जैसे महायाजक प्रति-वर्ष पराये लहू के द्वारा पवित्रस्थान में प्रवेश करता है। नहीं तो उसे जगत की सृष्टि से बार बार दुःख भोगना पड़ता। पर अब वह युगों की समाप्ति में अपने को बलिदान करने से पाप को दूर करने के लिये एक ही बार प्रगट हुआ है। और जब कि मनुष्यों के लिये यह ठह-राया गया है कि वे एक बार मरें और उस के पीछे उन का विचार होवे तो उसी भांति से खीष्ट भी जो बहुतों के पाप उठाने के लिये चढ़ाया गया दूसरी बार पापरहित उन को जो उस की बाट जोहते हैं उन के त्राण के लिये देख पड़ेगा॥

सुसमाचार। प० लूका। २२।१।

और बिन खमीर रोटी का पर्ब्ब जो पस्खा कहावता है निकट

था। और महायाजक और शास्त्री इस की खोज में थे कि उस को क्योंकर घात करें क्योंकि वे लोगों से डरते थे। तब सातान् ने यहूदा में जो इस्कर्य्योता कहावता है और बारह प्रेरितों में से था प्रवेश किया। और उस ने जाके महायाजकों और पहरुओं के अध्यक्षों से बातचीत किई कि क्योंकर उस को उन के हाथ पकड़ा देवे। और वे आनन्दित भये और उस को रुपैये देने की प्रतिज्ञा किई। और उसने अंगीकार किया और इस का अच्छा अवसर ढूढ़ने लगा कि जब भीड़ न रहे तब उस को उन के हाथ पकड़ा देवे। और बिन खमीर रोटी का दिन जिस में पस्खा का पशु बध करना उचित था आया। और उसने पेत्र और योहानान् को यह कहके भेजा कि जाके हमारे लिये पस्खा को सिद्ध करो कि हम खावें। और उन्हों ने उस से कहा कि तू कहां चाहता है कि हम सिद्ध करें। उस ने उन्हें कहा देखो जब तुम नगर में प्रवेश करोगे तब एक मनुष्य जल का घड़ा लिये हुए तुम को मिलेगा जिस घर में वह प्रवेश करे उसी में उस के पीछे जाओ और घर के स्वामी से कहो गुरु तुझ से कहता है कि वह अतिथिशाला कहां है जिस में मैं पस्खा को अपने शिष्यों समेत खाऊं तब वह तुम को एक बड़ी और बिछी हुई अटारी दिखावेगा वहीं सिद्ध करो। और उन्हों ने जाके जैसा उस ने उन से कहा था तैसाही पाया और पस्खा को सिद्ध किया। और जब घड़ी आई तब वह भोजन पर बैठ गया और प्रेरित उस के संग। और उस ने उन से कहा मैं ने दुःख भोगने से पहिले तुम्हारे साथ यह पस्खा खाने की बड़ी अभिलाषा किई थी क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जब लों वह ईश्वर के राज्य में पूरा न होवे तब लों मैं उसे कदापि न खाऊंगा। और उस ने कटोरे को लेके और धन्यवाद करके कहा इस को लेओ और आपस में बांटो क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि मैं दाखलता के फल का रस अब से तब लों न पीऊंगा जब लों ईश्वर का राज्य न आ

लेवे। और उस ने रोटी लेके और धन्यवाद करके उस को तोड़ा और यह कहके उन को दिई यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिये दिई जाती है मेरे स्मरणार्थ यह किया करो। और उसी प्रकार से ब्यारी के अनन्तर कटोरे को यह कहके दिया कि यह कटोरा मेरे लहू में की नई वाचा है अर्थात् वही लहू है जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है। परन्तु देखो मेरे पकड़वानेहारे का हाथ मेरे संग भोजनमंच पर है। क्योंकि मनुष्य का पुत्र ठहराये हुए के अनुसार जाता तो है पर हाय उस मनुष्य पर जिस के द्वारा वह पकड़वाया जाता है। और वे आपस में विचार करने लगे कि हम में से वह कौन है जो यह काम करेगा। और उन में इस बात का झगड़ा भी भया कि हम में से कौन बड़ा समझा जाता है। और उस ने उन से कहा अन्य-जातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं और जो उन पर अधिकार रखते हैं सोई उपकारी कहावते हैं। पर तुम ऐसे न हो पर तुम में से जो बड़ा होवे सो कनिष्ठ की नाईं और जो प्रधान है सो परिचारक सा होवे। क्योंकि कौन बड़ा है जो भोजन पर बैठा है अथवा जो परिचर्य्या करता है क्या वह नहीं जो भोजन पर बैठा है परन्तु मैं तुम्हारे बीच में परिचारक बना हूं। पर तुम ही हो जो मेरी परीक्षाओं में मेरे संग लगातार रहे हो और मैं तुम्हारे लिये एक राज्य ठहराता हूं जैसा मेरे पिता ने मेरे लिये ठहराया है कि तुम मेरे राज्य में मेरे भोजनमंच पर खाओ पीओ और सिंहासनों पर बैठे हुए यिस्राएल् के बारह गोत्रों का न्याय करो। हे शिमोन् हे शिमोन् देख सातान् ने तुम को मांग लिया कि तुम को गोहूं की नाईं फटके पर मैं ने तेरे लिये विनती किई कि तेरा विश्वास जाता न रहे और तू जब फिरे तब अपने भाइयों को दृढ़ कर। पर उस ने उस से कहा हे प्रभु मैं तेरे संग बन्दीगृह में और मृत्यु लों जाने को सिद्ध हूं। पर उस ने कहा हे पेत्र मैं तुझ से कहता हूं कि आज कुक्कुट न

बोलेगा जब लों तू तीन बार मुझ को यह कहके न मुकरेगा कि मैं उसे नहीं जानता। और उस ने उन से कहा जब मैं ने तुम को बिन बटुए और झोले और जूते भेजा था तब क्या तुम को किसी वस्तु की घटी रही। उन्हों ने कहा किसी वस्तु की नहीं और उस ने उन से कहा परन्तु अब जिस के पास बटुआ होवे सो उस को लेवे और वैसेही अपना झोला भी और जिस के पास खड्ग नहीं सो अपना कपड़ा बेच के एक मोल लेवे। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि यह जो लिखा है कि "और वह अधर्म्मियों के संग गिना गया" अवश्य है कि मुझ में पूरा होवे क्योंकि जो कुछ मुझ से सम्बन्ध रखता है सो पूरा होता जाता है। और उन्हों ने कहा हे प्रभु देख यहां दो खड्ग हैं और उस ने उन्हें कहा बहुत हैं। और वह निकलके अपनी रीति के अनुसार जैत पर्व्वत लों गया और उस के शिष्य भी उसके संग हो लिये। और जब वह उस स्थान पर पहुंचा तब उस ने उन से कहा प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। और वह उन से कोई पत्थर फेंकने के टप्पे भर अलग गया और घुटने टेकके प्रार्थना करने लगा कि हे पिता यदि तू चाहे तो यह कटोरा मुझ से टाल दे तथापि मेरी इच्छा नहीं पर तेरी इच्छा पूरी होवे। और स्वर्ग से एक दूत उस को बल देता हुआ उस को दिखाई दिया। और अति व्याकुलता में पड़के वह अधिक गिड़गिड़ाके प्रार्थना करने लगा। और उस का पसीना लहू की बड़ी बड़ी बूंदों के समान होके भूमि पर गिरता था। और प्रार्थना से उठके वह शिष्यों के पास आया और उन्हें शोक के मारे सोते पाके उन से कहा तुम क्यों सोते हो उठके प्रार्थना करो जिस्तें तुम परीक्षा में न फंसो। वह बोल ही रहा था कि देखो भीड़ आई और बारह प्रेरितों में से एक जो यहूदा कहावता था उन के आगे आगे आता था और येशू को चूमने के लिये उस के निकट आया। और येशू ने उस से कहा हे यहूदा क्या तू मनुष्य के पुत्र को चूमे से पकड़वाता है। और

जो उस के आस पास थे उन्हों ने यह देखके कि क्या हुआ चाहता है कहा हे प्रभु क्या हम खड्ग चलावें। और उन में से एक ने महा-याजक के दास को मारा और उसका दहिना कान उड़ा दिया। और येशू ने उत्तर देके कहा यहां लों होने दो। और उसने उस के कान को छूके चंगा किया। और जो महायाजक और मन्दिर के पहरुओं के अध्यक्ष और पुरनिये येशू पर चढ़ आये थे उन से उस ने कहा क्या तुम मुझे डाकू समझके खड्ग और लाठियां लिये हुए निकले हुए हो जब मैं प्रतिदिन तुम्हारे संग मन्दिर में था तब तुम ने मुझ पर हाथ न डाले परन्तु यह तुम्हारी घड़ी और अन्धकार का अधिकार है। और वे उस को पकड़के ले चले और महायाजक के घर में ले आये। और पेच दूर से पीछे पीछे चला आता था। और जब वे शाला के बीच में आग बारके एकट्ठे बैठ गये तब पेच भी उन के बीच बैठ गया। और एक लौंड़ी ने उस को आग के पास बैठे देखा और उसपर ध्यान से दृष्टि करके कहा यह भी उस के संग था। और वह यह कहके मुकर गया कि हे नारी मैं उस को नहीं जानता। और थोड़ी बेर पीछे किसी और मनुष्य ने उस को देखके कहा तू भी उन में से है। पर पेच ने कहा हे मनुष्य मैं नहीं हूं। और कोई घंटे भर के पीछे एक और जन दृढ़ता से कहने लगा निश्चय यह भी उस के संग था क्योंकि वह गालीली है। पर पेच ने कहा हे मनुष्य मैं नहीं जानता कि तू क्या कहता है। और तत्क्षण जब वह बोल ही रहा था कुक्कुट बोला। और प्रभु ने फिरके पेच पर दृष्टि किई और पेच को प्रभु की वह बात स्मरण हुई जो उस ने उस से कही थी कि आज कुक्कुट के बोलने से पहिले तू तीन बार मुझ को मुकरेगा और बाहर जाके वह फूट फूटके रोया। और जो पुरुष येशू को पकड़े हुए थे सो उससे ठट्ठा करते और उस को मारते थे। और वे उस की आंख पर पट्टी बांधके उस से पूछने लगे कि प्रवचन कर कि कौन है जिसने

तुझ को मारा। अरु और बहुत प्रकार की निन्दा वे उस की करते थे। और जब दिन हुआ तब लोकगण के पुरनियों का समूह और महायाजक और शास्त्री एकट्ठे भये और उस को अपनी विचारसभा में ले गये और कहा यदि तू ख्रीष्ट है तो हम से कह। और उस ने उन से कहा यदि मैं तुम से कहूं तौभी तुम विश्वास न करोगे और यदि मैं प्रश्न करूं तौभी तुम उत्तर न देओगे। परन्तु अब से मनुष्य का पुत्र ईश्वर के सामर्थ्य की दहिनी ओर विराजमान रहेगा। तब सभों ने कहा तो क्या तू ईश्वर का पुत्र है। और उस ने उन से कहा तुम कहते हो क्योंकि मैं वही हूं। तब उन्हों ने कहा अब हम को साक्षी का क्या प्रयोजन है क्योंकि हम ने उसी के मुंह से सुना है।

पुनरुत्थान के पहिले वृहस्पतिवार

पत्री। १ कोरिन्थियों। ११। १७।

मैं जो तुम्हें यह आज्ञा देता हूं उस में मैं तुम्हारी प्रशंसा नहीं करता क्योंकि तुम जो एकट्ठे होते हो सो भलाई का नहीं पर बुराई ही का कारण होता है। क्योंकि पहिले तो जब तुम एक्लीसिया में एकट्ठे होते हो तो मैं सुनता हूं कि तुम में फूट होती है और मैं थोड़ा सा सच्च भी मानता हूं। क्योंकि अवश्य है कि तुम्हारे बीच मतभेद भी होवे जिस्तें जो ग्राह्य हैं सो तुम में प्रगट होवें। सो जब तुम एकट्ठे होते हो तब प्रभु की व्यारी खाने के लिये नहीं क्योंकि खाने में प्रत्येक जन अपनी व्यारी औरों से पहिले खा लेता है और कोई तो भूखा रहता और कोई मतवाला होता है। क्या खाने पीने के लिये तुम्हारे घर नहीं हैं अथवा तुम ईश्वर की एक्लीसिया को तुच्छ जानते और जिन के घर नहीं हैं उन को लज्जित करते हो।

पुनरुत्थान से पहिले वृहस्पतिवार

मैं तुम से क्या कहूं क्या इस बात में मैं तुम्हारी प्रशंसा करूं मैं नहीं करने का। क्योंकि जो मैं ने तुम्हें सौंप दिया सो मैं ने प्रभु से प्राप्त किया था कि प्रभु येशू ने जिस रात पकड़वाया गया रोटी लिई और धन्यवाद करके तोड़ी और कहा यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिये तोड़ी जाती है मेरे स्मरण के लिये यह किया करो। उसी रीति से ब्यारी के अनन्तर उस ने कटोरे को लिया और कहा यह कटोरा मेरे लहू में की नई वाचा है जब जब इस को पीओ मेरे स्मरण के लिये यह किया करो। क्योंकि जब जब तुम इस रोटी को खाओ और इस कटोरे में से पीओ तब तब तुम प्रभु की मृत्यु को जब लों वह नहीं आता प्रचार करते हो। इस लिये जो कोई प्रभु की रोटी को अयोग्य रीति से खावे अथवा उस के कटोरे में से अयोग्य रीति से पीवे सो प्रभु की देह और लहू का अपराधी होवेगा। पर मनुष्य अपने को परखे और तब इस रोटी में से खावे और इस कटोरे में से पीवे। क्योंकि जो खाता और पीता है सो यदि देह को न पहिचाने तो अपना दण्ड खाता और पीता है। इसी लिये तुम में से बहुत निर्बल और रोगी हैं और बहुत सो भी गये हैं। पर यदि हम अपने को पहिचानते तो हम को दण्ड न मिलता। और जब हम को दण्ड मिलता है तब प्रभु हमारी ताड़ना करता है न होवे कि हम संसार के संग दण्ड में भागी होवें। इस लिये हे मेरे भाइयो जब तुम खाने के लिये एकट्ठे होओ तो एक दूसरे की बाट जोहो और यदि कोई भूखा होवे तो वह घर ही में खावे न होवे कि तुम अपने दण्ड के लिये एकट्ठे होओ। अरु और सब बातों का प्रबन्ध मैं आके करूंगा॥

सुसमाचार। प० लूका। २३। १।

और उन का समस्त समाज उठके उस को पीलात के पास ले गया। और वे यह कहके उसपर दोष लगाने लगे कि हम ने इस जन को

पाया कि हमारी जाति के लोगों को बिगाड़ता और कैसर को कर देना बरजता और अपने को खीष्ट राजा कहता है। तब पीलात ने उस से पूछा कि क्या तू यहूदियों का राजा है। उस ने उत्तर देके कहा तू कहता है। और पीलात ने महायाजकों और भीड़ से कहा मैं इस मनुष्य में कोई दोष नहीं पाता। पर वे अधिक दृढ़ता से कहने लगे वह प्रजा को उभारता और सारे यहूदा में गालील से लेके इस स्थान लों सिखाता फिरता है। पीलात ने यह सुनके पूछा क्या यह मनुष्य गालीली है। और जब उस ने जाना कि वह हेरोदा के अधिकार का है तब उस ने उस को हेरोदा के पास जो आप भी उन दिनों में यरूशलेम् में था भेज दिया। और हेरोदा येशू को देखके अति आनन्दित भया क्योंकि वह बहुत काल से उस को देखने की इच्छा रखता था इस लिये कि उस ने उस की कीर्त्ति सुनी थी और उस को यह आशा थी कि उस को कोई आश्चर्य्यकर्म्म करते देखेगा। सो वह उस से बहुत सी बातें पूछने लगा पर उस ने उस को कोई उत्तर न दिया। और महायाजक और शास्त्री खड़े हुए उस पर तेहे से दोष लगाते थे। और हेरोदा ने अपनी सेना समेत उसका अनादर करके और उस से ठट्ठा करके और भड़कीला वस्त्र उस को पहिना के उसे पीलात के पास लौटा दिया। और उसी दिन हेरोदा और पीलात में मिलाप हुआ क्योंकि आगे वे एक दूसरे से बैर रखते थे। तब पीलात ने महायाजकों और अधिपतियों अरु और सब लोगों को एकट्ठा बुलाके उन से कहा तुम इस मनुष्य को प्रजा का बिगाड़नेहारा कहके मेरे पास ले आये हो और देखो मैं ने उस का विचार तुम्हारे साम्हने करके इस मनुष्य में उन दोषों में से जो तुम उसपर लगाते हो कोई नहीं पाया वरन हेरोदा ने भी नहीं पाया क्योंकि उस ने उस को हमारे पास लौटा दिया और देखो उस का कोई काम नहीं ठहरा जो घात के योग्य होवे सो मैं उस की ताड़ना करके उस को

छोड़ देऊंगा। पर वे सब मिलके चिल्लाये और कहा कि इस को ले जा और बरब्बा को हमारे लिये छोड़ दे। यह जन किसी बलवे के कारण जो नगर में हुआ था और हत्या के कारण बन्दीगृह में डाला गया था। परन्तु पीलात ने इस इच्छा से कि येशू को छोड़ देवे फिर उन से बातें किईं पर वे चिल्लाने लगे कि उस को क्रूस पर चढ़ा क्रूस पर चढ़ा। उस ने तीसरी बार उन से कहा क्यों उस ने क्या बुराई किई मैं ने तो उस में बध होने का कारण कोई नहीं पाया इस लिये मैं उस की ताड़ना करके उस को छोड़ दूंगा। पर वे ऊंचे शब्दों से उस को दबाने और दृढ़ता से यह मांगने लगे कि वह क्रूस पर चढ़ाया जावे और उन के शब्द प्रबल हुए। और पीलात ने आज्ञा किई कि जो उन्हों ने मांगा सोई होवे। और जो बलवे और हत्या के कारण से बन्दीगृह में डाला गया था जिसे वे मांगते थे उस को तो उस ने छोड़ दिया पर येशू को उस ने उन की इच्छा पर सौंप दिया। और जब वे उसे ले चले तब शिमोन् नामक किसी कुरेनी जन को जो गंवईं से आता था पकड़के क्रूस को उस पर धर दिया कि वह उसे येशू के पीछे पीछे ले चले। और लोगों की बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई और स्त्रियों की भीड़ भी जो उस के लिये छाती पीटती और विलाप करती थीं पीछे पीछे आती थीं। और येशू ने उन की ओर फिरके कहा हे यरूशलेम् की पुत्रियो मुझ पर मत रोओ पर अपने ही पर और अपने लड़कों पर रोओ। क्योंकि देखो वे दिन आते हैं जिन में कहेंगे धन्य हैं बांझें और वे गर्भ जिन से कोई न जन्मा और वे स्तन जिन्हें किसी ने नहीं पीया। तब वे पहाड़ों से कहने लगेंगे कि हम पर गिर पड़ो और पहाड़ियों से कि हम को ढांप लेओ। क्योंकि यदि वे हरे पेड़ से ऐसा व्यवहार करते हैं तो सूखे से क्या न किया जावेगा। और वे और दो को जो कुकर्म्मी थे उस के संग घात करने को लिये जाते थे। और जब वे उस स्थान को जो

खोपड़ी कहावता है पहुंचे तब उन्हों ने वहां उसे क्रूस पर चढ़ाया और कुकर्म्मियों को भी एक को तो दहिनी ओर और दूसरे को बाईं ओर चढ़ाया। तब येशू ने कहा हे पिता उन्हें क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते कि क्या करते हैं। और उन्हों ने चिट्ठी डालके उस के वस्त्र बांट लिये। और लोग खड़े ताक रहे थे। और अधिपति भी यह कहके उस से ठट्ठा करते थे कि उस ने औरों को बचाया यदि वह ईश्वर का खीष्ट और उस का चुना हुआ है तो अपने को बचावे। और योद्धा भी उस के पास आके और उस को सिरका देके और यह कहके उस से ठट्ठा करने लगे यदि तू यहूदियों का राजा है तो अपने को बचा। और उस के ऊपर यह दोषपत्र भी लगा था कि यहूदियों का राजा यही है। और जो कुकर्म्मी लटकाये गये थे उन में से एक यह कहके उस की निन्दा करता था कि क्या तू खीष्ट नहीं है तो अपने को और हम को भी बचा। पर दूसरे ने उत्तर देके उस को डांटा और कहा क्या तू जो उसी दण्ड में फंसा है ईश्वर से भी नहीं डरता। और हम तो न्याय की रीति से भोगते हैं क्योंकि जो हम ने किया उस के योग्य फल भोग रहे हैं पर इस ने कोई अनुचित कर्म्म नहीं किया। और उस ने कहा हे येशू जब तू अपना राज्य प्राप्त करके आवे तब मुझे स्मरण कर। और उस ने उस से कहा मैं तुझ से सत्य कहता हूं आज तू मेरे संग परादीस में होवेगा। और अब छठवें घंटे के लगभग था कि समस्त देश पर अन्धकार छाया और नवें घंटे लों रहा और सूर्य्य का प्रकाश जाता रहा और मन्दिर की ओट बीच से फट गया। और येशू ने बड़े शब्द से पुकारके कहा हे पिता मैं तेरे हाथों में अपना आत्मा सौंप देता हूं। और यह कहके उस ने प्राण छोड़ा। और शतपति यह जो हुआ था देखके ईश्वर की महिमा करने और यह कहने लगा कि सचमुच यह मनुष्य धर्म्मी था। और जितने लोग इस को देखने के लिये एकट्ठे भये थे यह जो हुआ

था देखके अपनी अपनी छाती पीटते हुए चले गये। और उस के सब जान पहिचान और जो स्त्रियां गालील् से उस के साथ साथ आई थीं सो दूर से इन बातों को खड़ी देख रही थीं॥

शुभ शुक्रवार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर हम विनती करते हैं तू अपने इस परिवार पर अनुग्रह की दृष्टि कर जिस के लिये हमारा प्रभु येशू ख्रीष्ट पकड़वाये जाने और दुष्टों के हाथ में सौंपे जाने और क्रूस पर मरने को प्रसन्न हुआ अब वह तेरे और पवित्रात्मा के संग सदा एक ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता है। आमेन्॥

हे सर्वशक्तिमान् और सनातन ईश्वर तेरे आत्मा से एक्लेसिया की समस्त देह शासन पाती और पवित्र होती है हमारी प्रार्थनाओं और विनतियों को ग्रहण कर जो हम तेरे साम्हने तेरी पवित्र एक्लेसिया के प्रत्येक पद के मनुष्यों के लिये करते हैं कि उस का प्रत्येक अंग अपनी बुलाहट और सेवकाई में सच्चाई और भक्ति से तेरी सेवा किया करे हमारे प्रभु और त्राता येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

हे दयालु ईश्वर तू ने सब मनुष्यों को बनाया और अपनी किसी कृति से बैर नहीं रखता और किसी पापी की मृत्यु नहीं चाहता वरन यह कि वह फिरे और जीवे सब यहूदियों मुसलमानों अविश्वासियों और पाखण्डियों पर दया करके उन से सारी अज्ञानता मन की कठोरता और अपने वचन का अपमान दूर कर और हे धन्य प्रभु उन्हें इस रीति से अपनी झुण्ड में फिर समेट ले कि वे सच्चे यिस्राएल् बचे

हुए लोगों के साथ चाण पावें श्रार एक गड़ेरिये हमारे प्रभु येशू खीष्ट के हाथ में एक भुगड बन जावें वह तेरे श्रार पवित्रात्मा के संग एक ईश्वर युगानयुग जीता श्रार राज्य करता है। श्रामेन् ॥

पत्री । इब्रियों । १० । १ ।

व्यवस्था में जो श्रानेहारे उत्तम पदार्थों की परछाईं है श्रार उन वस्तुन का स्वरूप नहीं है इस लिये लोग जो एक ही प्रकार के बलि-दान बरस बरस लगातार चढ़ाते श्राते हैं उन के द्वारा उन को जो निकट श्राते हैं कभी पूर्ण नहीं कर सकते। नहीं तो क्या उनका चढ़ाया जाना बन्द न होता। क्योंकि उपासक यदि एक बार शुद्ध किये जाते तो फिर पापों का श्रन्तर्ज्ञान न रखते। परन्तु उन बलि-दानों में बरस बरस पापों का स्मरण होता है। क्योंकि श्रनहोना है कि सांड़ों श्रार बकरों का लहू पापों को दूर करे। इस लिये जब वह जगत में श्राता है तब कहता है बलिदान श्रार चढ़ावा तू ने न चाहा पर एक देह तू ने मेरे लिये सिद्ध किई सर्व्वहोमों श्रार पापबलिन से तू प्रसन्न न हुश्रा तब मैं ने कहा देख मैं श्राया हूं (पुस्तक के पुलिन्दे में मेरे विषय में लिखा है) जिस्तें हे ईश्वर मैं तेरी इच्छा पूरी करूं। जब उस ने ऊपर कहा कि बलिदान श्रार चढ़ावे श्रार सर्व्वहोम श्रार पापबलि तू ने न चाहे न उन से प्रसन्न हुश्रा (श्रार ये तो व्यवस्था के श्रनुसार चढ़ाये जाते हैं) तब ही उस ने कहा देख मैं तेरी इच्छा पूरी करने को श्राया हूं। वह पहिली बात को उठा देता है जिस्तें दूसरी बात को स्थापित करे। इसी इच्छा के हेतु हम येशू खीष्ट की देह के सदा के लिये एक ही बार चढ़ाये जाने के द्वारा पवित्र किये गये हैं। श्रार प्रत्येक याजक तो प्रतिदिन सेवकाई का काम करता श्रार बार बार एक ही प्रकार के बलिदान जो पापों को कभी दूर नहीं

कर सकते चढ़ाता हुआ खड़ा रहता है। पर यह जन जब सदा के लिये एक बलिदान पापों के निमित्त चढ़ा चुका तब ईश्वर की दहिनी ओर जा बैठा और अब इसी की अपेक्षा करता है कि उस के शत्रु उस के पैरों की पीढ़ी बनें। क्योंकि एक ही चढ़ावे से उस ने उन्हें जो पवित्र किये जाते हैं सदा के लिये पूर्ण किया है। और पवित्रात्मा भी हम को यही साक्षी देता है क्योंकि जब उस ने कहा प्रभु कहता है कि यह वह वाचा है जो मैं उन दिनों के उपरान्त उन से बांधूंगा कि मैं उन के हृदय में अपनी व्यवस्थाएं रक्खूंगा और उन की बुद्धि पर उन्हें लिखूंगा तब कहा और उन के पापों और उन के अधर्मों को मैं फिर कदापि स्मरण न करूंगा। पर जहां इन का मोचन है तहां पाप के निमित्त फिर बलिदान नहीं है। इस लिये हे भाइयो जब कि हम को येशू के लहू के द्वारा उस नये और जीवते मार्ग से जो उस ने हमारे लिये संस्कार किया जो उस ओट में से अर्थात् उस के शरीर में से होके जाता है पवित्रस्थान में प्रवेश करने की ढाढ़स प्राप्त हुई और जब कि ईश्वर के घर के ऊपर हमारा एक बड़ा याजक स्थापित है तो आओ हम सच्चे हृदय के साथ पूर्ण विश्वास से अपने हृदयों पर छिड़के जाने के द्वारा दुष्ट अन्तर्ज्ञान से शुद्ध होके और अपनी देह को निर्मल जल से धुलवा के निकट आवें। हम अपनी आशा के अंगीकार को अटल रक्खें क्योंकि जिस ने प्रतिज्ञा किई सो विश्वस्त है। और हम एक दूसरे पर ध्यान रक्खें जिस्तें एक दूसरे को प्रेम और सुकर्म्म करने को उभारें। और आपस में एकट्ठा होने को न छोड़ें जैसी कितनों की रीति है पर एक दूसरे को उपदेश दिया करें और यह इसी लिये अधिक करो कि तुम उस दिन को निकट आते देखते हो॥

सुसमाचार। प० योहानान्। १६। १।

तब पीलात ने येशू को लेके कोड़े मरवाये। और योद्धाओं ने

शुभ शुक्रवार

कांटों का मुकुट गूंथके उस के सिर पर रक्खा और बैंजनी वस्त्र उस को पहिराया और वे उस के पास आ आके कहने लगे हे यहूदियों के राजा प्रणाम और उस को घूंसे मारते थे। और पीलात फिर बाहर निकला और उन से कहा देखो मैं उस को तुम्हारे पास बाहर ले आता हूं इस लिये कि तुम जानो कि मैं उस में कोई दोष नहीं पाता। सो येशू कांटों का वह मुकुट और वह बैंजनी वस्त्र पहिने हुए बाहर आया। और पीलात ने उन से कहा देखो इस मनुष्य को। सो जब महायाजकों और प्यादों ने उस को देखा तब चिल्लाके कहा क्रूस पर चढ़ा क्रूस पर चढ़ा। पीलात ने उन से कहा तुम ही उस को लेओ और क्रूस पर चढ़ाओ क्योंकि मैं तो उस में कोई दोष नहीं पाता। यहूदियों ने उस को उत्तर दिया कि हमारे पास व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार चाहिये कि वह मार डाला जावे इस लिये कि उस ने अपने को ईश्वर का पुत्र ठहराया। जब पीलात ने यह वचन सुना तब और भी डरा और न्यायशाला में फिर प्रवेश करके येशू से कहा तू कहां का है। पर येशू ने उस को उत्तर न दिया। सो पीलात ने उस से कहा क्या तू मुझ से नहीं बोलता क्या तू नहीं जानता कि मुझ को तुझे छोड़ देने का अधिकार है और तुझे क्रूस पर चढ़ावने का भी अधिकार है। येशू ने उस को उत्तर दिया यदि ऊपर से तुझे न दिया जाता तो मुझ पर तेरा कुछ भी अधिकार न होता इसलिये जिस ने मुझ को तुझे सौंपा उसी का पाप बड़ा है। इस पर पीलात उस को छोड़ देने के लिये यत्न करने लगा पर यहूदी यह कहके चिल्लाने लगे कि यदि तू इस को छोड़ देवे तो तू कैसर का मित्र नहीं क्योंकि जो कोई अपने को राजा ठहराता है सो कैसर का विरोध करता है। सो पीलात ये बातें सुनके येशू को बाहर ले आया और एक स्थान में जिस का नाम चबूतरा था और इब्री में गब्बता कहावता था न्यायगद्दी पर बैठ गया। और उस दिन पस्खा

का सजाव था और छठवें घंटे के लगभग था। और उस ने यहूदियों से कहा देखो अपने राजा को। पर उन्हों ने चिल्लाके कहा लेजा लेजा उस को क्रूस पर चढ़ा। पीलात ने उन से कहा क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊं। महायाजकों ने उत्तर दिया कि कैसर को छोड़ हमारा कोई राजा नहीं। तब उस ने उस को उन्हें सौंप दिया कि वह क्रूस पर चढ़ाया जावे। सो वे येशू को ले चले और वह क्रूस को आप उठाये हुए उस स्थान में जिस का नाम खोपड़ी का स्थान है जो इब्री में गुल्गुल्ता कहावता है गया। वहां उन्हों ने उस को क्रूस पर चढ़ाया और उस के संग और दो को एक को इधर और दूसरे को उधर और बीच में येशू को। और पीलात ने एक पत्र भी लिखा और क्रूस पर लगवाया और उसपर यह लिखा था कि येशू नासरी यहूदियों का राजा। इस पत्र को बहुत से यहूदियों ने पढ़ा क्योंकि वह स्थान जहां येशू क्रूस पर चढ़ाया गया नगर के निकट था और वह इब्री और लतीना और यावनी में लिखा हुआ था। सो यहूदियों के महायाजकों ने पीलात से कहा यहूदियों का राजा मत लिख पर यह कि उस ने कहा मैं यहूदियों का राजा हूं। पीलात ने उत्तर दिया मैं ने जो लिखा सो लिखा। सो योद्धाओं ने जब येशू को क्रूस पर चढ़ाया तब उस के वस्त्र लिये और चार भाग किये एक एक योद्धा के लिये एक भाग और उस के कुर्त्ते को भी लिया पर कुर्त्ता बिन सीआ ऊपर से नीचे लों बिना हुआ था। सो उन्हों ने आपस में कहा हम इस को न फाड़ें पर उसपर चिट्ठी डालें कि वह किस का होगा जिस्तें शास्त्र की वह बात पूरी होवे कि उन्हों ने मेरे वस्त्र आपस में बांट लिये और मेरे कपड़े पर चिट्ठी डाली। उधर तो योद्धाओं ने यह काम किया पर इधर येशू के क्रूस के पास उस की माता और उस की मौसी और हल्पै की पत्नी मिर्यांम् और मिर्यांम् मग्दलिया खड़ी थीं। सो येशू ने अपनी माता और उस

शिष्य को जिस्से वह प्रेम रखता था पास खड़े देखके अपनी माता से कहा हे नारी देख यह तेरा पुत्र है फिर उस शिष्य से कहा देख यह तेरी माता है। और उसी घड़ी से वह शिष्य उस को अपने घर में ले गया। इस के अनन्तर येशू ने यह जानके कि अब सब कुछ समाप्त हो गया है इस लिये कि शास्त्र की बात पूरी होवे कहा मैं प्यासा हूं। वहां एक पात्र सिरके से भरा हुआ धरा था सो वे बादल का एक टुकड़ा सिरके में भिंगोके और एज़ोब् पर रखके उस के मुंह के निकट ले गये। जब येशू ने सिरका चखा तब उस ने कहा समाप्त हुआ और अपना सिर झुकाके आत्मा को त्याग दिया। तब यहूदियों ने इस लिये कि सजाव का दिन था और वे नहीं चाहते थे कि लोथें शब्बात् में क्रूसों पर रहें (क्योंकि वह शब्बात् बड़े पर्ब्ब का दिन था) पीलात से बिनती किई कि उन की टांगें तोड़ी जावें और वे उतार दिये जावें। सो योद्धा आये और पहिले की और जो दूसरा उस के संग क्रूस पर चढ़ाया गया था उस की टांगें भी तोड़ीं। पर जब वे येशू के पास आये और देखा कि वह मर चुका है तब उस की टांगें नहीं तोड़ीं। पर एक योद्धा ने उस के पांजर को बर्छी से छेदा और तुरन्त रुधिर और जल निकले। और जिस ने यह देखा उस ने साक्षी दिई है और उस की साक्षी सत्य है और वह जानता है कि वह सच कहता है जिस्तें तुम भी विश्वास करो। क्योंकि ये बातें इस लिये हुईं कि शास्त्र की यह बात पूरी होवे कि उस की एक हड्डी भी तोड़ी न जावेगी। और फिर शास्त्र का एक और स्थल कहता है जिस को उन्हों ने छेदा उसपर वे दृष्टि करेंगे॥

पुनरुत्थान का जागरण

प्रार्थना

हे प्रभु यह वर दे कि जिस भांति से हम ने तेरे धन्य पुत्र अपने

पुनरुत्थान का जागरण

चाता येशू खीष्ट की मृत्यु में बप्तिस्मा पाया है उसी भांति अपनी कुइ-च्छाओं को निरन्तर मृतक करने से उस के संग समाधि में रक्खे जावें और समाधि और मृत्यु के द्वार से पार होके अपने आनन्दमय पुनरुत्थान को पहुंचें उसी हमारे प्रभु तेरे पुत्र येशू खीष्ट के पुण्य के कारण जो हमारे लिये मरा और समाधि में रक्खा गया और फिर जी उठा। आमेन् ॥

पत्री। १ पेत्र।३।१७।

यदि ईश्वर की इच्छा हो कि तुम दुःख भोगो तो सुकर्म्म करके भोगना इस से अच्छा है कि कुकर्म्म करके दुःख भोगो। क्योंकि खीष्ट ने भी एक बार पापों के निमित्त दुःख भोगा अर्थात् धर्म्मी ने अध-र्म्मियों के लिये जिस्तें हम को ईश्वर के पास पहुंचावे कि वह शरीर में तो घात किया गया पर आत्मा में जिलाया गया। उस आत्मा में उस ने जाके उन आत्माओं को जो बन्दीगृह में थे प्रचार किया जिन्हों ने आगे अर्थात् नोह के दिनों में जब ईश्वर का धीरज बाट जोह रहा था आज्ञाभंग किया था। उस समय वह नौका बन रहा था जिस में थोड़े अर्थात् आठ प्राणी जल के द्वारा बच गये। इसी जल का प्रतिरूप अर्थात् बप्तिस्मा जो शरीर का मैल छुड़ाना नहीं पर उत्तम अन्तर्विवेक से ईश्वर से पूछना है अब तुम को भी येशू खीष्ट के पुनरुत्थान के द्वारा बचाता है। वह तो स्वर्ग में गया और ईश्वर की दहिनी ओर है और दूत और अधिकार और शक्तियां उस के अधीन किई गई हैं॥

सुसमाचार। प० मत्तय।२७।५७।

जब सांझ भई तब योसेफ् नामक रामा का एक धनी मनुष्य जो आप भी येशू का शिष्य था आया। इस ने पीलात के पास जाके

येशू की लोथ मांगी । तब पीलात ने आज्ञा दिई कि वह उस को दिई जावे । और योसेफ् ने लोथ को लेके स्वच्छ मलमल में लपेटा और अपनी नई समाधि में जिस को उस ने चटान में खुदवाई थी रक्खा और समाधि के द्वार पर एक बड़ा पत्थर लुढ़काके चला गया । और वहां मिर्याम् मग्दलिया और दूसरी मिर्याम् समाधि के साम्हने बैठी हुई थीं । बिहान को जो सजाव के अनन्तर का दिन है महायाजकों और फरीशियों ने पीलात के पास एकट्ठे आके कहा हे प्रभु हम को स्मरण होता है कि उस ठग ने जब जीता था तब कहा कि तीन दिन के पीछे मैं जी उठूंगा । सो आज्ञा कर कि तीसरे दिन लों समाधि की रक्षा किई जावे न होवे कि उस के शिष्य आके उस को चुरा ले जावें और लोगों से कहें कि वह मृतकों में से जी उठा है तो पिछली भूल पहिली से बुरी होगी । पीलात ने उन से कहा पहरुवे तुम्हारे पास हैं जाओ अपने जानते भर उस की रक्षा करो । और वे गये और पत्थर पर छाप देके और पहरुओं को बैठाके समाधि की रक्षा किई ॥

पुनरुत्थान का दिन

प्रातःकाल की प्रार्थना में आओ हम प्रभु के लिये इति स्तोत्र की सन्ती नीचे लिखे हुए स्तोत्र गाये वा कहे जावें ।

हमारा पस्खा ख्रीष्ट बलिदान भया । इस लिये हम उत्सव के साथ तेवहार को मानें ॥

पुराने खमीर से नहीं और न द्वेष और न दुष्टता के खमीर से । पर सीधाई और सच्चाई की बिन खमीर रोटी से ॥ १ कोरिन्थियों । ५ । ७ ।

ख्रीष्ट जो मृतकों में से उठा सो फिर नहीं मरने का । मृत्यु फिर उसपर प्रभुता नहीं रखती ॥

पुनरुत्थान का दिन

क्योंकि वह जो मरा सो सदा के लिये एक बार पाप की अपेक्षा में मरा। पर वह जो जीता है सो ईश्वर की अपेक्षा में जीता है॥

इसी रीति से तुम भी अपने को पाप की अपेक्षा में तो मृतक। परन्तु खीष्ट येशू में ईश्वर की अपेक्षा में जीवते समझो॥ रोमियों ६। ६

खीष्ट मृतकों में से जी उठा है। और उन में से जो सो गये हैं पहला फल भया॥

क्योंकि जब कि मनुष्य के द्वारा मृत्यु है तो मृतकों का पुनरुत्थान भी मनुष्य ही के द्वारा है॥

क्योंकि जैसे आदाम् में सब मरते हैं वैसे ही खीष्ट में सब जिलाये जावेंगे॥ १ कोरिन्थियों। १५। २०

पिता की और पुत्र की। और पवित्रात्मा की महिमा होवे॥

जैसी आदि में थी और अब है। और सदा वरन युगानयुग रहेगी। आमिन्॥

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू ने अपने एकलौते पुत्र येशू खीष्ट के द्वारा मृत्यु पर जयवन्त होके हमारे लिये अनन्त जीवन का द्वार खोल दिया है हम नम्रता से विनती करते हैं कि जैसे तू आगे से विशेष अनुग्रह करके हमारे मन में सुइच्छाएं उत्पन्न करता है वैसे ही तेरी निरन्तर सहायता पाके हम सुकर्म्म करने से उन्हें पूरा भी करें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा जो तेरे और पवित्रात्मा के संग सदा एक ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता है। आमेन॥

पत्री। कोलोस्सियों। ३। १

सो यदि तुम खीष्ट के संग जी उठे हो तो ऊपर की बातों की

खोज में रहो जहां खीष्ट ईश्वर की दहिनी ओर विराजमान है। ऊपर की बातों पर मन लगाओ न उन बातों पर जो पृथिवी पर हैं। क्योंकि तुम मर गये हो और तुम्हारा जीवन खीष्ट के संग ईश्वर में छिपा हुआ है। जब खीष्ट जो हमारा जीवन है प्रगट होवेगा तब तुम भी उस के संग महिमा में प्रगट होओगे। इस लिये पृथिवी पर के अपने अंगों को मृतक करो अर्थात् वेश्यागमन अशुद्धता कामातुरता कुइच्छा और लोभ को जो मूर्त्तिपूजा है। क्योंकि इन्हीं के कारण से ईश्वर का कोप आज्ञाभंग के पुत्रों पर पड़ता है। और तुम भी आगे अर्थात् जब इन में जीते थे तब उन में चलते भी थे॥

सुसमाचार। प० योहानान्। २०। १।

सप्ताह के पहिले दिन मिर्याम् मग्दलिया भोर को जब अंधियारा ही था समाधि पर आई और पत्थर को समाधि से हटाया हुआ देखा। तब वह दौड़के शिमोन् पेत्र और उस दूसरे शिष्य के पास जिस से येशू प्रेम रखता था आई और उन से कहा प्रभु को समाधि में से निकाल ले गये और हम नहीं जानतीं कि उस को कहां रक्खा है। सो पेत्र और वह दूसरा शिष्य निकले और समाधि की ओर जाने लगे। और दोनों एकट्ठे दौड़ते थे पर वह दूसरा शिष्य पेत्र से अधिक शीघ्र दौड़ा और समाधि पर पहिले पहुंचा और उस ने झांकके अतसी कपड़ों को पड़े देखा परन्तु भीतर नहीं गया। फिर शिमोन् पेत्र भी उस के पीछे पीछे आया और समाधि में प्रवेश किया और अतसी कपड़ों को पड़े देखा और उस अंगोछे को जो उस के सिर पर था अतसी कपड़ों के साथ पड़ा हुआ नहीं पर अलग एक स्थान में लपेटा हुआ देखा। तब वह दूसरा शिष्य भी जो पहिले समाधि पर आया था भीतर गया और उस ने देखा और विश्वास किया। क्योंकि वे

अब लों शास्त्र की इस बात को नहीं जानते थे कि उस को मृतकों में से उठना अवश्य है। तब शिष्य फिर अपने घर गये ॥

पुनरुत्थान के अनन्तर का सोमवार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू ने अपने एकलौते पुत्र येशू खीष्ट के द्वारा मृत्यु पर जयवन्त होके हमारे लिये अनन्तजीवन का द्वार खोल दिया है हम नम्रता से विनती करते हैं कि जैसे तू आगे से विशेष अनुग्रह करके हमारे मन में सुइच्छाएं उत्पन्न करता है वैसे ही तेरी निरन्तर सहायता पाके हम सुकर्म्म करने से उन्हें पूरा भी करें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा जो तेरे और पवित्रात्मा के संग सदा एक ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता है। आमिन् ॥

पत्री की सन्ती। प्रेरितों के कर्म्म। १०। ३४।

पितर ने मुंह खोलके कहा निश्चय मैं जान गया कि ईश्वर पक्षपाती नहीं पर सब जातियों में जो उस से डरता और धर्म्म का कर्म्म करता है सो उस को ग्राह्य है। जो वचन उस ने यिस्राएल्वंशियों के पास भेजा जब येशू खीष्ट के द्वारा जो सभों का प्रभु है मेल का सुसमाचार सुनाया अर्थात् जो बात उस बप्तिस्म के अनन्तर जो योहानान् ने प्रचार किया गालील् से लेके समस्त यहूदा में फैली उस को तुम जानते हो अर्थात् येशू नासरी का वृत्तान्त कि क्योंकर ईश्वर ने उस को पवित्रात्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया और वह उपकार करता और जितने दुष्टात्मा से पीसे जाते थे सब को चंगा करता फिरा क्योंकि ईश्वर उस के संग था। और जो कुछ उस ने यहूदियों

के देश और यरूशलेम् में किया उस सब के हम साक्षी हैं और उस को उन्हों ने काठ पर लटकाके मार डाला। इसी को ईश्वर ने तीसरे दिन उठाया और साक्षात् दिखाया सब लोगों को तो नहीं पर उन साक्षियों को जो आगे ईश्वर से चुने गये थे अर्थात् हम को जिन्हों ने उस के मृतकों में से जी उठने के पीछे उस के संग खाया और पीया। और उस ने हमें आज्ञा दिई कि हम लोगों को प्रचार करें और साक्षी देवें कि जीवतों और मृतकों का न्यायी होने के लिये वही ईश्वर से ठहराया गया है। इसी के विषय में सब प्रवक्ता साक्षी देते हैं कि जो कोई उसपर विश्वास करता है सो उस के नाम के द्वारा पाप-मोचन पावेगा॥

सुसमाचार। प० लूका। २४। १३।

देखो उसी दिन उन में से दो इम्मौत् नामक एक गांव को जाते थे जो यरूशलेम् से कोस चार एक पर था। और वे इन सब बातों के विषय में जो हुई थीं आपस में बातचीत करते जाते थे। और ऐसा हुआ कि जब वे बातचीत और विचार कर रहे थे तब येशू आप निकट आके उन के संग चलने लगा। परन्तु उन के नेत्र बन्द रहे कि वे उस को पहिचान न सके। और उस ने उन से कहा ये कौन सी बातें हैं जो तुम एक दूसरे से कहते जाते हो। और वे उदास होके खड़े हो गये। तब उन में से एक ने जिस का नाम क्लियोपा था उत्तर देके उस से कहा क्या तू ही अकेला यरूशलेम् में रहके नहीं जानता कि इन दिनों में वहां क्या हुआ। उस ने उन से कहा कौन सी बातें। उन्हों ने उस से कहा येशू नासरी की बातें जो ऐसा प्रवक्ता हुआ जो ईश्वर और समस्त लोकगण की दृष्टि में कर्म्म और वचन में सामर्थी था और क्योंकर महायाजकों और हमारे अधिपतियों ने उस को मृत्युदण्ड के लिये सौंप दिया और

उसे क्रूसपर चढ़ाया। पर हमें तो यह आशा थी कि यिस्राएल् का छुड़ा लेनेहारा यही है। परन्तु इन सब से अधिक इन बातों के भये आज तीसरा दिन है। वरन हमारे लोगों में से कितनी स्त्रियों ने हम को चकित किया जो भोर को समाधि पर गई थीं और जब उस की लोथ को न पाया तब आके कहने लगीं कि हम ने दूतों का दर्शन पाया जो कहते थे कि वह जीता है। और हमारे लोगों में से कितने समाधि पर गये और जैसा स्त्रियों ने कहा था तैसा ही पाया पर उस को तो उन्हों ने न देखा। तब उस ने उन से कहा हे अज्ञानियो और जो कुछ प्रवक्ताओं ने कहा उसपर विश्वास करने में मन्दमति लोगो क्या उचित न था कि ख्रीष्ट ये दुःख भोगे और अपनी महिमा में प्रवेश करे। और मोशे और समस्त प्रवक्ताओं से आरम्भ करके वह समस्त शास्त्र से अपने विषय की बातों का अर्थ उन्हें समझाने लगा। और वे उस गांव के निकट आये जहां वे जाते थे और वह अपने को ऐसा दिखाने लगा कि मानो आगे जाने चाहता था। और उन्हों ने यह कहके उस को रोका कि हमारे संग रह क्योंकि सांझ हो चली और दिन ढल चुका है। और वह उन के संग रहने को भीतर गया। और ऐसा हुआ कि जब वह उन के संग भोजन पर बैठा तब रोटी लेके आशीर्वाद दिया और तोड़के उन्हें देने लगा। तब उन के नेत्र खुल गये और उन्हों ने उस को पहिचाना और वह उन से अन्तर्धान हो गया। और उन्हों ने आपस में कहा जब वह मार्ग में हम से बोलता और शास्त्र का अर्थ हम पर प्रगट करता था तब क्या हमारा हृदय खोल न रहा था। और वे उसी घड़ी उठके यरूशलेम् को फिरे और ग्यारह प्रेरितों और उन के संगियों को एकट्ठे और यह कहते हुए पाया कि सचमुच प्रभु जी उठा और शिमोन् को दर्शन दिया। और वे मार्ग का वृत्तान्त और यह कि क्योंकर वह रोटी तोड़ने के समय उन से पहिचाना गया वर्णन करने लगे॥

पुनरुत्थान के अनन्तर का मंगलवार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू ने अपने एकलौते पुत्र येशू खीष्ट के द्वारा मृत्यु पर जयवन्त होके हमारे लिये अनन्तजीवन का द्वार खोल दिया है हम नम्रता से विनती करते हैं कि जैसे तू आगे से विशेष अनुग्रह करके हमारे मन में सुइच्छाएं उत्पन्न करता है वैसे ही तेरी निरन्तर सहायता पाके हम सुकर्म्म करने से उन्हें पूरा भी करें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा जो तेरे और पवित्रात्मा के संग सदा एक ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता है। आमेन्॥

पत्री की सन्ती। प्रेरितों के कर्म्म।१३।२६।

हे अब्राहामवंशी भाइयो और तुम में से जितने ईश्वर से डरते हो सुनो इस त्राण का समाचार हमारे ही पास भेजा गया है। क्योंकि जो यरूशलेम् में रहते हैं उन्हों ने और उन के अधिपतियों ने जब उस को नहीं चीन्हा और न प्रवक्ताओं के उन शब्दों को जो प्रति शब्बात् पढ़े जाते हैं समझा तो उस को दण्ड के योग्य ठहराने से इन को पूरा किया। और यद्यपि उन्हों ने उस के घात का कोई कारण न पाया तौभी उन्हों ने पीलात से विनती किई कि वह मार डाला जावे। और जब वे उन सब बातों को जो उस के विषय में लिखी गई थीं समाप्त कर चुके तब उस को काठ पर से उतारके समाधि में रक्खा। पर ईश्वर ने उस को मृतकों में से उठाया और जो उस के संग गालील् से यरूशलेम् को चढ़ आये थे उन को वह बहुत दिन लों दर्शन देता रहा और वे अब लोगों के साम्हने उस के साक्षी हैं। और हमारे पुरखाओं से जो प्रतिज्ञा किई गई थी उस के विषय में हम तुम को यह सुसमाचार सुनाते हैं कि ईश्वर ने येशू को उठाने से हमारे लड़कों के लिये उसी को पूरा किया है जैसा दूसरे

पुनरुत्थान के अनन्तर का मंगलवार

स्तोत्र में लिखा भी है कि तू मेरा पुत्र है आज मैं ही ने तुझे जन्माया है। और इस विषय में कि उस ने उस को मृतकों में से ऐसा उठाया कि वह सड़ाहट में फिर न पड़ेगा उस ने इसी प्रकार से कहा कि मैं तुम को दावीद् की पवित्र और अटल पदार्थ देऊंगा। क्योंकि वह एक और स्तोत्र में भी कहता है कि तू अपने भक्त को सड़ाहट देखने न देवेगा। क्योंकि दावीद् तो जब ईश्वर के प्रबन्ध के अनुसार अपनी निज पीढ़ी के लोगों की सेवा कर चुका तब सो गया और अपने पुरखाओं में मिल गया और सड़ाहट देखी परन्तु जिस को ईश्वर ने उठाया उस ने सड़ाहट न देखी। सो हे भाइयो तुम को यह विदित होवे कि इसी पुरुष के द्वारा पापमोचन का समाचार तुम्हें दिया जाता है और जिन बातों से तुम मोशे की व्यवस्था के अनुसार निर्दोष नहीं ठहर सकते थे उन सब बातों से प्रत्येक विश्वासी इसी जन के द्वारा निर्दोष ठहरता है। इस लिये चौकस रहो कि जो बात प्रवक्ताओं में लिखी है सो तुम पर न आपड़े कि रे तुच्छ समझनेहारो देखो और अचंभा करो और नष्ट होओ क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में एक ऐसा कर्म्म करता हूं कि यदि कोई तुम से उस का बखान करे तथापि तुम उसे सच न मानोगे॥

सुसमाचार। प० लूका। २४। ३६।

येशू ने आप उन के बीच में खड़े होके उन से कहा तुम को शान्ति मिले। पर वे डरे और घबरा गये और समझते थे कि हम कोई आत्मा देख रहे हैं। और उस ने उन्हें कहा तुम क्यों व्याकुल हो और क्यों तुम्हारे हृदयों में विचार उत्पन्न होते हैं मेरे हाथों और पैरों को देखो कि मैं ही हूं मुझे टटोलो और देखो कि मांस और हड्डियां जैसी तुम मुझ में देखते हो आत्मा को नहीं होतीं।

पुनरुत्थान के अनन्तर पहला इतवार

और यह कहके उसने उन को अपने हाथ और अपने पांव दिखाये। और जब वे अब लों आनन्द के मारे विश्वास नहीं करते थे पर आश्चर्य्य करते थे तब उस ने उन से कहा क्या यहां तुम्हारे पास कुछ खाने को है। और उन्हों ने उस को भूनी हुई मछली का एक टुकड़ा और मधु के छत्ते में से कुछ दिया। और उस ने उस को लेके उन के साम्हने खाया। तब उस ने उन से कहा ये मेरे वेही वचन हैं जो मैं ने तुम्हारे संग रहते हुए तुम से कहे कि मोशे और प्रवक्ताओं और स्तोत्रों में मेरे विषय में जितनी बातें लिखी हुई हैं सब का पूरा होना अवश्य है। तब उस ने उन की बुद्धि को खोला कि वे शास्त्र को समझ सकें और उन से कहा कि इसी रीति से लिखा है कि ख्रीष्ट दुःख भोगेगा और तीसरे दिन मृतकों में से उठेगा और उस के नाम से पश्चात्ताप और पापमोचन का प्रचार यरूशलेम् से आरंभ करके समस्त जातियों में किया जावेगा। और तुम इन बातों के साक्षी हो॥

पुनरुत्थान के अनन्तर पहला इतवार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् पिता तू ने अपना एकलौता पुत्र इस लिये दिया कि वह हमारे पापों के लिये मरे और हमारे धर्म्मी ठहरने के लिये जी उठे हमें यह वर दे कि द्वेष और दुष्टता का खमीर ऐसा दूर करें कि शुद्ध चाल और सच्चाई से सदा तेरी सेवा करते रहें उसी तेरे पुत्र हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के पुण्य के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। १ योहानान्। ५। ४।

ईश्वर से जो कुछ उत्पन्न हुआ है सो संसार को जीतता है और

पुनरुत्थान के अनन्तर पहला इतवार

यही वह जय है जो संसार को जीत चुका है अर्थात् हमारा विश्वास। और कौन है जो संसार को जीतता है केवल वही जो विश्वास करता है कि येशू ईश्वर का पुत्र है। यह वही है जो जल और रुधिर के द्वारा आया अर्थात् येशू ख्रीष्ट केवल जल ही से नहीं पर जल से और रुधिर से भी। और साक्षी देनेहारा आत्मा ही है क्योंकि आत्मा सत्य है। क्योंकि साक्षी देनेहारे तीन हैं अर्थात् आत्मा और जल और रुधिर और ये तीनों एक बात पर सम्मत हैं यदि हम मनुष्यों की साक्षी ग्रहण करते हैं तो ईश्वर की साक्षी उस से बड़ी है कि ईश्वर की यही साक्षी है जो उस ने अपने पुत्र के विषय में दिई है। जो ईश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है सो यह साक्षी अपने में रखता है पर जो ईश्वर की प्रतीति नहीं करता सो उस को झूठा बना चुका है क्योंकि जो साक्षी ईश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दिई है उस पर उस ने विश्वास नहीं किया। और साक्षी यह है कि ईश्वर ने हम को अनन्तजीवन दिया और यह जीवन उस के पुत्र में है। पुत्र जिस का है उस का जीवन भी है पर ईश्वर का पुत्र जिस का नहीं है उसका जीवन भी नहीं है॥

सुसमाचार। प० योहानान्। २०। १९।

उसी दिन जो सप्ताह का पहिला दिन था सांझ के समय जब जहां शिष्य थे तहां के द्वार यहूदियों के डर के मारे बन्द थे तब येशू आया और बीच में खड़ा होके उन से कहा तुम को शान्ति मिले। और यह कहके उस ने उन को अपने हाथ और अपना पांजर दिखाया। तब शिष्य प्रभु को देखके आनन्दित भये। सो येशू ने उन से फिर कहा तुम को शान्ति मिले जैसे मेरे पिता ने मुझ को भेजा है तैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं। और यह कहके उस ने

उन पर फूंका और उन से कहा पवित्रात्मा को लेओ जिन के पापों को तुम क्षमा करो उन के क्षमा किये जाते हैं जिन के तुम रक्खे रहो उन के रक्खे हुए हैं ॥

पुनरुत्थान के अनन्तर दूसरा इतवार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू ने अपना एकलौता पुत्र इस लिये दिया कि वह हमारे लिये पाप के निमित्त बलिदान और भक्ति की चाल का उदाहरण भी होवे हमें यह अनुग्रह दे कि उस के उस अनमोल उपकार को सदा अति कृतज्ञता से ग्रहण किया करें और उस के अत्यन्त पवित्र चरित्र के धन्य चरणचिन्ह पर चलने के लिये प्रतिदिन यत्न करते रहें उसी हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन् ॥

पत्री । १ पेत्र । २ । १९ ।

यदि कोई जब अन्याय से दुःख भोगे तब ईश्वर को समीप जान के कष्ट सहता है तो यह प्रशंसा के योग्य है। क्योंकि यदि तुम पाप करके थपेड़ा खाते और सहते हो तो इस में क्या बड़ाई है पर यदि सुकर्म्म करके दुःख भोगते और सहते हो तो यह ईश्वर के आगे प्रशंसा के योग्य है। क्योंकि तुम इसी के लिये तो बुलाये गये क्योंकि ख्रीष्ट ने भी तुम्हारे लिये दुःख भोगा और तुम्हारे लिये उदाहरण छोड़ गया कि तुम उस के पदचिन्हों पर चले जाओ। उस ने पाप नहीं किया न उस के मुंह में छल बल पाया गया। वह निन्दा के बदले में निन्दा न करता था और जब दुःख पाता था तब धमकाता न था पर जो न्याय से विचार करता है उसी को अपने तईं सौंप

देता था। उस ने आप हमारे पापों को अपनी देह में काठ के ऊपर उठा लिया जिस्तें हम पापों की अपेक्षा मरके धर्म्म की अपेक्षा जीवें। उस के कोड़ेखाने से तुम चंगे किये गये। क्योंकि तुम भेड़ों की नाईं भटकते फिरते थे पर अब अपने जीवों के गडेरिये और अध्यक्ष के पास फिर आये हो॥

सुस्माचार। प० योहानान्। १०। ११।

येशू ने कहा अच्छा गड़ेरिया मैं हूं अच्छा गड़ेरिया भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है। पर जो चाकर है और गड़ेरिया नहीं जिस की भेड़ें अपनी नहीं सो भेड़िये को आते देखता और भेड़ों को छोड़के भागता है और भेड़िया उन्हें पकड़ता और तितर बितर करता है क्योंकि वह चाकर ही है और उस को भेड़ों की चिन्ता नहीं रहती। अच्छा गड़ेरिया मैं हूं और जैसे पिता मुझे जानता और मैं पिता को जानता हूं तैसे ही मैं अपनियों को जानता हूं और मेरी मुझे जानती हैं और मैं भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूं। और मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस भेड़शाला की नहीं हैं उन्हें भी मुझे ले आना चाहिये और वे मेरी वाणी सुनेंगी और एक झुण्ड और एक गड़ेरिया होवेगा॥

पुनरुत्थान के अनन्तर तीसरा इतवार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू भटके हुओं को अपने सत्य का प्रकाश इस लिये दिखाता है कि वे धर्म्म के मार्ग पर लौट आवें जितने खीष्ट के धर्म्म की सत्संगति में ग्रहण किये जाते हैं उन को यह वर

दे कि जो कुछ उन के अंगीकार के प्रतिकूल है उस को त्यागं देवें और जो कुछ उस के अनुकूल है उस के अनुसार चलें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा । आमिन् ॥

पत्री । १ पेत्र । २ । ११ ।

हे प्रियो मैं तुम को प्रवासी और परदेशी जानके तुम से बिनती करता हूं कि शारीरिक अभिलाषाओं से जो जीव के विरुद्ध लड़ती हैं परे रहो और तुम्हारी चाल चलन अन्यजातियों में अच्छी रहे जिस्तें जिस बात में वे तुम को कुकर्म्मी जान के बुरा कहते हैं उसी में वे तुम्हारे सुकर्म्मों को देखके उन के हेतु उस दिन जिस में उनपर कृपा दृष्टि होगी ईश्वर की महिमा करें । प्रभु के निमित्त मनुष्यों के प्रत्येक विधान के अधीन रहो चाहे राजा होवे क्योंकि वह सब के ऊपर है चाहे अधिपति होवें क्योंकि वे उसी के द्वारा कुकर्म्मियों को दण्ड और सुकर्म्मियों की प्रशंसा करने के लिये भेजे जाते हैं। क्योंकि ईश्वर की यही इच्छा है कि तुम सुकर्म्म करने से निर्बुद्धि मनुष्यों के अज्ञान का मुंह चुप करो । अपने को निर्बन्ध तो समझो पर तुम्हारी निर्बन्धता दुष्टता की आड़ न हो वरन अपने को ईश्वर के दास जानो । सब का आदर करो । भ्रातृगण से प्रेम रक्खो ईश्वर का भय मानो राजा का आदर किया करो ॥

सुसमाचार । प० योहानान् ।१६।१६।

येशू ने अपने शिष्यों से कहा थोड़ी और बेर में तुम मुझे फिर न देखोगे फिर थोड़ी और बेर में तुम मुझे देखोगे । तब उस के शिष्यों में से कितनों ने आपस में कहा यह क्या बात है जो वह हम से कहता है कि थोड़ी और बेर में तुम मुझे न देखोगे और फिर थोड़ी

पुनरुत्थान के अनन्तर चौथा इतवार

और बेर में तुम मुझे देखोगे और यह इस लिये होगा कि मैं पिता के पास जाता हूं। सो उन्हों ने कहा यह क्या बात है जो वह कहता है कि थोड़ी बेर हम नहीं जानते वह क्या कहता है। येशू ने जान लिया कि वे मुझ से पूछने चाहते हैं और उन से कहा क्या तुम इस के विषय में आपस में पूछ पाछ करते हो कि मैंने कहा थोड़ी और बेर में तुम मुझे न देखोगे और फिर थोड़ी और बेर में तुम मुझे देखोगे। मैं तुम से सत्य सत्य कहता हूं कि तुम तो रोओगे और विलाप करोगे पर संसार आनन्द करेगा तुम शोकित होओगे पर तुम्हारा शोक आनन्द से बदल जावेगा। स्त्री जब जनने लगती है तब उस को कष्ट होता है क्योंकि उस की घड़ी आ पहुंची पर जब वह बालक को जन चुकती है तब क्लेश को फिर इस आनन्द के मारे कि जगत में एक मनुष्य उत्पन्न हुआ है स्मरण नहीं करती। इसी प्रकार से तुम को भी अब तो शोक होता है पर मैं तुम को फिर देखूंगा और तुम्हारा हृदय आनन्दित होवेगा और तुम्हारे आनन्द को कोई तुम से ले नहीं सकता॥

पुनरुत्थान के अनन्तर चौथा इतवार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर पापियों के निरंकुश मन को केवल तू ही वश में रख सकता है अपने निज लोगों को यह वर दे कि जिस बात की तू आज्ञा देता है उस को वे प्रिय जानें और जिस बात की तू प्रतिज्ञा करता है उस को चाहें ऐसा कि संसार की रंग रंग और भान्ति भान्ति की अदल बदल में हमारे हृदय दृढ़ता से वहीं लगे रहें जहां सच्चे आनन्द हैं हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पुनरुत्थान के अनन्तर चैाथा इतवार

पत्री। याकोब् ।१।१७।

प्रत्येक अच्छा दान और प्रत्येक पूर्ण वर ऊपर की ओर से है और ज्योतियों के पिता के पास से उतर आता है जिस में कुछ अदल बदल नहीं हो सकता न ऐसी छाया जो ग्रहों के घूमने से पड़ती है। अपनी ही इच्छा से उस ने हम को सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया जिस्तें हम उस की कृतियों में से मानो पहिला फल होवें। हे मेरे प्रिय भाइयो तुम यह बात जानते तो हो। परन्तु प्रत्येक मनुष्य सुनने में चटक बोलने में धीमा क्रोध करने में धीमा होवे क्योंकि मनुष्य का क्रोध ईश्वर के धर्म्म का कर्म्म नहीं करता। इस लिये सब मलिनता और दुष्टता की उमण्ड को दूर करके उस वचन को जो तुम में रोपा गया और तुम्हारे जीवों का त्राण कर सकता है सौम्य स्वभावता से ग्रहण करो॥

सुसमाचार। योहानान् ।१६।५।

येशू ने अपने शिष्यों से कहा अब मैं उस के पास जिस ने मुझे भेजा है जाता हूं और तुम में से कोई मुझ से नहीं पूछता कि तू कहां जाता है। पर इस लिये कि मैं ने तुम से ये बातें कही हैं तुम्हारा मन शोक से भर गया। परन्तु मैं तुम से सत्य कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिये लाभदायक ही है क्योंकि यदि मैं न जाऊं तो पराक्लेत तुम्हारे पास न आवेगा पर यदि मैं जाऊं तो उस को तुम्हारे पास भेजूंगा। और वह आके संसार को पाप के विषय में और धर्म्म के विषय में और विचार के विषय में दोषी ठहरावेगा। पाप के विषय में तो इस लिये कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते और धर्म्म के विषय में इस लिये कि मैं पिता के पास जाता हूं और तुम मुझे फिर नहीं देखोगे और विचार के विषय में इस

लिये कि इस संसार के अधिपति का विचार हो चुका है। मुझ को तुम से बहुत और बातें कहनी हैं पर तुम अभी उन्हें नहीं सह सकते। परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आवेगा तब वह सम्पूर्ण सत्य में तुम्हारा पथदर्शक होके तुम को ले चलेगा क्योंकि वह अपनी ओर से न बोलेगा पर जो कुछ वह सुनेगा सोई बोलेगा और होनेहारी बातों का समाचार तुम्हें देवेगा। वह मेरी महिमा करेगा क्योंकि वह मेरे में से लेगा और तुम को बतावेगा। जितनी वस्तें पिता की हैं सब मेरी हैं इसी लिये मैं ने कहा कि वह मेरे में से लेता है और तुम को बतावेगा॥

पुनरुत्थान के अनन्तर पांचवां इतवार

प्रार्थना

हे प्रभु सब उत्तम पदार्थ तुझी से आते हैं हम अपने नम्र दासों को यह वर दे कि हम तेरी पवित्र प्रेरणा से जो बातें अच्छी हैं उन को सोचें और तेरी दयायुक्त अगुवाई से उन्हें करते रहें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। याकोब् ।१।२२।

वचन के पालनेहारे होओ न केवल उस के सुननेहारे नहीं तो तुम अपने ही को धोखा देओगे। क्योंकि यदि कोई वचन का पालनेहारा नहीं पर केवल उस का सुननेहारा होवे तो वह उस मनुष्य के समान है जो अपना शारीरिक मुंह दर्पण में देखता है क्योंकि उसने अपने को देखा और चला गया और तुरन्त भूल गया कि मैं कैसा मनुष्य था। परन्तु जिस ने उस पूर्ण व्यवस्था में जो

निर्बन्धता की है ध्यान से देखा और उसी में बना रहा हो सो ऐसा श्रोता नहीं जो बिसरा दे पर कर्म्म का करनेहारा होके अपनी क्रिया में धन्य होवेगा। यदि कोई भक्त दिखाई देवे पर अपनी जीभ को बाग न देवे वरन अपने मन को धोखा दे तो ऐसे जन की भक्ति व्यर्थ है। जो भक्ति ईश्वर पिता की दृष्टि में शुद्ध और निर्मल है सो यही है कि पितृहीन बालकों और विधवाओं के क्लेश में उन की सुधि लेनी और अपने को संसार के कलंक से शुद्ध रखना॥

सुसमाचार। प० योहानान्।१६।२३।

मैं तुम से सत्य सत्य कहता हूं कि जो कुछ तुम पिता से मांगो सो वह मेरे नाम में देवेगा। अब लों तुमने मेरे नाम में कुछ नहीं मांगा मांगो तो तुम पाओगे जिस्तें तुम्हारा आनन्द पूर्ण होवे। ये बातें मैं ने तुम से दृष्टान्तों में कही हैं पर वह घड़ी आती है जिस में मैं फिर तुम से दृष्टान्तों में न बोलूंगा पर पिता का समाचार तुम्हें खोल के दूंगा। उस दिन तुम मेरे नाम में मांगोगे और मैं तुम से नहीं कहता कि मैं पिता से तुम्हारे लिये प्रार्थना करूंगा क्योंकि पिता आपही तुम से प्रेम रखता है इस लिये कि तुम ने मुझ से प्रेम रक्खा और विश्वास किया है कि मैं पिता के पास से निकला हूं। मैं पिता से निकला और जगत में आया हूं फिर मैं जगत को छोड़ता और पिता के पास जाता हूं। उस के शिष्यों ने कहा देख अब तो तू खोल के बोलता है और दृष्टान्त नहीं कहता। अब हम जान गये कि तू सब कुछ जानता है और तुझे कुछ अवश्य नहीं कि कोई तुझ से कुछ पूछे इसी से हम विश्वास करते हैं कि तू ईश्वर की ओर से निकला है। येशू ने उन को उत्तर दिया क्या तुम अब विश्वास करते हो। देखो वह घड़ी आती है वरन आ चुकी भी है

कि तुम तितर बितर होके अपना अपना मार्ग पकड़ोगे और मुझ को अकेला छोड़ोगे और तो भी मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता मेरे संग है। ये बातें मैं ने तुम से इस लिये कही हैं कि तुम मुझ में शान्ति पाओ। संसार में तो तुम क्लेश पाते हो परन्तु ढाढ़स बांधो मैं ने संसार को जीता है॥

स्वर्गारोहण का दिन

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर हम विनती करते हैं यह वर दे कि जैसे हमारा विश्वास है कि तेरा एकलौता पुत्र हमारा प्रभु येशू ख्रीष्ट स्वर्गों के ऊपर चढ़ गया है वैसे ही हम भी हृदय और मन से वहां चढ़ के निरन्तर उस के संग रहें जो तेरे और पवित्रात्मा के संग सदा एक ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता है। आमेन्॥

पत्री की सन्ती। प्रेरितों। १। १।

हे थेयफिल येशू जो कार्य्य और शिक्षा आरंभ करके उस दिन लों करता और देता रहा जब वह अपने चुने हुए प्रेरितों को पवित्रात्मा के द्वारा आज्ञा देके ऊपर उठाया गया उस सब के विषय में तो मैं वह पहिली पुस्तक लिख चुका। उन प्रेरितों को उस ने अपने दुःख भोग के अनन्तर बहुत से प्रमाणों के साथ अपने को जीवता दिखाया कि चालीस दिन लों उन्हें दर्शन देता और ईश्वर के राज्य की बातें कहता रहा। और उन के साथ एकट्ठा होके उन्हें आज्ञा दिई कि यरूशलेम् से मत निकलो पर पिता की जो प्रतिज्ञा तुम ने मुझ से सुनी उस की बाट जोहते रहो क्योंकि योहानान् ने तो जल से बप्तिस्म

दिया पर तुम अब थोड़े दिनों के उपरान्त पविचात्मा से बप्तिस्म पाओगे। सो वे एकट्ठे होके उस से पूछने लगे कि हे प्रभु क्या तू इस समय यिस्राएल को उस का राज्य फेर देता है। उस ने उन से कहा जो समय और काल पिता ने अपने निज अधिकार में रक्खे हैं उन्हें जानना तुम्हारा काम नहीं। परन्तु जब पविचात्मा तुम पर आवेगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे और यरूशलेम् में और सारे यहूदा में और शोमरोन् में और पृथिवी के अन्त लों मेरे साक्षी होओगे। और यह कहके उन के देखते हुए वह ऊपर उठाया गया और एक मेघ ने उस को उन की दृष्टि से छिपा लिया और जब वह चला जाता था और वे स्वर्ग की ओर टकटकी लगाये रहे तो देखो दो पुरुष उजले वस्त्र पहिने हुए उन के पास खड़े थे और उन्हों ने कहा हे गाली-लियो तुम क्यों स्वर्ग की ओर खड़े देखते हो यही येशू जो तुम्हारे पास से स्वर्ग में उठा लिया गया है उसी प्रकार से आवेगा जिस प्रकार से तुम ने उस को स्वर्ग में जाते देखा है॥

सुसमाचार। प० मार्क। १६। १४।

येशू ने ग्यारह प्रेरितों को जब वे भोजन पर बैठे थे दर्शन दिया और उन के अविश्वास और कठोर मन के कारण से उन को दोष दिया क्योंकि जिन्हों ने उस को जी उठे हुए देखा था उन की उन्हों ने प्रतीति न किई। और उस ने उन्हें कहा समस्त जगत में जाके सारी सृष्टि को सुसमाचार का प्रचार करो। जो विश्वास करे और बप्तिस्म लेवे सो चाण पावेगा पर जो विश्वास न करे उसपर दण्ड की आज्ञा होवेगी। और जो विश्वास करें उन के साथ साथ ये चिन्ह होवेंगे कि मेरे नाम में वे पिशाचों को निकालेंगे वे नई भाषाएं बोलेंगे वे सांपों को उठा लेंगे और यदि कोई मृत्युकारक वस्तु पीवें तो उन की कुछ

भी हानि न होवेगी वे रोगियों पर हाथ रक्खेंगे तो वे अच्छे होजावेंगे। तब प्रभु येशू उन से बोलने के उपरान्त स्वर्ग में उठा लिया गया और ईश्वर की दहिनी ओर जा बैठा। और उन्हों ने निकल के सर्वत्र प्रचार किया और प्रभु उन के संग संग काम करता और वचन को उन चिन्हों से जो साथ साथ होते थे दृढ करता रहा। आमेन्॥

स्वर्गारोहण के दिन के अनन्तर का इतवार

प्रार्थना

हे ईश्वर महिमा के राजा तू ने अपने एकलौते पुत्र येशू ख्रीष्ट को बड़े जयोत्सव के साथ अपने स्वर्गीय राज्य लों उन्नत किया है हमारी यह विनती है कि तू हमें अनाथ न छोड़ पर अपने पवित्रात्मा को हमारे पास भेज कि वह हमें शान्ति देवे और उसी स्थान लों उन्नत करे जहां हमारा त्राता ख्रीष्ट आगे गया है वह तेरे और पवित्रात्मा के संग एक ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता है। आमेन्॥

पत्री। १ पेत्र।४।७

सब बातों का अन्त निकट है इस लिये सचेत और प्रार्थना करने के लिये चौकस रहो। सब बातों से अधिक तुम जो आपस में प्रेम रखते हो सो जी से रक्खो क्योंकि प्रेम बहुत से पापों को ढांपता है। आपस में बिना कुड़कुड़ाये अतिथिसेवा किया करो। जिस जन ने जैसा दान पाया हो तैसाही एक दूसरे के परिचारक होके आपस में बांटो जैसे ईश्वर के नानारूप अनुग्रह के अच्छे भंडारियों को चाहिये। यदि कोई बोले तो मानो ईश्वर वाणी बोले यदि परिचारक होके कुछ बांटे तो उस शक्ति से यह करे जो ईश्वर देता है जिस्तें सब

पेन्तेकोष्टा का दिन

बातों में येशू खीष्ट के द्वारा ईश्वर की महिमा होवे जिस की महिमा और प्रभुता युगानयुग होती रहती है । आमेन् ॥

सुसमाचार । प० योहानान् । १५ । २६ ।

जब पराक्लेत जिस को मैं पिता के पास से तुम्हारे पास भेजूंगा अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता के पास से निकलता है आवे तब वह मेरे विषय में साक्षी देवेगा और तुम भी साक्षी देओगे क्योंकि तुम आरंभ से मेरे संग हो । ये बातें मैं ने इस लिये तुम से कही हैं कि तुम ठोकर न खाओ । लोग तुम को सभास्थान से बहिष्कृत करेंगे वरन वह घड़ी आती है जिस में जो कोई तुम को मारडाले सो समझेगा कि मैं ईश्वर की उपासना करता हूं । और वे ये काम इस कारण से करेंगे कि उन्हों ने न पिता को जाना है न मुझ को । और ये बातें मैं ने इस लिये तुम से कही हैं कि जब उन के पूरे होने की घड़ी आवे तब तुम को स्मरण होवे कि मैं ने उन्हें तुम से कहा ॥

पेन्तेकोष्टा का दिन

प्रार्थना

हे ईश्वर तू ने मानों इस समय अपने विश्वासियों पर अपने पवित्रात्मा की ज्योति भेजने से उन के मन को शिक्षा दिई हमें यह वर दे कि उसी आत्मा के द्वारा सब बातों में ठीक समझ रक्खें और सदा उस के पवित्र प्रबोध से आनन्द करते रहें हमारे त्राता खीष्ट येशू के पुण्य के द्वारा जो तेरे संग उसी आत्मा की एकता में एक ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता है । आमेन् ॥

पेन्तेकोष्टा का दिन

पत्री की सन्ती । प्रेरितों । २ । १ ।

जब पेन्तेकोष्टा का दिन आ पहुंचा तब वे सब एक ही स्थान में एकट्ठे थे । और अकस्मात् स्वर्ग से एक शब्द हुआ मानो प्रवल बयार चल रही है और वह उस सारे घर में जहां वे बैठे थे भर गया । और आग की सी जीभें बंटती हुई उन को दिखाई दिईं और वह उन में से प्रत्येक जन पर बैठ गई । और वे सब पवित्रात्मा से भर गये और दूसरी भाषाएं बोलने लगे जैसे आत्मा उन्हें बोलने का सामर्थ्य देता था । और यरूशलेम् में भक्त यहूदी जो आकाश के नीचे की प्रत्येक जाति में से आये थे रहते थे । और जब यह शब्द हुआ तब भीड़ लग गई और चकित हुई इस लिये कि उन्हों ने अपनी अपनी भाषा उन को बोलते सुना । और सब चकित और अचम्भित भये और कहने लगे देखो क्या ये सब जो बोलते हैं गालीली नहीं तो क्योंकर हम अपनी अपनी जन्मभाषा सुनते हैं । पर्थी और मादै और एलामी और मेसोपोतमिया और यहूदा और कप्पदोकिया और पोन्त और आसिया और फ्रुगिया और पम्फूलिया और मिसर और कुरेना के आस पास की लिबुवा के रहनेहारे और रोमी प्रवासी क्या यहूदी क्या नवयहूदी क्या क्रेती क्या अरबी हम अपनी अपनी भाषाओं में उन को ईश्वर के महाकार्य्यों का बखान करते सुनते हैं ॥

सुसमाचार । प० योहानान् । १४ । १५ ।

येशू ने अपने शिष्यों से कहा यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो तो मेरी आज्ञाओं को पालन करोगे । और मैं पिता से प्रार्थना करूंगा तो वह तुम को एक और पराक्लेत देगा कि वह अनन्तकाल लों तुम्हारे संग रहे अर्थात् सत्य के आत्मा को । उस को संसार प्राप्त नहीं कर सकता क्योंकि वह उस को न देखता न जानता है पर तुम उस को

जानते हो क्योंकि वह तुम्हारे पास रहता है और तुम में होवेगा। मैं तुम को अनाथ न छोड़ूंगा मैं तुम्हारे पास आऊंगा। थोड़ी और बेर में संसार मुझ को फिर न देखेगा पर तुम मुझ को देखते रहोगे क्योंकि मैं जीता हूं तुम भी जीते रहोगे। उसदिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में हूं और तुम मुझ में हो और मैं तुम में हूं। जिस के पास मेरी आज्ञाएं हैं और जो उन्हें पालता है सोई मुझ से प्रेम रखता है और जो मुझ से प्रेम रखता है उस से मेरा पिता प्रेम रक्खेगा और मैं उस से प्रेम रक्खूंगा और अपने तईं उसपर प्रगट करूंगा। यहूदा ने (यहूदा इस्करय्योति ने नहीं) उस से कहा हे प्रभु क्या हुआ कि तू अपने तईं संसार पर नहीं पर हम हीं पर प्रगट किया चाहता है। येशू ने उत्तर देके उस से कहा यदि कोई मुझ से प्रेम रक्खे तो वह मेरे वचन को पालन करेगा और मेरा पिता उस से प्रेम रक्खेगा और हम उस के पास आवेंगे और उस के संग अपना बासा करेंगे। जो मुझ से प्रेम नहीं रखता सो मेरे वचनों को नहीं पालता और जो वचन तुम सुनते हो सो मेरा नहीं पर पिता का है जिस ने मुझ को भेजा। ये बातें मैं ने तुम्हारे संग रहते हुए तुम से कहीं हैं। परन्तु पराक्लेत जो पवित्रात्मा है जिस को पिता मेरे नाम में भेजेगा वही तुम को सब बातें सिखावेगा और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है उसे तुम को स्मरण करावेगा। शांति मैं तुम्हारे लिये छोड़ जाता हूं अपनी शांति मैं तुम्हें दे जाता हूं जैसे संसार देता है तैसे मैं तुम को नहीं देता। तुम्हारा हृदय व्याकुल न हो और न डरे। तुम ने सुना है कि मैं ने तुम से कहा मैं जाता हूं और फिर तुम्हारे पास आता हूं यदि तुम मुझ से प्रेम रखते तो तुम इस से आनन्दित होते कि मैं पिता के पास जाता हूं क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है। और अब मैं ने उस के होने से पहिले तुम से कहा है कि जब होवे तब तुम विश्वास करो। अब मैं तुम्हारे साथ और बहुत न बोलूंगा

क्योंकि संसार का अधिपति आता है और मुझ में उस का कुछ नहीं है। परन्तु यह इस लिये होता है कि संसार जाने कि मैं पिता से प्रेम रखता हूं और जैसे पिता ने मुझे आज्ञा दिई तैसे ही मैं करता हूं॥

पेन्तेकोष्ट के सोमवार

प्रार्थना

हे ईश्वर तू ने मानों इस समय अपने विश्वासियों पर अपने पवित्रात्मा की ज्योति भेजने से उन के मन को शिक्षा दिई हमें यह वर दे कि उसी आत्मा के द्वारा सब बातों में ठीक समझ रक्खें और सदा उस के पवित्र प्रबोध से आनन्द करते रहें हमारे त्राता ख्रीष्ट येशू के पुण्य के द्वारा जो तेरे संग उसी आत्मा की एकता में एक ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता है। आमेन्॥

पत्री की सन्ती। प्रेरितों। १०। ३४

पित्र ने मुंह खोल के कहा निश्चय मैं जान गया कि ईश्वर पक्षपाती नहीं पर सब जातियों में से जो उस से डरता और धर्म्म का कर्म्म करता है सो उस को ग्राह्य है। जो वचन उस ने यिस्राएल्वंशियों के पास भेजा जब येशू ख्रीष्ट के द्वारा जो सभों का प्रभु है मेल का सुसमाचार सुनाया अर्थात् जो बात उस बप्तिस्म के अनन्तर जो योहानान् ने प्रचार किया गालील से लेके समस्त यहूदा में फैली उस को तुम जानते हो अर्थात् येशू नासरी का वृत्तान्त कि क्योंकर ईश्वर ने उस को पवित्रात्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया और वह उपकार करता और जितने दुष्टात्मा से पीसे जाते थे सब को चंगा करता फिरा क्योंकि ईश्वर उस के संग था। और जो कुछ उस ने

पेन्तेकोष्टा के सोमवार

यहूदियों के देश और यरूशलेम् में किया उस सब के हम साक्षी हैं और उस को उन्हों ने काठ पर लटका के मार डाला। इसी को ईश्वर ने तीसरे दिन उठाया और साक्षात् दिखाया सब लोगों को तो नहीं पर उन साक्षियों को जो आगे ईश्वर से चुने गये थे अर्थात् हम को जिन्हों ने उस के मृतकों में से जी उठने के पीछे उस के संग खाया और पीया। और उस ने हमें आज्ञा दिई कि हम लोगों को प्रचार करें और साक्षी देवें कि जीवतों और मृतकों का न्यायी होने के लिये वही ईश्वर से ठहराया गया है। इसी के विषय में सब प्रवक्ता साक्षी देते हैं कि जो कोई उसपर विश्वास करता है सो उस के नाम के द्वारा पापमोचन पावेगा। पेत्र ये बातें बोल ही रहा था कि पवित्रात्मा उन सभों पर जो वचन को सुनते थे पड़ा। और जो परिच्छेदवाले विश्वासी पेत्र के संग आये थे सो चकित भये इस लिये कि पवित्रात्मा का दान अन्यजातियों पर भी उंडेला गया। क्योंकि वे उन को अनेक भाषाएं बोलते और ईश्वर की बड़ाई करते सुनते थे। तब पेत्र ने उत्तर देके कहा क्या कोई जल को रोक सकता है कि इन्हें जिन्हों ने हमारे समान पवित्रात्मा को पाया बप्तिस्म न मिले। और उस ने आज्ञा दिई कि वे येशू ख्रीष्ट के नाम में बप्तिस्म पावें। तब उन्हों ने उस से विनती किई कि कुछ दिन यहां रह॥

सुसमाचार। प० योहानान्। ३। १६।

ईश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दिया जिस्तें जो कोई उसपर विश्वास करे सो नष्ट न होवे पर अनन्तजीवन पावे। क्योंकि ईश्वर ने पुत्र को जगत में इस लिये नहीं भेजा कि जगत का विचार करे पर इस लिये कि जगत उस के द्वारा त्राण पावे। जो उसपर विश्वास करता है उस का विचार नहीं होता

पर जो विश्वास नहीं करता उस का विचार हो चुका है क्योंकि उस ने ईश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। और विचार का कारण यह है कि जगत में उंजियाला आया है और मनुष्यों ने उंजियाले से अधिक अंधियारे ही से प्रीति किई इस लिये कि उन के कर्म्म दुष्ट थे। क्योंकि जो कोई अनर्थ काम करता है सो उंजियाले से बैर रखता है और उंजियाले के पास नहीं आता न होवे कि उस के कर्म्म दोषी ठहराये जावें। पर जो सत्य के अनुसार कर्म्म करता है सो उंजियाले के पास आता है जिस्तें उस के कर्म्म प्रगट होवें कि वे ईश्वर में किये हुए हैं॥

पेन्तेकोष्टा के मंगलवार

प्रार्थना

हे ईश्वर तू ने मानों इस समय अपने विश्वासियों पर अपने पवित्रात्मा की ज्योति भेजने से उन के मन को शिक्षा दिई हमें यह वर दे कि उसी आत्मा के द्वारा सब बातों में ठीक समझ रक्खें और सदा उस के पवित्र प्रबोध से आनन्द करते रहें हमारे त्राता ख्रीष्ट येशू के पुण्य के द्वारा जो तेरे संग उसी आत्मा की एकता में एक ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता है। आमेन॥

पत्री की सन्ती। प्रेरितों। ८।१४।

जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम् में थे सुना कि शोमरोन् ने ईश्वर का वचन ग्रहण किया है तब उन्हों ने उन के पास पित्र और योहानान् को भेजा। वे वहां उतर गये और उन के लिये प्रार्थना किई कि वे पवित्रात्मा को पावें क्योंकि अब लों वह उन में से किसी पर

नहीं पड़ा था पर केवल उन्हों ने प्रभु येशू के नाम में बप्तिस्म पाया था। तब उन्हों ने उनपर अपने हाथ रक्खे और उन्हों ने पवित्रात्मा को पाया॥

सुसमाचार। प० योहानान्। १०। १।

मैं तुम से सत्य सत्य कहता हूं कि जो भेड़शाला में द्वार से होके प्रवेश नहीं करता पर किसी और मार्ग से चढ़जाता है सो चोर और डाकू है। पर जो द्वार से होके प्रवेश करता है सो भेड़ों का गड़ेरिया है। उस के लिये द्वारपाल खोलता है और भेड़ें उस की वाणी को सुनती हैं और वह अपनी निज भेड़ों को नाम ले ले के पुकारता और उन्हें बाहर ले जाता है। जब वह अपनो सब भेड़ों को बाहर लेजा चुकता है तब वह उन के आगे आगे चलता है और भेड़ें उस के पीछे पीछे जाती हैं क्योंकि वे उस की वाणी को पहिचानती हैं। पर वे पराये के पीछे नहीं जावेंगी वरन उस के पास से भागेंगी क्योंकि वे पराये की वाणी को नहीं पहिचानतीं। इस दृष्टान्त को येशू ने उन से कहा पर उन्हों ने नहीं समझा कि वह हम से क्या कहता है। सो येशू ने फिर उन से कहा मैं तुम से सत्य सत्य कहता हूं कि भेड़ों का द्वार मैं हूं। जितने मुझ से पहिले आये सब चोर और डाकू थे पर भेड़ों ने उन की न सुनी। द्वार मैं हूं मुझ से होके यदि कोई प्रवेश करे तो वह त्राण पावेगा और बाहर भीतर आया जाया करेगा और चराव पावेगा। चोर केवल इसी लिये आता है कि चुरावे और बध करे और नाश करे पर मैं इस लिये आया कि वे जीवन पावें और अधिक बढ़ती पावें॥

चय का इतवार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् और सनातन ईश्वर तू ने हम अपने दासों को

यह अनुग्रह दिया है कि सच्चे विश्वास के अंगीकार से सनातन त्रय की महिमा को मानें और ईश्वरीय प्रताप की शक्ति से एक की आराधना करें हमारी बिनती है कि तू हम को इसी विश्वास में स्थिर रख और सदा सारी हानि से बचा तू एक ही ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता है। आमेन् ॥

पत्री की सन्ती। प्रकटीकरण।४।१।

इन बातों के अनन्तर मैं ने दृष्टि किई और क्या देखा कि स्वर्ग में एक द्वार खुला है और जो वाणी मैं ने पहिले सुनी सो तुरही की सी थी जो मुझ से बोलती और यह कहती थी कि यहां चढ़ आ तो जो बातें इस के उपरान्त होनेहारी हैं उन को मैं तुझे दिखाऊंगा तुरन्त मैं आत्मा में आया और क्या देखा कि स्वर्ग में एक सिंहासन धरा है और सिंहासन पर कोई विराजमान है और जो विराजमान है सो देखने में सूर्य्यकान्तमणि और माणिक्य के समान है और सिंहासन् की चारों ओर एक मेघधनुष है जो देखने में हरिन्मणि के सरीखा है। और सिंहासन की चारों ओर चौबीस सिंहासन हैं और इन सिंहासनों के ऊपर चौबीस पुरनिये उजले वस्त्र पहिने बैठे हुए हैं और उन के सिरों पर सुनहले मुकुट हैं। और सिंहासन में से बिजलियां और शब्द और गरज निकलते हैं। और सिंहासन के आगे आग के सात दीपक जो ईश्वर के सात आत्मा हैं जल रहे हैं। और सिंहासन के साम्हने मानों कांच का एक समुद्र है जो स्फटिक के समान है। और सिंहासन के बीच में और सिंहासन की चारों ओर चार जीवधारी हैं जिन के आगे और पीछे नेत्र ही नेत्र हैं। और पहिला जीवधारी सिंह के समान है और दूसरा जीवधारी बछड़े के सरीखा है और तीसरे जीवधारी का मुख मनुष्य का सा है और चौथा जीव-

धारी उड़ते हुए उकाब् के ऐसा है। और इन चार जीवधारियों के छः छः पंख हैं और उन की चारों ओर और भीतरवार नेत्र ही नेत्र हैं और वे रात दिन विश्राम नहीं करते पर कहते जाते हैं कि पवित्र पवित्र पवित्र प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान् जो था और जो है और जो आनेहारा है। और जब जीवधारी उस को जो सिंहासन पर विराजमान है और युगानयुग जीता रहता है महिमा और आदर और धन्यवाद देवेंगे तब वे चौबीस पुरनिये उस के साम्हने जो सिंहा-सन पर बिराजमान है गिरेंगे और जो युगानयुग जीता रहता है उस को दण्डवत् करेंगे और यह कहके अपने मुकुट सिंहासन के साम्हने डालेंगे कि हे हमारे प्रभु और हमारे ईश्वर तू महिमा और आदर और सामर्थ्य पाने के योग्य है क्योंकि तू ने सब बस्तें सृजी और तेरी ही इच्छा के कारण से वे विद्यमान हुईं और सृजी गईं॥

सुसमाचार। प० योहानान्।३।१।

पारीशियों में से नीकदेम नामक एक मनुष्य था जो यहूदियों का अधिपति था उस ने रात को येशू के पास आके उस से कहा हे रब्बी हम जानते हैं कि तू ईश्वर की ओर से शिक्षक होके आया है क्योंकि जो आश्चर्य्य कर्म्म तू करता है उन को कोई यदि ईश्वर उस के साथ न हो तो नहीं कर सकता। येशू ने उत्तर देके उस से कहा मैं तुझ से सत्य सत्य कहता हूं कि यदि कोई नये सिरसे न जन्मे तो वह ईश्वर के राज्य को देख नहीं सकता। नीकदेम ने उस से कहा मनुष्य जब बूढ़ा हो गया क्योंकर जनम सकता है क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जनम सकता है। येशू ने उत्तर दिया मैं तुझ से सत्य सत्य कहता हूं कि यदि कोई जल और आत्मा से न जन्मे तो वह ईश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।

त्रय के उपरान्त पहला इतवार

जो शरीर से जन्मा है सो शरीर ही है और जो आत्मा से जन्मा है सो आत्मा है। आश्चर्य्य मत कर कि मैं ने तुझ से कहा कि तुम को नये सिर से जनमना अवश्य है। वायु जिधर चाहता है बहता है और तू उस का शब्द सुनता है पर नहीं जानता कि वह कहां से आता है और कहां को जाता है जो कोई आत्मा से जन्मा है सो वैसा ही है। नीकदेम ने उत्तर देके उस से कहा ये बातें क्योंकर हो सकती हैं। येशू ने उत्तर देके उस से कहा क्या तू यिस्राएल् का शिक्षक होके इन बातों को नहीं जानता। मैं तुझ से सत्य सत्य कहता हूं कि हम जो जानते हैं सोई बोलते हैं और जो हम ने देखा है उसी पर हम साक्षी देते हैं और तुम हमारी साक्षी को ग्रहण नहीं करते। यदि मैं ने तुम से पृथिवी पर की बातें कहीं और तुम विश्वास नहीं करते तो यदि मैं तुम से स्वर्ग में की बातें कहूं तो तुम क्योंकर विश्वास करोगे। और जो स्वर्ग से उतर आया अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है उस को छोड़ कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा। और जैसे मोशे ने बन में सर्प को ऊपर उठाया तैसे ही अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊपर उठाया जावे जिस्तें जो कोई उसपर विश्वास करे सो अनन्तजीवन पावे॥

त्रय के उपरान्त पहला इतवार

प्रार्थना

हे ईश्वर जो तुझ पर भरोसा रखते हैं तू उन सब का बल है दया कर के हमारी प्रार्थनाओं को ग्रहण कर और जब कि इस जीवन की दुर्बल अवस्था के कारण हम तेरे बिना कोई अच्छा काम नहीं कर सकते इस लिये अपने अनुग्रह से हमारी सहाय कर कि हम

मनसा वाचा कर्म्मणा तेरी आज्ञाओं को ऐसे पालें कि तू हम से प्रसन्न रहे हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन् ॥

पत्री । १ योहानान् । ४ । ७ ।

हे प्रियो हम एक दूसरे से प्रेम रक्खें क्योंकि प्रेम ईश्वर से है और जो कोई प्रेम रखता है सो ईश्वर से जनित हुआ और ईश्वर को जानता है। जो प्रेम नहीं रखता उस ने ईश्वर को नहीं जाना क्योंकि ईश्वर प्रेम है। इसी से ईश्वर का प्रेम हमारी ओर प्रगट भया कि ईश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है कि हम उस के द्वारा जीवें। प्रेम इस में नहीं है कि हम ने ईश्वर से प्रेम किया पर इसी में है कि उस ने हम से प्रेम किया और अपने पुत्र को हमारे पापों के निमित्त प्रायश्चित्त होने के लिये भेजा। हे प्रियो जब ईश्वर ने हम से ऐसा प्रेम किया तो हमें भी चाहिये कि एक दूसरे से प्रेम रक्खें। ईश्वर को तो किसी ने कभी नहीं देखा पर यदि हम एक दूसरे से प्रेम रक्खें तो ईश्वर हम में बसता है और उस का प्रेम हम में पूर्ण हो गया है। इसी से हम जानते हैं कि हम उस में बसते हैं और वह हम में बसता है कि उस ने अपने आत्मा में से हम को दिया है। और हम ने देखा है और साक्षी देते हैं कि पिता ने पुत्र को जगत का त्राता होने के लिये भेजा है। जो कोई अंगीकार करे कि येशू ईश्वर का पुत्र है ईश्वर उस में बसता और वह ईश्वर में बसता है। और जो प्रेम ईश्वर हमारी ओर करता है उस को हम ने जाना है और विश्वास किया है। ईश्वर प्रेम है और जो प्रेम में बसता है सो ईश्वर में बसता और ईश्वर उस में बसता है। इसी से प्रेम हमारे संग पूर्ण हो गया है जिस्तें हम न्याय के दिन में ढाढ़स रक्खें कि जैसा वह है तैसे ही हम भी

इस जगत में हैं। प्रेम में भय नहीं होता परन्तु पूर्ण प्रेम भय को निकाल देता है क्योंकि भय में दण्ड रहता है और जो भय करता है सो प्रेम में पूर्ण नहीं हो गया। हम प्रेम रखते हैं क्योंकि उस ने पहिले हम से प्रेम किया। यदि कोई कहे कि मैं ईश्वर से प्रेम रखता हूं और अपने भाई से बैर रक्खे तो वह झूठा है क्योंकि जो अपने भाई से जिस को उस ने देखा है प्रेम नहीं रखता सो ईश्वर से जिस को उस ने नहीं देखा क्योंकर प्रेम रख सकता है। और यही आज्ञा हम ने उस से पाई है कि जो कोई ईश्वर से प्रेम रखता है सो अपने भाई से भी प्रेम रक्खे ॥

सुसमाचार। प० लूका। १६। १६।

एक धनवान मनुष्य था जो प्रतिदिन बैंजनी वस्त्र और मलमल पहिनता और बड़ा सुख भोगता था। और एलाजार नामक एक भिखमंगा उस की देहरी पर डाला गया था जो घावों से भरा था और जो टुकड़े उस धनवान के भोजनमंच पर से गिरते थे उन से अपना पेट भरने की इच्छा रखता था वरन कुत्ते भी आ आके उस के घावों को चाटते थे। और ऐसा हुआ कि वह भिखमंगा मरा और दूतों ने उस को उठा के अब्राहाम् की गोद में रक्खा। और वह धनवान भी मरा और समाधि में रक्खा गया और पाताल में उस ने अति पीड़ित होके अपनी आंखें उठाईं और दूर से अब्राहाम् और उस की गोद में एलाजार को देखा। और उस ने पुकार के कहा हे पिता अब्राहाम् मुझ पर दया करके एलाजार को भेज कि वह अपनी अंगुली के सिरे को जल में डुबो के मेरी जीभ को ठंडा करे क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़फता हूं। पर अब्राहाम् ने कहा हे लड़के स्मरण कर कि तू ने अपने जीवनकाल में अपनी अच्छी वस्तें पाई थीं और

त्रय के उपरान्त दूसरा इतवार

उसी भांति से एलाजार ने बुरी वस्तें पाईं पर अब वह यहां शांति पाता और तू तड़फता है। और इन सब से अधिक हमारे और तुम्हारे बीच में एक बड़ा गड़हा सिद्ध किया गया है जिस्तें इधर से जो तुम्हारे पास पार जाने चाहते हैं सो जा न सकें और न उधर वाले हमारे पास पार आ सकें। पर उस ने कहा भला तो हे पिता मैं तुझ से विनती करता हूं कि तू उस को मेरे पिता के घर भेज क्योंकि मेरे पांच भाई हैं कि वह उन के आगे साक्षी देवे नहोंकि वे भी इस पीड़ा के स्थान में आवें। पर अब्राहाम् ने कहा उन के पास मोशे और प्रवक्ता हैं वे उन की सुनें। पर उस ने कहा नहीं हे पिता अब्राहाम् पर यदि कोई मृतकों में से उन के पास जावे तो वे पश्चाताप करेंगे। परन्तु उस ने उस से कहा जब वे मोशे और प्रवक्तागण की नहीं सुनते तो यदि कोई मृतकों में से जी उठे तौ भी वे नहीं मानेंगे॥

त्रय के उपरान्त दूसरा इतवार

प्रार्थना

हे प्रभु जिन को तू अपने अटल भय और प्रेम में प्रतिपालन करता है उन की सहाय और अगुवाई करनी तू कभी नहीं भूलता हम विनती करते हैं हम को अपने सुप्रबन्ध की शरण में रख और ऐसा कर कि हम निरन्तर तेरे पवित्र नाम का भय और प्रेम रक्खें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। १ योहानान्। ३। १३।

हे भाइयो यदि संसार तुम से बैर रक्खे तो आश्चर्य्य मत माना। हम इस से जानते हैं कि हम मृत्यु से निकल के जीवन में आ गये

हैं कि हम भाइयों से प्रेम रखते हैं। जो प्रेम नहीं रखता सो मृत्यु में बसता है। जो कोई अपने भाई से बैर रखता है सो मनुष्यघाती है और तुम जानते हो कि किसी मनुष्यघाती में अनन्तजीवन नहीं बसता। इसी से हम ने प्रेम को जान लिया है कि उस ने हमारे लिये अपना प्राण दिया और हमें चाहिये कि भाइयों के लिये अपने प्राण देवें। पर जिस के पास सांसारिक धन हो और वह अपने भाई को कष्ट में देखे और अपनी मया को उस से रोके तो ईश्वर का प्रेम क्योंकर उस में बसता है। हे मेरे बच्चो हम वचन से नहीं न जीभ से पर काम और सच्चाई से प्रेम रक्खें। इसी से हम जानेंगे कि हम सत्य के हैं और अपने मन का उस के साम्हने समाधान करेंगे। क्योंकि यदि हमारा मन हम को दोषी ठहरावे तो हम जानते हैं कि ईश्वर हमारे मन से बड़ा है और सब कुछ जानता है। हे प्रियो यदि हमारा मन हम को दोषी न ठहरावे तो हम ईश्वर के आगे ढाढ़स रखते हैं और जो कुछ हम मांगते हैं उस को उस से पाते हैं इस लिये कि हम उस की आज्ञाओं को पालते और जो काम उस को भावते हैं उन को करते हैं। और उस की आज्ञा यह है कि हम उस के पुत्र येशू खीष्ट के नाम पर विश्वास रक्खें और एक दूसरे से प्रेम रक्खें जैसा उस ने हम को आज्ञा दिई। और जो उस की आज्ञाओं को पालता है सो उस में बसता और वह उस में बसता है। और इसी से हम जानते हैं कि वह हम में बसता है अर्थात् उस आत्मा से जो उस ने हमें दिया है॥

सुसमाचार। प० लूका। १४। १६

किसी मनुष्य ने बड़ी ब्यारी करनी चाही और बहुतों को नेवता दिया और ब्यारी के समय अपने दास को नेवतहरियों से कहने के लिये

भेजा कि आओ अब सब कुछ सिद्ध भया। और वे एक मन होके क्षमा मांगने लगे। पहिले ने उस से कहा मैं ने खेत मोल लिया है और अवश्य है कि मैं जा के उस को देखूं मैं तुझ से विनती करता हूं कि मुझे क्षमा करो। और दूसरे ने कहा मैं ने पांच जोड़े बैल कीने हैं और उन्हें परखने जाता हूं मैं तुझ से विनती करता हूं मुझे क्षमा करो। एक और ने कहा मैं ने विवाह किया है और इस लिये नहीं आ सकता। और दास ने आके अपने प्रभु को इन बातों का समाचार दिया। तब घर के स्वामी ने क्रुद्ध होके अपने दास से कहा शीघ्र करके नगर की सड़कों और गलियों में जा और दरिद्रों और लूलों और अंधों और लंगड़ों को यहां भीतर ले आ। और दास ने कहा हे प्रभु तू ने जैसी आज्ञा दिई तैसा ही भया और अब भी समाई है। और स्वामी ने दास से कहा राजमार्गों में और बारियों के नीचे जा और लोगों के पीछे पड़ के उन्हें ले आ कि मेरा घर भर जावे। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जिन पुरुषों को नेवता दिया गया था उन में से एक भी मेरी ब्यारी न चखेगा॥

त्रय के उपरान्त तीसरा इतवार

प्रार्थना

हे प्रभु हम विनती करते हैं दया से हमारी सुन और यह वर दे कि हम जिन को तू ने प्रार्थना करने की बड़ी अभिलाषा दिई है तेरो सामर्थ्ययुक्त सहाय से सब जोखिमों और आपत्तियों में रक्षा और शान्ति पावें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। १ पेत्र। ५। ५।

तुम सब एक दूसरे की टहल करने के लिये नम्रता का पटुका

बांधो क्योंकि ईश्वर अभिमानियों का साम्हना करता पर नम्रों को अनुग्रह देता है। इस लिये ईश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे नम्र होओ जिस्तें वह समय पर तुम को उन्नत करे। और अपनी सारी चिन्ता उसीपर डालो क्योंकि उस को तुम्हारी चिन्ता रहती है। चौकस हो जाग उठो तुम्हारा विरोधी दुष्टात्मा गरजते हुए सिंह की नाईं ढूंढ़ता फिरता है कि किस को निगल जावे। विश्वास में स्थिर होके उस का साम्हना करो क्योंकि जानते हो कि जगत में जो तुम्हारे भाई हैं उन में उन्हीं दुःखों का भोग पूरा होता जाता है। परन्तु समस्त अनुग्रह का ईश्वर जिस ने तुम को खीष्ट में अपनी अनन्त महिमा के लिये बुलाया है जब तुम थोड़ी बेर लों दुःख भोग चुकोगे तब आप ही तुम को पूर्ण और स्थिर और बलवन्त करेगा। प्रभुता युगानयुग उसी की रहे। आमेन्॥

सुसमाचार। प० लूका। १५। १।

तब सब करग्राहक और पापी उस की सुनने के लिये उस के निकट आने लगे। और फरीशियों और शास्त्रियों ने कुड़कुड़ा के कहा यह पापियों को ग्रहण करता और उन के संग भोजन करता है। और उस ने उन से यह दृष्टान्त कहा कि तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है कि यदि उस के पास सौ भेड़ें होवें और वह उन में से एक को खोवे तो निन्नानवे को वन में छोड़ के जब लों खोई हुई को न पावे तब लों उस को ढूंढ़ता न रहे। और उस को पाके वह उसे अपने कांधों पर आनन्द करता हुआ रखता है और घर पर आके अपने मित्रों और पड़ोसियों को एकट्ठा बुला के उन से कहता है मेरे संग आनन्द करो क्योंकि मेरी जो भेड़ खो गई थी उस को मैं ने पाया है। मैं तुम से कहता हूं कि इसी प्रकार से स्वर्ग में निन्नानवे धर्म्मियों से जिन

को पश्चात्ताप का प्रयोजन नहीं एक पापी के विषय में जो पश्चात्ताप करे अधिक आनन्द होवेगा। अथवा कौन ऐसी स्त्री है कि यदि उस के पास दश अधेली होवें और वह एक अधेली खोवे तो वह दीया बार के घर में झाड़ू न देवे और जब लों उस को न पावे तब लों यत्न से न ढूंढ़ती रहे। और उस को पाके वह अपनी सखियों और पड़ोसिनों को एकट्ठा बुला के उन से कहती है मेरे संग आनन्द करो क्योंकि जो अधेली मैं ने खोई थी उस को मैं ने पाया है। मैं तुम से कहता हूं कि इसी भांति ईश्वर के दूतों के आगे एक पापी के विषय में जो पश्चात्ताप करे आनन्द होता है॥

त्रय के उपरान्त चौथा इतवार

प्रार्थना

हे ईश्वर जो तुझ पर भरोसा रखते हैं तू उन सब का रक्षक है तेरे बिना न कुछ दृढ़ है न कुछ पवित्र अपनी दया हम पर बढ़ा और तू हमारा शासनकर्त्ता और अगुवा रह कि हम अनित्य वस्तुन में से ऐसे पार हो जावें कि अन्त को नित्य बस्तें न खोवें हे स्वर्गीय पिता हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के निमित्त यह वर दे। आमेन्॥

पत्री। रोमियों। ८। १८।

मेरे विचार में इस वर्त्तमान काल के दुःख उस महिमा की अपेक्षा में जो हम पर प्रगट होनेहारी है कुछ हैं ही नहीं। क्योंकि सृष्टि की आकांक्षा ईश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोहरही है। क्योंकि सृष्टि व्यर्थता के अधीन किई गई अपनी इच्छा से तो नहीं पर अधीन करनेहारे के कारण से पर यह आशा है कि सृष्टि आप बिगाड़ के

त्रय के उपरान्त चौथा इतवार

दासत्व से निर्बन्ध होके ईश्वर के लड़कों की महिमा की निर्बन्धता प्राप्त करेगी । क्योंकि हम जानते हैं कि समस्त सृष्टि मिल के अब लों आह मारती और जनने की पीर में पड़ी है । और न केवल वह पर हम भी जिन को आत्मा का पहिला फल प्राप्त है आप अपने में आह मारते हैं और लेपालकपन अर्थात् देह के छुटकारे की बाट जोह रहे हैं ॥

सुसमाचार । प० लूका । ६ । ३६ ।

दयालु होओ जैसे तुम्हारा पिता दयालु है । और विचार मत करो तो तुम्हारा विचार न किया जावेगा और दोषी मत ठहराओ तो तुम दोषी ठहराये न जाओगे छोड़ दो तो तुम छोड़ दिये जाओगे देओ तो तुम को दिया जावेगा पूरा नपुआ दबा दबा के और हिला हिला के उमंडता हुआ लोग तुम्हारी गोद में भर देवेंगे । क्योंकि जिस माप से तुम मापते हो उसी से तुम्हारे लिये मापा जावेगा । और उस ने उन से एक दृष्टान्त भी कहा कि क्या अन्धा अन्धे को पथ दिखा सकता है क्या वे दोनों गड़हे में न गिरेंगे । शिष्य अपने गुरू से बड़ा नहीं होता पर सब कोई जब पूर्ण भया अपने गुरू के समान ही होवेगा । और तू क्यों उस तिनके को जो तेरे भाई के नेत्र में है देखता है और जो लट्ठा तेरे ही नेत्र में है उस का विचार नहीं करता । अथवा तू क्योंकर अपने भाई से कह सकता है कि अरे भाई ला मैं उस तिनके को जो तेरे नेत्र में है निकाल देऊं जब कि तू आप उस लट्ठे को जो तेरे नेत्र में है नहीं देखता । रे कपटी पहिले अपने नेत्र में से लट्ठे को निकाल दे और तब तू अच्छी रीति से देख के उस तिनके को जो तेरे भाई के नेत्र में है निकाल सकेगा ॥

त्रय के उपरान्त पांचवां इतवार

प्रार्थना

हे प्रभु हम विनती करते हैं यह वर दे कि इस संसार के प्रवाह का प्रवन्ध तेरे शासन से ऐसी शांति के साथ होवे कि तेरी एक्लेसिया पूर्ण भक्ति युक्त चैन से तेरी सेवा आनन्द के साथ करे। हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमिन् ॥

पत्री। १ पेत्र। ३। ८।

निदान तुम सब एकमत करुणामय भाइयों का सा प्रेम रखनेहारे मयाकरनेहारे नम्र स्वभाव होओ और न बुराई के बदले बुराई करो न निन्दा के बदले निन्दा वरन इस के उलटा आशीर्वाद दिया करो क्योंकि तुम इसी लिये बुलाये गये कि आशीर्वाद को भाग में पाओ। क्योंकि जो अपने प्राण को प्यार करने और अपने दिन सुख से विताने चाहे सो अपनी जीभ को बुराई से और अपने होंठ छल की बात कहने से रोके वह बुराई से मुंह मोड़े और भलाई करे मेल को ढूंढ़े और उसका पीछा करे। क्योंकि प्रभु के नेत्र धर्म्मियों पर और उस के कान उन की विनती पर खुले रहते हैं पर प्रभु का मुख बुराई करने-हारों के विरुद्ध है। और यदि तुम भलाई करने में उद्योगी होओ तो कौन तुम्हारी बुराई करेगा। परन्तु यदि तुम धर्म्म के कारण दुःख भी भोगो तो धन्य हो। और उन के डराने से मत डरो और न घबराओ पर अपने हृदयों में ख्रीष्ट ही को प्रभु जान के पवित्र करो॥

सुसमाचार। प० लूका। ५। १।

ऐसा हुआ कि जब भीड़ उसपर गिरी पड़ती और ईश्वर का वचन सुनती थी तब वह गीनेसार की झील के तीर पर खड़ा था। और

त्रय के उपरान्त छठवां इतवार

उस ने झील के तीर पर दो नावें लगी हुई देखीं पर मछवे उनपर से उतर के अपने जाल धो रहे थे। और उस ने उन में से एक नाव पर जो शिमोन् की थी चढ़ के उस से बिनती किई कि तीर से थोड़ी दूर हटा। और वह बैठ के नाव पर से भीड़ को सिखाने लगा। और जब उस ने कहना समाप्त किया तब उस ने शिमोन् से कहा गहिरे जल में ले चल और अपने जाल मछली बझाने को डालो। और शिमोन् ने उत्तर देके कहा हे स्वामी हमने रात भर परिश्रम किया पर कुछ नहीं पाया तौभी तेरे कहने से मैं जालों को डालूंगा। और जब उन्हों ने ऐसा किया तब बहुत सी मछलियां बझ आईं और उन के जाल फटने लगे। और उन्हों ने अपने साझियों को जो दूसरी नाव में थे सैन किया कि वे आके उन की सहाय करें। और वे आये और दोनों नावों को भर दिया यहां लों कि वे डूबने लगीं। जब शिमोन् पेत्र ने यह देखा तब उस ने येशू के घुटनों पर गिरके कहा हे प्रभु मेरे पास से जा क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूं। क्योंकि वह और जितने उस के साथ थे सब इस से कि उन्हों ने इतनी मछलियां बझाई थीं चकित भये और उसी प्रकार से जब्दी के पुत्र याकोब् और योहानान् भी जो शिमोन् के साथी थे चकित भये। तब येशू ने शिमोन् से कहा मत डर अब से तू मनुष्यों को बझाया करेगा। और उन्हों ने अपनी नावें तीर पर लगाईं और सब कुछ छोड़ के उस के पीछे हो लिये॥

त्रय के उपरान्त छठवां इतवार

प्रार्थना

हे ईश्वर जो तुझ से प्रेम रखते हैं तू ने उन के लिये ऐसे उत्तम पदार्थ सिद्ध कर रक्खे हैं जो मनुष्य की समझ से परे हैं हमारे मन में अपना ऐसा प्रेम भर दे कि हम सब वस्तुन से अधिक तुझ से

त्रय के उपरान्त छठवां इतवार

प्रेम रख कर तेरी प्रतिज्ञाओं को जो हमारी सारी इच्छाओं से बढ़कर हैं प्राप्त करें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

पत्री । रोमियों । ६ । ३ ।

क्या तुम नहीं जानते कि हम सभों ने जिन्हों ने खीष्ट येशू में बप्तिस्म पाया उस की मृत्यु ही में बप्तिस्म पाया । सो मृत्यु में बप्तिस्म पाने के द्वारा हम उस के संग समाधि में रक्खे गये जिस्तें जैसे खीष्ट पिता की महिमा के द्वारा मृतकों में से उठाया गया तैसे ही हम भी जीवन की नवीनता में चलें । क्योंकि जब कि हम उस की मृत्यु की समानता से उस के संग जोड़े गये तो हम उस के पुनरुत्थान की समानता से भी जोड़े जावेंगे । क्योंकि जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्य उस के संग क्रूसपर चढ़ाया गया जिस्तें पाप की देह का लोप किया जावे इस लिये कि हम आगे पाप के दास न रहें । क्योंकि जो मर गया सो पाप से निर्दोष ठहर चुका है । पर यदि हम खीष्ट के संग मरें तो हमें विश्वास है कि उस के संग जीवेंगे भी क्योंकि यह जानते हैं कि खीष्ट जो मृतकों में से उठा सो फिर नहीं मरने का मृत्यु फिर उसपर प्रभुता नहीं रखती । क्योंकि वह जो मरा सो सदा के लिये एक बार पाप की अपेक्षा में मरा पर वह जो जीता है सो ईश्वर की अपेक्षा में जीता है । इसी रीति से तुम भी अपने को पाप की अपेक्षा में तो मृतक पर खीष्ट येशू में ईश्वर की अपेक्षा में जीवते समझो ॥

सुसमाचार । प० मत्तय । ५ । २० ।

येशू ने अपने शिष्यों से कहा कि यदि तुम्हारा धर्म्म शास्त्रियों और परीशियों के धर्म्म से अधिक न होवे तो तुम स्वर्ग के राज्य में कदापि प्रवेश करने न पाओगे । तुम ने सुना है कि प्राचीनों से

कहा गया कि तू हत्या न करना और जो कोई हत्या करे सो विचारस्थान के दण्ड के योग्य होगा । पर मैं तुम से कहता हूं कि जो कोई अपने भाई से निष्कारण क्रोध करे सो विचारस्थान के दण्ड के योग्य होगा और जो अपने भाई से कहे रे राका सो न्यायसभा के दण्ड के योग्य होगा और जो कहे रे मूढ़ सो नरक की अग्नि की योग्य होगा । सो यदि तू अपनी भेंट वेदीपर ले आवे और वहां तुझे स्मरण होवे कि मैं ने अपने भाई का कुछ अपराध किया है तो अपनी भेंट को वहीं वेदी के साम्हने छोड़ और जा के पहिले अपने भाई से मिलाप कर और तब आके अपनी भेंट चढ़ा । अपने विरोधी से शीघ्र करके जब लों तू उस के संग मार्ग हो में है मिलाप कर न होवे कि विरोधी तुझे न्यायी को सौंपें और न्यायी तुझे प्यादे को सौंपें और तू बन्दीगृह में डाला जावे । मैं तुझ से सत्य कहता हूं कि जब लों तू दमड़ी दमड़ी न भर चुके तब लों वहां से कदापि न छूटेगा ॥

त्रय के उपरान्त सातवां इतवार

प्रार्थना

हे सब शक्तियों के प्रभु तू सब उत्तम पदार्थों का कर्ता और दाता है अपने नाम का प्रेम हमारे मन में भर दे हमारे हृदय में सच्ची भक्ति बढ़ा सब सद्गुणों से हमारा प्रतिपालन कर और अपनी बड़ी दया से हम को उन्हीं में स्थिर रख हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

पत्री । रोमियों । ६ । १६ ।

मैं तुम्हारे शरीर की निर्बलता के कारण से मनुष्यों की रीति पर बोलता हूं कि जैसे तुम ने अपने अंगों को अधर्म्म करने के लिये

अशुद्धता और अधर्म्म के हाथ दास करके सौंपा था तैसे ही अब अपने अंगों को पवित्र होने के लिये धर्म्म के हाथ दास करके सौंपो। क्योंकि जब तुम पाप के दास थे तब धर्म्म की अपेक्षा में निर्बन्ध थे। तो तुम उस समय उन बातों से क्या फल पाते थे। उन से तो तुम अब लज्जित हो क्योंकि उन का परिणाम मृत्यु ही है पर अब पाप से निर्बन्ध और ईश्वर के दास होके तुम ऐसा अपना फल पाते हो जिस से पवित्रता होती है और इस का परिणाम अनन्तजीवन है। क्योंकि पाप का वेतन तो मृत्यु है पर ईश्वर का दान हमारे प्रभु येशू खीष्ट में अनन्तजीवन है॥

सुसमाचार। प० मार्क। ८।१।

उन दिनों में जब बड़ी भीड़ फिर हुई थी और उन के पास कुछ खाने को न था तब येशू ने अपने शिष्यों को बुला के उन से कहा मुझ को भीड़ पर मया आती है क्योंकि वे अब तीन दिन से मेरे पास हैं और उन के पास कुछ खाने को नहीं और यदि मैं उन को भूखा घर भेजूं तो वे मार्ग में मूर्छित होवेंगे क्योंकि उन में से कितने दूर से भी आये हैं। और उस के शिष्यों ने उस को उत्तर दिया कहां से कोई इन को यहां बन में रोटी से तृप्त कर सकेगा। और उस ने उन से पूछा कि तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं और उन्हों ने कहा सात। और उस ने भीड़ को भूमि पर बैठने की आज्ञा दिई और सात रोटियों को ले के धन्यवाद कर के तोड़ा और अपने शिष्यों को देता गया कि वे उन को परोसते जावें और उन्हों ने उन को परोसा। और उन के पास थोड़ी छोटी छोटी मछलियां भी थीं सो उस ने उन को भी आशीर्वाद देके उन्हें परोसने की आज्ञा दिई। और उन्हों ने खाया और तृप्त भये और जो टुकड़े बच रहे थे उन से उन्हों ने सात टोक-

रियां भरी उठाईं। और वे कोई चार सहस्र थे और उस ने उन को बिदा किया॥

त्रय के उपरान्त आठवां इतवार

प्रार्थना

हे ईश्वर तेरे अटल प्रबन्ध से स्वर्ग और पृथ्वी की सारी बातों की व्यवस्था होती है हम नम्रता से विनती करते हैं सब हानिकारक बातें हम से दूर कर और जो बातें हमारे लाभ की हैं सो हमें दे हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्रो। रोमियों।८।१२।

हे भाइयो हम ऋणी हैं पर शरीर के नहीं कि शरीर के अनुसार जीवन बितावें क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार जीवन बिताओ तो तुम को मरना ही होगा पर यदि तुम आत्मा की शक्ति से देह की क्रियाओं को मृतक करो तो तुम जीओगे। क्योंकि जितने ईश्वर के आत्मा के चलाये चलते हैं सोई ईश्वर के पुत्र हैं। क्योंकि तुम ने फिर डरने के लिये दासत्व का आत्मा नहीं पाया पर तुम ने लेपालकपन ही का आत्मा पाया है जिस में होके हम पुकारते हैं अब्बा हे पिता। आत्मा आप हमारे आत्मा के संग साक्षी देता है कि हम ईश्वर के लड़के हैं और जब कि हम लड़के हैं तो दायाद भी हैं ईश्वर के दायाद और ख्रीष्ट के संगी दायाद पर यह तब ही है जब हम उस के संग दुःख भोगते हैं जिस्तें हम उस के संग महिमा भी पावें॥

सुसमाचार। प॰ मत्तय।७।१५।

झूठे प्रवक्ताओं से चौकस रहो जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास

आते हैं पर अन्तर में फाड़नेहारे हुण्डार हैं। तुम उन के फलों ही से उन को पहिचानोगे। क्या लोग कटीलों से अंगूर अथवा ऊंटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं। इसी प्रकार से सब अच्छे पेड़ अच्छे फल फलते हैं। पर निकम्मा पेड़ बुरे फल फलता है। अच्छा पेड़ बुरे फल नहीं फल सकता और न निकम्मा पेड़ अच्छे फल फल सकता है। जो पेड़ अच्छा फल नहीं फलता सो काटा और आग में झोंका जाता है। सो तुम उन को उन के फलों ही से पहिचानोगे। जितने मुझे हे प्रभु हे प्रभु कहते हैं सो सब स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेंगे परन्तु वही जो मेरे पिता की जो स्वर्ग में है इच्छा पर चलता है॥

चय के उपरान्त नववां इतवार

प्रार्थना

हे प्रभु हम बिनती करते हैं हमें ऐसा मन दे जिस से हम जो कुछ ठीक है सोई सदा सोचें और करें कि हम जो तेरे बिना कोई अच्छा काम नहीं कर सकते तुझ से ऐसी शक्ति पावें कि तेरी इच्छा के अनुसार चलें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। १ कोरिन्थियों। १०। १।

हे भाइयो मैं नहीं चाहता कि तुम इस बात से अनजान रहो कि हमारे पुरखा सब तो मेघ के तले थे और सब तो समुद्र में से गये और सभों ने तो मेघ में और समुद्र में मोशे का बप्तिस्म लिया और सभों ने तो एक ही आत्मिक भोजन खाया और सभों ने तो एक ही आत्मिक पीने की वस्तु पीई क्योंकि वे एक आत्मिक चटान से जो उन के पीछे पीछे जाती थी पीते थे और वह चटान ख्रीष्ट ही था।

त्रय के उपरान्त नववां इतवार

परन्तु उन में से अधिक लोगों से ईश्वर प्रसन्न न हुआ वरन वे बन में मारे पड़े। परन्तु ये बातें हमारे लिये उदाहरण हुईं जिस्तें जैसे उन्हों ने बुरी वस्तुन का लालच किया तैसे हम न करें। और न मूर्त्तिपूजक हो जाओ जैसे उन में से कितने हुए जैसे लिखा है कि लोग खाने पीने को बैठ गये फिर खेलने को उठे। और न हम बेश्यागमन करें जैसे उन में से कितनों ने किया और एक दिन में तेईस सहस्र मारे पड़े। और न प्रभु की परीक्षा करें जैसे उन में से कितनों ने किई और सांपों से नाश किये गये। और न कुड़कुड़ाओ जैसे उन में से कितने कुड़कुड़ाये और नाशक से नाश किये गये। और ये बातें उदाहरण की रीति से उनपर बीतीं और वे हम को चिताने के लिये जिन पर युगों का अन्त आ पहुंचा है लिखी गईं। इस लिये जो समझता है कि मैं खड़ा हूं सो चौकस रहे कि गिर न पड़े। तुम ऐसी किसी परीक्षा में नहीं पड़े जो मनुष्य के सहने से बाहर हो और ईश्वर विश्वस्त है कि वह तुम को तुम्हारे सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में पड़ने न देगा परन्तु परीक्षा के साथ उस का एक निकास भी करेगा जिस्तें तुम उस को सह सको॥

सुसमाचार। प० लूका। १६। १।

येशु ने अपने शिष्यों से कहा एक धनवान मनुष्य था जिस का एक भण्डारी था और उसपर उस के पास यह दोष लगाया गया कि वह तेरी संपति को उड़ाता है। और उस ने उस को बुला के उस से कहा यह क्या है जो मैं तेरे विषय में सुनता हूं अपने भण्डारीपन का लेखा दे क्योंकि तू आगे को भण्डारी नहीं रह सकता। तब भण्डारी ने अपने मन में कहा मैं क्या करूं क्योंकि मेरा स्वामी भण्डारीपन को मुझ से ले लेता है मुझे खनने की शक्ति नहीं और भीख मांगने से लाज आती है। मैं जान गया कि क्या करूंगा जिस्तें जब मैं भण्डारी-

पन से छूटूं तब लोग मुझे अपने घरों में ग्रहण करें। सो उस ने अपने स्वामी के ऋणियों को एक एक करके बुलाया और पहिले से कहा तू मेरे स्वामी का कितना धारता है। उस ने कहा सौ बत् तेल। और उस ने उस से कहा अपनी टीप ले और शीघ्र बैठ के पचास लिख। तब उस ने दूसरे से कहा और तू कितना धारता है। उस ने कहा सौ कोर गोहूं। उस ने उस से कहा अपनी टीप ले और अस्सी लिख। और स्वामी ने उस अधर्म्मी भण्डारी को सराहा इस लिये कि उस ने चतुराई से काम किया क्योंकि इस युग के पुत्र अपने निज समय के विषय में उंजियाले के पुत्रों से अधिक चतुर होते हैं। और मैं तुम से कहता हूं कि अधर्म्म के मामोना से अपने लिये मित्र बनाओ जिस्तें जब वह चुक जावे तब वे तुम को अक्षय तंबुओं में ग्रहण करें॥

चय के उपरान्त दसवां इतवार

प्रार्थना

हे प्रभु तेरे दयामय कान तेरे नम्र दासों की प्रार्थनाओं की ओर खुले रहें और जिस्तें वे अपना मांगा वर पावें ऐसा कर कि जो बातें तुझे भावें सोई मांगा करें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमिन्॥

पत्री। १ कोरिन्थियों। १२। १

हे भाइयो मैं नहीं चाहता कि तुम आत्मिक दानों के विषय में अनजान रहो। तुम जानते हो कि जब तुम अन्यजाति थे तब तुम उन गूंगी मूर्त्तियों की ओर जैसे जैसे चलाये जाते थे तैसे तैसे भटकते थे। इस लिये मैं तुम को जताता हूं कि कोई ईश्वर के आत्मा में होके बोलता हुआ नहीं कहता कि येशू स्रापित है और न कोई

त्रय के उपरान्त दसवां इतवार

पवित्रात्मा में होके बोले बिना कह सकता है कि येशू प्रभु है। पर दान तो भिन्न भिन्न हैं परन्तु आत्मा एक ही। औ परिचर्य्याएं भिन्न भिन्न हैं परन्तु प्रभु एक ही है। और कार्य्यकारिताएं भिन्न भिन्न हैं परन्तु एक ही ईश्वर है जो सभों में सब कार्य्य करता है। पर आत्मा का प्रकटीकरण प्रत्येक को लाभ के लिये दिया जाता है। क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि का वचन दिया जाता है और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान का वचन एक और को उसी आत्मा से विश्वास किसी और को उसी एक आत्मा से चंगा करने के दान फिर किसी को आश्चर्य्य कर्म्मों की कार्य्यकारिता किसी को प्रवचन किसी को आत्माओं की पहिचान किसी को नाना भांति की भाषाएं किसी को भाषाओं का उल्था करना दिया जाता है। परन्तु इन सब को वही एक आत्मा करता है और प्रत्येक को जैसा चाहता है तैसा ही बांट देता है॥

सुसमाचार। प० लूका। १९। ४१।

और जब वह निकट आया तब नगर को देख के उसपर रोया और कहा हाय कि तू वरन तूही आज के दिन अपनी शान्ति की बातें जानती पर अब तो वे तेरी आंखों से गुप्त भईं। क्योंकि तुझ पर वे दिन आवेंगे कि तेरे शत्रु तेरी चारों ओर छावनी करेंगे और तुझे घेर लेवेंगे और चारों ओर से तुझे बन्द कर रक्खेंगे और तुझ को और तेरे भीतर जो तेरे लड़के हैं उन को भूमि पर पटक देवेंगे और तुझ में पत्थर पर पत्थर न छोड़ेंगे इस लिये कि तू ने उस दिन को जिस में तुझ पर कृपादृष्टि हुई नहीं पहिचाना। और मन्दिर में प्रवेश करके वह बेचनेहारों को निकालने लगा और उन से कहा लिखा है कि मेरा घर प्रार्थना का घर होवेगा पर तुम ने उस को डाकुओं का खोह बनाया। और वह प्रतिदिन मन्दिर में शिक्षा देता रहा॥

त्रय के उपरान्त ग्यारहवां इतवार

प्रार्थना

हे ईश्वर तू अपनी असीम शक्ति को विशेष करके दया और करुणा करने में प्रगट करता है दया करके हमें अपना अनुग्रह ऐसे परिमाण से दे कि हम तेरी आज्ञाओं के पथ पर दौड़ के तेरे अनुग्रह की प्रतिज्ञाओं को प्राप्त करें और तेरे स्वर्गीय धन के भागी हो जावें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

पत्री । १ कोरिन्थियो ।१५।१।

हे भाइयो मैं तुम को वही सुसमाचार जनाता हूं जो मैं ने तुम को सुनाया था जिस को तुम ने ग्रहण भी किया जिस में तुम स्थिर भी हो जिस के द्वारा तुम त्राण भी पाते हो । हां यदि तुम स्मरण रखते हो कि किन शब्दों से मैं ने उस को तुम्हें सुनाया और यदि तुम ने व्यर्थ विश्वास नहीं किया । तब तो ऐसा होगा क्योंकि मैं ने प्रथम में तुम को वही बात सौंपी जो मैं ने पाई थी कि खीष्ट शास्त्र के अनुसार हमारे पापों के निमित्त मरा और वह समाधि में रक्खा गया और शास्त्र के अनुसार वह तीसरे दिन उठाया गया और उस ने कैफा को दर्शन दिया तब बारह प्रेरितों को फिर उस ने एक बार पांच सौ से अधिक भाइयों को दर्शन दिया जिन में से अधिक लोग अब लों हैं पर कितने सो गये । इस के अनन्तर उस ने याकोब् को दर्शन दिया तब सब प्रेरितों को और सब के पीछे उस ने मुझ को भी मानो असमय के जने हुए को दर्शन दिया । क्योंकि मैं सब प्रेरितों में से छोटा हूं और प्रेरित कहावने के योग्य नहीं हूं इस लिये कि मैं ने ईश्वर की एक्लेसिया को सताया था । पर ईश्वर के अनुग्रह से मैं जो कुछ हूं सो हूं और उस का अनुग्रह जो मुझ पर भया व्यर्थ नहीं भया [illegible]

त्रय के उपरान्त बारहवां इतवार

मैं ने उन सब से अधिक परिश्रम किया तौभी मैं ने नहीं पर ईश्वर के अनुग्रह ही ने जो मेरे संग था परिश्रम किया। सो चाहे मैं हूं चाहे वे होवें हम इसी रीति से प्रचार करते हैं और तुम ने इस रीति से विश्वास किया था॥

सुसमाचार। प० लूका। १८। ९।

येशू ने कितनों से जो अपने पर भरोसा रखते थे कि हम धर्म्मी हैं अरु और सभों को तुच्छ जानते थे यह दृष्टान्त कहा कि दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने को चढ़ गये एक पारीशी था और दूसरा कर-ग्राहक। पारीशी खड़ा होके अपने मन में यह प्रार्थना करने लगा कि हे ईश्वर मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि मैं और सब मनुष्यों के समान नहीं हूं अर्थात् लुटेरा अन्यायी व्यभिचारी और न इस करग्राहक के समान हूं मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं मैं अपनी सारी सम्पति का दसवां अंश देता हूं। पर करग्राहक ने दूर खड़े होके अपनी आंखों को भी स्वर्ग की ओर उठाने न चाहा पर यह कहके अपनी छाती पीटने लगा कि हे ईश्वर मुझ पापी पर दया कर। मैं तुम से कहता हूं कि पहिले जन से अधिक यही धर्म्मी ठहर के अपने घर को उतर गया क्योंकि जो कोई अपने को ऊंचा करता है सो नीचा किया जावेगा पर जो अपने तईं नीचा करता है सो ऊंचा किया जावेगा॥

त्रय के उपरान्त बारहवां इतवार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् और सनातन ईश्वर जितना हम प्रार्थना करने को सिद्ध होते हैं उस से अधिक तू सुनने को सिद्ध रहता है और

हमारी इच्छा और योग्यता दोनों से अधिक हम को दिया करता है अपनी दया बहुतायत से हम पर उंडेल और जिन बातों से हमारा अन्तःकरण डरता है उन को क्षमा कर और वे अच्छे पदार्थ हमें दे जिन के मांगने के हम योग्य नहीं पर केवल तेरे पुत्र अपने प्रभु येशू खीष्ट के पुण्य और मध्यस्थता के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। २ कोरिन्थियों। ३। ४।

हम खीष्ट के द्वारा ईश्वर के साम्हने ऐसा ही भरोसा रखते हैं यह नहीं कि हम आप से आप इस योग्य हैं कि किसी बात को ऐसा समझें कि वह हमारी ही ओर से है परन्तु हमारी योग्यता ईश्वर ही से है। उस ने हम को नई बाचा के परिचारक होने के योग्य किया है अक्षर के नहीं पर आत्मा के क्योंकि अक्षर तो मार डालता है पर आत्मा जिलाता है पर जब कि मृत्यु की वह परिचर्य्या जो अक्षरों में थी और पत्थरों पर खोदी गई महिमा के साथ भई यहां लों कि यिस्राएल्वंशी मोशे के मुखपर उस मुख की महिमा के कारण से यद्यपि वह महिमा टलनेहारी थी टकटकी बांध के नहीं देख सके तो आत्मा की परिचर्य्या की महिमा कितनी अधिक न होगी। क्योंकि जब दण्ड की आज्ञा की परिचर्य्या महिमायुक्त हुई तो बहुत अधिक धर्म्म की परिचर्य्या अत्यन्त महिमायुक्त होवेगी॥

सुसमाचार। प० मार्क। ७। ३१।

येशू सोर के सिवाने से निकला और सीदोन् से होके देकापोलि के सिवानों के बीच में से गालील के समुद्र के पास आया। और लोग उस के पास एक बहिरे और हकलहे जन को ले आये और उस से

बिनती किई कि अपना हाथ इस पर रख। और उस ने उस को भीड़ में से अलग ले जाके अपनी अंगुलियां उस के कानों में डालीं और थूक के उस की जीभ छूई और स्वर्ग की ओर दृष्टि करके आह मारी और उस से कहा एप्फतह अर्थात् खुल जा। और उस के कान खुल गये और उस की जीभ का बन्धन टूटा और वह ठीक बोलने लगा। और उस ने उन को आज्ञा दिई कि किसी से न कहें पर जितना वह उन को बरजता रहा उतना वे अधिक प्रचारते रहे और लोग अत्यन्त चकित होके कहने लगे उसने तो सब कुछ अच्छा किया है वह बहिरों को सुनने और गूंगों को बोलने की शक्ति देता है॥

त्रय के उपरान्त तेरहवां इतवार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् और दयालु ईश्वर तेरे विश्वासी लोग जो तेरी सच्ची और सराहने योग्य सेवा करते हैं सो केवल तेरा ही दान है हम बिनती करते हैं कि तू यह वर दे कि हम इस जीवन में तेरी सेवा ऐसी विश्वस्तता से करें कि अंत को तेरी स्वर्गीय प्रतिज्ञाओं को न गंवावें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के पुण्य के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। गलातियों। ३। १६।

प्रतिज्ञाएं तो अब्राहाम् और उस के वंश ही से किई गईं। वह नहीं कहता कि वंशों से मानो बहुतों से पर यह कि और तेरे वंश से अर्थात् एक ही से जो खीष्ट है। और मैं यह कहता हूं कि जो बाचा ईश्वर आगे दृढ़ कर चुका था उस को वह व्यवस्था जो चार सौ तीस बरस पीछे हुई ऐसा अदृढ़ नहीं करती कि प्रतिज्ञा लोप

होवे। क्योंकि यदि अधिकार व्यवस्था से मिलता है तो फिर प्रतिज्ञा से नहीं परन्तु अब्राहाम् को ईश्वर ने उसे प्रतिज्ञा ही के द्वारा दिया है। तो फिर व्यवस्था किस काम की। वह अपराधों के कारण से उस समय के लिये प्रतिज्ञा पर बढ़ाई गई जबलों वह वंश जिस से वह प्रतिज्ञा किई गई न आवे और वह दूतों के द्वारा मध्यस्थ के हाथ से स्थापित किई गई। और मध्यस्थ तो एक का नहीं होता पर ईश्वर एक हो है। तो क्या व्यवस्था ईश्वर की प्रतिज्ञाओं के विरुद्ध है ऐसा न होवे। क्योंकि यदि ऐसी व्यवस्था दिई जाती जो जिला सकती तो निश्चय धर्म्म व्यवस्था ही से होता। परन्तु शास्त्र ने सब कुछ पाप के तले बन्द कर रक्खा जिस्तें जो प्रतिज्ञा येशू ख्रीष्ट पर विश्वास करने हारों के लिये है सो विश्वासियों को दिई जावे॥

सुसमाचार। प० लूका। १०। २३।

धन्य हैं वे नेत्र जो उन बातों को देखते हैं जिन को तुम देखते हो क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि बहुतेरे प्रवक्ताओं और राजाओं ने इन बातों को जो तुम देखते हो देखने चाहा पर न देख सके और जो बातें तुम सुनते हो उन को सुनने चाहा पर न सुन सके। और देखो एक धर्म्मशास्त्री उठा और उस की परीक्षा करने की इच्छा से कहा हे गुरू मैं क्या करके अनन्तजीवन का अधिकारी होऊंगा। और उस ने उस से कहा व्यवस्था में क्या लिखा है तू कैसे पढ़ता है। उस ने उत्तर देके कहा यह कि तू प्रभु अपने ईश्वर से अपने सारे हृदय और अपने सारे जीव और अपने सारी शक्ति और अपनी सारी समझ से प्रेम रखना और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना। उस ने उस से कहा तूने ठीक उत्तर दिया यही कर तो तू जीवेगा। पर उस ने अपने को धर्म्मी ठहराने की इच्छा से येशू से कहा भला

त्रय के उपरान्त चौदहवां इतवार

मेरा पड़ोसी कौन है। येशू ने उत्तर देके कहा एक मनुष्य यरूशलेम् से यरीहो को उतर जाता था कि डाकुओं में पड़ गया। उन्होंने उस के कपड़े उतारे और उस को बहुत मारा और अधमुआ छोड़ गये। और संयोग से कोई याजक उसी मार्ग से उतरता था सो उस को देख के साम्हने से निकल गया। और उसी प्रकार से एक लेवी भी जब उस स्थान पर आया तब उस को देख के साम्हने से निकल गया। पर एक शोमरोनी पथिक उस के पास आया और उसे देख के छोह किया और उस के पास जाके उस के घावों पर तेल और दाखमधु ढाल के उन्हें बांधा और उस को अपने पशू पर बैठा के एक टिका-श्रय में ले गया और उस की सेवा किई। बिहान को उसने दो अधेली निकाल के भठिहारे को दिईं और कहा उस की सेवा कर और इस से अधिक जो कुछ तू उठावे सो मैं लौट के तुझे भर देऊंगा। इन तीनों में से तेरी समझ में कौन उस का जो डाकुओं में पड़गया पड़ोसी ठहरा उसने कहा वही जिस ने उसपर दया किई। और येशू ने उस से कहा जा तू भी वैसा ही कर॥

त्रय के उपरान्त चौदहवां इतवार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् और सनातन ईश्वर हम में विश्वास आशा और प्रेम की वृद्धि कर और जिस्तें जिस की तू प्रतिज्ञा करता है उसे हम प्राप्त करें ऐसा कर कि जिस की तू आज्ञा देता है उस से हम प्रीति रक्खें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। गलतियों। ५। १६।

परन्तु मैं कहता हूं आत्मा की शक्ति से चलो तो तुम शरीर की

अभिलाषा को कदापि पूरा न करोगे। क्योंकि शरीर आत्मा के विरुद्ध अभिलाषा करता है और आत्मा शरीर के विरुद्ध क्योंकि ये एक दूसरे के विपरीत हैं इस लिये कि तुम जो करने चाहो सो न कर सको। परंतु यदि तुम आत्मा के चलाये चलते हो तो तुम व्यवस्था के वश में नहीं हो। और शरीर के कर्म्म तो प्रगट हैं अर्थात् वेश्यागमन अशुद्धता कामातुरता मूर्त्तिपूजा अभिचार बैर झगड़ा ज्वलन क्रोध पक्षपात फूट पाषण्ड डाह मतवालापन हंसी ठट्ठा और जो कुछ इन के समान है। इन के विषय में मैं तुम को आगे से कहता हूं जैसे कह भी चुका हूं कि जो ऐसे काम करते हैं सो ईश्वर के राज्य के अधिकारी न होवेंगे। पर आत्मा का फल प्रेम आनन्द शान्ति धीरज कृपालुता भलाई विश्वस्तता सौम्यस्वभावता संयम है ऐसी बातों के विरुद्ध व्यवस्था है ही नहीं। और जो ख्रीष्ट येशू के हैं सो शरीर को उस की कामनाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा चुके हैं॥

सुसमाचार। प० लूका।१७।११।

और ऐसा हुआ कि जब येशू यरूशलेम् को जाता था तब शोमरोन् और गालील् के मध्य में से होके गया। और जब वह किसी गांव में प्रवेश करता था तब दस पुरुष जो कोढ़ी थे दूर खड़े हुए उस को मिले और उन्हों ने चिल्ला के कहा हे येशू स्वामी हम पर दया कर। और उस ने उन को देख के उन से कहा जाके अपने तईं याजकों को दिखाओ। और ऐसा हुआ कि जब वे जाते थे तो शुद्ध हो गये। और उन में से एक जब उस ने देखा कि मैं चंगा हुआ हूं तब लौट के बड़े शब्द से ईश्वर की महिमा करने लगा और उस के पैरों पर मुंह के बल गिरा और उस का धन्यवाद किया और वह शोमरोनी था। और येशू ने उत्तर देके कहा क्या दसों शुद्ध नहीं भये

फिर तो कहां क्या इस अन्यजाति को छोड़ कोई ईश्वर की महिमा करने के लिये नहीं लौटा। और उस ने उस से कहा उठ और जा तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है ॥

त्रय के उपरान्त पन्द्रहवां इतवार

प्रार्थना

हे प्रभु अपनी निरन्तर दया से अपनी एक्लेसिया की रक्षा कर और जब कि मनुष्य अपनी दुर्बलता के कारण तेरे बिना गिरने से बच नहीं सकता इस लिये अपनी सहायता से हम को सब हानिकारक बातों से सदा बचा रख और जो कुछ हमारे त्राण के लिये लाभ-दायक है उस की ओर हम को ले चल। हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन् ॥

पत्री। गलतियों। ६।११।

देखो मैं ने तुम को अपने हाथ से कैसे बड़े बड़े अक्षरों में लिखा है। जितने शरीर में अच्छा बन के दिखाने चाहते हैं सो तुम्हारा परिच्छेद बरबस कराते हैं केवल इसी लिये कि वे ख्रीष्ट के क्रूस के कारण से सताये न जावें। क्योंकि जिन का परिच्छेद होता है सो भी तो व्यवस्था को पालन नहीं करते पर चाहते हैं कि तुम्हारा परि-च्छेद होवे इस लिये कि वे तुम्हारे शरीर के कारण से घमंड कर सकें। पर मुझ से ऐसा न होवे कि और किसी बात पर घमंड करूं परन्तु केवल हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के क्रूस पर जिस के द्वारा संसार मेरी अपेक्षा में क्रूस पर चढ़ाया गया है और मैं संसार की अपेक्षा में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं। क्योंकि न तो परिच्छेद कुछ है न अपरि-

च्छेद पर नई सृष्टि। और जितने इस नियम पर चलेंगे उन को शान्ति मिले और उन पर दया होवे अर्थात् ईश्वर के यिस्राएल् पर। आगे को कोई मुझे कष्ट न देवे क्योंकि मैं अपनी देह पर येशू की छापें लिये फिरता हूं। हे भाइयो हमारे प्रभु येशू खीष्ट का अनुग्रह तुम्हारे आत्मा के संग होवे। आमेन्॥

सुसमाचार। प० मत्तय।६।२४।

कोई दो स्वामियों का दास नहीं हो सकता क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रीति रक्खेगा अथवा उस से लगा रहेगा और इस को तुच्छ जानेगा। तुम ईश्वर और मामोन्न दोनों के दास नहीं हो सकते। इस लिये मैं तुम से कहता हूं कि अपने प्राण के लिये चिन्ता न करो कि क्या खावेंगे अथवा क्या पीवेंगे और न अपनी देह की कि क्या पहिनेंगे। क्या प्राण भोजन से और देह वस्त्र से श्रेष्ठ नहीं। आकाश के पंछियों पर ध्यान करो कि वे न बोते न लवते न खत्तों में बटोरते हैं और तौ भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें पोसता है। क्या तुम उन से बहुत अधिक श्रेष्ठ नहीं हो। और तुम में से कौन चिन्ता करने से अपनी डील को हाथ भर भी बढ़ा सकता है। और वस्त्र के लिये क्यों चिन्ता करते हो चौगान के शूशनों पर ध्यान करो कि वे कैसे बढ़ते हैं वे न परिश्रम करते न कातते हैं तौ भी मैं तुम से कहता हूं कि शलोमो भी अपनी सारी महिमा में इन में से एक के समान पहिने हुए न था। पर जब कि चौगान की घास को जो आज है और कल चूल्हे में झोंकी जावेगी ईश्वर ऐसे पहिराता है तो हे अल्पविश्वासियो क्या वह बहुत अधिक तुम को न पहिरावेगा। इस लिये यह कहके चिन्ता मत करो कि हम क्या खावेंगे अथवा क्या पीवेंगे अथवा क्या पहिरेंगे। क्योंकि इन सब बातों के लिये अन्य-

चय के उपरान्त सोलहवां इतवार

जातिगण यत्न करते हैं और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम को इन सब बातों का प्रयोजन रहता है। पर तुम पहिले उस के राज्य और धर्म्म के लिये यत्न करो तो ये सब बातें भी तुम्हें दिई जावेंगी। सो कल के लिये चिन्ता मत करो क्योंकि कल अपनी बातों की चिन्ता आप ही करेगा। प्रत्येक दिन का दुःख उसी दिन के लिये बहुत है॥

चय के उपरान्त सोलहवां इतवार

प्रार्थना

हे प्रभु हमारी यह विनती है कि तू अपनी निरन्तर करुणा से अपनी एक्लेसिया को शुद्ध कर और बचा रख और जब कि वह तेरे सम्भाले बिना कुशल से नहीं रह सकती इस लिये अपनी सहायता और कृपा से सदा उस की रक्षा करता रह हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। एफेसियों।३।१३।

मैं विनती करता हूं कि तुम मेरे उन क्लेशों के कारण से जो मैं तुम्हारे निमित्त भोगता हूं ढाढ़स न खोओ क्योंकि वे तुम्हारी बड़ाई हैं। इस लिये मैं उस पिता के साम्हने जिस से स्वर्ग में और पृथिवी पर का प्रत्येक कुल कहावता है अपने घुटने टेक के प्रार्थना करता हूं कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम को यह वर देवे कि तुम उस के आत्मा के द्वारा अंतर के मनुष्य में बलवन्त किये जाओ और विश्वास के द्वारा ख्रीष्ट तुम्हारे हृदयों में बास करे जिस्तें प्रेम में तुम्हारी जड़ लगने और नेव पड़ने से तुम समस्त पवित्रों

समेत यह बूझने का सामर्थ्य पाओ कि क्या ही चौड़ाई और लंबाई और ऊंचाई और गहिराई है और ख्रीष्ट के उस प्रेम को जो ज्ञान से परे है जानसको जिस्तें तुम ईश्वर की सारी भरपूरी लों भर दिये जाओ। और जो उन सब बातों से जो हम मांगते अथवा सोचते हैं उस शक्ति के अनुसार जो हम में कार्य्य करती है अत्यन्त अधिक कर सकता है उस की महिमा एक्लेसिया में और ख्रीष्ट येशू में पीढ़ी से पीढ़ी लों युगानयुग होती रहे। आमेन॥

सुसमाचार। प० लूका। ७। ११।

और थोड़ी बेर पीछे यों हुआ कि येशू नैन् नामक एक नगर को गया और उस के शिष्य और बड़ी भीड़ उस के संग संग जाती थी। और जब वह नगर के फाटक के निकट आया तब देखो लोग एक मृतक को बाहर लिये जाते थे जो अपनी माता का एकलौता पुत्र था और वह बिधवा थी और नगर के बहुत से लोग उस के संग थे। और प्रभु ने उस को देख के उसपर छोह किया और उस से कहा मत रो। और उस ने निकट आके रथी को छूआ और जो उस को उठाये जाते थे सो खड़े हो गये। और उस ने कहा हे तरुण मैं तुझ से कहता हूं उठ। और मृतक उठ बैठा और बोलने लगा। और उस ने उसे उस की माता को सौंप दिया। और सब में डर समागया और वे यह कहके ईश्वर की महिमा करने लगे कि एक बड़ा प्रवक्ता हम में उठा है और यह कि ईश्वर ने अपने निजलोगों पर दृष्टि किई है। और उस की यह कीर्त्ति समस्त यहूदा और चारों ओर के देश में फैल गई॥

त्रय के उपरान्त सतरहवां इतवार

प्रार्थना

हे प्रभु हम यह प्रार्थना करते हैं कि तेरा अनुग्रह सदा हमारे

आगे और पीछे चले और हमें सब सुकर्म्मों में निरन्तर लौलीन रक्खे। हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। एफेसियों।४।१।

सो मैं जो प्रभु में बंधुवा हूं तुम से विनती करता हूं कि जिस बुलाहट से तुम बुलाये गये उसके योग्य चाल चलो। समस्त नम्रता और सौम्यस्वभावता और धीरज के साथ प्रेम से एक दूसरे की सहाय करो। और मेल के बंधन से आत्मा की एकता की रक्षा करने का यत्न करो। एक देह और एक आत्मा है जैसे तुम अपनी बुलाहट की एक आशा में बुलाये गये। एक प्रभु एक विश्वास एक बप्तिस्म और सब का एक ईश्वर और पिता जो सब के ऊपर और सब में व्याप्त और सब में रहता है॥

सुसमाचार। प० लूका।१४।१।

ऐसा हुआ कि जब येशू शब्बात् के दिन पारीशियों के एक अधिपति के घर में खाने को गया तो वे उस की ताक में रहे। और देखो उस के साम्हने एक मनुष्य था जिस को जलंधर था। और येशू ने उत्तर देके धर्म्मशास्त्रियों और पारीशियों से पूछा क्या शब्बात् के दिन चंगा करने में कुछ दोष है वा नहीं। और वे चुप रहे। और उस ने उस को लेके चंगा किया और जाने दिया। तब उस ने उन से कहा तुम में से कौन है कि यदि उस का गदहा वा बैल कूंए में गिर पड़े तो झट उस को शब्बात् के दिन न निकालेगा। और वे इन बातों का प्रत्युत्तर उस को न दे सके। और जब उस ने देखा कि नेवतहरी प्रधान आसनों को चुन लेते हैं तब उस ने उन से एक दृष्टान्त

त्रय के उपरान्त अठारहवा इतवार

कहा जब कोई तुझ को विवाह के जेवनार में नेवता देवे तो प्रधान आसन पर मत बैठ न होकि कदाचित् उस ने तुझ से किसी और अधिक प्रतिष्ठित जन को नेवता दिया हो और जिस ने तुझ को और उस को नेवता दिया सो आके तुझ से कहे इस जन को बैठने दे और तब तुझ को लज्जित होके सब से नीचा स्थान लेना पड़ेगा। वरन जब तुझ को नेवता दिया जावे तब जाके सब से नीचे स्थान में बैठ जिस्तें जब नेवता करनेहारा आवे तब वह तुझ से कहे हे मित्र ऊपर जा तब जितने तेरे संग बैठे हैं उन सब के साम्हने तेरी महिमा होवेगी। क्योंकि जो कोई अपने को ऊंचा करता है सो नीचा किया जावेगा और जो अपने को नीचा करता है सो ऊंचा किया जावेगा॥

त्रय के उपरान्त अठारहवां इतवार

प्रार्थना

हे प्रभु हम विनती करते हैं अपने निज लोगों को अनुग्रह दे कि वे संसार और शरीर और दुष्टात्मा की परीक्षाओं का साम्हना करें और शुद्धमन और हृदय से तुझ अद्वितीय ईश्वर के अनुगामी होवें। हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। १ कोरिन्थियों। १।४।

ईश्वर का जो अनुग्रह ख्रीष्ट येशू में तुम्हें दिया गया उस के लिये मैं सदा तुम्हारे विषय में अपने ईश्वर का धन्यवाद करता हूं कि तुम उस में सब बातों में अर्थात् सब प्रकार के कथन और सब प्रकार के ज्ञान में धनवान किये गये हो जैसे ख्रीष्ट की साक्षी तुम में दृढ़ किई गई यहां लों कि किसी दान में तुम न्यून नहीं हो वरन हमारे

त्रय के उपरान्त उन्नीसवां इतवार

प्रभु येशू खीष्ट के प्रगट होने की बाट जोहते हो। वह तुम को अंत लों दृढ़ करता भी रहेगा जिस्तें तुम हमारे प्रभु येशू खीष्ट के दिन में निर्दोष होओ ॥

सुसमाचार। प० मत्तय। २२। ३४।

जब पारीशियों ने सुना कि येशू ने सदूकियों को निरूत्तर कर दिया तब वे एकट्ठे भये। और उन में से एक ने जो धर्म्मशास्त्री था उस की परीक्षा करने की इच्छा से उस से यह प्रश्न किया कि हे गुरू व्यवस्था में कौन आज्ञा बड़ी है। उस ने उस से कहा तू अपने प्रभु ईश्वर से अपने सारे हृदय और अपने सारे जीव और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम रखना। बड़ी और प्रथम आज्ञा यही है। और दूसरी उस के सरीखी है सो यह है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना। इन दो आज्ञाओं में समस्त व्यवस्था और प्रवक्तागण आ गये हैं। और जब पारीशो एकट्ठे थे तब येशू ने उन से एक प्रश्न किया और कहा खीष्ट के विषय में तुम क्या समझते हो वह किस का पुत्र है। उन्हों ने उस से कहा दावीद् का। उस ने उन से पूछा तो क्योंकर दावीद् आत्मा में होके उस को प्रभु कहता है अर्थात् यह कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा तू मेरी दहिनी ओर बैठा रह जब लों मैं तेरे शत्रुन को तेरे पैरों के नीचे न कर देऊं। तो जब कि दावीद् उस को प्रभु कहता है फिर वह क्योंकर उस का पुत्र भया। और कोई उस को उत्तर में एक बात न कह सका वरन उस दिन से लेके किसी को हियाव न हुआ कि उस से कोई प्रश्न करे ॥

त्रय के उपरान्त उन्नीसवां इतवार

प्रार्थना

हे ईश्वर जब कि हम तेरे बिना तुझे प्रसन्न नहीं कर सकते इस

त्रय के उपरान्त उन्नीसवां इतवार

लिये दया से यह वर दे कि तेरा पवित्रात्मा सब बातों में हमारे मन की प्रेरणा और अगुवाई करे हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। एफेसियों। ४। १७।

सो मैं यह कहता हूं और प्रभु में होके साक्षी देता हूं कि तुम आगे के ऐसे न चलो जैसे अन्यजातिगण चलते हैं अर्थात् अपने अन्तःकरण की व्यर्थता में कि उन की बुद्धि अंधियारी हो गई और वे उस अज्ञान के हेतु जो उन के मन की कठोरता के कारण से उन में है ईश्वर के जीवन से अलग हो गये हैं और उन्हों ने अपने तईं सुन्न करके कामातुरता को सैांप दिया है कि सब प्रकार की अशुद्धता के कर्म्म तृष्णा से किया करें। पर तुम ने तो ख्रीष्ट को ऐसा नहीं सीखा हां यदि तुम ने सचमुच उसी की सुनी और उसी के विषय में ऐसी शिक्षा पाई जैसा येशू में सत्य है कि तुम अपनी अगली चाल-चलन के विषय में उस पुराने मनुष्य को जो छल की अभिलाषाओं के अनुसार बिगड़ता जाता है दूर करो और अपने अन्तःकरण के आत्मा में नये होते जाओ और उस नये मनुष्य को जो धर्म्म में और सत्य सम्बन्धी पवित्रता में ईश्वर की नाईं सृजा गया है पहिन लेओ। इस लिये झूठ को दूर करके प्रत्येक जन अपने पड़ोसी से सच बात बोला करे क्योंकि हम एक दूसरे के अंग हैं। क्रोध तो करो पर पाप मत करो सूर्य्य तुम्हारे क्रोधपर न डूबे और न दुष्टात्मा को स्थान देओ। जो चोरी करता है सो आगे को चोरी न करे वरन परिश्रम ही करे और अपने हाथों से अच्छा काम करे जिस्तें जिस को प्रयोजन होवे उस को भी वह कुछ दे सके। कोई फूहर बात तुम्हारे मुंह से न निकले पर केवल वही जो आवश्यकता के अनुसार लाभ-दायक होवे जिस्तें वह सुननेहारों को अनुग्रह दे सके। और ईश्वर

चय के उपरान्त बीसवां इतवार

के पवित्रात्मा को उदास मत करो क्योंकि उसी से तुम पर छुटकारे के दिन के लिये छाप किई गई। सब प्रकार की कड़ुवाहट और जल-जलाहट और क्रोध और कलकल और निन्दा समस्त दुष्ट बुद्धि समेत तुम्हारे मध्य में से निकाली जावे और तुम एक दूसरे पर कृपालु और छोही और एक दूसरे के क्षमा करनेहारे होओ जैसे ईश्वर ने ख्रीष्ट में हो के तुम को क्षमा किया है॥

सुसमाचार। प० मत्तय। ९। १।

येशू एक नाव पर चढ़ा और पार उतर के अपने निज नगर में आया। और देखो लोग एक अर्द्धाङ्गी को जो खाट पर पड़ा था उस के पास ले आए और येशू ने उन का विश्वास देख के उस अर्द्धाङ्गी से कहा हे लड़के ढाढ़स रख तेरे पाप क्षमा किये गये। और देखो कितने शास्त्रियों ने अपने मन में कहा यह ईश्वर की निन्दा करता है। और येशू ने उन की चिन्ताओं को जान के कहा तुम अपने हृदयों में बुरी चिन्ता क्यों करते हो। क्योंकि कौन सहज है यह कहना कि तेरे पाप क्षमा किये गये अथवा यह कहना कि उठ और चल। पर इस लिये कि तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथिवी पर पापों की क्षमा करने का अधिकार है (तब उस ने अर्द्धाङ्गी से कहा) उठ अपनी खाट उठा और अपने घर को चला जा। और वह उठ के अपने घर चला गया। और भीड़ ने जब देखा तब डर गई और ईश्वर की महिमा किई कि उस ने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया॥

चय के उपरान्त बीसवां इतवार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् और अत्यन्त दयालु ईश्वर अपनी बड़ी कृपा से हम को समस्त हानिकारक बातों से बचा रख कि हम तन मन से

लैस होकर जो काम तू हम से चाहता है उन्हें प्रसन्नता से करें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

पत्री । एफेसियों । ५ । १५ ।

सो ध्यान से देखा करो कि कैसे चलते हो अर्थात् निर्बुद्धियों के समान नहीं पर बुद्धिमानों के समान । और यत्न किया करो कि अवसर व्यर्थ न जाने पावे क्योंकि दिन बुरे हैं । इस लिये निर्बुद्धि मत होओ वरन समझा करो कि प्रभु की इच्छा क्या है । और दाखमधु से मतवाले मत होओ क्योंकि उस में लुचपन है वरन आत्मा से परिपूर्ण होओ और आपस में स्तोत्रों और भजनों और आत्मिक गीतों से बोला करो और अपने मन से प्रभु के लिये गाते बजाते रहो और सर्व्वदा सब बातों के लिये हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के नाम में ईश्वर पिता का धन्यवाद करो और ख्रीष्ट का भय मान के एक दूसरे के अधीन रहो ॥

सुसमाचार । प० मत्तय । २२ । १ ।

येशू ने कहा स्वर्ग का राज्य एक राजा के समान है जिस ने अपने पुत्र का विवाह किया और अपने दासों को भेजा कि नेवतहरियों को बिवाह में बुलावें और उन्हों ने आना न चाहा । फिर उस ने और दास यह कहके भेजे कि नेवतहरियों से कहो देखो मैं ने अपनी जेवनार को सिद्ध किया है मेरे सांड़ और मेरे मोटे मोटे पशु बध किये गये हैं और सब कुछ सिद्ध है विवाह में आओ । पर वे निश्चिंत होके चले गये एक तो अपने खेत को दूसरा अपने वाणिज्य को और दूसरों ने उस के दासों को पकड़ के उन को निरादर करके मार डाला । तब

राजा क्रुद्ध भया और अपनी सेनाएं भेज के उन हत्यारों को नाश किया और उन के नगर को फूंक दिया। तब उस ने अपने दासों से कहा विवाह की जेवनार तो सिद्ध है पर नेवतहरी योग्य न थे इस लिये सड़कों के चौराहों में जाओ और जितनों को पाओ सब को विवाह में बुलाओ। और उन दासों ने सड़कों में निकल के भले बुरे जितने उन को मिले सब को इकट्ठा किया और विवाह का घर नेवतहरियों से भर गया। और जब राजा ने नेवतहरियों को देखने के लिये प्रवेश किया तब उस ने एक मनुष्य को देखा जो विवाह का वस्त्र पहिने न था और उस से कहा हे मित्र तू क्योंकर यहां विवाह के वस्त्र बिना आया। और वह चुप रहा। तब राजा ने परिचारकों से कहा उस के हाथ पांव बांध के उस को बाहर के अंधियारे में डालो वहां रोना और दांत पीसना होवेगा। क्योंकि बुलाये हुए तो बहुत हैं परन्तु चुने हुए थोड़े॥

चय के उपरान्त एक्कीसवां इतवार

प्रार्थना

हे दयालु प्रभु हम विनती करते हैं कि तू अपने विश्वासी लोगों को क्षमा और शांति दे कि वे अपने सब पापों से शुद्ध किये जावें और शांत मन से तेरी सेवा करें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। एफेसियों। ६। १०।

निदान प्रभु और उस के सामर्थ्य के बल में शक्तिमान होओ। ईश्वर के सम्पूर्ण शस्त्र बांध लेओ जिस्तें तुम दुष्टात्मा की युक्तियों के साम्हने खड़े रह सको। क्योंकि हमारी बजनी रुधिर और मांस

से नहीं होती वरन प्रभुताओं और अधिकारों और इस अन्धकार के चक्रवर्त्तिन से और दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से जो स्वर्गीय स्थानों में हैं होती है। इस लिये ईश्वर के सम्पूर्ण शस्त्र उठा लेओ जिस्तें तुम बुरे दिन में साम्हना कर सको। और सब कुछ पूरा करके खड़े रह सको। सो अपनी कटि को सत्य से कसके और धर्म्म की झिलम पहिन के और अपने पैरों में मिलाप के सुसमाचार के सजाव के जूते चढ़ा के खड़े रहो। इन सब के ऊपर विश्वास की ढाल उठा लेओ जिस से तुम दुष्ट के सब अग्निबाणों को बुझा सकोगे। और त्राण का टोप और आत्मा का खड्ग जो ईश्वर का वचन है ले लेओ और सब काल में सब प्रकार की प्रार्थना और विनती से आत्मा में होके प्रार्थना किया करो और बड़ी धुनि से उसी के लिये जागते रहो और समस्त पवित्रों के लिये विनती करो और मेरे लिये भी कि मुझ को वाणी दिई जावे और मेरा मुंह सुसमाचार के उस रहस्य के निडर विदित करने को खोला जावे जिस का मैं बंधा हुआ दूत हूं जिस्तें मैं उस के विषय में ऐसा निडर बोलूं जैसे मुझ को बोलना चाहिये॥

सुसमाचार। प० योहानान्। ४। ४६।

एक राजपुरुष था जिस का पुत्र कफर्णहूम् में रोगी था। वह यह सुन के कि येशू यहूदा से गालील् में आया है उस के पास गया और विनती किई कि उतर आ और मेरे पुत्र को चंगा कर क्योंकि वह मरने पर था। सो येशू ने उस से कहा यदि तुम आश्चर्य्यकर्म्म और अचंभे न देखो तो तुम कदापि विश्वास न करोगे। राजपुरुष ने उस से कहा हे प्रभु मेरे बच्चे के मरने से पहिले उतर चल। येशू ने उस से कहा जा तेरा पुत्र जीता है। उस मनुष्य ने उस बात की जो येशू ने उस से कही प्रतीति किई और चलागया। और वह उतरता ही

था कि उस के दास उस को मिले और कहने लगे कि तेरा लड़का जीता है। सो उस ने उन से पूछा कि किस घंटे में वह अच्छा होने लगा। उन्हों ने उस से कहा कल सातवें घंटे में ज्वर उसपर से उतर गया। सो पिता ने जाना कि यह वही घंटा है जिस में येशू ने मुझ से कहा था कि तेरा पुत्र जीता है और उस ने आप और उस के घर में के सब लोगों ने विश्वास किया। यह दूसरा आश्चर्य्यकर्म्म है जो येशू ने यहूदा से गालील् में आके किया॥

त्रय के उपरान्त बाईसवां इतवार

प्रार्थना

हे प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू एक्लेसिया को जो तेरा परिवार है निरन्तर भक्ति में दृढ़ रख कि तेरी रक्षा के द्वारा वह सारी हानि से बची रहे और सुकर्म्मों में लौलीन होके तेरी सेवा में लगी रहे जिस्तें तेरे नाम की महिमा होवे। हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। फिलिप्पियों।१।३।

मै जब जब तुम को स्मरण करता हूं तब तब अपने ईश्वर का धन्यवाद करता हूं और मैं जो जो बिनतियां तुम सब के लिये करता हूं सब में आनन्द के साथ इस लिये बिनती करता हूं कि तुम पहिले दिन से लेके अब लों सुसमाचार के फैलाने में मेरे सहभागी रहे हो। क्योंकि मुझ को यही भरोसा है कि जिस ने तुम में अच्छा काम आरंभ किया है सो उस को येशू ख्रीष्ट के दिन लों पूरा करेगा। और मुझ को उचित भी है कि तुम सब के विषय में ऐसा ही समझूं क्योंकि मैं

त्रय के उपरान्त बाईसवां इतवार

तुम को अपने हृदय में रखता हूं इस लिये कि मेरी बंधुआई में और सुसमाचार के मण्डन और दृढ़ीकरण में तुम सब मेरे अनुग्रह के सहभागी हो। क्योंकि ईश्वर इस में मेरा साक्षी है कि मैं ख्रीष्ट येशू के स्नेह से तुम सब का कैसा आकांक्षी हूं। और मैं यह प्रार्थना करता हूं कि तुम्हारा प्रेम ज्ञान और सब प्रकार के विवेक के साथ और भी अधिक बढ़ता जावे जिस्तें तुम उन बातों को परखो जिन में अंतर है और इस प्रकार से ख्रीष्ट के दिन लों निर्मल और ठोकर रहित हो जाओ और धर्म्म के उन फलों से जो येशू ख्रीष्ट के द्वारा होते हैं लदे रहो जिस्तें ईश्वर की महिमा और स्तुति होवे॥

सुसमाचार प० मत्तय। १८। २१।

पेत्र ने येशू से कहा हे प्रभु मेरा भाई के बार मेरा अपराध करे और मैं उस को क्षमा करता जाऊं क्या सात बार येशू ने उस से कहा मैं तुम से नहीं कहता कि सात बार पर सत्तर गुणे सात बार। इस लिये स्वर्ग का राज्य एक राजा के समान है जिस ने अपने दासों से लेखा लेने चाहा। और जब वह लेखा लेने लगा तब दस सहस्र तलन्तों का एक ऋणी उस के पास पहुंचाया गया। और इस लिये कि उस के पास कुछ भरदेने को न था उस के स्वामी ने आज्ञा दिई कि वह और उस की स्त्री और उस के लड़केबाले और जो कुछ उस के पास था सब बेचा जावे और उस का ऋण भर लिया जावे। सो वह दास गिर के उस की दण्डवत करने लगा और कहा हे प्रभु मुझ से धीरज धर तो मैं सब कुछ तुझे भर देऊंगा। और उस दास के स्वामी को उसपर छोह आया और उस को छोड़ दिया और उस के ऋण को क्षमा किया। पर उस दास ने निकल के अपने एक संगी दास को जो उस का पचास रुपैया धारता था पाया और उस को पकड़ के उस

का गला घोंटने लगा और कहा जो कुछ तू धारता है सो भर दे। सो उस संगी दास ने गिरके उस से विनती किई और कहा मुझ से धीरज धर तो मैं तेरा भर दूंगा। परन्तु उस ने न माना पर जाके उस को बन्दीगृह में डाल दिया कि जब लों वह ऋण को न भर देवे तब लों वहीं रहे। सो उस के संगी दास यह वृत्तान्त देख के अत्यन्त शोकित भये और जाके अपने स्वामी को यह सब जो हुआ था बता दिया। तब उस के स्वामी ने उस को बुला के उस से कहा रे दुष्ट दास मैं ने वह सारा ऋण तुझे छोड़ दिया इस लिये कि तूने मुझ से विनती किई तो क्या तुझे उचित न था कि जैसे मैं ने तुझ पर दया किई तैसे तू भी अपने संगी दास पर दया करता। और उस के स्वामी ने क्रुद्ध होके उसे दण्डकारकों को सौंपा कि जब लों वह सारा ऋण भर न दे तब लों उन्हीं के हाथ में रहे। इसी प्रकार से मेरा स्वर्गीय पिता भी तुम से करेगा यदि तुम अपने अन्तःकरण से अपने अपने भाई को क्षमा न करो॥

त्रय के उपरान्त तेईसवां इतवार

प्रार्थना

हे ईश्वर हमारी शरण और शक्ति तू सारी भक्ति का कर्ता है हम विनती करते हैं कि तू अपनी एक्लीसिया की भक्तियुक्त प्रार्थनाओं के सुनने पर सिद्ध रह और यह वर दे कि जो कुछ हम विश्वास से मांगते हैं उसे हम निश्चय पावें। हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। फिलिप्पियों। ३। १७।

हे भाइयो तुम मिल के मेरे अनुकारी होओ और जो ऐसे चलते हैं जैसे हम तुम्हारे लिये उदाहरण हैं उन को देखा करो। क्योंकि

त्रय के उपरान्त तेईसवां इतवार

ऐसे बहुत से चलनेहारे हैं जिन के विषय में मैं ने बार बार तुम से कहा और अब रो रो के भी कहता हूं कि वे खीष्ट के क्रूस के शत्रु हैं। उन का अंत नाश है उन का ईश्वर पेट है और वे अपनी लज्जा पर बड़ाई करते और पृथिवी पर की बातों पर मन लगाते हैं। क्योंकि हमारा स्थान स्वर्ग ही में है और वहां से हम एक त्राता की बाट जोहते हैं अर्थात् प्रभु येशू खीष्ट की जो हमारी अधम देह का रूप ऐसा बदल देवेगा कि वह उस की महिमायुक्त देह की समानरूप हो जावेगी उस कार्य्यकारिता के अनुसार जिस से वह सब कुछ अपने बश में कर सकता है॥

सुसमाचार। प० मतय। २२। १५।

तब फारीशियों ने जाके परामर्श किया कि क्योंकर उस को बात में फंसावें। और उन्हों ने अपने शिष्यों को हेरोदियानों समेत यह पूछने के लिये भेजा कि हे गुरू हम जानते हैं कि तू सच्चा है और ईश्वर के मार्ग को सच्चाई से सिखाता है और तुझ को इस की चिन्ता नहीं कि कौन क्या कहेगा क्योंकि तू मनुष्यों की मुंहदेखी नहीं करता। सो हम से कह तू क्या समझता है कैसर् को कर देना उचित है कि नहीं। पर येशू ने उन की दुष्टता को जान के कहा रे कपटियो तुम मेरी परीक्षा क्यों करते हो कर की मुद्रा मुझे दिखाओ। और वे उस के पास एक अठन्नी ले आये। और उस ने उन से कहा यह मूर्त्ति और यह नाम किस के हैं। उन्हों ने उस से कहा कैसर् के। तब उस ने उन से कहा भला जो कुछ कैसर् का है सो कैसर् को और जो कुछ ईश्वर का है सो ईश्वर को देओ। और यह सुन के उन्हों ने अचम्भा किया और उस को छोड़ के चलेगये

चय के उपरान्त चौबीसवां इतवार

प्रार्थना

हे प्रभु हम विनती करते हैं अपने निज लोगों को उन के अप-राधों से छुटकारा दे कि तेरी बड़ी कृपा से हम सब उन पापों के बन्धनों से जो हम ने अपनी दुर्बलता के कारण किये हैं छूट जावें हे स्वर्गीय पिता हमारे धन्य प्रभु और त्राता येशू खीष्ट के निमित यह वर दे। आमेन्॥

पत्री। कोलोस्सियों।१।३।

हम ईश्वर का जो हमारे प्रभु येशू खीष्ट का पिता है धन्यवाद करते और सर्व्वदा तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं क्योंकि हमने तुम्हारे उस विश्वास की चर्चा सुनी है जो तुम खीष्ट येशू पर रखते हो और उस प्रेम की जो तुम सब पवित्रों से रखते हो। इस का कारण वह आशा है जो स्वर्ग में तुम्हारे लिये रक्खी हुई है और जिस की चर्चा तुम ने सुसमाचार के सत्य के वचन में आगे सुनी थी। यह सुसमा-चार जैसे समस्त जगत में फल फलता और बढ़ता जाता है तैसे ही तुम्हारे पास भी आके यह करता है। वरन वह उस दिन से लेके यह करता है जिस में तुम ने ईश्वर के अनुग्रह को सच्चाई से सुना और जाना। क्योंकि तुम ने हमारे प्रिय संगी दास एपफ्रा से जो तुम्हारे लिये खीष्ट का विश्वस्त परिचारक है ऐसा ही सीखा और उसी ने हम से तुम्हारे उस प्रेम का जो तुम आत्मा में रखते हो वर्णन किया है। इस कारण से हम भी जिस दिन से हम ने सुना तुम्हारे लिये प्रार्थना करने और यह मांगने से अलग नहीं रहते कि तुम सब प्रकार की आत्मिक बुद्धि और समझ के साथ उस की इच्छा की पहिचान से परिपूर्ण होओ और तुम प्रभु के योग्य चलते हुए सब प्रकार से उस

को प्रसन्न रक्खो और सब प्रकार के भले कर्म्म में फलते और ईश्वर के ज्ञान में बढ़ते रहो और उस की महिमा के सामर्थ्य के अनुसार सब प्रकार की शक्ति से शक्तिमान् होओ जिस्तें सब प्रकार की सहन· शीलता और धीरज आनन्द के साथ रक्खो और उस पिता का धन्य· वाद किया करो जिस ने हम को इस योग्य किया कि हम उंजियाले में पवित्रों के निज भाग में भागी होवें ॥

सुसमाचार । प० मत्तय । ६ । १८ ।

जब येशू योहानान् के शिष्यों से ये बातें कह रहा था तब देखो एक अधिपति आया और उस को दण्डवत् करके कहने लगा मेरी पुत्री अभी मरगई है परन्तु आके उसपर हाथ रख तो वह जीवेगी । और येशू उठके अपने शिष्यों समेत उस के पीछे हो लिया । और देखो एक स्त्री ने जिस को बारह बरस से रक्तस्राव का रोग था पीछे से आके उस के वस्त्र के छोर को छूआ क्योंकि उस ने अपने मन में कहा यदि मैं केवल उस के वस्त्र ही को छूऊं तो चंगी हो जाऊंगी । और येशू ने फिर के और उस को देख के कहा हे पुत्री ढाढ़स रख तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है । और वह स्त्री उसी घड़ी से चंगी हो गई । और येशू अधिपति के घर में आया और बांसुली बजा- नेहारों को बजाते और भीड़ को हुल्लड़ मचाते देख के कहा अलग होओ क्योंकि लड़की मरी नहीं पर सोती है । और वे उसपर हंसे । और जब भीड़ निकाली गई तब उसने प्रवेश किया और लड़की के हाथ को पकड़ा और वह जी उठी । और यह कीर्त्ति उस समस्त देश में फैल गई ॥

त्रय के उपरान्त पचीसवां इतवार

प्रार्थना

हे प्रभु हम विनती करते हैं कि तू अपने विश्वासी लोगों के मन

को उभाड़ कि वे सुकर्म्मों के बहुत से फल फल के तुम से बहुत सा प्रतिफल पावें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन् ॥

पत्री की सन्ती। यिर्मया।२३।५।

प्रभु कहता है कि देखो वे दिन आते हैं जिन में मैं दाबीद् के लिये एक धर्म्मी अंकुर उगाऊंगा और वह राजा होके राज्य करेगा और बुद्धि से काम करेगा और पृथिवी पर न्याय और धर्म्म करेगा उस के दिनों में यहूदा त्राण पावेगा और यिस्राएल् निडर बास करेगा और जिस नाम से वह कहावेगा सो यह है प्रभु हमारा धर्म्म। इस लिये देखो प्रभु कहता है कि वे दिन आते हैं जिन में लोग फिर न कहेंगे कि प्रभु के जीवन की सों जो यिस्राएल्वंशियों को मिसर के देश से चढ़ा ले आया। परन्तु यह कहेंगे कि प्रभु के जीवन की सों जो यिस्राएल् के घराने के वंश को उत्तर के देश से और उन सब देशों से जहां मैं ने उन्हें हांक दिया चढ़ा ले आया और पहुंचा दिया और वे अपने देश में बसेंगे ॥

सुसमाचार। प० योहानान्।६।५।

सो येशू ने अपनी आंखे उठा के और यह देख के कि बड़ी भीड़ मेरे पास चली आती है फिलिप्य से कहा हम कहां से रोटी कीनें कि ये खा सकें। और यह उसने उस की परीक्षा करने के लिये कहा क्योंकि वह आप जानता था कि मैं क्या करने पर हूं। फिलिप्य ने उस को उत्तर दिया सौ रुपैयों की रोटी से यदि एक एक मनुष्य थोड़ा थोड़ा पावे तौभी पूरा नहीं पड़ेगा। उस के शिष्यों में से एक ने अर्थात् शिमोन् पेत्र के भाई अन्द्रिया ने उस से कहा यहां एक छोकरा है जिस के पास जव की पांच रोटियां और दो मछलियां हैं पर इतनों

के लिये क्या हैं। येशू ने कहा लोगों को बैठा देओ। और उस स्थान में बहुत सी घास थी। सो वे पुरुष जो गिनती में कोई पांच सहस्र थे बैठ गये। तब येशू ने उन रोटियों को लिया और धन्यवाद करके उन को जो बैठे थे बांट दिया और उसी भांति मछलियों में से जितना वे चाहते थे उतना उन को बांट दिया। और जब वे तृप्त हुए तब उस ने अपने शिष्यों से कहा बचे हुए टुकड़े बटोरो कि कुछ नष्ट न होवे। सो उन्हों ने बटोरा और जो टुकड़े जव की उन पांच रोटियों में से खानेहारों से बचे थे उन से बारह टोकरे भरे। और उन मनुष्यों ने इस आश्चर्य्यकर्म्म को जो उस ने किया था देख के कहा जो प्रवक्ता जगत में आनेहारा था सो निश्चय यही है॥

यदि आगमन के इतवार से पहिले और भी इतवार होवें तो जो इतवार एपिफनिया के उपरान्त छोड़ दिये गये उनकी उपासना यहां की घटी को पूरा करने के लिये काम आवे। और यदि पचीस से थोड़े इतवार होवें तो अवशिष्ट इतवारों की उपासना छोड़ दिई जावे परन्तु यह पिछली प्रार्थना पत्री और सुसमाचार सदा आगमन से पहले इतवार को काम में आवे।

पवित्र अन्द्रिया का दिन

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू ने अपने धन्यप्रेरित पवित्र अन्द्रिया को ऐसा अनुग्रह दिया कि वह तेरे पुत्र येशू ख्रीष्ट की बुलाहट को प्रसन्नता से मान के तत्क्षण उस के पीछे होलिया हम सब को यह वर दे कि हम जब तेरे पवित्र वचन से बुलाए जावें तब तेरी पवित्र आज्ञाओं को अधीनता से मानने के लिये अपने को तुरन्त सौम्प देवें उसी हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पवित्र अन्द्रिया का दिन

पत्री । रोमियों । १० । ६ ।

यदि तू अपने मुख से येशू को प्रभु करके अंगीकार करे और अपने अन्तःकरण से विश्वास करे कि ईश्वर ने उस को मृतकों में से उठाया है तो तू त्राण पावेगा क्योंकि अंतःकरण से तो धर्म्म के लिये विश्वास किया जाता है और मुख से त्राण के लिये अंगीकार किया जाता है। क्योंकि शास्त्र कहता है जो कोई उसपर विश्वास करता है सो लज्जित न होगा। क्योंकि यहूदी और यवन में कुछ अंतर नहीं क्योंकि सब का एक ही प्रभु है जो उन सब के लिये जो उस को पुकारते हैं धनवान है। क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेके पुकारे सो त्राण पावेगा। तो जिसपर उन्हों ने विश्वास नहीं किया उस को वे क्योंकर पुकारें और जिस की चर्चा उन्हों ने नहीं सुनी उस पर वे क्योंकर विश्वास करें और प्रचारक बिना वे क्योंकर सुनें और यदि भेजे न जावें तो क्योंकर प्रचार करें जैसे लिखा है कि जो उत्तम पदार्थों का सुसमाचार सुनाते हैं उन के पांव क्या ही सुन्दर हैं। परन्तु सुसमाचार के माननेहारे सब न भये। क्योंकि यशया कहता है हे प्रभु हमारे संदेश पर किस ने विश्वास किया। सो विश्वास संदेश पाने से होता है और संदेश ख्रीष्ट के वचन से। परन्तु मैं कहता हूं क्या उन्हों ने संदेश को नहीं सुना हां निःसंदेह उन का शब्द समस्त पृथिवी पर और उन के वाक्य संसार के अंत लों फैल गये। पर मैं कहता हूं क्या यिस्राएल् ने नहीं जाना था। हां पहिले तो मोशे कहता है मैं उस से जो जाति नहीं है तुम को ज्वलन में डलवाऊंगा और निर्बुद्धि जाति से तुम्हारा क्रोध भड़कवाऊंगा। और यशया बड़ी ढिठाई से कहता है जो मुझे नहीं ढूंढ़ते थे उन से मैं पाया गया और जो मेरे विषय में पूछते नहीं थे उन पर मैं प्रगट हुआ। पर यिस्राएल् के विषय

पवित्र तोमा प्रेरित

में वह कहता है दिन भर में ने अपने हाथ एक आज्ञाभंजक और विरोधी लोकगण की ओर बढ़ाये ॥

सुसमाचार । प० मत्तय ४।१८।

येशू ने गालील् के समुद्र के तीर पर चलते हुए दो भाइयों को अर्थात् शिमोन् को जो पेत्र कहावता है और उस के भाई अन्द्रिया को समुद्र में जाल डालते देखा क्योंकि वे मछवे थे। और उस ने उन से कहा मेरे पीछे चले आओ तो मैं तुम को मनुष्यों के मछवे बनाऊंगा। और उन्हों ने झट अपने जाल छोड़े और उस के पीछे हो लिये। और वहां से बढ़ के उस ने दो और भाइयों को अर्थात् जब्दी के पुत्र याकोब् को और उस के भाई योहानान् को जो अपने पिता जब्दी के संग नाव में अपने जाल बनाते थे देखा और उस ने उन को बुलाया। और वे झट नाव और अपने पिता को छोड़ के उस के पीछे हो लिये ॥

पवित्र तोमा प्रेरित

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् और सदा जीवते ईश्वर तू ने हमारे विश्वास को अधिक दृढ़ करने के लिये अपने पवित्र प्रेरित तोमा को अपने पुत्र के पुनरुत्थान के विषय सन्देह में पड़ने दिया हमें यह वर दे कि तेरे पुत्र येशू ख्रीष्ट पर ऐसा पूरा और सन्देहरहित विश्वास रक्खें कि हमारा विश्वास तेरी दृष्टि में दोष के योग्य कभी न ठहरे हे प्रभु उसी येशू ख्रीष्ट के द्वारा हमारी सुन जिस की तेरे और पवित्रात्मा के समेत सारी प्रतिष्ठा और महिमा अब और सदा होवे। आमेन् ॥

पवित्र तोमा प्रेरित

पत्री । इफेसियों । २ । १९ ।

सो अब तुम परदेशी और प्रवासी नहीं पर पवित्रों के सहस्थानी और ईश्वर के घर के लोग हो और प्रेरितों और प्रवक्ताओं की उस नेव के ऊपर जिस के कोने के सिरे का पत्थर ख्रीष्ट येशू आप है बनाये गये हो। उस में समस्त जोड़ाई जुटी और बढ़ती हुई प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है। उस में तुम भी एक संग ऐसे बनाये जाते हो कि आत्मा में ईश्वर का वासस्थान हो जाओ ॥

सुसमाचार । प० योहानान् । २० । २४ ।

जिस समय येशू आया था तब बारह प्रेरितों में से एक अर्थात् तोमा जो दिदुम कहावता है उन के संग न था। सो और शिष्यों ने उस से कहा हम ने प्रभु को देखा है। उस ने उन को कहा जब लों मैं उस के हाथों में कीलों का चिन्ह न देखूं और कीलों के चिन्ह में अपनी अंगुली न डालूं और उस के पांजर में अपना हाथ न डालूं तब लों मैं प्रतीति न करूंगा। और आठ दिन के पीछे उस के शिष्य फिर भीतर थे और तोमा उन के संग था। और जब द्वार बन्द थे तब येशू आया और बीच में खड़े होके कहा तुम को शान्ति मिले। तब उस ने तोमा से कहा अपनी अंगुली इधर ला और मेरे हाथों को देख और अपना हाथ इधर ला और मेरे पांजर में डाल और अविश्वासी मत हो पर विश्वासी हो। तोमा ने उत्तर देके उस से कहा हे मेरे प्रभु और मेरे ईश्वर। येशू ने उस से कहा तू ने जो मुझे देखा है इसी लिये विश्वास किया है धन्य वे हैं जिन्होंने नहीं देखा तौ भी विश्वास किया। और येशू ने अपने शिष्यों के साम्हने और भी बहुत से आश्चर्य्यकर्म्म किये जो इस पुस्तक में लिखे हुए नहीं पर ये इस

लिये लिखे गये कि तुम विश्वास करो कि येशू जो है सो खीष्ट और ईश्वर का पुत्र है और विश्वास करके उस के नाम में जीवन पाओ॥

पवित्र पौल का परिवर्त्तन

प्रार्थना

हे ईश्वर तू ने धन्य प्रेरित पवित्र पौल के प्रचारने के द्वारा सुसमाचार की ज्योति जगत भर में चमकाई है हम बिनती करते हैं यह वर दे कि हम उस के अद्भुत परिवर्त्तन को स्मरण रख के उस के लिये अपनी कृतज्ञता को इस प्रकार से प्रगट करें कि जो जो पवित्र शिक्षा वह देता रहा उस के अनुसार चलें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री की सन्ती। प्रेरितों।९।१।

और शाऊल् ने जो प्रभु के शिष्यों को अब लों सारे जी से धमकाता और घात करता था महायाजक के पास जाके उस से दिमिश्क् के सभास्थानों के लिये पत्रियां मांगीं जिस्तें इस मार्ग के जितनों को वह पावे क्या पुरुष क्या स्त्री सब को बांध के यरूशलेम् में ले आवे। और जब वह चला जाता था तब ऐसा हुआ कि वह दिमिश्क् के निकट आया और अकस्मात् उस की चारों ओर स्वर्ग से ज्योति चमकी और वह भूमि पर गिर पड़ा और एक शब्द सुना जो उस से कहता था हे शाऊल हे शाऊल् तू मुझे क्यों सताता है। और उस ने पूछा हे प्रभु तू कौन है। उस ने कहा मैं येशू हूं जिस को तू सताता है पर उठ और नगर में जा और वहां तुझे बताया जावेगा कि तुझे क्या करना चाहिये। और उस के संगी पथिक अवाक् खड़े रहे और वे शब्द को तो सुनते थे पर किसी को न देखते थे। और शाऊल्

भूमि पर से उठा और जब उस ने अपने नेत्र खोले तो कुछ नहीं देख सका पर वे उस का हाथ पकड़ के उस को दिमिश्क् में ले गये। और वह तीन दिन लों अन्धा रहा और न कुछ खाया न पीया। और दिमिश्क् में हनन्या नामक एक शिष्य था और प्रभु ने उस को दर्शन में कहा हे हनन्या। उस ने कहा हे प्रभु देख मैं हूं। और प्रभु ने उस से कहा उठ के उस सड़क पर जो सीधी कहावती है जा और यहूदा के घर में शाऊल् नामक एक तार्सी को ढूंढ़ क्योंकि देख वह प्रार्थना कर रहा है और हनन्या नामक एक पुरुष को प्रवेश करते देखा है जिस ने उसपर अपने हाथ इस लिये धरे कि वह फिर दृष्टि पावे। और हनन्या ने उत्तर दिया कि हे प्रभु मैं ने बहुतों से इस पुरुष के विषय में सुना है कि उस ने तेरे पवित्रों से जो यरूशलेम् में हैं कितनी बुराई किई और यहां भी उस को महायाजकों से अधिकार मिला है कि जितने तेरा नाम लेके पुकारते हैं सब को बांधे। परन्तु प्रभु ने उस से कहा जा क्योंकि यह मेरा एक चुना हुआ पात्र है कि अन्यजातियों और राजाओं और यिस्राएल्वंशियों के साम्हने मेरा नाम पहुंचावे क्योंकि मैं उस को दिखाऊंगा कि उसे मेरे नाम के लिये कितना दुःख भोगना पड़ेगा। और हनन्या चला गया और उस घर में प्रवेश किया और उसपर अपने हाथ रख के कहा हे भाई शाऊल् प्रभु अर्थात् येशू ने जिस ने उस मार्ग में जिस से तू आता था दर्शन दिया मुझ को इस लिये भेजा है कि तू अपनी दृष्टि पावे और पवित्रात्मा से परिपूर्ण होवे। और तत्क्षण उस के नेत्रों से कुछ छिलके से गिरे और उस ने अपनी दृष्टि पाई और उठ के बप्तिस्म लिया और जब कुछ भोजन खाया तब उस में बल आया और कुछ दिन लों वह दिमिश्क् में के शिष्यों के संग रहा। और तुरन्त वह सभास्थानों में येशू का प्रचार करने लगा कि यह ईश्वर का पुत्र है। पर जितनों ने उस की सुनी सब विस्मित् हुए और कहा क्या यह वह नहीं है जिस ने यरूशलेम् में

ख्रीष्ट का मन्दिर में अर्पण किया जाना

उन को जो यह नाम लेके पुकारते थे अति क्लेश दिया और यहां भी इसी लिये आया कि उन को बांध के महायाजकों के पास पहुंचावे। परन्तु शाऊल् अधिक सामर्थी होता गया और इस को सिद्ध कर करके कि यह ख्रीष्ट है दिमिश्क् के रहनेहारे यहूदियों को घबराता गया ॥

सुसमाचार । प० मत्तय । १६ । २७ ।

पेत्र ने उत्तर देके येशू से कहा देख हम ने सब कुछ छोड़ दिया और तेरे पीछे हो लिये सो हम को क्या मिलेगा। येशू ने उन से कहा मैं तुम से सत्य कहता हूं कि तुम जो मेरे पीछे हो लिये हो उस पुनर्जनन में जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा तब तुम भी बारह सिंहासनों पर बैठ के यिस्राएल् के बारह गोत्रों का न्याय करोगे। और जिस किसी ने घर वा भाई वा बहिनें वा पिता वा माता वा बालबच्चे वा खेत मेरे लिये छोड़ दिये सो सौ गुणा पावेगा और अनन्तजीवन का अधिकारी होवेगा। परन्तु बहुत से जो पहिले हैं पिछले होजावेंगे और बहुत से पिछले पहिले होवेंगे ॥

ख्रीष्ट का मन्दिर में अर्पण किया जाना जो पवित्र कुमारी मिर्याम् का शुद्धीकरण करके प्रसिद्ध है ॥

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् और सदा जीवते और प्रतापवन्त ईश्वर हम नम्रता से बिनती करते हैं कि जैसे तेरा एकलौता पुत्र आज के दिन मन्दिर में हमारी देह के तत्व में अर्पण किया गया वैसे ही हम भी शुद्ध और निर्मल हृदय के साथ तुझ को अर्पण किये जावें उसी तेरे पुत्र हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन् ॥

खीष्ट का मन्दिर में अर्पण किया जाना

पत्री की सन्ती । मलाकी । ३ । १ ।

देखो मैं अपने दूत को भेजता हूं और वह मेरे आगे मार्ग बनावेगा और वह स्वामी जिस को तुम ढूंढ़ते हो अर्थात् बाचा का वह दूत जिस से तुम प्रसन्न हो अपने मन्दिर में अकस्मात् आवेगा सेनाओं का प्रभु कहता है कि देखो वह आता है। परन्तु कौन उस के आने के दिन को सह सकेगा और जब वह दिखाई देवे तब कौन खड़ा रह सकेगा क्योंकि वह तानेहारे की आग की नाईं और धोबी के साबुन के समान होवेगा। और वह रूपे का तानेहारा और शुद्ध करनेहारा होके बैठेगा और वह लेवीवंशियों को शुद्ध करेगा और उन को सोने रूपे की नाईं निर्मल करेगा जिस्तें वे प्रभु के पास धर्म्म से भेंट पहुंचा सकें। तब यहूदा और यरूशलेम् की भेंट प्रभु को ऐसी मीठी लगेगी जैसी प्राचीन दिनों और अगले बरसों में लगती थी। और मैं न्याय करने के लिये तुम्हारे निकट आऊंगा और अभिचारियों और व्यभिचारियों और झूठी किरिया खानेहारों और जो चाकर का वेतन दबा रखते और विधवा और पितृहीन बालकों पर अंधेर करते और परदेशी को उस के अंश से रहित करते और मुझ से नहीं डरते सब के विरुद्ध फुर्ती से साक्षी देऊंगा यह सेनाओं के प्रभु का वचन है॥

सुसमाचार । प० लूका । २ । २२ ।

और जब मोशे की व्यवस्था के अनुसार उन के शुद्ध होने के दिन पूरे हुए तब वे उस को यरूशलेम् में ले आये कि उसे प्रभु को अर्पण करें (जैसे प्रभु की व्यवस्था में लिखा है कि अपनी माता का प्रत्येक पहिलौठा प्रभु के लिये पवित्र कहावेगा) और इस लिये भी कि बलिदान चढ़ावें जैसा प्रभु की व्यवस्था में लिखा है कि पिण्डुकियों की

जोड़ी वा कपोत के दो बच्चे। और देखो यरूशलेम् में शिमोन् नामक एक मनुष्य था और यह मनुष्य धर्म्मी और भक्त था और यिस्राएल् के प्रबोधे की बाट जोहता था और पवित्रात्मा उसपर था। और पवित्रात्मा ने उस को यह बताया था कि जब लों तू प्रभु के खीष्ट को न देख ले तब लों तू मृत्यु को न देखेगा। और वह आत्मा में होके मन्दिर में आया और जब माता पिता येशू बालक को भीतर ले आये कि व्यवस्था की रीति के अनुसार उस से करें तब उस ने उस को अपनी गोद में लिया और ईश्वर का धन्यवाद करके कहा हे स्वामी अब तू अपने दास को अपने वचन के अनुसार शान्ति से बिदा करता है क्योंकि मेरी आंखों ने तेरे त्राण को देखा है जिस को तू ने सब जातियों के साम्हने सिद्ध किया है अन्यजातियों के प्रकाशित करने के लिये ज्योति और अपने लोगगण यिस्राएल् की महिमा। और उस के माता पिता इन बातों से जो उस के विषय में कही जाती थीं अचम्भा कर रहे थे। और शिमोन् ने उन्हें आशीर्वाद दिया और उस की माता मिर्याम् से कहा देख यह यिस्राएल् में के बहुतों के गिरने और फिर उठने के लिये और एक ऐसा चिन्ह होने के लिये जिस के विरुद्ध बातें कही जावेंगी ठहराया गया है वरन तेरे जीव को भी एक खड्ग छेदेगा जिस्तें बहुत से हृदयों के विचार प्रगट किये जावें। और फनूएल् की पुत्री आशेर् के गोत्र की हन्ना नामक एक प्रवक्त्री थी जो अत्यन्त पुरनिया होगई थी और अपने कुंवारपन से पति के संग सात बरस रही थी और अब वह कोई चौरासी बरस की विधवा थी। वह मन्दिर से अलग नहीं होती थी वरन रात दिन उपवास और प्रार्थना कर करके उपासना किया करती रही। वह भी उसी घड़ी उपस्थित होके ईश्वर का धन्यवाद करने और जितने यरूशलेम् के छुटकारे की बाट जोहते थे उन सब से उस के विषय में बोलने लगी। और जब वे प्रभु की व्यवस्था के अनुसार सब कुछ समाप्त कर चुके तब वे

गालील् को अपने नगर नासरा में लौट गये। और बालक बढ़ता और सामर्थ पाता और बुद्धि से भरता गया और ईश्वर का अनुग्रह उस पर था॥

पवित्र मत्तित्या का दिन

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू ने विश्वासघातक यहूदा की सन्ती अपने विश्वस्त सेवक मत्तित्या को चुन लिया कि वह बारह प्रेरितों की गिनती में गिना जावे यह वर दे कि तेरी एक्लेसिया झूठे प्रेरितों से सदा बची रहे और विश्वस्त और सच्चे पालकों से उस का प्रवन्ध और अगुवाई किई जावे हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री की सन्ती। प्रेरितों।१।१५।

उन दिनों में कोई एक सौ बीस जनों का समूह एकट्ठा था और पेत्र ने भाइयों के मध्य में खड़े होके कहा हे भाइयो अवश्य था कि शास्त्र की जो बात पवित्रात्मा ने दाबीद् के मुख के द्वारा उस यहूदा के विषय में जो येशू के पकड़नेहारों का पथदर्शक भया कही थी सो पूरी होवे। क्योंकि वह हम में गिना गया और उस ने इस परिचर्य्या का भाग पाया था। उस ने तो अपने अधर्म के वेतन से एक खेत मोल लिया और औंधामुंह गिरके बीच से फट गया और उस की सब अंतड़ियां निकल पड़ीं। और यह यरूशलेम् के सब वासियों को विदित हुआ यहां लों कि वह खेत उन की भाषा में हकल्दमा अर्थात् लहू का खेत कहलाया। क्योंकि स्तोत्रसंहिता में लिखा है कि उस का भवन शून्य होवे और उस में कोई न बसे और यह कि उस की अध्यक्षता

को दूसरा लेवे । इस लिये चाहिये कि योहानान् के बपतिस्म से लेके उस दिन लों कि प्रभु येशू हमारे पास से उठा लिया गया जिस सम्पूर्ण समय लों वह हमारे बीच आया जाया करता था उस में जो पुरुष हमारे संग संग रहे उन में से एक हमारे संग उस के पुनरुत्थान का साक्षी होने के लिये स्थापित किया जावे । और उन्हों ने दो को उपस्थित किया अर्थात् योसेफ् को जो बर्षबा और युस्त भी कहावता था और मत्तित्या को और उन्हों ने प्रार्थना किई और कहा हे प्रभु सब के हृदयों के जाननेहारे प्रगट कर कि इन दो मनुष्यों में से तू ने किस को चुना है कि वह इस परिचर्य्या और प्रेरितत्व में वह स्थान पावे जिस से यहूदा पतित भया कि अपने निज स्थान को जावे । और उन्हों ने उन के लिये चिट्ठी डाली और चिट्ठी मत्तित्या के नाम पर निकली तब वह ग्यारह प्रेरितों के संग गिना गया ॥

सुसमाचार । प० मत्तय । ११ । २५ ।

उस काल येशू ने उत्तर देके कहा हे पिता स्वर्ग और पृथिवी के प्रभु मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि तू ने ये बातें ज्ञानियों और बुद्धिमानों से छिपाई और बच्चों पर प्रगट किईं हां हे पिता क्योंकि यही तेरी दृष्टि में अच्छा लगा । मेरे पिता ने सब कुछ मुझे सौंपा है और पिता को छोड़ पुत्र को कोई नहीं जानता और पुत्र को और जिसपर पुत्र उसे प्रगट करने चाहे उस को छोड़ कोई पिता को नहीं जानता । हे सब थके और बोझ से दबे लोगो मेरे पास आओ तो मैं तुम को विश्राम देऊंगा । मेरा जूआ अपने ऊपर धर लेओ और मुझ से सीखो क्योंकि मैं सौम्यस्वभाव और हृदय में नम्र हूं तो तुम अपने जीवों में विश्राम पाओगे । क्योंकि मेरा जूआ कोमल और मेरा बोझ हलका है ॥

धन्य कुमारी मिर्य्याम् का समाचार पाना

प्रार्थना

हे प्रभु हम विनती करते हैं हमारे हृदय में अपना अनुग्रह उंडेल कि जैसे हम ने एक दूत के सन्देश से तेरे पुत्र येशू खीष्ट के शरीर धारण का वृत्तान्त जाना है तैसे ही उस के क्रूस और दुःख भोगने के द्वारा उस के पुनरुत्थान की महिमा लों पहुंचाये जावें उसी हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन् ॥

पत्री को सन्ती। यशया।७।१०।

और प्रभु आहाज् से फिर बोला और कहा अपने ईश्वर प्रभु से कोई चिन्ह मांग चाहे नीचाई में का चाहे ऊपर ऊंचाई पर का। पर आहाज् ने कहा मैं नहीं मांगने का और न प्रभु की परीक्षा करूंगा। तब उस ने कहा हे दावीद् के घराने सुनो क्या मनुष्यों को थकाना तुम को ऐसी छोटी बात समझ पड़ती है कि तुम मेरे ईश्वर को भी थकाओगे। इस लिये प्रभु आप तुम को एक चिन्ह देवेगा देखो वह कुमारी गर्भ से है और पुत्र जननेहारी है और उस का नाम इम्मानूएल् रक्खेगी। वह मलाई और मधु खावेगा जिस्तें वह बुरे को अग्राह्य करने और भले को चुनने जाने ॥

सुसमाचार। प० लूका।१।२६।

और छठवें मास में गब्रीएल् दूत ईश्वर की ओर से गालील् के एक नगर में जिस का नाम नासरा था एक कुमारी के पास भेजा गया जिस की मंगनी योसेफ् नामक दावीद् के घराने के एक पुरुष से भई थी और कुमारी का नाम मिर्य्याम् था। और उस ने उस के पास भीतर

पवित्र मार्क का दिन

जाके कहा हे अनुगृहीता प्रणाम प्रभु तेरे संग है स्त्रियों में तू धन्य है। पर वह उस वचन से बहुत घबरा गई और विचार करने लगी कि यह प्रणाम किस प्रकार का है। और दूत ने उस से कहा हे मिर्याम् मत डर क्योंकि ईश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। और देख तू गर्भ से होवेगी और पुत्र जनेगी और उस का नाम येशू रक्खेगी। वह महान् होवेगा और परात्पर का पुत्र कहावेगा और प्रभु परमेश्वर उस को उस के पिता दावीद् का सिंहासन देवेगा और वह याकोब् के घराने पर युगानयुग राज्य करता रहेगा और उस के राज्य का अन्त न होगा। और मिर्याम् ने दूत से कहा जब कि मैं पुरुष को नहीं जानती तो यह क्योंकर होवेगा। और दूत ने उत्तर देके उस से कहा पवित्रात्मा तुझ पर आवेगा और परात्पर की शक्ति तुझ पर छाया करेगी इसी लिये वह पवित्र बालक जो उत्पन्न होनेहारा है ईश्वर का पुत्र कहावेगा। और देख तेरी नतैतिन एलीशेबा भी अपने बुढ़ापे में गर्भिणी भई है और जो बांझ कहावती थी उस का यह छठवां मास है। क्योंकि ईश्वर की कोई बात अशक्त न होवेगी और मिर्याम् ने कहा देख मैं प्रभु की दासी हूं तेरे वचन के अनुसार मेरे लिये होवे और दूत उस के पास से चलागया॥

पवित्र मार्क का दिन

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू ने अपनी पवित्र एक्लेसिया को अपने सुसमाचारी पवित्र मार्क की स्वर्गीय शिक्षा से ज्ञान दिया है हम को अनुग्रह दे कि बालकों की नाईं झूंठी शिक्षा के प्रत्येक झोंके से उड़ाये न जावें परन्तु तेरे पवित्र सुसमाचार के सत्य में दृढ़ हो जावें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पवित्र मार्क का दिन

पत्री । एफेसियों । ४ । ७ ।

हम में से प्रत्येक जन को खीष्ट के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह दिया गया । इस लिये वह कहता है वह ऊंचेपर चढ़ के बंधुवों को बंधुवा कर के ले गया और मनुष्यों को दान दिये । (और वह जो चढ़ा इस का अर्थ क्या है यही कि वह पहिले पृथिवी के निचले स्थानों में उतर गया था । जो उतरा था सो वही है जो समस्त स्वर्गों के ऊपर चढ़गया जिस्तें वह सब कुछ भर देवे ।) और उस ने कितनों को तो प्रेरित कर के दिया और कितनों को प्रवक्ता और कितनों को सुसमाचारि और कितनों को पालक और शिक्षक करके दिया । जिस्तें पवित्रों के पूर्ण होने के लिये परिचर्य्या का काम किया जावे और खीष्ट की देह की उन्नति होवे । जब लों हम सब के सब ईश्वर के पुत्र के विश्वास और ज्ञान की एकता को और पूर्ण पुरुष को और खीष्ट की पूर्ण डील के परिमाण को न पहुंचे । जिस्तें हम आगे को बच्चे न रहें कि मनुष्यों की माया से और धूर्त्तता से भरमानेहारों की युक्तियों के अनुसार शिक्षा के प्रत्येक झकोरे से लहराये और फिराये जावें । परन्तु प्रेम के साथ सत्य बर्त्ताव करते हुए सब बातों में बढ़ते बढ़ते उसी में जो सिर है अर्थात् खीष्ट में मिल जावें । उस के कारण से समस्त देह जो कुछ प्रत्येक गांठ से प्राप्त होता है उस के द्वारा जुटती और गठती हुई प्रत्येक अंग को उस कार्य्यकारिता के अनुसार जो वह परिमाण से करता है अपनी उन्नति के लिये प्रेम में देह की बढ़ती करती है ॥

सुसमाचार । प० योहानान् । १५ । १ ।

सच्ची दाखलता मैं हूं और मेरा पिता माली है । मुझ में जो डाली फल नहीं फलती उस को वह काट डालता है और जो फलफलती है

उस को वह शुद्ध करता है जिस्तें वह अधिक फल फले। अब तुम उस वचन के द्वारा जो मैं ने तुम से कहा है शुद्ध हो चुके हो। मुझ में बने रहो तो मैं तुम में बना रहूंगा। जैसे डाली आप से आप फल नहीं फल सकती पर केवल तब ही जब वह दाखलता में बनी रहती है तैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो फल नहीं फल सकोगे। दाखलता मैं हूं डालियां तुम हो जो मुझ में बना रहता है और जिस में मैं बना रहता हूं सोई बहुत फल फलता है क्योंकि मुझ से अलग तुम कुछ नहीं कर सकते। यदि कोई मुझ में बना नहीं रहता तो वह डाली के समान बाहर फेंका जाता और सूख जाता है और लोग उन्हें बटोर के आग में झोंक देते हैं और वे जल जाते हैं। यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो कुछ चाहो सो मांगो तो वह तुम्हारे लिये होवेगा। मेरे पिता की महिमा इसी में है कि तुम बहुत फल देओ और इसी प्रकार से तुम मेरे शिष्य हो जाओगे। जैसे मेरे पिता ने मुझ से प्रेम रक्खा तैसे ही मैं ने भी तुम से प्रेम रक्खा है मेरे प्रेम में बने रहो। यदि तुम मेरी आज्ञाओं को पालो तो तुम मेरे प्रेम में बने रहोगे जैसे मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को पाला है और उस के प्रेम में बना रहता हूं। ये बातें मैं ने इस लिये तुम से कही हैं कि मेरा आनन्द तुम में रहे और तुम्हारा आनन्द पूरा होवे॥

पवित्र फिलिप्प और पवित्र याकोब् का दिन

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तुझ को यथार्थ रीति से जानना अनन्त-जीवन है हम को यह वर दे कि हम तेरे पुत्र येशू ख्रीष्ट को निश्चय कर के जानें कि मार्ग और सत्य और जीवन वही है जिस्तें हम पवित्र

पवित्र फिलिप्प और पवित्र याकोब् का दिन

फिलिप्प और पवित्र याकोब् तेरे धन्य प्रेरितों के चरण चिन्ह पर चल के उस मार्ग में जो अनन्तजीवन लों पहुंचाता है दृढ़ता से चलें उसी हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

पत्री । याकोब् । १ । १ ।

याकोब् का जो ईश्वर और प्रभु येशू ख्रीष्ट का दास है उन बारह गोत्रों को जो तितर बितर हैं प्रणाम । हे मेरे भाइयो जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो तो पूरा आनन्द समझो क्योंकि जानते हो कि तुम्हारे विश्वास के जाचने से सहनशीलता उत्पन्न होती है । परन्तु सहनशीलता अपना पूर्ण काम करने पावे जिस्तें तुम पूर्ण और न्यूनता रहित होओ और तुम में कुछ घटी न होवे । परन्तु यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी होवे तो वह ईश्वर से मांगे जो सब को उदारता से देता और दोष नहीं देता तो उस को दिई जावेगी । पर वह विश्वास ही से बिना दुबधा किये मांगे क्योंकि जो दुबधा करता है सो समुद्र की लहर के समान है जो वायु से चलाई और उछाली जाती है । क्योंकि ऐसा मनुष्य न समझे कि मुझ को प्रभु से कुछ मिलेगा वह तो दुचित्ता मनुष्य और अपने सब मार्गों में चंचल है । परन्तु जिस भाई का छोटा पद हो सो अपनी उंचाई पर घमंड करे और धनवान अपनी छोटाई पर क्योंकि वह घास के फूल की नाईं जाता रहेगा । क्योंकि जब सूर्य्य उदय हुआ और लूह चलने लगी तब घास सूख गई और उस का फूल गिर गया और उस के रूप की सुन्दरता नष्ट भई इसी प्रकार धनवान भी अपनी चालों में मुरझावेगा । धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा को सहता है क्योंकि जब वह खरा ठहरे तब जीवन के उस मुकुट को पावेगा जिस की प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेमियो से किई है ॥

पवित्र फ़िलिप्य और पवित्र याकोब् का दिन

सुसमाचार । प० योहानान् । १४ । १ ।

और येशू ने अपने शिष्यों से कहा तुम्हारा हृदय न घबरावे तुम ईश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रक्खो । मेरे पिता के घर में बहुत से वासस्थान हैं नहीं तो मैं तुम से कहता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये स्थान सिद्ध करने को जाता हूं । और यदि मैं जाऊं और तुम्हारे लिये स्थान सिद्ध करूं तो मैं फिर आऊंगा और तुम को अपने पास समेट लेऊंगा जिस्तें जहां मैं हूं तहां तुम भी होओ । और जहां मैं जाता हूं वहां के मार्ग को तो तुम जानते हो । तोमा ने उस से कहा हे प्रभु हम नहीं जानते कि तू कहां जाता है तो हम मार्ग को कैसे जानें । येशू ने उस से कहा मार्ग और सत्य और जीवन मैं हूं बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं जा सकता । यदि तुम मुझे जानते तो पिता को भी जानते अब से तुम उस को जानते हो और उस को देखा भी है । फ़िलिप्य ने उस से कहा हे प्रभु पिता को हमें दिखा तो हमारे लिये बहुत है । येशू ने उस से कहा हे फ़िलिप्य क्या मैं इतने काल से तुम्हारे संग हूं और तू ने मुझे नहीं जाना जिस ने मुझे देखा उसने पिता को भी देखा है तू क्योंकर कहता है कि पिता को हमें दिखा । क्या तू विश्वास नहीं करता कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है जो बातें मैं तुम से कहता हूं सो अपनी ओर से नहीं कहता पर पिता मुझ में रह के अपने कार्य्य करता है । मेरी प्रतीति करो कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है और नहीं तो मेरे कर्म्मों ही के कारण से मेरी प्रतीति करो । मैं तुम से सत्य सत्य कहता हूं जो मुझ पर विश्वास करता है जो कर्म्म मैं करता हूं सो वह भी करेगा और इन से बड़े भी करेगा इस लिये कि मैं पिता के पास जाता हूं । और मेरे नाम में तुम जो कुछ मांगो सो मैं करूंगा जिस्तें पुत्र के द्वारा पिता की महिमा होवे । यदि तुम मेरे नाम में मुझ से कुछ मांगो तो मैं उसे करूंगा ॥

पवित्र बर्णबूआ प्रेरित

प्रार्थना

हे प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान् तू ने अपने पवित्र प्रेरित बर्णबूआ को पवित्रात्मा के अद्भुत दानों से आभूषित किया हम विनती करते हैं कि तू हम को अपने नाना प्रकार के दानों से रहित न रख और न उस अनुग्रह से जिस से हम उन को सदा तेरी प्रतिष्ठा और महिमा के लिये काम में ले आवें। हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री की सन्ती। प्रेरितों। ११। २२

इन की चर्चा उस एक्लेसिया के कान लों जो यरूशलेम् में थी पहुंची और उन्हों ने बर्णबूआ को अन्त्योखिया लों भेज दिया। वह जब पहुंचा और ईश्वर के अनुग्रह को देखा तब आनन्दित भया और उन सब को समझाने लगा कि मन के दृढ़ संकल्प से प्रभु से मिले रहो। क्योंकि वह भला मनुष्य और पवित्रात्मा और विश्वास से परि-पूर्ण था और बहुत से लोग प्रभु से मिलाये गये। तब वह शाऊल् के ढूंढ़ने को तार्स गया और उस को पाके अन्त्योखिया में ले आया। और ऐसा हुआ कि बरस भर वे एक्लेसिया में एकट्ठे हुआ करते थे और बहुत से लोगों को सिखाते थे। और शिष्य पहिले अन्त्योखिया ही में ख्रीष्टियान कहलाये। और उन दिनों में कितने प्रवक्ता यरूशलेम् से अन्त्योखिया में उतर आये। और उन में से एक जिस का नाम अगब था खड़ा हुआ और पवित्रात्मा के द्वारा बताया कि समस्त भूमण्डल में बड़ा काल पड़ेगा सो क्लौद्य के राज्य में पड़ा भी। तब शिष्यों में से प्रत्येक ने अपनी शक्ति के अनुसार यहूदा के रहनेहारे भाइयों की सहाय के लिये कुछ भेजने को ठाना और उन्हों ने ऐसा ही किया अर्थात् बर्णबूआ और शाऊल् के हाथ से उस को पुरनियों के पास भेज दिया।

पवित्र योहानान् बप्तिस्ते का दिन

सुसमाचार । प० योहानान् । १५ । १२ ।

मेरी आज्ञा यह है कि जैसे मैं ने तुम से प्रेम किया तैसे ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रक्खो । इस से बड़ा प्रेम कोई नहीं करता कि अपने मित्रों के लिये अपना प्राण देवे जिन बातों की आज्ञा मैं तुम को देता हूं उन को यदि तुम करो तो मेरे मित्र हो । मैं तुम को अब से दास न कहूंगा क्योंकि दास नहीं जानता कि उस का प्रभु क्या करता है परन्तु मैं ने तुम को मित्र कहा है क्योंकि जितनी बातें मैं ने अपने पिता से सुनी हैं सब मैं ने तुम्हें विदित किईं । तुम ने मुझे नहीं चुना पर मैं ने तुम्हें चुना और तुम को ठहराया कि तुम जाओ और फलो और तुम्हारा फल बना रहे जिस्तें जो कुछ तुम मेरे नाम में पिता से मांगो सो वह तुम को देवे ॥

पवित्र योहानान् बप्तिस्त का दिन

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तेरे प्रबन्ध से तेरा सेवक योहानान् बप्तिस्ता अद्भुत रीति से जन्मा और पश्चात्ताप के प्रचारने से तेरे पुत्र हमारे त्राता का मार्ग बनाने के लिये भेजा गया हम को उस की शिक्षा और पवित्र आचरण के ऐसे अनुगामी कर कि उस के प्रचार के अनुसार सच्चा पश्चात्ताप करें और उस के उदाहरण के समान दृढ़ता से सच बोलें निडर होके पाप को डांटें और सत्य के लिये धीरज से दुःख सहें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

पत्री की सन्ती । यशया । ४० । १ ।

तुम्हारा ईश्वर कहता है कि मेरे निज लोगों को शान्ति देओ उन्हें

पवित्र योहानान् बप्तिस्ते का दिन

शांति देओ। यरूशलेम् के मन को प्रबोधदायक बातें कहो और उस से पुकार के कहो कि तेरी लड़ाई का समय समाप्त भया और तेरा अधर्म्म क्षमा किया गया क्योंकि तू ने प्रभु के हाथ से अपने सब पापों का दूना दण्ड पाया है। एक पुकारनेहारे की वाणी हुई कि वन में प्रभु के मार्ग को बनाओ मरूभूमि में हमारे ईश्वर के लिये एक राजमार्ग को सोधा करो। प्रत्येक खढ भर दिया जावेगा और प्रत्यक पहाड़ और पहाड़ी नीची किई जावेगी और जो टेढ़ा है सो सोधा और जो ऊंचा नोचा है सो समथर हो जावेगा। और प्रभु की महिमा प्रगट होगी और समस्त मनुष्य उस को एक संग देखेंगे क्योंकि प्रभु ने अपने श्रीमुख से यह कहा है। एक की वाणी हुई कि पुकार। और किसी ने कहा मैं क्या पुकारूं समस्त मनुष्य तो घास ही हैं और उन का सारा विभव चौगान के फूल की नाईं। घास सूख गई और फूल भी मुरझा गया क्योंकि प्रभु ने उसपर सांस फूंकी निश्चय लोग घास ही हैं। हां घास तो सूख गई और फूल मुरझा गया परन्तु हमारे ईश्वर का वचन सदा लों स्थिर रहेगा। हे सिय्योन् को सुसमाचार देनेहारी ऊंचे पहाड़ पर चढ़ जा हे यरूशलेम् को सुसमाचार देनेहारी अपने शब्द को बल से उठा उस को उठा मत डर यहूदा के नगरों से कह कि देखो अपने ईश्वर को। देखो प्रभु भगवान् पराक्रमी होके आवेगा और उस की भुजा उस के लिये शासन करेगी देखो उस का वेतन उस के संग है और उस का प्रतिफल उस के आगे। वह गड़ेरिये के समान अपनी झुण्ड को पालेगा वह मेम्नों को अपने बांहुबल से एकट्ठा करेगा और उन्हें अपनी गोद में उठाये चलेगा और दूध पिलानेहारियों को धीरे धीरे ले चलेगा॥

सुसमाचार। प० लूका।१।५७।

एलीशिबा के जनने का समय पूरा हुआ और वह पुत्र जनी। और

पवित्र योहानान् बप्तिस्ते का दिन

उस के पड़ोसियों और नतैतों ने सुना कि प्रभु ने उसपर बड़ी दया किई है और उन्हों ने उस के संग आनन्द किया। और आठवें दिन ऐसा हुआ कि वे बालक का परिच्छद करने के लिये आये और वे उस का नाम उस के पिता जकर्य्या के नाम के अनुसार रखने लगे। पर उस की माता ने उत्तर देके कहा नहीं पर वह योहानान् कहावेगा। और उन्हों ने उस से कहा तेरे नाते में इस नाम का कोई नहीं है। और वे उस के पिता से सैन कर के पूछने लगे कि तू उस का क्या नाम रखने चाहता है। और उस ने पटिया मंगवा के लिखा कि उस का नाम योहानान् है। और उन सभों ने आश्चर्य्य माना। और तत्क्षण उस का मुख और उस की जीभ खुल गई और वह बोलने और ईश्वर का धन्यवाद करने लगा। और उन के आस पास के सब रहनेहारों को भय भया और यहूदा के समस्त पहाड़ी देश में इन बातों की चर्चा फैलने लगी। और जितनों ने सुना सभों ने उन्हें अपने हृदय में रक्खा और कहा भला यह लड़का कैसा होवेगा। और प्रभु का हाथ उस के संग रहा। और उस का पिता जकर्य्या पवित्रात्मा से भर गया और यह प्रवचन किया कि धन्य होवे प्रभु यिस्राएल् का ईश्वर कि उस ने अपने निज लोगों पर दृष्टि किई और उन्हें छुड़ा लिया है। और हमारे लिये त्राण का सींग अपने सेवक दावोद् के घर में स्थापित किया है। जैसा वह अपने पवित्र प्रवक्ताओं के मुख से बोला जो प्राचीनकाल से होते आये हैं। हमारे शत्रुओं से और हमारे सब बैरियों के हाथ से त्राण। हमारे पुरखाओं पर दया करने को और अपनी पवित्र वाचा स्मरण करने को। जिस क्रिरिया को उस ने हमारे पिता अब्राहाम् से खाई कि वह हमें यह देवेगा। कि हम अपने शत्रुओं के हाथ से छुटकारा पाके निर्भयता से। उस के साम्हने पवित्रता और धार्मिकता से अपने जीवन भर उस की उपासना करें। और तू हे बालक परात्पर का प्रवक्ता कहावेगा क्योंकि तू प्रभु के मार्ग बनाने के

लिये उस के आगे आगे चलेगा। कि उस के निज लोगों को उन के पापमोचन के द्वारा त्राण का ज्ञान देवे। हमारे ईश्वर के अति छोह के कारण जिस के द्वारा सूर्य्योदय ऊपर से हम पर भया। उन्हें प्रकाशित करने को जो अंधेरे और मृत्यु की छाया में बैठे हैं हमारे पांव शान्ति के मार्ग में सीधा पहुंचाने को। और बालक बढ़ता और आत्मा में सामर्थ पाता गया और यिस्राएल् को दिखाई देने के दिन लों बन में रहा।

पवित्र पेत्र का दिन

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू ने अपने पुत्र येशू खीष्ट के द्वारा अपने प्रेरित पवित्र पेत्र को बहुत से उत्तम दान देके उस को आज्ञा दिई कि मेरी झुण्ड को जी लगाके चरा हम बिनती करते हैं कि तू ऐसा कर कि सब बिशप और पालक तेरे पवित्र वचन को यत्न से प्रचारें और मण्डली के लोग अधीनता से उस के अनुसार चलें जिस्तें वे अनन्त महिमा का मुकुट पावें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री की सन्ती। प्रेरितों।१२।१

उस समय में हेरोद राजा ने एक्लीसिया में से कितनों को दुःख देने के लिये अपना हाथ बढ़ाया। और उस ने योहानान् के भाई याकोब् को खड्ग से मार डाला। और जब देखा कि यहूदी इस से प्रसन्न हैं तब उस ने पेत्र को भी पकड़ा और उस समय बिनखमीर रोटी के दिन थे। सो उस को पकड़ के उस ने बन्दीगृह में डाला और सोलह योद्धाओं को सौंप दिया कि चार चार उस की रक्षा करें

और उस की यह इच्छा थी कि पस्खा के अनन्तर उस को लोगों के साम्हने लावे। सो पेत्र तो बन्दीगृह में पहरुओं के पहरे में रहा पर एक्लेसिया उस के लिये ईश्वर से जी लगा के प्रार्थना करती रही। और जब हेरोद उस को बाहर लानेपर था उसी रात को पेत्र दो योद्धाओं के मध्य में दो सिकड़ियों से बंधा हुआ सोता था और द्वार के साम्हने पहरुये पहरा देते रहे। और देखो प्रभु का एक दूत उपस्थित भया और उस घर में ज्योति चमकी और उस ने पेत्र के पांजर पर मारके उस को उठाया और कहा फुर्ती से उठ। और उस की सिकड़ियां उस के हाथों पर से गिरपड़ीं। तब दूत ने उस से कहा अपनी कटि कस और अपने जूते पहिन। और उस ने ऐसा ही किया। तब उस ने उस से कहा अपना वस्त्र ओढ़ और मेरे पीछे हो ले। और वह बाहर जाके उस के पीछे चलने लगा और जानता नहीं था कि जो दूत कर रहा है सो सच है परन्तु वह समझता था कि मैं दर्शन देख रहा हूं। और जब वे पहिली और दूसरी चौकी से निकल चुके तो उस लोहे के फाटक पर जिस से होके नगर में जाते थे आये और वह आप से आप उन के लिये खुल गया और आगे जाके वे एक गली के अंत लों बढ़ गये और तुरन्त दूत उस से अलग हुआ। तब पेत्र ने सचेत होके कहा अब मैं निश्चय जान गया कि प्रभु ने अपने दूत को भेजा और मुझ को हेरोद के हाथ से और यहूदी प्रजा की सम्पूर्ण आशा से बचाया है॥

सुसमाचार। प० मत्तय।१६।१३।

जब येशू फिलिप्य की कैसरिया के प्रदेश में आया तब उस ने अपने शिष्यों से पूछा कि मनुष्य क्या कहते हैं कि मनुष्य का पुत्र कौन है उन्हों ने कहा कितने तो योहानान् बप्तिस्ता कहते हैं और

कितने एलिया और दूसरे यिर्मया वा प्रवक्तागण में से एक कहते हैं। उसने उनसे कहा पर तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूं शिमोन् पेत्र ने उत्तर देके कहा तू जीवते ईश्वर का पुत्र ख्रीष्ट है। येशू ने उत्तर देके उससे कहा धन्य है तू हे शिमोन् बर्योना क्योंकि मांस और रुधिर ने यह बात तुझ पर प्रगट नहीं किई पर मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है। और मैं तुझ से कहता हूं कि तू पेत्र है और इसी चटान पर मैं अपनी एक्लेसिया को बनाऊंगा और पाताल के फाटक उसपर प्रबल न होवेंगे। मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां देऊंगा और जो कुछ तू पृथिवी पर बांधे सो स्वर्ग में बंधा रहेगा और जो कुछ तू पृथिवी पर खोले सो स्वर्ग में खुला रहेगा॥

पवित्र याकोब् प्रेरित

प्रार्थना

हे दयालु ईश्वर यह वर दे कि जैसे तेरा धन्य प्रेरित पवित्र याकोब् अपना बाप और अपना सब कुछ छोड़के तत्क्षण तेरे पुत्र येशू ख्रीष्ट की बुलाहट को मान के उसका अनुगामी भया वैसे ही हम भी सब सांसारिक और शारीरिक इच्छाओं को त्याग के सदा तेरी पवित्र आज्ञाओं के अनुसार चलने पर सिद्ध रहें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री की सन्ती। प्रेरितों। ११। २७।

और उन दिनों में कितने प्रवक्ता यरूशलेम् से अन्तियोखिया में उतर आये। और उनमें से एक जिसका नाम अगब था खड़ा हुआ और पवित्रात्मा के द्वारा बताया कि समस्त भूमण्डल में बड़ा काल

पड़ेगा सो क्लौदा के राज्य में पड़ा भी । तब शिष्यों में से प्रत्येक ने अपनी शक्ति के अनुसार यहूदा के रहनेहारे भाइयों को सहाय के लिये कुछ भेजने को ठाना और उन्हों ने ऐसा ही किया अर्थात् बर्णबूआ और शाऊल् के हाथ से उस को पुरनियों के पास भेज दिया । उस समय में हेरोदा राजा ने एक्लेसिया में से कितनों को दुःख देने के लिये अपना हाथ बढ़ाया । और उस ने योहानान् के भाई याकोब् को खड्ग से मारा । और जब देखा कि यहूदी इस से प्रसन्न हैं तब उस ने पेत्र को भी पकड़ा ॥

सुसमाचार । प० मत्तय । २० । २० ।

तब जब्दी के पुत्रों की माता अपने पुत्रों समेत उस के पास आई और उस को दण्डवत कर के उस से एक वर मांगने लगी । उस ने उस से पूछा तू क्या चाहती है । उस ने उस से कहा आज्ञा कर कि तेरे राज्य में मेरे ये दो पुत्र एक तेरी दहिनी ओर और दूसरा तेरी बाईं ओर बैठने पावें । येशू ने उत्तर देके कहा तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो जो कटोरा मैं पीने पर हूं क्या तुम उस को पी सकते हो । उन्हों ने उस से कहा हम सकते हैं । उस ने उन से कहा हां मेरा कटोरा तो तुम पीओगे पर मेरी दहिनी ओर बाईं ओर बैठने देना मेरा काम नहीं पर जिन के लिये मेरे पिता ने उस को सिद्ध किया है उन्हीं के लिये है । और जब दस प्रेरितों ने यह बात सुनी तब उन दो भाइयों से अप्रसन्न हुए । तब येशू ने उन्हें बुला के कहा तुम जानते हो कि अन्यजातियों के अधिपति उनपर प्रभुता रखते हैं और उन में जो बड़े होते हैं सो उनपर अपना अधिकार जताते हैं । पर तुम में ऐसा न होवेगा वरन तुम में जो कोई बड़ा होने चाहे सो तुम्हारा परिचारक होवेगा । और तुम में जो कोई प्रथम

होने चाहे सो तुम्हारा दास होवेगा जैसे मनुष्य का पुत्र भी इस लिये नहीं आया कि अपनी परिचर्य्या करावे पर इस लिये कि परिचर्य्या करे और अपने प्राण को बहुतों के छुटकारे के दाम में देवे ॥

पवित्र बर्त्तल्मै प्रेरित

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् और सनातन ईश्वर तू ने अपने प्रेरित बर्त्तल्मै को अनुग्रह दिया कि उस ने तेरे वचन पर सच्चा विश्वास किया और उस को प्रचारा हम बिनती करते हैं अपनी एक्लीसिया को यह वर दे कि जिस वचन पर उस ने विश्वास किया उस से प्रीति रक्खे और उसे प्रचारे और ग्रहण भी करे हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

पत्री की सन्ती । प्रेरितों । ५ । १२ ।

प्रेरितों के हाथों से बहुत से आश्चर्य्यकर्म्म और अचम्भे लोगों में होते रहे और सब के सब एक मन से शलोमो के ओसारे में रहे । अरु औरों में से किसी का हियाव नहीं पड़ता था कि उन में मिल जावे परन्तु लोग उन की बड़ाई करते थे । और पुरुष और स्त्री मण्डली की मण्डली विश्वास कर करके प्रभु से मिलाये जाते थे । यहां लों कि लोग रोगियों को सड़कों में भी ला लाके खाटों और बिछौनों पर रख देते थे जिस्तें जब पेत्र उधर से जावे तब उस की छाया तो भी उन में से किसी पर पड़े । और यरूशलेम् की चारों ओर के नगरों से भी बहुत से लोग रोगियों और अशुद्ध आत्माओं से सताये हुए मनुष्यों को लेके एकट्ठे होते थे और वे सब के सब चंगे होते थे ॥

पवित्र मत्तय प्रेरित

सुसमाचार । प० लूका । २२ । २४

और उन में इस बात का झगड़ा भी भया कि हम में से कौन बड़ा समझा जाता है । और उस ने उन से कहा अन्यजातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं और जो उन पर अधिकार रखते हैं सोई उपकारी कहावते हैं । पर तुम ऐसे न हो पर तुम में से जो बड़ा होवे सो कनिष्ठ की नाईं और जो प्रधान है सो परिचारक सा होवे । क्योंकि कौन बड़ा है जो भोजन पर बैठा है अथवा जो परिचर्य्या करता है क्या वह नहीं जो भोजन पर बैठा है परन्तु मैं तुम्हारे बीच में परिचारक बना हूं । पर तुम ही हो जो मेरी परीक्षाओं में मेरे संग लगातार रहे हो और मैं तुम्हारे लिये एक राज्य ठहराता हूं जैसा मेरे पिता ने मेरे लिये ठहराया है कि तुम मेरे राज्य में मेरे भोजनमंच पर खाओ पीओ और सिंहासनों पर बैठे हुए यिस्राएल् के बारह गोत्रों का न्याय करो ॥

पवित्र मत्तय प्रेरित

प्रार्थन

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू ने अपने धन्य पुत्र के द्वारा मत्तय को कर की चौकी पर से बुलाया कि प्रेरित और सुसमाचारी होवे हम को यह अनुग्रह दे कि सब लोभ और धन की अनुचित प्रीति को त्याग के उसी तेरे पुत्र येशू ख्रीष्ट के अनुगामी होवें वह तेरे और पवित्रात्मा के संग एक ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता है । आमेन् ॥

पत्री । २ करिन्थियों । ४ । १ ।

इस लिये जब कि यह परिचर्य्या हम को मिली तो जैसे हम पर दया भई हम ढाढ़स नहीं खोते पर हम ने लज्जा की गुप्त बातों से

हाथ धोये श्रार न धूर्त्तता में चलते न ईश्वर के वचन में मिलौनी करते हैं पर सत्य के प्रगट करने से अपनी प्रशंसा प्रत्येक मनुष्य के अन्तर्विवेक से ईश्वर के साम्हने कराते हैं। श्रार यदि हमारा सुस-माचार गुप्त भी है तो नाश होनेहारों ही से गुप्त है कि उन में इस संसार के ईश्वर ने अविश्वासियों के मन का अन्धा कर दिया न होवे कि खीष्ट जो ईश्वर का प्रतिरूप है तिस की महिमा के सुसमा-चार का प्रकाश उन पर उदय होवे। क्योंकि हम अपना प्रचार नहीं करते पर खीष्ट येशू का प्रभु कहके प्रचारते हैं श्रार अपने का येशू के कारण से तुम्हारे दास ही कर के प्रचारते हैं। क्योंकि जिस ने कहा कि अन्धकार से उंजियाला चमके उसी ईश्वर ने हमारे हृदयों में प्रकाश किया कि येशू खीष्ट के मुख में ईश्वर की महिमा के ज्ञान का प्रकाश हम को देवे॥

सुसमाचार। प० मत्तय। ६। ६

श्रार जब येशू उधर से चला जाता था तब उस ने मत्तय नामक एक मनुष्य को कर की चौकी पर बैठे देखा श्रार उस से कहा मेरे पीछे हो ले। श्रार वह उठ के उस के पीछे हो लिया। श्रार ऐसा हुआ कि जब वह घर में भोजनपर बैठा था तब देखो बहुत से करग्राहक श्रार पापी आके येशू श्रार उस के शिष्यों के संग बैठ गये। श्रार फरी-शियों ने जब देखा तब उस के शिष्यों से कहा तुम्हारा गुरू करग्रा-हकों श्रार पापियों के संग क्यों खाता है। श्रार उस ने यह सुन के कहा जो भले चंगे हैं उन को वैद्य का प्रयोजन नहीं होता पर रोगियों ही को होता है। पर तुम जाके इस का अर्थ सीखो कि मैं बलिदान नहीं पर दया चाहता हूं क्योंकि मैं धर्म्मियों को नहीं पर पापियों ही को बुलाने आया।

पवित्र मीकाएल् और समस्त दूत

प्रार्थना

हे सनातन ईश्वर तू ने दूतों और मनुष्यों की सेवकाइयों को अद्भुत प्रबन्ध से नियुक्त और स्थापित किया है दया से यह वर दे कि जैसे तेरे पवित्र दूत स्वर्ग में निरन्तर तेरी सेवा करते हैं वैसे ही वे तेरे प्रबन्ध से पृथ्वी पर हमारी सहायता और रक्षा करें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

पत्री की सन्ती । प्रकटीकरण । १२ । ७ ।

और स्वर्ग में लड़ाई भई मीकाएल् और उस के दूत अजगर से लड़ने को निकले और अजगर और उस के दूत लड़े परन्तु प्रबल न हुए और न उन का स्थान फिर स्वर्ग में रहा । और वह बड़ा अजगर अर्थात् वह प्राचीन सर्प जो दुष्टात्मा और सात्तान् कहावता है और समस्त भूमंडल को भरमाता है गिरा दिया गया वह पृथिवी पर गिराया गया और उस के दूत उस के संग गिराये गये । और मैं ने स्वर्ग में एक बड़ी वाणी सुनी जो यह कहती थी कि अब हमारे ईश्वर का त्राण और सामर्थ्य और राज्य और उस के खीष्ट का अधिकार आया है क्योंकि हमारे भाइयों का अपवादी जो हमारे ईश्वर के साम्हने रात दिन उन पर अपवाद लगाता था गिरादिया गया । और वे मेम्ने के लहू और अपनी साक्षी के वचन के द्वारा उस को जीत गये और उन्हों ने अपने प्राण से यहां लों प्रीति न रक्खी कि मरने को सिद्ध भये । इस लिये हे स्वर्ग और उस के वासियो आनन्द करो । हाय पृथिवी और समुद्र पर क्योंकि दुष्टात्मा यह जान के कि मेरा समय थोड़ा ही है बड़ा क्रोध करके तुम्हारे पास उतर गया है

सुसमाचार । प० मत्तय । १८ । १ ।

उसी घड़ी शिष्य येशू के पास आके पूछने लगे कि भला स्वर्ग के

राज्य में बड़ा कौन है। और उस ने एक बालक बुला के उसे उन के मध्य में खड़ा किया और कहा मैं तुम से सत्य कहता हूं कि यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न होओ तो स्वर्ग के राज्य में कदापि प्रवेश न करोगे। सो जो कोई अपने को इस बालक की नाईं छोटा करे सोई स्वर्ग के राज्य में बड़ा है। और जो कोई ऐसे एक बालक को मेरे नाम पर ग्रहण करे सो मुझ को ग्रहण करता है। परन्तु जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलावे उस के लिये यही अच्छा है कि बड़ी चक्की का पाट उस के गले में बांधा जावे और वह समुद्र के गहिराव में डुबाया जावे। ठोकरों के कारण से संसार पर हाय। क्योंकि अवश्य तो है कि ठोकरें आवें परन्तु हाय उस मनुष्य पर जिस के द्वारा ठोकर आती है। पर यदि तेरा हाथ वा तेरा पांव तुझ को ठोकर खिलावे तो उस को काट के अपने पास से फेंक दे लूला वा लंगड़ा होके जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो हाथ वा दो पांव रखते हुए सदा की आग में डाला जावे। और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलावे तो उस को निकाल और अपने पास से फेंक दे काना होके जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दोनों आंखे रखते हुए नरकाग्नि में डाला जावे। सावधान रहो कि इन छोटों में से एक को तुच्छ न समझो क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि स्वर्ग में उन के दूत मेरे पिता का जो स्वर्ग में है निरन्तर मुख देखते हैं।

पवित्र लूका सुसमाचार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू ने लूका वैद्य को जिस की प्रशंसा सुस-माचार में है सुसमाचारी और आत्मा का वैद्य होने को बुलाया कृपा

कर के ऐसा कर कि उस की शिक्षा के आरोग्यदायक औषधों से हमारे आत्मा के सब रोग दूर हो जावें तेरे पुत्र हमारे प्रभु येशू खीष्ट के पुण्य के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। २ तीमथेय। ४। ५।

तू सब बातों में संयमी रह दुःख सह सुसमाचारी का काम कर अपनी परिचर्य्या को पूरा कर। क्योंकि मेरा रुधिर तो अभी तपावन की नाईं बहाया जाता है और मेरे कूच करने का समय आन पहुंचा है। मैं भली लड़ाई को लड़ चुका मैं दौड़ को समाप्त कर चुका मैं ने विश्वास की रक्षा किई है। अब मेरे लिये धर्म्म का वह मुकुट धरा हुआ है जिसे प्रभु जो धर्म्मी न्यायी है उस दिन मुझ को देवेगा और केवल मुझी को नहीं पर उन सब को भी जिन्हों ने उस के प्रगट होने से प्रीति रक्खी हो। मेरे पास शीघ्र आने के लिये यत्न कर क्योंकि देमा इस वर्त्तमान संसार से प्रीति रख के मुझ को छोड़ गया और थेस्सलोनीका को चला गया। क्रेस्केन्त् गलतिया को और तित दल्म-तिया को गया। केवल लूका ही मेरे संग है। मार्क को अपने संग ले आ क्योंकि वह परिचर्य्या के लिये मेरे काम का है। और तुखिक को मैं ने एफेस भेज दिया। जो चोगा मैं त्रोअद् में कर्प के पास छोड़ आया सो लेता आ और पुस्तकों को भी विशेष करके चर्म्मपत्रों को। अलेक्सन्द्र ठठेरे ने मुझ से बहुत कुव्यवहार किया पर प्रभु उस के कर्म्मों के अनुसार उस को प्रतिफल देवेगा। तू भी उस से बचा रह क्योंकि उस ने हमारी बातों का निपट विरोध किया॥

सुसमाचार। प० लूका। १०। १।

प्रभु ने और सत्तर जन स्थापित किये और उन्हें प्रत्येक नगर और

स्थान में जहां वह आप जाया चाहता था दो दो करके अपने आगे भेज दिया। और उस ने उन से कहा पक्के खेत तो बहुत हैं पर बनिहार थोड़े ही हैं इस लिये खेतों के स्वामी से बिनती करो कि वह अपने खेतों में बनिहार भेजे। जाओ देखो मैं तुम को ऐसा भेजता हूं जैसे मेम्ने भेड़ियों के बीच में भेजे जावें। अपने संग न बटुआ न झोला न जूते ले जाओ और मार्ग में किसी को प्रणाम न करो। और जिस किसी घर में तुम प्रवेश करो पहिले कहो इस घर को शान्ति मिले। और यदि शांति का पुत्र वहां होवे तो तुम्हारी शांति उसपर ठहरेगी नहीं तो वह तुम्हारे पास पलट आवेगी। और उस घर में रह के जो कुछ वे देवें सोई खाते पीते रहो क्योंकि बनिहार अपनी बनि के योग्य है॥

पवित्र शिमोन और पवित्र यहूदा प्रेरित

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू ने अपनी एक्लेसिया को प्रेरितों और प्रवक्ताओं की नेव पर बनाया जिसके कोने के सिरे का पत्थर येशू ख्रीष्ट आप है हमें यह वर दे कि उन की शिक्षा से आत्मा की एकता में ऐसे जुट जावें कि तेरे ग्रहण योग्य पवित्र मन्दिर बन जावें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। यहूदा। १।

यहूदा का जो येशू ख्रीष्ट का दास और याकोब् का भाई है उन के लिये जो बुलाये हुए और ईश्वर पिता में प्रिय और येशू ख्रीष्ट के लिये रक्षित हैं यह आशीर्वाद कि दया और शांति और प्रेम तुम को

अधिक अधिक मिलता जावे। हे प्रियो जब मैं तुम को सामान्य त्राण के विषय में लिखने के लिये बड़ा यत्न करता था तब मुझे अवश्य हुआ कि तुम को लिख के उपदेश करूं कि जो विश्वास पवित्रों को सदा के लिये एक बार सौंपा गया उस के निमित्त उद्योग से लड़ते रहो। क्योंकि कितने ऐसे मनुष्य छिपके घुस आये हैं जिन की चर्चा प्राचीनकाल में भी शास्त्र में हुई सो अभक्त हैं और हमारे ईश्वर के अनुग्रह को लंपटता से बदल देते और हमारे एक ही स्वामी और प्रभु येशू ख्रीष्ट का अनंगीकार करते हैं। परन्तु मैं तुम को स्मरण कराने चाहता हूं यद्यपि तुम आगे ये सब बातें जानते थे कि प्रभु ने लोक-गण को मिसर के देश से छुड़ा के पीछे उन को जो विश्वास नहीं रखते थे नाश किया। और जिन दूतों ने अपनी प्रभुता को खो दिया और अपने निज निवासस्थान को छोड़ दिया उन को उस ने बड़े दिन के न्याय के लिये अनन्त बंधनों से अन्धकार में जकड़ रक्खा है। उसी प्रकार से सदोम् और अमोरा और उनके आस पास के नगर जब उन के समान वेश्यागमन में फंस गये और पराये शरीर के पीछे हो लिये तो अनन्त अग्नि का दण्ड सहने से उदाहरण ठहर गये हैं। तौ भी इसी प्रकार से ये लोग अपनी मनभावनाओं में शरीर को मलिन करते और प्रभुता को तुच्छ करते और बड़ों की निन्दा करते हैं॥

सुसमाचार। प० योहानान्। १५। १७।

ये आज्ञायें मैं तुम को इस लिये देता हूं कि तुम एक दूसरे से प्रेम रक्खो। यदि संसार तुम से बैर रक्खे तो तुम जानते हो कि तुम से पहिले उस ने मुझ से भी बैर रक्खा। यदि तुम संसार के होते तो संसार जो अपना है उस से प्रीति रखता पर तुम जो संसार के नहीं हो वरन मैं ने तुम को संसार में से चुना इस लिये संसार तुम से बैर रखता है। जो वचन मैं ने तुम से कहा कि दास अपने स्वामी

से बड़ा नहीं होता उस को स्मरण रक्खो । यदि उन्हों ने मुझ को सताया तो तुम को भी सतावेंगे यदि उन्हों ने मेरे वचन को पाला तो तुम्हारे वचन को भी पालेंगे । परन्तु वे ये सब काम तुम से मेरे नाम ही के हेत करेंगे क्योंकि जिस ने मुझ को भेजा उस को वे नहीं जानते । यदि मैं न आता और उन से न बोलता तो उन का पाप न होता पर अब उन के पाप के लिये उन के पास कोई बहाना नहीं। जो मुझ से बैर रखता है सो मेरे पिता से भी बैर रखता है । यदि मैं उन के बीच ऐसे कर्म्म न करता जैसे और किसी ने नहीं किये तो उन का पाप न होता पर अब उन्हों ने मुझ को और मेरे पिता को भी देखा और बैर भी किया । परन्तु यह इसी लिये होता है कि जो वचन उन की व्यवस्था में लिखा है कि उन्हों ने मुझ से निष्कारण बैर किया सो पूरा होवे । परन्तु जब पराक्लेत जिस को मैं पिता के पास से तुम्हारे पास भेजूंगा अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता के पास से निकलता है आवे तब वह मेरे विषय में साक्षी देवेगा और तुम भी साक्षी देओगे क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे संग हो ॥

समस्त पवित्रों का दिन

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू ने अपने चुने हुओं को अपने पुत्र हमारे प्रभु ख्रीष्ट की रहस्य देह की एक सहभागिता और सत्संगति में जोड़ दिया है हम को यह अनुग्रह दे कि तेरे धन्य पवित्रों के सारे धर्म्माचरण और भक्ति में उन के ऐसे अनुगामी होवें कि उस अकथ आनन्द में पहुंचें जो तू ने उन के लिये सिद्ध किया जो तुझ से निष्कपट प्रेम रखते हैं हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

समस्त पवित्रों का दिन

पत्री की सन्ती । प्रकटीकरण । ७ । २ ।

और मैं ने एक और दूत को पूरब से चढ़ते देखा जिस के पास जीवते ईश्वर की छाप थी और उस ने उन चार दूतों को जिन को स्थल और समुद्र की हानि करने का अधिकार दिया गया था पुकार के कहा जब लों हम अपने ईश्वर के दासों के माथों पर छाप न दे चुकें तब लों न स्थल को न समुद्र को न वृक्षों को हानि पहुंचाओ। और जिन पर छाप भई उन की गिनती मैं ने सुनी अर्थात् यिस्राएल्-वंशियों के सब गोत्रों में से एक लाख चौवालीस सहस्र। यहूदा के गोत्र में से बारह सहस्रों पर छाप भई रऊबेन् के गोत्र में से बारह सहस्रों पर छाप भई गाद् के गोत्र में से बारह सहस्रों पर छाप भई आशेर् के गोत्र में से बारह सहस्रों पर छाप भई नप्ताली के गोत्र में से बारह सहस्रों पर छाप भई मनश्शे के गोत्र में से बारह सहस्रों पर छाप भई शिमोन् के गोत्र में से बारह सहस्रों पर छाप भई लेवी के गोत्र में से बारह सहस्रों पर छाप भई यिस्साकार के गोत्र में से बारह सहस्रों पर छाप भई जबूलून के गोत्र में से बारह सहस्रों पर छाप भई योसिफ् के गोत्र में से बारह सहस्रों पर छाप भई बिन्यामीन् के गोत्र में से बारह सहस्रों पर छाप भई। इस के अनन्तर मैं ने दृष्टि किई और क्या देखा कि बड़ी भीड़ जिस की गिनती कोई नहीं कर सकता और जो प्रत्येक जाति और गोत्र और लोकगण और भाषा में से एकट्ठी भई श्वेत-वस्त्र पहिने हुए और हाथों में खजूर की डालियां लिये हुए सिंहासन के साम्हने और मेम्ने के साम्हने खड़ी है और वे बड़े शब्द से पुकार के कहते हैं त्राण हमारे ईश्वर ही से जो सिंहासन पर विराजमान है और मेम्ने ही से है। और सब दूत सिंहासन और उन पुरनियों और चार जीवधारियों की चारों ओर खड़े थे और वे सिंहासन के साम्हने औंधे मुंह गिरे और ईश्वर को दण्डवत किया

समस्त पवित्रों का दिन

और कहा आमेन् धन्यवाद और महिमा और बुद्धि और उपकारस्तुति और प्रतिष्ठा और शक्ति और सामर्थ्य युगानयुग हमारे ईश्वर ही का होता रहे। आमेन्॥

सुसमाचार। प० मत्तय। ५। १।

येशू भीड़ को देख के पहाड़ पर चढ़ गया और जब वह बैठ गया तब उसके शिष्य उसके पास आये और वह अपना मुंह खोल के उन्हें सिखाने लगा और कहा धन्य हैं वे जो आत्मा में दरिद्र हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य वे जो शोक करते हैं क्योंकि वे शांति पावेंगे। धन्य वे जो सौम्यस्वभाव हैं क्योंकि वे पृथिवी को भाग में पावेंगे। धन्य वे जो धर्म्म के भूखे और प्यासे हैं क्योंकि वे तृप्त होवेंगे। धन्य वे जो दयालु हैं क्योंकि उनपर दया किई जावेगी। धन्य वे जो मन में शुद्ध हैं क्योंकि वे ईश्वर को देखेंगे। धन्य वे जो मेल करवैये हैं क्योंकि वे ईश्वर के पुत्र कहावेंगे। धन्य वे जो धर्म्म के कारण से सताये जाते हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हो तुम जब लोग मेरे कारण से तुम्हारी निन्दा करें और तुम को सतावें और तुम्हारे विषय में सब प्रकार की बुरी बात झूठ मूठ कहें। आनन्दित और अति आह्लादित होओ क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारा बड़ा प्रतिफल है क्योंकि इसी प्रकार से लोगों ने उन प्रवक्ताओं को जो तुम से आगे थे सताया॥

प्रभु की व्यारी अर्थात् पवित्र सहभागिता सम्बन्धी परिचर्य्या की विधि

जितने पवित्र सहभागिता में भागी होने चाहते हैं सो न्यून से न्यून एक दिन आगे किसी न किसी समय अपने नाम पालक को जतावें ।

और यदि उन में से कोई दुराचारी प्रसिद्ध होवे अथवा अपने पड़ोसियों की वचन वा क्रिया से कुछ ऐसी हानि किई होवे जिस से मण्डली को ठोकर हुई हो तो पालक जब इसे जाने तब उस को बुला के चितावे कि जब लों वह सब के साम्हने प्रगट न करे कि मैं ने सच्चा पश्चात्ताप किया अपना पिछला दुराचार छोड़ के सुधरा हूं जिस्तें मण्डली जिस को ठोकर हुई थी सन्तुष्ट होवे और जब लों जिन की हानि उस ने किई होवे वह उनकी हानि न भर चुके अथवा इतनी बात प्रगट न करे कि मैं ने दृढ़ता से ठाना है कि समय पाके ऐसा करूंगा तब लों वह ढीठाई कर के प्रभु के भोजनमंच के पास कदापि न आवे ।

और जिन के बीच पालक देखे कि द्वेष और बैर हो रहा है उनके साथ भी वह वैसाही करे और जब लों वह न देखे कि उन में मेल मिलाप होगया तब लों उन को प्रभु के भोजनमंच के भागी न होने देवे । और यदि उन झगड़नेहारों में से एक इस पर सिद्ध होवे कि दूसरे ने उस के जितने अपराध किये होवें उन्हें अन्तःकरण से क्षमा करे और जो हानि उस ने आप किई होवे उस को भरदेवे परन्तु दूसरा जन जैसा भक्त को चाहिये मेल न करने चाहे पर अपने हठ और दुष्टबुद्धि पर अड़ा रहे तो ऐसी दशा में सेवक पश्चात्ताप करनेहारों को सहभागिता में भागी होने देवे पर उस को नहीं जो हठ करता है । परन्तु सेवक उस आज्ञा के अनुसार जो इस विधि वाक्य के इस खण्ड अथवा ऊपर के खण्ड में लिखी हुई है किसी को बरजे सो १४ दिनके भीतर इस बात का समाचार बिशप को देवे और इस से अधिक विलम्ब न होने पावे और बिशप कनोन के अनुसार अपराधी का विचार करे ।

सहभागिता के समय भोजनमंच पर सुन्दर श्वेत अतसी चद्दर बिछी रहे और भोजनमंच पर एक्लेसिया के बीच अथवा चांसल में जहां प्रातःकाल और सन्ध्याकाल की प्रार्थना कहने की आज्ञा है धरी रहे । और प्रीष्ट भोजनमंच की उत्तर ओर खड़ा होके प्रभु की प्रार्थना और उस के नीचे की प्रार्थना कहे और मण्डली के लोग घुटने टेकें ।

प्रभु की व्यारी

हे हमारे पिता । तू जो स्वर्ग में है । तेरा नाम पवित्र किया जावे । तेरा राज्य आवे । तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है पृथ्वी पर भी होवे । हमारी प्रतिदिन की रोटी आज हमें दे । और हमारे अपराधों को क्षमा कर । जैसे हम ने भी अपने अपराधियों को क्षमा किया है । और हमें परीक्षा में न ला । परन्तु बुराई से बचा । आमेन् ॥

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर सब के मन तेरे साम्हने खुले हैं सब के मनोरथ तुझे विदित हैं और कोई भेद तुझ से छिपा नहीं हमारे मन में अपना पवित्रआत्मा उंडेल के हमारे विचारों को शुद्ध कर कि हम तुझ से पूरा प्रेम रक्खें और योग्य रीति से तेरे पवित्र नाम की बड़ाई करें हमारे प्रभु ख्रीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

तब प्रीष्ट मण्डली की ओर फिर के दस आज्ञाओं को स्पष्ट उच्चारण से सुनावे और मण्डली के लोग घुटने टेके रहें और प्रत्येक आज्ञा के अनन्तर ईश्वर से विनती करें कि उस आज्ञा का जो उल्लंघन बीते हुए समय में उन से हुआ होवे वह दया कर के उस को क्षमा करे और आगे को उसे पालने के लिये अनुग्रह भी देवे । यथा

सेवक । ईश्वर ने ये बातें कहीं कि मैं प्रभु तेरा ईश्वर हूं तू मुझे छोड़ दूसरे देवताओं को ईश्वर न मानना ॥

मण्डली । हे प्रभु हम पर दया कर और हमारे मन को इस आज्ञा के पालन करने पर तत्पर कर ॥

सेवक । तू अपने लिये कोई गढ़ी हुई मूर्त्ति अथवा किसी वस्तु का आकार जो ऊपर आकाश में वा नीचे पृथ्वी पर वा पृथ्वी के तले जल में है न बनाना । तू उन को दण्डवत् न करना न उन को पूजना क्योंकि मैं प्रभु तेरा ईश्वर ज्वलनशील ईश्वर हूं और जो मुझ

से बैर रखते हैं उन के अधर्म्म का दण्ड उन के लड़कों वरन उन के पोतों और परपोतों को भी देता हूं और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को पालन करते हैं उन पर उन के वंश के सहस्रों होने लों दया करता रहता हूं ॥

मण्डली । हे प्रभु हम पर दया कर और हमारे मन को इस आज्ञा के पालन करने पर तत्पर कर ॥

सेवक । तू प्रभु अपने ईश्वर का नाम व्यर्थ न लेना क्योंकि जो प्रभु का नाम व्यर्थ लेता है उस को वह निर्दोष न ठहरावेगा ॥

मण्डली । हे प्रभु हम पर दया कर और हमारे मन को इस आज्ञा के पालन करने पर तत्पर कर ॥

सेवक । शब्बात् को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना छः दिन तू परिश्रम और अपना सब काम काज करना पर सातवां दिन प्रभु तेरे ईश्वर के लिये शब्बात् है । उस में कुछ काम न करना न तू न तेरा बेटा न तेरी बेटी न तेरा दास न तेरी दासी न तेरे पशु न परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर है । क्योंकि छः दिन में प्रभु ने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उन में है बनाया और सातवें दिन विश्राम किया इस लिये प्रभु ने शब्बात् के दिन को आशीर्वाद दिया और उस को पवित्र किया ॥

मण्डली । हे प्रभु हम पर दया कर और हमारे मन को इस आज्ञा के पालन करने पर तत्पर कर ॥

सेवक । तू अपने पिता और अपनी माता का सन्मान करना जिस्तें तेरी आयुर्दा उस देश में जो प्रभु तेरा ईश्वर तुझे देता है बढ़ जावे ॥

मण्डली । हे प्रभु हम पर दया कर और हमारे मन को इस आज्ञा के पालन करने पर तत्पर कर ॥

सेवक । तू हत्या न करना ॥

प्रभु की ब्यारि

मण्डली । हे प्रभु हम पर दया कर और हमारे मन को इस आज्ञा के पालन करने पर तत्पर कर ॥

सेवक । तू व्यभिचार न करना ॥

मण्डली । हे प्रभु हम पर दया कर और हमारे मन को इस आज्ञा के पालन करने पर तत्पर कर ॥

सेवक । तू चोरी न करना ॥

मण्डली । हे प्रभु हम पर दया कर और हमारे मन को इस आज्ञा के पालन करने पर तत्पर कर ॥

सेवक । तू अपने पड़ोसी पर झूंठी साक्षी न देना ॥

मण्डली । हे प्रभु हम पर दया कर और हमारे मन को इस आज्ञा के पालन करने पर तत्पर कर

सेवक । तू अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना तू न अपने पड़ोसी की स्त्री न उस के दास न उस की दासी न उस के बैल न उस के गदहे न किसी और वस्तु का जो उस की है लालच करना ॥

मण्डली । हे प्रभु हम विनती करते हैं कि तू हम पर दया कर और अपनी इन सब आज्ञाओं को हमारे मन पर लिख ॥

तब प्रीष्ट पहिले के समान खड़ा होके इन दो प्रार्थनाओं में से जो महाराणी के लिये हैं एक को कहे पर पहिले यह कहे ।

प्रार्थना करें

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तेरा राज्य सनातन तेरी शक्ति असीम है सम्पूर्ण एक्लीसिया पर दया कर और अपनी चुनी हुई सेविका हमारी महारानी और शासनकर्त्री विक्तोरिया के मन को ऐसी प्रेरणा कर कि वह यह जान के कि मैं किस की सेविका हूं सब बातों से अधिक तेरी प्रतिष्ठा और महिमा के लिये यत्न करे और हम और उस की

समस्त प्रजा इस का ठीक विचार कर के कि उस ने किस से अधिकार पाया है उस की सेवा विश्वस्तता से करें उस का सम्मान करें और नम्रता से उस की आज्ञा मानें तुझ में और तेरे निमित्त और तेरे धन्य वचन और नियम के अनुसार हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा जो तेरे और पवित्रात्मा के संग सदा एक ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता है। आमेन् ॥

अथवा

हे सर्वशक्तिमान् और सनातन ईश्वर हम तेरे पवित्र वचन से सीखते हैं कि राजाओं के मन तेरे बश में हैं और तू अपनी ईश्वरीय बुद्धि के अनुसार जैसा भला जानता है वैसा ही उन को प्रेरणा करता और फेरता है हम नम्रता से विनती करते हैं कि अपनी सेविका हमारी महारानी और शासनकर्त्री विक्टोरिया के मन को ऐसी प्रेरणा और शासन कर कि वह मनसा वाचा कर्म्मणा तेरी प्रतिष्ठा और महिमा के लिये यत्न करे और तेरी प्रजा की जो उस के हाथ में सौम्पी गई है कुशल शान्ति और भक्ति में पालने का उद्योग करे हे दयालु पिता अपने प्रिय पुत्र हमारे प्रभु येशू खीष्ट के निमित्त यह वर दे। आमेन् ॥

तब उस दिन की प्रार्थना कही जावे। और उस के अनन्तर प्रीष्ट पत्री को यह कहके पढ़े कि पत्री [अथवा शास्त्र का वह भाग जो पत्री की सन्ती ठहराया गया है] अमुक पुस्तक के अमुक अध्याय में लिखी है और उस के अमुक पद से आरम्भ होती है। और पत्री समाप्त होने पर यह कहे कि यहां पत्री समाप्त भई। तब मण्डली के सब लोग खड़े होवें और प्रीष्ट सुसमाचार को यह कह के पढ़े कि पवित्र सुसमाचार अमुक पुस्तक के अमुक अध्याय में लिखा है और उस के अमुक पद से आरम्भ होता है। और सुसमाचार समाप्त होने पर नीचे लिखा हुआ विश्वास वचन गाया वा कहा जावे। मंडली के लोग खड़ेही रहें।

प्रभु की ब्यारी

मैं विश्वास रखता हूं एक ईश्वर सर्वशक्तिमान् पिता पर। जो स्वर्ग और पृथ्वी और सब दृश्य और अदृश्य पदार्थों का कर्त्ता है ॥

और एक प्रभु येशू खीष्ट पर। जो ईश्वर का एकलौता पुत्र है। सर्व युगों से पहिले पिता से जनित। ईश्वर से ईश्वर। ज्योति से ज्योति। सत्य ईश्वर से सत्य ईश्वर। कृत नहीं पर जनित। पिता के साथ एकतत्व। उस के द्वारा सब कुछ बन गया। वह हम मनुष्यों के लिये और हमारे त्राण के लिये। स्वर्गों के ऊपर से उतर आया। और पवित्रात्मा के द्वारा कुमारी मिर्याम् से शरीर धारी भया। और मनुष्य बना। और पोन्त्य पीलात के अधिकार में हमारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया। और दुःख भोगा। और समाधि में रक्खा गया। और शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी उठा। और स्वर्गों के ऊपर चढ़ गया। और पिता की दहिनी ओर बैठा है। और जीवतों और मृतकों का न्याय करने को महिमा के साथ फिर आनेहारा है। उस के राज्य का अन्त न होगा ॥

और पवित्रात्मा पर। जो प्रभु और जीवनदाता है। वह पिता और पुत्र से निकलता है। पिता और पुत्र के संग उस की आराधना और महिमा होती है वह प्रवक्ताओं के द्वारा बोला। और एक पवित्र कथोलिक और प्रेरितीय एक्लेसिया पर। और मैं एक बप्तिस्मा को मानता हूं जो पापमोचन के लिये है और मृतकों के पुनरुत्थान। और आने-हारे युग के जीवन की बाट जोहता हूं। आमेन् ॥

तब पालक मंडली को जतावे कि उसी सप्ताह में कौन से पवित्र दिन अथवा उपवास के दिन मानने चाहियें। और तब यदि इस का प्रयोजन होवे तो सह-भागिता का भी समाचार और विवाह घोषण करे और आज्ञापत्र आह्वानपत्र और बहिष्कार पत्र पढ़े। और एक्लेसिया में उपासना के समय सेवक को छोड़ कोई किसी बात को न प्रचारे और वह भी केवल वही बात प्रचारे जो इस पुस्तक के

नियमों में नियत हुआ है अथवा महाराणी वा उसी स्थान के विशप की आज्ञा से ठहराया गया होवे।

तब उपदेश सुनाया जावे अथवा उन होमीलियों में से कोई पढ़ी जावे जो अधिकारी की ओर से प्रचलित भई वा होंगी।

तब प्रीष्ट प्रभु के भोजनमंच के पास फिर जाके अर्पण की विधि का इस रीति से आरम्भ करे कि नीचे लिखे हुए वाक्यों में से जितना वह योग्य समझे एक वा कई एक कहे।

तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने ऐसा चमके कि वे तुम्हारे सुकर्म्मों को देख कर तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है महिमा करें। मत्तय ५॥

धन अपने लिये पृथ्वी पर मत संचय करो जहां कीड़ा और काई खा जाती है और चोर सेंध देते और चुराते हैं। पर अपने लिये धन स्वर्ग में संचय करो जहां न कीड़ा न काई खा जाती है और न चोर सेंध देते न चुराते हैं। मत्तय ६॥

जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम से करें सोई तुम भी उन से करो क्योंकि व्यवस्था और प्रवक्तागण यही हैं। मत्तय ७॥

जितने मुझ से हे प्रभु हे प्रभु कहते हैं सो सब स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेंगे परन्तु वही जो मेरे पिता की जो स्वर्ग में है इच्छा पर चलता है। मत्तय ७॥

जक्काय ने खड़े होके प्रभु से कहा कि हे प्रभु देख मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूं और यदि मैं ने अन्याय से किसी से कुछ लिया तो उस का चौगुणा फेर देता हूं। लूका १६॥

कौन अपना उठान करके सिपाही का काम करता है कौन दाख की बारी लगाता और उस का फल नहीं खाता अथवा कौन झुण्ड चराता और उस झुण्ड का दूध नहीं खाता। १ को० ६॥

प्रभु की ब्यारी

यदि हम ने तुम्हारे लिये आत्मिक पदार्थ बोए तो क्या यह बड़ी बात है कि हम तुम्हारे शारीरिक पदार्थ लवें। १ को० ९॥

क्या तुम नहीं जानते कि जो पवित्र वस्तुन सम्बन्धी परिचर्य्या करते हैं सो मन्दिर में से खाते हैं और जो बेदी की टहल करते हैं सो बेदी के सम्भागी होते हैं वैसे ही प्रभु ने ठहराया कि जो सुसमाचार को प्रचारते हैं सो सुसमाचार ही से जीविका पावें। १ को० ९॥

जो मुट्ठी बान्ध के बोए सो मुट्ठी बान्ध के लवेगा भी और जो मुट्ठी खोल के बोए सो मुट्ठी खोल के लवेगा भी प्रत्येक जन जैसा उस ने अपने मन में ठाना होवे वैसा ही देवे पछता के नहीं न दबाव से क्योंकि जो आनन्द से देता है ईश्वर उसी को प्यार करता है। २ को० ९॥

जो वचन में शिक्षा पाता है सो शिक्षक को सारी अच्छी वस्तुन में साझी करे। धोखा मत खावो ईश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता क्योंकि जो कुछ मनुष्य बोवे सोई लवेगा। गल० ६॥

जैसे जैसे हम को अवसर मिले सब से भलाई करें निज कर के उन से जो विश्वास के घराने के हैं। गल० ६॥

सन्तोष के साथ भक्ति बड़ा लाभ है कि हम जगत में कुछ ले आये नहीं और कुछ लेजा भी नहीं सकते। १ ती० ६॥

इस वर्त्तमान जगत में जो धनी हैं उन को आज्ञा दे कि दान करने पर सिद्ध और बांटने पर प्रसन्न रहें और आगे के लिये अपने निमित्त एक भली नेव डाल रक्खें जिस्तें वे उस जीवन को धर लेवें जो सच मुच जीवन है। १ ती० ६॥

ईश्वर अन्यायी नहीं कि तुम्हारे काम और उस प्रेम को भूल जावे जो तुम ने उस के नाम के निमित्त इस में दिखाया कि पवित्रों की सेवा किई और करते भी हो। इब्रि० ६॥

प्रभु की व्यारी

भलाई और दान करने को मत भूलो क्योंकि ऐसे बलिदानों से ईश्वर प्रसन्न होता है। इब्रि० १३॥

जिस किसी के पास संसार की सम्पत्ति होवे और वह अपने भाई को दरिद्र देख के अपने हृदय को उस के विषय कठोर करे तो ईश्वर का प्रेम उस में क्योंकर बसता है। १ यो० ३॥

अपनी सम्पत्ति में से दान कर और अपना मुख किसी कंगाल से न मोड़ तो ईश्वर अपना मुख तुझ से न मोड़ेगा। तोवित् ४॥

वित्त के अनुसार दान कर यदि तेरे पास थोड़ा ही होवे तो उस थोड़े के अनुसार देने से मत डर क्योंकि ऐसा करने से तू अपने लिये आवश्यकता के दिन के निमित्त थाती रखता है। तोवित् ४॥

जो दुःखी पर दया करता है सो प्रभु को उधार देता है और वह उस के सुकर्म्म का फल उसे देवेगा। दृष्टान्त १९॥

धन्य वह जो दुःखी की सुधि लेता है विपत्ति के दिन प्रभु उस को बचावेगा। स्तोत्र ४१॥

जब ये वाक्य पढ़े जाते हैं तब डिकिन वा एक्लेसियारक्षक वा कोई दूसरा योग्य जन जो इस काम के लिये ठहराया गया हो कंगालों के लिये दान और मंडली के और चढ़ावे एक योग्य पात्र में जिसे उस परोक्रिया के लोगों को उस प्रयोजन के लिये उपस्थित कर देना चाहिये लेके प्रीष्ट के पास आदर पूर्वक ले आवें और वह उस को नम्रता से पवित्र भोजनमंच पर चढ़ावे और रख देवे।

और यदि सहभागिता होवे तो प्रीष्ट इसी समय भोजनमंच पर इतनी रोटी और दाखमधु रक्खे जितना उस की समझ में आवश्यक होवे।

जब यह हो चुके तब प्रीष्ट कहे।

हम खीष्ट की समस्त एक्लेसिया के लिये जो इस पृथ्वी पर युद्ध में है प्रार्थना करें॥

हे सर्वशक्तिमान और सदा जीवते ईश्वर तू ने अपने पवित्र प्रेरित

के द्वारा हम को सिखाया है कि सब मनुष्यों के लिये प्रार्थनाएं और विनतियां और धन्यवाद करें हम नम्रता से विनती करते हैं कि तू अत्यन्त दया से (* हमारे दान और चढ़ावे और) हमारी प्रार्थनाएं स्वीकार कर जो हम तेरे ईश्वरीय प्रताप के आगे अर्पण करते हैं। हम तुझ से विनती करते हैं कि सार्व्व एक्लेसिया में सत्यता एकता और मेल मिलाप का आत्मा भर दे और यह वर दे कि जितने तेरे पवित्र नाम का अंगीकार करते हैं सो तेरे पवित्र वचन के सत्य के विषय एक मत होवें और एकता और भक्तियुक्त प्रेम में जीवन बितावें। और हम तुझ से विनती करते हैं कि सब ख्रीष्टियान राजाओं रजवाड़ों और अधिपतियों को बचा और उन की रक्षा कर विशेष कर के अपनी सेविका हमारी महाराणी विक्तोरिया को कि उसके अधिकार में हमारा प्रबन्ध ऐसा होवे कि हम भक्ति और चैन से दिन बितावें और उस के सारे मंत्रियों को और जितने उसकी ओर से अधिकार रखते हैं उन को यह वर दे कि वे सच्चाई से और बिना पक्षपात न्याय करें जिस्तें दुष्टों और पापियों को दण्ड मिले और तेरा सत्य धर्म्म और धर्म्माचरण स्थिर रहे। हे स्वर्गीय पिता सब बिशपों और पालकों को अनुग्रह दे कि वे अपनी चाल चलन और शिक्षा के द्वारा तेरे सत्य और जीवते वचन को प्रचारें और तेरे पवित्र सक्रामेन्तों का अनुष्ठान यथार्थ और यथोचित रीति से करें। और अपने सब निज लोगों को अपना स्वर्गीय अनुग्रह दे विशेष कर के इस मण्डली को जो यहां उपस्थित है कि वे नम्र हृदय और योग्य आदर से तेरा पवित्र वचन सुनें और ग्रहण करें और जीवनभर पवित्रता और धार्मिकता के साथ तेरी सेवा सच्चाई से करें। और हे प्रभु हम अति नम्रता से विनती करते हैं कि जितने इस अनित्य जीवन

* यदि दान और चढ़ावे न होवें तो ये शब्द (हमारे दान और चढ़ावे) छोड़ दिये जावें

में क्लेश शोक आवश्यकता रोग वा और किसी विपत्ति में पड़े हैं उन सब को कृपा कर के शान्ति दे और सहायता कर। और अब हम तेरे उन सब दासों के लिये जो तेरे विश्वास और भय में इस लोक से सिधार चुके हैं तेरे पवित्र नाम का धन्यवाद करते हैं और यह विनती करते हैं कि तू हमें अनुग्रह दे कि उन के सुकर्म्मों के ऐसे अनुगामी होवें कि उन के संग हम भी तेरे स्वर्गीय राज्य के भागी हो जावें। हे पिता हमारे एक ही मध्यस्थ और पक्षवादी येशू खीष्ट के निमित्त यह वर दे॥

जब सेवक पवित्र सहभागिता के अनुष्ठान का समाचार देता है (जो सर्वदा उस से पहिले इतवार अथवा किसी पवित्र दिन में देना चाहिये) तब अपने उपदेश वा होमीलिया के अनन्तर नीचे लिखा हुआ वह यह उपदेश पढ़े।

हे अति प्रियो अब के अमुकवार को मेरी इच्छा है कि ईश्वर की सहायता पाके उन सब को जो भक्ति से चाहते होवें खीष्ट की देह और लहू का अत्यन्त शान्तिदायक सक्रामेन्त देऊं॥

इस को उस के पुण्ययुक्त क्रूस और दुःख भोग के स्मरण के लिये उन्हें लेना चाहिये कि केवल उसी से हम पापमोचन पाते और स्वर्ग के राज्य के भागी हो जाते हैं। इस हेतु हमें उचित है कि अपने स्वर्गीय पिता सर्वशक्तिमान् ईश्वर का अति नम्रता से धन्यवाद करें कि उस ने अपने पुत्र हमारे त्राता येशू खीष्ट को दिया है न केवल इस लिये कि हमारे निमित्त मरे पर इस लिये भी कि वह उस पवित्र सक्रामेन्त में हमारा आत्मिक आहार और जीवन का आधार होवे। और जब कि वह उन के लिये जो योग्य रीति से उस को लेते हैं अति दिव्य और शान्तिदायक पदार्थ है और जो ढिठाई कर के उस को अयोग्यरीति से लेते हैं उन के लिये अति हानिकारक है इस हेतु मुझे अवश्य है कि तुम्हें समझाऊं कि इस बीच में उस पवित्र रहस्य

के माहात्म्य को और उस के अयोग्यरीति से लेने की बड़े जोखिम को सोचो । और अपने अन्तःकरण को परखो और जांचो हलकाई से नहीं और न ईश्वर से कपट करनेहारों की नाईं पर इस प्रकार से कि तुम वह बिवाहवस्त्र पहिन के जिस की आज्ञा ईश्वर ने पवित्र शास्त्र में दिई है पवित्र और शुद्ध होके ऐसे स्वर्गीय भोज में आ सको और उस पवित्र भोजनमंच के योग्य भागी होके ग्राह्य ठहर सको ॥

इस का उपाय यह है कि पहिले अपनी चाल चलन को ईश्वर की आज्ञाओं के नियम से मिला के परखो और जिस जिस बात में तुम अपने को मन वा वचन वा कर्म्म से अपराधी पाओ उस बात में अपने पाप के कारण विलाप करो और सर्वशक्तिमान् ईश्वर के साम्हने उस का अंगीकार करते हुए अपनी चाल चलन के सुधारने का दृढ़ संकल्प करो । और यदि तुम को देख पड़े कि हम केवल ईश्वर ही के नहीं पर अपने पड़ोसियों के भी अपराधी हुए तो उन से मिलाप करो और तुमने जितनी किसी की हानि वा अन्याय किया हो उस के लिये बदला देने और उस को मिटाने पर सिद्ध रहो और जैसे तुम चाहते हो कि ईश्वर तुम्हारे अपराधों को क्षमा करे वैसे ही तुम भी अपने अपराधियों को क्षमा करने पर सिद्ध रहो नहीं तो पवित्र सह-भागिता के लेने से तुम केवल अधिक दण्ड ही के योग्य ठहरोगे । इस हेतु यदि तुम में से कोई ईश्वर का निन्दक अथवा उस के वचन का विरोध वा निन्दा करनेहारा अथवा व्यभिचारी अथवा द्वेष वा डाह वा किसी और महापाप में फंसा होवे तो वह अपने पापों से पश्चात्ताप करे नहीं तो उस पवित्र भोजनमंच के पास न आवे ऐसा न हो कि उस पवित्र सक्रामेन्त के लेने के अनन्तर दुष्टात्मा तुम में पैठे जैसा वह यहूदा में पैठा और तुम को सारे अधर्म्म से भर के तुम्हारे शरीर और आत्मा को सत्यानाश करे । और जब कि अवश्य है कि जबलों कोई ईश्वर की दया पर पूरा भरोसा न रक्खे और

प्रभु की व्यारी

अपने अन्तःकरण में चैन न पावे तब लों वह पवित्र सहभागिता में न आवे इस लिये यदि तुम में से कोई इस उपाय से अपने अन्तःकरण में चैन न पा सके पर उस को और कुछ शान्ति वा परामर्श चाहिये तो वह मेरे अथवा ईश्वर के वचन के किसी और बुद्धिमान् और विद्यावान् सेवक के पास जाके अपने मन का दुःख प्रगट करे जिस्तें ईश्वर के पवित्र वचन सम्बन्धी परिचर्य्या के द्वारा वह पापमोचन का लाभ और आत्मिक परामर्श प्राप्त करे जिस्तें वह अपने अन्तःकरण में चैन पावे और सारे खटके और सन्देह से बचा रहे॥

अथवा यदि वह देखे कि लोग पवित्र सहभागिता में आने से निश्चिन्त रहते हैं तो ऊपर के उपदेश की सन्ती वह नीचे लिखा हुआ उपदेश सुनावे॥

हे अति प्रिय भाइयो अब के अमुक दिन को मेरी इच्छा है कि ईश्वर के अनुग्रह से प्रभु की व्यारी का अनुष्ठान करूं और मैं ईश्वर की ओर से तुम सब को जो यहां उपस्थित हो उस में नेवता देता हूं और प्रभु येशू ख्रीष्ट के निमित्त तुम से विनती करता हूं कि तुम उस में आने से नाहीं न करो क्योंकि ईश्वर ने आप ही तुम को अति प्रेम से बुलाया और नेवता दिया है। तुम जानते हो कि जब किसी ने स्वादिष्ट भोज किया और सब प्रकार का भोजन सिद्ध किया यहां तक कि इतना ही रह गया कि नेवतहरी बैठ जावें तौ भी जो बुलाये गये सो बिना कारण अति कृतघ्नता से आने को नाहीं करें तो ऐसी दशा में तुम में से कौन क्रुद्ध न होगा कौन न समझेगा कि मेरा बड़ा अनादर भया है। इस हेतु हे ख्रीष्ट में अति प्रियो सुचेत रहो न हो कि तुम इस पवित्र व्यारी से अपने को अलग रखने से ईश्वर के कोप को अपने ऊपर भड़काओ। हां यह तो कहना सहज है कि मैं भागी न हूंगा क्योंकि संसार के धन्धों में फंसा हूं परन्तु ऐसे बहाने ईश्वर के साम्हने नहीं चलेंगे। यदि कोई कहे कि मैं बड़ा पापी

हूं इस लिये आने से डरता हूं तो तुम क्यों नहीं पश्चात्ताप करते और सुधरते हो जब ईश्वर तुम को बुलाता है तो क्या तुम को यह कहने से लाज नहीं आती कि हम नहीं आवेंगे। जब तुम को ईश्वर की ओर फिरना चाहिये क्या तुम बहाना कर के कहोगे कि हम लैस नहीं। अपने मन में भली भान्ति विचार करो कि ऐसे झूंठे बहाने ईश्वर के साम्हने कुछ भी नहीं चलेंगे। सुसमाचार में जिन्हों ने नेवता से इस लिये नाहीं किया कि किसी ने खेत मोल लिया था कोई अपने बैलों की जोड़ियां परखना चाहता था और किसी ने विवाह किया था उन को इस कारण से क्षमा न मिली वरन वे स्वर्गीय भोज के अयोग्य ठहरे। मैं तो आप सिद्ध रहूंगा और उस पद के कारण से जो मुझे मिला मैं ईश्वर के नाम से तुम को नेवता देता मैं ख्रीष्ट की ओर से तुम को बुलाता हूं मैं तुम को समझाता हूं कि जब कि तुम अपना त्राण चाहते हो तो इस पवित्र सहभागिता के भागी होओ। और जैसे ईश्वर के पुत्र ने कृपा कर के अपना जीव क्रूस के ऊपर तुम्हारे त्राण के लिये दे दिया वैसे ही तुम को उचित है कि उसी की आज्ञा के अनुसार उस की मृत्यु के बलिदान के स्मरण के लिये सहभागिता को लेओ। और यदि तुम ऐसा न करो तो अपने मन में सोचो कि ईश्वर का कैसा बड़ा अनादर करते हो और उस के कारण से क्या ही भारी दण्ड तुम्हारे सिर के ऊपर झूम रहा है क्योंकि तुम हठ कर के अपने भाइयों से जो उस स्वर्गीय आहार के जेवनार के खाने को आते हैं अलग होते हो। यदि तुम इन बातों को मन लगा के सोचो तो ईश्वर के अनुग्रह से तुम्हारा मन सुधर जावेगा और इस बात के प्राप्त होने के लिये हम अपने स्वर्गीय पिता सर्वशक्तिमान् ईश्वर से नम्रता पूर्वक विनती करने को न छोड़ेंगे॥

सहभागिता के अनुष्ठान के समय जब भागी होनेवाले पवित्र सक्रामेन्त के लेने के लिये उचित रीति से बैठे होवें तब प्रीष्ट यह उपदेश सुनावे।

प्रभु की व्यारी

हे प्रभु में अति प्रियो तुम जो हमारे चाता खीष्ट की देह और लहू की पवित्र सहभागिता में भागी होने चाहते हो तुम को विचार करना चाहिये कि पवित्र पौल सब लोगों को कैसा समझाता है कि अपने को परखे और जांचे बिना उस रोटी के खाने और उस कटोरे में से पीने का हियाव न करें। क्योंकि यदि हम उस पवित्र सक्रामेन्त को सत्य पश्चात्तापी मन और जीवते विश्वास से लेते हैं तो बड़ा लाभ होता है क्योंकि ऐसा करने से हम आत्मिक रीति से खीष्ट के मांस को खाते और उस के लहू को पीते हैं और हम खीष्ट में बसते हैं और खीष्ट हम में बसता है हम खीष्ट के साथ एक होते हैं और खीष्ट हमारे साथ एक होता है। परन्तु यदि हम इस सक्रामेन्त को अयोग्य रीति से लेवें तो बड़ी हानि है कि ऐसा करने से हम अपने चाता खीष्ट की देह और लहू के दोषी होते हैं हम प्रभु की देह को न पहिचा-नने से अपना ही दण्ड खाते पीते हैं हम ईश्वर का कोप अपने पर भड़काते हैं हम उस को चिढ़ाते हैं कि नाना प्रकार के रोग और भान्ति भान्ति की मृत्यु हम पर भेजे। सो हे भाइयो अपना विचार आप करो कि प्रभु तुम्हारा विचार न करे अपने पिछले पापों से सच्चा पश्चात्ताप करो हमारे चाता खीष्ट पर जीवता और दृढ़ विश्वास रक्खो अपनी चाल चलन सुधारो और सब मनुष्यों से पूरा प्रेम रक्खो तो इस रीति से तुम इन पवित्र रहस्यों में योग्य भागी होओगे। और सब बातों से अधिक यह अवश्य है कि तुम ईश्वर पिता पुत्र और पवि-त्रात्मा का धन्यवाद अति नम्रता के साथ अन्तःकरण से इस लिये करो कि हमारे चाता खीष्ट की जो ईश्वर और मनुष्य है मृत्यु और दुःख भोग के द्वारा जगत का छुटकारा भया। उस ने हम दुर्गत-पापियों के लिये जो अन्धेरे और मृत्यु की छाया में पड़े थे यहां लों अपने को घटाया कि क्रूस पर मरा जिस्तें वह हम को ईश्वर के लड़के बनावे और अनन्तजीवन लों उन्नत करे। और जब कि उस की यह

प्रभु की व्यारी

इच्छा थी कि हम अपने स्वामी और त्राता येशू खीष्ट के अत्यन्त बड़े प्रेम को कि वह हमारे लिये यों मरा और उन अनगणित लाभों को जो उसने अपने बहुमूल्य लहू के बहाने से हमें प्राप्त कर दिये हैं स्मरण रक्खें इस लिये उस ने पवित्र रहस्य ठहराये हैं जो उस के प्रेम के प्रमाण होवें और जिन से हमारी बड़ी और सदा की शान्ति के लिये उस की मृत्यु का निरन्तर स्मरण होवे। इस हेतु हम उस का और पिता और पवित्रात्मा का जैसा अत्यन्त उचित है निरन्तर धन्यवाद करते रहें और अपने को सम्पूर्ण रीति से उस की पवित्र इच्छा के अधीन रक्खें और सच्ची पवित्रता और धार्म्मिकता से जीवन भर उस की सेवा करने का यत्न करते रहें। आमेन्॥

तब खीष्ट उन से जो पवित्र सहभागिता के लेने को आये हैं यह कहे।

तुम जो अन्तःकरण से अपने पापों से सच्चा पश्चात्ताप करते और अपने पड़ोसियों से प्रेम और मेल रखते और आगे को नई चाल से ईश्वर की आज्ञाओं के अनुसार उस के पवित्र मार्गों पर चलने की दृढ़ इच्छा रखते हो विश्वास के साथ पास आओ और अपनी शान्ति के लिये इस पवित्र सक्रामेन्त को लेओ और दीनता से घुटने टेक के सर्वशक्तिमान् ईश्वर के साम्हने नम्रता से अपने पापों का अंगीकार करो॥

तब सेवकों में से एक उन सब की ओर से जो पवित्र सहभागिता लेने चाहते हैं यह साधारण पापांगीकार पढ़े। वह और मण्डली के सब लोग नम्रता से घुटने टेके हुए यूं कहें।

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर। हमारे प्रभु येशू खीष्ट के पिता। सब वस्तुन के कर्त्ता। सब मनुष्यों के न्यायी। हम अपने नाना प्रकार के पाप और दुष्टता को रो रोके मान लेते हैं। जो हम ने बारम्बार

मनसा वाचा कर्म्मणा । तेरे ईश्वरीय प्रताप के विरुद्ध अत्यन्त अधमता से किई है । और इस से तेरे यथार्थ कोप और क्रोध को अपने ऊपर भड़काया है । हम अन्तःकरण से पश्चात्ताप करते । और अपने इन अनुचित कर्म्मों के कारण हृदय में खेदित हैं । उन के स्मरण से हम को दुःख होता है । उन का बोझ हम से सहा नहीं जाता । हे अत्यन्त दयालु पिता हम पर दया कर हम पर दया कर । अपने पुत्र हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के निमित्त । जो कुछ हम से भया उस को क्षमा कर । और यह वर दे । कि हम आगे को जीवन की नवीनता से । सदा तेरी सेवा करें और तुझे प्रसन्न रक्खें । जिस्तें तेरे नाम की प्रतिष्ठा और महिमा होवे । हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा । आमेन ॥

तब प्रीष्ट (अथवा बिशप यदि उपस्थित होवे) खड़ा होके मण्डली की ओर फिर के यह पापमोचन वचन सुनावे ।

सर्वशक्तिमान् ईश्वर हमारे स्वर्गीय पिता ने अपनी बड़ी दया के कारण उन सब से पापों की क्षमा की प्रतिज्ञा किई है जो जी से पश्चात्ताप कर के और जीवता विश्वास रख के उस की ओर फिरते हैं वही तुम पर दया करे तुम्हारे सब पापों को क्षमा करे और उन से तुम को छुटकारा देवे तुम को सारे सुकर्म्मों में स्थिर और दृढ़ करे और अनन्तजीवन लों पहुंचावे हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

तब प्रीष्ट कहे ।

सुनो कि हमारा त्राता ख्रीष्ट उन सब से जो सच्चाई से उस की ओर फिरते हैं कैसे शान्तिदायक वचन कहता है ॥

हे सब थके और बोझ से दबे लोगो मेरे पास आओ तो मैं तुम को विश्राम देऊंगा । मत्तय ११ । २८ ॥

प्रभु की व्यारी

ईश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि अपना एकलौता पुत्र दिया जिस्तें जो कोई उस पर विश्वास करे सो नाश न होवे पर अनन्त-जीवन पावे। योहानान् ३।१६ ॥

यह भी सुनो कि पवित्र पौल क्या कहता है ॥

यह बात विश्वास करने और सभों के स्वीकार करने के योग्य है कि खीष्ट येशू पापियों के बचाने के लिये जगत में आया। १ ती० १।१५॥

यह भी सुनो कि पवित्र योहानान् क्या कहता है ॥

यदि कोई पाप करे तो पिता के पास हमारा एक पक्षवादी है अर्थात् येशू खीष्ट जो धर्म्मी है और वही हमारे पापों का प्रायश्चित् भी है। १ यो० २।१ और २॥

इस के अनन्तर प्रीष्ट यह भी कहे।

अपने मन ऊपर की ओर उठाओ ॥

उत्तर। हम उन को प्रभु की ओर उठाते हैं ॥

प्रीष्ट। हम अपने प्रभु ईश्वर का धन्यवाद करें ॥

उत्तर। ऐसा करना योग्य और उचित है ॥

तब प्रीष्ट प्रभु के भोजनमंच की ओर फिरके कहे।

यह अत्यन्त योग्य और उचित और हमारा धर्म्म है कि हम ये शब्द (अर्थात् पवित्र पिता) सब कालों और सब स्थानों में तेरा धन्य- त्रय के इतवार को छोड़ दिये जावें वाद करें हे प्रभु (पवित्र पिता) सर्व-शक्तिमान् सनातन ईश्वर ॥

जो विशेष आदि वाक्य कितने विशेष समयों के लिये ठहराये गये हैं सो उन समयों में इसी स्थान में कहे जावें नहीं तो यह तुरन्त कहा जावे।

प्रभु की व्यारी

इस लिये दूतों और प्रधान दूतों और स्वर्ग की समस्त सेना के संग हम तेरे महिमायुक्त नाम की स्तुति और बड़ाई करते और निरन्तर यह कह के तुझे सराहते हैं कि। पवित्र पवित्र पवित्र। प्रभु सेनाओं के ईश्वर। स्वर्ग और पृथ्वी तेरी महिमा से परिपूर्ण हैं। हे परात्पर प्रभु तेरी ही महिमा होवे। आमेन्॥

विशेष आदि वाक्य।

प्रभु के जन्मदिन को और उस के अनन्तर
सात दिन लों॥

इस लिये कि तू ने अपने एकलौते पुत्र येशू खीष्ट को दिया कि वह मानों इसी समय हमारे निमित्त जन्मे वह पवित्रात्मा की शक्ति से अपनी माता कुमारी मिर्याम् के तत्व से सत्य मनुष्य बना और यह पाप के कलंक बिना जिस्तें वह हमें समस्त पाप से शुद्ध करे। इस लिये दूतों इत्यादि॥

पुनरुत्थान के दिन को और उस के अनन्तर
सात दिन लों॥

परन्तु विशेष कर के तेरे पुत्र अपने प्रभु येशू खीष्ट के महिमायुक्त पुनरुत्थान के लिये तेरी स्तुति करनी हम को उचित है क्योंकि पस्खा का सत्य मेम्ना वही है जो हमारे लिये बलिदान भया और जगत के पाप को उठा ले गया है उस ने अपनी मृत्यु के द्वारा मृत्यु को नाश किया और फिर जी उठने से अनन्तजीवन फिर हमारा कर दिया है। इस लिये दूतों इत्यादि॥

प्रभु की व्यारी

स्वर्गारोहण के दिन को और उस के अनन्तर
सात दिन लों ॥

तेरे अति प्रिय पुत्र अपने प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा जिसने अपने अति महिमायुक्त पुनरुत्थान के अनन्तर अपने सब प्रेरितों को प्रत्यक्ष दर्शन दिया और उन के देखते देखते स्वर्ग पर चढ़गया कि हमारे लिये स्थान सिद्ध करे जिस्तें जहां वह है तहां हम भी चढ़ के उस के संग महिमा में राज्य करें। इस लिये दूतों इत्यादि ॥

पेन्तेकोष्ट्री के दिन को और उस के अनन्तर
छः दिन लों ॥

हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा जिस का अत्यन्त सत्य प्रतिज्ञा के अनुसार पवित्रात्मा मानों इसी समय बड़े आकस्मिक शब्द से मानों प्रवल बयार चली अग्नि की जीभों के समान होके स्वर्ग से उतर के प्रेरितों पर आ ठहरा कि उन को शिक्षा देवे और सम्पूर्ण सत्य में पहुंचावे और उस ने उन्हें नाना प्रकार की भाषाओं का दान और ऐसी ढाढ़स भी दिई कि वे बड़ी धुनि से सब जातियों में सुसमाचार प्रचारें जिस के कारण हम अन्धकार और भ्रमजाल से छूट के तेरी और तेरे पुत्र येशू खीष्ट के निर्मल प्रकाश और सत्यज्ञान में पहुंचाये गये हैं। इस लिये दूतों इत्यादि ॥

केवल त्रय ही के तेवहार को ॥

तू जो एक ईश्वर एक प्रभु है एक ही पुरुष नहीं परन्तु एक ही तत्व में तीन पुरुष। क्योंकि पिता की महिमा के विषय में जो कुछ

प्रभु की व्यारी

हमारा विश्वास है सोई बिना भेद और अतुल्यता के पुत्र और पवित्रात्मा के विषय में भी हमारा विश्वास है। इस लिये दूतों इत्यादि ॥

इन सब आदि वाक्यों में से प्रत्येक के अनन्तर ही यह गाया वा कहा जावे।

इस लिये दूतों और प्रधान दूतों और स्वर्ग की समस्त सेना के संग हम तेरे महिमायुक्त नाम की स्तुति और बड़ाई करते और निरन्तर यह कह के तुझे सराहते हैं कि। पवित्र पवित्र पवित्र। प्रभु सेनाओं के ईश्वर। स्वर्ग और पृथ्वी तेरी महिमा से परिपूर्ण हैं। हे परात्पर प्रभु तेरी ही महिमा होवे। आमेन् ॥

तब प्रीष्ट प्रभु के भोजनमंच के पास घुटने टेक के सहभागिता के सब लेनेहारों की ओर से यह प्रार्थना कहे।

हे दयालु प्रभु हम अपने धर्म्म पर भरोसा कर के तेरे इस भोजनमंच के पास आने का हियाव नहीं करते परन्तु तेरी बड़ी और भान्ति भान्ति की दया पर आसरा कर के आते हैं। हम इस योग्य भी नहीं कि जो चूरचार तेरे भोजनमंच पर से गिरते हैं उन्हें चुनें पर तू वही प्रभु है जिस का स्वभाव सदा दया करनी है सो हे अनुग्राही प्रभु हम को यह वर दे कि तेरे प्रिय पुत्र येशू खीष्ट के मांस को ऐसे खावें और उस के लहू को ऐसे पीवें कि हमारे देह जो पाप से अशुद्ध हुए उस की देह से शुद्ध हो जावें और हमारे आत्मा उस के अनमोल लहू से धोये जावें और हम सदा उस में बसें और वह हम में बसे। आमेन् ॥

तब प्रीष्ट भोजनमंच के आगे खड़ा होके रोटी और दाख मधु ऐसे ढब से रख चुके कि सहज और योग्य रीति से मण्डली के आगे रोटी को तोड़े और कटोरे को अपने हाथों में लेवे तब वह यह संस्कार की प्रार्थना कहे।

प्रभु की व्यारी

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर हमारे स्वर्गीय पिता तू ने अपने स्नेह से अपने एकलौते पुत्र येशू ख्रीष्ट को दिया कि वह हमारे छुटकारे के लिये क्रूस पर मरे। उस ने उस पर अपने को एक ही बार एक ही चढ़ावा चढ़ा के जगत भर के पापों के लिये एक पूरा सम्पन्न और पर्य्याप्त बलिदान चढ़ावा और प्रायश्चित किया। और अपनी उस बहु-मूल्य मृत्यु के निरन्तर स्मरणार्थ एक विधि को ठहरा के अपने पवित्र सुसमाचार में हमें आज्ञा दिई है कि मेरे फिर आने लों इस को करते रहो। हे दयालु पिता हम अति नम्रता से बिनती करते हैं हमारी सुन और यह वर दे कि हम इस रोटी और दाखमधु को जो तू ने बनाये हैं तेरे पुत्र अपने त्राता येशू ख्रीष्ट के पवित्र विधान के अनु-सार उसी की मृत्यु और दुःख भोग के स्मरणार्थ खा पीके उस की परम धन्य देह और लहू के भागी होवें। उस ने जिस रात पकड़वाया गया रोटी लो (१) और धन्यवाद कर के तोड़ी (२) और अपने शिष्यों को यह कहके दी कि लेओ खाओ यह (३) मेरी देह है जो तुम्हारे लिये दी जाती है मेरे स्मर-णार्थ यह किया करो। इसी प्रकार से ब्यारी के अनन्तर उस ने कटोरे को लिया (४) औ धन्यवाद कर के उनको यह कह के दिया कि तुम सब इसमें से पिओ कि नई वाचा का यह (५) मेरा लहू है जो तुम्हारे और बहुतों के पापमोचन के लिये बहाया जाता है। जब जब तुम इस को पिओ तब मेरे स्मरणार्थ यह करो। आमेन्॥

१ यहां प्लेट थाली को अपने हाथों में लेवे

२ और यहां रोटी को तोड़े

३ और यहां अपना हाथ सारी रोटी पर रक्खे

४ यहां वह कटोरे को अपने हाथ में लेवे

५ और यहां प्रति एक पात्र पर चाहे कटोरा होवे चाहे झारी जिस में संस्कार के लिये दाखमधु है अपना हाथ रक्खे

प्रभु की ब्यारी

तब सेवक पहले आप ही सहभागिता को दोनों रूपों में लेवे और पीछे यदि कोई विशप वा प्रीष्ट वा डीकन उपस्थित होवे तो उन को भी उसी प्रकार से देवे और उन के पीछे मण्डली के लोगों को भी क्रम से उनके हाथ में देवे और सब नम्रता से घुटने टेके रहें। और जब वह किसी को रोटी देवे तब यह कहे।

हमारे प्रभु येशू खीष्ट की देह जो तेरे लिये दिई गई तेरी देह और आत्मा की अनन्तजीवन के लिये रक्षा करे। इस को ले और खा इस बात के स्मरणार्थ कि खीष्ट तेरे लिये मरा और धन्यवाद करता हुआ उसी को विश्वास के द्वारा अपने मन में खा॥

और जो सेवक किसी को कटोरा देवे तो यह कहे।

हमारे प्रभु येशू खीष्ट का लहू जो तेरे लिये बहाया गया तेरी देह और आत्मा की अनन्तजीवन के लिये रक्षा करे। इस को पी इस बात के स्मरणार्थ कि खीष्ट का लहू तेरे लिये बहाया गया और धन्यवाद कर॥

यदि संस्कार किई हुई रोटी वा दाखमधु सभों के सम्भागी हो चुकने से पहले घट जावे तो प्रीष्ट ऊपर लिखी हुई विधि के अनुसार और रोटी वा दाख मधु का संस्कार करे अर्थात् रोटी पर आशीर्वाद देने के लिये इन शब्दों से आरम्भ करे कि

हमारा त्राता खीष्ट जिस रात इत्यादि

और कटोरे पर आशीर्वाद देने के लिये इन शब्दों से आरम्भ करे कि

इसी प्रकार से ब्यारी के अनन्तर इत्यादि

जब सब सम्भागी हो चुके तब सेवक प्रभु के भोजनमंच के पास फिर जा के

प्रभु की व्यारी

संस्कार किये हुए पदार्थों में से जो कुछ बचा होवे उस को उस पर सम्मान के साथ रख के सुन्दर अतसी कपड़े से ढापे

तब ख्रीष्ट प्रभु की प्रार्थना को कहे और मण्डली के लोग प्रति एक वाक्य को उस के पीछे पीछे कहें

हे हमारे पिता। तू जो स्वर्ग में है। तेरा नाम पवित्र किया जावे। तेरा राज्य आवे। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है पृथ्वी पर भी होवे। हमारी प्रति दिन की रोटी आज हमें दे। और हमारे अपराधों को क्षमा कर। जैसे हम ने भी अपने अपराधियों को क्षमा किया है। और हमें परीक्षा में न ला। परन्तु बुराई से बचा। क्योंकि राज्य और सामर्थ्य और महिमा युगानयुग तेरी ही है। आमेन्॥

इस के अनन्तर यह कहा जावे

हे प्रभु और स्वर्गीय पिता हम तेरे नम्र दास तेरी पैतृक कृपा से यह सम्पूर्ण मन से चाहते हैं कि तू हमारा यह स्तुति और धन्य-वाद का बलिदान दया कर के ग्रहण कर और हम अति नम्रता से विनती करते हैं यह वर दे कि तेरे पुत्र येशू ख्रीष्ट के पुण्य और मृत्यु के कारण और उस के लहू पर के विश्वास के द्वारा हम और तेरी समस्त एक्लेसिया अपने पापों की क्षमा और उस के दुःख भोग के दूसरे सब फलों को प्राप्त करें। और हे प्रभु हम अपने को देह और आत्मा समेत यहां तेरे आगे चढ़ाते और भेंट कर देते हैं कि तेरे लिये बुद्धि-युक्त पवित्र और जीवता बलिदान होवें और नम्रता से विनती करते हैं कि हम सब जो इस पवित्र सहभागिता में भागी भये हैं तेरे अनुग्रह और स्वर्गीय आशीष् से परिपूर्ण होवें और यद्यपि हम अपने भान्ति भान्ति के पापों के कारण तुझ को कोई बलिदान चढ़ाने के योग्य नहीं हैं तथापि हमारी यह विनती है कि तू हमारी योग्यता

का बिचार न कर के पर हमारे अपराधों को क्षमा कर के हमारे इस कर्त्तब्य कर्म्म और सेवा को ग्रहण कर हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा जिस के द्वारा और जिस के संग पवित्रात्मा की एकता में हे सर्वशक्तिमान् पिता सब प्रतिष्ठा और महिमा युगानयुग तेरी ही होती रहे। आमेन् ॥

अथवा यह ॥

हे सर्वशक्तिमान् और सदा जीवते ईश्वर हम सारे अन्तःकरण से तेरा धन्यवाद करते हैं कि तू कृपा कर के हमें जो इन पवित्र रहस्यों को उचित रीति से पा चुके हैं अपने पुत्र हमारे त्राता येशू ख्रीष्ट के अनमोल देह और लहू का आत्मिक भोजन खिलाता है और इस से हम को निश्चय कराता है कि तू हम पर अनुग्रह और कृपा करता है और हम सचमुच तेरे पुत्र की रहस्य देह में जो सारे विश्वासियों की धन्य मण्डली है मिलाये हुए अंग हैं और तेरे प्रिय पुत्र की अनमोल मृत्यु और दुःख भोग के पुण्य के कारण आशा के अनुसार तेरे अनन्त राज्य के अधिकारी भी भये हैं। और हे स्वर्गीय पिता हम अति नम्रता से विनती करते हैं अपने अनुग्रह से हमारी ऐसी सहायता कर कि हम उसी पवित्र सत्संगति में बनें रहें और उन सब सुकर्म्मों को किया करें जो तू ने आगे से ठहराये हैं कि हम उन पर चलें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा जिस को तेरे और पवित्रात्मा के समेत सब प्रतिष्ठा और महिमा युगानयुग होती रहे। आमेन् ॥

तब यह कहा वा गाया जावे।

अत्यन्त ऊर्द्धलोक पर ईश्वर की महिमा। और पृथ्वी पर मेल। और मनुष्यों पर प्रसन्नता होवे। हम तेरी स्तुति करते हैं। हम तुझे धन्य कहते हैं। हम तेरी आराधना करते हैं। हम तेरी महिमा

करते हैं। हम तेरी बड़ी महिमा के कारण तेरा धन्यवाद करते हैं। हे प्रभु परमेश्वर स्वर्गीय राजा ईश्वर पिता सर्वशक्तिमान् ॥

हे प्रभु एकलौते पुत्र येशू खीष्ट। हे प्रभु परमेश्वर। ईश्वर के मेम्ने। पिता के पुत्र। तू जो जगत के पाप उठा ले जाता है। हम पर दया कर। तू जो जगत के पाप उठा ले जाता है। हम पर दया कर। तू जो जगत के पाप उठा ले जाता है। हमारी विनती ग्रहण कर। तू जो पिता की दहिनी ओर बैठा है। हम पर दया कर॥

क्योंकि केवल तू ही पवित्र है। केवल तू ही प्रभु है। केवल तू ही हे खीष्ट पवित्रात्मा के संग ईश्वर पिता की महिमा में अति उन्नत है॥

तब प्रीष्ट अथवा यदि विशप उपस्थित होवे तो वह यह आशीर्वाद देके मण्डली को बिदा करे।

ईश्वर की शान्ति जो सारी समझ से परे है तुम्हारे हृदय और मन की ईश्वर और उस के पुत्र हमारे प्रभु येशू खीष्ट के ज्ञान और प्रेम में रक्षा करे और ईश्वर सर्वशक्तिमान् पिता पुत्र और पवित्रात्मा की आशीष् तुम पर होवे और सर्वदा तुम्हारे संग रहे। आमेन् ॥

जब सहभागिता नहीं होती तब नीचे लिखी हुई प्रार्थनाओं में से एक वा कई एक अर्पण के बिधि के अनन्तर कही जावे और प्रातःकाल और सन्ध्याकाल की तीसरी प्रार्थना और सहभागिता और लितनिया की प्रार्थनाओं के उपरान्त भी जैसा सेवक की समझ में उचित जान पड़े ये प्रार्थनायें कही जा सकती हैं।

हे प्रभु हमारी इन विनतियों और प्रार्थनाओं में दया कर के उपस्थित हो और अपने दासों को अनन्त त्राण के मार्ग पर चला कि इस अनित्य जीवन की सारी अदल बदल और आकस्मिक बातों के

बीच वे तेरी अति करुणायुक्त और सदा सिद्धसहायता से सदा सुरक्षित रहें। हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

हे सर्वशक्तिमान् प्रभु और सनातन ईश्वर हम विनती करते हैं तू कृपा करके हमारे तन मन दोनों को अपनी व्यवस्था के मार्ग में और अपनी आज्ञाओं के कार्य्यों में अगुवाई कर उन को पवित्र कर और उनका शासन कर जिस्तें हम तेरी महा सामर्थ्ययुक्त रक्षा से इस लोक में और परलोक में देह और आत्मा में सुरक्षित रहें। हमारे प्रभु और त्राता येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर हम विनती करते हैं तू यह वर दे कि जो बातें आज हमने अपने शारीरिक कानों से सुनी हैं सो तेरे अनुग्रह से हमारे हृदय में ऐसी जड़ पकड़ें कि वे हम में सुचाल का फल फलें जिस्तें तेरे नाम की प्रतिष्ठा और स्तुति होवे। हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

हे प्रभु हमारे सब कार्य्यों में अपने अत्यन्त अनुग्रह से हमारी अगुवाई कर और अपनी निरन्तर सहायता से हमें आगे बढ़ा कि हम अपने सब कार्य्यों को तुझ में आरम्भ करें तुझ में करते रहें और तुझी में समाप्त भी करें जिस्तें तेरे पवित्र नाम की महिमा होवे और हम अन्त को तेरी दया से अनन्तजीवन प्राप्त करें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर सम्पूर्ण ज्ञान के सोते तू हमारे मांगने से पहले हमारी आवश्यकताओं को और मांगने में हमारी अज्ञानता को जानता है हम विनती करते हैं कि तू हमारी दुर्बलता पर करुणा की दृष्टि कर और जिन बातों को हम अपनी अयोग्यता के कारण मांगने का हियाव नहीं रखते और अपने अन्धेपन के कारण मांग नहीं सकते उन को तू कृपा कर के अपने पुत्र हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट की योग्यता के हेतु हमें प्रदान कर। आमेन्॥

प्रभु की व्यारी

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू ने प्रतिज्ञा किई है कि जो मेरे पुत्र के नाम से कुछ मांगते हैं उन की बिनतियों को सुनूंगा हम ने जो अभी तुझ से अपनी प्रार्थनाएं और बिनतियां किई हैं करुणा कर के हमारी और कान लगा और यह वर दे कि जो बातें हम ने तेरी इच्छा के अनुसार विश्वास से मांगी हैं सो सचमुच प्राप्त होवें जिस्तें हम को अपनी आवश्यकता में सहायता मिले और तेरी महिमा प्रगट होवे हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन् ॥

इतवारों और दूसरे पवित्र दिनों को यदि सहभागिता न होवे तो उस साधारण प्रार्थना लों जो ख्रीष्ट की समस्त एक्लीसिया के लिये जो पृथ्वी पर युद्ध में है किई जाती है सहभागिता बिधि में जो कुछ ठहराया गया है सो इन पिछली प्रार्थनाओं में से एक वा अनेक समेत कहा जावे और अन्त में आशीर्वाद कहा जावे।

और यदि प्रीष्ट की समझ में उस के संग सम्भागी होनेहारे थोड़े होवें तो प्रभु की व्यारी का अनुष्ठान न होवे।

और यदि परोकिया में बीस ही ऐसे सयाने जन होवें जो सहभागिता को पा सकें तौभी यदि चार वा न्यून से न्यून तीन प्रीष्ट के संग सम्भागी न होवें तो सहभागिता न होवे।

कथेद्रालों और विद्यालयों में और जिन एक्लीसियाओं में बहुत से प्रीष्ट और डीकन हैं उन में भी वे सब प्रीष्ट के संग कम से कम प्रति इतवार को यदि सहभागिता के न लेने का कोई उचित कारण न होवे तो उस को लेवें।

और रोटी और वैन के बिषय में जो कुछ झगड़े वा भूल का कारण हुआ वा हो सके उस के दूर करने के लिये इतना ही बहुत है कि जैसी रोटी प्रायः काम में आती है वैसी ही होवे परन्तु गोहूं की जितनी अच्छी और सुथरी रोटी मिल सके वही होवे।

और यदि कुछ रोटी और दाखमधु बिना संस्कार किये हुए बच रहे तो पालक उसे अपने काम के लिये रक्खे परन्तु जो संस्कार किया गया है यदि उस में से कुछ बच रहे तो उस को एक्लीसिया के बाहर ले जाना न चाहिये पर प्रीष्ट उन

सम्भागियों समेत जिन को वह उसी समय अपने पास बुलावे आशीर्वाद के अनन्तर ही उस को सम्मान के साथ खावे और पीवे ।

सहभागिता के लिये जो रोटी और दाखमधु चाहिये उस को पालक और एक्लेसिया रक्षक परोकिया के दाम से मंगावें । जानना चाहिये कि परोकिया के प्रत्येक जन को बरस में न्यून से न्यून तीन बार सहभागिता लेनी चाहिये और उन में से एकबार पुनरुत्थान के दिन में होना अवश्य है ।

जो द्रव्य अर्पण विधि में दिया गया सो उपासना के उपरान्त ऐसे भक्ति और दया के कामों में लगाया जावे जो सेवक और एक्लेसिया रक्षक उचित समझें और यदि वे इस में एकमत न होवें तो वह विशप की आज्ञा के अनुसार लगाया जावे ।

प्रभु की व्यारी संबन्धी परिचर्य्या की इस विधि में जो ठहराया गया है कि सम्भागी लोग उस को घुटने टेक के लेवें इस का अभिप्राय अच्छा है अर्थात् यह कि ख्रीष्ट जो लाभ सब योग्य लेनेहारों को देता है उन को हम नम्रता और कृतज्ञता से मानते हैं और पवित्र सहभागिता में जो अधर्म्म और गड़बड़ हो सकता था सो दूर होता है । तिस पर भी ऐसा न हो कि कोई जन चाहे मूर्खता और मन्दता से चाहे दुर्भाव और हठ से इस घुटने टेकने का उलटा अर्थ लगावे इस लिये जानना चाहिये कि इस का अभिप्राय यह नहीं कि सक्रामेन्त की जो रोटी और दाखमधु मुंह से लिई जाती है उनकी अथवा ख्रीष्ट के प्राकृत मांस और लोहू की जो मानो शारीरिक रीति से उपस्थित हैं आराधना किई जावे वरन ऐसा करना उचित भी नहीं । क्योंकि सक्रामेन्त की रोटी और दाखमधु अपने प्राकृत तत्वही में बने रहते हैं और इस लिये उनकी आराधना करनी नहीं चाहिये कि वह तो मूर्त्तिपूजा होती जिस से सब विश्वासी ख्रीष्टियानों को घिन्न करना चाहिये और हमारे त्राता ख्रीष्ट की प्राकृत देह और लहू यहां नहीं पर स्वर्ग ही में हैं क्योंकि यह ख्रीष्ट की प्राकृत देह की सत्यता के विरुद्ध है कि वह एक ही समय में अनेक स्थानों में रहे ।

मण्डली में बालकों को बप्तिस्मा देने की विधि

जो एक्लीसिया में काम आवे

मण्डली के लोगों को समझाना चाहिये कि उत्तम रीति यह है कि बप्तिस्मा केवल इतवारों और दूसरे पवित्र दिनों में जब बहुत से लोग एकट्ठे होते हैं होना चाहिये। और इस के दो अभिप्राय हैं एक यह है कि मण्डली इस बात पर साक्षी दे सके कि जिन्हों ने उसी समय बप्तिस्मा पाया है सो खीष्ट की एक्लीसिया में मिलाये गए हैं। दूसरा यह कि जितने उपस्थित हैं उन में से प्रत्येक जन को बालकों का बप्तिस्मा देखने से अपना वह अंगीकार स्मरण होवे जो अपने बप्तिस्मा में ईश्वर के साम्हने किया था। इस कारण से यह भी उचित है कि बप्तिस्मा देश भाषा में दिया जावे। तो भी यदि अवश्य होवे तो किसी और दिन को भी बालकों का बप्तिस्मा हो सकता है।

जानना चाहिये कि प्रत्येक लड़के के लिये जिस का बप्तिस्मा होना है दो धर्म्म पिता और एक धर्म्म माता चाहिये और प्रत्येक लड़की के लिये एक धर्म्म पिता और दो धर्म्म माता चाहियें।

जब लड़कों का बप्तिस्मा होना है तब मा बाप पालक को इस का समाचार एक दिन पहिले अथवा उसी दिन प्रातःकाल की प्रार्थना से पहिले देवें। और तब धर्म्म पिता और धर्म्म माता अरु और लोग जो लड़कों के साथ आवें प्रातःकाल की प्रार्थना के दूसरे पाठ के अनन्तर वा सन्ध्याकाल की प्रार्थना के दूसरे पाठ के अनन्तर जैसा पालक अपनी समझ के अनुसार आज्ञा देवे कुण्ड के पास उपस्थित होवें। और कुण्ड उसी समय निर्मल जल से भरा जावे। उस के पास प्रीष्ट आके और वहां खड़ा होके कहे।

क्या यह लड़का बप्तिस्मा पा चुका है वा नहीं

यदि वे कहें कि नहीं तो प्रीष्ट यों कहे।

हे अति प्रियो जब कि सब मनुष्य पाप के साथ गर्भ में आते और जन्म लेते हैं और हमारा त्राता खीष्ट कहता है कि यदि कोई पुन-

जनित और जल और पविचात्मा से फिरके उत्पन्न न होवे तो वह ईश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता इस लिये मैं तुम से विनती करता हूं कि हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा ईश्वर पिता को पुकारो कि वह अपनी अत्यन्त दया से इस लड़के को वह पदार्थ देवे जो उसको स्वभाव से नहीं मिल सकता जिस्तें वह जल और पविचात्मा से बप्तिस्मा पाके खीष्ट की पबिच एक्लेसिया में मिलाया जावे और उस का एक जीवता अंग बने ॥

तब प्रीष्ट कहे ।

प्रार्थना करें

हे सर्वशक्तिमान् और सनातन ईश्वर तू ने अपनी बड़ी दया से नोह् और उस के घराने को जल में नष्ट होने से नौका में बचाया और अपने निज लोग यिस्राएल्वंशियों को लाल समुद्र में से कुशल क्षेम के साथ पार पहुंचा दिया और इस में अपने पविच बप्तिस्मा का दृष्टान्त दिया और अपने अति प्रिय पुच येशू खीष्ट के बप्तिस्मा के द्वारा जो यर्दन् नदी में भया जल को पाप के रहस्य रीति से धो डालने के लिये पविच किया । हम विनती करते हैं अपनी अनन्त दया से इस लड़के पर दया दृष्टि कर उस को पविचात्मा से धो और पविच कर कि वह तेरे कोप से छूटके खीष्ट की एक्लेसिया रूपी नौका में ग्रहण किया जावे और विश्वास में दृढ़ और आशा से आनन्दित होके और प्रेम में जड़ पकड़के इस संसार रूपी दुःख सागर के तरंगों से ऐसा पार हो जावे कि अन्त को वह अनन्तजीवन की भूमि में पहुंचे और वहां तेरे साथ युगानयुग राज्य करता रहे हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

हे सर्वशक्तिमान् और अमर ईश्वर दीन हीनों के आश्रय सब शर-

णागतों के सहायक विश्वासियों के जीवन और मृतकों के पुनरुत्थान हम तुझे इस बालक के लिये पुकारते हैं कि वह जो तेरे पवित्र बप्तिस्मा के पाने को आया है आत्मिक पुनर्जनन के द्वारा अपने पापों की क्षमा प्राप्त करे। हे प्रभु उसे ग्रहण कर जैसा तू ने अपने अति प्रिय पुत्र के द्वारा प्रतिज्ञा किई है कि मांगो तो तुम्हें मिलेगा ढूंढ़ो तो तुम पाओगे खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायेगा इसी प्रकार से अब हमें जो मांगते हैं दे हम जो ढूंढ़ते हैं पावें हमारे लिये जो खटखटाते हैं द्वार खोल जिस्तें यह बालक तेरे स्वर्गीय स्नान की अनन्त आशीष् में भागी होवे और उस अनन्त राज्य में पहुंचे जिस की तू ने हमारे प्रभु ख्रीष्ट के द्वारा प्रतिज्ञा किई है। आमेन्॥

तब सब लोग खड़े होवें और प्रीष्ट कहे

सुसमाचार की ये बातें सुनो जो पवित्र मार्क ने दशवें अध्याय में १३ वें पद से आरम्भ करके लिखी हैं॥

लोग छोटे बालक ख्रीष्ट के पास ले आये कि वह उन्हें छूये और उस के शिष्य उन को डांटने लगे। और येशू यह देखके अति अप्रसन्न भया और उन से कहा कि छोटे बालकों को मेरे पास आने देओ और उन्हें मत बरजो क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है मैं तुम से सच कहता हूं कि जो कोई ईश्वर के राज्य को छोटे बालक की नाईं ग्रहण न करे सो उस में कदापि प्रवेश न करेगा। और उस ने उन्हें गोद में लिया और अपने हाथ उन पर रखके उन्हें आशीर्वाद दिया॥

सुसमाचार के पढ़ने के अनन्तर सेवक उस के वचनों पर यह संक्षिप्त उपदेश सुनावे।

हे प्यारो तुम इस सुसमाचार में हमारे त्राता ख्रीष्ट के वचन सुनते

हो कि उस ने आज्ञा दिई कि लड़कों को मेरे पास ले आओ और जो लोग उन्हें उस के पास आने से रोकते थे उन को उस ने क्योंकर डांटा और सब मनुष्यों को वह क्योंकर समझाता है कि उन के समान निर्दोष होवें। तुम देखते हो कि उस ने अपने प्रत्यक्ष इंगित और कर्म्म से उन के विषय अपनी सुइच्छा दिखलाई कि उस ने उन्हें अपनी छाती में लगाया उन पर अपने हाथ रक्खे और उन को आशीर्वाद दिया। सो सन्देह मत करो पर दृढ़ विश्वास रक्खो कि वह उसी प्रकार से इस बालक को प्रसन्नता से ग्रहण करेगा और अपनी दया की गोद में लेगा और अनन्तजीवन की आशीष् देगा और अपने अनन्त राज्य का भागी करेगा। सो जब कि हम को निश्चय हुआ है कि हमारे स्वर्गीय पिता की इस बालक के विषय में सुइच्छा है जैसा उस के पुत्र येशू खीष्ट ने कहा है और हम इस में कुछ सन्देह नहीं करते कि वह हमारे इस प्रेम के काम को कि हम इस बालक को उस के पवित्र बप्तिस्मा के पाने को ले आये हैं दया से स्वीकार करता है इस लिये हम विश्वास और भक्ति से यह कहके उस का धन्यवाद करें॥

हे सर्वशक्तिमान् और सनातन ईश्वर स्वर्गीय पिता हम नम्रता से तेरा धन्यवाद करते हैं कि तू ने कृपा करके हम को अपने अनुग्रह के जानने और अपने पर विश्वास करने के लिये बुलाया है हमारे इस ज्ञान को बढ़ा और इस विश्वास को सदा दृढ़ करता रह। इस बालक को अपना पवित्रात्मा दे कि वह फिर से उत्पन्न होवे और अनन्त त्राण का अधिकारी बन जावे हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा जो तेरे और पवित्रात्मा के साथ अब और सदा लों जीता और राज्य करता है। आमेन्॥

तब प्रीष्ट धर्म्मपिताओं और धर्म्ममाताओं से यूं कहे।

हे अति प्रियो तुम इस लड़के को यहां बप्तिस्मा पाने को ले आए

हो। तुम ने प्रार्थना किई है कि हमारा प्रभु येशू खीष्ट कृपा कर के उस को ग्रहण करे उस को उस के पापों से छुड़ावे उस को पवित्रात्मा से पवित्र करे और स्वर्ग का राज्य और अनन्तजीवन देवे। तुम ने यह भी सुना है कि हमारे प्रभु येशू खीष्ट ने इन सब बातों के जो तुम ने मांगी हैं देने की प्रतिज्ञा अपने सुसमाचार में किई है। इस प्रतिज्ञा को वह तो आप निःसन्देह पूरा करेगा। सो जब खीष्ट ने ऐसी प्रतिज्ञा किई तो इस बालक को भी अवश्य है कि जब लों वह सयाना होके इस बात को अपने ऊपर न लेवे तुम्हारे द्वारा जो उसके जामिन हो अपनी ओर से यह प्रतिज्ञा सच्चाई से करे कि मैं दुष्टात्मा और उसके सब कार्य्यों को त्याग देऊंगा और ईश्वर के पवित्र वचन पर दृढ़ विश्वास रक्खूंगा और उस की आज्ञाओं को अधीनता से पालन करूंगा।

सो मैं पूछता हूं॥

क्या तू इस लड़के के नाम पर दुष्टात्मा और उस के सब कार्य्यों को संसार की व्यर्थ धूम धाम और बिभव को उस के सारे लालच समेत और शरीर की कुइच्छाओं को ऐसा त्याग देता है कि तू उन के पीछे न चलेगा न उन के बश में रहेगा॥

उत्तर। मैं उन सब को त्याग देता हूं॥

सेवक। क्या तू बिश्वास रखता है ईश्वर सर्वशक्तिमान् पिता पर जो स्वर्ग और पृथ्वी का कर्ता है और येशू खीष्ट पर जो उस का एकलौता पुत्र और हमारा प्रभु है और यह कि वह पवित्रात्मा की शक्ति से गर्भ में आया कुमारी मिर्याम् से जन्मा पोन्त्य पीलात के अधिकार में दुःख उठाया क्रूस पर चढ़ाया गया मर गया और समाधि में रक्खा गया पाताल में उतर गया तीसरे दिन जी भी उठा स्वर्ग पर चढ़ गया और सर्वशक्तिमान् ईश्वर पिता की दहिनी ओर बैठा है और

वहां से युग के अन्त में जीवतों और मृतकों का न्याय करने को आनेहारा है ॥

क्या तू पवित्रात्मा पर विश्वास रखता है पवित्र कथोलिक एक्लेसिया पर पवित्रों की सहभागिता पर पापों की क्षमा पर शरीर के पुनरुत्थान पर और मृत्यु के अनन्तर अनन्तजीवन पर ॥

उत्तर । मैं इन सब बातों पर दृढ़ विश्वास रखता हूं ॥

सेवक । क्या तू इस विश्वास पर बप्तिस्मा चाहता है ॥

उत्तर । यही मेरी इच्छा है ॥

सेवक । सो क्या तू ईश्वर की पवित्र इच्छा और आज्ञाओं को अधीनता से पालन करेगा और जन्म भर उन के अनुसार चलेगा ॥

उत्तर । हां मैं ऐसा ही करूंगा ॥

तब प्रीष्ट कहे ।

हे दयालु ईश्वर यह वर दे कि इस लड़के में का पुराना आदम् ऐसा गाड़ा जावे कि नया मनुष्य उस में जी उठे । आमेन् ॥

यह वर दे कि सब शारीरिक इच्छाएं उस में मर जावें और जो कुछ आत्मा से सम्बन्ध रखता है सो उस में जीवे और बढ़े । आमेन् ॥

यह वर दे कि वह दुष्टात्मा संसार और शरीर पर जयवन्त होने और जयोत्सव करने के लिये बल और सामर्थ्य पावे । आमेन् ॥

यह वर दे कि जो कोई यहां हमारे पद और सेवकाई के अनुसार तुझे अर्पण किया जाता है सो स्वर्गीय सद्गुणों से आभूषित भी होवे और सदा का फल पावे तेरी दया से हे धन्य प्रभु परमेश्वर जो युगानयुग जीता और सब वस्तुन पर राज्य करता है । आमेन् ॥

हे सर्वशक्तिमान् सदा जीवते ईश्वर तेरे अत्यन्त प्रिय पुत्र येशू ख्रीष्ट ने हमारे पापों की क्षमा के लिये अपने अनमोल पांजर में से जल

और लहू दोनों बहाये और अपने शिष्यों को आज्ञा दिई कि जाके सब जातियों को शिष्य करो और पिता और पुच और पवित्रात्मा के नाम में उन्हें बप्तिस्मा देओ। हम बिनती करते हैं तू अपनी मण्डली की प्रार्थनाओं को सुन और इस जल को पाप के रहस्य रीति से धो डालने के लिये पवित्र कर और यह वर दे कि यह लड़का जो अभी इस में बप्तिस्मा पाने पर है तेरे अनुग्रह की भरपूरी को पावे और तेरे विश्वासी और चुने हुए लड़कों की गिनती में सदा बना रहे हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

तब ख्रीष्ट लड़के को अपने हाथों पर लेवे और धर्म्मपिताओं और धर्म्ममाताओं से कहे

इस लड़के का नाम रक्खो।

और तब उन के कहने के अनुसार उस का नाम लेके यदि वे उस को निश्चय करावें कि लड़का जल में डुबकी पाने को भली भांति सह सकेगा तो उस को जल में चौकसी से और सम्भालके यह कहता हुआ डुबकी देवे कि

अमुक मैं तुझे पिता और पुच और पवित्रात्मा के नाम में बप्तिस्मा देता हूं। आमेन्॥

पर यदि वे निश्चय करके कहें कि लड़का दुर्बल है तो इतना ही बहुत है कि वह ऊपर लिखे हुए वचन कहता हुआ उस पर जल डाले

अमुक मैं तुझे पिता और पुच और पवित्रात्मा के नाम मे बप्तिस्मा देता हूं। आमेन्॥

मण्डली में बालकों को बप्तिस्मा देने की बिधि

तब प्रीष्ट कहे।

हम इस लड़के को ख्रीष्ट की झुण्ड की मण्डली में मिला लेते हैं और उस पर * क्रूस का आकार इस बात का चिन्ह करके खींचते हैं कि वह आगे को ख्रीष्ट के जो क्रूस पर चढ़ाया गया था विश्वास का अंगीकार करने से न लजावेगा और उस के झण्डे तले पाप और संसार और दुष्टात्मा से बीरता के साथ लड़ेगा और जीवन भर ख्रीष्ट का विश्वस्त योद्धा और दास बना रहेगा। आमेन्॥

* यहां प्रीष्ट लड़के के ललाट पर क्रूस का आकार खींचे

तब प्रीष्ट कहे।

हे अति प्रिय भाइयो जब कि यह लड़का पुनर्जनित हुआ और ख्रीष्ट की एक्लीसिया की देह में मिलाया गया है इस लिये हम इन उत्तम पदार्थों के हेतु सर्वशक्तिमान् ईश्वर का धन्यवाद करें और एक मत होके उससे यह प्रार्थना करें कि यह लड़का अपना अवशिष्ट जीवन इस आरम्भ के अनुसार बितावे॥

तब सब घुटने टेकके यह कहे।

हे हमारे पिता। तू जो स्वर्ग में है। तेरा नाम पवित्र किया जावे। तेरा राज्य आवे। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है पृथ्वी पर भी होवे। हमारी प्रतिदिन की रोटी आज हमें दे। और हमारे अपराधों को क्षमा कर। जैसे हम ने भी अपने अपराधियों को क्षमा किया है। और हमें परीक्षा में न ला। परन्तु बुराई से बचा। आमेन्॥

तब प्रीष्ट कहे।

हे अत्यन्त दयालु पिता हम अन्तःकरण से तेरा धन्यवाद करते

हैं कि तू ने कृपा करके इस बालक को अपने पवित्रात्मा से पुनर्ज-नित किया उस को अपना लेपालक लड़का करके ग्रहण किया और उस को अपनी पवित्र एक्लीसिया की देह में मिलाया है। और हम नम्रता से बिनती करते हैं यह वर दे कि वह जो पाप की अपेक्षा में मरा और धर्म्म की अपेक्षा में जीता है और खीष्ट की मृत्यु में उस के साथ गाड़ा गया है पुराने मनुष्य को क्रूस पर चढ़ावे और पाप की समस्त देह को नाश करे और जैसा वह तेरे पुत्र की मृत्यु में भागी हुआ है वैसा ही वह उस के पुनरुत्थान में भी भागी होवे जिस्तें अन्त को तेरी पवित्र एक्लीसिया के अवशिष्ट लोगों समेत तेरे अनन्त राज्य का अधिकारी होवे हमारे प्रभु खीष्ट के द्वारा। आमिन्॥

तब सब खड़े होवें और प्रीष्ट धर्म्मपिताओं और धर्म्ममाताओं को यह उपदेश सुनावे।

जब कि इस लड़के ने तुम्हारे द्वारा जो उस के जामिन हो प्रतिज्ञा किई है कि मैं दुष्टात्मा और उस के सब कार्य्यों को त्याग देऊंगा और ईश्वर पर विश्वास रक्खूंगा और उस की सेवा करूंगा इस लिये तुम को स्मरण रखना उचित है कि यह प्रबन्ध करना तुम्हारा कर्त्तव्य कर्म्म है कि जब यह बालक सीखने के योग्य होगा तब उस को यह सिखाया जावे कि उस ने यहां तुम्हारे द्वारा कैसा बड़ा प्रण प्रतिज्ञा और अंगीकार किया है। और जिस्तें वह इन बातों को और अच्छी रीति से जान सके तुम को उसे समझाना चाहिये कि वह एक्लीसिया में उपदेश सुना करे और विशेष करके तुम को ऐसा करना चाहिये कि वह विश्वासवचन प्रभु की प्रार्थना और दस आज्ञाएं प्रचलित भाषा में सीखे और जो कुछ खीष्टियान को अपने आत्मा के कुशल के लिये जानना और मानना आवश्यक है उस को भी सीखे और

मण्डली में बालकों को बप्तिस्मा देने की बिधि

यह लड़का धर्म्म में ऐसा प्रतिपालन पावे कि भक्तियुक्त और खीष्टीय चाल चले और यह सदा स्मरण रहे कि बप्तिस्मा हमारे अंगीकार का प्रतिरूप है अर्थात् यह कि हम अपने त्राता येशू खीष्ट की चाल के अनुगामी होवें और उस के समान बनें कि जैसे वह हमारे लिये मरा और फिर जी उठा वैसे ही हम जिन को बप्तिस्मा मिला है पाप की अपेक्षा में मरें और धर्म्म की अपेक्षा में जी उठें और अपनी सब बुरी और बिगड़ी इच्छाओं को सदा मृतक करते रहें और सारे धर्म्म और भक्ति की चाल में प्रतिदिन आगे बढ़ते जावें ॥

तब वह यह भी कहे ।

तुम को ऐसा भी करना अवश्य है कि जब यह लड़का विश्वास वचन प्रभु की प्रार्थना और दश आज्ञाओं को प्रचलितभाषा में सुना सकेगा और इस से अधिक एक्लेसिया के कतेखिस्मा में जो इसी अभिप्राय से ठहराया गया है शिक्षा पा चुकेगा तब वह बिशप के पास उस से दृढ़ीकृत होने के लिये उपस्थित किया जावे ॥

ईश्वर के वचन से निश्चय होता है कि जो लड़के बप्तिस्मा पाके बिना कर्म्म पाप किये मरते हैं सो निःसन्देह त्राण पाते हैं ॥

बप्तिस्मा में क्रूस का आकार खींचने के विषय में जो किसी को शंका होवे तो उस के दूर करने के लिये हम यह कहते हैं कि ३० वें कनोन में जो खीष्टीय संबत् १६०४ में पहिले प्रचलित किया गया उस रीति का अर्थ और उस के रखने के योग्य कारण ठीक ठीक बताए गए हैं ॥

घर में
बालकों को बप्तिस्मा देने की विधि

प्रत्येक परोक्रिया के पालकों को चाहिये कि मण्डली के लोगों को बार बार समझावें कि वे अपने बालकों के बप्तिस्मा में विलम्ब न करें और यदि कोई ऐसा भारी कारण न होवे जिस को पालक योग्य समझे तो उनके जन्म के अनन्तर पहले वा दूसरे इतवार को अथवा यदि उन दो इतवारों के बीच में कोई पवित्र दिन पड़े तो उस में उनको बप्तिस्मा दिलावें।

और वे उन को यह भी चितावें कि यदि वैसी ही कोई भारी आवश्यकता न होवे तो वे अपने लड़कों को अपने घरों में बप्तिस्मा न दिलावें। परन्तु जब ऐसा करने की आवश्यकता होवे तो बप्तिस्मा इस नीचे लिखी हुई रीति से दिया जावे।

पहिले परोक्रिया का सेवक अथवा यदि वह न होवे तो जो कोई दूसरा यथार्थ सेवक मिल सके उन के साथ जो उपस्थित हैं ईश्वर को इस प्रकार से पुकारे कि प्रभु की प्रार्थना और एक्लीसिया में बप्तिस्मा देने की बिधि में से जितनी प्रार्थनाएं उस अवसर में कही जा सकती हैं उन को कहे। और तब उपस्थितों में से कोई बालक का नाम रक्खे और सेवक ये वचन कहता हुआ उस पर जल डाले।

अमुक मैं तुझे पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम में बप्तिस्मा देता हूं। आमेन्॥

तब सब घुटने टेकें और सेवक ईश्वर का धन्यवाद यूं करे

हे अत्यन्त दयालु पिता हम अन्तःकरण से तेरा धन्यवाद करते हैं कि तू ने कृपा करके इस बालक को अपने पवित्रात्मा से पुनर्जनित किया है उस को अपना लेपालक लड़का करके ग्रहण किया और उसको अपनी पवित्र एक्लीसिया की देह में मिलाया है। और हम नम्रता से विनती करते हैं कि जैसा वह अभी तेरे पुत्र की मृत्यु

में भागी हुआ है वैसा ही वह उस के पुनरुत्थान में भी भागी होवे और अन्त को तेरे अवशिष्ट पवित्रों समेत तेरे अनन्त राज्य का अधिकारी होवे उसी तेरे पुत्र हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

और लोग सन्देह न करें कि जिस लड़के का इस रीति से बप्तिस्मा हुआ है उस को यथार्थ और पूरी रीति से बप्तिस्मा नहीं मिला वरन जानें कि उस को फिर बप्तिस्मा देना अनुचित है। तिस पर भी जिस लड़के का इस रीति से बप्तिस्मा हुआ यदि जीए तो योग्य है कि वह एक्लीसिया में उपस्थित किया जावे जिस्तें यदि उसी परोकिया के सेवक ने आपही उस लड़के को बप्तिस्मा दिया हो तो वह मण्डली को निश्चय करावे कि मैं ने घर में यथाविधि बप्तिस्मा दिया था। और ऐसी अवस्था में तो वह यूं कहे।

मैं तुम को निश्चय कराता हूं कि मैं ने अमुक समय और अमुक स्थान में एक्लीसिया की ठहराई हुई बिधि के अनुसार कइ एक साक्षियों के साम्हने इस लड़के को बप्तिस्मा दिया॥

पर यदि लड़के को किसी और यथार्थ सेवक के हाथ से बप्तिस्मा मिला होवे तो उस परोकिया का सेवक जिस में लड़के का जन्म वा बप्तिस्मा भया इस बात को जांचे कि लड़के ने यथार्थ रीति से बप्तिस्मा पाया है वा नहीं इस अवस्था में यदि वे जो लड़के को एक्लीसिया में ले आये हैं यह उतर देवें कि इस लडके का बप्तिस्मा हो चुका है तो सेवक यह कहके उन को और भी बूझ लेवे कि

इस लड़के का किस के हाथ से बप्तिस्मा भया।

जब इस लड़के का बप्तिस्मा भया तब कौन उपस्थित था।

हो सकता है कि ऐसी संकेती के समयों में डर वा उतावली के कारण इस सक्रामेन्त की कोई आवश्यक बात कदाचित छूट गई होवे इस लिये मैं तुम से यह भी पूछता हूं।

बालकों को बप्तिस्मा घर में देने की बिधि

किस वस्तु से इस लड़के का बप्तिस्मा भया।
किन शब्दों से इस लड़के का बप्तिस्मा भया।

तो यदि सेवक को उन के उत्तरों से जो लड़के को लेआये हैं निश्चय होवे कि सब कुछ यथार्थ रीति से किया गया तो वह लड़के को फिर से बप्तिस्मा न देवे पर यह कहके उसको सत्य ख्रीष्टियानों की झुण्ड का समझके ग्रहण करे कि

मैं तुम को निश्चय कराता हूं कि इस लड़के के बप्तिस्मा में सब कुछ अच्छी रीति से और यथा विधि किया गया कि वह जो जन्म पाप और ईश्वर के कोप में उत्पन्न भया अब बप्तिस्मा में पुनर्जनन के स्नानकुण्ड के द्वारा ईश्वर के लड़कों और अनन्तजीवन के अधिकारियों की गिनती में मिलाया गया क्योंकि हमारा प्रभु येशू ख्रीष्ट ऐसे बालकों से अपना अनुग्रह और दया रोक नहीं रखता पर उन को अति प्रेम से अपने पास बुलाता है जैसे पवित्र सुसमाचार हमारी शान्ति के लिये इस प्रकार की साक्षी देता है।

पवित्र मार्क १०। १३।

लोग छोटे बालक ख्रीष्ट के पास ले आये कि वह उन्हें छूये और उस के शिष्य उन को डांटने लगे। और येशू यह देखके अति अप्रसन्न भया और उन से कहा कि छोटे बालकों को मेरे पास आने देओ और उन्हें मत बरजो क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है मैं तुम से सच कहता हूं कि जो कोई ईश्वर के राज्य को छोटे बालक की नाईं ग्रहण न करे सो उस में कदापि प्रवेश न करेगा। और उस ने उन्हें गोद में लिया और अपने हाथ उन पर रखके उन्हें आशीर्वाद दिया॥

बालकों को बप्तिस्मा घर में देने की विधि

सुसमाचार के पढ़ने के अनन्तर सेवक उस के वचनों पर यह संक्षिप्त उपदेश सुनावे ।

हे प्यारो तुम इस सुसमाचार में हमारे चाता खीष्ट के वचन सुनते हो कि उस ने आज्ञा दिई कि लड़कों को मेरे पास ले आओ और जो लोग उन्हें उस के पास आने से रोकते थे उन को उस ने क्योंकर डांटा और सब मनुष्यों को वह क्योंकर समझाता है कि उन के समान निर्दोष होवें । तुम देखते हो कि उस ने अपने प्रत्यक्ष इंगित और कर्म्म से उन के विषय अपनी सुइच्छा दिखलाई कि उस ने उन्हें अपनी छाती से लगाया उन पर अपने हाथ रक्खे और उन को आशीर्वाद दिया । सो सन्देह मत करो पर दृढ़ विश्वास रक्खो कि उसने उसी प्रकार से इस बालक को प्रसन्नता से ग्रहण किया और अपनी दया की गोद में लिया है और जैसे उस ने अपने पवित्र वचन में प्रतिज्ञा किई उस को अनन्तजीवन की आशीष् देगा और अपने अनन्त राज्य का भागी करेगा । सो जब कि हम को निश्चय हुआ है कि हमारे स्वर्गीय पिता की इस बालक के विषय में सुइच्छा है जैसा उस के पुत्र येशू खीष्ट ने कहा है इस लिये हम विश्वास और भक्ति से उस का धन्य-वाद करें और जो प्रार्थना प्रभु ने आप हम को सिखाई है उस को कहें ।

हे हमारे पिता । तू जो स्वर्ग में है । तेरा नाम पवित्र किया जावे । तेरा राज्य आवे । तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है पृथ्वी पर भी होवे । हमारी प्रतिदिन की रोटी आज हमें दे । और हमारे अपराधों को क्षमा कर । जैसे हम ने भी अपने अपराधियों को क्षमा किया है । और हमें परीक्षा में न ला । परन्तु बुराई से बचा । आमेन् ॥

हे सर्वशक्तिमान् और सदा जीवते ईश्वर स्वर्गीय पिता हम नम्रता से तेरा धन्यवाद करते हैं कि तू ने कृपा करके हम को अपने अनु-

यह के जानने और अपने पर विश्वास करने के लिये बुलाया है हमारे इस ज्ञान को बढ़ा और इस विश्वास को सदा दृढ़ करता रह। इस बालक को अपना पवित्रात्मा दे कि वह जो हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा फिर से उत्पन्न भया और अनन्त त्राण का अधिकारी बना है तेरा दास बना रहे और तेरी प्रतिज्ञा को प्राप्त करे उसी तेरे पुत्र हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा जो तेरे और पवित्रात्मा के साथ अब और सदा को जीता और राज्य करता रहेगा। आमेन्॥

तब प्रीष्ट लड़के का नाम पूछे और जब धर्म्मपिता और धर्म्ममाता उस को बता चुकें तो सेवक कहे।

क्या तू इस लड़के के नाम पर दुष्टात्मा और उस के सब कार्य्यों को संसार की व्यर्थ धूम धाम और विभव को उस के सारे लालच समेत और शरीर की कुइच्छाओं को ऐसा त्याग देता है कि तू उन के पीछे न चलेगा न उन के वश में रहेगा॥

उत्तर। मैं उन सब को त्याग देता हूं॥

सेवक। क्या तू विश्वास रखता है॥

ईश्वर सर्वशक्तिमान् पिता पर जो स्वर्ग और पृथ्वी का कर्त्ता है और येशू खीष्ट पर जो उस का एकलौता पुत्र और हमारा प्रभु है और यह कि वह पवित्रात्मा की शक्ति से गर्भ में आया कुमारी मियाम् से जन्मा पोन्त्य पीलात के अधिकार में दुःख उठाया क्रूस पर चढ़ाया गया मर गया और समाधि में रक्खा गया पाताल में उतर गया तीसरे दिन जी भी उठा स्वर्ग पर चढ़ गया और सर्वशक्तिमान् ईश्वर पिता की दहिनी ओर बैठा है और वहां से युग के अन्त में जीवतों और मृतकों का न्याय करने को आनेहारा है॥

क्या तू पवित्रात्मा पर विश्वास रखता है पवित्र कथोलिक एक्ले-

बालकों को बप्तिस्मा घर में देने की बिधि

सिया पर पवित्रों की सहभागिता पर पापों की क्षमा पर शरीर के पुनरुत्थान पर और मृत्यु के अनन्तर अनन्तजीवन पर ॥

उत्तर । मैं इन सब बातों पर दृढ़ विश्वास रखता हूं ॥

सेवक । सो क्या तू ईश्वर की पवित्र इच्छा और आज्ञाओं को आधीनता से पालन करेगा और जन्म भर उन के अनुसार चलेगा ॥

उत्तर । हां मैं ऐसा ही करूंगा ॥

तब प्रीष्ट कहे ।

हम इस लड़के को ख्रीष्ट की झुण्ड की मण्डली में मिला लेते हैं और उस पर * क्रूस का आकार इस बात का चिन्ह करके खींचते हैं कि वह आगे को ख्रीष्ट के जो क्रूस पर चढ़ाया गया था विश्वास का अंगीकार करने से न लजावेगा और उस के झण्डे तले पाप और संसार और दुष्टात्मा से बीरता के साथ लड़ेगा और जीवन भर ख्रीष्ट का विश्वस्त योद्धा और दास बना रहेगा । आमेन् ॥

*यहां प्रीष्ट लड़के के ललाट पर क्रूस का आकार खींचे

तब प्रीष्ट कहे ।

हे अति प्रिय भाइयो जब कि यह लड़का बप्तिस्मा के द्वारा पुनर्जनित हुआ और ख्रीष्ट की एक्लेसिया की देह में मिलाया गया है इस लिये हम इन उत्तम् पदार्थों के हेतु सर्वशक्तिमान् ईश्वर का धन्यवाद करें और एक मत होके उस से यह प्रार्थना करें कि यह लड़का अपना अवशिष्ट जीवन इस आरम्भ के अनुसार बितावे ॥

तब प्रीष्ट कहे ।

हे अत्यन्त दयालु पिता हम अन्तःकरण से तेरा धन्यवाद करते

हैं कि तू ने कृपा करके इस बालक को अपने पवित्रात्मा से पुनर्जनित किया उस को अपना लेपालक लड़का करके ग्रहण किया और उस को अपनी पवित्र एक्लीसिया की देह में मिलाया है। और हम नम्रता से विनती करते हैं यह वर दे कि वह जो पाप की अपेक्षा में मरा और धर्म्म की अपेक्षा में जीता है और खीष्ट की मृत्यु में उस के साथ गाड़ा गया है पुराने मनुष्य को क्रूस पर चढ़ावे और पाप की समस्त देह को नाश करे और जैसा वह तेरे पुत्र की मृत्यु में भागी हुआ है वैसा ही वह उस के पुनरुत्थान में भी भागी होवे जिस्तें अन्त को तेरी पवित्र एक्लीसिया के अवशिष्ट लोगों समेत तेरे अनन्त राज्य का अधिकारी होवे हमारे प्रभु खीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

तब सब खड़े होवें और प्रीष्ट धर्म्मपिताओं और धर्म्ममाताओं को यह उपदेश सुनावे।

जब कि इस लड़के ने तुम्हारे द्वारा जो उस के जामिन हो प्रतिज्ञा किई है कि मैं दुष्टात्मा और उस के सब कार्य्यों को त्याग देऊंगा और ईश्वर पर विश्वास रक्खूंगा और उस की सेवा करूंगा इस लिये तुम को स्मरण रखना उचित है कि यह प्रबन्ध करना तुम्हारा कर्त्तव्य कर्म्म है कि जब यह बालक सीखने के योग्य होगा तब उस को यह सिखाया जावे कि उस ने यहां तुम्हारे द्वारा कैसा बड़ा प्रण प्रतिज्ञा और अंगीकार किया है। और जिस्तें वह इन बातों को और अच्छी रीति से जान सके तुम को उसे समझाना चाहिये कि वह एक्लीसिया में उपदेश सुना करे और विशेष करके तुम को ऐसा करना चाहिये कि वह विश्वासवचन प्रभु की प्रार्थना और दश आज्ञाएं प्रचलित भाषा में सीखे और जो कुछ खीष्टियान को अपने आत्मा के कुशल के लिये जानना और मानना आवश्यक है उस को भी सीखे और यह लड़का

धर्म्म में ऐसा प्रतिपालन पावे कि भक्तियुक्त और खीष्टीय चाल चले और यह सदा स्मरण रहे कि बप्तिस्मा हमारे अंगीकार का प्रतिरूप है अर्थात् यह कि हम अपने त्राता येशू खीष्ट की चाल के अनुगामी होवें और उस के समान बनें कि जैसे वह हमारे लिये मरा और फिर जी उठा वैसे ही हम जिन को बप्तिस्मा मिला है पाप की अपेक्षा में मरें और धर्म्म की अपेक्षा में जी उठें और अपनी सब बुरी और बिगड़ी इच्छाओं को सदा मृतक करते रहें और सारे धर्म और भक्ति की चाल में प्रतिदिन आगे बढ़ते जावें ॥

परन्तु यदि वे जो बालक को एक्लेसिया में ले आये हैं प्रीष्ट के प्रश्नों के ऐसे अस्पष्ट उत्तर देवें कि इसका निश्चय न हो सके कि लड़कों का बप्तिस्मा जल से और पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम में किया गया कि बप्तिस्मा की आवश्यक बातें यही हैं तो प्रीष्ट उस को उस विधि से बप्तिस्मा देवे जो मण्डली में बालकों को बप्तिस्मा देने के लिये ठहराई गई है। परन्तु जब वह लड़के को कुण्ड में डुबकी देवे तब यही वचन बोले।

अमुक यदि तू बप्तिस्मा नहीं पा चुका तो मैं तुझे पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम में बप्तिस्मा देता हूं ॥
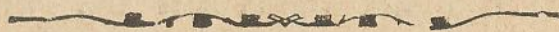
सयानों को जो आप उत्तर दे सकते हैं बप्तिस्मा देने की विधि

जब सयाने जनों का बप्तिस्मा होना है तब उन के माता पिता अथवा कोई दूसरा बुद्धिमान जन न्यून से न्यून एक सप्ताह पहले बिशप को अथवा उस को जिसे वह इस काम पर ठहरावे समाचार देवे जिस्तें उन को योग्य परीक्षा करने से इस बात का निश्चय होवे कि उन को ख्रीष्ठीय धर्म्म की मूल बातों में अच्छी शिक्षा मिली है वा नहीं और उन को उपदेश दिया जावे कि अपने को प्रार्थना और उपवास करके इस पवित्र सक्रामेन्त के पाने के लिये सिद्ध करें ।

और यदि वे योग्य ठहरें तो जब ठहराये हुए इतवार वा पवित्र दिन को मण्डली एकट्ठी होवे तब दूसरे पाठ के अनन्तर ही धर्म्मपिता और धर्म्ममाता उन को कुण्ड के पास उपस्थित करने के लिये सिद्ध होवें यह पालक की समझ के अनुसार प्रातःकाल वा सन्ध्याकाल की प्रार्थना के समय होवे ।

और प्रीष्ट वहीं खड़ा होके पूछे कि उपस्थित किये हुओं में से कोई बप्तिस्मा पा चुका है कि नहीं । यदि वे उत्तर देवें कि नहीं तो प्रीष्ट यूं कहे ।

हे अति प्रियो जब कि सारे मनुष्य पाप के साथ गर्भ में आते और जन्म लेते हैं और जो शरीर से उत्पन्न हुआ है सो शरीर है और जो शरीर में हैं सो ईश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते परन्तु पाप में जीवन बिताते हैं और बहुत से कर्म्मपाप करते हैं और हमारा त्राता ख्रीष्ट कहता है कि यदि कोई पुनर्जनित और जल और पवित्रात्मा से फिरके उत्पन्न न होवे तो वह ईश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता इस लिये मैं तुम से विनती करता हूं कि हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा ईश्वर पिता को पुकारो कि वह अपनी अत्यन्त दया से इन जनों को वह पदार्थ देवे जो उन को स्वभाव से नहीं मिल सकता जिस्तें वे जल और पवित्रात्मा से बप्तिस्मा पाके ख्रीष्ट की पवित्र एक्लेसिया में मिलाये जावें और उस के जीवते अंग बनें ॥

सयानों को बप्तिस्मा देने की विधि

तब प्रीष्ट कहे ।

प्रार्थना करें

(यहां सारी मण्डली घुटने टेके ।)

हे सर्वशक्तिमान् और सनातन ईश्वर तू ने अपनी बड़ी दया से नोह् और उस के घराने को जल में नष्ट होने से नौका में बचाया और अपने निज लोग यिस्राएल्वंशियों को लाल समुद्र में से कुशल क्षेम के साथ पार पहुंचा दिया और इस में अपने पवित्र बप्तिस्मा का दृष्टान्त दिया और अपने अति प्रिय पुत्र येशू ख्रीष्ट के बप्तिस्मा के द्वारा जो यर्दन् नदी में भया जल पदार्थ को पाप के रहस्य रीति से धो डालने के लिये पवित्र किया । हम विनती करते हैं अपनी अनन्त दया से अपने इन दासों पर दया दृष्टि कर इन को पवित्रात्मा से धो और पवित्र कर कि वे तेरे कोप से छूटके ख्रीष्ट की एक्लीसियारूपी नौका में ग्रहण किये जावें और विश्वास में दृढ़ और आशा से आनन्दित होके और प्रेम में जड़ पकड़के इस संसाररूपी दुःखसागर के तरंगों से ऐसा पार हो जावें कि अन्त को वे अनन्तजीवन की भूमि में पहुंचें और वहां तेरे साथ युगानयुग राज्य करते रहें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

हे सर्वशक्तिमान् और अमर ईश्वर दीन हीनों के आश्रय सब शरणागतों के सहायक विश्वासियों के जीवन और मृतकों के पुनरुत्थान हम तुझे इन जनों के लिये पुकारते हैं कि वे जो तेरे पवित्र बप्तिस्मा के पाने को आये हैं आत्मिक पुनर्जनन के द्वारा अपने पापों की क्षमा प्राप्त करें हे प्रभु उन्हें ग्रहण कर जैसा तू ने अपने अति प्रिय पुत्र के द्वारा प्रतिज्ञा किई है कि मांगो तो तुम्हें मिलेगा ढूंढ़ो तो तुम

पाओगे खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायेगा। इसी प्रकार से अब हमें जो मांगते हैं दे हम जो ढूंढ़ते हैं पावें हमारे लिये जो खटखटाते हैं द्वार खोल जिस्तें ये जन तेरे स्वर्गीय स्नान की अनन्त आशीष् में भागी होवें और उस अनन्त राज्य में पहुंचें जिस की तू ने हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा प्रतिज्ञा किई है। आमेन॥

तब मंडली खड़ी होवे और प्रीष्ट कहे।

सुसमाचार की ये बातें सुनो जो पवित्र योहानान् ने तीसरे अध्याय में १ पद से आरम्भ करके लिखी हैं॥

पारीशियों में से नीकदेम नामक एक मनुष्य था जो यहूदियों का अधिपति था उस ने रात को येशू के पास आके उस से कहा हे रब्बी हम जानते हैं कि तू ईश्वर की ओर से शिक्षक होके आया है क्योंकि जो आश्चर्य्यकर्म्म तू करता है उन को कोई यदि ईश्वर उस के साथ न हो तो नहीं कर सकता। येशू ने उत्तर देके उस से कहा मैं तुझ से सत्य सत्य कहता हूं कि यदि कोई नये सिर से न जन्मे तो वह ईश्वर के राज्य को देख नहीं सकता। नीकदेम ने उस से कहा मनुष्य जब बूढ़ा हो गया क्योंकर जनम सकता है क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जनम सकता है। येशू ने उत्तर दिया मैं तुझ से सत्य सत्य कहता हूं कि यदि कोई जल और आत्मा से न जन्मे तो वह ईश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। जो शरीर से जन्मा है सो शरीर ही है और जो आत्मा से जन्मा है सो आत्मा है। आश्चर्य्य मत कर कि मैं ने तुझ से कहा कि तुम को नये सिर से जनमना अवश्य है। वायु जिधर चाहता है बहता है और तू उस का शब्द सुनता है पर नहीं जानता कि वह कहां से आता है और कहां को जाता है जो कोई आत्मा से जन्मा है सो वैसा ही है॥

सयानों को बप्तिस्मा देने की विधि

इस के अनन्तर वह यह उपदेश सुनावे।

हे प्यारो तुम इस सुसमाचार में हमारे त्राता ख्रीष्ट के मुंह की बातें सुनते हो कि यदि कोई जल और पवित्रात्मा से न जन्मे तो वह ईश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। इस से तुम जान सकते हो कि यदि यह सक्रामेन्त मिल सकता है तो उस का लेना बहुत ही आवश्यक है। फिर अपने स्वर्गारोहण के समय (जैसा पवित्र मार्क के सुसमाचार के पिछले अध्याय में वर्णन है) प्रभु ने अपने शिष्यों को यह आज्ञा दिई कि समस्त जगत में जाके सारी सृष्टि के साम्हने सुसमाचार प्रचारो जो विश्वास करे और बप्तिस्मा लेवे सो त्राण पावेगा पर जो विश्वास न करे उस पर दण्ड की आज्ञा किई जावेगी। इस से भी जान पड़ता है कि बप्तिस्मा से हम को कैसा बड़ा लाभ होता है। इस कारण से जब पवित्र पेत्र प्रेरित ने सुसमाचार पहिली बार सुनाया और बहुतों के मन छिद गये और उन्हों ने उस से और अवशिष्ट प्रेरितों से कहा कि हे भाइयो हम क्या करें तब उस ने उत्तर देके उन से कहा कि पश्चात्ताप करो और तुम में से प्रत्येक जन अपने पापों की क्षमा के लिये बप्तिस्मा लेवे तो तुम पवित्रात्मा का दान पाओगे क्योंकि प्रतिज्ञा तुम से और तुम्हारे बालकों से है और उन सब से जो दूर हैं जितनों को प्रभु हमारा ईश्वर बुलावे। और उस ने और बहुतेरी बातों से उन को यह कहके समझाया कि अपने को इस टेढ़ी पीढ़ी से बचाओ। और जैसे वही प्रेरित दूसरे स्थल में साक्षी देता है बप्तिस्मा भी अब हम को येशू ख्रीष्ट के पुनरुत्थान के द्वारा बचाता है वह शरीर का मैल छुड़ाना नहीं पर उत्तम अन्तर्विवेक से ईश्वर से पूछना है। सो सन्देह मत करो पर दृढ़ विश्वास रक्खो कि वह इन उपस्थित जनों को जो सच्चा पश्चात्ताप करते और विश्वास के द्वारा उस के पास आते हैं प्रसन्नता से

सयानों को बप्तिस्मा देने की विधि

ग्रहण करेगा और उन्हें उन के पापों की क्षमा देगा और पवित्रात्मा दान करेगा और उन को सदा के जीवन की आशीष् देगा और अपने अनन्त राज्य के भागी करेगा सो जब कि हम को निश्चय हुआ है कि हमारे स्वर्गीय पिता की इन जनों के विषय में सुइच्छा है जैसे उन के पुत्र येशू खीष्ट ने कहा है इस लिये हम विश्वास और भक्ति से यह कहके उस का धन्यवाद करें ॥

हे सर्वशक्तिमान् और सनातन ईश्वर स्वर्गीय पिता हम नम्रता से तेरा धन्यवाद करते हैं कि तू ने कृपा करके हम को अपने अनुग्रह के जानने और अपने पर विश्वास करने के लिये बुलाया है हमारे इस ज्ञान को बढ़ा और इस विश्वास को सदा दृढ़ करता रह। इन जनों को अपना पवित्रात्मा दे कि वे फिरके उत्पन्न होवें और अनन्त त्राण के अधिकारी बन जावें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा जो तेरे और पवित्रात्मा के साथ अब और सदा लों जीता और राज्य करता है। आमेन् ॥

तब प्रीष्ट उन से जिन का बप्तिस्मा होना है यूं कहे।

हे अति प्रियो तुम जो पवित्र बप्तिस्मा पाने की इच्छा करके आये हो तुम ने सुना है कि मण्डली ने प्रार्थना किई है कि हमारा प्रभु येशू खीष्ट कृपा करके तुम को ग्रहण करे और आशीष् देवे तुम को तुम्हारे पापों से छुड़ावे तुम को स्वर्ग का राज्य और अनन्त जीवन देवे। तुम ने यह भी सुना है कि हमारे प्रभु येशू खीष्ट ने अपने पवित्र वचन में उन सब बातों के जो हम ने मांगी हैं देने की प्रतिज्ञा किई है। इस प्रतिज्ञा को वह तो आप निःसन्देह पूरा करेगा सो जब खीष्ट ने ऐसी प्रतिज्ञा किई तो तुम को भी अवश्य है कि अपने इन साक्षियों और इस सारी मण्डली के साम्हने अपनी ओर से यह प्रतिज्ञा

सच्चाई से करो कि हम दुष्टात्मा और उसके सब कार्य्यों को त्याग देवेंगे और ईश्वर के पवित्र वचन पर दृढ़ विश्वास रक्खेंगे और उस की आज्ञाओं को अधीनता से पालन करेंगे ॥

तब प्रीष्ट उन में से जिन का बप्तिस्मा होना है प्रत्येक से अलग अलग ये प्रश्न करे ।

क्या तू दुष्टात्मा और उसके सब कार्य्यों को और संसार की व्यर्थ धूम धाम और विभव को उसके सारे लालच समेत और शरीर की कुइच्छाओं को ऐसा त्याग देता है कि उन के पीछे न चलेगा न उन के वश में रहेगा ॥

उत्तर। मैं उन सब को त्याग देता हूं ॥

सेवक। क्या तू विश्वास रखता है ईश्वर सर्वशक्तिशान् पिता पर जो स्वर्ग और पृथ्वी का कर्ता है। और येशू ख्रीष्ट पर जो उस का एकलौता पुत्र और हमारा प्रभु है और यह कि वह पवित्रात्मा की शक्ति से गर्भ में आया कुमारि मियम् से जन्मा पोन्त्य पीलात के अधिकार में दुःख उठाया क्रूस पर चढ़ाया गया मर गया और समाधि में रक्खा गया पाताल में उतर गया तीसरे दिन जी भी उठा स्वर्ग पर चढ़ गया और सर्वशक्तिमान् ईश्वर पिता की दहिनी ओर बैठा है और वहां से युग के अन्त में जीवतों और मृतकों का न्याय करने को आनेहारा है। क्या तू पवित्रात्मा पर विश्वास रखता है पवित्र कथोलिक एक्लेसिया पर पवित्रों की सहभागिता पर पापों की क्षमा पर शरीर के पुनरुत्थान पर और मृत्यु के अनन्तर अनन्तजीवन पर ॥

उत्तर। मैं इन सब बातों पर दृढ़ विश्वास रखता हूं ॥

सेवक। क्या तू इस विश्वास पर बप्तिस्मा चाहता है ॥

उत्तर । यही मेरी इच्छा है ॥

सेवक । सो क्या तू ईश्वर की पवित्र इच्छा और आज्ञाओं को अधीनता से पालन करेगा और जन्म भर उन के अनुसार चलेगा ॥

उत्तर । ईश्वर की सहायता से मैं इसी यत्न में रहूंगा ॥

तब प्रीष्ट कहे ।

हे दयालु ईश्वर यह वर दे कि इन जनों में का पुराना आदाम् ऐसा गाड़ा जावे कि नया मनुष्य उन में जी उठे । आमेन् ॥

यह वर दे कि सब शारीरिक इच्छाएं उन में मर जावें और जो कुछ आत्मा से सम्बन्ध रखता है सो उन में जीवे और बढ़े । आमेन् ॥

यह वर दे कि वे दुष्टात्मा संसार और शरीर पर जयवन्त होने और जयोत्सव करने के लिये बल और सामर्थ्य पावें । आमेन् ॥

यह वर दे कि वे यहां हमारे पद और सेवकाई के अनुसार तुझे अर्पण होके स्वर्गीय सद्गुणों से आभूषित भी होवें और सदा का फल पावें तेरी दया से हे धन्य प्रभु परमेश्वर जो युगानयुग जीता और सब वस्तुन पर राज्य करता है । आमेन् ॥

हे सर्वशक्तिमान् सदा जीवते ईश्वर तेरे अत्यन्त प्रिय पुत्र यीशु ख्रीष्ट ने हमारे पापों की क्षमा के लिये अपने अनमोल पांजर में से जल और लहू दोनों बहाये और अपने शिष्यों को आज्ञा दिई कि जाके सब जातियों को शिष्य करो और पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम में उन्हें बप्तिस्मा देओ हम विनती करते हैं तू इस मण्डली की प्रार्थनाओं को सुन इस जल को पाप के रहस्य रीति से धो डालने के लिये पवित्र कर और यह वर दे कि जो जन अभी उस में बप्तिस्मा पाने पर हैं तेरे अनुग्रह की भरपूरी को पावें और तेरे विश्वासी और

चुने हुए लड़कों की गिनती में सदा बने रहें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन् ॥

तब प्रीष्ट प्रत्येक बप्तिस्मा पानेवाले का दहिना हाथ पकड़ के और उसे कुण्ड के पास अपनी समझ के अनुसार योग्य स्थान में उपस्थित करके धर्म्मपिताओं और धर्म्ममाताओं से उसका नाम पूछे और तब यह कहता हुआ उसको जल में डुबकी देवे अथवा उसपर जल डाले।

अमुक मैं तुझे पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम में बप्तिस्मा देता हूं। आमेन् ॥

तब प्रीष्ट कहे।

हम इस जन को ख्रीष्ट की झुण्ड की मण्डली में मिला लेते हैं और उस पर * क्रूस का आकार इस बात का चिन्ह कर के खींचते हैं कि वह आगे को ख्रीष्ट के जो क्रूस पर चढ़ाया गया था विश्वास का अंगीकार करने से न लजावेगा और उस के झण्डे तले पाप और संसार और दुष्टात्मा से बीरता के साथ लड़ेगा और जीवन भर ख्रीष्ट का विश्वस्त योद्धा और दास बना रहेगा। आमेन् ॥

* यहां प्रीष्ट उस जन के ललाट पर क्रूस का आकार खींचे

तब प्रीष्ट कहे।

हे अति प्रिय भाइयो जब कि ये जन पुनर्जनित हुए और ख्रीष्ट की एक्लीसिया की देह में मिलाये गये हैं इस लिये हम इन उत्तम पदार्थों के हेतु सर्वशक्तिमान् ईश्वर का धन्यवाद करें और एक मत

होके उस से यह प्रार्थना करें कि वे अपना अवशिष्ट जीवन इस आरम्भ के अनुसार बितावें ॥

तब सब घुटने टेकें और प्रभु की प्रार्थना कही जावें ।

हे हमारे पिता । तू जो स्वर्ग में है । तेरा नाम पवित्र किया जावे । तेरा राज्य आवे । तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है पृथ्वी पर भी होवे । हमारी प्रतिदिन की रोटी आज हमें दे । और हमारे अपराधों को क्षमा कर । जैसे हम ने भी अपने अपराधियों को क्षमा किया है । और हमें परीक्षा में न ला । परन्तु बुराई से बचा । आमेन् ॥

हे स्वर्गीय पिता हम नम्रता से तेरा धन्यवाद करते हैं कि तू ने कृपा कर के हम को अपने अनुग्रह के जानने और अपने पर विश्वास करने के लिये बुलाया है हमारा यह ज्ञान बढ़ा और यह विश्वास सदा दृढ़ करता रह । अपना पवित्रात्मा इन जनों को दे कि वे जिन का पुनर्जन्म अभी भया और जो हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा अनन्त त्राण के अधिकारी बने हैं तेरे दास बने रहें और तेरी प्रतिज्ञाओं को प्राप्त करें उसी तेरे पुत्र हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा जो तेरे संग उसी पवित्रात्मा की एकता में अनन्तकाल लों जीता और राज्य करता है । आमेन् ॥

तब सब खड़े होवें और प्रीष्ट यह नीचे लिखा हुआ उपदेश सुनावे । पर पहिले धर्म्मपिताओं और धर्म्ममाताओं से कहे ।

जब कि इन जनों ने तुम्हारे साम्हने प्रतिज्ञा किई है कि हम दुष्टात्मा और उसके सब कार्य्यों को त्याग देवेंगे और ईश्वर पर

विश्वास रक्खेंगे और उस की सेवा करेंगे तो तुम को चेत रखना उचित है कि उन को स्मरण दिलाना तुम्हारा कर्त्तव्य कर्म्म है कि उन्हों ने इस मण्डली के साम्हने और विशेष कर के तुम्हारे साम्हने जो उन के चुने हुए साक्षी हो कैसा बड़ा प्रण प्रतिज्ञा और अंगीकार किया है। और तुम को उन्हें यह भी समझाना चाहिये कि ईश्वर के पवित्र वचन में यथार्थ शिक्षा पाने के लिये बड़ा यत्न करें जिस्तें वे अनुग्रह में और हमारे प्रभु येशू खीष्ट के ज्ञान में बढ़ते जावें और इस वर्तमान जगत में भक्ति धर्म्म और संयम से जीवन बितावें ॥

और फिर वह उन को जिनका बप्तिस्मा अभी भया है यह कहे।

और तुम जिन्हों ने अभी बप्तिस्मा के द्वारा खीष्ट को पहिन लिया है तुम्हारा भी यह कर्त्तव्य कर्म्म है कि तुम जो येशू खीष्ट के विश्वास से ईश्वर और ज्योति के लड़के बने हो अपनी खीष्टीय बुलाहट के अनुसार और जैसा ज्योति के लड़कों को सजता है वैसा ही चलो और यह सदा स्मरण रक्खो कि बप्तिस्मा हमारे अंगीकार का प्रतिरूप है अर्थात् यह कि हम अपने त्राता येशू खीष्ट की चाल के अनुगामी होवें और उस के समान बनें कि जैसे वह हमारे लिये मरा और जी उठा वैसे ही हम जिन को बप्तिस्मा मिला है पाप की अपेक्षा में मरें और धर्म्म की अपेक्षा में जी उठें और अपनी सब बुरी और बिगड़ी इच्छाओं को सदा मृतक करते रहें और सारे धर्म्म और भक्ति की चाल में प्रतिदिन आगे बढ़ते जावें ॥

यह योग्य है कि जिस किसी का बप्तिस्मा इस प्रकार से भया वह अपने बप्तिस्मा के अनन्तर जितने शीघ्र हो सके बिशप के हाथ से दृढ़ीकृत होवे जिस्तें वह पवित्र सहभागिता में भागी होने पावे।

सयानों को बप्तिस्मा देने की विधि

यदि जिन का बप्तिस्मा बालावस्था में नहीं भया सो इतने सयाने होने से पहले कि वे आप उत्तर दे सकें बप्तिस्मा पाने को उपस्थित किये जावें तो इतनाही बहुत होगा कि मंडली में बालकों को बप्तिस्मा देने की विधि अथवा यदि मरने का डर होवे तो घर में बप्तिस्मा देने की विधि काम में आवे परन्तु जहां जहां अवश्य होवे तहां तहां बालक शब्द लड़का अथवा जन शब्द से बदला जावे।

कतेखिस्मा ॥

अर्थात् शिक्षा जिसे प्रत्येक जन को बिशप के हाथ से दृढ़ी कृत होने से पहले सीखना चाहिये

प्रश्न । तेरा क्या नाम है ।

उत्तर । अमुक वा अमुकी ।

प्रश्न । तेरा यह नाम किसने रक्खा ।

उत्तर । मेरे धर्म्मपिताओं और धर्म्ममाताओं ने मेरे बप्तिस्मा में रक्खा जिस में मैं खीष्ट का अंग ईश्वर का लड़का और स्वर्ग के राज्य का अधिकारी बन गया ।

प्रश्न । तेरे धर्म्मपिताओं और धर्म्ममाताओं ने उस समय तेरे लिये क्या किया ।

उत्तर । उन्हों ने मेरे नाम पर तीन बातों की प्रतिज्ञा और प्रण किया । पहली यह कि मैं दुष्टात्मा और उस के सब कार्य्यों को और इस दुष्ट संसार की धूमधाम और व्यर्थ बातों को और शरीर की इच्छाओं को त्याग देऊंगा । दूसरी यह कि मैं खीष्टीय धर्म्म की सब मूल बातों पर विश्वास रक्खूंगा । तीसरी यह कि मैं ईश्वर की पवित्र इच्छा और आज्ञाओं को पालूंगा और जीवन भर उन पर चलूंगा ।

प्रश्न । क्या तू समझता है कि जैसी उन्हों ने तेरे लिये प्रतिज्ञा किई है वैसा ही मानना और करना तेरा धर्म्म है ।

उत्तर । हां निःसन्देह और ईश्वर की सहायता से मैं ऐसा ही करूंगा । और मैं अन्तःकरण से अपने स्वर्गीय पिता का धन्यवाद करता हूं कि उस ने मुझे हमारे त्राता येशू खीष्ट के द्वारा त्राण की इस दशा में बुलाया है । और मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह मुझे अपना अनुग्रह देवे जिस्तें मैं अपने जीवन के अन्त लों इसी दशा में बना रहूं ।

कतेखिस्ता। अपने विश्वास की मूल बातें सुना।

उत्तर। मैं विश्वास रखता हूं ईश्वर सर्वशक्तिमान् पिता पर। जो स्वर्ग और पृथ्वी का सिरजनहार है॥

और येशू ख्रीष्ट पर। जो उस का एकलौता पुत्र और हमारा प्रभु है। वह पवित्रात्मा की शक्ति से गर्भ में आया। कुमारी मिर्याम् से जन्मा। पोन्त्य पीलात के अधिकार में दुःख भोगा। क्रूस पर चढ़ाया गया। मर गया। और समाधि में रक्खा गया। पाताल में उतर गया। तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा। स्वर्ग पर चढ़ गया। और सर्वशक्तिमान् ईश्वर पिता की दहिनी ओर बैठा है। वहां से वह जीवतों और मृतकों का न्याय करने को आनेहारा है॥

मैं विश्वास रखता हूं पवित्रात्मा पर। पवित्र कथोलिक एक्लीसिया पर। पवित्रों की सहभागिता पर। पाप मोचन पर। शरीर के पुनरुत्थान पर और अनन्त जीवन पर। आमेन्॥

प्रश्न। तू अपने विश्वास की इन मूल बातों से विशेष कर के क्या सीखता है।

उत्तर। पहिले मैं ईश्वर पिता पर जिस ने मुझे और सारे जगतों को बनाया विश्वास रखना सीखता हूं।

दूसरे ईश्वर पुत्र पर जिस ने मुझे और सारी मनुष्य जाति को छुड़ा लिया है।

तीसरे ईश्वर पवित्रात्मा पर जो मुझे और ईश्वर के सब चुने हुओं को पवित्र करता है।

प्रश्न। तू ने कहा कि मेरे धर्म्मपिताओं और धर्म्ममाताओं ने मेरे लिये प्रतिज्ञा किई थी कि मैं ईश्वर की आज्ञाओं को पालन करूंगा। भला बता तो कि वे कितनी हैं।

उत्तर । दस

प्रश्न । कौन से

उत्तर । वेही जो ईश्वर ने निर्गम के २० वें अध्याय में यह कहके कही कि प्रभु तेरा ईश्वर मैं हूं जो तुझे मिसर क देश बन्धुवाई के घर में से निकाल ले आया ॥

१ तू मुझे छोड़ दूसरे देवताओं को ईश्वर न मानना ॥

२ तू अपने लिये कोई गढ़ी हुई मूर्त्ति अथवा किसी वस्तु का आकार जो ऊपर आकाश में वा नीचे पृथ्वी पर वा पृथ्वी के तले जल में है न बनाना । तू उन को दण्डवत् न करना न उन को पूजना क्योंकि मैं प्रभु तेरा ईश्वर ज्वलनशील ईश्वर हूं और जो मुझ से बैर रखते हैं उनके अधर्म्म का दण्ड उनके लड़कों वरन उनके पोतों और पर पोतों को भी देता हूं और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आ-ज्ञाओं को पालन करते हैं उन पर उनके वंश के सहस्रों होने लों दया करता रहता हूं ॥

३ तू प्रभु अपने ईश्वर का नाम व्यर्थ न लेना क्योंकि जो प्रभु का नाम व्यर्थ लेता है उसको वह निर्दोष न ठहरावेगा ॥

४ शब्बात् को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना छः दिन तू परिश्रम और अपना सब काम काज करना पर सातवां दिन प्रभु तेरे ईश्वर के लिये शब्बात् है उस में कुछ काम न करना न तू न तेरा बेटा न तेरी बेटी न तेरा दास न तेरी दासी न तेरे पशु न परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर है । क्योंकि छः दिन में प्रभु ने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उन में है बनाया और सातवें दिन बिश्राम किया इस लिये प्रभु ने शब्बात् के दिन को आशीर्वाद दिया और उसको पवित्र किया ॥

५ तू अपने पिता और अपनी माता का सन्मान करना जिस्तें तेरी आयुर्दा उस देश में जो प्रभु तेरा ईश्वर तुझे देता है बढ़ जावे ॥

कर्तोखिस्म।

६ तू हत्या न करना ॥

७ तू व्यभिचार न करना ॥

८ तू चोरी न करना ॥

९ तू अपने पड़ोसी पर झूठी साक्षी न देना ॥

१० तू अपने पड़ोसी के घरका लालच न करना तू न अपने पड़ोसी की स्त्री न उसके दास न उस की दासी न उसके बैल न उसके गदहे न किसी और वस्तु का जो उसकी है लालच करना ॥

प्रश्न। इन आज्ञाओं से तू विशेष करके क्या सीखता है।

उत्तर। मैं दो बातें सीखता हूं कि ईश्वर के विषय में हमारा क्या कर्त्तव्य कर्म्म है और अपने पड़ोसी के विषय में क्या।

प्रश्न। ईश्वर के विषय में तेरा कर्तव्य कर्म्म क्या है।

उत्तर। ईश्वर के विषय में मेरा कर्तव्य कर्म्म यह है कि उसपर विश्वास रक्खूं उसका भय मानूं और सारे हृदय से सारी बुद्धि से सारे जीव से और सारी शक्ति से उस से प्रेम रक्खूं उसकी आराधना करूं उसका धन्यवाद करूं उस पर अपना पूरा भरोसा रक्खूं उसको पुकारा करूं उस के पवित्र नाम और वचन की प्रतिष्ठा करूं और अपने जीवन भर उसकी सेवा सच्चाई से करता रहूं।

प्रश्न। अपने पड़ोसी के विषय में तेरा कर्तव्य कर्म्म क्या है।

उत्तर। अपने पड़ोसी के विषय में मेरा कर्तव्य कर्म्म यह है कि उस से अपने तुल्य प्रेम रक्खूं और सब मनुष्यों से ऐसा व्यवहार करूं जैसा मैं चाहता हूं कि वे मुझ से करें अपने माता पिता से प्रेम रक्खूं और उनका सम्मान और सहायता करूं महारानी और जितने उसकी ओर से अधिकार रखते हैं उनका सम्मान करूं और उनकी आज्ञा पालूं अपने सब अध्यक्षों शिक्षकों आत्मिक पालकों और स्वामियों के अधीन रहूं जितने मुझ से श्रेष्ठ हैं सब के साथ नम्रता और आदर से बर्त्ताव रक्खूं न वचन से न कर्म्म से किसी को हानि करूं

कतेखिस्मा

अपने सब बर्त्ताव में सच्चा और खरा होऊं अपने मन में द्वेष वा बैर न रक्खूं अपने हाथों को चोरी चकारी से अपनी जीभ को भूठ बोलने से और अपवाद लगाने से रोक रक्खूं अपनी देह को संयम चेतता और शुद्धता से रक्खूं पराई सम्पत्ति का लोभ लालच न करूं परन्तु यह सीखूं और सचमुच यत्न करूं कि अपनी जीविका आपही कमाऊं और जिस दशा में ईश्वर की इच्छा होवे कि मुझे रक्खे उसी में अपना कर्त्तव्यकर्म्म किया करूं।

कतेखिस्ता।

हे मेरे प्यारे लड़के यह जान रख कि तू इन बातों को आप से आप नहीं कर सकता और न ईश्वर के विशेष अनुग्रह बिना उसकी आज्ञाओं पर चल सकता न उस की सेवा कर सकता है सो तुझ को यह सीखना चाहिये कि सदा यत्न के साथ प्रार्थना कर कर के उस अनुग्रह को मांगे। भला मैं सुनूं तो तू प्रभु की प्रार्थना सुना सकता है कि नहीं।

उत्तर। हे हमारे पिता। तू जो स्वर्ग में है। तेरा नाम पवित्र किया जावे। तेरा राज्य आवे। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है पृथ्वी पर भी होवे। हमारी प्रति दिन की रोटी आज हमें दे। और हमारे अपराधों को क्षमा कर। जैसे हम ने भी अपने अपराधियों को क्षमा किया है। और हमें परीक्षा में न ला। परन्तु बुराई से बचा। आमेन्॥

प्रश्न। इस प्रार्थना में तू ईश्वर से क्या मांगता है।

उत्तर। मैं अपने प्रभु परमेश्वर से जो हमारा स्वर्गीय पिता और सब भली वस्तुन का दाता है यह चाहता हूं कि मेरे और सब लोगों के ऊपर अपना अनुग्रह भेजे जिस्तें हम उस की ऐसी आराधना सेवा और आज्ञापालन करें जैसी हमें करनी चाहिये। और मैं ईश्वर से

प्रार्थना करता हूं कि जो कुछ हमारे शरीर और आत्मा के लिये आवश्यक है उस को हमें दिया करे और हम पर दया करके हमारे पापों को क्षमा करे और कृपा करके हम को शारीरिक और आत्मिक जोखिमों में बचावे और हमारी आड़ हो और सब पाप और दुष्टता और हमारे आत्मिक शत्रु और अनन्त मृत्यु से हमारी रक्षा करे। और मुझे भरोसा है कि वह अपनी दया और कृपा से हमारे प्रभु मैं खीष्ट के द्वारा ऐसा ही करेगा। और इस कारण से मैं कहता हूं आमेन् ऐसाही होवे।

प्रश्न। खीष्ट ने अपनी एक्लेसिया में कितने सक्रामेन्त ठहराये हैं।

उत्तर। केवल दो ही जो त्राण के लिये सब को आवश्यक हैं अर्थात् बप्तिस्मा और प्रभु की ब्यारी।

प्रश्न। सक्रामेन्त शब्द का क्या अर्थ है।

उत्तर। इसका अर्थ एक भीतरी और आत्मिक अनुग्रह का जो हमें दिया गया एक ऐसा बाहरी और दृश्य चिन्ह है जिस को खीष्ट ने आप ठहराया है और जो उस अनुग्रह के पाने का द्वार और उसके निश्चय के लिये प्रमाण है।

प्रश्न। सक्रामेन्त के कितने भाग हैं।

उत्तर। दो अर्थात् बाहरी दृश्य चिन्ह और भीतरी आत्मिक अनुग्रह।

प्रश्न। बप्तिस्मा में बाहरी दृश्य चिन्ह अर्थात् रूप क्या है।

उत्तर। जल। जिस से पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम में बप्तिस्मा दिया जाता है।

प्रश्न। उस में का भीतरी और आत्मिक अनुग्रह क्या है।

उत्तर। पाप की अपेक्षा में मरना और धर्म्म की अपेक्षा में नया जन्म पाना कि हम जो स्वभाव से पाप के साथ जन्मे और कोप के लड़के हुए हैं इसके द्वारा अनुग्रह के लड़के बन गए हैं।

कतेखिस्मा।

प्रश्न। जो बप्तिस्मा पाने चाहते हैं उनको क्या करना अवश्य है।

उत्तर। पश्चात्ताप जिस से वे पाप को त्याग देते हैं और विश्वास जिस से वे ईश्वर की उन प्रतिज्ञाओं पर जो उस सक्रामेन्त में उन से किई गई हैं दृढ़ प्रतीति करते हैं।

प्रश्न। भला जब बालक अपने बचपन के कारण से ये काम नहीं कर सकते तो उन का बप्तिस्मा क्यों होता है।

उत्तर। इस लिये कि वे अपने जामिनों के द्वारा उन दोनों की प्रतिज्ञा करते हैं और जब सयाने होते हैं तब इस प्रतिज्ञा को पूरा करना उन का कर्त्तव्य काम होता है।

प्रश्न। प्रभु की ब्यारी का सक्रामेन्त क्यों ठहराया गया।

उत्तर। इस लिये कि वह खीष्ट की मृत्यु के बलिदान का और जो लाभ हम को उस से प्राप्त होते हैं उनका निरन्तर स्मारक रहे।

प्रश्न। प्रभु की ब्यारी में का बाहरी भाग अर्थात् चिन्ह क्या है।

उत्तर। रोटी और दाखमधु जिस के लेने की आज्ञा प्रभु ने दिई है।

प्रश्न। उस का भीतरी भाग अर्थात् चिन्हितवस्तु क्या है।

उत्तर। खीष्ट की देह और लहू जिस को प्रभु की ब्यारी में विश्वासी सचमुच और वास्तविक रीति से लेते और पाते हैं।

प्रश्न। जिन लाभों के हम उस के द्वारा भागी होते हैं सो क्या है।

उत्तर। यह कि जैसे हमारे देह रोटी और दाखमधु से बलवन्त और प्रफुल्लित होते हैं वैसे ही हमारे आत्मा खीष्ट की देह और लहू से होते हैं।

प्रश्न। जो प्रभु की ब्यारी में आने चाहते हैं उन को क्या करना अवश्य है।

उत्तर। अपने को जांचना कि वे अपने पिछले पापों से सचमुच पश्चात्ताप करते और नई चाल चलने की दृढ़ इच्छा रखते हैं और ईश्वर की उस दया पर जो खीष्ट के द्वारा हुई है जीवता विश्वास

रखते और उस की मृत्यु को धन्यवाद के साथ स्मरण रखते हैं और सब मनुष्यों से प्रेम रखते हैं कि नहीं ।

प्रत्येक परोकिया का पालक इतवारों और पवित्र दिनों में सन्ध्याकाल की प्रार्थना के दूसरे पाठ के अनन्तर उसकी परोकिया के जो लड़के उसके पास भेजे जावें उन में से जितनों को वह उचित समझे उन को इस कतेखिस्मा के किसी न किसी भाग में शिक्षा देवे और परीक्षा लेवे ।

और सब लड़कों के पिता और माता और गृहस्वामी और गृहस्वामिनी ऐसा करें कि उन के लड़के चाकर और काम सीखने वाले जो कतेखिस्मा नहीं सीख चुके ठहराये हुए समय पर एक्लेसिया में आके अधीनता से पालक की सुना करें और उसकी आज्ञा में रहें जब लों वे सब कुछ जो यहां उनके सीखने के लिये ठहराया गया है न सीख चुकें ।

जब लड़के सयाने हुए और अपनी बोली में विश्वास वचन प्रभु की प्रार्थना और दस आज्ञाएं सुना सकते और इस संक्षिप्त कतेखिस्मा के दूसरे प्रश्नों के उत्तर भी दे सकते हैं तब वे विशप के पास उपस्थित होते जावें । और प्रत्येक के साथ उसका एक धर्म्मपिता अथवा धर्म्ममाता उपस्थित होवे कि उसके दृढ़ीकरण का साक्षी होवे ।

और जब कभी विशप कहला भेजे कि लड़कों को दृढ़ीकरण के लिये मेरे पास ले आओ तो प्रति परोकिया का पालक अपनी परोकिया के जितने जनों को दृढ़ीकरण के लिये विशप के पास उपस्थित करने के योग्य समझे उनका नाम पत्र चाहे आप ले आवे चाहे उसपर अपना हस्ताक्षर करके भेजे । और यदि विशप उनको योग्य समझे तो नीचे लिखी हुई रीति से उनको दृढ़ीकृत करे ।

दृढ़ीकरण की विधि

अर्थात् जो बप्तिस्मा पा चुके और सयाने भये हैं उन पर हाथ रखने की विधि

जिनका दृढ़ीकरण होना है सो विशप के साम्हने ठहराए हुए दिन को क्रम से खड़े किये जावें और वह अथवा और कोई सेवक जिस को उसने ठहराया होवे यह भूमिका पढ़े।

जिस्तें दृढ़ीकरण से उसके पानेहारों का अधिक लाभ होवे इस लिये एक्लीसिया ने यह आज्ञा देनी उचित जानी कि आगे को केवल वे ही दृढ़ीकृत होवें जो विश्वास वचन प्रभु की प्रार्थना और दस आज्ञाओं को सुना सकते हैं और संक्षिप्र कतेखिस्मा के दूसरे प्रश्नों के उत्तर भी दे सकते हैं। इस आज्ञा का मानना बहुत ही योग्य है जिस्तें लड़के जो अब सयाने हुये और यह जान गये हैं कि हमारे धर्म्मपिताओं और धर्म्ममाताओं ने हमारे लिये बप्तिस्मा में क्या किया आप ही अपने ही मुख से और इच्छा पूर्वक एक्लीसिया के साम्हने उसको स्वीकार और दृढ़ करें और यह प्रतिज्ञा भी करें कि जो बातें हमने आप से आप स्वीकार किई हैं उन को ईश्वर के अनुग्रह से सदा विश्वस्तता मे मानने का यत्न करेंगे॥

तब विशप कहे।

क्या तुम यहां ईश्वर और इस मण्डली के साम्हने उस बड़ी प्रतिज्ञा और प्रण को जो तुम्हारे नाम से तुम्हारे बप्तिस्मा में किया गया था दुहराते हो और आप ही उस को स्वीकार और दृढ़ करते और यह मान लेते हो कि जो कुछ तुम्हारे धर्म्मपिताओं और धर्म्ममाताओं ने उस समय तुम्हारी सन्ती अपने पर ले लिये उसपर प्रतीति करनी और उसपर चलना तुम्हारा कर्त्तव्य कर्म्म है॥

दृढ़ीकरण की विधि

और प्रत्येक जन स्पष्ट उत्तर देवे ।

हां मैं ऐसा ही करता हूं ।

बिशप । हमारी सहायता प्रभु के नाम में है ॥
उत्तर । जिसने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया है ॥
बिशप । प्रभु का नाम धन्य होवे ॥
उत्तर । अब से युगानयुग ॥
बिशप । हे प्रभु हमारी प्रार्थनाओं को सुन ॥
उत्तर । और हमारी दोहाई तुझ लों पहुंचे ॥
बिशप । प्रार्थना करें ॥

हे सर्वशक्तिमान् और सदा जीवते ईश्वर तू ने कृपा करके अपने इन दासों को जल और पवित्रात्मा से पुनर्जनित किया और उन के सब पापों को क्षमा कर दिया है हे प्रभु हम विनती करते हैं उन को पवित्रात्मा के द्वारा जो पराक्लेत है सामर्थ्य दे और अनुग्रह के नाना प्रकार के दानों को प्रतिदिन अधिक अधिक दिया कर बुद्धि और समझ का आत्मा विचार और आत्मिक पराक्रम का आत्मा ज्ञान और सच्ची भक्ति का आत्मा दे और हे प्रभु उन को अपने पवित्र भय के आत्मा से परिपूर्ण कर । आमेन् ॥

तब वे सब बिशप के साम्हने क्रम से घुटने टेकें और वह प्रत्येक के सिर पर अलग अलग अपना हाथ रक्खे और कहे ।

हे प्रभु अपने इस लड़के की (अथवा अपने इस दास की) अपने स्वर्गीय अनुग्रह से रक्षा कर कि वह सदा तेरा ही बना रहे और प्रतिदिन तेरे पवित्रात्मा में अधिक अधिक बढ़ता रहे ऐसा कि अन्त को वह तेरे अनन्त राज्य में पहुचें ॥

दृढ़ीकरण की विधि

तब बिशप कहे ।

प्रभु तुम्हारे संग होवे ।
उत्तर । और तेरे आत्मा के संग भी ।

तब सब घुटने टेकें और बिशप कहे ।

प्रार्थना करें

हे हमारे पिता । तू जो स्वर्ग में है । तेरा नाम पवित्र किया जावे । तेरा राज्य आवे । तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है पृथ्वी पर भी होवे । हमारी प्रतिदिन की रोटी आज हमें दे । और हमारे अपराधों को क्षमा कर । जैसे हम ने भी अपने अपराधियों को क्षमा किया है । और हमें परीक्षा में न ला । परन्तु बुराई से बचा । आमेन् ॥

और यह प्रार्थना ।

हे सर्वशक्तिमान् और सदा जीवते ईश्वर जो बातें तेरे ईश्वरीय प्रताप की दृष्टि में अच्छी और ग्राह्य हैं उनकी इच्छा और आचरण तू ही हम से कराता है । हम तेरे इन दासों के लिये नम्रता से विनती करते हैं जिन पर हम ने तेरे पवित्र प्रेरितों के उदाहरण के अनुसार अभी अपने हाथ इस लिये रक्खे हैं कि इस चिन्ह से उन को निश्चय होवे कि तू उन से प्रसन्न है और उन पर कृपा और अनुग्रह करता है । हम विनती करते हैं तेरा पैतृक हाथ सदा उन पर रहे तेरा पवित्रात्मा सदा उन के संग रहे और अपने वचन के ज्ञान और अधीनता में उनको ऐसा बढ़ा कि अन्त को वे अनन्तजीवन प्राप्त करें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा जो तेरे और पवित्रात्मा के संग सदा एक ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता है । आमेन् ॥

दृढ़ीकरण की विधि

हे सर्वशक्तिमान् प्रभु और सनातन ईश्वर हम बिनती करते हैं तू कृपा करके हमारे तन मन दोनों को अपनी व्यवस्था के मार्ग में और अपनी आज्ञाओं के कार्य्यों में अगुवाई कर पवित्र कर और शासन कर जिस्तें हम तेरी महा सामर्थ्ययुक्त रक्षा से इस लोक में और पर लोक में देह और आत्मा में सुरक्षित रहें हमारे प्रभु और त्राता येशू खीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

तब बिशप इस वचन से उनको आशीर्वाद देवे ।

ईश्वर सर्वशक्तिमान् पिता पुत्र और पवित्रात्मा की आशीष् तुम पर होवे और सदा लों तुम्हारे संग रहे ॥

और जब लों कोई दृढ़ीकृत न होवे वा दृढ़ीकृत होने की इच्छा न करे और उसके लिये सिद्ध न होवे तब लों वह पवित्र सहभागिता में भागी न होने पावे।

विवाह के अनुष्ठान की पद्धति ॥

पहिले जितनों का आपस में विवाह होना है उनका घोषण एक्लेसिया में तीन अलग अलग इतवारों अथवा पवित्र दिनों में उपासना के समय अर्पण की विधि से पहिले किया जावे अर्थात् पालक रीति के अनुसार कहे।

मैं अमुक परोकिया के रहने वाले अमुक और अमुक परोकिया की रहने वाली अमुकी के विवाह का घोषण करता हूं सो यदि तुम में से कोई ऐसा कारण वा यथार्थ रीति से रोकनेहारी बात जानता होवे जिस से इन दोनों का पवित्र विवाह में जोड़ा जाना उचित न होवे तो उसे बताना चाहिये। यह पूछने की पहली (दूसरी वा तीसरी) बार है।

और यदि जिनका विवाह होना है वे अलग अलग परोकिया में रहते हैं तो घोषण दोनों परोकियों में करना अवश्य है और जब लों एक परोकिया के पालक को दूसरी परोकिया के पालक से इस का प्रमाणपत्र न मिले कि घोषण तीन बार दिया गया तबलों उन का विवाह करदेना उसको उचित नहीं।

विवाह के अनुष्ठान के लिये जो दिन और घड़ी ठहराई गई उसमें जिनका विवाह होना है वे अपने मित्रों और पड़ोसियों समेत एक्लेसिया के मध्यभाग में आवें और वहां दोनों एकट्ठे खड़े होवें अर्थात् पुरुष दाहिनी ओर और स्त्री बाईं ओर। और प्रीष्ट कहे।

हे अति प्रियो हम यहां ईश्वर और इस मण्डली के साम्हने एकट्ठे हुए हैं कि इस पुरुष और इस स्त्री को पवित्र विवाह में जोड़ें। यह एक प्रतिष्ठित दशा है जिस को ईश्वर ने मनुष्य की निर्दोषता के समय में ठहराया और यह उस रहस्य एकता का चिन्ह है जो ख्रीष्ट और उस की एक्लेसिया के बीच है। और इस पवित्र दशा को ख्रीष्ट ने विवाह में उपस्थित होने से और उस पहले आश्चर्य्य कर्म्म

से जो उसने गालील के काना में किया आभूषित और सुशोभित किया। और पवित्र पौल इस की प्रशंसा में कहता है कि वह सब मनुष्यों में प्रतिष्ठा के योग्य है। और इस कारण से उचित नहीं कि कोई बिना सोचे हलकाई अथवा लम्पटता से पशुओं के समान जिन को समझ नहीं अपनी शारीरिक इच्छाओं को पूरी करने के लिये उस को करने का हियाव करे परन्तु आदर के साथ और सोच विचार के और अपने मन को अपने अधीन रख के और ईश्वर के भय में उसको करना चाहिये और जिन अभिप्रायों से विवाह ठहराया गया उनको भली भान्ति विचारे।

पहले वह लड़के बालों की उत्पत्ति के हेतु ठहराया गया जो प्रभु के भय और शिक्षा में और उसके पवित्र नाम की स्तुति के लिये प्रतिपालन पावें।

दूसरे वह पाप अर्थात् व्यभिचार से बचने का उपाय होने के लिये ठहराया गया जिस्तें जिन को संयम का दान नहीं दिया गया सो विवाह करके ख्रीष्ट की देह के शुद्ध अंग बने रहें।

तीसरे वह उस परस्पर की संगति सहायता और शान्ति के लिये ठहराया गया जो सुख में और दुःख में भी एक को दूसरे से मिलनी चाहिये। इस पवित्र दशा में ये दो उपस्थित जन जोड़े जाने के लिये अब आए हैं। इस लिये यदि कोई जन ऐसा योग्य कारण बता सके जिस से उनका जोड़ा जाना उचित न होवे तो वह अभी बोले नहीं तो आगे को सर्वदा चुप रहे।

और फिर जिन का विवाह होना है उनसे भी वह कहे।

मैं तुम दोनों को दृढ़ आज्ञा करता हूं कि यदि तुम में से कोई ऐसा कोई कारण जानता होवे जिस से तुम्हारा पवित्र विवाह में

जोड़ा जाना उचित न होवे तो यह जान के कि न्याय के भयानक दिन में जब सब के मन के भेद खुल जावेंगे तुम को लेखा देना पड़ेगा तुम अभी उसका अंगीकार करो और इस को निश्चय जानो कि जितने ईश्वर के बचन को सम्मति के विरुद्ध जोड़े जाते हैं उन को ईश्वर नहीं जोड़ता और न उन का विवाह विवाह है ।

यदि विवाह के दिन कोई जन ऐसी रोकनेहारी बात प्रगट करे जिस से उन को विवाह में जोड़ा जाना ईश्वर की व्यवस्था अथवा इस राज्य की व्यवस्थाओं के अनुसार अनुचित होवे और वह और उसके संग विश्वास योग्य जामिन दुल्हा दुल्हिन को प्रतिज्ञापत्र लिख देवें अथवा वह अपना दावा सत्य करने के लिये विवाह करने वालों की सब हानि भरने के लिये अमानत धर देवे तो जब लों इस बात का निर्णय न होवे तब लों अनुष्ठान रुका रहे ।

यदि कोई रोकनेहारी बात बताई न जावे तो पालक पुरुष से कहे ।

अमुक क्या तू इस स्त्री को अपनी विवाहिता पत्नी करने चाहता है कि उस के संग ईश्वर की आज्ञा के अनुसार विवाह की पवित्र दशा में रहे । क्या तू उस से प्रेम रक्खेगा उस को शान्ति देगा उसका आदर करेगा और रोग और आरोग्य में उस की रक्षा करेगा और सब दूसरियों को छोड़ के दोनों के जीते जी केवल उसी से सम्बन्ध रक्खेगा ॥

पुरुष उत्तर देवे ।

हां मैं ऐसाही करूंगा ।

तब प्रोष्ट स्त्री से कहे ।

अमुकी क्या तू इस पुरुष को अपना विवाहित पति करने चाहती है कि उस के संग ईश्वर की आज्ञा के अनुसार विवाह की पवित्र

दशा में रहे। क्या तू उस की आज्ञा मानेगी और उस की सेवा करेगी उस से प्रेम रक्खेगी उस का आदर करेगी और रोग और आरोग्य में उस की रक्षा करेगी और सब दूसरों को छोड़ के दोनों के जीते जी केवल उसी से सम्बन्ध रक्खेगी ॥

स्त्री उत्तर देवे ।

हां मैं ऐसा ही करूंगी ।

तब सेवक कहे ।

कौन् इस स्त्री को इस पुरुष से विवाह करने के लिये देता है ।

तब वे एक दूसरे को इस रीति से वचन देवें ।

सेवक स्त्री को उसके पिता वा मित्र के हाथ से लेके ऐसा करे कि पुरुष अपने दहिने हाथ से स्त्री के दहिने हाथ को पकड़े और सेवक उससे अपने पीछे पीछे यूं कहवावे ।

मैं अमुक तुझ अमुकी को अपनी विवाहिता पत्नी करता हूं और दुख में और सुख में सम्पत्ति में और दरिद्रता में रोग में और आरोग्य में तुझे आज से आगे को अपनी कर रक्खूंगा और तुझ से मिला रहूंगा और जब लों मृत्यु हम को अलग न करे तब लों ईश्वर के पवित्र नियम के अनुसार तुझ से प्रेम रक्खूंगा और तेरी सुधि लेऊंगा और इसी लिये तुझे वचन देता हूं ।

तब वे हाथ छोड़ें और स्त्री अपने दहिने हाथ में पुरुष के दहिने हाथ को पकड़ के सेवक के पीछे पीछे यूं कहे ।

मैं अमुकी तुझ अमुक को अपना विवाहित पति करती हूं और दुख में और सुख में सम्पत्ति में और दरिद्रता में रोग में और

विवाह के अनुष्ठान की पद्धति

आरोग्य में तुझे आज से आगे को अपना कर रक्खूंगी और तुझ से मिली रहूंगी और जब लों मृत्यु हम को अलग न करे तब लों ईश्वर के पवित्र नियम के अनुसार तुझ से प्रेम रक्खूंगी और तेरी सुधि लेऊंगी और तेरी आज्ञा में रहूंगी और इसी लिये तुझे वचन देती हूं।

तब वे फिर हाथ छोड़े और पुरुष स्त्री को एक छल्ला इस प्रकार से देवे कि उस को प्रीष्ट और क्लार्क की नेग समेत पुस्तक पर रक्खे। और प्रीष्ट छल्ले को लेके पुरुष को सौम्प देवे कि वह स्त्री के बायें हाथ की संझली अंगुली में पहिनावे। और पुरुष छल्ले को वहीं पकड़े रहे और प्रीष्ट के पीछे पीछे कहे।

इस छल्ले से मैं तुझे व्याहता हूं अपनी देह से मैं तेरी प्रतिष्ठा करता हूं और अपनी सारी सांसारिक सम्पत्ति तुझे देता हूं पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से। आमेन्॥

तब पुरुष छल्ले को स्त्री के बायें हाथ की संझिली अंगुली में रहने दे और दोनों घुटने टेकें और सेवक कहे।

प्रार्थना करें

हे सनातन ईश्वर सारी मनुष्य जाति के सिर्जनहार और पालन कर्त्ता सब आत्मिक अनुग्रह के दाता और अनन्त जीवन के कर्त्ता इस पुरुष और इस स्त्री पर जो तेरे दास हैं और जिन को हम तेरे नाम से आशीर्वाद देते हैं अपनी आशीष् दे कि जैसे यिस्हाक और रिब्का आपस में विश्वस्तता से रहे वैसे ही ये जन उस प्रण और बाचा को जो उन्हों ने आपस में किया है और जिसका चिन्ह और प्रमाण यह छल्ला दिया और लिया गया है सच्चाई से पूरा करें और सदा आपस में पूर्ण प्रेम और मेल से रहें और तेरी व्यवस्थाओं के अनुसार चलें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

विवाह के अनुष्ठान की पद्धति

तब प्रीष्ट उनके दहिने हाथों को मिल के कहे।

जिन को ईश्वर ने जोड़ा है उन को कोई मनुष्य अलग न करे

तब सेवक मण्डली से कहे।

जब कि अमुक और अमुकी पवित्र विवाह में सम्मत हुए हैं और ईश्वर और इस मण्डली के साम्हने इस बात का अंगीकार किया और इस पर एक दूसरे को अपना अपना वचन दिया और छल्ले के देने और लेने और हाथों के मिलाने से उस को प्रगट किया है इस लिये मैं उन को पति पत्नी कहता हूं पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से। आमिन्॥

Final

और सेवक यह आशीर्वाद भी देवे।

Prayer.

ईश्वर पिता ईश्वर पुत्र ईश्वर पवित्रात्मा तुम को आशीष् देवे और बचाये रक्खे और तुम्हारी रक्षा करे। प्रभु अनुग्रह करके तुम पर दयादृष्टि करे और तुम को सब आत्मिक आशीष् और अनुग्रह से ऐसा परिपूर्ण करे कि तुम इस लोक में एक साथ ऐसा निर्वाह करो कि परलोक में अनन्त जीवन प्राप्त करो। आमिन्॥

तब सेवक वा गायक प्रभु के भोजनमंच के पास चलते हुए इस स्तोत्र को कहें वा गावें।

बीयटी आमनेस स्तोत्र १२८।

धन्य है प्रत्येक जो प्रभु से डरता है। जो उस के मार्गों पर चलता है॥

तू अपने हाथों की कमाई निश्चय खावेगा। तू धन्य है और तेरा कुशल होगा॥

तेरी पत्नी तेरे घर के भीतर फलवन्त दाखलता के समान होगी। तेरे बालक तेरे भोजनमंच की चारों ओर जलपाई के पौधों के शदृश होवेंगे ॥

देखो जो पुरुष प्रभु से डरता है। सो ऐसी ही आशीष् पावेगा ॥

प्रभु तुझ को सिय्योन् में से आशीष् देवे। और तू जीवन भर यरू-शलेम् का कुशल देखता रह ॥

वरन अपने लड़कों के लड़के देख। यिस्राएल् को शान्ति मिले ॥

पिता की और पुत्र की। और पवित्रात्मा की महिमा होवे ॥

जैसी आदि में थी और अब है। और सदा वरन युगानयुग रहेगी।—आमेन् ॥

अथवा यह स्तोत्र।

देउस् मिसरे आतुर् स्तोत्र ६७

ईश्वर हम पर करुणा करे और हम को आशीष् देवे। और अपने मुंह का प्रकाश हम पर चमकावे ॥

जिस्तें तेरा मार्ग पृथिवी पर। तेरा त्राण सब जातियों में जाना जावे ॥

हे ईश्वर लोकगण तेरा धन्यवाद करें। जातिगण सब के सब तेरा धन्यवाद करें ॥

लोकगण हर्ष करें और ऊंचे स्वर से गावें। क्योंकि तू धर्म्म से जातिगण का न्याय और पृथिवी पर लोकगणों की अगुवाई करेगा ॥

हे ईश्वर लोकगण तेरा धन्यवाद करें। जातिगण सब के सब तेरा धन्यवाद करें ॥

भूमि ने अपनी उपज दिई है। ईश्वर हमारा ईश्वर हमें आशीष् देवेगा ॥

ईश्वर हम को आशीष् देगा । और पृथिवी के सब अन्तदेश उस का भय मानेंगे ॥

पिता की और पुत्र की । और पवित्रात्मा की महिमा होवे ॥

जैसी आदि में थी और अब है । और सदा वरन युगानयुग रहेगी ॥—आमेन् ॥

जब यह स्तोत्र समाप्त होवे और दुल्हा और दुलिहन प्रभु के भोजनमंच के साम्हने घुटने टेके रहें और प्रीष्ट भोजनमंच के पास खड़ा होके और उन की ओर घूम के कहे ।

हे प्रभु हम पर दया कर ॥

उत्तर । हे खीष्ट हम पर दया कर ॥

सेवक । हे प्रभु हम पर दया कर ॥

हे हमारे पिता । तू जो स्वर्ग में है । तेरा नाम पवित्र किया जावे । तेरा राज्य आवे । तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है पृथिवी पर भी होवे । हमारी प्रति दिन की रोटी आज हमें दे । और हमारे अपराधों को क्षमा कर । जैसे हम ने भी अपने अपराधियों को क्षमा किया है । और हमें परीक्षा में न ला । परन्तु उस दुष्ट से बचा । आमेन् ॥

सेवक । हे प्रभु अपने इस दास और अपनी इस दासी को बचा ।

उत्तर । जो तुझ पर भरोसा रखते हैं ।

सेवक । हे प्रभु अपने पवित्रस्थान से उन के लिये सहायता भेज ।

उत्तर । और सदा उन की रक्षा करता रह

सेवक । उन के लिये एक दृढ़ गढ़ हो ।

उत्तर । उन के शत्रुओं के साम्हने ।

सेवक । हे प्रभु हमारी प्रार्थना सुन ।

उत्तर । और हमारी दुहाई आप लों पहुंचने दे

विवाह के अनुष्ठान की पद्धति

सेवक

हे अब्राहाम् के ईश्वर यिस्हाक् के ईश्वर याक़ोब् के ईश्वर अपने इन दासों को आशीष् दे और उन के हृदय में अनन्त जीवन का बीज बो जिस्तें जो कुछ वे तेरे पवित्र वचन से अपने लाभ के लिये सीखें उस के अनुसार कार्य्य भी करें। हे प्रभु स्वर्ग पर से उन पर दयादृष्टि करके उन को आशीष् दे। और जैसे तू ने अब्राहाम् और सारा को अपनी आशीष् देके उन को बड़ी शान्ति दिई वैसे ही कृपा करके अपनी आशीष् अपने इन दासों को दे जिस्तें वे तेरी इच्छा के अधीन होके और सदा तेरी शरण में सुरक्षित रहके अपने जीवन के अन्त लों तेरे प्रेम में बने रहें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन् ॥

यदि स्त्री के जनने का वय बीत गया होवे तो यह नीचे लिखी हुई प्रार्थना छोड़ दिई जावे।

हे दयालु प्रभु और स्वर्गीय पिता तेरी दया और कृपा से मनुष्य जाति की वृद्धि होती है हम तुझ से विनती करते हैं अपनी आशीष् से इन दोनों की सहायता कर कि वे लड़कों से फूलें फलें और भक्ति युक्त प्रेम और सुचाल में इतने दिन लों एकसाथ जीते रहें कि अपने लड़कों को ख्रीष्टीय धर्म्म में सुशिक्षित देखें जिस्तें तेरी स्तुति और प्रतिष्ठा होवे हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन् ॥

हे ईश्वर तू ने अपनी महाशक्ति से जगत को नास्ति से बनाया अरु और सब कुछ ढब से रखके यह भी ठहराया कि पुरुष जो तेरे स्वरूप के समान सिरजा गया स्त्री की उत्पत्ति होवे और दोनों को जोड़के यह सिखाया कि जिन को तू ने विवाह के द्वारा एक किया उन को अलग करना कभी उचित न होगा। हे ईश्वर तू ने विवाह की दशा को पवित्र करके उस को ऐसा उत्तम रहस्य कर दिया है कि

वह खीष्ट और उस की एक्लीसिया के आत्मिक विवाह और एकता का दृष्टान्त है। अपने इन दासों पर दयादृष्टि कर कि यह पुरुष तेरे वचन के अनुसार अपनी पत्नी से प्रेम रक्खे जैसे खीष्ट ने अपनी दुल्हिन एक्लीसिया से प्रेम किया कि उस ने अपने को उस के लिये दे दिया और अपनी देह के तुल्य उस से प्रेम रखता और उस की सुधि लेता है। और यह भी कृपा कर कि यह स्त्री अपने पति के साथ प्रेमी और सुशील पतिव्रता और अधीन रहे और कोमलता संयम और मिलनसारी से पवित्र और भक्त स्त्रियों की अनुगामिनी होवे। हे प्रभु इन दोनों को आशीष् दे और उन को यह वर दे कि वे तेरे अनन्त राज्य के अधिकारी हो जावें। हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन् ॥

तब प्रीष्ट कहे।

सर्वशक्तिमान् ईश्वर जिसने आदि में हमारे प्रथम माता पिता आदाम् और हव्वा को सिरजा और उन को पवित्र करके विवाह में जोड़ दिया। तुम पर अपने अनुग्रह का धन बरसावे तुम को पवित्र करे और आशीष् देवे जिस्तें तुम तन मन दोनों से उस को प्रसन्न रक्खो और अपने जीवन के अन्त लों पवित्र प्रेम में एक साथ जीते रहो। आमेन् ॥

इस के अनन्तर यदि ऐसा कोई उपदेश न होवे जिस में पति पत्नी के धर्म्म का वर्णन होवे तो सेवक यह नीचे लिखी हुई बात पढ़े।

तुम सब जिन का विवाह हुआ अथवा जो विवाह की पवित्र दशा में प्रवेश करने चाहते हो सुनो कि पवित्र शास्त्र इस विषय में क्या कहता है कि पतियों को अपनी पत्नियों से और पत्नियों को अपने पतियों से कैसा बर्त्ताव रखना चाहिये।

विवाह के अनुष्ठान की पद्धति

पवित्र पौल एफेसियों की पत्री के ५ वें अध्याय में सब विवाहित पुरुषों को यह आज्ञा देता है । हे पतियो अपनी पत्नियों से प्रेम रक्खो जैसे खीष्ट ने भी एक्लीसिया से प्रेम किया और अपने को उस के लिये दे दिया जिस्तें उस को जल के कुण्ड में वचन से शुद्ध करके पवित्र करे जिस्तें वह उस को एक ऐसी तेजोमय एक्लीसिया करके अपने सम्मुख उपस्थित करे जिस में कलंक वा झुर्री वा ऐसा कुछ न होवे परन्तु वह पवित्र और निर्दोष होवे । यूं हीं पतियों को भी चाहिये कि अपनी पत्नियों से अपने देह के समान प्रेम रक्खें । जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है सो आप से प्रेम रखता है । क्योंकि किसी ने कभी अपने देह से बैर नहीं किया पर उस को पालता पोसता और उस की सुधि लेता है जैसे खीष्ट भी एक्लीसिया से करता है । क्योंकि हम उस के देह के अंग हैं । इस कारण से मनुष्य अपने माता पिता को छोड़के अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे दोनों एक देह होंगे । यह बड़ा रहस्य है पर मैं खीष्ट और एक्लीसिया के विषय में बोलता हूं तथापि तुम में से भी प्रत्येक अपनी पत्नी से ऐसा प्रेम रक्खे जैसा अपने से रखता है ।

उसी प्रकार से वही पवित्र पौल जब कोलोस्सियों को लिखता है तब सब विवाहित पुरुषों से यूं कहता है कि हे पतियो अपनी पत्नियों से प्रेम रक्खो और उन से कड़ुए मत होओ ।

यह भी सुनो कि पवित्र पेत्र जो खीष्ट का प्रेरित और आप विवाहित था विवाहितों से क्या कहता है । हे पतियो अपनी पत्नियों के संग ज्ञान की रीति से निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जानके और यह भी समझके कि तुम जीवन के अनुग्रह के उस के साथ भागी हो उस का आदर करो जिस्तें तुम्हारी प्रार्थनाएं रुक न जावें ।

यहां लों तुम ने यह सुना है कि पति को पत्नी से कैसा बर्त्ताव रखना चाहिये । अब हे पत्नियो तुम भी सुनो और सीखो कि तुम को

अपने पतियों से कैसा बर्त्ताव रखना चाहिये जैसा पवित्र शास्त्र में उस का स्पष्ट वर्णन है।

पवित्र पौल एफेसियों की उसी पत्री में तुम को यह शिक्षा देता है। हे पत्नियो अपने अपने पतिन के ऐसे अधीन रहो जैसे प्रभु के। कि पति पत्नी का सिर है जैसा खीष्ट एक्लेसिया का सिर है और वह आप देह का त्राता है। पर जैसे एक्लेसिया खीष्ट के अधीन रहती है वैसे ही पत्नियां भी सब बातों में अपने पतिन के अधीन रहें। और फिर वह कहता है कि चाहिये कि पत्नी अपने पति का भय माने।

और कोलोस्सियों की पत्री में पवित्र पौल तुम को यह संक्षिप्त उपदेश देता है कि हे पत्नियो अपने पतिन के अधीन रहो जैसे प्रभु में योग्य है।

पवित्र पेत्र भी यह कहके तुम को बहुत भली भान्ति उपदेश देता है कि हे पत्नियो अपने अपने पतिन के अधीन रहो कि यद्यपि कोई कोई वचन को न मानता होवे तो वे भी वचन के बिना पत्नियों की चाल चलन से तुम्हारे शुद्ध चाल चलन को जो भय के साथ होवे देखने से प्राप्त किया जावे। तुम्हारा सिंगार बाल गूंथने और सोने के गहनों अथवा वस्त्र के पहिनने का बाहरी सिंगार न होवे परन्तु वह हृदय का गुप्त मनुष्य होवे जो कोमल और शान्त आत्मा के अविनाशी वस्त्र से आभूषित होवे कि यह ईश्वर की दृष्टि में बहुमूल्य है। क्योंकि अगले समय की पवित्र स्त्रियां भी जो ईश्वर से आशा रखती थीं इसी रीति से सिंगार करती थीं और अपने अपने पतिन के अधीन रहती थीं। जैसे सारा अब्राहाम् को स्वामी कहके उस की आज्ञा मानती थी और तुम उस की पुत्रियां हो गई हो यदि तुम सुकर्म्म करो और किसी के डराने से न डरो।

यह योग्य है कि जिन का विवाह अभी भया विवाह के समय अथवा उसके उपरान्त पहले अवसर में पवित्र सहभागिता को लेवें।

रोगियों के घर में प्रार्थना करने की विधि।

जब कोई रोगी होवे तब इस बात का समाचार परोकिया के सेवक को दिया जावे और वह रोगी के घर में आके कहे।

शान्ति इस घर पर और उस के सब रहनेहारों पर होवे।

जब वह रोगी के पास आवे तब घुटने टेकके कहे।

हे प्रभु हमारे अपराधों को स्मरण न कर और न हमारे पुरखाओं के अपराधों को हे दयालु प्रभु हम को छोड़ दे अपने निज लोगों को जिन्हें तू ने अपना अनमोल लहू देके छुड़ा लिया है छोड़ दे और सदा लों हम से कुपित न रह॥

उत्तर। हे दयालु प्रभु हमें छोड़ दे॥

तब सेवक कहे।

प्रार्थना करें।

हे प्रभु हम पर दया कर॥
हे खीष्ट हम पर दया कर॥
हे प्रभु हम पर दया कर॥

हे हमारे पिता। तू जो स्वर्ग में है। तेरा नाम पवित्र किया जावे। तेरा राज्य आवे। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है पृथ्वी पर भी होवे। हमारी प्रतिदिन की रोटी आज हमें दे। और हमारे अपराधों को क्षमा कर। जैसे हम ने भी अपने अपराधियों को क्षमा किया है। और हमें परीक्षा में न ला। परन्तु बुराई से बचा। आमेन्॥

रोगियों के घर में प्रार्थना करने की विधि

सेवक। हे प्रभु अपने दास को बचा॥
उत्तर। जो तुझ पर भरोसा रखता है॥
सेवक। अपने पवित्र स्थान में से उस के लिये सहायता भेज॥
उत्तर। और सदा अपने सामर्थ्य से उस की रक्षा करता रह॥
सेवक। शत्रु उस पर कोई दांव न पावें॥
उत्तर। और न दुष्ट उसकी हानि करने को निकट आवे॥
सेवक। हे प्रभु उस के लिये एक दृढ़ गढ़ हो॥
उत्तर। उसके शत्रु के साम्हने॥
सेवक। हे प्रभु हमारी प्रार्थनाओं को सुन॥
उत्तर। और हमारी दुहाई आप लों पहुंचने दे॥

सेवक॥

हे प्रभु स्वर्ग पर से दृष्टि कर और अपने इस दास को देख और उस के पास आके उसका दुःख घटा। अपनी दया की आंख से उस पर दृष्टि कर उसको शान्ति और अपने पर पूरा भरोसा दे शत्रु के भय से उस की रक्षा कर और उस को निरन्तर शान्ति और कुशल से रख। हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमिन्॥

हे सर्वशक्तिमान् और अत्यन्त दयालु ईश्वर और त्राता हमारी सुन अपने इस दास पर जो रोग से पीड़ित है अपनी रीति के अनुसार कृपा का हाथ बढ़ा। हम विनती करते हैं तू अपने इस पैत्रिक शासन को उस की पवित्रता का कारण कर कि वह अपनी दुर्बलता को ऐसा पहचाने कि उसके विश्वास की दृढ़ता और उस के पश्चात्ताप की गम्भीरता बढ़ जावे ऐसा कि यदि तेरी शुभ इच्छा होवे कि वह पहिले के समान भला चंगा हो जावे तो अपनी अवशिष्ट जीवन तेरे भय में और तेरी महिमा के लिये बितावे और नहीं तो उस को अनुग्रह दे कि तेरे इस शासन को ऐसा अंगीकार करे कि वह इस

दुःखमय जीवन के समाप्त होने पर तेरे साथ अनन्त जीवन में वास करे हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

तब सेवक रोगी को इस रीति से अथवा ऐसी किसी दूसरी रीति से उपदेश सुनावे।

हे अति प्रिय यह जानो कि सर्वशक्तिमान् ईश्वर जीवन और मरण का प्रभु है और जो कुछ उन से सम्बन्ध रखता है जैसा युवापन बल आरोग्य बुढ़ापा दुर्बलता और रोग सब का स्वामी है। इस लिये तुम्हारा रोग कोई क्युं न होवे इस को निश्चय जानो कि वह ईश्वर की ओर से है। और यह रोग किसी कारण से तुम पर क्युं न भेजा गया होवे चाहे इस कारण से कि तुम्हारे धीरज के परखे जाने से औरों के लिये उदाहरण होवे और तुम्हारा विश्वास प्रभु के दिन में सराहने योग्य महिमायुक्त और प्रतिष्ठित ठहरे जिस्तें महिमा और अनन्त आनन्द की बढ़ती होवे चाहे वह इस लिये तुम पर भेजा गया हो कि तुम में जो कुछ तूम्हारे स्वर्गीय पिता की दृष्टि में बुरा है सो सुधारा जावे इस बात को निश्चय जानो कि यदि तुम अपने पापों से सच्चा पश्चात्ताप करो और ईश्वर की उस दया पर जो उसके प्रिय पुत्र येशू ख्रीष्ट के निमित्त होती है भरोसा करके अपना दुःख धीरज से सहो और उस के पैत्रिक शासन के लिये उस का धन्यवाद नम्रता से करो और अपने को सम्पूर्ण रीति से उस की इच्छा के अधीन रक्खो तो उस से तुम को लाभ होगा और तुम उस सुमार्ग पर जो अनन्त जीवन लों पहुंचाता है आगे बढ़ोगे॥

यदि वह बहुत रोगी होवे तो पालक अपना उपदेश इसी स्थान में समाप्त कर सकता है नहीं तो यह भी कहे।

इस लिये प्रभु की ताड़ना को प्रसन्नता से अंगीकार करो क्योंकि जैसे पवित्र पौल इब्रीयों की पत्री के १२ वें अध्याय में कहता है कि जिस से प्रभु प्रेम रखता है उस की वह ताड़ना करता है और प्रत्येक पुत्र को जिसे वह ग्रहण करता छड़ी मारता है। यदि ताड़ना सहो तो ईश्वर तुम से ऐसा व्यवहार करता है जैसा पुत्रों से कि कौन् सा पुत्र है जिसे पिता ताड़ना नहीं करता। परन्तु यदि तुम ताड़ना से रहित हो जिस में सब भागी हुए हैं तो पुत्र नहीं पर व्यभिचार के सन्तान हो। फिर जब हमारे शरीर के पिता हमारी ताड़ना करते थे और हम उन का आदर करते थे तो कितना अधिक हम आत्माओं के पिता के अधीन न होवें और जीवें। क्योंकि वे तो थोड़े दिन के लिये अपनी समझ के अनुसार हमारी ताड़ना करते थे पर वह हमारे लाभ के लिये जिस्तें हम उस की पवित्रता में भागी होवें। हे प्यारे भाई ये बातें पवित्र शास्त्र में हमारी शान्ति और शिक्षा के लिये लिखी गईं जिस्तें जब कभी हमारे स्वर्गीय पिता की शुभ इच्छा होवे कि किसी प्रकार की बिपत्ति से हमारा शासन करे तो हम धीरज और धन्यवाद के साथ उस की ताड़ना सहें और ख्रीष्टियानों की समझ में इस से बढ़कर कोई शान्ति की बात न होनी चाहिये कि बिपत्ति कष्ट और रोग को धीरज के साथ सहने से ख्रीष्ट के समान बन जावें। क्योंकि वह भी जब लों उसने दुःख न भोगा तब लों आनन्द स्थान में नहीं चढ़ गया और जब लों वह क्रूस पर चढ़ाया नहीं गया तब लों उस ने अपनी महिमा में प्रवेश नहीं किया। इसी प्रकार से हमारा अनन्त आनन्द में पहुंचने का मार्ग निश्चय यही है कि हम यहां ख्रीष्ट के साथ दुःख उठावें और हमारा अनन्त जीवन में प्रवेश करने का द्वार यही है कि हम प्रसन्नता के साथ ख्रीष्ट के संग मरें जिस्तें हम मृत्यु से फिर जी उठें और उसी के संग अनन्त जीवन में रहें। सो अब

रोगियों के घर में प्रार्थना करने की विधि

मैं तुम से ईश्वर के नाम से बिनती करता हूं कि अपने दुःख को जो तुम्हारे लिये लाभदायक ठहर चुका है धीरज से सहके उस अंगीकार को जो तुम ने अपने बप्तिस्मा के समय ईश्वर के साम्हने किया स्मरण करो। और जब कि इस जीवन के उपरान्त उस धर्म्मी न्यायी को जिस से सब का विचार विना पक्षपात होता है लेखा देना पड़ेगा इस लिये मैं तुम्हें समझाता हूं कि अपने को परखो और यह भी जांचो कि ईश्वर और मनुष्य के सम्बन्ध में तुम्हारी क्या दशा है जिस्तें तुम अपने अपराधों के लिये अपने को दोषी और दण्ड के योग्य ठहराके हमारे स्वर्गीय पिता के हाथ से ख्रीष्ट के निमित्त दया पाके उस भयानक न्याय में दोषी और दण्ड के योग्य न ठहरो। इस हेतु हमारे विश्वास की जो मूल बातें हैं सो मैं सुनाता हूं कि तुम जान सको कि तुम्हारा विश्वास ऐसा है जैसा ख्रीष्टियान का होना चाहिये वा नहीं।

यहां सेवक विश्वास की मूल बातें यूं सुनावे।

क्या तू विश्वास रखता है ईश्वर सर्वशक्तिमान् पिता पर जो स्वर्ग और पृथ्वी का कर्त्ता है और येशू ख्रीष्ट पर जो उस का एकलौता पुत्र और हमारा प्रभु है और यह कि वह पवित्रात्मा की शक्ति से गर्भ में आया कुमारी मिर्याम् से जन्मा पोन्त्य पीलात के अधिकार में दुःख उठाया क्रूस पर चढ़ाया गया मर गया और समाधि में रक्खा गया पाताल में उतर गया तीसरे दिन जी भी उठा स्वर्ग पर चढ़ गया और सर्वशक्तिमान् ईश्वर पिता की दहिनी ओर बैठा है और वहां से युग के अन्त में जीवतों और मृतकों का न्याय करने को आनेहारा है॥

क्या तू पवित्रात्मा पर विश्वास रखता है पवित्र कथोलिक एक्लेसिया पर पवित्रों की सहभागिता पर पापों की क्षमा पर शरीर के पुनरुत्थान पर और मृतु के अनन्तर अनन्त जीवन पर॥

रोगियों के घर में प्रार्थना करने की विधि

रोगी उत्तर देवे ।

मैं इन सब बातों पर दृढ़ विश्वास रखता हूं ।

तब सेवक उस को जांचे कि वह अपने पापों से सच्चा पश्चात्ताप करता और सभों से प्रीति रखता है कि नहीं फिर उस को समझावे कि अपने सब अपराधियों को अन्तःकरण से क्षमा करे और यदि उस ने किसी दूसरे का अपराध किया होवे तो उस से क्षमा मांगे और यदि उस ने किसी की हानि वा बुराई किई होवे तो शक्ति भर बदला देवे । और यदि उस ने इस से पहले अपनी सम्पत्ति का बन्दोबस्त न किया होवे तो सेवक उस को समझावे कि अभी करे और अपने ऋणों को बतावे कि उस को कितना देना और पावना है जिस्तें उस का मन हलका होवे और जो उस की सम्पत्ति को बांटेंगे वे झंझट से बचें । परन्तु लोगों को बार बार यह स्मरण दिलाना चाहिये कि जब लों भले चंगे रहें तबलों अपने धन सम्पत्ति का बन्दोबस्त करें ।

वे ऊपर लिखी हुई बातें यदि सेवक उचित जाने तो वह प्रार्थना आरम्भ करने से पहिले भी कह सकता है ।

सेवक इस बात को न भूले कि धनवान रोगियों को यत्न से उभारे कि कंगालों को दान देवें ।

यहां रोगी उभारा जावे कि यदि उसके मन में किसी भारी बात का खटका होवे तो अपने पापों का विशेष अंगीकार करे । इस अंगीकार के अनन्तर यदि वह नम्रता और अन्तःकरण से चाहे तो प्रीष्ट इस रीति से उस को पापमोचन देवे ।

हमारा प्रभु येशू ख्रीष्ट अपनी एक्लेसिया को अधिकार दे गया है कि जितने पापी सच्चा पश्चात्ताप करते और उस पर सच्चा विश्वास रखते हैं उन सब को पापमोचन देवे वही अपनी बड़ी दया से तेरे अपराधों को क्षमा करे । और उस अधिकार से जो उस ने मुझ को सौंपा है मैं तुझ को तेरे सब पापों से छुटकारा देता हूं पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से । आमेन् ॥

रोगियों के घर में प्रार्थना करने की विधि

और तब प्रीष्ट यह प्रार्थना कहे।

प्रार्थना करें।

हे अत्यन्त दयालु ईश्वर तू अपनी दया की बहुतायत के अनुसार सच्चा पश्चात्ताप करनेहारों के पापों को ऐसा मेट देता है कि फिर कभी उन को स्मरण नहीं करता अपने इस दास को जो अन्तःकरण से क्षमा चाहता है अपनी दया की आंख खोलके देख। हे अति प्रेममय पिता जो कुछ दुष्टात्मा के छल और द्वेष अथवा उस की निज शारीरिक इच्छा और दुर्बलता के कारण से इस में बिगड़ गया है उस को सुधार एक्लेसिया की एकता में इस पीड़ित अंग को स्थिर रख उस के चूर्ण मन पर ध्यान दे उस के आंसुओं को ग्रहण कर उस की पीड़ा को घटा जैसा तुझ को उस के परमलाभ के लिये अच्छा जान पड़े। और जब कि वह पूरा भरोसा तेरी दयाही पर रखता है तो उस के पिछले पापों को उस के लेखे में न लिख पर अपने धन्य आत्मा से उस को सामर्थ्य दे और जब उस को यहां से बुलाने की तेरी इच्छा होवे तब अपने अनुग्रह में उस को ग्रहण कर अपने अति प्रिय पुत्र हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के पुण्य के द्वारा। आमेन्॥

तब सेवक यह स्तोत्र कहे

स्तोत्र ७१

हे प्रभु मैं तेरा शरणागत भया। मुझे कभी लज्जित न होने दे॥

हाय कि तू अपने धर्म्म के हेतु मुझे उबारता और छुड़ाता। अपना कान मेरी ओर झुका और मुझे बचा॥

मेरे निवास के लिये एक चटान हो जिस पर मैं नित्य जाया करूं। तू ने मेरे बचाव की आज्ञा दिई है क्योंकि तू मेरी ऊंची चटान और मेरा दुर्ग है॥

रोगियों के घर में प्रार्थना करने की विधि

हे मेरे ईश्वर मुझे दुष्ट के हाथ से छुड़ा। कुटिल और क्रूर के बश से ॥

क्योंकि हे प्रभु भगवान तूही मेरी आशा है। मेरे बचपन से तूही मेरा आधार है ॥

मैं गर्भ ही से तुझी से सम्भाला गया हूं। मेरी मा के पेट ही से तू ने मेरी सुधि लिई है मैं निरन्तर तेरी ही स्तुति करूंगा ॥

मैं बहुतों के लिये मानो अचम्भा हुआ हूं। पर तू मेरा दृढ़ शरणस्थान है ॥

मेरा मुंह तेरी स्तुति से। दिन भर तेरी सुन्दरता के वर्णन से भरपूर रहे ॥

बुढ़ापे के समय मुझे फेंक न दे। जब मेरा बल घटता है तब मुझे छोड़ न दे ॥

क्योंकि मेरे शत्रु मेरे विषय में कहते हैं। और जो मेरे प्राण के घात में लगे हैं उन्हों ने आपस में परामर्श किया है ॥

कि ईश्वर ने उस को तजा है उस का पीछा करो और उस को पकड़ लेओ कि उस का छुड़ानेहारा कोई नहीं ॥

हे ईश्वर मुझ से दूर न रह। हे मेरे ईश्वर मेरी सहाय के लिये शीघ्र कर ॥

जो मेरे जीव से द्वेष रखते हैं सो लज्जित और नष्ट होवें। जो मेरी हानि खोजते हैं सो निन्दा और अनादर से ढंप जावें ॥

पर मैं तो निरन्तर आशा धरे रहूंगा। और तेरी स्तुति पर स्तुति बढ़ाऊंगा।

मेरा मुंह तेरे धर्म्म का और दिन भर तेरे त्राण का बखान करेगा। क्योंकि मैं उन की गिनती नहीं जानता ॥

मैं प्रभु भगवान के पराक्रमी कार्य्यों का वर्णन करता हुआ आऊंगा। मैं तेरे केवल तेरे ही धर्म्म की चर्चा करूंगा ॥

हे ईश्वर तू मुझ को बचपन ही से सिखाता आया है। और अब लों मैं तेरे आश्चर्य्यकर्म्मों को प्रचारता आया हूं ॥

रोगियों के घर में प्रार्थना करने की विधि

और बुढ़ापे और बाल पकने के समय भी हे ईश्वर मुझे न छोड़ जब लों मैं इस पीढ़ी के साम्हने तेरी भुजा का सब आनेहारों के साम्हने तेरे पराक्रम का प्रचार न करूं ॥

और हे ईश्वर तेरा धर्म्म ऊर्द्धलोक लों पहुंचता है। कि तू ने बड़े कार्य्य किये हैं हे ईश्वर तेरे तुल्य कौन है ॥

तू ने तो हम से बड़े और अत्यन्त कष्ट भुगवाये थे पर अब फिरके हम को जिलावेगा। और भूमि के गहिरावों में से फिर हम को ऊपर ले आवेगा ॥

तू मेरी बड़ाई को बढ़ावेगा। और लौटके मुझ को शान्ति देवेगा ॥

मैं भी कानून बाजे के साथ तेरा धन्यवाद करूंगा तेरी सच्चाई का हे मेरे ईश्वर। मैं बीणा से तेरा स्तुतिगान करूंगा हे यिस्राएल् के पवित्र ॥

मेरे होंठ तेरा स्तुतिगान करने के समय ऊंचे स्वर से गावेंगे। और मेरी जीव जिस को तू ने छुड़ा लिया है ॥

मेरी जीभ भी दिन भर तेरे धर्म्म की चर्चा करती रहेगी। क्योंकि जो मेरी हानि के खोजी हैं सो लज्जित और अप्रतिष्ठित होगये हैं ॥

पिता की और पुत्र की। और पवित्रात्मा की महिमा होवे ॥
जैसी आदि में थी और अब है। और सदा वरन युगानयुग रहेगी ॥—आमेन् ॥

और यह भी कहे

हे जगत के त्राता तू ने अपने क्रूस और बहुमूल्य लहू से हम को छुड़ा लिया है। हे प्रभु हम नम्रता से विनती करते हैं हम को बचा और हमारी सहायता कर ॥

रोगियों के घर में प्रार्थना करने की विधि

तब सेवक कहे

सर्वशक्तिमान् प्रभु उन सब के लिये जो उस पर भरोसा रखते हैं अति दृढ़ गढ़ है स्वर्ग और पृथिवी और पृथिवी के तले की सब वस्तें उस को दण्डवत करती और उस की आज्ञा मानती हैं वही सब और सदा तेरी आड़ होवे और तुझ को इस बात का ज्ञान और निश्चय देवे कि स्वर्ग के नीचे मनुष्य को कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया जिस में और जिस के द्वारा तू आरोग्य और त्राण पा सकता है पर केवल हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट का नाम । आमेन् ॥

और तदनन्तर वह यह कहे ।

हम तुझ को ईश्वर के अनुग्रह और रक्षा में सौम्पते हैं प्रभु तुझ को आशीष् देवे और तेरी रक्षा करे प्रभु अपना मुख तुझ पर प्रकाशित करे और तुझ पर अनुग्रह करे प्रभु अपना मुख तेरी ओर करे और तुझे शान्ति देवे अब और सर्वदा । आमेन् ॥

रोगी लड़के के लिये प्रार्थना ॥

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर और दयालु पिता जीवन और मरण तेरे ही हाथ में हैं हम नम्रता से विनती करते हैं इस लड़के पर जो अभी रोगी पड़ा है दया की दृष्टि कर । हे प्रभु अपना त्राण उस को दे अपने ठहराये हुए सुसमय में उस को उस की शारीरिक पीड़ा से छुड़ा और अपनी दया के निमित्त उसके आत्मा का त्राण कर ऐसा कि यदि तेरी इच्छा होवे कि उस की आयुर्दा इस लोक में बढ़े तो वह तेरे लिये अपना जीवन बितावे और विश्वस्तता से तेरी सेवा करने और अपने समय के लोगों को लाभ पहुंचाने से तेरी महिमा का कारण होवे । और नहीं तो उस को उन स्वर्गीय निवासस्थानों में

ग्रहण कर जहां उन के आत्मा जो प्रभु येशू में सोते हैं निरन्तर विश्राम और आनन्द भोगते हैं। हे प्रभु अपनी उस दया के निमित्त यह वर दे जो उसी तेरे पुच हमारे प्रभु येशू खीष्ट में है वह तेरे और पवित्रात्मा के संग सदा एक ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता रहे। आमेन् ॥

प्रार्थना उस बीमार के लिये
जिस के बचने की थोड़ी ही आशा देख पड़ती है।

हे दया के पिता और सारी शान्ति के ईश्वर हमारी आवश्यकता के समय में केवल तू ही हमारा सहायक है हम तेरे इस दास के निमित्त जो यहां तेरे हाथ के तले शरीर की बड़ी दुर्बलता में दबा पड़ा है तेरे पास सहायता के लिये दौड़े आए हैं। हे प्रभु उस पर अनुग्रह की दृष्टि कर और जितना उस में बाहरी मनुष्य घुलता जाता है उतना ही अपने अनुग्रह और पवित्रात्मा के द्वारा उस में के भीतरी मनुष्य को बल देता रह। उस को यह दे कि वह अपने सब पिछले पापों के लिये निष्कपट पश्चात्ताप करे और तेरे पुच येशू पर दृढ़ विश्वास रक्खे जिस्तें उस से पहिले कि वह यहां से कूच करे और फिर न रहे उस के पाप और स्वर्ग में उस के पापमोचन पर छाप दिई जावे। हे प्रभु हम जानते हैं कि तुझ से कोई बात अनहोनी नहीं और यदि तू चाहे तो अब भी उस को उठाके खड़ा कर सकता और कुछ और दिन लों हमारे संग रहने दे सकता है। तौभी जब कि ऐसा देख पड़ता है कि उसके मरने का समय निकट आया है इस लिये हम विनती करते हैं कि तू उस को मृत्यु की घड़ी लों ऐसा सिद्ध और लैस कर रख कि जब वह यहां से शान्ति और तेरी प्रसन्नता के साथ कूच करे तब उस का आत्मा तेरे अनन्त राज्य में ग्रहण किया जावे तेरे एकलौते पुच हमारे प्रभु और चाता येशू खीष्ट के पुण्य और मध्यस्थता के द्वारा। आमेन् ॥

रोगियों के घर में प्रार्थना करने की विधि

एक प्रार्थना उस रोगी के लिये जो मरनेही पर होवे जिस के द्वारा वह ईश्वर के हाथ में सोम्पा जावे

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर पूर्ण किये हुए धर्म्मियों के आत्मा जब अपने पार्थिव बन्दीगृहों से छूट जाते हैं तब तेरे ही पास जीते रहते है हम तेरे इस दास अपने प्रिय भाई के आत्मा को नम्रता से तेरे हाथ में सोम्प देते हैं कि तू विश्वस्त सिरजनहार और अत्यन्त दयालु त्राता है और अति नम्रता से विनती करते हैं कि वह तेरी दृष्टि में बहुमूल्य ठहरे। हम तुझ से प्रार्थना करते हैं उस के आत्मा को उस निष्कलंक मेम्ने के लहू से जो जगत के पापों के उठा ले जाने के लिये मारा गया धो दे कि इस दुःखमय और दुष्ट संसार के बीच शरीर की कुइच्छाओं अथवा सातान् के छल से जो कुछ मल उस को लग गया होवे सो धोया और छुड़ाया जावे और वह तेरे साम्हने शुद्ध और निष्कलंक उपस्थित किया जावे। और हम लोगों को जो जीते हैं यह सिखा कि आज और प्रतिदिन मनुष्यों को मरते देखने से समझ लेवें कि हम कैसे नाशवान और अस्थिर हैं और अपने दिनों को ऐसा गिनें कि जीते जी अपने मन को उस पवित्र और स्वर्गीय ज्ञान में लगाये रक्खें जिस के कारण से हम अन्त को अनन्त जीवन लों पहुंचें तेरे एकलौते पुत्र हमारे प्रभु येशू खीष्ट के पुण्य के द्वारा। आमेन्॥

प्रार्थना उन जनों के लिये जो मन अथवा अन्तर्विवेक के खटके में व्याकुल हैं।

हे धन्य प्रभु दया के पिता और समस्त शान्ति के ईश्वर हम विनती करते हैं कि तू अपने इस दुःखित दास पर दया दृष्टि कर। तू उस के विरोध में कड़ुवी बातें लिखता और उस को उस के पिछले

पापों का अधिकारी बनाता है। तेरा कोप उस पर भारी पड़ा है और उस का जीव दुःख से भरा है। परन्तु हे दयालु ईश्वर तू ने अपना पवित्र वचन हमारी शिक्षा के लिये लिखवाया कि हम तेरे पवित्र शास्त्र से धीरज और शान्ति प्राप्त करके आशा रक्खें उस को यह वर दे कि वह अपनी दशा और तेरे तर्जनों और प्रतिज्ञाओं को यथार्थ रीति से जाने जिस्तें वह न तेरा भरोसा तजे न तुझे छोड़ और किसी पर भरोसा रक्खे। उस की सब परीक्षाओं में उस को बल दे और उस की सब दुर्बलताओं को चंगा कर। कुचले हुए नरकट को न तोड़ और धूआं उठते हुए सन को न बुझा। कोप करके अपनी मया को रोक न रख पर उस को आनन्द और आह्लाद का शब्द सुना जिस्तें जो हड्डियां तू ने तोड़ीं सो हर्षित होवें। उस को शत्रु के भय से छुड़ा और उस पर अपने मुख का प्रकाश पड़ने दे और उस को शान्ति दे हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के पुण्य और मध्यस्थता के द्वारा। आमेन॥

—:※:—

रोगियों की सहभागिता

जब कि सब मनुष्यों पर जो मरनेहारे हैं बहुत आकस्मिक जोखिम रोग और व्याधियां आती हैं और वे नहीं जानते कि हम कब इस लोक से कूच करेंगे इस हेतु जिस्तें जब कभी ईश्वर की इच्छा होवे कि उनको बुलावे तब वे मरने के लिये सिद्ध रहें इस निमित्त पालक अपनी अपनी परोकिया के लोगों को बारम्बार और विशेष करके मरी वा किसी छुतहरे रोग के समय समझाया करें कि हमारे त्राता खीष्ट की देह और लहू की पवित्र सहभागिता जो एक्लेसिया में मण्डली को दिई जाती है उस को बारम्बार लिया करें जिस्तें ऐसा करने से वे यदि जोखिम अचानक आवे तो उस को न पाने के कारण व्याकुल न होवें। परन्तु यदि रोगी एक्लेसिया में न आ सके पर तौ भी सहभागिता को अपने घर में पाने चाहे तो उसे पालक को कुछ समय आगे इस का समाचार देना चाहिये और यह भी बताना कि मेरे संग कितने जन भागी होने चाहते हैं सो तीन अथवा न्यून से न्यून दो होना चाहिये। और जब रोगी के घर में एक योग्य स्थान चुन लिया जावे और पालक के आदर पूर्वक सेवकाई करने के लिये सब आवश्यक सामग्री सिद्ध कर रक्खी जावे तब वह वहीं पवित्र सहभागिता का अनुष्ठान करे और इस नीचे लिखी हुई प्रार्थना पत्री और सुसमाचार से आरम्भ करे।

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान् सदा जीवते ईश्वर मनुष्य जाति के कर्त्ता जिन से तू प्रेम रखता है उन का तू शासन करता है और जिन को तू ग्रहण करता है उन में से तू प्रत्येक की ताड़ना करता है। हम विनती करते हैं कि तू अपने इस दास पर जिस पर तेरा हाथ पड़ा है दया कर और यह वर दे कि वह अपने रोग को धीरज से अंगीकार करे और यदि तेरे अनुग्रह की इच्छा होवे तो फिर भला चंगा हो जावे और जब कभी उस का आत्मा देह से निकल जावे तब वह तेरे साम्हने निष्कलंक होके उपस्थित किया जावे हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

पत्री। इब्रीयों १२। ५।

हे मेरे पुत्र प्रभु की ताड़ना को तुच्छ न जान और उस के दपट

से जी छोटा मत कर क्योंकि प्रभु जिसे प्यार करता है उस की ताड़ना करता है और हर एक पुत्र को जिसे ग्रहण करता है कोड़े मारता है॥

सुसमाचार योहानान् ५। २४।

मैं सत्य सत्य तुम से कहता हूं कि जो मेरा वचन सुनता और मेरे भेजनेहारे पर विश्वास करता है सो अनन्त जीवन रखता है और न्याय में नहीं आता पर मृत्यु से छूटके जीवन में जा पहुंचा है।

इस के अनन्तर प्रीष्ट पवित्र सहभागिता को ऊपर लिखी हुई विधि के अनुसार इन शब्दों से आरम्भ करे कि तुम जो अन्तःकरण से इत्यादि।

पवित्र सक्रामेन्त के बांटने के समय प्रीष्ट पहले आपही सहभागिता को लेवे और पीछे उन को जो रोगी के संग भागी होने के लिये ठहराये गये हैं और सब के पीछे रोगी को देवे।

परन्तु यदि कोई रोग की अधिकता के कारण वा इस लिये कि उसने पालक को समय पर समाचार नहीं दिया वा इस लिये कि उस के संग भागी होने के लिये कोई न होवे वा और किसी यथार्थ कारण से ख्रीष्ट की देह और लहू का सक्रामेन्त न पावे तो पालक उस को समझावे कि यदि वह अपने पापों से सच्चा पश्चात्ताप करे और दृढ़ विश्वास रक्खे कि येशू ख्रीष्ट मेरे लिये क्रूस पर मरा और मेरे छुटकारे के लिये अपना लहू बहाया है और उस से जो लाभ उस को पहुंचते हैं उन्हें अन्तःकरण से स्मरण करके उनके लिये ख्रीष्ट का धन्यवाद जी से करे तो यद्यपि वह सक्रामेन्त को अपने मुंह से न लेवे तो भी वह हमारे त्राता ख्रीष्ट की देह और लहू को ऐसा खाता और पीता है कि उसके आत्मा का कुशल उससे होता है।

यदि रोगी के घर में प्रार्थना की विधि और सहभागिता एकी समय में होवे तो प्रीष्ट शीघ्रता के लिये प्रार्थना की विधि को स्तोत्र के पहले समाप्त करके तुरन्त सहभागिता को आरम्भ करे।

मरी वा किसी कुतहर रोग के समय में यदि परोकिया वा पड़ोस में से कोई रोगियों के संग इन के घर में सहभागिता में भागी न होने चाहे तो यदि रोगी विशेष विनती करे तो हो सकता है कि केवल सेवक ही उस के संग भागी होवे।

मृतकों को मिट्टी देने की विधि

जानना चाहिये कि यह नीचे लिखी हुई विधि उन के लिये काम में न ले आना चाहिये जो विना बप्तिस्मा अथवा **एक्लेसिया** से बहिष्कृत होके अथवा आत्मघात से मरते हैं।

प्रीष्ट और गायक प्रभु बाटिका के फाटक पर लोथ के संग हो लेवें और चाहे **एक्लेसिया** में चाहे समाधि की ओर उसके आगे आगे जाते हुए कहें वा गावें।

प्रभु कहता है पुनरुत्थान और जीवन मैं हूं जो मुझ पर विश्वास रखता है यद्यपि मरे तौ भी जीएगा और जो कोई जीता और मुझ पर विश्वास रखता है सो कभी न मरेगा पवित्र योहानान् ११।२५।

मैं जानता हूं कि मेरा छुड़ानेहारा जीता है और अन्त में भूमि पर खड़ा होगा और यद्यपि मेरे चाम के पीछे कीड़े इस देह को चालेंगे तौ भी मैं अपने शरीर में से ईश्वर को ताकूंगा। उस को मैं आप ही ताकूंगा और मेरी आंखें देखेंगी और दूसरा नहीं। इयोब्। १६। २५। २६। २७।

हम इस संसार में कुछ लाये नहीं और प्रगट है कि हम कुछ ले जा भी नहीं सकते प्रभु ने दिया और प्रभु ने लिया प्रभु का नाम धन्य होवे १ तिम ६।७ इयोब् १।२१।

जब वे **एक्लेसिया** में पहुंचें तब इन स्तोत्रों में से एक अथवा दोनों पढ़े जावें।

स्तोत्र ३६।

मैं ने कहा मैं अपने मार्गों में चौकसी करूंगा न हो कि अपनी जीभ से पाप करूं।

मैं ढाठी लगा के अपने मुंह की रक्षा करूंगा जब लों दुष्ट मेरे साम्हने रहे॥

मैं गूंगा रहा और मौन गहा मैंने भलाई से भी अपना मुंह मूंद लिया। और मेरी पीड़ा बढ़ गई॥

मृतकों को मिट्टी देने की विधि

मेरा हृदय मेरे भीतर जल उठा जब मैं सोच रहा था तब आग भड़क उठी। और मैं अपनी जीभ से बोल उठा॥

हे प्रभु मेरा अन्त मुझे जता और मेरे दिनों का परिमाण कि कितना है। मैं जान जाऊं कि मैं कैसा अस्थिर हूं॥

देख तू ने मेरे दिनों को चौवा चौवा भर का किया है और मेरी आयुर्दा तेरे साम्हने मानो कुछ है ही नहीं। सब मनुष्य अपनी उत्तम से उत्तम दशा में भी केवल व्यर्थ ही हैं॥

मनुष्य निरे भ्रम की छाया में चलता फिरता है उन की घबराहट सब व्यर्थ है। वह ढेर करता पर नहीं जानता कि किस के भण्डार में जावेगा॥

और अब हे प्रभु मैं ने किस बात की बाट जोही है। मेरी आशा तेरी ही ओर है॥

मुझे मेरे सब अपराधों से छुड़ा। मुझे मूर्ख से दुर्नाम न करा॥

मैं गूंगा हो गया मैं ने मुंह न खोला। क्योंकि तू ही ने यह किया है॥

मुझ पर से अपना आघात दूर कर। मैं तेरे हाथ की मार से नष्ट हुआ॥

जब तू दपटों से मनुष्य को अधर्म्म के कारण ताड़ना देता है तब तू कीड़े की नाईं उस की मन भावनी वस्तु नाश करता है। सब मनुष्य निरे व्यर्थ ही हैं॥

हे प्रभु मेरी प्रार्थना सुन और मेरी दोहाई पर कान धर मेरे आंसुओं के शब्द से कान न मूंद। क्योंकि मैं तेरे संग यात्री और अपने सब पुरखाओं के समान परदेशी हूं॥

मुझे तनिक सांस लेने दे कि मेरा मुंह हरा हो जावे। उस से पहिले कि मैं जाता रहूं और फिर न रहूं॥

पिता की और पुत्र की। और पवित्रात्मा की महिमा होवे॥

जैसी आदि में थी और अब है। और सदा वरन युगानयुग रहेगी॥—आमेन्॥

मृतकों को मिट्टी देने की विधि

स्तोत्र ९० ।

हे प्रभु तू पीढ़ी से पीढ़ी लों । हमारा निवासस्थान रहा है ॥

उस से पहिले कि पहाड़ उत्पन्न भये और तू ने पृथिवी और जगत को रचा । अनादिकाल से अनन्तकाल लों तू ही परमेश्वर है ॥

तू मनुष्य को ऐसा फेर देता कि वह धूल होजाता है । और तू कहता है मनुष्यवंशियो फिर जाओ ॥

क्योंकि सहस्र बरस तेरी दृष्टि में कल के समान है जो बीत चुका है । और रात के एक पहर के सदृश ॥

तू उन को बहा ले जाता है वे नींद के समान हो जाते हैं बिहान को वे उस घास की नाईं हैं जो उगती है ॥

बिहान को वह फूलती और फूटती है । सांझ को वह काटी जाती और मुरझा जाती है ॥

क्योंकि हम तेरे कोप से नष्ट हुए । और तेरे ज्वलन से घबरा गये हैं ॥

तू ने हमारे अधर्म्मों को अपने सन्मुख । हमारे गुप्त पापों को अपने मुख के प्रकाश में धरा है ॥

क्योंकि हमारे सब दिन तेरे क्रोध से मिट गये । हम ने अपने बरसों को कहानी की नाईं समाप्त किया है ॥

हमारे बरसों के दिन जो हैं सो सत्तर बरस हैं और यदि पौरुष होवे तो अस्सी बरस पर उन की घमण्ड की बातें श्रम और दुःख ही है क्योंकि वे शीघ्र चली गईं और हम उड़ गये ॥

तेरे कोप की शक्ति को कौन समझता । और तेरा भय मानके कौन तेरे ज्वलन को सोचता है ॥

हम को ऐसी बुद्धि दे कि हम अपने दिनों को गिनें । तो हम ज्ञानवान हृदय प्राप्त करेंगे ॥

हे प्रभु लौट आ कब लों । और अपने दासों के विषय में पछता ॥

मृतकों को मिट्टी देने की विधि

हमें बिहान को अपनी दया से तृप्त कर । तो हम जीवन भर ऊंचे स्वर से गावेंगे और आनन्द करेंगे ॥

जितने दिन लों तू ने हमें दुःख दिया उन के अनुसार हमें आनन्दित कर । उन बरसों के अनुसार जिन में हम ने क्लेश भोगा है ॥

तेरा कर्म्म तेरे दासों पर प्रगट होवे । और तेरा गौरव उन के लड़कों पर ॥

और प्रभु हमारे ईश्वर की मनोहरता हम पर प्रगट होवे । और हमारे हाथों का काम हमारे लिये दृढ़ कर हमारे हाथों के काम को दृढ़ कर ॥

पिता की और पुत्र की । और पवित्रात्मा की महिमा होवे ॥

जैसी आदि में थी और अब है । और सदा वरन युगानयुग रहेगी ॥—आमेन् ॥

तब यह पाठ पढ़ा जावे जो पवित्र पौल की पहली पत्री के जो उसने कोरिन्थियों को लिखी १५ वें अध्याय में से लिया गया ।

पर खीष्ट तो मृतकों में से जी उठा है और उन में से जो सो गये हैं पहिला फल भया । क्योंकि जब कि मनुष्य के द्वारा मृत्यु है तो मनुष्य ही के द्वारा मृतकों का पुनरुत्थान भी है क्योंकि जैसे आदाम में सब मरते हैं तैसे ही खीष्ट में सब जिलाये जाएंगे । परन्तु प्रत्येक अपनी अपनी बारी में पहला फल खीष्ट उस के पीछे जो खीष्ट के हैं सो उस के आगमन पर । पीछे अन्त होगा जब वह राज्य को ईश्वर पिता के हाथ में सौम्प देवेगा जब वह सारी प्रभुता और सारा अधिकार और सामर्थ्य नाश कर चुकेगा क्योंकि जब लों वह सब शत्रुओं को उसके पांव तले न करे तब लों उसे राज्य करना अवश्य है । जो पिछला शत्रु नाश किया जावेगा सो मृत्यु है । क्योंकि उसने सब कुछ उस के पांव तले कर

दिया और जब वह कहता है कि सब कुछ वश में कर दिया गया तो प्रगट है कि जिसने सब कुछ उसके वश में कर दिया सो ही रह गया और जब सब कुछ उसके वश में कर दिया जावेगा तब पुत्र आप भी उस के वश में जिसने सब कुछ उसके वश में कर दिया कर दिया जावेगा जिस्तें ईश्वर सब में सब कुछ होवे नहीं तो जो मृतकों के लिये बप्तिस्मा पाते हैं सो क्या करेंगे यदि मृतक उठते ही नहीं तो वे उनके लिये क्यों बप्तिस्मा पाते हैं। और फिर हम क्यों घड़ी घड़ी जोखिम में पड़ते हैं। हे भाइयों उस बड़ाई की सोंह जो मैं अपने प्रभु येशू खीष्ट में तुम्हारे विषय में करता हूं मैं प्रति दिन मरता हूं। यदि मैं मनुष्यों की रीति एफेस में बनपशुओं से लड़ा तो मुझे क्या लाभ भया। यदि मृतक नहीं उठते तो हम खावें पीवें कि कल मरेंगे। धोखा न खाओ कुसंगति सुस्वभाव को बिगाड़ती है। धर्म्म की रीति से सावधान होओ और पाप मत करो कि कितनों में ईश्वर का ज्ञान नहीं मैं तुम को लजाने के लिये यह कहता हूं। परन्तु कदाचित् कोई कहे कि मृतक किस रीति से उठते और किस प्रकार की देह से आते हैं। रे मूर्ख तू आप जो कुछ बोता है यदि वह न मरे तो जिलाया नहीं जाता। और जो तू बोता है सो वह देह नहीं बोता जो होवेगा पर निरा दाना चाहे गेहूं का वा और किसी का होवे। पर ईश्वर अपनी इच्छा के समान उस को एक देह देता है और प्रत्येक बीज को उस का निज देह। सब शरीर एक ही शरीर नहीं पर मनुष्यों का शरीर और पशुओं का शरीर और पंछियों का शरीर और मछलियों का शरीर और होता है। और स्वर्गीय देह भी हैं और पार्थिव देह भी हैं पर स्वर्गीयों की महिमा भिन्न और पार्थिवों की महिमा भिन्न है। सूर्य की महिमा भिन्न चन्द्रमा की महिमा भिन्न और तारों की महिमा भिन्न है क्योंकि एक तारा दूसरे तारे से महिमा में भिन्न है। मृतकों का पुनरुत्थान भी वैसाही

है वह विकार में बोया जाता है अविकार में उठता है। वह अनादर में बोया जाता है आदर में उठता है निर्बलता में बोया जाता है सबलता में उठता है। वह जीव सम्बन्धी देह बोई जाती है आत्मा सम्बन्धी देह उठती है यदि जीव सम्बन्धी देह है तो आत्मा सम्बन्धी देह भी है। ऐसा लिखा भी है कि पहला मनुष्य आदाम् जीता जीव बना पिछला आदाम् जिलानेवाला आत्मा बना। परन्तु आत्मा सम्बन्धी पहला नहीं पर जीव सम्बन्धी पहला है और उसके पीछे आत्मा सम्बन्धी है। पहिला मनुष्य पृथिवी से मिट्टी का दूसरा स्वर्ग से है। जैसा मिट्टी का है तैसे वे भी जो मिट्टी के हैं और जैसा स्वर्गीय है तैसे वे भी जो स्वर्गीय हैं। और जैसे हम ने मिट्टी वाले का स्वरूप धारण किया तैसे ही हम स्वर्गीय का स्वरूप भी धारण करेंगे। और हे भाइयो मैं यह कहता हूं कि मांस और लहू ईश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते और न विकार अविकार का अधिकारी हो सकता है देखो मैं तुम्हें एक रहस्य बताता हूं कि हम सब नहीं सो जावेंगे परन्तु हम सब बदले जावेंगे क्षण भर में पलक में पिछली तुरही के समय क्योंकि तुरही फूंकी जावेगी और मृतक अविकारी होके उठेंगे और हम बदले जावेंगे। क्योंकि अवश्य है कि यह विकारी अविकार को पहिन लेवे और यह मरनेहारा अमरता को पहिन लेवे। और जब यह विकारी अविकार को और यह मरनेहारा अमरता को पहिन चुकेगा तब वह लिखा हुआ वचन पूरा होवेगा कि जय मृत्यु को निगल गया। रे मृत्यु तेरा जय कहां रे मृत्यु तेरा डंक कहां। मृत्यु का डंक तो पाप है और पाप का बल व्यवस्था है। पर ईश्वर का धन्यवाद होवे जो हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा हम को जय देता है। सो हे मेरे प्रिय भाइयो स्थिर और अटल होओ और सदा प्रभु के कार्य्य में बढ़ते रहो क्योंकि जानते हो कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है।

मृतकों को मिट्टी देने की बिधि

जब वे समाधि के पास पहुंचें तो जब लों लोग लोथ को भूमि के भीतर रखने के लिये सिद्ध करते रहें तब प्रीष्ट यह कहे अथवा प्रीष्ट और गायक मिल के यह गावें ।

मनुष्य जो स्त्री से उत्पन्न होता है थोड़े ही दिन लों जीता और दुःख में फंसा रहता है। वह फूल की नाईं निकलता है फिर काटा जाता है वह छाया की नाईं भागा जाता है और एकी दशा में स्थिर नहीं रहता।

हम जीते ही मृत्यु में पड़े हैं हे प्रभु तू जो हमारे पापों के कारण यथार्थ रीति से कुपित है तुझे छोड़ हम किस की सहायता ढूढ़ें।

तौ भी हे अति पवित्र प्रभु परमेश्वर हे अति शक्तिमान प्रभु हे पवित्र और अत्यन्त दयालु त्राता हम को अनन्त मृत्यु की तीक्ष्ण पीड़ा में न डाल।

हे प्रभु तू हमारे हृदय की गुप्तबातों को जानता है अपनी दया के कान हमारी प्रार्थना से न मूंद पर हे अति पवित्र प्रभु हे अति शक्तिमान ईश्वर हे पवित्र और दयालु त्राता हे अति योग्य सनातन न्यायी हम को छोड़ और हमारे अन्तकाल में हम को मृत्यु की किसी वेदना के कारण अपने से पतित न होने दे।

फिर जब उपस्थित लोगों में से कितने लोथ पर मिट्टी डालते रहें तब प्रीष्ट कहे।

जब कि सर्वशक्तिमान् ईश्वर की इच्छा भई कि हमारा यह भाई जो मर गया है उस के आत्मा को अपनी बड़ी दया से अपने पास बुला लेवे इस लिये हम उसकी लोथ भूमि को सौम्पते हैं मिट्टी को मिट्टी राख को राख धूल को धूल इस बात की पूरी और निश्चित आशा से कि हमारे प्रभु यिशू खीष्ट के द्वारा अनन्त जीवन के लिये

पुनरुत्थान होवेगा वह हमारी अधम देह के रूप को बदलके उस को अपनी महिमा की देह के समान बना देगा उस शक्ति के अनुसार जिस से वह सब कुछ अपने बश में कर सकता है ॥

तब यह कहा वा गाया जावे।

मैं ने स्वर्ग से एक शब्द सुना जो मुझे कहता था कि लिख जो प्रभु में मरते हैं सो अब से धन्य हैं। आत्मा कहता है कि हां जिस्तें वे अपने परिश्रमों से विश्राम पावें।

तब प्रीट कहे:

हे प्रभु हम पर दया कर ॥
हे ख्रीष्ट हम पर दया कर ॥
हे प्रभु हम पर दया कर ॥

हे हमारे पिता। तू जो स्वर्ग में है। तेरा नाम पवित्र किया जावे। तेरा राज्य आवे। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है पृथ्वी पर भी होवे। हमारी प्रतिदिन की रोटी आज हमें दे। और हमारे अपराधों को क्षमा कर। जैसे हम ने भी अपने अपराधियों को क्षमा किया है। और हमें परीक्षा में न ला। परन्तु बुराई से बचा। आमेन् ॥

प्रीष्ट

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर जो प्रभु में होके यहां से कूच करते हैं उन के आत्मा तेरे पास जीते रहते हैं और विश्वासियों के आत्मा शरीर के बोझ से छूटके तेरे पास आनन्द मंगल में रहते हैं हम अन्तःकरण से तेरा धन्यवाद करते हैं कि तेरी इच्छा भई कि हमारे इस भाई को इस पापमय संसार के दुःखों से छुड़ावे और यह वि-

नती करते हैं कि तू कृपा करके अपने अनुग्रह से अपने चुने हुओं की गिनती पूरी कर और अपने राज्य को शीघ्र ले आ कि हम उन समेत जो तेरे पवित्र नाम के सत्य विश्वास में सिधार गये हैं तेरे सनातन राज्य में शरीर और आत्मा की पूर्ण सम्पन्नता और मंगल पावें। हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन् ॥

प्रार्थना

हे दयालु ईश्वर हमारे प्रभु येशू खीष्ट के पिता पुनरुत्थान और जीवन वही है उस पर जो कोई विश्वास करता है यद्यपि मरे तो भी जीएगा और जो कोई जीता और उसपर विश्वास रखता है सो सदा की मृत्यु में न पड़ेगा और उस ने अपने धन्य प्रेरित पवित्र पौल के द्वारा हम को सिखाया है कि हम उन की नाईं जिन को आशा नहीं उन के लिये जो उस में सो गए हैं शोक न करें हे पिता हम नम्रता से विनती करते हैं कि तू हम को पाप की मृत्यु से धर्म्म के जीवन के लिये उठा जिस्तें जब हम इस लोक से कूच करें तब हम उस में विश्राम करें जैसा हमारी आशा है कि हमारा वह भाई करता होगा और अन्त्य दिन जब सब का पुनरुत्थान होवेगा तब हम तेरी दृष्टि में ग्राह्य ठहरें और उस आशीर्वाद को पावें जो तेरा अति प्रिय पुत्र उस समय उन सब से जो तुझ से प्रेम और भय रखते हैं यह कहके देगा कि हे मेरे पिता के धन्य लड़को आओ जो राज्य जगत के आदि से तुम्हारे लिये सिद्ध किया गया उस को प्राप्त करो। हे दयालु पिता हम विनती करते हैं हमारे मध्यस्थ और छुड़ानेहारे येशू खीष्ट के द्वारा। यह वर दे। आमेन् ॥

हमारे प्रभु येशू खीष्ट का अनुग्रह और ईश्वर का प्रेम और पवित्रात्मा की सहभागिता हम सब के संग सर्वदा रहे। आमेन् ॥

बालक जनने के उपरान्त स्त्रियों का धन्यवाद

जनने के उपरान्त रीत्यनुसारी समय में स्त्री एक्लीसिया में सुथरा वस्त्र पहिने हुए आके किसी योग्य स्थान में रीति के अनुसार अथवा जहां बिशप आज्ञा दे घुटने टेके। तब प्रीष्ट उस से कहे।

जब कि सर्वशक्तिमान् ईश्वर की इच्छा भई कि उस की कृपा से तुम कुशल से जनीं और उस ने तुम को जनने के बड़े जोखिम में बचाया है इस लिये अन्तःकरण से ईश्वर का धन्यवाद यह कहके करो॥

तब प्रीष्ट ११६ वें स्तोत्र को कहे।

स्तोत्र ११६॥

मुझ को प्रेम उपजा है। क्योंकि प्रभु ने मेरी वाणी और विनतियों को सुना है॥

क्योंकि उसने अपना कान मेरी ओर झुकाया है। और मैं जन्म भर पुकारा करूंगा॥

मृत्यु की रस्सियों ने मुझ को घेरा और मैं पाताल की सकेती में फंसा मैं ने कष्ट और क्लेश भोगा॥

तब मैं ने प्रभु का नाम लेके पुकारा
"हे प्रभु कृपा करके मेरे प्राण को बचा ले"

प्रभु करुणामय और धर्म्मी है। और हमारा ईश्वर छोह करता है॥

प्रभु भोलों की रक्षा करता है। मैं दुर्बल हो गया था और उस ने मुझे बचाया॥

हे मेरे जीव अपने बिश्राम में फिर आ। क्योंकि प्रभु ने तेरा उपकार किया है॥

बालक जनने के उपरान्त स्त्रियों का धन्यवाद

क्योंकि तू ने मेरे जीव को मृत्यु से मेरी आंख को आंसू बहाने से। और मेरे पांव को फिसलने से बचाया है॥

मैं प्रभु के आगे जीवतों के देशों में। चलता फिरता रहूंगा॥

मैं ने जो ऐसा कहा विश्वास करके कहा। पर मैं तो बहुत दुःखित हुआ था॥

वरन मैं ने अपनी उतावली में कहा था। कि सब मनुष्य झूठे हैं॥

प्रभु ने मेरे जितने उपकार किये हैं। उन का मैं उस को क्या प्रतिफल देऊं॥

मैं त्राण का कटोरा उठाऊंगा। और प्रभु का नाम लेके पुकारूंगा॥

मैं अपनी मनौतियां प्रभु के लिये पूरी करूंगा। सो प्रगट में उस के सब लोगों के साम्हने होवे॥

प्रभु के भक्तों की मृत्यु। उस की दृष्टि में बहुमूल्य है॥

हे प्रभु निश्चय मैं तेरा दास हूं मैं तेरा दास वरन तेरी दासी का बेटा हूं। तू ने मेरे बन्धन खोले हैं॥

मैं तुझे धन्यवाद का बलिदान चढ़ाऊंगा। और प्रभु का नाम लेके पुकारूंगा॥

मैं अपनी मनौतियां प्रभु के लिये पूरी करूंगा। सो प्रगट में उस के सब लोगों के साम्हने होवे॥

प्रभु के घर के आंगनों में। तेरे मध्य में हे यरूशलेम् हल्लूयाह्॥

पिता की और पुत्र की। और पवित्रात्मा की महिमा होवे॥

जैसी आदि में थी और अब है। और सदा वरन युगानयुग रहेगी॥—आमेन्॥

अथवा

स्तोत्र १२७

यदि प्रभु घर को न बनावे तो उसके बनानेहारों ने उस में जो

परिश्रम किया है सो व्यर्थ है। यदि प्रभु नगर को रखवाली न करे तो रखवाले का जागना व्यर्थ है॥

तुम जो सबेरे उठते और अबेर करके विश्राम करते और कष्ट की रोटी खाते हो तुम्हारे लिये यह सब व्यर्थ है। यूंही वह अपने प्रिय को नींद देता है॥

देखो लड़के प्रभु के दिये हुए भाग हैं। गर्भ का फल उसकी ओर से प्रतिफल है॥

जैसे बीर के हाथ में बाण। तैसे ही तरुणाई के लड़के होते हैं॥ धन्य वह पुरुष जिसने अपने तूण को उन से भरा है। वे लजावेंगे नहीं पर शत्रुओं के साथ फाटक पर बोलेंगे॥

पिता की और पुत्र की। और पवित्रात्मा की महिमा होवे॥

जैसी आदि में थी और अब है। और सदा वरन युगानयुग रहेगी॥—आमेन्॥

तब प्रीष्ट कहे।

प्रार्थना करें

हे प्रभु हम पर दया कर॥
हे खीष्ट हम पर दया कर॥
हे प्रभु हम पर दया कर॥

हे हमारे पिता। तू जो स्वर्ग में है। तेरा नाम पवित्र किया जावे। तेरा राज्य आवे। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है पृथ्वी पर भी होवे। हमारी प्रतिदिन की रोटी आज हमें दे। और हमारे अपराधों को क्षमा कर। जैसे हमने भी अपने अपराधियों को क्षमा किया है। और हमें परीक्षा में न ला। परन्तु बुराई से बचा। क्योंकि राज्य और सामर्थ्य और महिमा युगानयुग तेरीही है॥ आमेन्॥

बालक जनने के उपरान्त स्त्रियों का धन्यवाद

सेवक । हे प्रभु अपनी दासी इस स्त्री को बचा ॥

उत्तर । जो तुझ पर भरोसा रखती है ॥

सेवक । उसके लिये एक दृढ़ गढ़ हो ॥

उत्तर । उसके शत्रु के साम्हने ॥

सेवक । हे प्रभु हमारी प्रार्थना सुन ॥

उत्तर । और हमारी दोहाई आप लों पहुंचने दे ॥

सेवक । प्रार्थना करें ॥

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर हम नम्रता से तेरा धन्यवाद करते हैं कि तू ने कृपा करके अपनी दासी इस स्त्री को जनने की बड़ी पीड़ा और जोखिम में बचाया है हे अत्यन्त दयालु पिता हम तुझ से विनती करते हैं यह वर दे कि वह तेरी सहायता से इस वर्त्तमान जीवन में तेरी इच्छा के अनुसार विश्वस्तता से चले और आनेवाले जीवन में अनन्त महिमा की भागी भी होवे हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

जो स्त्री धन्यवाद करने को आती है उस को रीत्यनुसार कुछ अर्पण करना चाहिये और यदि सहभागिता होवे तो योग्य है कि वह पवित्र सहभागिता भी लेवे ।

—:o:—

तर्जन विधान

अर्थात् पापियों पर ईश्वर के कोप और दण्ड का प्रचार

जो कै एक प्रार्थनाओं समेत क्षुद्रागेसिमा के पहले दिन और और समयों में जैसा बिशप ठहरावे काम में ले आना चाहिये।

प्रातःकाल की प्रार्थना के अनन्तर जब लितनिया रीति के अनुसार समाप्त भई तब प्रीष्ट प्रार्थना के पढ़ने के स्थान अथवा उपदेश स्थान में कहे।

हे भाइयो आदि समय की एक्लीसिया में एक उत्तम नियम था कि क्षुद्रागेसिमा के आदि में जितने जन प्रगट पाप के दोषी ठहरते थे उन से प्रगट में पश्चात्ताप कराया जाता था और उन को इस लोक में दण्ड दिया जाता था जिस्तें उन के आत्मा प्रभु के दिन त्राण पावें और दूसरे लोग भी उनके उदाहरण से शिक्षा पाके पाप करने से डर जावें। इस की सन्ती जब लों वह नियम फिर स्थापित न होवे (और इस का होना बहुत अच्छा होता।) यह उत्तम जान पड़ता है कि इस समय ईश्वर के वे साधारण स्राप जो पश्चात्ताप न करने हारे पापियों पर हुये हैं और जो द्वितीय व्यवस्था के २७ वें अध्याय में से और शास्त्र के और और स्थलों से लिये गये हैं तुम सब के साम्हने पढ़े जावें और तुम प्रत्येक स्राप के उत्तर में आमिन् कहो। जिस्तें तुम यह शिक्षा पाके कि ईश्वर का पापियों पर कैसा बड़ा कोप होता है अन्तःकरण से सच्चा पश्चात्ताप करने के लिये उभारे जाओ और इन जोखिम के दिनों में सावधानता से चलो और जिन पापों के विषय में तुम अपने मुंह से कहते हो कि ईश्वर का कोप उन पर पड़ना उचित है उन से भाग जाओ॥

जो कोई गढ़ी वा ढली हुई मूर्ति को पूजने के लिये बनाता है सो स्रापित है॥

और मण्डली के लोग उत्तर दें और कहें। आमेन॥

तर्जन विधान

सेवक । जो अपने पिता वा माता को तुच्छ जानता है सो स्रापित है ॥

उत्तर । आमेन् ॥

सेवक । जो अपने पड़ोसी के सिवाने को हटाता है सो स्रापित है ॥

उत्तर । आमेन् ॥

सेवक । जो अन्धे को बाट से भटकाता है सो स्रापित है ॥

उत्तर । आमेन् ॥

सेवक । जो परदेशी पितृहीन और बिधवा के न्याय को उलट देता है सो स्रापित है ॥

उत्तर । आमेन् ॥

सेवक । जो अपने पड़ोसी को छिपके मारता है सो स्रापित है ॥

उत्तर । आमेन् ॥

सेवक । जो अपने पड़ोसी की स्त्री के साथ व्यभिचार करता है सो स्रापित है ॥

उत्तर । आमेन् ॥

सेवक । जो निर्दोष को घात करने के लिये अकोर लेता है सो स्रापित है ॥

उत्तर । आमेन् ॥

सेवक । जो मनुष्य पर भरोसा रखता और मनुष्य को अपना सहारा करता है और अपने मन में प्रभु से फिरजाता है सोभी स्रापित है ॥

उत्तर । आमेन् ॥

सेवक । जो निर्दय वेश्यागामी व्यभिचारी लोभी मूर्त्तिपूजक अपवादी पियक्कर और अत्याचारी हैं सो स्रापित हैं ॥

उत्तर । आमेन् ॥

तर्जन विधान

सेवक

सो जब कि दाऊद् प्रवक्ता की साक्षी के अनुसार जितने ईश्वर की आज्ञाओं से हटते और भटक जाते हैं सब स्रापित हैं इस लिये हम उस भयानक दण्ड को जो हमारे सिरों पर झूम रहा और हम पर गिरने के लिये सदा लैस रहता है स्मरण करके अपने प्रभु परमेश्वर के पास अति चूर्ण और नम्र मन से फिर आवें और अपने सब पापों पर विलाप करें और अपने अपराधों का अंगीकार करें और पश्चात्ताप के योग्य फल फलने का यत्न करें। क्योंकि अभी कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर पड़ा है ऐसा कि जो पेड़ अच्छा फल नहीं फलता सो काटा जाता और आग में डाला जाता है। जीवते ईश्वर के हाथ में पड़ना भयानक है वह पापियों पर फन्दे आग और गन्धक बरसावेगा और आन्धी और तुफान चलावेगा यह उन के पीने का भाग होवेगा। क्योंकि देखो प्रभु पृथ्वी के रहनेहारों की दुष्टता का दण्ड देने को अपने स्थान से निकल आया है। पर उसके आने के दिन कौन खड़ा रह सकेगा। जब वह प्रगट होवेगा तब कौन ठहर सकेगा। उसका सूप उसके हाथ में है और वह अपने खलिहान को ओसावेगा और अपना गोहूं खत्ते में बटोरेगा पर भूसे को अबूझ आग में जलावेगा। प्रभु का दिन ऐसा आता है जैसा रात को चोर और जब लोग कहते रहेंगे कि शान्ति है और सब कुछ कुशल से है तब नाश उन पर अचानक ऐसा आ पड़ेगा जैसा गर्भवती स्त्री पर पीरें आती हैं और वे न बचेंगे। तब पलटा लेने के दिन में ईश्वर का वह कोप प्रगट होगा जो हठीले पापियों ने अपने मन की कठोरता से अपने लिये बटोर रक्खा है कि उन्होंने ईश्वर की भलाई धीरज और सहनशीलता को जब वह उन को पश्चात्ताप करने के लिये निरन्तर बुलाता था तुच्छ जाना। प्रभु कहता है कि तब वे मुझ को पुकारेंगे पर मैं न सुनूंगा वे मुझ को सवेरे ढूंढेंगे पर न पावेंगे और यह इस लिये

होगा कि उन्हों ने ज्ञान से बैर रक्खा और प्रभु के भय को ग्रहण न किया पर मेरे परामर्श से घिन्न किई और मेरे शासन को तुच्छ जाना। उस काल जब द्वार मून्दा गया तब खटखटाने का समय जाता रहा और जब न्याय की घड़ी आई तब दया के लिये पुकारने का समय जाता रहा। आह अति यथार्थ न्याय का क्या ही भयानक शब्द जो उस समय उन को सुनाया जावेगा जब उन से यह कहा जावेगा कि रे स्रापितो उस अनन्त आग में जाओ जो दुष्टात्मा और उसके दूतों के लिये सिद्ध किई गई। इस लिये हे भाइयो हम आगे से जब लों त्राण का दिन रहता है सावधान होवें क्योंकि रात आती है जब कोई कुछ काम नहीं कर सकता। पर हम जब लों प्रकाश हमारे पास रहे तब लों प्रकाश पर विश्वास करें और प्रकाश के लड़कों की नाईं चलें न हो कि हम बाहर के अन्धकार में जहां रोना और दांत पीसना होता है डाले जावें। हम ईश्वर की भलाई को व्यर्थ न होने देवें कि वह दया से हमें सुधरने के लिये बुलाता और अपनी अनन्त करुणा से यह प्रतिज्ञा करता है कि यदि तुम पूर्ण और सत्य मन से मेरे पास फिर आओ तो जो कुछ तुम से भया है उस को मैं क्षमा करूंगा। कि यद्यपि हमारे पाप किर्मिजी रंग की नाईं लाल होवें तौ भी वे हिम की नाईं श्वेत किये जावेंगे और यद्यपि वे बैंजनी रंग के सरीखे होवें तथापि वे ऊन के तुल्य श्वेत हो जावेंगे। प्रभु कहता है कि अपनी सारी दुष्टता से फिरो तो तुम्हारा पाप तुम्हारे नाश का कारण न होवेगा तुम ने जो कुछ अधर्म्म किया है उस को दूर फेंको अपने लिये नये हृदय और नया आत्मा बनाओ। हे यिस्राएल् के घराने जब मैं मरनेहारे की मृत्यु से प्रसन्न नहीं होता तो प्रभु परमेश्वर कहता है कि तुम काहे को मरोगे। सो तुम फिरो तो जीओगे। यद्यपि हम ने पाप किया तौ भी पिता के पास हमारा एक पक्षवादी है अर्थात् येशू खीष्ट जो धर्म्मी है और वह हमारे पापों

का प्रायश्चित है। क्योंकि वह हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया और हमारी दुष्टता के हेतु उस पर मार पड़ी। सो हम उस के पास फिर जावें कि वह सब सच्चा पश्चात्ताप करनेहारे पापियों को दया से ग्रहण करता है और हम निश्चय जानें कि वह हम को ग्रहण करने को सिद्ध है और बहुत ही चाहता है कि हम को क्षमा करे। केवल हम लोग विश्वासयुक्त पश्चात्ताप के साथ उस के पास आवें और उसके अधीन होके आगे को उसके मार्गों पर चलें और उस के सहज जूए और हलके बोझ को अपने ऊपर ले लेवें अर्थात् नम्रता धीरज और प्रेम से उसके अनुगामी होवें और उसके पवित्रात्मा की आज्ञा से चलें और सदा उस की महिमा के लिये यत्न करें और अपने अपने उद्यम में धन्यवाद के साथ उस की सेवा उचित रीति से करें। यदि हम ऐसा करें तो खीष्ट हम को व्यवस्था के स्राप से और उस अत्यन्त भारी शापवचन से बचावेगा जो उन पर दिई जावेगी जो बाईं ओर खड़े किये जावेंगे और वह अनुग्रह करके हम को अपनी दहिनी ओर खड़ा करके अपने पिता का आशीर्वाद देवेगा और हम को आज्ञा देवेगा कि मेरे महिमायुक्त राज्य के अधिकारी हो जाओ। इस में वह कृपा करके अपनी अनन्त दया से हम सभों को पहुचावें। आमेन्॥

तब सब घुटने टेकें और प्रीष्ट और गायक उस स्थान में जहां लितनिया कहने की रीति है घुटने टेके हुए यह स्तोत्र कहें।

स्तोत्र ५१।

हे ईश्वर अपनी दया के अनुसार मुझ पर करुणा कर। अपने छोह की अधिकाई के अनुसार मेरे अपराधों को मेट दे॥

मेरे अधर्म्म से मुझ को भली भांति धो। और मेरे पाप से मुझे शुद्ध कर

क्योंकि मैं अपने अपराधों को जानता हूं। और मेरा पाप निरन्तर मेरे साम्हने है॥

मैं ने तेरा केवल तेरा ही पाप किया और जो तेरी दृष्टि में बुरा है सो ही किया। जिस्तें तू बोलने में धर्म्मी और न्याय करने में खरा ठहरे॥

देख अधर्म्म में मेरा पिण्ड बना। और पाप के साथ मेरी मा ने मुझे गर्भ में लिया॥

देख तू अन्तर की सच्चाई से प्रसन्न होता है। और मुझे भीतर में ज्ञान सिखावेगा॥

हाय कि तू मुझे एजोब् से पावन करता तो मैं शुद्ध हो जाता। हाय कि तू मुझे धोता तो मैं हिम से अधिक श्वेत होता॥

हाय कि तू मुझे आनन्द और आह्लाद का शब्द सुनाता। तो जो हड्डियां तू ने पीस डालीं सो हर्षित होतीं॥

मेरे पापों से अपना मुंह छिपा। और मेरे सब अधर्म्म को मिटा दे॥

हे ईश्वर मेरे लिये एक शुद्ध हृदय सिरज। और भीतर मेरे आत्मा को नवीन और स्थिर बना॥

मुझ को अपने साम्हने से हांक न दे। और अपना पवित्र आत्मा मुझ से ले न ले॥

अपने त्राण का आह्लाद मुझे फेर दे। और निर्बन्ध आत्मा देके मुझे सम्भाल॥

तो मैं अपराधियों को तेरे मार्ग सिखाऊंगा। और पापी तेरी ओर फिरेंगे॥

हे ईश्वर मेरे त्राण के ईश्वर मुझे रक्तपात के पाप से छुड़ा। तो मेरी जीभ ऊंचे स्वर से तेरे धर्म्म की स्तुति गावेगी॥

हाय कि तू हे प्रभु मेरे होंठों को खोलता। तो मेरा मुंह तेरा गुणानुवाद करता॥

क्योंकि तू बलिदान से प्रसन्न नहीं होता नहीं तो मैं देता। सर्व-होम की तू इच्छा नहीं करता॥

ईश्वर के बलिदान चूर्ण आत्मा हैं। हे ईश्वर तू चूर्ण और कुचले हृदय को तुच्छ न समझेगा॥

अपनी प्रसन्नता से सिय्योन् की भलाई कर। यरूशलेम् की भीतों को बना॥

तब तू धर्म्म के बलिदानों से सर्वहोम और सम्पूर्ण होमों से प्रसन्न होवेगा। तब लोग तेरी वेदी पर बैल चढ़ावेंगे॥

पिता की और पुत्र की और पवित्रात्मा की महिमा होवे;

जैसी आदि में थी और अब है। और सदा वरन युगानयुग रहेगी। आमेन्॥

हे प्रभु हम पर दया कर॥
हे ख्रीष्ट हम पर दया कर॥
हे प्रभु हम पर दया कर॥

हे हमारे पिता। तू जो स्वर्ग में है। तेरा नाम पवित्र किया जावे। तेरा राज्य आवे। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है पृथ्वी पर भी होवे। हमारी प्रतिदिन की रोटी आज हमें दे। और हमारे अपराधों को क्षमा कर। जैसे हम ने भी अपने अपराधियों को क्षमा किया है। और हमें परीक्षा में न ला। परन्तु बुराई से बचा। आमेन्॥

सेवक। हे प्रभु अपने दासों को बचा॥
उत्तर। जो तुझ पर भरोसा रखते हैं॥
सेवक। उनके लिये ऊपर से सहायता भेज॥
उत्तर। और सर्वदा अपने सामर्थ्य से उन की रक्षा कर॥
सेवक। हे ईश्वर हमारे त्राता हमारी सहायता कर॥

उत्तर । और अपने नाम की महिमा के लिये हम को छुड़ा। हम पापियों पर दया कर अपने नाम के निमित्त ॥

सेवक । हे प्रभु हमारी प्रार्थना को सुन ॥

उत्तर । और हमारी दोहाई आप लों पहुंचने दे ॥

सेवक । प्रार्थना करें ॥

हे प्रभु हम विनती करते हैं कि तू दया से हमारी प्रार्थनाओं को सुन और जितने तेरे साम्हने अपने पापों का अंगीकार करते हैं उन सब को छोड़ दे कि जिन का अन्तर्विवेक पाप के कारण से उन को दोषी ठहराता है सो तेरी दयायुक्त क्षमा से छुड़ाये जावें हमारे प्रभु ख्रीष्ट के द्वारा । आमिन् ॥

हे अति शक्तिमान् ईश्वर और दयालु पिता तू सब मनुष्यों पर करुणा करता और अपनी किसी कृति से बैर नहीं रखता तू किसी पापी की मृत्यु नहीं चाहता पर यह कि वह अपने पाप से फिरे और त्राण पावे । दया से हमारे अपराधों को क्षमा कर । हमें जो अपने पापों के बोझ से दुःखित और थकित हैं ग्रहण कर और शान्ति दे। सदा दया करनी तेरा स्वभाव है पापों की क्षमा करनी तेरा ही काम है । इस लिये हे दयालु प्रभु हमें छोड दे अपने निज लोगों को जिन्हें तू ने छुड़ा लिया है छोड दे । अपने दासों के साथ जो अधम धूल और दुर्गत पापी हैं न्यायस्थान में न जा पर हम से जो अपनी अधमता को नम्रता से मानते और अपने कुकर्म्मों से सच्चा पश्चात्ताप करते हैं अपना कोप ऐसा फेर और इस लोक में हमारी सहायता के लिये ऐसी शीघ्रता कर कि हम परलोक में सदा तेरे संग जीते रहें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा । आमिन् ॥

तब मण्डली के लोग यह निम्नलिखित प्रार्थना सेवक के पीछे पीछे कहें ।

तर्जन विधान

हे दयालु प्रभु हम को फेर तो हम फिरेंगे। हे प्रभु प्रसन्न हो अपने निज लोगों से जो रोते उपवास करते और प्रार्थना करते हुए तेरी ओर फिरते हैं प्रसन्न हो। क्योंकि तू दयालु ईश्वर करुणानिधान क्रोध करने में धीमा और कृपासिन्धु है। जब हम दण्ड के योग्य होते हैं तब तू छोड़ देता है और कोप में भी दया को स्मरण करता है। हे दयालु प्रभु अपने निज लोगों को छोड़ दे उन को छोड़ दे और अपने भाग को लज्जित न होने दे। हे प्रभु हमारी सुन कि तेरी दया बड़ी है और अपनी दया की अधिकाई के अनुसार हम पर दृष्टि कर अपने धन्य पुत्र हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के पुण्य और मध्यस्थता के द्वारा। आमेन्॥

तब सेवक अकेला कहे।

प्रभु हम को आशीष् देवे और हमारी रक्षा करे प्रभु अपने मुख का प्रकाश हम पर पड़ने देवे और हम को शान्ति देवे अब और सदा को। आमेन्॥

स्तोत्रसंहिता।

पहिला दिन।

प्रातःकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र १।

१। धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों के परामर्श के अनुसार नहीं चला। और पापियों के मार्ग में खड़ा नहीं हुआ और ठट्ठा करनेहारों के बैठक में नहीं बैठा॥

२। पर वह प्रभु की व्यवस्था से प्रसन्न रहता। और उस की व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता है॥

३। और वह उस वृक्ष के समान होगा जो जल की नालियों के पास लगाया गया और अपना फल अपनी ऋतु में फलता हो और जिस का पत्ता मुर्झाता न हो। और जो कुछ वह करे उस में वह कृतार्थ होगा॥

४। दुष्ट ऐसे नहीं होते। परन्तु उस भूसी के समान हैं जिस को पवन उड़ा ले जाता है॥

५। इस लिये दुष्ट न्याय में खड़े नहीं रह सकेंगे। और न पापी धर्म्मियों के समाज में॥

६। क्योंकि प्रभु धर्म्मियों का मार्ग जानता है। पर दुष्टों का मार्ग बिलाय जावेगा॥

—:0:—

स्तोत्र २ ।

१ । जातिगण हुल्लड़ क्यों मचाते । और लोकगण क्यों व्यर्थ बात सोच रहे हैं ॥

२ । भूपति साम्हना करते और अधिपतियों ने आपस में परामर्श किया । प्रभु और उस के अभिषिक्त के विरुद्ध ॥

३ । "हम उनके बन्धनों को तोड़ डालें । और उन की रस्सियों को अपने पर से फेंक देवें" ॥

४ । जो स्वर्ग में विराजमान है सो हंसेगा । प्रभु उन को ठट्ठों में उड़ावेगा ॥

५ । तब वह अपने कोप में उन से बोलेगा । और अपने रोष से उन्हें घबरा देवेगा ॥

६ । "पर मैं तो अपने राजा को । अपने पवित्र पर्वत सिय्योन् पर नियुक्त कर चुका हूं" ॥

७ । मैं आज्ञा का वर्णन करूंगा कि प्रभु ने मुझे कहा । "तू मेरा पुत्र है आज मैं ही ने तुझे जन्माया है ॥

८ । मुझ से मांग तो मैं जातियों को तेरे भाग में देऊंगा । और पृथिवी के अन्तदेशों को तेरा अधिकार करूंगा ॥

९ । तू उन्हें लोहे के दण्ड से टुकड़े टुकड़े करेगा । तू मिट्टी के बर्त्तन की नाईं उन्हें चकनाचूर करेगा" ॥

१० । और अब हे राजाओ बुद्धि पकड़ो । हे पृथिवी के न्याइयो उपदेश सीखो ॥

११ । डरते हुए प्रभु की सेवा करो । और थर्थराते हुए आह्लाद करो ।

१२ । पुत्र को चूमो न हो कि वह कोप करे और तुम मार्ग ही में नष्ट होओ कि क्षण भर में उस का कोप भड़केगा । धन्य वे सब जो उस में शरण लेते हैं ॥

—:o:—

स्तोत्र ३।

१। हे प्रभु मेरे रिपु क्या ही बढ़ गये हैं। बहुत से लोग मुझ पर उठते हैं॥

२। बहुत से लोग मेरे जीव को कहते हैं। ईश्वर में उस के लिये त्राण नहीं॥

३। पर तू हे प्रभु मेरे लिये एक फरी है। मेरी महिमा और मेरे सिर का ऊंचा करनेहारा॥

४। मैं अपनी बाणी से प्रभु को पुकारता हूं। और वह अपने पवित्र पर्वत पर से मुझे उत्तर देता है॥

५। मैं तो लेट गया और सो रहा। मैं जाग उठा क्योंकि प्रभु मुझे सम्भालता है॥

६। मैं प्रजा में से दस सहस्रों से भी न डरूंगा। जो चारों ओर मेरा साम्हना कर रहे हैं॥

७। हे प्रभु उठ हे मेरे ईश्वर मुझे बचा। क्योंकि तू ने मेरे सब शत्रुओं के जभड़े पर मारा तू ने दुष्टों के दाढ़ों को तोड़ दिया॥

८। त्राण प्रभु ही से होता है। तेरी आशीष् तेरे निज लोगों पर होवे॥

—:o:—

स्तोत्र ४।

१। जब मैं पुकारूं तू मुझे उत्तर दे हे मेरे धर्म्म के ईश्वर। संकेती में तू ने मुझे चौड़े में बैठाया मुझ पर करुणा कर और मेरी प्रार्थना सुन॥

२। हे बीरों के पुत्रो कब लों तुम मेरी महिमा को अपनिन्दित करते रहोगे: कि तुम व्यर्थता से प्रीति रखते और झूठ को खोजते हो॥

३। पर यह जान रक्खो कि प्रभु ने भक्त को अपने लिये अलग कर रक्खा है। जब मैं प्रभु को पुकारूं तो वह सुनेगा॥

४। क्रोध तो करो पर पाप मत करो। अपने बिछौनों पर अपने अपने हृदय में अपने मन से बात करो और चुपके रहो॥

५ । धर्म्म के बलिदान चढ़ाओ । और प्रभु पर भरोसा रक्खो ॥

६ । बहुत से लोग कहते हैं कि कौन हम को सुख भुगावेगा । हे प्रभु अपने मुख की ज्योति हम पर उदय कर ॥

७ । तू ने मेरे मन में आनन्द उपजाया । उन के उस समय के आनन्द से भी अधिक जब उन का अनाज और नया दाखमधु बढ़ गया था ॥

८ । मैं शान्ति से लेटते ही सो जाऊंगा । क्योंकि केवल तू ही हे प्रभु मुझ को निडर बसने देता है ॥

—:०:—

स्तोत्र ५ ।

१ । हे प्रभु मेरी बातों पर कान धर मेरे ध्यान की ओर मन लगा ॥

२ । हे मेरे राजा और मेरे ईश्वर मेरी दोहाई की बाणी की ओर कान लगा । क्योंकि मैं तुझी से प्रार्थना करता हूं ॥

३ । हे प्रभु प्रातःकाल को मेरी बाणी तेरे कान में पड़ेगी प्रातःकाल ही को मैं तेरे लिये अपनी भेंट सिद्ध करके ताकता रहूंगा ॥

४ । क्योंकि तू ऐसा परमेश्वर नहीं जो दुष्टता से प्रसन्न होवे । बुराई तेरे संग बास न करेगी ॥

५ । घमण्डी तेरे साम्हने खड़े न रहेंगे । तू सब दुष्टकर्म्मियों से बैर रखता है ॥

६ । तू झूठ बोलनेहारों को नाश करेगा । प्रभु हत्यारे और छली पुरुष से घिन्न करेगा ॥

७ । पर मैं तो तेरी दया की बहुतायत से तेरे घर में आऊंगा । मैं तेरा भय मानके तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत करूंगा ॥

८ । हे प्रभु मेरे बैरियों के कारण से मुझे अपने धर्म्म में ले चल । अपने मार्ग को मेरे साम्हने समथर कर ॥

९ । क्योंकि उन के मुंह में सच्चाई नहीं उन का अन्तर निरी

खुलता है। उन का गला खुली हुई समाधि है वे अपनी जीभ से चिकनी बातें कहते हैं॥

१०। हे ईश्वर उन को दोषी ठहरा वे अपने यत्नों से आप गिर जावें। उन के बहुत से अपराधों के हेतु उन को धकिया दे क्योंकि वे तेरे विरुद्ध उठे हैं॥

११। और तेरे सब शरणागत आनन्द करें। वे सदा ऊंचे स्वर से गावें और तू उन की आड़ हो और तेरे नाम के प्रेमी तुझ में प्रमुदित होवें॥

१२। क्योंकि तू हे प्रभु धर्म्मी को आशीष् देगा। तू उसे अपनी प्रसन्नता से मानो ढाल से ढांपेगा॥

संध्याकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र ६।

१ हे प्रभु अपने कोप से मुझे न डांट। न अपने रोष से मेरी ताड़ना कर॥

२। हे प्रभु मुझ पर करुणा कर कि मैं कुम्हला गया। हे प्रभु मुझे चंगा कर कि मेरी हड्डियां व्याकुल हो गई हैं॥

३। वरन मेरा जीव अत्यन्त व्याकुल है। पर तू हे प्रभु कब लों॥

४। हे प्रभु लौट आ मेरे जीव को छुड़ा। अपनी दया के निमित्त मुझे बचा॥

५। क्योंकि मरे पर तेरा कुछ स्मरण नहीं होता। पाताल में कौन तेरा धन्यवाद करेगा॥

६। मैं कराहते कराहते थक गया। रात भर मैं अपना बिछौना भिगाता हूं मैं अपने पलंग को अपने आंसुओं से सींचता हूं॥

७। मेरी आंख शोक से धुंधला गई। मेरे सब बैरियों के हेतु पथरा गई है॥

८। रे सब दुष्टकर्म्मियो मुझ से दूर होओ। क्योंकि प्रभु ने मेरे आंसुओं की वाणी सुनी है॥

९। प्रभु ने मेरी बिन्ती सुनी है। प्रभु मेरी प्रार्थना ग्रहण करेगा॥

१०। मेरे सब शत्रु लज्जित और अति व्याकुल होवेंगे। वे लौट जावेंगे और अकस्मात् में लज्जित होवेंगे॥

—:o:—

स्तोत्र ७।

१। हे प्रभु मेरे ईश्वर मैं तेरा शरणागत हुआ। मुझे मेरे सब सतानेहारों से बचा और मुझे छुड़ा॥

२। न हो कि वह सिंह की नाईं मेरे जीव को फाड़े। मुझे चूर चूर करे और कोई छुड़ानेहारा न हो॥

३। हे प्रभु मेरे ईश्वर यदि मैं ने यह किया हो। यदि मेरे हाथों में कुटिलता होवे॥

४। यदि मैं ने उस से पलटा लिया हो जो मुझ से मेल रखता था। वरन मैं ने उस को जो अकारण मेरा बैरी था बचाया भी है॥

५। तो शत्रु मेरे जीव को रगेदके पकड़े। और मेरे प्राण को भूमि पर रौंदे और मेरी महिमा को धूल में मिलावे॥

६। हे प्रभु अपने कोप में उठ मेरे बैरियों के रोष के साम्हने आप को खड़ा कर। और मेरे लिये जाग कि तू ने न्याय की आज्ञा दिई है॥

७। और लोकगणों का समाज तुझे घेरेगा। और तू उन के ऊपर से उच्चस्थान को फिर जा॥

८। प्रभु लोकगणों का न्याय करेगा। हे प्रभु मेरे धर्म्म और मेरी खराई के अनुसार मेरा न्याय चुका॥

९। आह दुष्टों की बुराई समाप्त होवे और तू धर्म्मी को थांभ रख। क्योंकि धर्म्मी ईश्वर हृदय और अन्तःकरण का जांचनेहारा है॥

१० । मेरी फरी का आधार ईश्वर है । वह सीधे मनवालों को बचाता है ॥

११ । ईश्वर धर्म्मी न्यायी है। और परमेश्वर प्रतिदिन क्रुद्ध होता है॥

१२ । यदि मनुष्य न फिरे तो वह अपने खड्ग पर बाढ़ चढ़ावेगा । वह अपने धनुष को चढ़ा और सन्धान चुका है ॥

१३ । और उसी के लिये उस ने मृत्यु के हथियार सिद्ध किये हैं। वह अपने बाणों को अग्निबाण बनावेगा ॥

१४ । देख उस को अधर्म्म की पीरें लगीं । उसे उपद्रव का पेट रहा और वह झूठ को जनता है ॥

१५ । उस ने गड़हा खोदा और गहिरा किया । और जो कूआं उस ने खना उसी में वह आप गिरा ॥

१६ । उस का उपद्रव उसी के सिर पर पलटेगा । और उस का अत्याचार उसी की चांदी पर पड़ेगा ॥

१७ । मैं प्रभु के धर्म्म के अनुसार उस का धन्यवाद करूंगा और प्रभु परात्पर के नाम का स्तुतिगान करूंगा ॥

—:o:—

स्तोत्र ८ ।

१ । हे प्रभु हमारे स्वामी तेरा नाम सारी पृथिवी पर क्या ही प्रतापमय है । तू ने अपने विभव को स्वर्ग पर दिखाया है ॥

२ । बच्चों और दूधपीवकों के मुंह से तू ने सामर्थ्य की नेव डाली है । अपने रिपुओं के हेतु जिस्तें तू शत्रु और अपना पलटा लेनेहारे को रोक रक्खे ॥

३ । जब मैं तेरा स्वर्ग जो तेरी अंगुलियों का कार्य्य है देखता हूं । चन्द्रमा और तारागण को जो तू ने ठहराये ॥

४ । तो मनुष्य क्या है कि तू उस को स्मरण करता है । और मनुष्य का पुत्र कि तू उस की सुधि लेता है ॥

५। और उस को ईश्वर से थोड़ा ही न्यून किया। और महिमा और गौरव का मुकुट उस को पहिनाता है॥

६। तू उसे अपने हाथों की कृतियों पर प्रभुता देता है। तू ने सब कुछ उस के पांव तले कर दिया॥

७। भेड़ बकरी और गाय बैल सब के सब। और बनपशु भी॥

८। आकाश के पक्षी और समुद्र की मछलियां। वरन जो कुछ समुद्रों के पथों से चलता फिरता है॥

९। हे प्रभु हमारे स्वामी। तेरा नाम सारी पृथिवी पर क्या ही प्रतापमय है॥

दूसरा दिन

प्रातःकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र ९।

१। हे प्रभु मैं अपने सारे अन्तःकरण से धन्यवाद करूंगा। मैं तेरे सब आश्चर्य्यकर्म्मों को वर्णन करूंगा॥

२। मैं तुझ में आनन्दित और प्रमुदित होऊंगा। मैं तेरे नाम का स्तुतिगान करूंगा हे परात्पर॥

३। जब मेरे शत्रु उलटे फिरेंगे। तब वे तेरे साम्हने से ठोकर खाके नष्ट होवेंगे॥

४। क्योंकि तू ने मेरा न्याय और झगड़ा चुकाया है। तू धर्म्म से न्याय करता हुआ सिंहासन पर विराजमान है॥

५। तू ने अन्यजातियों को घुड़का तू ने दुष्ट को नाश किया। तू ने उन का नाम युगानयुग के लिये मिटा दिया है॥

६। शत्रु जो हैं सो बिलाय गये हैं वे सदा को उजड़े हैं। और जिन नगरों को तू ने ढा दिया उन का स्मरण मिट गया है॥

७। परन्तु प्रभु सदा के लिये विराजमान हुआ है। उस ने अपना सिंहासन न्याय के लिये सिद्ध किया है॥

८। और वह आप जगत का न्याय धर्म्म से करेगा। वह लोकगणों का झगड़ा सच्चाई से चुकावेगा॥

९। और हाय कि प्रभु पिसे हुए के लिये ऊंचा गढ़ होता। कष्ट के समयों के लिये ऊंचा गढ़॥

१० और जो तेरा नाम जानते हैं सो तुझ पर भरोसा रक्खें। क्योंकि तू ने हे प्रभु अपने खोजनेहारों को नहीं छोड़ दिया॥

११। प्रभु का जो सिय्योन में विराजता है स्तुतिगान करो। लोकगणों के बीच उस के महाकर्म्मों का वर्णन करो॥

१२। क्योंकि लहू के पलटा लेनेहारे ने उन को स्मरण किया है। वह दुःखियों की चिल्लाहट को भूला नहीं॥

१३। हे प्रभु मुझ पर करुणा कर इस दुःख को देख जो मेरे बैरी मुझ को देते हैं। तू जो मुझे मृत्यु के फाटकों पर से उठाता है॥

१४। जिस्तें मैं तेरे सब गुणों का सिय्योन की पुत्री के फाटकों पर वर्णन करूं जिस्तें मैं तेरे त्राण से आह्लादित होऊं॥

१५। अन्यजातिगण उसी कूएं में जो उन्हों ने खोदा डूब गये। जो जाल उन्हों ने छिपाया था उसी में उन का पांव फंस गया॥

१६। अब प्रभु विदित हुआ उस ने न्याय चुकाया है। वह दुष्ट को उसी के हाथ के कर्म्म में फंसाता है॥

१७। दुष्ट पाताल की ओर लौटाये जावेंगे। वरन जितनी जातियां ईश्वर को भूलती हैं॥

१८। क्योंकि दरिद्र सदा बिसराया न जावेगा। सौम्यस्वभावों की आशा सदा को नष्ट नहीं होगा॥

१९। हे प्रभु उठ मनुष्य प्रबल न होवे। जातियों का न्याय तेरे साम्हने होवे॥

२० । हे प्रभु उन को भय दिखा । जातिगण जान लेवें कि हम मनुष्य ही हैं ॥

—:o:—

स्तोत्र १० ।

१ । हे प्रभु तू क्यों दूर खड़ा रहता है । कष्ट के समयों में क्यों छिपा रहता है ॥

२ । दुष्ट के अहंकार के कारण से दुःखी जल रहा है । जो युक्तिया उन्हों ने किईं उन्हीं में वे फंसाये जावें ॥

३ । क्योंकि दुष्ट अपने जीव की अभिलाषा के विषय में घमण्ड करता है । और लोभी प्रभु को त्याग देता वरन तिरस्कार ही करता है ॥

४ । दुष्ट अपने अहंकार के कारण खोजता नहीं । उस के सब बिचारों का सार यही है कि ईश्वर है ही नहीं ॥

५ । उस की चाल सब काल दृढ़ रहती है तेरे न्याय ऊंचे हैं उस की दृष्टि से बाहर । जितने उस के रिपु हैं उन पर वह फुफकारता है ॥

६ । उस ने अपने मन में कहा मैं नहीं टलूंगा । पीढ़ी से पीढ़ी लों मैं दुःख से बचा रहूंगा ॥

७ । उस का मुंह स्राप से और छल और अत्याचार से भरा है । उस की जीभ के तले उपद्रव और अधर्म्म है ॥

८ । वह गांवों में घात लगाये हुए बैठता है ढूकों में वह निर्दोष को मार डालता है । उस की आंखें अनाथ को ताक रही हैं ॥

९ । जैसा सिंह अपनी झाड़ी में वैसा ही वह ढूके में घात लगाये रहता है । वह दुःखी को पकड़ने के लिये घात में बैठता है वह दुःखी को फंसाके अपने जाल में घसीट लेता है ॥

१० । और वह पिसके दब जाता है । और अनाथ लोग उस के बलवन्तों के हाथ से गिर जाते हैं ॥

११। उस ने अपने मन में कहा कि ईश्वर भूल गया। उस ने अपना मुंह छिपा लिया वह कभी न देखेगा॥

१२। हे प्रभु उठ हे परमेश्वर अपना हाथ उठा। दुःखियों को भूल न जा॥

१३। दुष्ट क्यों ईश्वर को तिरस्कार करता है। क्यों वह अपने मन में कहता है तू नहीं पूछेगा॥

१४। तू ने तो देखा है क्योंकि तू उपद्रव और कलपाने पर दृष्टि रखता है जिस्तें अपने हाथ से उस का पलटा देवे। अनाथ अपने को तुझ पर छोड़ता है कि पितृहीन का सहायक तू ही रहा है॥

१५। दुष्ट और बुरे जन की भुजा को तोड़। तो जब तू उस की दुष्टता को खोजेगा तब कुछ नहीं पावेगा॥

१६। प्रभु युगानयुग के लिये राजा है। अन्यजातिगण उस की भूमि पर से नष्ट भये हैं॥

१७। हे प्रभु तू ने सौम्यस्वभावों की आकांक्षा सुनी। तू उन का हृदय सिद्ध करता और अपना कान सुनने को झुकावेगा॥

१८। पितृहीन और पिसे हुए का न्याय चुकाने के लिये। जिस्तें मनुष्य जो पृथिवीबासी है फिर डराने न पावे॥

—:o:—

स्तोत्र ११

१। मैं प्रभु का शरणागत हुआ। तुम मेरे जीव से क्योंकर कहते हो कि हे चिड़िया अपने पहाड़ पर उड़ जाओ॥

२। क्योंकि देख दुष्ट अपना धनुष चढ़ाते और अपना बाण पनच पर जोड़ते हैं। जिस्तें सीधे मनवालों को अंधियारे में मारें॥

३। क्योंकि नेवें ढाई जाती हैं। और धर्म्मी क्या कर सका॥

४। प्रभु अपने पवित्र मन्दिर में है प्रभु का सिंहासन स्वर्ग में है। उस की आंखें मनुष्यजाति को ताकती हैं उस की पलकें उन को जांचती हैं।

५। प्रभु धर्म्मी को जांचता है। पर दुष्ट से और अत्याचार के चाहनेहारे से वह जी से बैर रखता है॥

६। वह दुष्टों पर फन्दे बरसावेगा। आग और गन्धक और प्रचण्ड लूह उन के कटोरे का भाग होगा॥

७। क्योंकि प्रभु धर्म्मी है और धर्म्म के कर्म्म को चाहता है। सीधे लोग उस के मुंह का दर्शन पावेंगे॥

संध्याकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र १२

१। हे प्रभु बचा क्योंकि कोई भक्त रहा नहीं। कि विश्वासी लोग मनुष्यजाति में से मिट गये हैं॥

२। वे एक दूसरे से झूठ बोलते हैं। वे चापलूसी के होंठों और दो मन से बोलते हैं॥

३। प्रभु सब चापलूसी के होंठों को काट डाले। और उस जीभ को जो बड़ा बोल बोलती है॥

४। उन को जो कहते हैं हम अपनी जीभ से जीत जावेंगे। हमारे होंठ हमारे बश में हैं कौन हमारा स्वामी है॥

५। दुःखियों के अत्याचार सहने और दरिद्रों के कराहने के कारण से। प्रभु कहता है "अब मैं उठूंगा जिस पर वे फुफकारते हैं उस को मैं निर्भय स्थान में रक्खूंगा"॥

६। प्रभु के वाक्य शुद्ध वाक्य हैं। वे उस चांदी के समान हैं जो पृथिवी पर घड़िये में ताई गई और सात बार निर्मल किई गई होवे॥

७। हे प्रभु तू उन की रक्षा करेगा। तू उन को इस पीढ़ी से सदा बचा रक्खेगा॥

८। परन्तु दुष्ट चारों ओर चलते फिरते हैं। जब मनुष्यवंशियों में नीच लोग ऊंचे किये जाते हैं॥

—:o:—

स्तोच १३।

१। हे प्रभु तू कबलों मुझे नित्य भूलता रहेगा। कब लों अपना मुख मुझ से छिपावेगा॥

२। मैं कब लों अपने जीव में अनेक उपाय निकालूंगा और दिन भर मेरा मन उदास रहेगा। कब लों मेरा शत्रु मुझ पर प्रबल रहेगा॥

३। हे प्रभु मेरे ईश्वर इधर दृष्टि कर और मुझे उत्तर दे। मेरे नेचों को प्रकाशित कर न हो कि मैं महानिद्रा में पड़ूं॥

४। न हो कि मेरा शत्रु कहे मैं उस पर प्रबल भया। न हो कि मेरे रिपु मेरे टलने पर आह्लादित होवें॥

५। पर मैं तो तेरी दया पर भरोसा रखता हूं मेरा हृदय तेरे चाण से आह्लादित होवे। मैं प्रभु के लिये गाऊंगा क्योंकि उस ने मेरा उपकार किया है॥

—:o:—

स्तोच १४।

१। मूढ़ ने अपने मन में कहा है कि ईश्वर है ही नहीं। वे बिगड़ गये उन्हों ने घिनौने कर्म्म किये सुकर्म्मी कोई नहीं॥

२। प्रभु ने स्वर्ग पर से मनुष्यजाति पर झांका है। कि देखे कि कोई बुद्धि के अनुसार चलता और ईश्वर को खोजता है कि नहीं॥

३। सब के सब भटक गये सब एक समान घिनौने हुए। कोई सुकर्म्मी नहीं एक भी नहीं॥

४। क्या वे सब दुष्टकर्म्मी कुछ ज्ञान नहीं रखते। वे मेरे निज लोगों को ऐसे खा जाते हैं मानो रोटी खाते हैं उन्हों ने प्रभु को नहीं पुकारा॥

५। उधर वे भयभीत भये। क्योंकि ईश्वर धर्म्मी पीढ़ी में है॥

६। तुम दुःखी के संकल्प को निरादर करते हो। क्योंकि प्रभु उस का शरणस्थान है॥

७। हाय कि इस्राएल् का त्राण सिय्योन् से निकलता। जब प्रभु अपने निज लोगों की बंधुवाई की ओर फिरेगा तब याकोब् आह्लादित और इस्राएल् आनन्दित होवेगा॥

तीसरा दिन

प्रातःकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र १५।

१। हे प्रभु तेरे तम्बू में कौन टिक सकेगा। कौन तेरे पवित्र पर्व्वत पर बस सकेगा॥

२। जो खराई से चलता और धर्म्म के कर्म्म करता है। और अपने हृदय में सच बोलता है॥

३। जिस की जीभ में चुगली नहीं। जो अपने संगी से बुराई नहीं करता और अपने पड़ोसी का दोष नहीं फैलाता॥

४। जो अपनी दृष्टि में तुच्छ और निकम्मा है पर प्रभु के डरवैयों का आदर करता है। जो अपनी हानि पर भी किरिया खाता तौभी बदलता नहीं॥

५। जो अपने रुपैयों को ब्याज पर नहीं देता और न निर्दोष की हानि के निमित्त अकोर लेता है। जो ऐसे कर्म्म करता है सो कभी न टलेगा॥

—:o:—

स्तोत्र १६।

१। हे परमेश्वर मेरी रक्षा कर। कि मैं ने तुझ में शरण लिई है॥

२। मैं ने प्रभु से कहा "तू मेरा स्वामी है। तुझे छोड़ मेरी कुछ भलाई नहीं॥

३। पृथिवी पर जो पवित्र हैं। सोई वे तेजधारी लोग हैं जिन से मेरी सम्पूर्ण प्रसन्नता है"॥

४। जो दूसरे से गठबन्धन करते हैं उन के क्लेश बहुत होवेंगे। मैं उन के लहू के तपावन नहीं तपाऊंगा और न उन के नाम अपने होंठों से लूंगा॥

५। प्रभु मेरे भाग का अंश और मेरा कटोरा है। तू मेरे बांट को स्थिर रखता है॥

६। मेरे लिये रस्सी मनभावने स्थान में पड़ी। वरन मेरा भाग मुझ को भावता भी है॥

७। मैं प्रभु को धन्य कहूंगा कि उस ने मुझे मन्त्र दिया। मेरा मन रात्रिसमयों में मुझे शिक्षा देता है॥

८। मैं ने प्रभु को निरन्तर अपने सन्मुख रक्खा है। वह मेरी दहिनी ओर है इस लिये मैं टलने का नहीं॥

९। इस कारण मेरा हृदय आनन्दित और मेरी महिमा आह्लादित भई। वरन मेरा शरीर भी निडर पड़ा रहेगा॥

१०। क्योंकि तू मेरे जीव को पाताल के वश में न छोड़ेगा। और न अपने भक्त को सड़ाहट देखने देगा॥

११। तू मुझे जीवन का पथ दिखावेगा। तेरे सन्मुख आनन्दों की भरपूरी है तेरे दहिने हाथ में सदा के बिलास हैं॥

—:o:—

स्तोत्र १७

१। हे प्रभु यथार्थ बात सुन मेरी चिल्लाहट पर कान धर। मेरी प्रार्थना की ओर जो निष्कपट होंठों से निकलती है कान लगा॥

२। मेरा न्याय तेरे साम्हने से निकले। तेरे नेत्र सच्चाई पर दृष्टि रक्खें॥

३। तू ने मेरे हृदय को जांचा तू रात्रिसमय में देखने के लिये आया। तू ने मुझे ताया और कुछ नहीं पाता मैं ने दृढ़ संकल्प किया मेरा मुंह मुड़ने का नहीं॥

४। मनुष्यों के कर्म्म जो हों सो हों। पर मैं ने तेरे होंठों के वचन के द्वारा बलात्कारी के चालचलन से अपने को बचा रक्खा है॥

५। मेरे पांव तेरे बाटों में स्थिर हैं। मेरे डग नहीं हटे॥

६। मैं ने तुझे पुकारा क्योंकि तू मुझे उत्तर देगा हे परमेश्वर। मेरी ओर अपना कान झुका मेरा वाक्य सुन॥

७। अपनी विशेष दया दिखा। तू जो अपने शरणागतों को द्रोहियों से अपने दहिने हाथ के द्वारा बचाता है॥

८। आंख की पुतली की नाईं मेरी रक्षा कर। मुझे अपने पंखों की आड़ में छिपा॥

९। उन दुष्टों से जो मुझ पर अत्याचार करते हैं। मेरे प्राण के शत्रुओं से जो मुझे घेर रखते हैं॥

१०। वे अपने मेद में ढंपे हुए हैं। वे अपने मुंह से घमण्ड की बात बोलते हैं॥

११। हमारे डगों का पता लगाके वे अभी मुझे घेर चुके हैं। वे मुझ को भूमि पर पटक देने के लिये टकटकी लगाते हैं॥

१२। उस की उपमा सिंह की सी है जो फाड़ने को प्यासा हो। और युवा सिंह की सी है जो ढूकों में रहता होवे॥

१३। हे प्रभु उठके उस को छेंक उस को झुका दे। मेरे जीव को दुष्ट से अपने खड्ग के द्वारा बचा॥

१४। मनुष्यों से अपने हाथ के द्वारा हे प्रभु बचा सांसारिक मनुष्यों से जिन का भाग इसी जीवन में है और जिन का उदर तू अपने भण्डार में से भरता है। वे लड़केवालों से तृप्त रहते हैं और जो वे बचाते हैं सो अपने बच्चों के लिये छोड़ जाते हैं॥

१५। पर मैं तो धर्म्म में तेरे मुख का दर्शन करूंगा। जब मैं जागूंगा तब तेरे स्वरूप से तृप्त होऊंगा॥

संध्याकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र १८।

१। हे प्रभु मेरे बल। मैं तुझ से स्नेह रखता हूं॥

२। प्रभु मेरी ऊंची चटान और मेरा दुर्ग और मेरा छुड़ानेहारा। मेरा परमेश्वर मेरी चटान जिस में मैं शरण लेता हूं मेरी फरी और मेरे त्राण का सींग मेरा ऊंचा गढ़॥

३। मैं प्रभु को जो अति स्तुत्य है पुकारूंगा। तो मैं अपने शत्रुओं से बचाया जाऊंगा॥

४। मृत्यु की रस्सियों ने मुझे बांधा। और अधमता के प्रवाहों ने मुझ को घबरा दिया था॥

५ पाताल की रस्सियों ने मुझे बांधा। मृत्यु के फंदों ने मुझ को छेंक लिया था॥

६। मैं ने अपने कष्ट में प्रभु को पुकारा और अपने ईश्वर के साम्हने चिल्लाया। उस ने अपने मन्दिर में से मेरी बाणी को सुना। और मेरी दोहाई उस के साम्हने वरन उस के कानों में पहुंची है॥

७। तब पृथिवी हिली और कांप उठी। और पहाड़ों की नेवें डोलीं और हिल गईं इस लिये कि वह क्रुद्ध भया था॥

८। उस के नथनों से धूंआं निकला। और उस के मुंह से आग भड़की जिस से कोएले दहक उठे॥

९। और वह स्वर्ग को झुकाके उतर आया। और उस के पांव तले घोर अन्धकार था॥

१० । और वह करूब् पर चढ़के उड़ा । और पवन के पंखों पर बेग से चला आया ॥

११ । उस ने अंधियारे को अपनी चारों ओर अपने छिपने का स्थान और अपना डेरा बनाया । अंधेरे जल को आकाश की घटाओं को ॥

१२ । उस प्रकाश के कारण जो उस के सन्मुख था उस की घटाएं भाग गईं । ओले और अंगारे पड़े ॥

१३ । और प्रभु आकाश में गरजा और परात्पर ने अपनी बाणी उच्चारी । ओले और अंगारे पड़े ॥

१४ । और उस ने अपने बाण चलाके उन्हें छिन्न भिन्न किया । उस ने बिजलियां गिराके उन को घबरा दिया ॥

१५ । तब जल की नालियां सूख गईं और जगत की नेवें खुल गईं । तेरे दपट से हे प्रभु तेरे नथनों की सांस के झोंके से ॥

१६ । उस ने ऊपर से भेजके मुझे थांभ लिया । उस ने मुझे महासागर में से खींच लिया है ॥

१७ । उस ने मुझे मेरे बलवन्त शत्रु से छुड़ाया । और मेरे बैरियों से जो मुझ से अधिक सामर्थी थे ॥

१८ । उन्हों ने मेरी बिपत्ति में मुझे छेंक लिया । पर प्रभु मेरा टेकन हो गया ॥

१९ । और उस ने मुझे निकालके चौड़े में बैठाया । उस ने मुझ को छुड़ाया इस लिये कि वह मुझ से प्रसन्न था ॥

२० । प्रभु ने मुझ से मेरे धर्म्म के अनुसार व्यवहार किया । उस ने मेरे हाथों की शुद्धता के अनुसार मुझे प्रतिफल दिया है ॥

२१ । क्योंकि मैं ने प्रभु के मार्गों का पालन किया । और अपने ईश्वर से फिर नहीं गया ॥

२२ क्योंकि उस के सब न्याय मेरे साम्हने बने रहे । और मैं उस के विधिन को अपने से दूर नहीं करता था ॥

२३। श्रौर मैं उस के साथ खरा रहा। श्रौर अपने को अपने निज पाप से बचा रखता था॥

२४। सो प्रभु ने मुझे मेरे धर्म्म के अनुसार प्रतिफल दिया। मेरे हाथों की शुद्धता के अनुसार जो उस की दृष्टि में थी॥

२५। प्रेमी के साथ तू अपने को प्रेमी दिखाता है। खरे पुरुष के संग तू खरा बनता है॥

२६। शुद्ध के साथ तू शुद्ध बनता है। श्रौर टेढ़े के संग तू हठीला बनता है॥

२७। क्योंकि तू दुःखी लोकगण को बचाता। श्रौर ऊंची आंखों को नीची करता है॥

२८। क्योंकि तू मेरा दीपक बारता है। प्रभु परमेश्वर मेरे अंधियारे को प्रकाश कर देता है॥

२९। क्योंकि तेरे द्वारा मैं डाकुओं की जथा पर धावा करता। श्रौर अपने ईश्वर के द्वारा मैं भीत को टप जाता हूं॥

३०। परमेश्वर जो है उस का मार्ग खरा है। प्रभु का वाक्य ताया हुआ है वह अपने सब शरणागतों की फरी है॥

३१। क्योंकि प्रभु को छोड़ ईश्वर कौन है। श्रौर हमारे ईश्वर को छोड़ चटान कौन है॥

३२। यह वही परमेश्वर है जो मेरी कटि में बल का पटुका बांधता। श्रौर मेरे मार्ग को सिद्ध करता है॥

३३। वह मेरे पैरों को हरिणों के से करता। श्रौर मुझे मेरे ऊंचे स्थानों पर खड़ा करता है॥

३४। वह मेरे हाथों को लड़ाई करना सिखाता है। ऐसा कि मेरे बांह पीतल की धनुष को झुकाते हैं॥

३५। श्रौर तू ने मुझ को अपने त्राण की फरी दिई। श्रौर तेरा दहिना हाथ मुझे थांभता श्रौर तेरी कोमलता मुझे बढ़ा देती है॥

३६। तू मेरे डगों के लिये चौड़ा स्थान करता है। और मेरे टखने नहीं डगे॥

३७। मैं अपने शत्रुओं का पीछा करके उन्हें पकड़ लूंगा। मैं नहीं फिरूंगा जब लों वे नष्ट न होवें॥

३८। मैं उन्हें पटक दूंगा और वे उठ न सकेंगे। वे मेरे पांव तले गिर पड़ेंगे॥

३९। और तू युद्ध के लिये मेरी कटि में बल का पटुका बांधेगा। तू मेरे बिरोधियों को मेरे तले झुका देगा॥

४०। और तू मेरे शत्रुओं की पीठ मुझे दिखावेगा। और मैं अपने बैरियों को ध्वंस करूंगा॥

४१। वे दोहाई देंगे पर कोई बचानेहारा न होगा। प्रभु की भी दोहाई देंगे पर वह उन को उत्तर न देगा॥

४२। और मैं उन्हें उस धूल की नाईं पीस डालूंगा जो पवन के साम्हने उड़ती है। मैं उन्हें सड़कों के कीच के समान निकाल फेंकूंगा॥

४३। तू मुझे प्रजा के झगड़ों से छुड़ाके जातियों का प्रधान बनावेगा। एक लोकगण जिस को मैं न जानता था मेरी सेवा करेगा॥

४४। कान से सुनते ही वे मेरे वश में आवेंगे। परदेशी के वंश को बरबस मुझ से दबना पड़ेगा॥

४५। परदेशी के वंश मुर्झावेंगे। और अपने कोटों में से थरथराते हुए निकलेंगे॥

४६। प्रभु जीता है और मेरी चटान धन्य है। और मेरे त्राण का ईश्वर उन्नत होवे॥

४७। वही परमेश्वर जो मुझे पलटा देता। और लोकगणों को मेरे तले दबा देता है॥

४८। वह मुझे मेरे शत्रुओं से छुड़ाता है। वरन तू मुझे मेरे

बिरोधियों के ऊपर उन्नत करता और अत्याचारी पुरुष से छुड़ाता है॥

४९। इस कारण हे प्रभु मैं तेरा धन्यवाद जातियों के बीच करूंगा। और तेरे नाम का स्तुतिगान करूंगा॥

५०। वह अपने राजा को बड़ा त्राण देता है। और अपने अभिषिक्त पर अर्थात दावीद् और उस के वंश पर युगानयुग दया करता रहेगा॥

चौथा दिन।

प्रातःकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र १९।

१। स्वर्ग परमेश्वर की महिमा का वर्णन कर रहे हैं। और अन्तरिक्ष उस के हाथों का कार्य्य बता रहा है॥

२। दिन दिन से वाक्य उच्चारता। और रात रात को ज्ञान सिखाती है॥

३। वाक्य तो कुछ नहीं और न कोई वचन है। उन की वाणी कुछ सुनी नहीं जाती॥

४। तौभी उन का स्वर समस्त पृथिवी पर और उन की बातें जगत के सिवाने लों निकल गईं। उस ने उन में सूर्य्य के लिये तंबू खड़ा किया है॥

५। और यह उस बर के समान है जो अपने मांड़व से निकलता हो। वह बीर की नाईं अपनी दौड़ दौड़ने को मगन होता है॥

६। उस का निकलना आकाश के अन्त से होता और उस का चक्कर उस के अन्त लों होता है। और उस की उष्णता से कोई वस्तु बची नहीं॥

७। प्रभु की व्यवस्था पूर्ण है जीव को स्वस्थ करनेहारी। प्रभु की साक्षी विश्वासयोग्य है भोले को बुद्धि देनेहारी॥

८। प्रभु के आदेश सीधे हैं हृदय को आनन्दित करनेहारे। प्रभु की आज्ञा शुद्ध है नेत्रों को ज्योति देनेहारी॥

९। प्रभु का भय निर्मल है युगानयुग स्थिर रहनेहारा। प्रभु के न्याय सत्य और सम्पूर्ण रीति से धर्म्मी हैं॥

१०। वे सोने से वरन बहुत कुन्दन से भी अधिक मनभावन हैं। और मधु से वरन छत्ते से टपकनेहारे मधु स भी अधिक मीठे हैं॥

११। फिर तेरा दास उन से चौकस भी किया जाता है। उन के पालन करने में बड़ा ही प्रतिफल होता है॥

१२। अपनी भूलचूक को कौन समझ सकता है। तू गुप्त पापों से मुझे निर्दोष ठहरा॥

१३। और ढिठाई के पापों से भी अपने दास को रोके रख। वे मुझ पर प्रभुता करने न पावें तब मैं खरा होऊंगा और बड़े अपराध से निर्दोष ठहरूंगा॥

१४। मेरे मुंह के वाक्य और मेरे हृदय का ध्यान तेरे साम्हने ग्राह्य होवे। हे प्रभु मेरी चटान और मेरे छुड़ानेहारे॥

—:o:—

स्तोत्र २०।

१। प्रभु कष्ट के दिन तुझे उत्तर देवे। याकोब् के ईश्वर का नाम तुझे ऊंचे पर बैठावे॥

२। पवित्र स्थान में से तुझे सहाय भेजे। और सिय्योन् में से तुझे थांभ रक्खे॥

३। तेरी सब भेंटों को स्मरण करे। और तेरे सर्वहोम को प्रसन्नता से ग्रहण करे॥

४। तुझ को तेरे मन के अनुसार देवे। और तेरे सब संकल्प को पूरा करे ॥

५। तो हम तेरे त्राण के कारण ऊंचे स्वर से गावेंगे और अपने ईश्वर के नाम से अपने झण्डे खड़े करेंगे। प्रभु तेरी सब प्रार्थनाओं को पूरा करे ॥

६। अब मैं जान गया कि प्रभु अपने अभिषिक्त को बचाता है। वह अपने पवित्र स्वर्ग पर से अपने दहिने हाथ के त्राणदायक पराक्रम से उस को उत्तर देवेगा ॥

७। ये रथों की और वे घोड़ों की चर्चा करते हैं। पर हम प्रभु अपने ईश्वर के नाम की चर्चा करेंगे ॥

८। वे तो झुक गये और गिर पड़े। परन्तु हम उठे और सीधे खड़े हुए ॥

९। हे प्रभु बचा। जिस दिन हम पुकारें राजा हम को उत्तर देवे ॥

—:o:—

स्तोत्र २१।

१। हे प्रभु राजा तेरे सामर्थ्य से आनन्दित होगा। और तेरे त्राण से वह कैसा अति आह्लादित होवेगा ॥

२। तू ने उस के मनोरथ को पूर्ण किया। और उस के होंठों की प्रार्थना को तू ने अनंगीकार नहीं किया ॥

३। क्योंकि तू उस को पहिले ही से उत्तम आशीषें देता है। तू उस के सिर पर कुन्दन का मुकुट धरता है ॥

४। उस ने तुझ से जीवन मांगा और तू ने उसे उस को दिया वरन युगानयुग के लिये चिरंजीवता ॥

५। उस की महिमा तेरे त्राण के हेतु बड़ी है। तू उसे विभव और गौरव से आभूषित करता है ॥

६। क्योंकि तू उस को सदा की आशीषों की खानि ठहराता है। तू उस को अपने दर्शन के आनन्द से हर्षित करता है ॥

७। क्योंकि राजा प्रभु पर भरोसा करता है। और परात्पर की दया से वह न टलेगा॥

८। तेरा हाथ तेरे सब शत्रुओं को पकड़ेगा। तेरा दहिना हाथ तेरे बैरियों को पकड़ेगा॥

९। तू प्रगट होने के समय उन्हें जलते हुए भट्ठे के समान करेगा। प्रभु अपने कोप से उन्हें भस्म करेगा और आग उन्हें खा लेगी॥

१०। तू उन का फल पृथिवी पर से नष्ट करेगा। और उन के वंश को मनुष्यजाति में से॥

११। क्योंकि उन्हों ने तेरी हानि का यत्न किया। उन्हों ने चतुराई की युक्ति सोची पर उसे पूरा नहीं कर सकेंगे॥

१२। क्योंकि तू उन की पीठ दिखावेगा। तू अपने पनच उन के साम्हने चढ़ावेगा॥

१३। हे प्रभु अपने सामर्थ्य से उन्नत हो। तो हम गावेंगे और तेरे पराक्रम का स्तुतिगान करेंगे॥

संध्याकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र २२।

१। हे मेरे परमेश्वर हे मेरे परमेश्वर तू ने क्यों मुझे छोड़ दिया। क्यों मेरी चिल्लाहट के वचन मेरे त्राण से दूर रहते हैं॥

२। हे मेरे ईश्वर मैं दिन को पुकारता हूं पर तू उत्तर नहीं देता। रात को भी और चुप नहीं रहता हूं॥

३। पर तू पवित्र है। हे यिस्राएल् की स्तुतियों पर बिराजमान॥

४। हमारे पुरखा तुझ पर भरोसा रखते थे। वे भरोसा रखते थे और तू उन्हें छुड़ाता था॥

५। वे तुझ से चिल्लाते थे और छुड़ाये जाते थे। वे तुझ पर

भरोसा रखते थे और लज्जित नहीं होते थे ॥

६। पर मैं तो कीड़ा हूं मनुष्य नहीं। मनुष्यों से निन्दित और प्रजा से अपमानित ॥

७। जितने मुझे देखते हैं सो मुझ पर हंसते हैं। वे यह कहके होंठ बिचकाते और सिर हिलाते हैं ॥

८। कि उसने कहा "प्रभु पर सब कुछ डाल" अब वह उस को छुड़ावे। वह उसे उबारे क्योंकि वह उस से प्रसन्न है ॥

९। हां क्योंकि तू ही ने मुझे पेट से निकाला। तू ने मुझे मेरी मा के स्तनों पर भी भरोसा दिया ॥

१०। मैं गर्भ ही से तुझ पर डाल दिया गया। तू मेरी मा के पेट ही से मेरा परमेश्वर है ॥

११। मुझ से दूर न हो क्योंकि बिपत्ति निकट है। और कोई सहायक नहीं ॥

१२। बहुत से सांड़ों ने मुझे घेरा। बाशान के बलवन्त पशु मेरी चारों ओर आये हैं ॥

१३। उन्हों ने मुझ पर अपना मुंह पसारा। जैसा सिंह जो फाड़ता और गरजता होवे ॥

१४। मैं पानी की नाईं बह गया और मेरी सब हड्डियां उखड़ गईं। मेरा हृदय मोम की नाईं हो गया वह मेरी अंतड़ियों के बीच गल गया है ॥

१५। मेरा बल ठिकरे की नाईं सूख गया और मेरी जीभ मेरे मसूड़े से सट गई। और तू मुझे मृत्यु की धूल लों पहुंचाता है ॥

१६। क्योंकि कुत्तों ने मुझ को घेरा कुकर्म्मियों का समाज मेरी चारों ओर आया। उन्हों ने मेरे हाथों और मेरे पैरों को छेदा है ॥

१७। मैं अपनी सब हड्डियां गिन सकता हूं और वे तो गुरेरते और मुझे देखते हैं ॥

१८। वे मेरे वस्त्र आपस में बांटते। और मेरे कपड़ों पर चिट्ठी डालते हैं॥

१९। पर तू हे प्रभु दूर न रह। हे मेरी शक्ति मेरी सहायता के लिये शीघ्र कर॥

२०। मेरे जीव को तलवार से। मेरी दुलारी को कुत्ते के हाथ से बचा ले॥

२१। मुझे सिंह के मुंह से बचा। वरन तू ने अरणों के सींगों के बीच से भी मेरी सुनके उत्तर दिया है॥

२२। अब मैं अपने भाइयों से तेरे नाम का वर्णन करूंगा। मण्डली के बीच में तेरी स्तुति करूंगा॥

२३। हे प्रभु के डरवैयो उस की स्तुति करो। हे याकोब् के सारे वंश उस की महिमा करो और हे यिस्राएल् के समस्त वंश उस का भय मानो॥

२४। क्योंकि उस ने दुःखी के दुःख को तुच्छ नहीं जाना न उस से घिन किई। उस ने उस से अपना मुंह नहीं छिपाया पर उस के दोहाई देते ही उस ने उस की सुन लिई॥

२५। बड़ी मण्डली में मेरे स्तुति करने का कारण तू ही है। मैं अपनी मनौतियां उस के डरवैयों के साम्हने पूरी करूंगा॥

२६। सौम्यस्वभाव खाके परितृप्त होवेंगे प्रभु के खोजनेहारे उस की स्तुति करेंगे। तुम्हारा हृदय चिरंजीव रहे॥

२७। पृथिवी के सब अन्तदेश चेत करके प्रभु की ओर फिरेंगे। और जातियों के सब गोत्र तेरे साम्हने दण्डवत करेंगे॥

२८। क्योंकि राज्य प्रभु ही का है। और वही जातियों में प्रभुता करता है॥

२९। पृथिवी के सब हृष्टपुष्ट खाके दण्डवत करेंगे जितने धूलि में उतर जाते हैं सब उस के साम्हने घुटने टेकेंगे। वरन प्रत्येक जन जो अपने प्राण को नहीं बचा सकता

३० । एक वंश उस की सेवा करेगा । दूसरी पीढ़ी से प्रभु का वर्णन किया जावेगा ॥

३१ । वे आवेंगे और उस का धर्म्म बतावेंगे । वे एक उत्पन्न होने हारे लोकगण से कहेंगे कि उस ने यह सब कुछ किया है ॥

—:0:—

स्तोत्र २३ ।

१ । प्रभु मेरा गड़ेरिया है । मुझे कुछ घटी न होवेगी ॥

२ । वह हरी चराइयों में मुझे बैठावेगा । विश्रामदायक जल के तीर पर वह मुझ को ले चलेगा ॥

३ । वह मेरे जीव को स्वस्थ करेगा । धर्म्म के बाटों पर वह अपने नाम के निमित्त मुझे ले जावेगा ॥

४ । वरन जब मैं मृत्युच्छाया के खड़ में से जाऊं तौ भी मैं बुराई से न डरूंगा । क्योंकि तू मेरे संग है तेरी छड़ी और तेरी लाठी जो हैं सो मुझे शान्ति देवेंगी ॥

५ । तू मेरे बैरियों की दृष्टि में मेरे साम्हने एक भोजनमंच बिछावेगा । तू ने मेरे सिर को तेल से चुपड़ा मेरा कटोरा भरके परिपूर्ण है ॥

६ । केवल भलाई और दया मेरे जीवन भर मेरा पीछा करेंगे । और मैं प्रभु के घर में चिरंजीव रहूंगा ॥

पांचवां दिन ।

प्रातःकाल की प्रार्थना ।

स्तोत्र २४ ।

१ । पृथिवी और उस की भरपूरी प्रभु ही की है । जगत और जितने उस में रहते हैं ॥

२ । क्योंकि उसी ने उस की नेव समुद्रों के ऊपर डाली । और महानदों के ऊपर उसे स्थिर किया है ॥

३। प्रभु के पर्व्वत पर कौन चढ़ सकेगा। और उस के पवित्रस्थान में कौन खड़ा हो सकेगा॥

४। जिस के हाथ निर्दोष और हृदय शुद्ध है। जिस ने अपने जीव को व्यर्थता की ओर तत्पर न किया और न छल से किरिया खाई है॥

५। वही प्रभु की ओर से आशीष् पावेगा। और अपने त्राण के ईश्वर से धर्म्म॥

६। यही उस के खोजनेहारों की पीढ़ी है। जो तेरे दर्शन के खोज में हैं सोई याकोब् हैं॥

७। हे फाटको अपने सिर ऊंचे करो और हे सनातन द्वारो अपने को ऊंचे करो। तो महिमा का राजा प्रवेश करेगा॥

८। यह महिमा का राजा कौन है। वह प्रभु है जो सामर्थी और पराक्रमी है वह प्रभु है जो युद्ध में पराक्रमी है॥

९। हे फाटको अपने सिर ऊंचे करो और हे सनातन द्वारो उन्हें ऊंचे करो। तो महिमा का राजा प्रवेश करेगा॥

१०। यह महिमा का राजा जो है सो कौन है। वह सेनाओं का प्रभु है वही महिमा का राजा है॥

—:o:—

स्तोत्र २५।

१। हे प्रभु मैं अपने जीव को। तेरी ओर उठाता हूं॥

२। हे मेरे ईश्वर मैं ने तुझ पर भरोसा किया है मुझे लज्जित न होना पड़े। मेरे शत्रु मुझ पर हुलसने न पावें॥

३। वरन जितने तेरा आसरा देखते हैं उन में से कोई लज्जित न होवे। परन्तु जो निष्कारण दंगा करते हैं सोई लज्जित होवें॥

४। हे प्रभु अपने मार्ग मुझ को विदित कर। अपने पथ मुझे सिखा।

५। मुझे अपने सत्य में चला और मुझ को सिखा। क्योंकि मेरे

चाण का ईश्वर तू ही है दिन भर मैं ने तेरा आसरा देखा है ॥

६ । हे प्रभु अपनी मया और दया को चेत कर । क्योंकि वे तो सदा ही से हैं ॥

७ । मेरी तरुणाई के पाप और मेरे अपराध स्मरण न कर । पर अपनी दया ही के अनुसार मुझे स्मरण कर अपनी भलाई के निमित्त हे प्रभु ॥

८ । प्रभु भला और सीधा है । इस लिये वह पापियों को मार्ग में सिखावेगा ॥

९ । वह सौम्यस्वभावों को न्याय में चलावेगा । और अपना मार्ग सौम्यस्वभावों को सिखावेगा ॥

१० । प्रभु के सब पथ दया और सत्य हैं उन के लिये जो उस की बाचा और उस की साक्षियों का पालन करते हैं ॥

११ । अपने नाम के निमित्त हे प्रभु तू मेरे अधर्म्म को भी क्षमा करेगा । क्योंकि वह बड़ा है ॥

१२ । कौन वह पुरुष है जो प्रभु से डरता है । जो मार्ग वह चुनता है उसी में वह उसे शिक्षा देवेगा ॥

१३ । उस का जीव भलाई में टिका करेगा और उस का वंश पृथिवी को भाग में पावेगा ॥

१४ । प्रभु का भेद उस के डरवैयों के पास है । और उस की बाचा जिस्तें वे उस को जानें ॥

१५ । मेरे नेत्र निरन्तर प्रभु की ओर लगे हैं । क्योंकि वह मेरे पैरों को जाल से निकालेगा ॥

१६ । मेरी ओर फिर और मुझ पर करुणा कर । क्योंकि मैं अकेला और दुःखी हूं ॥

१७ । मेरे हृदय के क्लेश बढ़ गये हैं । तू मुझे मेरी सकेतियों से निकाल ॥

१८। मेरे दुःख और पीड़ा पर दृष्टि कर। और मेरे सब पापों को क्षमा कर॥

१९। मेरे शत्रुओं को देख कि वे कैसे अधिक हो गये हैं। और मुझ से क्रूरता के साथ बैर रखते हैं॥

२०। मेरे जीव की रक्षा कर और मुझे छुड़ा। मुझे लज्जित न होना पड़े क्योंकि मैं ने तुझ में शरण लिई है॥

२१। खराई और सीधाई मेरी रक्षा करें। क्योंकि मैं ने तेरा ही आसरा देखा है॥

२२। हे ईश्वर यिस्राएल् को। उस के सारे कष्टों से छुड़ा ले॥

—:o:—

स्तोत्र २६।

१। हे प्रभु मेरा न्याय चुका क्योंकि मैं अपनी खराई में चला हूं और प्रभु ही पर मैं ने भरोसा रक्खा है मैं न डगूंगा॥

२। हे प्रभु मुझ को जांच और परख। मेरे अन्तःकरण और हृदय को ताव॥

३। क्योंकि तेरी दया मेरे नेत्रों के साम्हने रहती है। और मैं तेरे सत्य में चला फिरा हूं॥

४। मैं व्यर्थता के चाहनेहारों के संग नहीं बैठा। और कपटियों के संग नहीं जाऊंगा॥

५। मैं कुकर्म्मियों की मण्डली से बैर रखता हूं। और दुष्टों के संग नहीं बैठूंगा॥

६। मैं अपने हाथों को निर्दोषता में धोऊंगा। तब मैं तेरी वेदी की प्रदक्षिणा करने पाऊंगा हे प्रभु॥

७। जिसतें मैं धन्यवाद का शब्द सुनाऊं। और तेरे सब आश्चर्य्य कर्म्मों का वर्णन करूं॥

८। हे प्रभु मैं ने तेरे घर के वासस्थान से प्रीति रक्खी है। और उस स्थल से जहां तेरी महिमा ठहरती है॥

९ । मेरे जीव को पापियों के संग न बटोर । और न हत्यारों के संग मेरे प्राण को ले जा ॥

१० । जिन के हाथों में छल है । और उन का दाहिना हाथ घूस से भरा है ॥

११ । पर मैं तो अपनी खराई में चलूंगा । तू मुझे छुड़ा ले और मुझ पर करुणा कर ॥

१२ । मेरा पांव चौरस स्थल में खड़ा है । मैं मण्डलियों में प्रभु को धन्य कहा करूंगा ॥

संध्याकाल की प्रार्थना ।

स्तोत्र २७ ।

१ । प्रभु मेरी ज्योति और मेरा त्राण है मैं किस से डरूं । प्रभु मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ है मैं किस से भय खाऊं ॥

२ । जब कुकर्म्मी मेरा मास खाने के लिये मेरे निकट आ गये । जो मेरे शत्रु वरन मुझी से बैर रखनेवाले थे तब वे ठोकर खाके गिर पड़े ॥

३ । यद्यपि सेना मेरे विरोध में छावनी करे तौभी मेरा हृदय न डरेगा । यद्यपि युद्ध मेरे विरुद्ध उठे तिस पर भी मैं भरोसा करता रहूंगा ॥

४ एक बात मैं ने प्रभु से मांगी है उसी को ढूढूंगा भी । कि मैं अपने जीवन भर प्रभु के घर में रहने पाऊं जिसतें प्रभु की सुन्दरता पर टकटकी लगाये रहूं और उस के मन्दिर में खोज करूं ॥

५ । क्योंकि वह मुझे बुरे दिन में अपने मण्डप तले छिपा रक्खेगा । वह अपने तम्बू के गुप्त स्थान में मुझे गुप्त रक्खेगा वह चटान पर मुझे ऊंचा करेगा ॥

६। और अब मेरा सिर मेरी चारों ओर के शत्रुओं के ऊपर ऊंचा होवेगा। और मैं उस के तम्बू में आनन्द से ललकारके बलिदान चढ़ाऊंगा मैं प्रभु के लिये गाऊंगा और स्तुतिगान करूंगा॥

७। हे प्रभु सुन मैं अपनी वाणी से पुकारता हूं। और मुझ पर करुणा कर और मुझे उत्तर दे॥

८। मेरे हृदय ने तुझ से कहा है "मेरे दर्शन के खोजी होओ"। हे प्रभु मैं तेरे दर्शन का खोजी होऊंगा॥

९। अपना मुख मुझ से न छिपा अपने दास को कोप में दूर न कर। तू मेरा सहायक रहा है मुझे त्याग न कर और मुझे छोड़ न दे हे मेरे त्राण के ईश्वर॥

१०। क्योंकि मेरे माता पिता ने मुझे छोड़ दिया है। परन्तु प्रभु मुझे समेट लेवेगा॥

११। हे प्रभु मुझे अपने मार्ग की शिक्षा दे। और मेरे बैरियों के कारण से मुझ को समथर पथ पर ले जा॥

१२। मुझ को मेरे रिपुओं की इच्छा पर न छोड़। क्योंकि झूठे साक्षी और अत्याचार के बोलनेहारे मुझ पर उठे हैं॥

१३। यदि मैं विश्वास न करता कि प्रभु की भलाई को जीवतों के देश में देखने पाऊंगा। तो मैं नाश हो जाता॥

१४। प्रभु का आसरा देख ढाढ़स बांध और तेरा हृदय दृढ़ होवे। और प्रभु का आसरा देखता रह॥

—:0:—

स्तोत्र २८।

१। हे प्रभु मैं तुझी को पुकारूंगा हे मेरी चटान मुझ से कान न मूंद। न हो कि यदि तू मुझ से चुप रहे तो मैं गढ़े में उतरनेहारों के समान हो जाऊं॥

२। मेरी बिनती की वाणी को सुन जब मैं तेरी दोहाई देऊं। जब मैं अपने हाथ तेरे परमपवित्रस्थान की ओर उठाऊं॥

३। मुझ को दुष्टों और दुष्टकर्म्मियों के संग घसीट न ले जा। जो अपने पड़ोसियों से तो मेल की बातें कहते हैं पर उन के हृदय में बुराई है॥

४। उन को उन के कर्म्म के अनुसार और उन के कार्य्यों की बुराई के समान प्रतिफल दे। उन के हाथों के काम के अनुसार उन्हें प्रतिफल दे जो उन्हों ने कमाया है सोई उन्हें पलटे में दे॥

५। जब कि वे प्रभु के कर्म्म और उस के हाथों के काम को नहीं विचारते। इस लिये वह उन्हें ढा देगा और नहीं बनावेगा॥

६। प्रभु धन्य होवे। क्योंकि उस ने मेरी बिनती की वाणी को सुना है॥

७। प्रभु मेरा बल और मेरी फरी है मेरे हृदय ने उस पर भरोसा करके सहाय पाई। इस लिये मेरा हृदय प्रमुदित है और मैं अपने गीत से उस का धन्यवाद करूंगा॥

८। प्रभु उन का बल है। और अपने अभिषिक्त के त्राण का दृढ़ गढ़ वही है॥

९। अपने निज लोगों को बचा और अपने निज भाग को आशीष् दे। और उन की चरवाही कर और युगानयुग उन्हें सम्भाले रह॥

—:o:—

स्तोत्र २९

१। हे देवपुत्रो प्रभु को देओ। प्रभु को महिमा और सामर्थ्य देओ॥

२। प्रभु को उस के नाम की महिमा देओ। प्रभु को पवित्रता की शोभा में दण्डवत करो॥

३। प्रभु की वाणी जल के ऊपर होती है । महिमायुक्त परमेश्वर गरजा प्रभु महासागर के ऊपर रहता है ॥

४। प्रभु की वाणी शक्तिमान है। प्रभु की वाणी प्रताप के साथ होती है ॥

५। प्रभु की वाणी देवदारुओं को तोड़ डालती है। वरन प्रभु ने लबानोन् के देवदारुओं को भी तोड़ डाला है ॥

६। और उस ने उन्हें बछड़े की नाईं कुदाया है। लबानोन् और शिर्योन् को पड़रू के समान ॥

७। प्रभु की वाणी। अग्निज्वालाओं को चीर देती है।

८। प्रभु की वाणी बन को कंपाती। प्रभु कादेश् के बन को कंपाता है ॥

९। प्रभु की वाणी हरिणियों को जनाती है और अरण्य के पत्तों को झाड़ती है। और उस के मन्दिर का प्रत्येक बासी कहता है "महिमा महिमा"

१०। जलप्रलय के समय प्रभु बिराजमान था। और प्रभु सदा का राजा होके बिराजमान है ॥

११। प्रभु अपने निज लोगों को शक्ति देगा। प्रभु अपने निज लोगों को शान्ति की आशीष देवेगा ॥

छठवां दिन

प्रात:काल की प्रार्थना।

स्तोत्र ३०।

१। हे प्रभु मैं तुझे सराहूंगा क्योंकि तू ने मुझे उबारा है। और मेरे शत्रुओं को मुझ पर आनन्द करने नहीं दिया ॥

२। हे प्रभु मेरे ईश्वर। मैं ने तेरी दोहाई दिई और तू ने मुझे चंगा किया है ॥

३ । हे प्रभु तू ने मेरे जीव को पाताल में से ऊपर किया । तू ने मुझे गड़हे में उतरनेहारों में से अलग करके जिलाया है ॥

४ । हे प्रभु के भक्तो उस का स्तुतिगान करो । और उस के पवित्र स्मारक का धन्यवाद करो ॥

५ । क्योंकि उस का कोप क्षण भर का है और उस की प्रसन्नता से जीवन होता है । रोना सांझ को आ टिके पर बिहान को सब आनन्द है ॥

६ । और मैं ने तो अपने चैन में कहा था । कि "मैं कभी डगूंगा नहीं" ॥

७ । हे प्रभु तू ने अपनी प्रसन्नता ही से मेरे पहाड़ को दृढ़ खड़ा किया था । तू ने अपना मुख छिपाया तो मैं घबरा गया ॥

८ । हे प्रभु मैं ने तुझ को पुकारा । और प्रभु से मैं ने बिन्ती किई ॥

९ । "मेरे लहू में मेरे गड़हे में उतर जाने में क्या लाभ होगा । क्या धूलि तेरा धन्यवाद करेगी क्या वह तेरे सत्य को बतावेगी ॥

१० । हे प्रभु सुन और मुझ पर करुणा कर । हे प्रभु तू मेरा सहायक हो" ॥

११ । तू ने मेरे विलाप को नाचने से बदल डाला । तू ने मेरे टाट को उतारके मेरी कटि में आनन्द का पटुका बांधा ॥

१२ । जिसतें मेरी महिमा तेरा स्तुतिगान करे और चुप न रहे । हे प्रभु मेरे ईश्वर मैं सदा तेरा धन्यवाद करता रहूंगा ॥

—:o:—

स्तोत्र ३१ ।

१ । हे प्रभु मैं तेरा शरणागत भया । मुझे कभी लज्जित न होना पड़े अपने धर्म्म से मुझे छुड़ा ॥

२ । अपना कान मेरी ओर झुका शीघ्र मुझे छुड़ा । मेरे लिये एक दृढ़ चटान एक दुर्ग का घर हो जिसतें तू मुझे बचा सके ॥

३। क्योंकि तू मेरी ऊंची चटान और मेरा दुर्ग है। और तू अपने नाम के निमित्त मुझे हाथ पकड़के ले चलेगा॥

४। तू मुझे उस जाल में से जो उन्हों ने मेरे लिये छिपा रक्खा है निकालेगा। क्योंकि तू मेरा दृढ़ गढ़ है॥

५। मैं तेरे हाथ में अपना आत्मा सौंप देता हूं। तू ने मुझ को छुड़ा लिया है प्रभु सत्य के परमेश्वर॥

६। मैं ने उन से बैर किया जो मिथ्या और व्यर्थ बातों को मानते हैं। और मैं ने तो प्रभु पर भरोसा रक्खा है॥

७। मैं तेरी दया से आह्लादित और आनन्दित होऊंगा। क्योंकि तू ने मेरे दुःख को देखा तू ने मेरे जीव को कष्टों में चीन्हा है॥

८। और तू ने मुझे शत्रु के हाथ में सौंप नहीं दिया। पर मेरे पैरों को चौड़े में खड़ा किया है॥

९। हे प्रभु मुझ पर करुणा कर क्योंकि मैं कष्ट में हूं। मेरी आंख आर्त्ति से धुंधला गई वरन मेरा जीव और मेरा पेट भी॥

१०। क्योंकि मेरा जीवन श्रम से क्षीण हो गया और मेरे बरस कराहने से। मेरा बल मेरे अधर्म्म के कारण जाता रहा और मेरी हड्डियां घुन गई हैं॥

११। मैं अपने सारे बैरियों के कारण से दुर्नाम हुआ और विशेष करके अपने पड़ोसियों से और अपने जान पहिचानों के डर का कारण भया। जिन्हों ने मुझ को सड़क में देखा सो मुझ से भाग गये॥

१२। मैं मृतक की नाईं लोगों के मन से बिसराया गया। मैं टूटे बासन के सदृश हो गया हूं॥

१३। क्योंकि मैं ने बहुतों का अपवाद सुना। जब वे मेरे विरुद्ध आपस में परामर्श करते हैं तो चारों ओर भय होता है उन्हों ने मेरा प्राण लेने की युक्ति किई है॥

१४ । पर मैं ने तो तुझी पर भरोसा रक्खा है प्रभु । मैं ने कहा है कि तू मेरा ईश्वर है ॥

१५ । मेरे समय तेरे हाथ में हैं । मुझे मेरे शत्रुओं के हाथ से और मेरे सतानेहारों से छुड़ा ॥

१६ । अपने मुख का प्रकाश अपने दास पर पड़ने दे । अपनी दया से मुझे बचा ॥

१७ । हे प्रभु मैं लज्जित न होने पाऊं क्योंकि मैं ने तुझे पुकारा है । दुष्ट लज्जित होवें वे पाताल में चुपचाप पड़े रहें ॥

१८ । झूठे होंठ बन्द किये जावें । जो धर्म्मी के विरुद्ध गर्ब्ब से अहंकार से और अपमान से बोलते हैं ॥

१९ । वाह तेरी भलाई क्या ही बड़ी है जो तू ने अपने डरवैयों के लिये छिपा रक्खी । जो तू ने अपने शरणागतों के लिये मनुष्यजाति के साम्हने सिद्ध कर रक्खी है ॥

२० । तू उन्हें अपने दर्शन के गुप्रस्थान में मनुष्यों के दुष्ट प्रबन्धों से गुप्त रक्खेगा । तू उन को जीभों के झगड़े से अपने मण्डप में छिपा रक्खेगा ॥

२१ । प्रभु धन्य होवे । क्योंकि उस ने सुदृढ़ नगर में मुझ पर अद्भुत दया किई है ॥

२२ । और मैं ने तो अपनी उतावली में कहा था कि मैं तेरी दृष्टि के साम्हने से कट गया । तिस पर भी जब मैं ने तेरी दोहाई दिई तब तू ने मेरी विनती की वाणी सुनी ॥

२३ । हे प्रभु के सब भक्तो उस से प्रेम रक्खो । प्रभु विश्वासियों की रक्षा करता पर अहंकारी को भली भांति से प्रतिफल देता है ॥

२४ । ढाढ़स बांधो और तुम्हारा हृदय दृढ़ होवे । हे प्रभु के सब आशा करनेहारो ॥

संध्याकाल की प्रार्थना ।

स्तोत्र ३२ ।

१ । धन्य है वह जिस का अपराध क्षमा किया गया । और जिस का पाप ढांपा गया है ॥

२ । धन्य है वह मनुष्य जिस के लेखे में प्रभु अधर्म्म न लिखेगा । और जिस के आत्मा में कपट नहीं ॥

३ । जब लों मैं चुप रहा । मेरी हड्डियां दिन भर मेरी चिल्लाहट के हेतु घुन जाती थीं ॥

४ । क्योंकि रात और दिन तेरा हाथ मुझ पर भारी रहा । मेरी चिकनाई ग्रीष्मकाल की सी रुखाहट से सूख जाती थी ॥

५ । मैं ने अपना पाप तुझे विदित किया और अपने अधर्म्म को नहीं छिपाया । मैं ने कहा मैं प्रभु के साम्हने अपने अपराधों का अंगीकार करूंगा तब तू ने मेरे पाप की अधर्म्मता को क्षमा किया ॥

६ । इस लिये प्रत्येक भक्त जब उस का पाप पकड़ा जावे तब तुझ से प्रार्थना करे । तो जब जल की बड़ी बाढ़ होगी तब भी वह उस के निकट नहीं आवेगी ॥

७ । तू मेरे छिपने का स्थान है तू कष्ट में मेरी रक्षा करेगा । तू मुझे छुटकारे के गीतों से घेरेगा ॥

८ । "मैं तुझे बुद्धि देऊंगा और जिस मार्ग में तुझे चलना हो उस में तुझे शिक्षा दूंगा । मैं अपना नेत्र तुझ पर लगाये हुए तुझ को परामर्श दिया करूंगा ॥

९ । घोड़े और खच्चर के सदृश मत होओ जो समझ नहीं रखते । जिन के गहने लगाम और बाग हैं कि उन से रोके जावें न हो कि वे तेरे निकट आवें"

१० । दुष्ट पर बहुत सी विपत्तियां आती हैं । परन्तु जो प्रभु पर भरोसा रखता है उस को वह दया से घेर रखता है ॥

११ । हे धर्म्मियो प्रभु में आनन्दित और आह्लादित होओ । और हे सब सीधे मनवालो ऊंचे स्वर से गाओ ॥

—:o:—

स्तोत्र ३३

१ । हे धर्म्मियो प्रभु में ऊंचे स्वर से गाओ । कि सीधे लोगों को स्तुति करना सजता है ॥

२ । वीणा से प्रभु का धन्यवाद करो । दसतारवाले कानून से उस का स्तुतिगान करो ॥

३ । उस के लिये नया गीत गाओ । आनन्द के ललकार के साथ भली भांति बजाओ ॥

४ । क्योंकि प्रभु का वचन सीधा है । और उस का सारा काम सच्चाई से होता है ॥

५ । वह धर्म्म और न्याय से प्रीति रखता है । पृथिवी प्रभु की दया से परिपूर्ण है ॥

६ । प्रभु के वचन से स्वर्ग बन गये । और उन की सारी सेना उस के मुंह के श्वास से ॥

७ । वह समुद्र का ज़ल ढेर की नाईं एकट्ठा करता । वह गहिरावों को भण्डारों में रखता है ॥

८ । सारी पृथिवी के लोग प्रभु से डरें । जगत के सब निवासी उस का भय मानें ॥

९ । क्योंकि उस ने कहा तो हो गया । उस ने आज्ञा दिई तो स्थिर हुआ ॥

१० । प्रभु जातियों के अभिप्राय को व्यर्थ कर देता । वह लोकगणों की युक्तियों को निष्फल करता है ॥

११। प्रभु का अभिप्राय सदा स्थिर रहेगा। उस के मन की युक्तियां युगानयुग रहेंगी॥

१२। धन्य है वह जाति जिस का ईश्वर प्रभु है। वह लोकगण जिसे उस ने अपना निज भाग होने के लिये चुना है॥

१३। प्रभु स्वर्ग पर से दृष्टि करता। वह सारी मनुष्यजाति को देखता है॥

१४। वह अपने वासस्थान में से। पृथवी के सब वासियों पर ताकता है॥

१५। उन सभों का मन वही बनाता। वह उन के कामों को बूझ लेता है॥

१६। राजा अपने पराक्रम की बहुतायत से बच नहीं जाता। बीर अपने बल की बहुतायत से छूट नहीं जाता॥

१७। घोड़ा बचाव के लिये व्यर्थ है। और न वह अपने बड़े बल से किसी को छुड़ा सकता है॥

१८। देखो प्रभु का नेत्र उस के डरवैयों पर लगा है। उन पर जो उस की दया की आशा रखते हैं॥

१९। जिस्तें वह उन के प्राण को मृत्यु से बचावे। और अकाल के समय उन को जीता रक्खे॥

२०। हमारे जीव ने प्रभु की बाट जोही है। वही हमारी सहाय और फरी है॥

२१। कि हमारा हृदय उस में आनन्दित होगा। क्योंकि हम ने उस के पवित्र नाम पर भरोसा रक्खा है॥

२२। हे प्रभु तेरी दया हम पर होवे। जैसा कि हम ने तेरी आशा रक्खी है॥

—:०:—

स्तोत्र ३४।

१। मैं प्रतिसमय प्रभु को धन्य कहूंगा। उस की स्तुति निरन्तर मेरे मुंह में रहेगी॥

२। मेरा जीव प्रभु पर घमण्ड करेगा। सौम्यस्वभाव सुनके आनन्दित होवेंगे॥

३। मेरे साथ प्रभु की बड़ाई करो। और हम मिलके उस के नाम को सराहें॥

४। मैं ने प्रभु को खोजा और उस ने मुझे उत्तर दिया। और मेरे सब डरों से मुझ को छुड़ाया॥

५। उन्हों ने उस की ओर दृष्टि किई तो प्रकाशित भये। और उन के मुंह कभी लज्जित न होवेंगे॥

६। इस दुःखी ने पुकारा तो प्रभु ने सुना। और उस को उस के सारे कष्टों से बचाया॥

७। प्रभु का दूत उस के डरवैयों की चारों ओर छावनी करता। और उन को छुड़ाता है॥

८। चखो और देखो कि प्रभु भला है। धन्य है वह पुरुष जो उस में शरण लेता है॥

९। हे प्रभु के पवित्रो उस का भय मानो। क्योंकि उस के डर-वैयों को कुछ घटी नहीं॥

१०। युवासिंह दुबले और भूखे होते हैं। परन्तु प्रभु के खोज-नेहारों को किसी भली वस्तु की घटी न होगी॥

११। हे लड़को आओ मेरी सुनो। मैं तुम को प्रभु का भय सिखाऊंगा॥

१२। वह कौन पुरुष है जो जीवन की इच्छा रखता। और चिरंजीवता चाहता है जिस्तें वह सुख भोगे॥

१३। अपनी जीभ को बुराई से रोक रख। और अपने होंठों को कपट की बात कहने से॥

१४। बुराई से दूर हो और भलाई कर। मिलाप को ढूंढ़ और उस का पीछा कर॥

१५ । प्रभु के नेत्र धर्म्मियों की ओर लगे हैं । और उस के कान उन की दोहाई पर ॥

१६ । प्रभु का मुख बुराई के करनेहारों के विरुद्ध है । जिस्तें वह उन का स्मरण पृथिवी पर से काट डाले ॥

१७ । धर्म्मी चिल्लाये और प्रभु ने सुना । और उन को उन के सारे कष्टों से छुड़ाया ॥

१८ । प्रभु टूटे मनवालों के समीप रहता है । और जिन का आत्मा चूर्ण है उन को बचाता है ॥

१९ । धर्म्मी पर बहुत सी बिपत्तियां पड़ती हैं । पर प्रभु उन्हें उन सब से छुड़ावेगा ॥

२० । वह उस की सब हड्डियों को बचा रखता है । उन में से एक भी टूटने नहीं पाती ॥

२१ । दुष्ट अपनी बुराई ही से मारा जावेगा । और धर्म्मी के बैरी दोषी ठहरेंगे ॥

२२ । प्रभु अपने दासों के जीव को छुड़ा लेता है । और जितने उस में शरण लेते हैं उन में से कोई दोषी न ठहरेगा ॥

सातवां दिन ।

प्रातःकाल की प्रार्थना ।

स्तोत्र ३५ ।

१ । हे प्रभु जो मुझ से झगड़ते हैं उन से झगड़ । जो मुझ से लड़ते हैं उन से लड़ ॥

२ । फरी और ढाल को पकड़ । और मेरी सहाय करने को खड़ा हो ॥

३। और बर्छी को निकाल और मेरा पीछा करनेहारों के साम्हने होके उन्हें रोक। मेरे जीव से कह कि मैं तेरा त्राण हूं॥

४। जो मेरे प्राण के खोजी हैं सो लज्जित और निरादर होवें। जो मेरी हानि की युक्ति निकाल रहे हैं सो पीछे हटाये और अप्रतिष्ठित किये जावें॥

५। वे उस भूसी के समान हों जो वायु से उड़ती है। और प्रभु का दूत उन्हें ढकेलता जावे॥

६। उन का मार्ग अंधियारा और बिछलाह होवे। और प्रभु का दूत उन को रगेदता जावे॥

७। क्योंकि उन्हों ने निष्कारण अपना जाल मेरे लिये गड़हे में छिपाया। निष्कारण उन्हों ने मेरे जीव के लिये गड़हा खोदा है॥

८। महाविपत्ति उस पर अकस्मात् पड़े। और जो जाल उस ने छिपाया है उसी में वह फंस जावे उसी में वह नाश हो जावे॥

९। पर मेरा जीव प्रभु में आह्लादित होगा। वह उस के त्राण से मगन होवेगा॥

१०। मेरी सब हड्डियां कहेंगी हे प्रभु तेरे तुल्य कौन है। जो दुःखी को उस से जो उस से अधिक बलवन्त है और दुःखी और दरिद्र को उस के लूटनेहारे से छुड़ाता है॥

११। अत्याचारी साक्षी खड़े होते हैं। जो बात मैं नहीं जानता उस के विषय में वे मुझ से प्रश्न करते हैं॥

१२। वे मुझ से भलाई के पलटे में बुराई करते हैं। मेरा जीव अनाथ हो गया है॥

१३। पर मैं तो जब वे रोगी थे तब टाट पहिनता था। मैं अपने जीव को उपवास कर करके दुःख देता था और मेरी प्रार्थना मेरी ही गोद में लौट आवेगी॥

१४। मैं ऐसा बर्ताव करता रहा कि मानो वह मेरा मित्र वा

भाई था। मैं शोक का पहिरावा पहिने हुए ऐसा झुका चलता था जैसा कोई अपनी माता के लिये शोक करता है॥

१५। पर जब मैं लंगड़ाने लगा तब वे आनन्दित होके एकट्ठे भये। नीच लोग और जिन्हें मैं जानता नहीं था सो भी मेरे विरुद्ध एकट्ठे हुए वे मेरे हृदय को फाड़ते और चुप नहीं होते थे॥

१६। उन भक्तिहीन भांडों की नाईं जो भोजन के लिये उपहास करते हैं। वे मुझ पर दांत पीसते हैं॥

१७। हे प्रभु तू कब लों देखता रहेगा। मेरे जीव को उन से नाश होने से मेरी दुलारी को सिंहों से बचा॥

१८। मैं बड़ी मण्डली में तेरा धन्यवाद करूंगा। सामर्थी लोकगण के बीच मैं तेरी स्तुति करूंगा॥

१९। मेरे मिथ्यावादी शत्रु मुझ पर आनन्द करने न पावें। जो निष्कारण मुझ से बैर रखते हैं सो आपस में नैन की सैन न करने पावें॥

२०। क्योंकि वे मेल की बात नहीं बोलते। परन्तु देश में जो चुपचाप रहते हैं उन के विरुद्ध वे छल की युक्तियां निकालते हैं॥

२१। और उन्हों ने मुझ पर अपना मुंह पसारा। उन्हों ने कहा आहा आहा हम ने अपनी आंखों से देखा है॥

२२। हे प्रभु तू ने देखा है चुप न रह। हे प्रभु मुझ से दूर न रह॥

२३। उठ और मेरे न्याय के लिये जाग। मेरा झगड़ा चुकाने के लिये हे मेरे ईश्वर और मेरे प्रभु॥

२४। हे प्रभु मेरे ईश्वर अपने धर्म्म के अनुसार मेरा न्याय कर। और उन्हें मुझ पर आनन्द करने न दे॥

२५। वे अपने मन में कहने न पावें कि आहा हमारी इच्छा पूरी भई। वे न कहने पावें कि हम उस को निगल चुके हैं॥

२६। जो मेरी विपत्ति से आनन्दित होते हैं सो एक साथ लज्जित और अप्रतिष्ठित होवें। जो मुझ पर अपनी बड़ाई करते हैं उन्हें लज्जा और अनादर का वस्त्र पहिनाया जावे॥

२७। जो मेरे धर्म्म से प्रसन्न रहते हैं सो ऊंचे स्वर से गावें और आनन्द करें। और निरन्तर कहते रहें कि प्रभु की बड़ाई होवे जो अपने दास के कुशल से प्रसन्न होता है॥

२८। तो मेरी जीभ तेरे धर्म्म की चर्चा करेगी। और दिन भर तेरी स्तुति गावेगी॥

—:o:—

स्तोत्र ३६।

१। अपराध दुष्ट से उस के हृदय के अन्तर में देववाणी कहा करता है। उस की आंखों के साम्हने ईश्वर का कुछ भय नहीं॥

२। क्योंकि वह अपनी समझ में उस की चापलूसी करता है। और समझता है कि मेरा अधर्म्म कभी प्रगट होके घृणित न ठहरेगा॥

३। उस के मुंह की बातें अनर्थ और छल की हैं। उस ने बुद्धि और भलाई का काम करना छोड़ दिया है॥

४। वह अपने बिछौने पर पड़े पड़े अनर्थ युक्ति निकालता है। वह कुमार्ग पर अपने को दृढ़ करता है वह बुराई से घिन नहीं करता॥

५। हे प्रभु तेरी दया स्वर्ग में है। तेरी सच्चाई बादलों तक पहुंचती है॥

६। तेरा धर्म्म परमेश्वर के पर्व्वतों के सदृश है तेरे न्याय मानो गम्भीर समुद्र हैं। हे प्रभु तू मनुष्य और पशु दोनों को बचाता है॥

७। हे ईश्वर तेरी दया कैसी ही बहुमूल्य है। और मनुष्यवंशी तेरे पंखों की छाया तले शरण लेवेंगे॥

८। वे तेरे घर की चिकनाई से परितृप्त होवेंगे। और तू अपने बिलासरूपी नदी में से उन्हें पिलावेगा॥

९। क्योंकि तेरे पास जीवन का सोता है। तेरे उजियाले में हम उजियाला देखेंगे॥

१०। अपनी दया अपने जाननेहारों के लिये बढ़ा। और अपने धर्म्म को सीधे मनवालों के लिये॥

११। अहंकारी अपना पांव मुझ पर चलाने न पावे। और दुष्टों का हाथ मुझे भगाने न पावे॥

१२। उधर दुष्टकर्म्मी गिर पड़े हैं। वे ढकेले गये और फिर उठ नहीं सकते॥

संध्याकाल की प्रार्थना

स्तोत्र ३७।

१। कुकर्म्मियों के हेतु मत कुढ़। कुटिल कर्म करनेहारों के कारण मत जल॥

२। क्योंकि वे घास की नाईं शीघ्र कट जावेंगे। और नवतृण के समान मुर्झा जावेंगे॥

३। प्रभु पर भरोसा रख और भलाई कर। देश में रह जा और विश्वस्तता का अनुगमन कर॥

४। और प्रभु में मगन रह। तो वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा॥

५ अपना मार्ग प्रभु पर डाल और उस पर भरोसा रख। तो वह सब कुछ बना लेवेगा॥

६। और वह तेरा धर्म्म ज्योति की नाईं प्रगट करेगा। और तेरा न्याय दो पहर के उजियाले के समान॥

७। प्रभु के पास चुपचाप रह और उस के लिये धीरज धर। जो

अपने मार्ग में कृतार्थ हो होके चलता है और बुरी युक्तियां निकालता है उस के हेतु मत कुढ़ ॥

८। कोप से परे हो और क्रोध को छोड़ दे। मत कुढ़ नहीं तो बुराई ही होवेगी ॥

९। क्योंकि कुकर्म्मी काट डाले जावेंगे। पर जो प्रभु का आसरा देखते हैं सो पृथिवी को भाग में पावेंगे ॥

१०। वरन तनिक और समय में दुष्ट रहेगा भी नहीं। और तू उस के स्थान को भली भांति सोचके भी नहीं पावेगा ॥

११। परन्तु सौम्यस्वभाव पृथिवी को भाग में पावेंगे। और शान्ति की बहुतायत से मगन रहेंगे ॥

१२। दुष्ट धर्म्मी के बिरुद्ध युक्ति निकालता। और उस पर दांत पीसता है

१३। प्रभु उस पर हंसेगा। क्योंकि उस ने देखा है कि उस का दिन आता है ॥

१४। दुष्टों ने अपना खड्ग खींचा और अपना धनुष चढ़ाया है। जिस्तें वे दुःखी और दरिद्र को गिरावें और सीधे मार्गवालों को मार डालें ॥

१५। उन का खड्ग उन्हीं के हृदय में छिदेगा। और उन के धनुष टूट जावेंगे ॥

१६। धर्म्मी का थोड़ा सा भी जो हो। सो बहुत से दुष्टों के निधि से भी उत्तम है ॥

१७। क्योंकि दुष्टों की भुजाएं तोड़ी जावेंगी। पर प्रभु धर्म्मियों को थांभता है ॥

१८। प्रभु खरे लोगों के दिन जानता है। और उन का भाग सदा लों रहेगा ॥

१९। वे विपत्ति के समय लज्जित न होवेंगे। और अकाल के दिनों में वे तृप्त रहेंगे ॥

२० । परन्तु दुष्ट नष्ट होवेंगे और प्रभु के शत्रु खेत की सुथरी घास की नाईं सूखेंगे । वे मिट गये वे धूंआं होके बिलाय गये ॥

२१ । दुष्ट ऋण लेता और फेर नहीं देता । पर धर्म्मी करुणा करके दान देता है ॥

२२ । क्योंकि जो उस से आशीष् पाते हैं सो पृथिवी को भाग में पावेंगे । पर जो उस से स्रापित हुए हैं सो काट डाले जावेंगे ॥

२३ । सज्जन के डग प्रभु से दृढ़ किये जाते हैं । और वह उस के मार्ग से प्रसन्न रहता है ॥

२४ । यद्यपि वह गिरे तथापि भूमि लों न आवेगा । क्योंकि प्रभु उस का हाथ थांभे है ॥

२५ । मैं लड़का था और अब बूढ़ा हुआ । पर मैं ने कभी धर्म्मी को त्यक्त न उस के वंश को टुकड़े मांगते देखा ॥

२६ । वह दिन भर करुणा करता और उधार देता । और उस का वंश धन्य रहता है ॥

२७ । बुराई से दूर हो और भलाई कर । और सदा बसा रह ॥

२८ । क्योंकि प्रभु न्याय से प्रीति रखता और अपने भक्तों को न छोड़ेगा । वे सदा के लिये रक्षित हैं पर दुष्टों का वंश कट जावेगा ॥

२९ । धर्म्मी पृथिवी को भाग में पावेंगे । और उस पर सदा बसे रहेंगे ॥

३० । धर्म्मी का मुंह ज्ञान की चर्चा करता । और उस की जीभ न्याय की बात बोलती है ॥

३१ । उस के ईश्वर की व्यवस्था उस के हृदय में है । उस के डग टलेंगे नहीं ॥

३२ । दुष्ट धर्म्मी की ताक में रहता । और उसे मार डालने का यत्न करता है ॥

३३ । प्रभु उस को उस के हाथ में न छोड़ेगा । और जब उस का विचार किया जावे तब वह उसे दोषी न ठहरावेगा ॥

३४। प्रभु का आसरा देख और उस का मार्ग पालन कर। तो वह तुझे उन्नत करके पृथिवी को तेरे भाग में देगा जब दुष्ट काट डाले जावेंगे तब तू उसे देखेगा ॥

३५। मैं ने दुष्ट को बड़ा पराक्रमी देखा। और ऐसा फैलता हुआ जैसा कोई हरा पेड़ अपने निज देश में फैलता होवे ॥

३६। परन्तु लोग उस के पास से चले गये तो क्या देखा कि वह है ही नहीं। और मैं ने उस को ढूंढ़ा पर वह मिला नहीं ॥

३७। खरे को ताक और सीधे को देख रख। क्योंकि ऐसे पुरुष का परिणाम शान्ति है ॥

३८। पर अपराधी एक साथ नाश किये जावेंगे। दुष्टों का परिणाम भ्रष्ट है ॥

३९। और धर्म्मियों का त्राण प्रभु की ओर से होता है। कष्ट के समय वह उन का दृढ़ गढ़ होता है ॥

४०। और प्रभु उन की सहाय करता और उन्हें छुड़ाता है। वह उन को दुष्टों से छुड़ावेगा और उन्हें बचावेगा क्योंकि वे उस के शरणागत हैं ॥

आठवां दिन।

प्रातःकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र ३८।

१। हे प्रभु मुझे अपने रोष से न डांट। न अपने क्रोध से मेरी ताड़ना कर ॥

२। क्योंकि तेरे बाण मुझ में पैठ गये। और तेरा हाथ मुझ पर भारी पड़ा है ॥

३। तेरे क्रोध के कारण मेरे मांस में कुछ आरोग्य नहीं। और मेरे पाप के हेतु मेरी हड्डियों में कुशल नहीं॥

४। क्योंकि मेरे अधर्म्म मेरे सिर पर होके गये। भारी बोझ की नाईं वे मेरे सहने से अधिक हैं॥

५। मेरे घाव बसाते और सड़ गये। मेरी मूढ़ता के कारण से॥

६। मैं झुक गया मैं बहुत ही निहुड़ गया। दिन भर मैं शोक का पहिरावा पहिने हुए चलता हूं॥

७। क्योंकि मेरी कटि में जलन भरा हुआ है। और मेरे मांस में आरोग्य नहीं॥

८। मैं निर्बल हुआ और बहुत ही पिस गया। मैं ने अपने मन की घबराहट से चीत्कार किया है॥

९। हे प्रभु मेरी सारी अभिलाषा तेरे सन्मुख है। और मेरा कराहना तुझ से छिपा नहीं॥

१०। मेरा हृदय धड़कता है मेरा बल जाता रहा। वरन मेरे आंखों की ज्योति भी नहीं रही॥

११। मेरे मित्र और मेरे सङ्गी मेरी चोट से अलग खड़े हैं। वरन मेरे सम्बन्धी भी दूर खड़े हो गये हैं॥

१२। और मेरे प्राण के खोजियों ने फंदे लगाये। और मेरी हानि का यत्न करनेहारे खलता की बात बोलते और दिन भर छल के काम सोचते हैं॥

१३। पर मैं बहिरे की नाईं सुनता नहीं। और गूंगे के समान हुआ जो अपना मुंह नहीं खोलता॥

१४। मैं ऐसे मनुष्य के सदृश हो गया जो कुछ सुनता नहीं। और जिस के मुंह में उत्तर नहीं॥

१५। क्योंकि हे प्रभु मैं ने तेरी ही आशा धरी है। तू ही मेरे लिये उत्तर देगा हे प्रभु मेरे ईश्वर॥

१६। क्योंकि मैं ने कहा ऐसा न हो कि वे मुझ पर आनन्द करें। जब मेरा पांव टल गया तब उन्हों ने मुझ पर अपनी बड़ाई किई॥

१७। क्योंकि मैं तो अब लंगड़ाने ही पर हूं। और मेरा शोक निरन्तर मेरे साम्हने रहता है॥

१८। क्योंकि मैं अपना अधर्म्म बताऊंगा। मैं अपने पाप के कारण शोकित रहूंगा॥

१९। परन्तु मेरे शत्रु जीते और सामर्थी हैं। और जो मुझ से अकारण बैर रखते हैं सो बहुत हो गये हैं॥

२०। और जो भलाई की सन्ती बुराई करते हैं। सो इस की सन्ती कि मैं भलाई का पीछा करता हूं मुझ से द्वेष रखते हैं॥

२१। हे प्रभु मुझे न छोड़। हे मेरे ईश्वर मुझ से दूर न हो॥

२२। मेरी सहाय के लिये शीघ्र कर। हे प्रभु मेरे त्राण॥

—:०:—

स्तोत्र ३९।

१। मैं ने कहा मैं अपने मार्गों में चौकसी करूंगा न हो कि अपनी जीभ से पाप करूं। मैं ढाठी लगाके अपने मुंह की रक्षा करूंगा जब लों दुष्ट मेरे साम्हने रहे॥

२। मैं गूंगा रहा और मौन गहा मैं ने भलाई से भी अपना मुंह मूंद लिया। और मेरी पीड़ा बढ़ गई॥

३। मेरा हृदय मेरे भीतर जल उठा जब मैं सोच रहा था तब आग भड़क उठी। और मैं अपनी जीभ से बोल उठा॥

४। हे प्रभु मेरा अन्त मुझे जता और मेरे दिनों का परिमाण कि कितना है। मैं जान जाऊं कि मैं कैसा अस्थिर हूं॥

५। देख तू ने मेरे दिनों को चौवा भर का किया है और मेरी आयुर्दा तेरे साम्हने मानो कुछ है ही नहीं। सब मनुष्य अपनी उत्तम से उत्तम दशा में भी केवल व्यर्थ ही हैं॥

६। मनुष्य निरे भ्रम की छाया में चलता फिरता है उन की घबराहट सब व्यर्थ है। वह ढेर करता पर नहीं जानता कि किस के भण्डार में जावेगा॥

७। और अब हे प्रभु मैं ने किस बात की बाट जोही है। मेरी आशा तेरी ही ओर है॥

८। मुझे मेरे सब अपराधों से छुड़ा। मुझे मूर्ख से दुर्नाम न करा॥

९। मैं गूंगा हो गया मैं ने मुंह न खोला। क्योंकि तू ही ने यह किया है॥

१०। मुझ पर से अपना आघात दूर कर। मैं तेरे हाथ की मार से नष्ट हुआ॥

११। जब तू दपटों से मनुष्य को अधर्म्म के कारण ताड़ना देता है तब तू कीड़े की नाईं उस की मनभावनी वस्तु नाश करता है। सब मनुष्य निरे व्यर्थ ही हैं॥

१२। हे प्रभु मेरी प्रार्थना सुन और मेरी दोहाई पर कान धर मेरे आंसुओं के शब्द से कान न मूंद। क्योंकि मैं तेरे संग यात्री और अपने सब पुरखाओं के समान परदेशी हूं॥

१३। मुझे तनिक सांस लेने दे कि मेरा मुंह हरा हो जावे। उस से पहिले कि मैं जाता रहूं और फिर न रहूं॥

—:o:—

स्तोत्र ४०।

१। मैं ने धीरज से प्रभु का आसरा देखा। और उस ने मेरी ओर झुकके मेरी दोहाई सुनी॥

२। और उस ने मुझे भयंकर शब्दवाले गड़हे में से और दलदल के कीच में से निकाला। और मेरे पैरों को ऊंची चटान पर खड़ा किया और मेरे डगों को दृढ़ किया है॥

३। और उस ने मेरे मुंह में एक नया गीत डाला अर्थात् हमारे

ईश्वर की स्तुति । बहुतेरे देखके डरेंगे और प्रभु पर भरोसा रक्खेंगे ॥

४ । धन्य है वह पुरुष जिस ने प्रभु को अपना आधार किया है । और अभिमानियों और मिथ्या की ओर फिरनेहारों को ताकता भी नहीं ॥

५ । हे प्रभु मेरे ईश्वर तू ने बहुत से काम किये हैं अर्थात् तेरे आश्चर्य्यकर्म्म और तेरी युक्तियां जो तू हमारे लिये करता है । उन का कुछ व्योरा तेरे साम्हने नहीं हो सकता मैं तो बताता और कहता पर वे वर्णन से अधिक हैं ॥

६ । बलिदान और भेंट से तू प्रसन्न नहीं । तू ने मेरे कान खोले हैं सर्व्वहोम और पापबलि को तू ने नहीं चाहा ॥

७ । तब मैं ने कहा देख मैं आया हूं । पुस्तक के पुलिन्दे में मेरे लिये ऐसा लिखा हुआ ॥

८ । हे मेरे ईश्वर मैं तेरी इच्छा पूरी करने ही से प्रसन्न हूं । और तेरी व्यवस्था मेरे अन्त:करण में है ॥

९ । मैं ने बड़ी मण्डली में धर्म्म का सुसमाचार प्रचारा है । देख मैं अपने होंठ न रोकूंगा हे प्रभु तू इसे जानता है ॥

१० । मैं ने तेरा धर्म्म अपने हृदय के बीच नहीं छिपाया । मैं ने तेरी विश्वस्तता और त्राण की चर्चा किई मैं ने तेरी दया और सच्चाई बड़ी मण्डली से गुप्त नहीं रक्खी ॥

११ । तू भी हे प्रभु अपनी मया मुझ से न रोकेगा । तेरी दया और सच्चाई निरन्तर मेरी रक्षा करें ॥

१२ । क्योंकि अगण्य बुराइयों ने मुझे घेर लिया । मेरे अधर्म्मों ने मुझे पकड़ लिया और मैं ऊपर दृष्टि नहीं कर सकता वे मेरे सिर के बालों से भी अधिक हैं और मेरा प्राण निकल गया है ॥

१३ । हे प्रभु कृपा करके मुझे छुड़ा । हे प्रभु मेरी सहाय के लिये शीघ्र कर ॥

१४ । जो मेरे प्राण को नाश करने के लिये उस के खोजी हैं सो

लज्जित और अप्रतिष्ठित किये जावें। जो मेरी बुराई की इच्छा करते हैं सो पीछे हटाये और निरादर किये जावें॥

१५। जो मुझ से आहा आहा कहते हैं। सो अपनी लज्जा के मारे उजड़ जावें॥

१६। जितने तुझे ढूंढ़ते हैं सब तुझ में मगन और आनन्दित होवें। जो तेरे त्राण से प्रीति रखते हैं सो निरन्तर कहते रहें कि प्रभु की बड़ाई होवे॥

१७। और मैं तो दुःखी और दरिद्र हूं पर प्रभु मेरी चिन्ता करता है। तू मेरा सहायक और छुड़ानेहारा है हे मेरे ईश्वर बिलम्ब न कर॥

संध्याकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र ४१

१। धन्य है वह जो कंगाल की सुधि लेता है। विपत्ति के दिन प्रभु उस को छुड़ावेगा॥

२। प्रभु उस की रक्षा करेगा और उसे जीता रक्खेगा। वह पृथिवी पर भाग्यवान होगा और तू उस को उस के शत्रुओं की इच्छा पर न छोड़॥

३। प्रभु रोग के सेज पर उस को सम्भालेगा। तू उस के रोग में उस के सारे बिछौने को उलटके बिछावेगा॥

४। मैं ने तो कहा हे प्रभु मुझ पर करुणा कर। मेरे जीव को चंगा कर कि मैं ने तेरा पाप किया है॥

५। मेरे शत्रु मेरी बुराई की बात कहते हैं। कि वह कब मरेगा और उस का नाम कब मिटेगा॥

६। और यदि वह मुझे देखने आता है तो वह व्यर्थ बकता

है। अपने लिये अनर्थ बातें बटोरता तब बाहर जाके उसे सड़क में फैलाता है॥

७। मेरे सब बैरी मेरे विरुद्ध मिलके कानाफूसी करते। वे मेरे विरुद्ध मेरी बुराई की युक्ति करते हैं॥

८। "किसी बुराई ने उसे पकड़ा है। और वह जो अब पड़ा है फिर कभी उठेगा नहीं" ॥

९। वरन मेरे सखा ने जिस पर मैं भरोसा रखता था जो मेरी रोटी में से खाता था। मेरे विरुद्ध लात उठाई है॥

१०। पर तू हे प्रभु मुझ पर करुणा करके मुझ को उठा। तो मैं उन को प्रतिफल देऊंगा॥

११। इस से मैं जान गया कि तू मुझ से प्रसन्न है। कि मेरा शत्रु मुझ पर जयध्वनि करने नहीं पाता॥

१२। और मुझे तो तू मेरी खराई में थाम्भता। और सदा के लिये अपने सन्मुख स्थिर करता है॥

१३। धन्य होवे प्रभु यिस्राएल् का ईश्वर। अनादि काल से अनन्त काल लों आमेन् और आमेन्॥

—:o:—

स्तोत्र ४२।

१। जैसे हरिणी जल के प्रवाहों के लिये हांफती है। तैसे ही हे ईश्वर मेरा जीव तेरे लिये हांफता है॥

२। मेरा जीव ईश्वर जीवते परमेश्वर का प्यासा है। मैं कब आके ईश्वर के साम्हने उपस्थित होऊंगा॥

३। मेरे आंसू रात दिन मेरी रोटी भये हैं। जब लोग दिन भर मुझ से कहते हैं कि तेरा ईश्वर कहां है॥

४। ये बातें मैं स्मरण करके अपने जीव को अपने ऊपर उंडेलता हूं। कि मैं समाज के साथ साथ चला जाता था मैं उन के संग

ईश्वर के घर लों धूमधाम से जाता था ऊंचे स्वर के गीत और धन्यवाद के साथ उत्सव करनेहारों की भीड़ के बीच ॥

५। हे मेरे जीव तू क्यों गिरा जाता और मेरे ऊपर क्यों पड़ा कुढ़ता है। ईश्वर की आशा रख क्योंकि मैं फिर उस के मुख के त्राण के कारण उस का धन्यवाद करूंगा ॥

६। हे मेरे ईश्वर मेरा जीव मेरे ऊपर गिरा जाता है। इस लिये मैं तुझे यर्दन और हेर्मोनों के देश से मिसार के पर्व्वत पर से स्मरण करूंगा ॥

७। तेरे मेघसुण्डों के शब्द से गहिराव गहिराव को पुकारता है। तेरे सारे तरङ्ग और ढेउ मेरे ऊपर से गये हैं ॥

८। दिन को प्रभु अपनी दया की आज्ञा देवेगा। और रात को उस का गीत मेरे संग रहेगा और मेरे जीवन के परमेश्वर से मेरी प्रार्थना होगी ॥

९। मैं परमेश्वर अपनी ऊंची चटान से कहूंगा तू ने क्यों मुझे बिसरा दिया है। मैं शत्रु के अन्धेर से क्यों शोक का पहिरावा पहिरे हुए फिरता हूं ॥

१०। मेरे रिपु मुझे चिढ़ाते हैं मानो मेरी हड्डियों में कटार छेदते हैं। कि वे दिन भर मुझ से कहते हैं तेरा ईश्वर कहां है ॥

११। हे मेरे जीव तू क्यों गिरा जाता और मेरे ऊपर क्यों पड़ा कुढ़ता है। ईश्वर की आशा रख कि मैं फिर उस का धन्यवाद करूंगा जो मेरे मुख का त्राण और मेरा ईश्वर है ॥

—:o:—

स्तोत्र ४३

१। हे ईश्वर मेरा न्याय कर और अभक्त जाति से मेरा झगड़ा चुका। मुझे छली और कुटिल पुरुष से छुड़ा ॥

२। क्योंकि तू मेरा दृढ़ गढ़रूपी ईश्वर है तू ने क्यों मुझे मन से उतार दिया है। मैं क्यों शत्रु के अन्धेर से शोक का पहिरावा पहिने हुए फिरता हूं॥

३। अपना प्रकाश और अपना सत्य भेज वे मेरी अगुवाई करें। वे मुझ को तेरे पवित्र पर्व्वत और तेरे वासस्थान लों पहुंचावें॥

४। तो मैं ईश्वर की वेदी पर उस परमेश्वर के पास जो मेरा अति आह्लाद है जाऊंगा। और बीणा से तेरा धन्यवाद करूंगा हे ईश्वर मेरे ईश्वर॥

५। हे मेरे जीव तू क्यों गिरा जाता और मेरे ऊपर क्यों पड़ा कुढ़ता है। ईश्वर की आशा रख क्योंकि मैं फिर उस का धन्यवाद करूंगा जो मेरे मुख का त्राण और मेरा ईश्वर है॥

नवां दिन।

प्रातःकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र ४४।

१। हे ईश्वर हम ने अपने कानों सुना हमारे पुरखाओं ने हम से उस कर्म्म का वर्णन किया। जो तू ने उन के दिनों प्राचीनकाल में किया था॥

२। तू ने अपने हाथ से जातियों को निकाल दिया और इन्हें रोपा। तू ने लोकगणों को दुःख दिया पर इन्हें फैला दिया॥

३। क्योंकि वे अपने खड्ग से देश के अधिकारी न भये और न उन की भुजा ने उन्हें बचाया। पर तेरे दहिने हाथ और तेरी भुजा और तेरे मुख के प्रकाश ने बचाया क्योंकि तू उन को चाहता था॥

४। हे ईश्वर तू ही मेरा राजा है। याकोब् के त्राण होने की आज्ञा दे॥

५। तेरे द्वारा हम अपने रिपुओं को ढकेल देंगे। तेरे नाम के द्वारा हम अपने बिरोधियों को रौंदेंगे ॥

६। क्योंकि मैं अपने धनुष पर भरोसा न रक्खूंगा। और न मेरी तलवार मुझे बचावेगी ॥

७। पर तू ने हम को हमारे रिपुओं से बचाया। और हमारे बैरियों को लज्जित किया ॥

८। हम ईश्वर पर दिन भर घमण्ड करते हैं। और सर्वदा तेरे नाम का धन्यवाद करेंगे ॥

९। परन्तु तू ने हम को मन से उतार दिया और निरादर किया है। और हमारी सेनाओं के साथ पयान नहीं करता ॥

१०। तू ने रिपु के साम्हने से हम को पीछे हटा दिया है। और हमारे बैरी अपनी इच्छा के अनुसार लूट लेते हैं ॥

११। तू ने हम को भेड़ों के सदृश किया कि हम खाये जावें। और हम को जातियों में छितरा देता है ॥

१२। तू अपने निज लोकों को बिना दाम बेच डालता। और उन के मोल से कुछ लाभ नहीं उठाता ॥

१३। तू हम को हमारे पड़ोसियों में दुर्नाम करता है। हमारी चारों ओर के रहनेहारों के ठट्ठे और हंसी का कारण ॥

१४। तू हम को ऐसे बनाता है कि जातिगण हमारा पटतर देते हैं। लोकगणों के बीच सिर हिलाने का कारण ॥

१५। दिन भर मेरा अनादर मेरे साम्हने रहता है। और मेरे मुंह की लज्जा ने मुझे ढांप लिया है ॥

१६। चिढ़ानेहारे और निन्दक की बाणी से। शत्रु और अपना पलटा लेनेहारे के कारण से ॥

१७। यह सब कुछ हम पर बीता। तौ भी हम तुझे नहीं भूले न तेरी वाचा को तोड़ा है ॥

१८। हमारा हृदय पीछे नहीं हटा। न हमारे डग तेरे पथ से भटक गये हैं॥

१९। पर तौ भी तू ने हम को पीसके शृगालों का स्थान बना दिया। और हम को मृत्युच्छाया से ढांप दिया है॥

२०। यदि हम अपने ईश्वर का नाम भूल जाते। अथवा पराये देव की ओर अपने हाथ फैलाते॥

२१। तो क्या ईश्वर इस की खोज न करता। क्योंकि वह तो मन की गुप्त बातों को जानता है॥

२२। बरन हम तेरे ही निमित्त दिन भर मार डाले जाते हैं। हम बधहोनेहारी भेड़ों की नाईं गिने गये हैं॥

२३। उठ क्यों सोया रहता है हे प्रभु। जग हम को सदा के लिये मन से न उतार॥

२४। तू क्यों अपना मुख छिपाता। और हमारे दुःख और अन्धेर को भूल जाता है॥

२५। क्योंकि हमारा जीव धूलि लों झुक गया। हमारा पेट भूमि से सट गया है॥

२६। हमारी सहाय के लिये खड़ा हो। और अपनी दया के निमित्त हम को छुड़ा ले॥

—:0:—

स्तोत्र ४५।

१। मेरे हृदय में भला वचन उबल रहा है जो मैं ने राजा के विषय में बनाया है उसको उच्चारता हूं। मेरी जीभ चटक लेखक की लेखनी है॥

२। तू अति सुन्दर है मनुष्यजाति से भी अधिक। अनुग्रह तेरे होंठों पर ढाला गया इस लिये ईश्वर ने तुझे सदा के लिये आशीष दिई है॥

३। हे बीर अपना खड्ग कसके अपनी जांघ पर लटका। अर्थात् अपने विभव और गौरव को॥

४। और अपने गौरव से अस्वार होके सत्य और सौम्यतायुक्त धर्म्म के निमित्त लड़ने में कृतार्थ हो। और तेरा दहिना हाथ तुझे भयानक भयानक काम सिखावेगा॥

५। तेरे बाण नोकीले हैं लोकगण तेरे नीचे गिरते हैं। वे राजा के शत्रुओं के हृदय में छिदे हैं॥

६। हे ईश्वर तेरा सिंहासन युगानयुग का है। तेरे राज्य का दण्ड सच्चाई का दण्ड है॥

७। तू ने धर्म्म से प्रीति और दुष्टता से बैर रक्खा है। इस कारण से ईश्वर अर्थात् तेरे ईश्वर ने तुझे तेरे संगियों से अधिक आह्लादरूपी तेल से अभिषेक किया है॥

८। तेरे सारे वस्त्र मुर्र और अगरयुक्त तज से सुगन्धित हैं हाथीदांत के मन्दिरों के द्वारा लोगों ने तुझे आनन्दित किया है॥

९। तेरी प्रतिष्ठित स्त्रियों में राजपुत्रियां भी थीं। पटरानी ओफीर् के कुन्दन से विभूषित होके तेरी दहिनी ओर खड़ी थी॥

१०। हे पुत्री सुन और ध्यान कर और अपना कान झुका। और अपने लोगों और अपने पिता के घराने को भूल जा॥

११। तो राजा तेरी सुन्दरता की आकांक्षा करेगा। क्योंकि वह तेरा प्रभु है सो तू उसे दण्डवत कर॥

१२। और सोर् की पुत्री भेट लिये हुए उपस्थित होगी और प्रजा के धनवन्त तुझे प्रसन्न करने का यत्न करेंगे॥

१३। राजपुत्री भीतरवार सम्पूर्ण महिमायुक्त है। उस के वस्त्र में सोनहले बूटे कढ़े हुए हैं॥

१४। वह बूटे काढ़े हुए वस्त्र पहिने हुए राजा के पास पहुंचाई

जावेंगी। जो कुमारियां उस की सहेलियां होके उस के पीछे पीछे चलती हैं सो भी तेरे पास पहुंचाई जावेंगी ॥

१५। वे आनन्द और आह्लाद से पहुंचाई जावेंगी। वे राजा के मन्दिर में प्रवेश करेंगी ॥

१६। तेरे पुरखाओं की सन्ती तेरे पुत्र होवेंगे। जिन को तू सारी पृथिवी पर अधिपति ठहरावेगा ॥

१७। मैं पीढ़ी से पीढ़ी लों तेरे नाम की चर्चा करा देऊंगा। इस लिये लोकगण युगानयुग तेरा धन्यवाद करते रहेंगे ॥

—:o:—

स्तोत्र ४६।

१। ईश्वर हमारा शरणस्थान और बल है। ऐसा सहायक है जो कष्टों में अतिसहज से मिलता है ॥

२। इस लिये हम न डरेंगे यद्यपि पृथिवी उलट जावे। यद्यपि पहाड़ समुद्रों के मध्य में डोल उठें ॥

३। यद्यपि समुद्र का जल महाशब्द मचावे और फेनावे। और पहाड़ उस की घमण्ड से कांप उठें ॥

४। एक नदी है जिस की नालियां ईश्वर के नगरी को आनन्दित करेंगी। परात्पर के पवित्र वासस्थान को ॥

५। ईश्वर उस के बीच में है वह न टलेगी। ईश्वर भोर होते ही उस की सहाय करेगा ॥

६। जातियों ने महाशब्द मचाया राज्य टल गये। उस ने अपनी वाणी उच्चारी तो पृथिवी पिघल गई ॥

७। सेनाओं का प्रभु हमारे संग है। याकोब् का ईश्वर हमारा ऊंचा गढ़ है ॥

८। आओ प्रभु के महाकर्म्म देखो। जिसने पृथिवी पर उजाड़ किये हैं ॥

९। वह पृथिवी के सिवाने लों लड़ाइयों को थाम्भता है। वह धनुष तोड़ता और बर्छी को दो टुकड़े करता वह रथों को आग से जला देता है॥

१०। रह जाओ और जान लेओ कि मैं ईश्वर हूं। मैं जातियों में उन्नत हूंगा मैं पृथिवी पर उन्नत होऊंगा॥

११। सेनाओं का प्रभु हमारे संग है। याकोब् का ईश्वर हमारा ऊंचा गढ़ है॥

संध्याकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र ४७।

१। हे समस्त लोकगणो तालियां बजाओ। ऊंचे स्वर करके ईश्वर के लिये आनन्द से ललकारो॥

२। क्योंकि प्रभु परात्पर और भयानक है। वह सारी पृथिवी के ऊपर महान् राजा है॥

३। वह लोकगणों को हमारे तले दबाता है। और जातियों को हमारे पैरों के नीचे॥

४। वह हमारा निज भाग हमारे लिये चुन लेता है। याकोब् की बड़ाई के कारण को जिसे उस ने प्यार किया है॥

५। ईश्वर आनन्द की ललकार सहित ऊपर चढ़ गया। प्रभु नरसिंगे के शब्द के साथ॥

६। ईश्वर का स्तुतिगान करो स्तुतिगान करो। हमारे राजा का स्तुतिगान करो स्तुतिगान करो॥

७। क्योंकि ईश्वर सारी पृथिवी का राजा है। समझ बूझके स्तुतिगान करो॥

८। ईश्वर जातियों के ऊपर राज्य करने लगा। ईश्वर अपने पवित्र सिंहासन पर बिराजमान हुआ है॥

६ । लोकगणों के अध्यक्ष अब्राहाम् के ईश्वर का लोकगण होने के लिये एकट्ठे भये हैं । क्योंकि पृथिवी की फरियां ईश्वर की है वह अति उन्नत हुआ है ॥

—:०:—

स्तोत्र ४८ ।

१ । प्रभु महान् और अत्यन्त स्तुत्य है। हमारे ईश्वर के नगर में उसके पवित्र पर्व्वत पर ॥

२ । सिय्योन् का पर्व्वत ऊंचाई में सुन्दर सारी पृथिवी के आह्लाद का कारण है । उत्तर के कोने में महाराज की राजधानी ॥

३ । ईश्वर उस के महलों में । ऊंचा गढ़ जाना गया है ॥

४ । क्योंकि देख राजा एकट्ठे भये । वे एक संग उधर से चले गये ॥

५ । उन्हों ने आप ही देखा देखते ही घबरा गये । वे व्याकुल भये अति आतुर हो गये ॥

६ । वहीं उनको कंपकंपी ने पकड़ा । और जनती हुई स्त्री की नाईं पीरें लगीं ॥

७ । तू पूरबी वायु से । तर्शीश् की नावों को तोड़ डालता है ॥

८ । जैसा हम ने सुना था तैसा ही हम ने सेनाओं के प्रभु के नगर में हमारे ईश्वर के नगर में अब देखा है । ईश्वर उस को सदा के लिये स्थिर करेगा ॥

९ । हे ईश्वर हम ने तेरे मन्दिर के भीतर । तेरी दया पर ध्यान किया है ॥

१० । हे ईश्वर जैसा तेरा नाम है तैसी ही तेरी स्तुति भी पृथिवी के अन्तदेशों लों होती है । तेरा दहिना हाथ धर्म्म से भरपूर है ॥

११ । सिय्योन् पर्व्वत आनन्द करे यहूदा की पुत्रियां आह्लादित होवें । तेरे न्यायों के कारण से ॥

१२। सिय्योन् की चारों ओर घूमो और उसकी प्रदक्षिणा करो। उस के गुम्मटों को गिनो ॥

१३। उस की भीत पर मन लगाओ उस के महलों को ध्यान से देखो। जिस्तें तुम आनेवाली पीढ़ी से वर्णन कर सको ॥

१४। कि यह ईश्वर युगानयुग हमारा ईश्वर रहेगा। वह मृत्यु के पार लों हमारी अगुवाई करेगा ॥

—:o:—

स्तोत्र ४६।

१। हे समस्त लोकगणो यह सुनो। हे संसार के सब बासियो कान लगाओ ॥

२। कुलीनो और अकुलीनो। धनवन्तो और दरिद्रो सब के सब ॥

३। मेरा मुंह ज्ञान की बातें बोलेगा। और मेरे हृदय के ध्यान बुद्धि की बातें होवेंगे ॥

४। मैं दृष्टान्त की ओर अपना कान झुकाऊंगा। मैं अपनी पहेली को बीणा के संग स्पष्ट वर्णन करूंगा ॥

५ मैं बुराई के दिनों में क्यों डरूं। जब मेरी एड़ियों का अधर्म्म मुझे घेर रक्खे ॥

६। जो अपनी सम्पत्ति पर भरोसा रखते हैं। और अपने धन की बहुतायत पर घमण्ड करते हैं ॥

७। उन में से कोई अपने भाई को कदापि छुड़ा ले नहीं सकता। न ईश्वर को उस का प्रायश्चित्त दे सकता है ॥

८। क्योंकि उन के जीव के उद्धार का दाम अति अधिक है। और कभी प्राप्त नहीं होवेगा ॥

९। अर्थात् यह कि कोई सदा जीता रहे। और सड़ाहट को न देखे ॥

१०। वरन उस को उसे देखना ही पड़ेगा। क्योंकि ज्ञानी भी मरते

हैं अभिमानी मूर्ख और पशुवत् मनुष्य दोनों नष्ट होते हैं और अपनी सम्पत्ति औरों के लिये छोड़ जाते हैं ॥

११ । उन का अन्तःकरण कहता है कि हमारे घर सदा के लिये हैं और हमारे वासस्थान पीढ़ी से पीढ़ी लों बने रहेंगे । वे अपनी भूमियों पर अपना अपना नाम रखते हैं ॥

१२ । परन्तु मनुष्य प्रतिष्ठा में आके ठहरता नहीं । वह पशुओं के समान होता है जो नाश होते हैं ॥

१३ । उन की यह चाल उन की अभिमानयुक्त मूर्खता है । और उन के पीछे जो आते हैं सो उनकी बात की प्रशंसा करते हैं ॥

१४ । वे भेड़ों की नाईं पाताल में रक्खे गये हैं मृत्यु उन की चरवाही करेगी । और सीधे लोग बिहान को उन पर प्रभुता करेंगे और उन का रूप पाताल में उन के चोले में से नाश हो जावेगा ॥

१५ । परन्तु ईश्वर मेरे जीव को पाताल के हाथ से छुड़ा लेगा । कि वह मुझे समेट लेवेगा ॥

१६ । तू मत डर यद्यपि कोई पुरुष धनी होवे । यद्यपि उस के घर की महिमा बढ़ जावे ॥

१७ । क्योंकि वह अपने मरणकाल में कुछ न ले जावेगा । उस की महिमा उस के पीछे न उतरेगी ॥

१८ । यद्यपि वह जीते जी अपने जीव को धन्य कहता था । और जब तू अपनी भलाई करे तब लोग तेरी प्रशंसा करेंगे ॥

१९ । तथापि तुझे अपने पुरखाओं की पीढ़ी के पास जाना ही पड़ेगा । जो कभी उंजियाले को न देखेंगे ॥

२० । मनुष्य प्रतिष्ठित हो पर बुद्धिहीन रहे । तो वह पशुओं के समान है जो नाश हो जाते हैं ॥

—:o:—

दसवां दिन ।

प्रातःकाल की प्रार्थना ।

स्तोत्र ५० ।

१ । परमेश्वर ईश्वर प्रभु बोला है । और पृथिवी को सूर्य्य के उदयस्थान से उस के अस्तस्थान लों बुलाया है ॥

२ । सिय्योन् में से जो पूर्ण सुन्दरता की खानि है । ईश्वर उजागर भया है ॥

३ । हमारा ईश्वर आवेगा और वह चुप न रहेगा । उस के आगे आग भस्म करती जावेगी और उस की चारों ओर बड़ी आंधी चलेगी ॥

४ । वह ऊपर स्वर्ग को पुकारेगा । और पृथिवी को कि वह अपनी प्रजा का न्याय करे ॥

५ । मेरे भक्तों को मेरे पास एकट्ठा करो । जिन्हों ने बलिदान के द्वारा मुझ से बाचा बांधी है ॥

६ । और स्वर्ग उसका धर्म्म बतावेगा । क्योंकि ईश्वर आप ही न्यायी है ॥

७ । हे मेरे निज लोगो सुनो तो मैं बोलूंगा हे यिस्राएल् कान धर तो मैं तुझे साक्षी देके कहूंगा । कि ईश्वर तेरा ईश्वर मैं ही हूं ॥

८ । मुझ को तेरे बलिदानों के कारण तुझे डांटना नहीं है । तेरे सर्व्वहोम तो निरन्तर मेरे साम्हने हैं ॥

९ । मैं तेरे घर से कोई बैल न लेऊंगा । न तेरी भेड़शालाओं में से कोई बकरा ॥

१० । क्योंकि अरण्य के सारे जीव जन्तु मेरे हैं । और पशु जो सहस्र पहाड़ों पर चरते हैं ॥

११ । मैं पहाड़ों का प्रत्येक पंछी जानता हूं । और चौगान पर जो कुछ चरता है सो मेरे पास है ॥

१२ । यदि मैं भूखा होता तो मैं तुझ से न कहता । क्योंकि जगत और उस की भरपूरी मेरी है ॥

१३ । क्या मैं सांड़ों का मांस खाऊंगा । अथवा बकरों का लहू पीऊंगा ॥

१४ । ईश्वर को धन्यवाद का बलिदान चढ़ा । और परात्पर के लिये अपनी मनौतियां पूरी कर ॥

१५ । और कष्ट के दिन मुझे पुकार । तो मैं तुझे छुड़ाऊंगा और तू मेरी महिमा करेगा ॥

१६ । परन्तु दुष्ट को ईश्वर कहता । कि तुझे मेरे विधिन का वर्णन करने से और मेरी बाचा का अपनी जीभ पर लेने से क्या काम ॥

१७ । तू तो शासन से बैर रखता । और मेरे वचनों को अपने पीछे फेंक देता है ॥

१८ । जब तू ने चोर को देखा तो तू उस की संगति से प्रसन्न भया । और तेरा भाग पर स्त्रीगामियों के संग हो गया ॥

१९ । तू अपना मुंह बुराई के लिये खोलता है । और अपनी जीभ से छल गढ़ता है ॥

२० । तू बैठ के अपने भाई के विरुद्ध बोलता है । तू अपने सहो-दर की चुगली खाता है ॥

२१ । ये काम तू ने किये और मैं चुप रहा । तू ने समझ लिया कि मैं तेरे ही समान हूं परन्तु मैं तुझे डांटूंगा और तेरी आंखों के साम्हने सब कुछ पृथक् पृथक् रक्खूंगा ॥

२२ । हे ईश्वर के बिसरानेहारो यह बिचारियो । न हो कि मैं तुम्हें फाड़ डालूं और कोई छुड़ानेहारा न होवे ॥

२३। जो धन्यवाद का बलिदान करता है सो मेरी महिमा करता है। और जो कोई अपना मार्ग सिद्ध करता है उस को मैं ईश्वर का त्राण दिखाऊंगा ॥

—:०:—

स्तोत्र ५१

१। हे ईश्वर अपनी दया के अनुसार मुझ पर करुणा कर। अपने छोह की अधिकाई के अनुसार मेरे अपराधों को मेट दे ॥

२। मेरे अधर्म्म से मुझ को भली भांति धो। और मेरे पाप से मुझे शुद्ध कर ॥

३। क्योंकि मैं अपने अपराधों को जानता हूं। और मेरा पाप निरन्तर मेरे साम्हने है ॥

४। मैं ने तेरा केवल तेरा ही पाप किया और जो तेरी दृष्टि में बुरा है सो ही किया। जिस्तें तू बोलने में धर्म्मी और न्याय करने में खरा ठहरे ॥

५। देख अधर्म्म में मेरा पिण्ड बना। और पाप के साथ मेरी मा ने मुझे गर्भ में लिया ॥

६। देख तू अन्तर की सच्चाई से प्रसन्न होता है। और मुझे भीतर में ज्ञान सिखावेगा ॥

७। हाय कि तू मुझे एजोब् से पावन करता तो मैं शुद्ध हो जाता। हाय कि तू मुझे धोता तो मैं हिम से अधिक श्वेत होता ॥

८। हाय कि तू मुझे आनन्द और आह्लाद का शब्द सुनाता। तो जो हड्डियां तू ने पीस डालीं सो हर्षित होतीं ॥

९। मेरे पापों से अपना मुंह छिपा। और मेरे सब अधर्म्म को मिटा दे ॥

१०। हे ईश्वर मेरे लिये एक शुद्ध हृदय सिरज। और भीतर मेरे आत्मा को नवीन और स्थिर बना ॥

११। मुझ को अपने साम्हने से हांक न दे। और अपना पवित्र आत्मा मुझ से ले न ले॥

१२। अपने त्राण का आह्लाद मुझे फेर दे। और निर्बन्ध आत्मा देके मुझे सम्भाल॥

१३। तो मैं अपराधियों को तेरे मार्ग सिखाऊंगा। और पापी तेरी ओर फिरेंगे॥

१४। हे ईश्वर मेरे त्राण के ईश्वर मुझे रक्तपात के पाप से छुड़ा। तो मेरी जीभ ऊंचे स्वर से तेरे धर्म्म की स्तुति गावेगी॥

१५। हाय कि तू हे प्रभु मेरे होंठों को खोलता। तो मेरा मुंह तेरा गुणानुवाद करता॥

१६। क्योंकि तू बलिदान से प्रसन्न नहीं होता नहीं तो मैं देता। सर्वहोम की तू इच्छा नहीं करता॥

१७। ईश्वर के बलिदान चूर्ण आत्मा हैं। हे ईश्वर तू चूर्ण और कुचले हृदय को तुच्छ न समझेगा॥

१८। अपनी प्रसन्नता से सिय्योन् की भलाई कर। यरूशलेम् की भीतों को बना॥

१९। तब तू धर्म्म के बलिदानों से सर्वहोम और सम्पूर्ण होमों से प्रसन्न होवेगा। तब लोग तेरी वेदी पर बैल चढ़ावेंगे॥

—:o:—

स्तोत्र ५२

१। हे बीर तू बुराई पर क्यों घमण्ड करता है। परमेश्वर की दया दिन भर रहती है॥

२। तेरी जीभ खलता की युक्ति करती है। तीक्ष्ण किये हुए छुरे की नाईं वह छलका करती है॥

३। तू ने भलाई से अधिक बुराई को। धर्म्म की बात कहने से अधिक झूठ को प्यार किया है॥

४। तू ने सब बिनाशक वचनों से प्रीति रक्खी। हे छली जीभ॥

५। परमेश्वर भी तुझे सदा के लिये ढा देवेगा। वह तुझ को पकड़ के डेरे से दूर हांक देगा और जीवन के लोक से उखाड़ डालेगा॥

६। और धर्म्मी देखके डरेंगे। और उस पर हंसेंगे॥

७। कि "देख उस पुरुष को जिस ने ईश्वर को अपना दृढ़ गढ़ न बनाया। पर अपने धन की बहुतायत पर भरोसा रक्खा और अपनी खलता में अपने को दृढ़ किया"॥

८। परन्तु मैं ईश्वर के घर में हरी जलपाई के समान हूं। मैं ने ईश्वर की दया पर युगानयुग के लिये भरोसा रक्खा है॥

९। मैं सदा तेरा धन्यवाद करूंगा क्योंकि तू ने यह सब कुछ किया है। और मैं तेरे भक्तों के साम्हने तेरे नाम का आसरा देखूंगा क्योंकि वह भला है॥

संध्याकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र ५३।

१। मूढ ने अपने मन में कहा है कि ईश्वर है ही नहीं। वे बिगड़ गये वे कुटिलता करके घिनौने हो गये सुकर्म्मी कोई नहीं॥

२। ईश्वर ने स्वर्ग पर से मनुष्यजाति पर झांका है। कि देखे कि कोई बुद्धि के अनुसार चलता और ईश्वर को खोजता है कि नहीं॥

३। सब के सब हट गये सब एक समान घिनौने भये। कोई सुकर्म्मी नहीं एक भी नहीं॥

४। क्या वे सब दुष्टकर्म्मी कुछ ज्ञान नहीं रखते। ऐसे मेरे निज लोगों को वे खा जाते हैं मानो रोटी खाते हैं उन्हों ने ईश्वर को नहीं पुकारा॥

५। उधर वे भयभीत भये जहां कुछ भय न था। क्योंकि जो

तुझे घेरता था उस की हड्डियां ईश्वर ने बियरा दिई हैं तू ने उन को लज्जित किया क्योंकि ईश्वर ने उन्हें अग्राह्य किया ॥

६ । हाय कि यिस्राएल् का त्राण सिय्योन् से निकलता । जब ईश्वर अपने निज लोगों की बंधुवाई की ओर फिरेगा तब याकोब् आह्लादित और यिस्राएल् आनन्दित होवेगा ॥

—:o:—

स्तोत्र ५४ ।

१ । हे ईश्वर मुझे अपने नाम से बचा । और अपने पराक्रम से मेरा न्याय चुका ॥

२ । हे ईश्वर मेरी प्रार्थना सुन । मेरे मुंह के वाक्यों की ओर कान लगा ॥

३ । क्योंकि परदेशी मेरे विरुद्ध उठे और बलात्कारी मेरे प्राण के खोजी भये हैं । उन्हों ने ईश्वर को अपने साम्हने नहीं रक्खा ॥

४ । देखो ईश्वर मेरा सहायक है । प्रभु मेरे जीव के सम्भालने-हारों में से है ॥

५ । वह मेरे रिपुओं की बुराई उन पर लौटा देवेगा । अपनी सच्चाई से उन्हें ध्वंस कर ॥

६ । मैं स्वेच्छापूर्वक तुझे बलिदान चढ़ाऊंगा । हे प्रभु मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूंगा क्योंकि भला है ॥

७ । क्योंकि उस ने मुझे सारे कष्ट से छुडाया है । और मेरी आंख ने मेरे शत्रुओं पर दृष्टि किई है ॥

—:o:—

स्तोत्र ५५ ।

१ । हे ईश्वर मेरी प्रार्थना की ओर कान लगा । और मेरी विनती से अपने को न छिपा ॥

२। मेरी ओर कान धर और मुझे उत्तर दे। मैं दोहाई देता हुआ घूमता फिरता और कराहता हूं॥

३। शत्रु के शब्द और दुष्ट के अत्याचार के कारण से। कि वे मुझ से अनर्थ करते और कोप करके मुझे सताते हैं॥

४। मेरा मन मेरे भीतर संकट में है। और मृत्यु का डर मुझ पर पड़ा है॥

५। भय और कंपकंपी ने मुझे पकड़ा। और अंधियारा मुझ पर छा गया है॥

६। और मैं ने कहा हाय कि मेरे कबूतर के से पंख होते। तो मैं उड़ जाके विश्राम पाता॥

७। देख मैं घूमते घूमते दूर लों चला जाता। मैं बन में टिकता॥

८। मैं शीघ्र करता और प्रचण्ड बयार और आंधी से। शरण लेता॥

९। हे प्रभु भस्म कर उन की भाषाओं को भिन्न भिन्न कर। क्योंकि मैं ने नगर में अत्याचार और झगड़ा देखा है॥

१०। रात और दिन वे उस की भीतों पर चढ़के उस की चारों ओर घूमते हैं। और अनर्थ काम और उपद्रव उस के बीच होते हैं॥

११। खलता उस के बीच में है। और अन्धेर और छल उस के चौक में से नहीं हटते॥

१२। क्योंकि जो मुझे चिढ़ाता था सो शत्रु न था नहीं तो मैं सहता। जो मेरे ऊपर अपनी बड़ाई करता था सो मेरा बैरी न था। नहीं तो मैं उस से छिप जाता॥

१३। परन्तु तू ही था अर्थात् मानो मेरी बरोबरी का मनुष्य। मेरा संगी और जानपहिचान॥

१४। हम आपस में कैसा मधुर संलाप करते थे। हम एक मन होके ईश्वर के घर में जाते थे॥

१५। वे उजड़ जावें वे जीते जी पाताल में उतरें। क्योंकि बुराई

उन के बासस्थान में वरन उन के अन्तःकरण में भी है ॥

१६। मैं तो ईश्वर को पुकारूंगा। और प्रभु मुझे बचावेगा ॥

१७। सांझ को और बिहान को और दो पहर को मैं दोहाई दूंगा और कराहूंगा। और वह मेरी वाणी को सुनेगा ॥

१८। उस ने मेरे जीव को उस लड़ाई से जो मेरे बिरुद्ध खड़ी हुई थी कुशल से छुड़ा लिया। क्योंकि उन्हों ने बहुत से होके मेरा साम्हना किया था ॥

१९। परमेश्वर सुनके उन को उत्तर देवेगा और वह तो प्राचीन-काल से बिराजमान है। उन पर अदल बदल नहीं आती और वे ईश्वर का भय नहीं मानते ॥

२०। जो उस से मेलमिलाप रखते थे उन पर उस ने हाथ चलाया। उस ने अपनी बाचा को तोड़ दिया है ॥

२१। उस के मुंह की बातें मक्खन सी चिकनी थीं पर उस के मन में युद्ध था। उस के वचन ऐसे कोमल थे मानो तेल से चुपड़े थे परन्तु वे खींची हुई तलवारें थे ॥

२२। जो भार ईश्वर ने तुझ पर रक्खा है सो उसी पर डाल दे तो वह तेरा आधार होवेगा। वह धर्म्मी को सदा टलने न देवेगा ॥

२३। और तू हे ईश्वर उन को विनाश के गड़हे में उतार देगा। हत्यारे और छली मनुष्य अपनी आधी बय लों न जीवेंगे पर मैं तो तुझ पर भरोसा रक्खूंगा ॥

ग्यारहवां दिन।

प्रातःकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र ५६।

१। हे ईश्वर मुझ पर करुणा कर क्योंकि मनुष्य मुझे ग्रास करने के लिये चढ़ा आता है। दिन भर वह लड़ता और मुझ पर अंधेर करता है ॥

२। मेरे रिपु दिन भर मुझे ग्रास करने के लिये चढ़े आते हैं। कि बहुत से लोग अभिमान से मुझ से लड़ते हैं॥

३। जिस दिन मैं डरूं। मैं तुझ पर भरोसा रक्खूंगा॥

४। ईश्वर की सहायता से मैं उस के वचन की स्तुति कर सकूंगा। मैं ने ईश्वर पर भरोसा रक्खा है मैं न डरूंगा कोई शरीरधारी मेरा क्या कर सकता है॥

५। वे दिन भर मेरे वचनों को उलटते हैं। उन की सब बुरी युक्तियां मेरे ही विरुद्ध होती हैं॥

६। वे बटुरते और छिप बैठते हैं वे आप मेरे पदचिन्हों को ताकते हैं। क्योंकि वे मेरे प्राण के घात में हैं॥

७। क्या वे अनर्थ काम के कारण बचेंगे। हे ईश्वर कोप से लोग-गणों को नीचा कर दे॥

८। मेरे मारे मारे फिरने का वृत्तान्त तू लिख रखता है। तू मेरे आंसुओं को अपनी कुप्पी में रख क्या वे तेरी पुस्तक में नहीं हैं॥

९। जिस दिन मैं पुकारूं उसी समय मेरे शत्रु पीछे की ओर फिरेंगे। यह मैं जानता हूं इस लिये कि ईश्वर मेरी ओर है॥

१०। ईश्वर की सहायता से मैं वचन की स्तुति कर सकूंगा। प्रभु की सहायता से मैं वचन की स्तुति करूंगा॥

११। मैं ने ईश्वर पर भरोसा रक्खा है मैं न डरूंगा। मनुष्य मेरा क्या कर सकता है॥

१२। हे ईश्वर तेरी मनौतियां मुझ पर हैं। मैं तुझ को धन्य-वाद का ऋण भर देऊंगा॥

१३। क्योंकि तू ने मेरे जीव को मृत्यु से बचाया है। क्या तू मेरे पैरों को भी फिसलने से न बचावेगा जिस्तें मैं ईश्वर के सन्मुख जीवन की ज्योति में चलूं फिरूं॥

—:o:—

स्तोत्र ५७।

१। हे ईश्वर मुझ पर करुणा कर मुझ पर करुणा कर क्योंकि मेरा जीव तेरा शरणागत भया। और तेरे पंखों की छाया तले मैं शरण लिये रहूंगा जब लों खलों की खलता बीत न जावे॥

२। मैं परात्पर ईश्वर को पुकारूंगा। उस परमेश्वर को जो मेरे लिये सब कुछ पूरा करता है॥

३। वह स्वर्ग पर से भेज के मुझे बचावेगा। जो मुझे ग्रास करने के लिये चढ़ा आता है सो निन्दा करता है पर ईश्वर अपनी दया और सच्चाई को भेजेगा॥

४। मेरा जीव सिंहों के बीच है मैं लेट जाऊं तो लुकटियों में लेटना होगा। अर्थात् मनुष्यवंशियों में जिन के दांत बर्छियां और बाण और जिन की जीभें तीक्ष्ण खड्ग हैं॥

५। हे ईश्वर स्वर्गों के ऊपर उन्नत हो। तेरी महिमा समस्त पृथिवी के ऊपर होवे॥

६। उन्हों ने मेरे पैरों के लिये जाल बिछाया मेरा जीव झुक गया है। उन्हों ने मेरे साम्हने एक गढ़ा खोदा और आप उस के बीच गिर पड़े॥

७। हे ईश्वर मेरा मन स्थिर है मेरा मन स्थिर है। मैं गाऊंगा और स्तुतिगान करूंगा॥

८। हे मेरी महिमा जाग हे कानून और बीणा जाग। मैं भोर को उठूंगा॥

९। हे प्रभु मैं लोकगणों में तेरा धन्यवाद करूंगा। मैं जातियों में तेरा स्तुतिगान करूंगा॥

१०। क्योंकि तेरी दया आकाश लों पहुंच गई है। और तेरी सच्चाई मेघों लों॥

११। हे ईश्वर स्वर्गों के ऊपर उन्नत हो। तेरी महिमा समस्त पृथिवी के ऊपर होवे॥

स्तोत्र ५८ ।

१ । तो क्या तुम सचमुच धर्म्म की बात बोलते हो । क्या सच्चाई से न्याय करते हो हे मनुष्यवंशियो ॥

२ । नहीं पर तुम अपने मन में कुटिलता के काम करते हो । तुम अपने हाथों का अत्याचार देश में तौल तौल के देते हो ॥

३ । ये दुष्ट गर्भ ही से बिराने हो गये । वे पेट ही से झूंठ बोलते हुए भटक गये ॥

४ । उन में ऐसा विष है जैसा सर्प्प का विष होता है । उस गूंगे नाग का सा जो अपने कान मूंद रखता है ॥

५ । जो मन्त्र पढ़नेहारों की नहीं सुनता । न उस तान्त्रिक की जो बुद्धि से तन्त्र करता है ॥

६ । हे ईश्वर उन के मुंह में उन के दांतों को तोड़ । हे प्रभु युवा सिंहों की दाढ़ों को टुकड़े टुकड़े कर ॥

७ । वे गलके उस जल के सदृश होवें जो बहके चला जाता है । जब वह अपने बाणों को चढ़ावे तब वे मानो दो टुकड़े हो जावें ॥

८ । उस घोंघे के समान जो गलके बह जाता है । स्त्री के उस गिरे हुए गर्भ के सदृश जो कभी उंजियाले को नहीं देखता ॥

९ । उस से पहिले की तुम्हारी हांड़ियों में कांटों की आंच लगे । कोप उस को कच्चे मांस की नाईं आंधी होके उड़ा ले जावेगा ॥

१० । धर्म्मी आनन्दित होगा क्योंकि उस ने पाप का पलटा देखा । वह अपने पैरों को दुष्ट के लहू में धोवेगा ॥

११ । और मनुष्य कहेंगे हां धर्म्मी के लिये फल तो है । एक ईश्वर तो है जो पृथिवी पर न्याय करता है ॥

संध्याकाल की प्रार्थना ।

स्तोत्र ५६ ।

१ । हे मेरे ईश्वर मुझे मेरे शत्रुओं से बचा । मेरे बिरोधियों से मुझे ऊंचे पर रख ॥

२ । कुकर्म्मियों से मुझे छुड़ा । और हत्यारों से मुझ को बचा ॥

३ । क्योंकि देख वे मेरे जीव के घात में हैं सामर्थी मेरे विरुद्ध बटुरते हैं । बिना मेरे अपराध और बिना मेरे पाप के हे प्रभु ॥

४ । मेरे दोष बिना वे दौड़ के खड़े होते हैं । मुझ से मिलने के लिये उठ और देख ॥

५ । और तू हे प्रभु सेनाओं के ईश्वर यिस्राएल् के ईश्वर सब अन्यजातियों को दण्ड देने के लिये जाग । अनर्थ करनेहारे विश्वासघातियों में से किसी पर करुणा न कर ॥

६ । वे सांझ को फिर आके कुत्ते की नाईं गुर्राते हैं । वे नगर की चारों ओर घूमते हैं ॥

७ । देख वे मुंह से डकारते । उन के होठों में तलवारें हैं क्योंकि कहते हैं कि कौन सुनता है ॥

८ । पर तू हे प्रभु उन पर हंसेगा । तू सब अन्यजातियों को ठट्ठों में उड़ावेगा ॥

९ । उस का तो बड़ा ही बल है पर मैं तेरी ओर चौकस होके ताकूंगा । क्योंकि ईश्वर मेरा ऊंचा गढ़ है ॥

१० । मेरा ईश्वर अपनी दयासंयुक्त मेरे आगे आगे चलेगा । ईश्वर मुझे मेरे शत्रुओं पर दृष्टि करने देवेगा ॥

११ । उन्हें घात न कर न हो कि मेरी प्रजा भूल जावें । पर अपने सामर्थ्य से उन्हें छिन्न भिन्न कर और नीचा कर दे हे प्रभु हमारी झरी ॥

१२। वाह उन के मुंह का पाप और उन के होंठों की बात कैसी है। वे उस स्राप और झूठ के कारण से जो वे कहते हैं अपने अभिमान में पकड़े जावें॥

१३। अपने क्रोध से उन्हें नाश कर उन्हें नाश कर कि वे और न रहें। तो वे जानेंगे कि ईश्वर याकोब् में पृथिवी के अन्तदेशों लो प्रभुता करता है॥

१४। और सांझ को वे फिर आके कुत्ते की नाईं गुर्रावें। और नगर की चारों ओर घूमें॥

१५। वे खाने के लिये भ्रमण करें। यदि वे तृप्त न होवें तो गुर्राते रहें॥

१६। पर मैं तो तेरा सामर्थ्य गाऊंगा और बिहान को तेरी दया ऊंचे स्वर से गाऊंगा। क्योंकि तू मेरा ऊंचा गढ़ और मेरे कष्ट के दिन शरणस्थान रहा है॥

१७। हे मेरे बल मैं तेरा स्तुतिगान करूंगा। क्योंकि ईश्वर मेरा ऊंचा गढ़ और मेरा दयालु ईश्वर है॥

—:०:—

स्तोत्र ६०।

१। हे ईश्वर तू ने हम को मन से उतार दिया तू ने हमें छिन्न भिन्न किया है। तू ने कोप किया है अब हम को यथावस्थित कर॥

२। तू ने भूमि को कंपाया और उस को चीर डाला है। उस के घावों को चंगा कर कि वह लड़खड़ाती है॥

३। तू ने अपने निज लोगों से कठिन दुःख भुगवाया। तू ने लड़खड़ाने का दाखमधु हमें पिलाया है॥

४। तू ने अपने डरवैयों को एक झण्डा दिया है। कि वह सच्चाई के कारण से फहराया जावे॥

५। जिस्तें तेरे प्रिय छुड़ाये जावें। तू अपने दहिने हाथ से बचा और हमें उत्तर दे॥

६। ईश्वर अपनी पवित्रता में बोला। मैं प्रमुदित होऊंगा मैं शकेम् को बांटूंगा और सुक्कोत् की तराई को मापूंगा॥

७। गिलाद् मेरा ही है और मनश्शे मेरा ही है और एप्रैम् मेरे सिर की रक्षा के लिये दृढ़ गढ़ है। यहूदा मेरा व्यवस्थापक है॥

८। मोआब् मेरे धोनेधाने का पात्र है। मैं एदोम् पर अपना जूता फेंकूंगा हे पलेशेत् मेरे ही निमित्त आनन्द से ललकार॥

९। कौन मुझ को सुदृढ़ नगर में पहुंचावेगा। कौन मुझे एदोम् लों ले जावेगा॥

१०। क्या तू हो नहीं है ईश्वर तू जिस ने हम को मन से उतार दिया। और हमारी सेनाओं के साथ नहीं निकला हे ईश्वर॥

११। रिपु से हमारी सहायता कर। कि मनुष्य की सहायता व्यर्थ ही है॥

१२। ईश्वर की शक्ति से हम बीरता करेंगे। कि वही हमारे रिपुओं को रौंदेगा॥

—:o:—

स्तोत्र ६१।

१। हे ईश्वर मेरा चिल्लाना सुन। मेरी प्रार्थना को ओर कान धर॥

२। पृथिवी के अन्त से मैं तुझे पुकारता हूं जब मेरा हृदय मूर्छित होता है। जो चटान मेरे लिये अधिक ऊंची है उस पर तू मुझ को ले चल॥

३। क्योंकि तू मेरा शरणस्थान भया है। शत्रु के विरुद्ध एक दृढ़ गुम्मट॥

४। मुझ को अपने तम्बू में युगानयुग रहने दे। मैं तेरे पंखों की ओट में शरण लेऊंगा॥

५। क्योंकि तू ने हे ईश्वर मेरी मनौतियां सुनी। तू ने अपने नाम के डरवैयों का भाग मुझे दिया है॥

६। तू राजा के बय पर बय बढ़ावेगा। उस के बरस पीढ़ी से पीढ़ी लों रहेंगे॥

७। वह ईश्वर के सन्मुख सदा बना रहेगा। दया और सच्चाई को उस की रक्षा के लिये ठहरा॥

८। तो मैं सर्बदा तेरे नाम का स्तुतिगान करूंगा। जिस्तें मैं प्रतिदिन अपनी मनौतियां पूरी किया करूं॥

बारहवां दिन

प्रातःकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र ६२

१। केवल ईश्वर की ओर मेरा जीव मौन धरे हुए लगा है। मेरा बचाव उसी से होगा॥

२। केवल वही मेरी चटान और मेरा त्राण है। मेरा ऊंचा गढ़ मैं बहुत नहीं टलूंगा॥

३। तुम कब लों एक पुरुष पर चढ़ते आओगे कि सब के सब उस को दबाओ। और वह तो झुकी हुई भीत टूटी हुई खांई के समान है॥

४। वे केवल यही परामर्श करते हैं कि उस को उसकी उन्नति से ढकेल दें। वे झूठ से प्रसन्न हैं वे अपने मुंह से तो आशीर्वाद देते हैं पर अपने अन्तःकरण में कोसते हैं॥

५। हे मेरे जीव केवल ईश्वर ही की ओर मौन धरे हुए लगा रह। क्योंकि मेरा आसरा उसी से है॥

६। केवल वही मेरी चटान और मेरा त्राण है। मेरा ऊंचा गढ़ मैं नहीं टलूंगा॥

७। मेरा त्राण और मेरी महिमा ईश्वर ही के हाथ में है। मेरी दृढ़ चटान और मेरा शरणस्थान ईश्वर ही में है॥

८। हे मेरी प्रजा प्रतिसमय उस पर भरोसा रक्खो। अपना मन उस के साम्हने उंडेलो कि ईश्वर हमारा शरणस्थान है॥

९। अकुलीन निरे व्यर्थ ही और कुलीन निरे मिथ्या ही हैं तुला में वे हलके ठहरते हैं वे सब के सब व्यर्थता से भी हलके हैं॥

१०। अन्धेर पर भरोसा मत करो और लूटपाट पर व्यर्थ आसरा मत रक्खो। धन यूं हीं बढ़े तौभी उस पर मन मत लगाओ॥

११। ईश्वर एक बार बोला वरन मैं ने दो बार यह सुना है। कि सामर्थ्य ईश्वर ही का है॥

१२। और दया भी हे प्रभु तेरी ही है। क्योंकि तू प्रत्येक जन को उस के कर्म के अनुसार प्रतिफल देता है॥

—:o:—

स्तोत्र ६३।

१। हे ईश्वर तू मेरा परमेश्वर है मैं तड़के तुझ को ढूंढूंगा। मेरा जीव तेरा प्यासा है मेरा शरीर तेरी आकांक्षा से मूर्छित है सूखी और जल बिना बिकल भूमि में॥

२। ऐसे मैं ने पवित्र स्थान में तुझ पर ताका। कि तेरे सामर्थ्य और महिमा को देखूं॥

३। क्योंकि तेरी दया जीवन से उत्तम है। मेरे होंठ तेरी प्रशंसा करेंगे॥

४। इसी प्रकार से मैं जीवन भर तेरा धन्यवाद करूंगा। मैं तेरा नाम लेके अपने हाथ उठाऊंगा॥

५। मेरा जीव मानो मज्जा और मेद से तृप्त होवेगा। और मेरा मुंह ऊंचे स्वर के गानेहारे होंठों से तेरी स्तुति करेगा॥

६। जब मैं अपने बिछौने पर तुझे स्मरण करता हूं। तब मैं रात के पहरों में तेरा ध्यान करता हूं॥

७। क्योंकि तू मेरा सहायक हुआ है। और मैं तेरे पंखों की छाया तले ऊंचे स्वर से गाऊंगा॥

८। मेरा जीव तेरे पीछे पिलचा जाता है। तेरा दहिना हाथ मुझे थाम्भता है॥

९। पर ये जो मेरे जीव को नाश करने के लिये उस के खोजी हैं। पृथिवी के नीचे स्थानों में जावेंगे॥

१०। वे तलवार की धार में पड़ेंगे। वे शृगालों का अंश हो जावेंगे॥

११। पर राजा ईश्वर में आनन्दित रहेगा। जितने उस की किरिया खाते हैं सो उस पर घमण्ड करेंगे क्योंकि मिथ्यावादियों का मुंह मूंदा जावेगा॥

—:0:—

स्तोत्र ६४।

१। हे ईश्वर मेरी दोहाई के समय मेरी वाणी सुन। मेरे जीवन को शत्रु के भय से रक्षा कर॥

२। हाय कि तू मुझे कुकर्म्मियों के परामर्श से छिपा रखता। दुष्टकर्म्मियों के एका करने से॥

३। जिन्हों ने अपनी जीभ को खड्ग की नाईं तीक्ष्ण किया। और अपने वाणों को सन्धाना अर्थात् कड़वी बातों को॥

४। जिस्तें वे छिपके खरे को मारें। वे अकस्मात् उस को मारते और नहीं डरते॥

५। वे बुरी युक्ति करने के लिये ढाढ़स बांधते हैं। वे फन्दे छिपाके लगाने के विषय में बातचीत करते और कहते हैं कि हम को कौन देखेगा॥

६। वे कुटिल युक्तियां निकाल के कहते हैं कि हम एक पक्की युक्ति निकाल चुके हैं। और प्रत्येक जन का अन्तःकरण और हृदय गहरा है ॥

७। परन्तु ईश्वर उन्हें अकस्मात् बाण से मारेगा। अब उन के घायल होने का समय आया है ॥

८। और वे ठोकर खाके गिर पड़ेंगे और उन की जीभ उन्हीं के विरुद्ध होगी। जितने उन पर दृष्टि करते हैं सब भाग जावेंगे ॥

९। और सारे मनुष्य डरके ईश्वर के कर्म्म का बखान करेंगे। और उस के कामों पर मन लगावेंगे ॥

१०। धर्म्मी प्रभु में आनन्दित होगा और उस में शरण लेगा। और सब सीधे मनवाले उस पर घमण्ड करेंगे ॥

संध्याकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र ६५।

१। हे ईश्वर स्तुति सियोन् में चुपचाप तेरी बाट जोह रही है। और तेरे लिये मनौतियां पूरी किई जावेंगी ॥

२। हे प्रार्थना के सुननेहारे। तेरे निकट समस्त मनुष्य आवेंगे ॥

३। मेरे अधर्म्मों का लेखा अत्यन्त अधिक हो गया। हमारे अपराध जो हैं उनको तू धो डालेगा ॥

४। धन्य है वह जन जिसे तू चुनके अपना समीपी करता है कि वह तेरे आंगनों में बास करे। हम तेरे घर के पवित्र मन्दिर के उत्तम पदार्थों से तृप्त होवेंगे ॥

५। हे हमारे त्राण के ईश्वर तू भयानक कर्म्मों के द्वारा हम को धर्म्म से उत्तर देगा। हे पृथिवी के सब अन्तदेशों और दूरदेशी समुद्र के रहनेहारों के आधार ॥

६। तू अपने सामर्थ्य से पर्व्वतों को स्थिर करता। और कटि में पराक्रम का पटुका बांधे हुए है॥

७। तू समुद्रों का महाशब्द उन के तरङ्गों का महाशब्द। और लोकगणों का कलकल थाम्भ देता है॥

८। और अन्तदेशों के बासी तेरे चिन्हों से डर गये। तू उदय और अस्त के द्वारों से ऊंचे स्वर से गवाता है॥

९। तू ने भूमि को सुधि लिई और उसको सींचा है तू उस को बहुत फलदायक करता है। ईश्वर की नहर जल से भरी रहती है तू उन के अन्न का प्रबन्ध करता क्योंकि तू पृथिवी का अच्छा प्रबन्ध करता है॥

१०। तू उस के ढेलों को सींचता और उस की रेघारियों को दबाता। तू उस को मेंह से कोमल करता और उस की उपज को आशीष् देता है॥

११। तू ने वर्ष को अपनी भलाई का मुकुट पहिनाया। और तेरे डगर चिकनाई से उमगडते हैं॥

१२। बन के चराव उमगडते हैं। और पहाड़ियां मग्नता का पटुका कसे हुए हैं॥

१३। चराव भेड़ों से आभूषित भये। और तराइयां अन्न से ढंप गईं वे आनन्द से ललकारतीं वे गाती भी हैं॥

—:०:—

स्तोत्र ६६।

१। हे समस्त पृथिवी के लोगो। ईश्वर के लिये आनन्द से ललकारो॥

२। उस के नाम की महिमा का स्तुतिगान करो। उस की स्तुति करते हुए उस की महिमा की चर्चा करो॥

३। ईश्वर से कहो तू अपने कामों में क्या ही भयङ्कर है। तेरे सामर्थ्य की बड़ाई के हेतु तेरे शत्रुओं को बरबस तुझ से दबना पड़ेगा॥

४। समस्त पृथिवी के लोग तुझे दण्डवत करके तेरा स्तुतिगान करेंगे। वे तेरे नाम का स्तुतिगान करेंगे॥

५। आओ और ईश्वर के महाकर्मों को देखो। वह अपने कार्य्यों में मनुष्यजाति को भयंकर देख पड़ता है॥

६। उस ने समुद्र को सूखी भूमि कर डाला और महानद में से लोग पांव पांव चले गये। वहां हम उस में आनन्दित होवें॥

७। वह अपने पराक्रम से सदा प्रभुता करता उस की आंखें जातियों को ताक रही हैं। दंगइत अपने सिर न उठावें॥

८। हे लोकगणो हमारे ईश्वर का धन्यवाद करो। और उस की स्तुति की वाणी सुनाओ॥

९। जो हमारे जीव को जीवता रखता है। और हमारे पांव को टलने नहीं देता॥

१०। क्योंकि तू ने हे ईश्वर हमें जांचा। तू ने हम को ऐसा ताया जैसा रूपा ताया जाता है॥

११। तू ने हम को जाल में फंसाया। तू ने हमारी कटि पर भारी बोझ बांधा॥

१२। तू ने मनुष्य को अस्वार करके हमारे सिरों पर से चलाया। हम आग और जल में पैठे थे पर तू ने हम को निकालके तृप्त किया है॥

१३। मैं सर्व्वहोम लेके तेरे घर में आऊंगा। मैं अपनी मनौतियां तेरे लिये पूरी करूंगा॥

१४। जो मैं ने होंठ खोलके मानीं। और अपने कष्ट के समय अपने मुंह से उच्चारीं॥

१५। मैं तुझे मोटे पशुओं के सर्व्वहोम मेढ़ों के मेद के धूप समेत चढ़ाऊंगा। मैं बकरों समेत बैल चढ़ाऊंगा॥

१६। हे ईश्वर के सब डरवैये। आओ सुनो। मैं वर्णन करूंगा कि उस ने मेरे जीव के निमित्त क्या किया है॥

१७। मैं ने अपने मुंह से उस को पुकारा। और उस की स्तुति मेरी जीभ में थी॥

१८। यदि मैं अपने मन में अनर्थ काम सोचता। तो प्रभु मेरी न सुनता॥

१९। परन्तु ईश्वर ने तो मेरी सुनी है। और मेरी प्रार्थना के शब्द पर कान धरा है॥

२०। धन्य होवे ईश्वर। कि उस ने न मेरी प्रार्थना न अपनी दया मेरे पास से हटा दिई है॥

—:o:—

स्तोत्र ६७।

१। ईश्वर हम पर करुणा करे और हम को आशीष् देवे। और अपने मुंह का प्रकाश हम पर चमकावे॥

२। जिस्तें तेरा मार्ग पृथिवी पर। तेरा त्राण सब जातियों में जाना जावे॥

३। हे ईश्वर लोकगण तेरा धन्यवाद करें। जातिगण सब के सब तेरा धन्यवाद करें॥

४। लोकगण हर्ष करें और ऊंचे स्वर से गावें। क्योंकि तू धर्म्म से जातिगण का न्याय और पृथिवी पर लोकगणों की अगुवाई करेगा॥

५। हे ईश्वर लोकगण तेरा धन्यवाद करें। जातिगण सब के सब तेरा धन्यवाद करें॥

६। भूमि ने अपनी उपज दिई है। ईश्वर हमारा ईश्वर हमें आशीष् देवेगा॥

७। ईश्वर हम को आशीष् देगा। और पृथिवी के सब अन्तदेश उस का भय मानेंगे॥

तेरहवां दिन ।

प्रातःकाल की प्रार्थना ।

स्तोत्र ६८ ।

१ । ईश्वर उठे उस के शत्रु छिन्नभिन्न होवें । और उस के बैरी उस के साम्हने से भाग जावें ॥

२ । जैसे धूंआं उड़ाया जाता है वैसे ही तू उनको उड़ा । जैसे मोम आग के साम्हने पिघलता है वैसे ही दुष्ट ईश्वर के साम्हने नष्ट होवें ॥

३ । पर धर्म्मी आनन्दित होवें वे ईश्वर के आगे प्रमुदित होवें । वे आनन्द से मगन होवें ॥

४ । ईश्वर के लिये गाओ उस के नाम का स्तुतिगान करो जो मरुभूमियों पर से अस्वार होके जाता है उस के लिये ऊंचा मार्ग बनाओ । उस का नाम याह् है और तुम उस के साम्हने प्रमुदित होओ ॥

५ । ईश्वर अपने पवित्र धाम में । पितृहीन बालकों का पिता और विधवाओं का न्यायी है ॥

६ । ईश्वर अकेलों का घर बसाता और बंधुओं को निकालके भाग्यवन्त करता है । केवल दंगइतों को शुष्क भूमि में रहना पड़ता है ॥

७ । हे ईश्वर जब तू ने अपने निज लोगों के आगे आगे पयान किया । जब तू मरुभूमि में चलता था ॥

८ । तब पृथिवी कांपी वरन आकाश भी ईश्वर के साम्हने टपका । वह सीनै ईश्वर के साम्हने जो यिस्राएल् का ईश्वर है कांप उठा ॥

९ । हे ईश्वर तू बड़ी वृष्टि भेजेगा । तेरा निज भाग बहुत थका था तब तू ने उस को सुस्थिर किया ॥

१० । तेरा यूथ उस में बस गया । हे ईश्वर तू ने अपनी भलाई से दुःखी के लिये प्रबन्ध किया ॥

११ । प्रभु बचन कहता है । तो सुसमाचारिणियों की बड़ी सेना हो जाती है ॥

१२ । सेनाओं के राजा भागे जाते हैं । और घरनी लूट को बांट लेती है ॥

१३ । क्या तुम भेड़शालों के बीच में लेट जाओगे । और ऐसी कबूतरी के सदृश होगे जिस के डैने रूपे से और पंख फीके रंग के सोने से मढ़े हुए हैं ॥

१४ । जब सर्वशक्तिमान ने उस में राजाओं को छिन्न भिन्न किया । तब वह सल्मोन् पर हिम के तुल्य श्वेत थी ॥

१५ । बाशान् का पहाड़ ईश्वर का पहाड़ है । बाशान् का पहाड़ शिखरवाला पहाड़ है ॥

१६ । हे शिखरवाले पहाड़ो तुम क्यों उस पहाड़ को घुरते हो जिसे ईश्वर ने अपने बास के लिये चुन लिया है । वरन प्रभु सदैव वहां बास करेगा ॥

१७ । ईश्वर के रथ बीस सहस्र हैं वरन सहस्रों सहस्र । प्रभु उन में है सीनै पवित्रस्थान में आया है ॥

१८ । तू ऊंचे पर चढ़ा तू बंधुओं को बंधुवा करके ले गया । तू ने मनुष्यों में से वरन दंगइतों में से भी भेंटें लिईं जिस्तें याह ईश्वर बसे ॥

१९ । ईश्वर प्रतिदिन धन्य होवे । वह हमारा बोझ सह लेता है परमेश्वर ही हमारा त्राण है ॥

२० । परमेश्वर हमारे निमित्त त्राणदायक परमेश्वर है । और प्रभु भगवान् के पास मृत्यु से निकास हैं ॥

२१ । परन्तु ईश्वर अपने शत्रुओं के सिर पर मारेगा । उस के बालवाले चांद पर जो अपने अघों में चला जाता है ॥

२२। प्रभु ने कहा मैं बाशान् से फेर लाऊंगा। मैं समुद्र के गहिरावों में से फेर ले आऊंगा॥

२३। जिस्तें तू अपने पांव को शत्रुओं के लहू में डुबोवे। और तेरे कुत्तों की जीभ उसी से तृप्त होवे॥

२४। हे ईश्वर तेरी चालें देखी गईं। पवित्रस्थान में मेरे परमेश्वर मेरे राजा की चालें॥

२५। गानेहारे आगे आगे गये बजानेहारे पीछे पीछे आये। चारों ओर कुमारियां डफ बजाती थीं॥

२६। मण्डलियों में ईश्वर का धन्यवाद करो। प्रभु को यिस्राएल् के सोते में से सराहो॥

२७। वहां छोटा बिन्यामीन उन पर प्रभुता करता है यहूदा के अधिपति और उन के मन्त्री। जबूलून् के अधिपति और नप्ताली के अधिपति॥

२८। तेरे ईश्वर ने तुझे सामर्थ्य मिलने की आज्ञा दिई है। हे ईश्वर जो कुछ तू ने हमारे लिये बनाया है उसे दृढ़ कर॥

२९। तेरे उस मन्दिर के हेतु जो यरूशलेम् में है। राजा तेरे लिये भेंट ले आवेंगे॥

३०। नरई के यूथ को डांट सांड़ों की झुण्ड को लोकगणों के बछड़ों समेत प्रत्येक चांदी के टुकड़े लेके साष्टांग होता है। उस ने लड़ाई के चाहनेहारे लोकगणों को तित्तर बित्तर किया है॥

३१। राजदूत मिस्र से आवेंगे। कूश अपने हाथों को ईश्वर की ओर शीघ्र बढ़ावेगा॥

३२। हे पृथिवी के राज्यो ईश्वर के लिये गाओ। प्रभु का स्तुतिगान करो॥

३३। उस का जो प्राचीन स्वर्गों के स्वर्ग पर से अस्वार होके जाता है। देखो वह अपनी वाणी सुनावेगा सो बलवन्त वाणी है॥

३४। ईश्वर को सामर्थ्य देओ। उस का प्रताप यिस्राएल् पर और उस की शक्ति मेघों में है॥

३५। हे ईश्वर तू अपने पवित्रस्थानों में से भयंकर है। वह यिस्राएल् का परमेश्वर है और प्रजा को बल और शक्ति देता है ईश्वर धन्य होवे॥

संध्याकाल की प्रार्थना

स्तोत्र ६९।

१। हे ईश्वर मुझ को बचा। क्योंकि जल प्राण लों पहुंच गया है॥

२। मैं गहिरे कीच में धस गया जहां खड़े होने का कोई स्थान नहीं। मैं गहिरे जल में आ गया जहां धारा मुझे बहा ले जाती है॥

३। मैं पुकारते पुकारते थक गया मेरा गला सूख गया। अपने ईश्वर की बाट जोहते जोहते मेरी आंखें धुंधला गई हैं॥

४। जो मुझ से निष्कारण बैर रखते हैं सो मेरे सिर के बालों से बढ़ गये मेरे नाशक जो झूठ मूठ मुझ से शत्रुता रखते हैं प्रबल हो गये हैं। तब मैं ने उस को भी फेर दिया जो मैं ने अन्याय से नहीं लिया था॥

५। हे ईश्वर तू मेरी मूढ़ता को जानता है। और मेरे अघ तुझ से गुप्त नहीं हैं॥

६। हे भगवान् सेनाओं के प्रभु जो तेरा आसरा देखते हैं सो मेरे कारण लज्जित न होवें। हे यिस्राएल् के ईश्वर जो तुझे ढूंढ़ते हैं सो मेरे हेतु निरादर न होवें॥

७। क्योंकि तेरे ही निमित्त मैं ने निन्दा उठाई। मेरा मुह लाज से ढंप गया॥

८। मैं अपने भाइयों के लेखे बिराना भया। और अपने सहोदरों की दृष्टि में पराया॥

६। क्योंकि तेरे घर के ज्वलन ने मुझे खा लिया। और जो तेरी निन्दा करते थे उन की निन्दा मुझ पर पड़ी॥

१०। और मैं रोता और उपवास कर कर के अपने जी को दुःख देता था। और यह मेरी निन्दा का कारण भया॥

११। और मैं ने टाट को अपना वस्त्र किया। और उन के लिये कहावत बना॥

१२। जो फाटक पर बैठते हैं सो मेरे विषय में बातचीत करते हैं। और मैं मदिरा पीनेहारों का गीत बना॥

१३। पर मेरी प्रार्थना तो तुझ से अनुग्रह के समय में होती है। हे ईश्वर अपनी दया की बहुतायत से अपने त्राण की सच्चाई के हेतु मुझे उत्तर दे॥

१४। मुझ को कीच में से निकाल कि मैं धस न जाऊं। मैं अपने बैरियों से और जल के गहिरावों से बच निकलूं॥

१५। जल का प्रवाह मुझे बहा न ले जावे न गहिराव मुझे निगल जावे। और गढ़हा अपना मुंह मेरे ऊपर बन्द न करे॥

१६। हे प्रभु मुझे उत्तर दे क्योंकि तेरी दया उत्तम है। अपने छोह की बहुतायत से मेरी ओर फिर॥

१७। और अपना मुख अपने दास से न छिपा। क्योंकि मैं कष्ट में हूं शीघ्र मुझ को उत्तर दे॥

१८। मेरे जीव के निकट आके उसे छुड़ा ले। मेरे शत्रुओं के हेतु मुझ को छुड़ा ले॥

१९। तू मेरी निन्दा और लज्जा और अनादर को जानता है। मेरे सारे रिपु तेरे सन्मुख हैं॥

२०। निन्दा ने मेरे हृदय को फाड़ा और मैं अत्यन्त रोगी हूं। और मैं ने प्रबोध का आसरा देखा पर न मिला और शान्ति देनेहारों का पर किसी को न पाया॥

२१ । और उन्हों ने मेरे भोजन के लिये अहिफेन दिया । और मेरी प्यास में मुझे सिरका पिलाया ॥

२२ । उन का भोजनमंच उन के साम्हने फंदा हो जावे । और उन के सुख के समय में एक फंसरी ॥

२३ । उन की आंखों पर अंधेरा छावे कि न देख सकें । और उन की कटि निरन्तर कम्पा ॥

२४ । अपना क्रोध उन पर उंडेल । और तेरे कोप की आंच उन्हें पकड़े ॥

२५ । उन का भवन उजड़ जावे । उन के डेरों में कोई रहनेहारा न रहे ॥

२६ । क्योंकि जिस को तू ने मारा उस को वे सताते हैं । और तेरे घायल किये हुओं की पीड़ा के विषय में बातें किया करते हैं ॥

२७ । उन के अधर्म्म पर अधर्म्म बढ़ा । और वे तेरे धर्म्म में भागी न होवें ॥

२८ । वे जीवन की पुस्तक में से मिटाये जावें । और धर्म्मियों के संग लिखे न जावें ॥

२९ । पर मैं तो दुःखी और पीड़ित हूं । हे ईश्वर तेरा त्राण मुझे ऊंचे गढ़ में रक्खे ॥

३० । मैं गीत गाके ईश्वर के नाम की स्तुति करूंगा । और धन्यवाद से उस की बड़ाई करूंगा ॥

३१ । और यह बैल से अधिक प्रभु को भावेगा । ऐसे बछड़े से जो सींग और खुर भी रखता होवे ॥

३२ । सौम्यस्वभाव देखके आनन्दित होंगे । हे ईश्वर के खोजियो तुम्हारा हृदय जी जावे ॥

३३ । क्योंकि प्रभु दरिद्रों की सुनता है । और अपने बंधुओं को तुच्छ नहीं जानता ॥

३४ । स्वर्ग और पृथिवी उस की स्तुति करें । समुद्र और उन में जो कुछ रेंगता है ॥

३५ । क्योंकि ईश्वर सिय्योन् को बचावेगा और यहूदा के नगरों को बनावेगा । और लोग वहां बसेंगे और उस को भाग में लेवेंगे ॥

३६ । और उस के दासों का बंश उस का अधिकारी होवेगा । और जो उस के नाम से प्रीति रखते हैं सो उस में बास करेंगे ॥

—:०:—

स्तोत्र ७० ।

१ । हे ईश्वर मुझे छुड़ाने के लिये । हे प्रभु मेरी सहाय के लिये शीघ्र कर ॥

२ । जो मेरे प्राण के खोजी हैं सो लज्जित और अप्रतिष्ठित होवें । जो मेरी बुराई की इच्छा करते हैं सो पीछे की ओर हटाये और निरादर किये जावें ॥

३ । जो मुझ से आहा आहा कहते हैं । सो अपनी लज्जा के मारे पलट जावें ॥

४ । जितने तुझे ढूंढ़ते हैं सो तुझ में मगन और आनन्दित होवें । और जो तेरे त्राण से प्रीति रखते हैं सो निरन्तर कहते रहें ईश्वर की बड़ाई होवे ॥

५ । पर मैं तो दुःखी और दरिद्र हूं हे ईश्वर मेरे लिये शीघ्र कर । तू मेरा सहायक और छुड़ानेहारा है हे प्रभु विलम्ब न कर ॥

चौदहवां दिन ।

प्रातःकाल की प्रार्थना ।

स्तोत्र ७१ ।

१ । हे प्रभु मैं तेरा शरणागत भया । मुझे कभी लज्जित न होने दे ॥

२ । हाय कि तू अपने धर्म्म के हेतु मुझे उबारता और छुड़ाता । अपना कान मेरी ओर झुका और मुझे बचा ॥

३ । मेरे निवास के लिये एक चटान हो जिस पर मैं नित्य जाया करूं । तू ने मेरे बचाव की आज्ञा दिई है क्योंकि तू मेरी ऊंची चटान और मेरा दुर्ग है ॥

४ । हे मेरे ईश्वर मुझे दुष्ट के हाथ से छुड़ा । कुटिल और क्रूर के बश से ॥

५ । क्योंकि हे प्रभु भगवान तू ही मेरी आशा है । मेरे बचपन से तू ही मेरा आधार है ॥

६ । मैं गर्भ हीं से तुझी से सम्भाला गया हूं । मेरी मा के पेट ही से तू ने मेरी सुधि लिई है मैं निरन्तर तेरी ही स्तुति करूंगा ॥

७ । मैं बहुतों के लिये मानो अचंभा हुआ हूं । पर तू मेरा दृढ़ शरणस्थान है ॥

८ । मेरा मुंह तेरी स्तुति से । दिन भर तेरी सुन्दरता के वर्णन से भरपूर रहे ॥

९ । बुढ़ापे के समय मुझे फेंक न दे । जब मेरा बल घटता है तब मुझे छोड़ न दे ॥

१० । क्योंकि मेरे शत्रु कहते हैं । और जो मेरे प्राण के घात में लगे हैं उन्हों ने आपस में परामर्श किया है ॥

११। कि ईश्वर ने उस को तजा है उस का पीछा करो और उस को पकड़ लेओ कि उस का छुड़ानेहारा कोई नहीं॥

१२। हे ईश्वर मुझ से दूर न रह। हे मेरे ईश्वर मेरी सहाय के लिये शीघ्र कर॥

१३। जो मेरे जीव से द्वेष रखते हैं सो लज्जित और नष्ट होवें। जो मेरी हानि खोजते हैं सो निन्दा और अनादर से ढंप जावें॥

१४। पर मैं तो निरन्तर आशा धरे रहूंगा। और तेरी स्तुति पर स्तुति बढ़ाऊंगा॥

१५। मेरा मुंह तेरे धर्म्म का और दिन भर तेरे त्राण का बखान करेगा। क्योंकि मैं उन की गिनती नहीं जानता॥

१६। मैं प्रभु भगवान के पराक्रमी कार्य्यों का वर्णन करता हुआ आऊंगा। मैं तेरे केवल तेरे ही धर्म्म की चर्चा करूंगा॥

१७। हे ईश्वर तू मुझ को बचपन ही से सिखाता आया है। और अब लों मैं तेरे आश्चर्य्यकर्म्मों को प्रचारता आया हूं॥

१८। और बुढ़ापे और बाल पकने के समय भी हे ईश्वर मुझे न छोड़। जब लों मैं इस पीढ़ी के साम्हने तेरी भुजा का सब आनेहारों के साम्हने तेरे पराक्रम का प्रचार न करूं॥

१९। और हे ईश्वर तेरा धर्म्म ऊर्द्धलोक लों पहुंचता है। कि तू ने बड़े कार्य्य किये हैं हे ईश्वर तेरे तुल्य कौन है॥

२०। तू ने तो हम से बड़े और अत्यन्त कष्ट भुगवाये थे पर अब फिरके हम को जिलावेगा। और भूमि के गहिरावों में से फिर हम को ऊपर ले आवेगा॥

२१। तू मेरी बड़ाई को बढ़ावेगा। और लौट के मुझ को शान्ति देवेगा॥

२२। मैं भी कानून बाजे के साथ तेरा धन्यवाद करूंगा तेरी सच्चाई का हे मेरे ईश्वर। मैं वीणा से तेरी स्तुति करूंगा हे यिस्राएल् के पवित्र॥

२३। मेरे होंठ तेरा स्तुतिगान करने के समय ऊंचे स्वर से गावेंगे और मेरा जीव जिस को तू ने छुड़ा लिया है॥

२४। मेरी जीभ भी दिन भर तेरे धर्म्म की चर्चा करती रहेगी। क्योंकि जो मेरी हानि के खोजी हैं सो लज्जित और अप्रतिष्ठित हो गये हैं॥

—:०:—

स्तोत्र ७२।

१। हे ईश्वर राजा को अपने न्याय। और राजपुत्र को अपना धर्म्म दे॥

२। वह तेरे निज लोगों का न्याय धर्म्म से करेगा। और तेरे दुःखियों का यथार्थता से॥

३। पहाड़ प्रजा के लिये शान्ति उपजावेंगे। और पहाड़ियां भी धर्म्म के द्वारा॥

४। वह प्रजा के दुःखियों का न्याय चुकावेगा और दरिद्र के लड़कों को बचावेगा। और अत्याचारी को वह चकनाचूर करेगा॥

५। जब लों सूर्य्य रहेगा तब लों लोग तेरा भय मानेंगे। और जब लों चन्द्रमा चमकता रहेगा पीढ़ी से पीढ़ी लों॥

६। वह ऐसा आवेगा जैसे मेंह कटी हुई घास पर आता है। जैसे झड़ियां जो भूमि को सींचती हैं॥

७। उस के दिनों में धर्म्मी फूले फलेगा। और शान्ति की बहुतायत जब लों चन्द्रमा बना रहेगा॥

८। और वह समुद्र से समुद्र लों राज्य करेगा और महानद से पृथिवी के अन्त लों॥

९। उस के साम्हने बन के रहनेहारे घुटने टेकेंगे। और उस के शत्रु मिट्टी चाटेंगे॥

१० । तर्शीश् और द्वीपों के राजा कर ले आवेंगे । शबा और सबा के राजा भेंट पहुंचावेंगे ॥

११ । और समस्त राजगण उस को दण्डवत् करेंगे । सम्पूर्ण जातिगण उस की सेवा करेंगे ॥

१२ । क्योंकि वह दरिद्र को जो दोहाई देता है छुड़ावेगा । और दुःखी को और उस को जिस का कोई सहायक नहीं ॥

१३ । वह कंगाल और दरिद्र पर तरस खावेगा । और दरिद्रों के प्राण को बचावेगा ॥

१४ । वह उन के प्राण को अन्धेर और अत्याचार से छुड़ा लेगा । और उन का लहू उस की दृष्टि में बहुमूल्य होवेगा ॥

१५ । और वह जीता रहेगा और शबा के सोने में से उस को दिया जावेगा । और लोग उस के लिये निरन्तर प्रार्थना करते रहेंगे वह दिन भर उसे आशीश् देता रहेगा ॥

१६ । देश में पहाड़ों की चोटी पर बहुत सा अन्न होगा उस का फल लबानोन् की नाईं लहरावेगा । और नगर के लोग भूमि की घास के समान लहलहावेंगे ॥

१७ । उस का नाम सदा बना रहेगा जब लों सूर्य्य रहेगा तब लों उस का नाम अक्षय बना रहेगा । और लोग अपने को उस में धन्य समझेंगे समस्त जातिगण उस को भाग्यवन्त कहेंगे ॥

१८ । धन्य होवे प्रभु परमेश्वर जो यिस्राएल् का ईश्वर है । कि केवल वही आश्चर्य्यकर्म्म करता है ॥

१९ । और उस का महिमायुक्त नाम सदा धन्य होवे । और सम्पूर्ण पृथिवी उस की महिमा से परिपूर्ण होवे आमेन् और आमेन् ॥

संध्याकाल की प्रार्थना ।

स्तोत्र ७३

१ । ईश्वर यिस्राएल् के लिये केवल भला ही है । अर्थात् शुद्ध मनवालों के लिये ॥

२ । पर मेरे पांव तो टलने ही पर थे । मेरे पैर फिसल ही चुके थे ॥

३ । क्योंकि मैं ने घमण्डियों से डाह किया । मैं दुष्टों के कुशल को देखता रहा ॥

४ । क्योंकि उन की मृत्यु में क्लेश नहीं होता । और उन का बल बड़ा है ॥

५ । उन को और मनुष्यों की नाईं कष्ट नहीं उठाना पड़ता । और न मनुष्यजाति के समान उन पर मार पड़ती है ॥

६ । इस कारण से अहंकार उन का कण्ठा हुआ । अत्याचार वस्त्र की नाईं उन्हें ढांपता है ॥

७ । उन की आंख मोटाई से चढ़ गई है । उन के मन की भावनाएं मर्य्यादा से बढ़ जाती हैं ॥

८ । वे ठट्ठा करते और बुराई से अन्धेर की बात करते हैं । वे मानो ऊर्द्धलोक पर से बोलते हैं ॥

९ । उन्हों ने अपना मुंह स्वर्ग पर रक्खा है । और उन की जीभ पृथिवी पर घूमती फिरती है ॥

१० । वे कहते हैं "तो वह अपने निज लोगों को यहां फेर ले आवे । भरे कटोरे का पानी उन को तलछट लों पिलाया जावे" ॥

११ । और उन्हों ने कहा परमेश्वर कैसे जानेगा । और क्या परात्पर ज्ञान रखता है ॥

१२ । देख ये लोग दुष्ट हैं । तौभी वे सदा सुभागी होके धन को बटोरते जाते हैं ॥

१३। मैं ने वृथा ही अपने हृदय को शुद्ध किया। और अपने हाथ निर्दोषता में धोये हैं॥

१४। और मुझ पर दिन भर मार पड़ती है। और मेरी ताड़ना प्रति प्रातःकाल को होती है॥

१५। यदि मैं कहता कि मैं ऐसा ही बोलूंगा। तो मैं तेरे लड़कों की पीढ़ी से बिश्वासघात करता॥

१६। और जब मैं ने सोचा कि इस बात को क्योंकर समझूं। तो मेरी दृष्टि में अति कठिन थी॥

१७। जब लों मैं परमेश्वर के पवित्रस्थान में नहीं गया। और उन के परिणाम को नहीं बिचारा॥

१८। बात यह है कि तू उन्हें फिसलहे स्थानों में रखता है। तू उन को गिराके नाश करता है॥

१९। वे क्षण भर में कैसे उजड़ गये हैं। वे तो मिट गये वे घबराहट से नष्ट हो गये॥

२०। जैसे जागनेहारा अपने स्वप्न को तुच्छ जानता है। तैसे ही हे प्रभु जब तू उठेगा तब उन की माया को तुच्छ जानेगा॥

२१ बात यह है कि मेरा मन चिड़चिड़ा हो गया। मेरा अन्तःकरण छिद गया था॥

२२। और मैं तो पशुवत् हुआ था और कुछ समझता न था। मैं तेरे संग रहके भी पशु हो गया था॥

२३। पर मैं तो निरन्तर तेरे संग हूं। तू ने मेरे दहिने हाथ को पकड़ लिया है॥

२४। तू अपने परामर्श से मेरी अगुवाई करेगा। और पीछे मुझे महिमा में समेट लेवेगा॥

२५। स्वर्ग में मेरा कौन है। और तेरे आछत मैं पृथिवी पर कुछ चाहता नहीं॥

२६। मेरा शरीर और मेरा मन क्षीण हो गया। पर ईश्वर मेरे मन की चटान और मेरा सर्वदा का भाग है॥

२७। क्योंकि देख जो तुझ से दूर रहते हैं सो नष्ट होवेंगे। जितने तेरे विरुद्ध व्यभिचार करते हैं उन को तू उखाड़ डालता है॥

२८। पर मेरी भलाई तो ईश्वर की समीपता में है। मैं ने प्रभु भगवान् में शरण लिई है जिस्तें मैं तेरे सब कार्य्यों का वर्णन करूं॥

—.ृ.—

स्तोत्र ७४।

१। हे ईश्वर तू ने क्यों हमें सदा के लिये मन से उतार दिया है। तेरे क्रोध का धूआं क्यों तेरे चराव की भेड़ों पर उठ रहा है॥

२। अपने समाज को स्मरण कर जिसे तू ने प्राचीनकाल से प्राप्त किया और अपने निज भाग का कुल बनाने के लिये छुड़ा लिया। इस सिय्योन् पर्व्वत को जिस पर तू ने बास किया॥

३। अपना पैर सदा की उजाड़ों की ओर बढ़ा। उस सारी बुराई की ओर जो शत्रु ने पवित्रस्थान में किई है॥

४। तेरे रिपु तेरे सभास्थान के बीच गरजे हैं। उन्हों ने अपने झण्डों को चिन्ह ठहराया है॥

५। प्रत्येक जन ऐसा देख पड़ता था। कि मानो घने बन पर कुल्हाड़े उठा रहा था॥

६। और अब वे कुल्हाड़ियों और हथौड़ों से। उस के खुदे हुए कार्य्य को एक ही साथ तोड़ देते हैं॥

७। उन्हों ने तेरे पवित्रस्थान को आग में झोंक दिया। उन्हों ने तेरे नाम का वासस्थान मिट्टी में मिलाके अशुद्ध कर दिया है॥

८। उन्हों ने अपने मन में कहा हम उन को एक ही साथ नाश करें। उन्हों ने देश में परमेश्वर के सब सभास्थानों को जला दिया है॥

९। हमारे चिन्ह कुछ देख नहीं पड़ते। अब कोई प्रवक्ता नहीं रहा न हमारे पास कोई ऐसा है जो जाने कि यह कब लों रहेगा॥

१०। कब लों हे ईश्वर रिपु चिढ़ाता रहेगा। क्या शत्रु तेरे नाम की निन्दा सदा करता जावेगा॥

११। तू अपना हाथ अपना दहिना हाथ क्यों खींचता है। अपनी गोद में से उसे निकाल के उन्हें नाश कर॥

१२। क्योंकि ईश्वर प्राचीनकाल से मेरा राजा है। वह पृथिवी के बीच त्राण के कार्य्य करता आया है॥

१३। तू ने अपने सामर्थ्य से समुद्र को चीरा। तू ने मगरमच्छों के सिरों को जल में फोड़ दिया॥

१४। तू ने लिव्यातान् के सिरों को कुचला। और उसे बनचरों का भोजन कर दिया॥

१५। तू ने चटान चीरके सोता और नदी निकाली। तू ने सदा बहते महानदों को सुखा दिया॥

१६। दिन तेरा है रात भी तेरी है। ज्योति और सूर्य्य को तू ही ने स्थिर किया है॥

१७। तू ने पृथिवी के सब सिवानों को ठहराया। ग्रीष्म और जाड़ा जो हैं तू ही ने उन्हें बनाया॥

१८। इसे स्मरण कर हे प्रभु शत्रु ने कैसा चिढ़ाया। मूढ लोगों ने तेरे नाम की कैसी निन्दा किई है॥

१९। अपनी पिण्डुकी को स्वेच्छाचारियों के यूथ के वश में न सौंप। अपने दुःखियों के यूथ को सदा के लिये भूल न जा॥

२०। वाचा को चेत कर। क्योंकि पृथिवी के अन्धेरे देश अन्धेर के वासस्थानों से भरे हैं॥

२१। कुचला हुआ जन लज्जित होके तेरे पास से लौट न आवे। दुःखी और दरिद्र तेरे नाम की स्तुति करें॥

२२। हे ईश्वर उठ अपना झगड़ा झगड़! स्मरण कर कि मूढ़ दिन भर तेरी निन्दा करता है॥

२३। अपने रिपुओं के शब्द को भुल न जा। तेरे विरोधियों का कोलाहल निरन्तर उठता रहता है॥

पन्द्रहवां दिन।

प्रातःकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र ७५।

१। हे ईश्वर हम ने तेरा धन्यवाद किया हम ने तेरा धन्यवाद किया है और तेरा नाम समीप हुआ है। तेरे आश्चर्य्यकर्म्मों का वर्णन हो रहा है॥

२। "जब मैं ठीक समय पाऊंगा। तब मैं सच्चाई से न्याय करूंगा॥

३। पृथिवी और उस के सब बासी गल गये। मैं ही ने उस के खंभों को थांभ लिया है"॥

४। मैं ने घमण्डियों से कहा घमण्ड मत करो। और दुष्टों से कि अपना सींग मत उठाओ॥

५। अपना सींग ऊपर मत उठाओ। न सिर उठाके अन्धेर की बात बोलो॥

६। क्योंकि उन्नति न तो पूरब से न पश्चिम से। न बन की ओर से आती है॥

७। क्योंकि ईश्वर ही न्यायी है। वह एक को घटाता और दूसरे को बढ़ाता है॥

८। क्योंकि प्रभु के हाथ में कटोरा है और दाखमधु लाल है उस में मसाला मिला हुआ है और वह उस में से उंडेलता है। पर उस के तलछट को पृथिवी के सब दुष्ट लोग पी लेवेंगे॥

६ । और मैं तो सदा प्रचार करता जाऊंगा । मैं याकोब् के ईश्वर का स्तुतिगान करूंगा ॥

१० । और मैं दुष्टों के सब सींगों को काट डालूंगा । पर धर्म्मी के सींग ऊंचे किये जावेंगे ॥

—:o:—

स्तोत्र ७६ ।

१ । ईश्वर यहूदा में प्रसिद्ध हो गया है । उस का नाम यिस्राएल् में बड़ा हुआ है ॥

२ । और उस का मण्डप शालेम् में बना है । और उस का वासस्थान सिय्योन् में ॥

३ । वहां उस ने धनुष के जलते बाण तोड़ डाले । फरी और खड्ग और युद्ध की सामग्री को ॥

४ । तू ज्योतिमय हुआ है । अहेर से भरे हुए पहाडों से अधिक ऐश्वर्य्यवन्त ॥

५ । दृढ़ मनवाले लुट गये वे अपनी नींद में सो गये । और शूरों में से किसी के हाथ काम न आये ॥

६ । तेरी घुड़की से हे याकोब् के ईश्वर । रथ और घोड़ा दोनों घोर निद्रा में पड़े ॥

७ । तू तूही भयंकर है । और जब तू कोप करे तब कौन तेरे साम्हने खड़ा रहेगा ॥

८ । तू ने स्वर्ग पर से अपना न्याय सुनाया । पृथिवी डर गई और चुप रही ॥

९ । जब ईश्वर न्याय करने को उठा । पृथिवी के सब सौम्यस्वभावों को बचाने के लिये ॥

१० । क्योंकि मनुष्य का क्रोध तेरे धन्यवाद का कारण होगा । तू अवशिष्ट क्रोध को अपनी कटि में बांधेगा ॥

११। हे परमेश्वर के आसपास के सब रहनेहारो प्रभु अपने ईश्वर की मनौतियां मानके पूरी करो। जो भयंकर है उस के पास लोग भेट ले आवें॥

१२। वह प्रधानों के अभिमान को तोड़ देगा। वह पृथिवी के राजाओं को भयानक देख पड़ता है॥

—:०:—

स्तोत्र ७७।

१। मैं अपनी वाणी से ईश्वर को पुकारता हूं और मैं चिल्लाऊंगा। मैं अपनी वाणी से ईश्वर को पुकारता हूं तू मेरी ओर कान लगा॥

२। अपने कष्ट के दिन मैं ने प्रभु को खोजा। रात को मेरा हाथ फैला रहा और ढीला नहीं हुआ मेरे जीव ने शान्ति लेनी न चाही॥

३। मैं ईश्वर को स्मरण कर करके कहरता था। मैं दोहाई देता रहा और मेरा आत्मा मूर्छित हो गया॥

४। तू मेरी आंखों को खुली रखता था। मैं दुबधे में पड़ा और बोल नहीं सका॥

५। मैं ने प्राचीनकाल के दिनों को सोचा। अगले समय के बरसों को॥

६। मैं ने रात को अपना गीत स्मरण किया। मैं ने अपने मन में ध्यान किया और मेरे आत्मा ने भली भांति बिचार किया॥

७। क्या प्रभु युगानयुग मन से उतार दिये रहेगा। और फिर कभी अनुग्रह नहीं करेगा॥

८। क्या उस की दया सदा के लिये नास्तिक हो गई। क्या उस का वचन सारी पीढ़ियों के लिये झूठा भया॥

९। क्या परमेश्वर करुणा करने को भूल गया। क्या उस ने अपनी मया को कोप से रोक रक्खा है॥

१० । और मैं ने कहा यह तो मेरी दुर्बलता है । परन्तु मैं परात्पर के दहिने हाथ के बरसों को स्मरण करूंगा ॥

११ । मैं याह् के महाकार्य्यों की चर्चा करूंगा । वरन मैं तेरे अद्भुत कार्य्यों को जो प्राचीनकाल में भये स्मरण करूंगा ॥

१२ । और मैं तेरे सब अद्भुत कार्य्यों पर ध्यान करूंगा । और तेरे महाकार्य्यों को सोचूंगा ॥

१३ । हे ईश्वर तेरा मार्ग पवित्रता में है । ईश्वर के तुल्य कौन देव बड़ा है ॥

१४ । तू ही वह परमेश्वर है जो अद्भुत कार्य्य करता है । तू ने लोकगणों में अपना सामर्थ्य विदित किया है ॥

१५ । तू ने अपने निज लोगों को अपनी भुजा से छुड़ा लिया । याकोब् और योसेफ् के वंश को ॥

१६ । हे ईश्वर जल ने तुझे देखा जल ने तुझे देखा उस को प्रसव की सी पीरें लगीं । गहिराव भी व्याकुल भया ॥

१७ । मेघ पानी हो होके बह गये । बादलों ने शब्द सुनाया और तेरे बाण इधर उधर उड़े ॥

१८ । तेरी कड़क बवंडर में सुन पड़ी । बिजलियां जगत में चमकीं और पृथिवी हिली और कांप उठी ॥

१९ । तेरा मार्ग समुद्र में था और तेरे पथ गहिरे जल में थे । और तेरे पदचिन्ह जान नहीं पड़े ॥

२० । तू ने भेड़ों की नाईं अपने निज लोगों की । मोशे और अहरोन् के हाथ से अगुवाई कराई ॥

संध्याकाल की प्रार्थना ।

स्तोत्र ७८ ।

१ । हे मेरे निज लोगो मेरी व्यवस्था की ओर कान लगाओ । अपने कान मेरे मुंह के वाक्यों की ओर झुकाओ ॥

२ मैं अपना मुंह दृष्टान्त कहने के लिये खोलूंगा । मैं प्राचीनकाल के दृष्टकूट उच्चारूंगा ॥

३ । जिन्हें हम ने सुना और जाना । और हमारे पुरखाओं ने हम से बखान किया ॥

४ । हम उन्हें उन के वंश से जो दूसरी पीढ़ी में होंगे गुप्त नहीं रक्खेंगे । पर प्रभु का गुणानुवाद करेंगे और उस के सामर्थ्य और उस के आश्चर्य्यकर्म्मों का जो उस ने किये वर्णन करेंगे ॥

५ । उस ने याक़ोब् में एक साक्षी ठहराई और यिस्राएल् में एक व्यवस्था स्थापन किई । इस के विषय में उस ने हमारे पुरखाओं को आज्ञा दिई कि वे उसे अपने पुत्रों को विदित करें ॥

६ । जिस्तें दूसरी पीढ़ी के लोग जानें अर्थात् जो पुत्र उत्पन्न होनेहारे थे । कि वे उठके अपने पुत्रों से बखान करें ॥

७ । और अपना आसरा ईश्वर ही पर रक्खें । और परमेश्वर के महाकार्य्यों को न भूलें पर उस की आज्ञाओं को पालें ॥

८ । और अपने पुरखाओं के समान न होवें जो एक ढंगइत और मगरी पीढ़ी थे । एक ऐसी पीढ़ी जिस ने अपने हृदय को स्थिर नहीं किया और न उन का आत्मा परमेश्वर के संग विश्वस्त था ॥

९ । एफ्रैम्वंशियों ने शस्त्रधारी और धनुर्धर होके भी । लड़ाई के दिन में पीठ फेरी ॥

१० । उन्हों ने ईश्वर की वाचा को पालन न किया । और उस की व्यवस्था पर चलने न चाहा ॥

११ । और उन्हों ने उस के महाकार्य्यों को बिसराया । और उस के आश्चर्य्यकर्म्मों को जो उस ने उन के साम्हने किये थे ॥

१२ । उस ने उन के पुरखाओं के सन्मुख अद्भुत कार्य्य किये थे । मिसर के देश सोअन् के चौगान में ॥

१३ । उस ने समुद्र को चीरके उन्हें पार कर दिया । और जल को ढेर की नाईं खड़ा किया ॥

१४ । और उस ने दिन को बादल से उन की अगुवाई किई । और समस्त रात्रि को आग की ज्योति से ॥

१५ । उस ने बन में चटानें चीरीं । और उन्हें ऐसा पिलाया जैसे सागर के गहिराव में से ॥

१६ । और ऊंची चटानों में से धाराएं निकालीं । और जल को महानदों की नाईं बहाया ॥

१७ । परन्तु उन्हों ने फिर उस का और अधिक पाप किया । और मरुभूमि में परात्पर के विरुद्ध उठे ॥

१८ । और उन्हों ने परमेश्वर की अपने मन में परीक्षा किई । और पेट पोसने के लिये भोजन मांगा ॥

१९ । और वे ईश्वर के विरोध में बोलने लगे । उन्हों ने कहा क्या परमेश्वर बन में भोजनमंच सिद्ध कर सकेगा ॥

२० । देखो उस ने चटान को चीरा तो जल बह निकला और नदियां उमंड गईं । क्या वह रोटी भी दे सकेगा क्या वह अपने निज लोगों के लिये मांस का प्रबन्ध कर सकेगा ॥

२१ । इस लिये प्रभु सुनके क्रोध से भर गया । और आग याकोब् में लगी और कोप यिस्राएल् के विरुद्ध भड़का ॥

२२ । क्योंकि उन्हों ने ईश्वर पर विश्वास नहीं रक्खा । और न उस के त्राण पर भरोसा किया ॥

२३ । तौभी उस ने ऊपर मेघों को आज्ञा दिई । और आकाश के द्वारों को खोला था ॥

२४ । और उन पर मान् बरसाया कि वे खावें । और स्वर्ग का अन्न उन्हें दिया ॥

२५ । प्रत्येक जन शूरों की रोटी खाता था । उस ने उन के पास भोजन भेजके उन्हें तृप्त किया था ॥

२६ । उस ने पुरवैया को आकाश में चलाया । और अपने सामर्थ्य से दखिनहियां को ले आया ॥

२७ । और उन के ऊपर मांस को धूलि की नाईं बरसाया । और पंछियों को समुद्र के बालू के समान ॥

२८ । और उन्हें उन की छावनी के भीतर गिराया । उन के वास-स्थानों की चारों ओर ॥

२९ । सो वे खाके परितृप्त भये । और उस ने उन की कामना पूरी किई ॥

३० । उन की कामना जाती नहीं रही थी । वरन उन का खाना भी उन के मुंह ही में था ॥

३१ । कि ईश्वर का कोप उन पर भड़का । और उन के हृष्टपुष्टों को घात किया और यिस्राएल् के चुने हुओं को गिरा दिया ॥

३२ । तिस पर भी वे और अधिक पाप करते गये । और उस के आश्चर्य्यकर्म्मों की प्रतीति न किई ॥

३३ । सो उस ने उन के दिनों को व्यर्थता में कटवाया । और उन के बरसों को घबराहट में ॥

३४ । जब वह उन्हें मार डालने लगा तब वे उस को खोजने लगे । और फिरके परमेश्वर को तड़के ढूंढ़ा ॥

३५ । और स्मरण किया कि ईश्वर हमारी चटान है । और परात्पर परमेश्वर हमारा छुड़ानेहारा ॥

३६। परन्तु उन्हों ने अपने मुंह से उस की चापलूसी किई। और अपनी जीभ से उस से भूठ कहा॥

३७। और उन का हृदय उस के संग स्थिर न था। और न वे उस की वाचा में विश्वस्त रहे॥

३८। परन्तु वह तो वत्सल था और अधर्म्म को क्षमा करता था। सो वह नाश नहीं करता था पर बार बार अपने कोप को ठंढा करता और अपने समस्त क्रोध को नहीं भड़कने देता था॥

३९। और उस ने स्मरण किया कि ये तो मांस के पुतले हैं। मानो एक वायु जो चला जाता है और लौट नहीं आता॥

४०। कितनी बार उन्हों ने बन में उस से दंगा किया। और मरुभूमि में उस को उदास किया॥

४१। वे फिर फिर परमेश्वर की परीक्षा करते थे। और यिस्राएल् के पवित्र की सीमा बांधते थे॥

४२। उन्हों ने उस के हाथ को स्मरण न किया। न उस दिन को जब उस ने उन्हें रिपु के वश से छुड़ा लिया था॥

४३। कि उस ने मिसर में अपने चिन्ह दिखाये। और अपने अचंभों को सोअन् के चौगान में॥

४४। और उस ने उन की नदियों को लहू कर डाला। और वे अपनी सरिताओं का जल न पी सके॥

४५। उस ने उन के बीच दंश भेजे और उन्हों ने उन को खा लिया। और दादुरों को जिन्हों ने उन को नाश किया॥

४६। और उस ने उन की भूमि की उपज कीड़ों को सौंप दिई। और उन के परिश्रम का फल टिड्डी को॥

४७। और उस ने उन की दाखलताओं को ओलों से मारा। और उन के गूलरों को पाले से॥

४८। और उस ने उन के पशुओं को ओलों के वश में कर दिया। और उन की भेड़ बकरियों को बिजलियों के ॥

४९। उस ने उन पर अपने कोप का ज्वलन अपना रोष और क्रोध और कष्ट भेजा। विपत्ति के देनेहारे दूत पठाये गये ॥

५०। उस ने अपने कोप के लिये एक मार्ग बनाया और उन के प्राण को मरने से नहीं रोक रक्खा। परन्तु उन के जीवन को मरी के वश में कर दिया ॥

५१। और उस ने मिसर के सब पहिलैठों को मारा। हाम् के डेरों में उन के सामर्थ्य के पहिले फल को ॥

५२। और उस ने अपने लोगों को भेड़ों की नाईं पयान कराया। और बन में झुंड के समान उन की अगुवाई किई ॥

५३। और वह उन्हें कुशल से ले चला ऐसा कि वे न डरे। पर समुद्र ने उन के शत्रुओं को ढांप लिया ॥

५४। और उस ने उन्हें अपने पवित्र देश में पहुंचाया। इसी पर्व्वत पर जो उस के दहिने हाथ ने प्राप्त किया था ॥

५५। और उस ने अन्यजातियों को उन के साम्हने से निकाल दिया और उन की भूमि को रस्सी डालके माप दिया। और यिस्राएल् के गोत्रों को उन के डेरों में बसा दिया ॥

५६। परन्तु उन्हों ने परात्पर ईश्वर की परीक्षा किई और उस से दंगा किया। और उस की साक्षियों को पालन नहीं किया ॥

५७। और वे हटे और अपने पुरखाओं के समान विश्वासघात किया। वे धोखा देनेहारे धनुष की नाईं मुड़ गये ॥

५८। और उन्हों ने उस को अपने ऊंचे स्थानों से रिस दिलाया और अपनी खुदी हुई मूर्त्तियों से उस का ज्वलन भड़काया ॥

५९। तब ईश्वर सुनके अति क्रुद्ध भया। और यिस्राएल् से अत्यन्त घिन्न किई ॥

६० । और शीलो के वासस्थान को त्याग किया । उस तंबू को जो उस ने मनुष्यों में खड़ा किया था ॥

६१ । और अपना सामर्थ्य बंधुआई को सौंप दिया । और अपनी सुन्दरता को रिपु के हाथ में ॥

६२ । और अपने निज लोगों को तलवार के वश में कर दिया । और अपने निज भाग पर अति क्रुद्ध भया ॥

६३ । उन के तरुणों को आग भस्म कर गई । और उन की कुमारियों के बिवाह के गीत न गाये गये ॥

६४ । उन के याजक तलवार से खेत आये । और उन की विधवाएं रो नहीं सकीं ॥

६५ । तब प्रभु मानो नींद से जाग उठा । उस बीर के समान जो दाखमधु पीके ललकारता है ॥

६६ । और उस ने अपने रिपुओं को मारके पीछे हटा दिया । उस ने उन्हें सदा के लिये निन्दित किया ॥

६७ । और उस ने येसिफ् के तंबू को अग्राह्य किया । और एफ्रैम् के गोत्र को और नहीं चुना ॥

६८ । पर यहूदा के गोत्र को चुन लिया । सिय्योन् पर्व्वत को जिस से उस ने प्रीति किई ॥

६९ । और उस ने अपना पवित्रस्थान पहाड़ों के सदृश बनाया पृथिवी के समान जिस की नेव उस ने सदा के लिये डाली है ॥

७० । और उस ने अपने दास दावीद् को चुन लिया । और उस को भेड़शालाओं में से ले लिया ॥

७१ । वह बच्चेवाली भेड़ों के पीछे से उस को ले आया । जिस्तें वह उस के निज लोग याकोब् और उस के निज भाग यिस्राएल् को चरावे ॥

७२ । सो उस ने अपने मन की खराई से उन की चरवाही किई । और अपने हाथों की निपुणता से उन की अगुवाई किई ॥

सोलहवां दिन।

प्रात:काल की प्रार्थना।

स्तोत्र ७९।

१। हे ईश्वर अन्यजातिगण तेरे निज भाग में पैठे। उन्हों ने तेरे पवित्र मन्दिर को अशुद्ध किया और यिरूशलेम् को ढेर कर दिया है॥

२। उन्हों ने तेरे दासों की लोथों को आकाश के पंछियों का आहार कर दिया। और तेरे भक्तों का मांस भूमि के पशुओं को खिलाया॥

३। उन्हों ने उन का लहू यरूशलेम् की चारों ओर पानी की नाईं बहाया। और उन को समाधि में रखने के लिये कोई न था॥

४। हम अपने पड़ोसियों से दुर्नाम हो गये। अपनी चारों ओर रहनेहारों की हंसी और ठट्ठे का विषय॥

५। हे प्रभु तू कब लों निरन्तर कोप करता रहेगा। कब लों तेरा ज्वलन आग की नाईं भड़कता रहेगा॥

६। अपना क्रोध उन जातियों पर उंडेल जो तुझे नहीं जानतीं। उन राज्यों पर जिन्हों ने तेरा नाम लेके नहीं पुकारा॥

७। क्योंकि उन्हों ने याकोब् को भस्म किया। और उस के वासस्थान को उजाड़ दिया है॥

८। अगले समय के अधर्म्मों को हमारी हानि के लिये स्मरण न कर। तेरा छोह शीघ्र हम को सम्भाले क्योंकि हमारी बड़ी दुर्दशा हो गई है॥

९। हे हमारे त्राण के ईश्वर अपने नाम की महिमा के निमित्त हमारी सहाय कर। और हम को छुड़ा और हमारे पापों को धो डाल अपने नाम के निमित्त॥

१० । अन्यजातिगण क्यों कहें कि उन का ईश्वर कहां है । हमारे सन्मुख अन्यजातियों में तेरे दासों के उस लहू का जो बहाया गया पलटा प्रगट में लिया जावे ॥

११ । बंधुवे का कराहना तेरे साम्हने पहुंचे । अपनी भुजा के बल से घात किये जानेहारों को उबार ॥

१२ । और हमारे पड़ोसियों ने हे प्रभु तेरी जो निन्दा किई । उसे उन्हीं की गोद में सातगुणा फेर दे ॥

१३ । तो हम जो तेरे निज लोग और तेरे चराइ की भेड़ें हैं सदा तेरा धन्यवाद करेंगे । और पीढ़ी से पीढ़ी लों गुणानुवाद करते रहेंगे ॥

—:o:—

स्तोत्र ८० ।

१ । हे यिस्राएल् के गड़ेरिये तू जो भेड़ों की नाईं योसेफ् की अगुवाई करता है कान लगा । हे करूबीम् पर विराजमान उजागर हो ॥

२ । एफ्रैम् और बिन्यामीन् और मनश्शे के साम्हने । अपना पराक्रम जगाके हमारे त्राण के लिये आ ॥

३ । हे ईश्वर हम को फेर । और अपने मुख की ज्योति चमका तो हम बच जावेंगे ॥

४ । हे प्रभु सेनाओं के ईश्वर । तू कब लों अपने निज लोगों की प्रार्थना पर कुपित रहेगा ॥

५ । तू ने उन को आंसुओं की रोटी खिलाई । और मटके भर भरके उन्हें आंसू पिलाये हैं ॥

६ । तू हम को हमारे पड़ोसियों के झगड़े का कारण करता है और हमारे शत्रु अपना जी भरके ठट्ठा करते हैं ॥

७ । हे सेनाओं के ईश्वर हम को फेर । और अपने मुख की ज्योति चमका तो हम बच जावेंगे ॥

८। तू मिसर से एक दाखलता निकाल ले आया। तू ने अन्यजातियों को निकाल देके उसे लगाया॥

९। तू ने उस के लिये स्थान सिद्ध किया। और उस ने जड़ पकड़ के देश को भर दिया॥

१०। पहाड़ उस की छाया से ढंप गये। और परमेश्वर के देवदारु उस की डालियों से॥

११। वह अपनी शाखाओं को समुद्र लों बढ़ाती थी। और अपनी डालियों को महानद लों॥

१२। तू ने क्यों उस की खांइयों को गिरा दिया। ऐसा कि मार्ग से जितने चले जाते हैं सब उस को तोड़ते हैं॥

१३। अरण्य में से शूकर उस को नाश करता। और चौगान पर के चरनेहारे उस को चर लेते हैं॥

१४। हे सेनाओं के ईश्वर कृपा करके फिर। स्वर्ग पर से दृष्टि कर और इस दाखलता की देखके उस की सुधि ले॥

१५। और उस खूंटी की जिसे तेरे दहिने हाथ ने लगाया था। और उस शाखा की जिस को तू ने अपने लिये दृढ़ किया था॥

१६। वह अब आग से जल गई वह कट गई। तेरे मुख की घुड़की से वे नष्ट होते हैं॥

१७। तेरा हाथ तेरे दहिने हाथ के पुरुष पर रहे। उस मनुष्यवंशी पर जिसे तू ने अपने लिये दृढ़ किया है॥

१८। तो हम तेरे पास से न हटेंगे। तू हम को जिला तो हम तेरा नाम लेके पुकारेंगे॥

१९। हे प्रभु सेनाओ के ईश्वर हम को फेर। अपने मुख की ज्योति चमका तो हम बच जायेंगे॥

—:0:—

स्तोत्र ८१ ।

१ । ईश्वर के लिये जो हमारा बल है ऊंचे स्वर से गाओ । याकोब् के ईश्वर के लिये आनन्द से ललकारो ॥

२ । स्तुति का गीत उठाओ और डफ बजाओ । मनोहर वीणा और कानून को ॥

३ । अमावस्या को नरसिंगे फूंको । और पूर्णमासी को अर्थात् हमारे पर्व्वों के दिन में ॥

४ । क्योंकि यह यिस्राएल् के लिये विधि । याकोब् के ईश्वर का एक विधान है ॥

५ । इस को उस ने तब योसेफ् में साक्षी के लिये ठहराया जब वह मिसर देश से होके निकलता था । तब मैं ने एक की वाणी सुनी जिस को मैं आगे नहीं जानता था ॥

६ । मैं ने उस के कन्धे पर से बोझ को उतारा । उस के हाथ बंहगी के उठाने से छूट गये ॥

७ । तू ने कष्ट में पुकारा और मैं ने तुझ को उबारा । गरज के शरणस्थान में से मैं ने तुझ को उत्तर दिया मरीबा के जल पर मैं ने तुझ को जांचा ॥

८ । हे मेरे निज लोगो सुनो तो मैं तुझे साक्षी देके जताऊंगा । हे यिस्राएल् हाय कि तू मेरी सुनता ॥

९ । तुझ में कोई बिराना देव न होवे । और न तू किसी पराये देव को दण्डवत करना ॥

१० । मैं प्रभु तेरा ईश्वर हूं जो तुझे मिसर देश में से चढ़ाय लाया । अपना मुंह पसार तो मैं उसे भर देऊंगा ॥

११ । परन्तु मेरे निज लोगों ने मेरी वाणी न सुनी । और यिस्राएल् ने मुझ को नहीं चाहा ॥

१२। तब मैं ने उन को उन के मन के स्वेच्छाचार पर छोड़ दिया। कि वे अपनी युक्तियों के अनुसार चलें ॥

१३। अब हाय कि मेरे लोग मेरी सुनते। और यिस्राएल् मेरे मार्गों पर चलते ॥

१४। तो मैं क्षण भर में उन के शत्रुओं को दबाता। और उन के रिपुओं के विरुद्ध अपना हाथ चलाता ॥

१५। प्रभु के बैरियों को बरबस उस से दबना पड़ता। पर ये सदाकाल बने रहते ॥

१६। और वह उन्हें उत्तम से उत्तम गोहूं खिलाता। और चटान में से मैं मधु निकालके तुझे तृप्त करता ॥

संध्याकाल की प्रार्थना

स्तोत्र ८२।

१। परमेश्वर की सभा में ईश्वर ही प्रधान है। देवताओं के मध्य में वही न्याय करता है ॥

२। तुम कब लों अधर्म्म से न्याय करोगे। और दुष्टों का पक्ष करते रहोगे ॥

३। कंगाल और पितृहीन बालक का न्याय चुकाओ। दुःखी और दीन को धर्म्मी ठहराओ ॥

४। कंगाल और दरिद्र को बचा लेओ। दुष्टों के हाथ से उन्हें छुड़ाओ ॥

५। वे तो कुछ जानते नहीं कुछ विचार नहीं करते पर अंधेरे में मारे फिरते हैं। पृथिवी की सब नेवें हिल गईं ॥

६। मैं ने कहा तो था तुम देवते हो। और तुम सब परात्पर के पुत्र हो ॥

७। परन्तु तुम मनुष्य ही की नाईं मरोगे। और किसी अधिपति के समान गिर पड़ोगे॥

८। हे ईश्वर उठ पृथिवी का न्याय कर। क्योंकि तू समस्त जातियों को अपने भाग में लेवेगा॥

—:0:—

स्तोत्र ८३।

१। हे ईश्वर मौन धरे न रह। हे परमेश्वर चुप न रह और चैन न ले॥

२। क्योंकि देख तेरे शत्रु धूम मचा रहे हैं। और तेरे बैरियों ने सिर उठाया है॥

३। वे तेरे निज लोगों की हानि पर गुप्त परामर्श करते। और तेरे छिपाये हुओं के विरुद्ध आपस में युक्तियां निकालते हैं॥

४। उन्हों ने कहा आओ हम उन को ऐसे मिटावें कि वे जाति न रहें। तो यिस्राएल् का नाम फिर स्मरण में न रहेगा॥

५। क्योंकि उन्हों ने एका करके जी से युक्ति निकाली। उन्हों ने तेरे ही विरुद्ध बाचा बांधी है॥

६। अर्थात् एदोम् के तंबूओं और यिश्माएलियों। मोआब् और हग्री लोगों ने॥

७। गबाल् और अम्मोन् औ अमालेक ने। पलेशेत् ने सोर् के बासियों समेत॥

८। अश्शूर भी उन के संग मिल गया। वे लोतवंशियों के सहायक भये हैं॥

९। उन से ऐसा कर जैसा मिद्यान से किया। जैसा सीसरा और याबीन् से कीशोन् के नाले पर किया था॥

१०। वे तो एन्दोर में नष्ट भये। वे भूमि के खाद हो गये॥

११। उन के अध्यक्षों को भी ओरेब् और जेब् के तुल्य कर। और उन के सब अधिपतियों को जेबा और सल्मुन्ना के समान ॥

१२। जिन्हों ने कहा कि हम ईश्वर के वासस्थानों को। अपना निज भाग करके ले लेवें ॥

१३। हे मेरे ईश्वर उन्हें बवंडर की धूलि के समान कर। उस भूसी के सदृश जो पवन के साम्हने उड़ जाती है ॥

१४। जैसे दावानल अरण्य को भस्म करता। और उस की ज्वाला पहाड़ों को जला देती है ॥

१५। तैसे ही अपनी आंधी से उन का पीछा कर। और अपने बवंडर से उन को घबरा दे ॥

१६। उन के मुंह लज्जा से भर। जिस्तें वे तेरे नाम को ढूंढ़ें हे प्रभु ॥

१७। वे युगानयुग लज्जित और व्याकुल रहें। और अप्रतिष्ठित होके नाश हो जावें ॥

१८। तो वे जानेंगे कि तू जिस का नाम प्रभु है। केवल तू ही समस्त पृथिवी के ऊपर परात्पर है ॥

—:o:—

स्तोत्र ८४।

१। हे सेनाओं के प्रभु। तेरा वासस्थान क्या ही प्रिय है।

२। मेरा जीव प्रभु के आंगनों की आकांक्षा में क्षीण हो गया है। मेरा मन और मेरा शरीर जीवते परमेश्वर के लिये चिल्लाता है ॥

३। वरन चिड़िया घर पा चुकी और सूपाबेनी अपने लिये एक घोंसला पा चुकी है जहां वह अपने बच्चे रक्खे। अर्थात् तेरी वेदियों में हे सेनाओं के प्रभु मेरे राजा और मेरे ईश्वर ॥

४। धन्य वे हैं जो तेरे घर में बसते हैं। वे तेरी स्तुति करते चले जावेंगे ॥

५। धन्य है वह मनुष्य जिस का बल तुझ में है। राजमार्ग उन के हृदय में हैं॥

६। वे रोने की तराई में से चले जाते हुए उस को सोता ही सोता बना देते हैं। वरन अगला मेंह उसे आशीषों से भर देता है॥

७। वे सामर्थ्य से सामर्थ्य लों बढ़ते जाते हैं। उन में से प्रत्येक जन सिय्योन् में ईश्वर के सन्मुख उपस्थित होता है॥

८। हे प्रभु सेनाओं के ईश्वर मेरी प्रार्थना सुन। हे याकोब् के ईश्वर कान लगा॥

९। हे ईश्वर हमारी फरी देख। और अपने अभिषिक्त के मुख पर दृष्टि कर॥

१०। क्योंकि तेरे आंगनों में एक दिन रहना सहस्र दिन से उत्तम है। मैं अपने ईश्वर के घर की डेवढ़ी पर रहने को दुष्टता के डेरों में बास करने से अधिक चाहता हूं॥

११। क्योंकि प्रभु परमेश्वर सूर्य्य और फरी है। प्रभु अनुग्रह और महिमा देगा और जो खराई से चलते हैं उन से वह कोई अच्छा पदार्थ रोक नहीं रक्खेगा॥

१२। हे सेनाओं के प्रभु। धन्य है वह मनुष्य जो तुझ पर भरोसा रखता है॥

—:०:—

स्तोत्र ८५।

१। हे प्रभु तू ने अपने देश पर अनुग्रह किया है। तू याकोब् के बंधुओं की ओर फिरा है॥

२। तू ने अपने निज लोगों का अधर्म्म क्षमा किया। तू ने उन के सारे पाप को ढांप दिया है॥

३। तू ने अपने सब क्रोध को खींच लिया। तू अपने कोप के ज्वलन से फिरा है॥

४। हे हमारे त्राण के ईश्वर हमारी ओर फिर। और अपनी रिस हम पर से दूर कर॥

५। क्या तू सर्वदा हम पर कुपित रहेगा। क्या तू पीढ़ी से पीढ़ी लों अपने कोप को बढ़ाता रहेगा॥

६। क्या तू फिरके हम को न जिलावेगा। जिस्तें तेरे निज लोग तुझ में आनन्दित होवें॥

७। हे प्रभु अपनी दया हमें दिखा। और अपना त्राण हम को दे॥

८। मैं सुनूंगा कि परमेश्वर प्रभु क्या बोलेगा निश्चय वह अपने लोगों से और अपने भक्तों से शान्ति की बातें कहेगा। परन्तु वे अभिमानयुक्त मूर्खता की ओर न फिरें॥

९। निश्चय उस का त्राण उस के डरवैयों के निकट है। जिस्तें हमारे देश में महिमा बनी रहे॥

१०। दया और सच्चाई मिल गई धर्म्म और सन्धि ने आपस में चुम्बन किया है॥

११। सत्य पृथिवी में से उगेगा। और धर्म्म ने स्वर्ग पर से झांका है॥

१२। और प्रभु उत्तम पदार्थ देगा। और हमारा देश अपना फल देवेगा

१३। धर्म्म उस के आगे आगे जावेगा। और उस के पदचिन्हों को एक मार्ग बनावेगा॥

सत्रहवां दिन।

प्रात:काल की प्रार्थना।

स्तोत्र ८६।

१। हे प्रभु अपना कान झुकाके मुझे उत्तर दे। क्योंकि मैं दु:खी और दरिद्र हूं॥

२। मेरे प्राण की रक्षा कर क्योंकि मैं भक्त हूं। हे मेरे ईश्वर तू अपने दास को बचा जो तुझ पर भरोसा रखता है॥

३। हे प्रभु मुझ पर करुणा कर। क्योंकि मैं दिन भर तेरी ओर पुकारता हूं॥

४। अपने दास के जीव को आनन्दित कर। क्योंकि मैं तेरी ओर हे प्रभु अपना जीव उठाता हूं॥

५। क्योंकि तू हे प्रभु भला और क्षमावन्त है। और उन सब के लिये जो तुझे पुकारते हैं बड़ा दयालु है॥

६। हे प्रभु मेरी प्रार्थना की ओर कान लगा। और मेरी बिनती की वाणी की ओर कान धर॥

७। मैं अपने कष्ट के दिन तुझ को पुकारूंगा। क्योंकि तू मुझे उत्तर देवेगा॥

८। हे प्रभु देवों में से कोई तेरे समान नहीं। और न किसी के काम तेरे कामों के सरीखे हैं॥

९। जितनी जातियों को तू ने बनाया सब आवेंगी और तेरे सन्मुख हे प्रभु दण्डवत करेंगी। और तेरे नाम की महिमा करेंगी॥

१०। क्योंकि तू महान् है और आश्चर्य्यकर्म्म करता है। केवल तू ही ईश्वर है॥

११। हे प्रभु अपने मार्ग की मुझे शिक्षा दे तो मैं तेरे सत्य में चलूंगा। मेरे हृदय को एकाग्र कर जिस्तें मैं तेरे नाम का भय मानूं॥

१२। हे प्रभु मेरे ईश्वर मैं अपने समस्त हृदय से तेरा धन्यवाद करूंगा। और सदा तेरे नाम की महिमा करता रहूंगा॥

१३। क्योंकि तेरी दया मेरे ऊपर बहुत हुई है। और तू ने मेरे प्राण को गहिरे पाताल से बचा लिया है॥

१४। हे ईश्वर अभिमानी मेरे विरुद्ध उठे। और बलात्कारियों का समाज मेरे प्राण का खोजी भया और तुझ को अपने साम्हने न रक्खा॥

१५। पर तू हे प्रभु वत्सल और करुणामय परमेश्वर। क्रोध में धीमा और बड़ा दयालु और सत्य है॥

१६। मेरी ओर फिर और मुझ पर करुणा कर। अपने दास को अपना सामर्थ्य दे और अपनी दासी के पुत्र को बचा॥

१७। मुझ को कोई शुभ लक्षण दिखा कि मेरे बैरी देखके लज्जित होवें। क्योंकि तू ने हे प्रभु मेरी सहाय किई और मेरा प्रबोध किया है॥

—:0:—

स्तोत्र ८७।

१। जो नगर पवित्र पर्व्वतों पर बसा है। उस की नेव उसी की डाली हुई है॥

२। प्रभु सिय्योन् के फाटकों से। याकोब् के समस्त वासस्थानों से अधिक प्रीति रखता है॥

३। हे ईश्वर के नगर। तेरे विषय में महिमायुक्त बातें कही गई हैं॥

४। मैं रहब् और बाबेल् को अपने जान पहिचानों में गिनके उन की चर्चा करूंगा। देख पलेशेत् और सोर् को कूश् समेत अमुक वहीं उत्पन्न भया॥

५। और सिय्योन् के विषय में यह कहा जावेगा कि अमुक और अमुक उस में उत्पन्न हुआ। और परात्पर आप ही उस को स्थिर करेगा॥

६। जब प्रभु लोकगणों के नाम लिखेगा तब वह ऐसा कहेगा। कि अमुक वहीं उत्पन्न हुआ॥

७। और गानेवाले और नाचनेहारे कहेंगे। कि मेरे सारे सोते तुझी में हैं॥

—:0:—

स्तोत्र ८८।

१। हे प्रभु मेरे त्राण के ईश्वर। मैं दिन को और रात को भी तेरे आगे चिल्लाया॥

२। मेरी प्रार्थना तेरे आगे पहुंचे। अपना कान मेरी चिल्लाहट की ओर झुका॥

३। क्योंकि मेरा जीव क्लेशों से भरा हुआ है। और मेरा जीवन पाताल के निकट पहुंचा है॥

४। मैं उन में गिना गया हूं जो गड़हे में उतर जाते हैं। मैं बलहीन पुरुष के समान हो गया हूं॥

५। मृतकों के बीच में छोड़ा हुआ उन घात किये हुओं के समान जो समाधि में पड़े हैं। जिन को तू फिर स्मरण नहीं करता और जो तेरे हाथ से दूर हो गये हैं॥

६। तू ने मुझे गड़हे के तले ही में। अंधेरे स्थानों में गहिरावों में रक्खा है॥

७। तेरा रोष मुझी पर पड़ा रहता है। और तू ने अपने सारे ढेवों से मुझे दुःख दिया है॥

८। तू ने मेरे जानपहिचानों को मुझ से दूर किया और मुझ को उन के साम्हने घिनौना किया है। मैं बन्द हूं और निकल नहीं सकता॥

९। मेरी आंख दुःख के कारण दुर्बल हो गई। हे प्रभु मैं ने दिन भर तुझ को पुकारा मैं ने अपने हाथ तेरी ओर फैलाये हैं॥

१०। क्या तू मृतकों के लिये अद्भुत कार्य्य करेगा। क्या जो ढेर दिन भये मर गये सो उठके तेरा धन्यवाद करेंगे॥

११। क्या तेरी दया का बखान समाधि में किया जावेगा। क्या तेरी विश्वस्तता विनाश में कही जावेगी॥

१२। क्या तेरे अद्भुत कार्य्य अन्धकार में जाने जावेंगे। अथवा तेरा धर्म्म विस्मरण के लोक में॥

१३। पर मैं ने तो हे प्रभु तेरी दोहाई दिई। और विहान को मेरी प्रार्थना तेरे साम्हने पहुंचेगी॥

१४। हे प्रभु तू ने क्यों मेरे जीव को मन से उतार दिया। और अपना मुख मुझ से छिपा लिया है॥

१५। मैं बचपन ही से दुःखी और अधमूआ रहा हूं। तेरे डर मेरे ऊपर आ गये हैं मैं अति व्याकुल हो गया हूं॥

१६। तेरे क्रोध की लहरें मेरे ऊपर से निकल गईं। तेरे डरों ने मुझ को मिटा दिया है॥

१७। वे दिन भर जल की नाईं मझे घेरे रहते हैं। वे एक साथ होके मेरी चारों ओर आये हैं॥

१८। तू ने मित्र और संगी को मुझ से दूर किया। मेरे जान-पहिचान अन्धकार ही हैं॥

संध्याकाल की प्रार्थना

स्तोत्र ८९।

१। मैं प्रभु की समस्त दया का गीत गाऊंगा। मैं पीढ़ी से पीढ़ी लों तेरी विश्वस्तता को अपने मुंह से विदित करता रहूंगा॥

२। क्योंकि मैं ने कहा कि दया सदा बनी रहेगी। तू अपनी विश्वस्तता को स्वर्ग पर स्थिर रक्खेगा॥

३ "मैं ने अपने चुने हुये से वाचा बांधी। मैं ने अपने दास दाऊद से किरिया खाई॥

४। कि मैं तेरा वंश सदा लों स्थिर रक्खूंगा। और तेरे सिंहासन को पीढ़ी से पीढ़ी लों बनाये रक्खूंगा"॥

५। और हे प्रभु स्वर्ग तेरे अद्भुत कार्य्य के हेतु धन्यवाद करेगा। और तेरी विश्वस्तता की प्रशंसा पवित्रों की मण्डली में होवेगी॥

६। क्योंकि आकाशमण्डल में कौन प्रभु के तुल्य ठहरेगा। देव-पुत्रों में से किस से प्रभु की उपमा दिई जावेगी॥

७। परमेश्वर पवित्रों की सभा में अति भयङ्कर है। और जो उस की चारों ओर खड़े हैं उन से अधिक भयानक है॥

८। हे प्रभु सेनाओं के ईश्वर हे याह् तेरे सदृश कौन सामर्थी है। और तू अपनी विश्वस्तता से घिरा हुआ है॥

९। समुद्र के गर्व पर तू ही प्रभुता करता। जब उस के तरंग उठते हैं तब तू उन को शान्त करता है॥

१०। तू ने रहब् को हते हुए के समान कुचल डाला। तू ने अपनी बलवन्त भुजा से अपने शत्रुओं को छिन्न भिन्न किया है॥

११। स्वर्ग तेरा है पृथिवी भी तेरी है। जगत और उस की भर-पूरी जो है उस की नेव तू ही ने डाली॥

१२। उत्तर और दक्खिन को तू ने सिरजा। ताबोर् और हेर्मोन् तेरे नाम के हेतु आनन्द से ललकारते हैं॥

१३। तेरी भुजा पराक्रमयुक्त है। तेरा हाथ बलवन्त तेरा दहिना हाथ ऊंचा है॥

१४। तेरे सिंहासन का आधार धर्म्म और न्याय है। दया और सच्चाई तेरे आगे आगे चलती हैं॥

१५। धन्य है वह लोकगण जो आनन्द के महाशब्द को पहि-चानता है। हे प्रभु वे तेरे मुख की ज्योति में चलेंगे॥

१६। वे तेरे नाम से दिन भर आह्लादित रहेंगे। और तेरे धर्म्म के हेतु उन्नत होवेंगे॥

१७। क्योंकि तू उन के सामर्थ्य की सुन्दरता है। और अपने अनुग्रह से हमारे सींग को ऊंचा करेगा॥

१८। क्योंकि हमारी फरी प्रभु ही की है। और हमारा राजा यिस्राएल् के पवित्र का है॥

१९। उस समय तू दर्शन में अपने भक्त से बोला और तू ने कहा। कि "मैं ने सहाय करने का बोझ एक बीर पर रक्खा और प्रजा में से एक को चुनके उन्नत किया है॥

२० । मैं ने अपने दास दावीद् को पाया । और अपने पवित्र तेल से उस को अभिषेक किया ॥

२१ । ऐसा कि मेरा हाथ उस के संग स्थिर रहेगा । और मेरी भुजा उस को दृढ़ करेगी ॥

२२ । शत्रु उस पर कठोरता न करने पावेगा । और कुटिल उस को क्लेश न देने पावेगा ॥

२३ । पर मैं उस के रिपुओं को उस के साम्हने से काट डालूंगा । और उस के बैरियों को मारूंगा ॥

२४ । और मेरी विश्वस्तता और दया उस के संग बनी रहेगी । और उस का सींग मेरे नाम के हेतु ऊंचा रहेगा ॥

२५ । और मैं उस का हाथ समुद्र पर । और उस का दहिना हाथ महानदों पर रक्खूंगा ॥

२६ । वह मुझे पुकारा करेगा कि तू मेरा पिता । मेरा परमेश्वर और मेरे त्राण की चटान है ॥

२७ । और मैं उसे पहिलौठा ठहराऊंगा । वह पृथिवी के राजाओं के ऊपर अति उन्नत होवेगा ॥

२८ । मैं उस के लिये अपनी दया को रक्खे रहूंगा । और मेरी वाचा उस के लिये स्थिर रहेगी ॥

२९ । और मैं उस के वंश को सदा के लिये स्थापित करूंगा । और उस के सिंहासन को स्वर्ग के दिनों के समान ॥

३० । यदि उस के पुत्र मेरी व्यवस्था को छोड़ें । और मेरे न्यायों पर न चलें ॥

३१ । यदि वे मेरे विधिन को उल्लंघन करें । और मेरी आज्ञाओं को न पालें ॥

३२ । तो मैं उन के अपराध का दण्ड छड़ी से दूंगा । और उन के अधर्म्म का कोड़ों से ॥

३३। परन्तु मैं अपनी दया को उस पर से सर्वथा न टालूंगा। और न अपनी विश्वस्तता छोड़के मिथ्यावादी ठहरूंगा॥

३४। मैं अपनी वाचा को अशुद्ध न करूंगा। और जो मेरे मुंह से निकल चुका है उसे न बदलूंगा॥

३५। मैं अपनी पवित्रता से एक बात की किरिया खा चुका हूं। और दावीद् को कदापि धोखा न देऊंगा॥

३६। उस का वंश सदा बना रहेगा। और उस का सिंहासन सूर्य्य की नाईं मेरे साम्हने रहेगा॥

३७। वह चन्द्रमा की नाईं सदा स्थिर रहेगा। और उस विश्वस्त साक्षी की नाईं जो आकाश में है॥

३८। परन्तु तू ने तो मन से उतार दिया और अग्राह्य किया। तू अपने अभिषिक्त से अति क्रुद्ध भया है॥

३९। तू ने अपने दास की वाचा को तोड़ डाला। और उस के मुकुट को मिट्टी में मिलाके अशुद्ध किया है॥

४०। तू ने उस की सब छांइयों को गिरा दिया। और उस के दुर्गों को उजाड़ दिया है॥

४१। मार्ग से जितने चले जाते हैं सब उस को लूटते हैं। वह अपने पड़ोसियों से दुर्नाम भया है॥

४२। तू ने उस के रिपुओं के दहिने हाथ को उन्नत किया। और उस के सब शत्रुओं को आनन्दित किया॥

४३। फिर तू ने उस के खड्ग की धार को मोड़ दिया है। और लड़ाई में उस को खड़ा नहीं रहने दिया॥

४४। तू ने उस के तेज को नाश किया। और उस के सिंहासन को भूमि पर पटक दिया है॥

४५। तू ने उस की तरुणाई के दिनों को घटाया। और उस को लज्जा ओढ़ा दिई है॥

४६। हे प्रभु तू कब लों निरन्तर अपने को छिपाये रहेगा। कब लों तेरा क्रोध आग की नाईं जलता रहेगा॥

४७। स्मरण कर कि मैं कैसा अल्पायु हूं। तू ने समस्त मनुष्य-जाति को क्या ही व्यर्थ सिरजा है॥

४८। कौन पुरुष जीता रहेगा और मृत्यु को न देखेगा। कौन अपने प्राण को पाताल के हाथ से बचावेगा॥

४९। हे प्रभु तेरी वह प्राचीनकाल की समस्त दया कहां है। जिस की किरिया तू ने अपनी विश्वस्तता से दावीद् से खाई॥

५०। हे प्रभु अपने दासों की निन्दा को स्मरण कर। मैं बहुत सी जातियों का बोझ अपनी गोद में लिये हुए रहता हूं॥

५१। वे तुझ से शत्रुता करके तेरी निन्दा करते हैं हे प्रभु। वे तेरे अभिषिक्त के पदचिन्हों की निन्दा करते हैं।

५२। प्रभु सदा धन्य रहे। आमेन् और आमेन्॥

अठारहवां दिन।

प्रातःकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र ९०।

१। हे प्रभु तू पीढ़ी से पीढ़ी लों। हमारा निवासस्थान रहा है॥

२। उस से पहिले कि पहाड़ उत्पन्न भये और तू ने पृथिवी और जगत को रचा। अनादिकाल से अनन्तकाल लों तू ही परमेश्वर है॥

३। तू मनुष्य को ऐसा फेर देता कि वह धूल हो जाता है। और तू कहता है मनुष्यवंशियो फिर जाओ॥

४। क्योंकि सहस्र बरस तेरी दृष्टि में कल के समान हैं जो बीत चुका है। और रात के एक पहर के सदृश॥

५। तू उन को बहा ले जाता है वे नींद के समान हो जाते हैं। बिहान को वे उस घास की नाईं हैं जो उगती है ॥

६। बिहान को वह फूलती और फूटती है। सांझ को वह काटी जाती और मुरझा जाती है ॥

७। क्योंकि हम तेरे कोप से नष्ट हुए। और तेरे ज्वलन से घबरा गये हैं ॥

८। तू ने हमारे अधर्म्मों को अपने सन्मुख। हमारे गुप्त पापों को अपने मुख के प्रकाश में धरा है ॥

९। क्योंकि हमारे सब दिन तेरे क्रोध से मिट गये। हम ने अपने बरसों को कहानी की नाईं समाप्त किया है ॥

१०। हमारे बरसों के दिन जो हैं सो सत्तर बरस हैं और यदि पौरुष होवे तो अस्सी बरस। पर उन की घमण्ड की बातें श्रम और दुःख ही हैं क्योंकि वे शीघ्र चली गईं और हम उड़ गये ॥

११। तेरे कोप की शक्ति को कौन समझता। और तेरा भय मान के कौन तेरे ज्वलन को सोचता है ॥

१२। हम को ऐसी बुद्धि दे कि हम अपने दिनों को गिनें। तो हम ज्ञानवान हृदय प्राप्त करेंगे ॥

१३। हे प्रभु लौट आ कब लों। और अपने दासों के विषय में पछता ॥

१४। हमें बिहान को अपनी दया से तृप्त कर। तो हम जीवन भर ऊंचे स्वर से गावेंगे और आनन्द करेंगे ॥

१५। जितने दिन लों तू ने हमें दुःख दिया उन के अनुसार हमें आनन्दित कर। उन बरसों के अनुसार जिन में हम ने क्लेश भोगा है ॥

१६। तेरा कर्म्म तेरे दासों पर प्रगट होवे। और तेरा गौरव उन के लड़कों पर ॥

१७। और प्रभु हमारे ईश्वर की मनोहरता हम पर प्रगट होवे। और हमारे हाथों का काम हमारे लिये दृढ़ कर हमारे हाथों के काम को दृढ़ कर॥

—:o:—

स्तोत्र ९१।

१। जो परात्पर की आड़ में बास करता है। सो सर्वशक्तिमान की छाया तले ठिकाना पावेगा॥

२। "मैं प्रभु के विषय में कहूंगा कि मेरा शरणस्थान और दुर्ग वही है। वह मेरा ईश्वर है मैं उस पर भरोसा रक्खूंगा"॥

३। क्योंकि वह तुझे व्याधे के फंदे से। दुष्टा मरी से बचावेगा॥

४। वह अपने पंखों से तुझे आड़ देगा और तू उस के डैनों के नीचे शरण पावेगा। उस की सच्चाई ढाल और झिलम है॥

५। तू रात के भय से न डरेगा। न उस बाण से जो दिन को उड़ता है॥

६। न उस मरी से जो अंधियारे में फिरती है। न उस रोग से जो दोपहर को उजाड़ता है॥

७। सहस्र तेरे पास गिरेंगे और तेरी दहिनी ओर दस सहस्र। पर तुझ लों वह नहीं पहुंचेगा॥

८। केवल अपने नेत्रों से तू दृष्टि करेगा। और दुष्टों के प्रतिफल को देखेगा॥

९। "क्योंकि तू हे प्रभु मेरा शरणस्थान है"। तू ने परात्पर को अपना निवासस्थान बनाया है॥

१०। बुराई तुझ पर न पड़ेगी। और न कोई विपत्ति तेरे डेरे के निकट आवेगी॥

११। क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे लिये आज्ञा देगा। कि वे तेरे सारे मार्गों में तेरी रक्षा करें॥

१२। वे तुझे अपने हाथों पर उठा लेवेंगे। न हो कि तेरे पांव को पत्थर से ठेस लगे॥

१३। तू सिंह और नाग को रौंदेगा। तू युवासिंह और अजगर को लताड़ेगा॥

१४। "जब कि वह मुझ से लिपटा है इस लिये मैं उस को बचाऊंगा। मैं उस को ऊंचे पर रक्खूंगा क्योंकि उस ने मेरे नाम को जाना है॥

१५। वह मुझ को पुकारेगा और मैं उस को उत्तर दूंगा। मैं कष्ट में उस के संग रहूंगा मैं उस को छुड़ाऊंगा और उसे महिमा देऊंगा॥

१६। चिरंजीविता से मैं उसे तृप्त करूंगा। और अपना त्राण उस को दिखाऊंगा"॥

—:o:—

स्तोत्र ६२

१। प्रभु का धन्यवाद करना भला है। तेरे नाम का स्तुतिगान करना हे परात्पर॥

२। तेरी दया प्रातःकाल को प्रगट करनी। और तेरी विश्वस्तता रात्रिकाल में॥

३। दसतारवाले बाजे और कानून पर। वीणा पर गम्भीर स्वर के साथ॥

४। क्योंकि तू ने हे प्रभु अपने कर्म्म से मुझ को आनन्दित किया। मैं तेरी हस्तक्रिया के हेतु ऊंचे स्वर से गाऊंगा॥

५। हे प्रभु तेरे काम क्या ही बड़े हैं। तेरी युक्तियां अत्यन्त गहिरी हैं॥

६। पशुवत् मनुष्य इस को नहीं समझता। और अभिमानी मूर्ख उसे विचार नहीं करता॥

७। जब दुष्ट घास की नाईं फूलते फलते और सब दुष्टकर्म्मी प्रफुल्लित होते हैं। तो वह इसी लिये होता है कि वे युगानयुग के लिये नष्ट होवें॥

८। पर तू हे प्रभु। सदा उन्नत रहता है॥

९। क्योंकि देख तेरे शत्रु हे प्रभु तेरे शत्रु नाश होंगे। सब दुष्टकर्म्मी छिन्न भिन्न होवेंगे॥

१०। पर तू ने मेरे सींग को अरणे के सींग के समान ऊंचा किया। मैं टटके तेल से चुपड़ा गया हूं॥

११। और मेरी आंख ने मेरे बैरियों पर दृष्टि किई है। मेरे कान ने उन कुकर्म्मियों की बात जो मेरे विरुद्ध उठे हैं सुनी है॥

१२। धर्म्मी खजूर के समान फूले फलेगा। वह लबानोन् के देवदारु के सदृश बढ़ेगा॥

१३। जो प्रभु के घर में लगाये गये हैं। सो हमारे ईश्वर के आंगनों में फूले फलेंगे॥

१४। वे बुढ़ापे में भी फल देते रहेंगे। वे रस से पूर्ण और हरे रहेंगे॥

१५। जिस्तें वे वर्णन कर सकें कि प्रभु सीधा है। वह मेरी चटान है और उस में कुटिलता कुछ नहीं॥

संध्याकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र ९३।

१। प्रभु राज्य करता है उस ने विभवरूपी वस्त्र पहिना है प्रभु वस्त्र पहिने हुए है उस ने अपनी कटि में सामर्थ्य का पटुका बांधा है। और जगत स्थिर है वह टलता नहीं॥

२। तेरा सिंहासन प्राचीनकाल से स्थिर है। तू अनादिकाल से है॥

३ । हे प्रभु महानदों ने उठाया है महानदों ने अपना शब्द उठाया है । महानद धूम मचाते हैं ॥

४ । महासागर के शब्दों से समुद्र के प्रतापमय तरङ्गों से । प्रभु ऊंचे पर अधिक प्रतापमय है ॥

५ । तेरी साक्षियां अत्यन्त विश्वासयोग्य हैं । हे प्रभु पवित्रता तेरे घर को चिरकाल लों फबती रहेगी ॥

—:o:—

स्तोत्र ९४ ।

१ । हे पलटा लेनेहारे परमेश्वर प्रभु । हे पलटा लेनेहारे परमेश्वर उजागर हो ॥

२ । हे पृथिवी के न्यायी अपने को उठा । घमण्डियों का प्रतिफल उन्हें दे ॥

३ । हे प्रभु दुष्ट कब लों । दुष्ट कब लों प्रमुदित रहेंगे ॥

४ । वे बकते हैं वे अन्धेर की बात बोलते हैं । सब दुष्टकर्म्मी फूलते हैं ॥

५ । वे तेरे निज लोगों को हे प्रभु कुचल डालते हैं । और तेरे निज भाग को दुःख देते हैं ॥

६ । वे विधवा और परदेशी को मार डालते हैं । और पितृहीन बालकों को घात करते हैं ॥

७ । और वे कहते हैं कि याह् न देखेगा । और याकोब् का ईश्वर विचार नहीं करेगा ॥

८ । हे लोगों में के पशुवत् जनो विचार करो । और हे अभिमानी मूर्खो तुम कब बुद्धिमान हो जाओगे ॥

९ । जिस ने सिर में कान को रोपा क्या वह न सुनेगा । जिस ने आंख बनाई क्या वह दृष्टि न करेगा ॥

१० । जो जातियों का शासन करता है क्या वह नहीं डांटेगा । जो मनुष्य को ज्ञान सिखाता है क्या वह न जानेगा ॥

११ । प्रभु मनुष्य की भावनाओं को जानता है । कि वे व्यर्थ ही हैं ॥

१२ । धन्य है वह पुरुष जिस को तू ताड़ना देता है हे याह् । और अपनी व्यवस्था में से सिखाता है ॥

१३ । जिस्तें तू बुराई के दिनों में उस को शान्ति में रक्खे । जब लों दुष्ट के लिये गड़हा न खोदा जावे ॥

१४ । क्योंकि प्रभु अपने निज लोगों को नहीं तजेगा । और न अपने निज भाग को छोड़ देवेगा ॥

१५ । परन्तु न्याय धर्म्म लों फिर आवेगा । और सब सीधे मनवाले उस के पीछे पीछे हो लेवेंगे ॥

१६ । कुकर्म्मियों के विरुद्ध मेरी ओर कौन खड़ा होगा । दुष्टकर्म्मियों के विरोध में कौन मेरी ओर से साम्हना करेगा ॥

१७ । यदि प्रभु मेरा सहायक न होता । तो क्षण भर में मेरा जीव मौनलोक में बास करने लगता ॥

१८ । जब मैं ने कहा कि मेरा पांव फिसल गया । तब तेरी दया ने हे प्रभु मुझे थाम्भ लिया ॥

१९ । जब मेरी चिन्ताएं मेरे अन्तःकरण में बढ़ती हैं । तब तेरा प्रबोध मेरे जीव को मगन करता है ॥

२० । क्या खलता का सिंहासन तेरा संगी होगा । जो उपद्रव व्यवस्था के भेष में करता है ॥

२१ । वे जथा बांधके धर्म्मी के प्राण पर चढ़ाई करते हैं । और निर्दोष के लहू को दोषी ठहराते हैं ॥

२२ । परन्तु प्रभु मेरा ऊंचा गढ़ हुआ है । और मेरा ईश्वर मेरे शरण की चटान हो गया है ॥

२३। और वह उन का अनर्थ काम उन्हीं पर लौटा देगा और उन्हीं की बुराई के द्वारा उन्हें ध्वंस करेगा। प्रभु हमारा ईश्वर उन को ध्वंस करेगा॥

उन्नीसवां दिन।

प्रातःकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र ९५।

१। आओ हम प्रभु के लिये ऊंचे स्वर से गावें। अपने त्राण की चटान के लिये आनन्द से ललकारें॥

२। उस के सन्मुख धन्यवाद करते हुए उपस्थित हों। स्तुति-गान करते हुए उस के लिये आनन्द से ललकारें॥

३। क्योंकि प्रभु महान् परमेश्वर है। और सब देवताओं के ऊपर महान् राजा है॥

४। पृथिवी की गहिराइयां उस के हाथ में हैं। और पहाड़ों की ऊंचाइयां उसी की हैं॥

५। समुद्र उस का है और उसी ने उसे बनाया। और स्थल को उसी के हाथों ने रचा॥

६। आओ हम दण्डवत करें और झुकें। और अपने कर्त्ता प्रभु के साम्हने घुटने टेकें॥

७। क्योंकि वह हमारा ईश्वर है और हम उस के चराव के लोग और उस के हाथ की भेड़ें हैं। हाय कि तुम आज उस का शब्द सुनते॥

८। "अपने हृदय को कठोर मत करो। जैसा मरीबा में मस्सा के दिन बन में किया था॥

९। जब तुम्हारे पुरखाओं ने मुझे परखा। मुझ को जांचा यद्यपि मेरे कर्म्मों को देखा॥

१०। चालीस बरस लों मैं उस पीढ़ी से उदास रहा। और मैं ने कहा कि यह लोकगण मन का भूला है उन्हों ने मेरे मार्गों को नहीं चीन्हा॥

११। इस पर मैं ने अपने कोप में किरिया खाई। कि ये मेरे विश्राम में प्रवेश न करेंगे'' ॥

—:0:—

स्तोत्र ९६।

१। प्रभु के लिये नया गीत गाओ। हे सारी पृथिवी के लोगो प्रभु के लिये गाओ॥

२। प्रभु के लिये गाओ उस के नाम को धन्य कहो। प्रतिदिन उस के त्राण का सुसमाचार सुनाते रहो॥

३। उस की महिमा का वर्णन जातियों में करो। समस्त लोकगणों में उस के आश्चर्य्य कर्म्मों का॥

४। क्योंकि प्रभु महान् और अति स्तुत्य है। वह सारे देवों से अधिक भयंकर है॥

५। क्योंकि लोकगणों के समस्त देव नास्ति हैं। पर प्रभु ने स्वर्ग को बनाया॥

६। उस के सन्मुख विभव और गौरव हैं। उस के पवित्र स्थान में सामर्थ्य और सुन्दरता है॥

७। हे लोकगणों के कुलो प्रभु ही को देओ। महिमा और सामर्थ्य प्रभु ही को देओ॥

८। प्रभु के नाम की महिमा जो है सो उसी को देओ। भेंट लेके उस के आंगनों में आओ॥

९। पवित्रता की शोभा में प्रभु को दण्डवत करो। हे सारी पृथिवी के लोगो उस के साम्हने थरथराओ॥

१०। जातियों में कहो कि प्रभु राज्य करता है इस लिये जगत स्थिर है वह टलता नहीं। वह सच्चाई से लोकगणों का न्याय करेगा॥

११। स्वर्ग आनन्द करे और पृथिवी आह्लादित होवे। समुद्र और उस की भरपूरी गरजे॥

१२। चौगान और जो कुछ उस में है प्रमुदित होवे। तब अरण्य के सारे वृक्ष ऊंचे स्वर से गावेंगे॥

१३। प्रभु के साम्हने क्योंकि वह आता है वह पृथिवी का न्याय करने आता है। वह जगत का धर्म्म से और लोकगणों का अपनी विश्वस्तता से न्याय करेगा॥

—:o:—

स्तोत्र ९७।

१। प्रभु राज्य करता है पृथिवी आह्लादित होवे। द्वीप जो बहुतेरे हैं आनन्द करें॥

२। वह बादलों और घोर अन्धकार से घिरा है। उस के सिंहासन का आधार धर्म्म और न्याय है॥

३। उस के आगे आगे आग जाती। और उस के रिपुओं को चारों ओर भस्म करती है॥

४। उस की बिजलियों ने जगत को उंजियाला किया। पृथिवी देखके थरथरा गई॥

५। पहाड़ मोम की नाईं प्रभु के साम्हने पिघल गये। समस्त पृथिवी के स्वामी के साम्हने॥

६। स्वर्ग ने उस का धर्म्म बताया। और सब लोकगणों ने उस की महिमा देखी है॥

७। जितने खुदी हुई मूर्त्तियों की सेवा करते और नास्ति पर फूलते हैं सो लज्जित होवें। हे समस्त देवो उसी को दण्डवत्र करो॥

८। सिय्योन् सुनके आनन्दित भई और यहूदा की पुत्रियां आह्लादित हुई। तेरे न्यायों के कारण से हे प्रभु॥

९। क्योंकि तू हे प्रभु सारी पृथिवी के ऊपर परात्पर है। तू समस्त देवों से अधिक अति उन्नत हुआ है॥

१०। हे प्रभु के प्रेमियो बुराई के बैरी हो। वह अपने भक्तों के प्राण की रक्षा करता है वह उन्हें दुष्टों के हाथ से छुड़ावेगा॥

११। धर्म्मी के लिये ज्योति बोई हुई है। और आनन्द सीधे मनवालों के लिये॥

१२। हे धर्म्मियो प्रभु में आनन्दित होओ। और उस के पवित्र स्मारक का धन्यवाद करो॥

संध्याकाल की प्रार्थना

स्तोत्र ९८।

१। प्रभु के लिये नया गीत गाओ क्योंकि उस ने आश्चर्य्य कर्म्म किये हैं। उस के दहिने हाथ और उस की पवित्र भुजा ने उस के लिये त्राण सिद्ध किया है॥

२। प्रभु ने अपना त्राण विदित किया। उस ने अन्यजातियों की दृष्टि में अपना धर्म्म प्रगट किया है॥

३। उस ने यिस्राएल् के घर के लिये अपनी दया और विश्वस्तता स्मरण किई। पृथिवी के सब अन्तदेशों ने हमारे ईश्वर का त्राण देखा है॥

४। हे सारी पृथिवी के लोगो प्रभु के लिये ऊंचे स्वर से गाओ। पुकारो ललकारो और स्तुतिगान करो॥

५। प्रभु के लिये वीणा बजाके स्तुतिगान करो। वीणा बजाके स्तुतिगान का शब्द करो ॥

६। तुरहियां और नरसिंगे फूंकके। प्रभु महाराज के साम्हने आनन्द से ललकारो ॥

७। समुद्र और उस की भरपूरी गरजे। जगत और उस के बासी महाशब्द करें ॥

८। महानद तालियां बजावें। पहाड़ मिलके ऊंचे स्वर से गावें ॥

९। प्रभु के साम्हने क्योंकि वह पृथिवी का न्याय करने आता है। वह जगत का धर्म्म से और लोकगणों का सच्चाई से न्याय करेगा ॥

—:o:—

स्तोत्र ९९

१। प्रभु राज्य करता है लोकगण कांपें। वह करूबों पर विराजमान है पृथिवी थरथरावे ॥

२। प्रभु सिय्योन् में महान है। और वह सब लोकगणों के ऊपर उन्नत है ॥

३। लोग तेरे नाम का जो महान् और भयानक है धन्यवाद करें। वह पवित्र है ॥

४। और राजा का सामर्थ्य न्याय से प्रीति रखता है। सच्चाई तू ही ने स्थापित किई धर्म्म और न्याय तू ही ने याकोब् में किया ॥

५। प्रभु हमारे ईश्वर को सराहो और उस के पांव की पीढ़ी के साम्हने दण्डवत करो। वह पवित्र है ॥

६। मोशे और अहरोन् उस के याजकों में से और शमूएल् उन में से जो उस का नाम लेके पुकारते हैं। इन्हों ने प्रभु को पुकारा और उस ने उन को उत्तर दिया ॥

७। वह बादल के खम्भे में से उन से बोलता था। वे उस की साक्षियों को और जो विधि उस ने उन्हें दिया उसे पालते थे ॥

८। हे प्रभु हमारे ईश्वर तू ने उन को उत्तर दिया। तू ने अपने तईं उन को क्षमावन्त परमेश्वर दिखाया यद्यपि तू ने उन के कार्य्यों का पलटा दिया॥

९। प्रभु हमारे ईश्वर को सराहो और उस के पवित्र पर्व्वत के साम्हने दण्डवत करो। क्योंकि प्रभु हमारा ईश्वर पवित्र है॥

—:o:—

स्तोत्र १००।

१। हे सारी पृथिवी के लोगो। प्रभु के लिये आनन्द से ललकारो॥

२। आनन्द से प्रभु की सेवा करो। उस के सन्मुख ऊंचे स्वर से गाते हुए आओ॥

३। निश्चय जानो कि प्रभु जो है वही ईश्वर है। उसी ने हम को बनाया न कि हम ने आप को हम उस के निज लोग और उस के चराव की भेड़ें हैं॥

४। धन्यवाद करते हुए उस के फाटकों में स्तुति करते हुए उस के आंगनों में प्रवेश करो। उस का धन्यवाद करो उस के नाम को धन्य कहो॥

५। क्योंकि प्रभु भला है उस की दया सनातन। और उस की विश्वस्तता पीढ़ी से पीढ़ी लों रहती है॥

—:o:—

स्तोत्र १०१।

१। मैं दया और न्याय का गीत गाऊंगा। हे प्रभु मैं तेरा स्तुति-गान करूंगा॥

२। मैं खरे मार्ग पर सोच बिचारके चलूंगा तू कब मेरे पास आवेगा। मैं अपने घर के भीतर अपने मन की खराई से चला करूंगा॥

३। मैं कोई अधमता की बात अपनी आंखों के साम्हने न रक्खूंगा। मैं बंचकों के कामों से बैर रखता हूं वे मुझ से लिपटने न पावेंगे॥

४। टेढ़ा हृदय मुझ से दूर होगा। मैं बुराई को जानूंगा नहीं॥

५। जो अपने पड़ोसी की चुगली छिपके खाता है उस को मैं ध्वंस करूंगा। जिस की आंखें ऊंची और जिस का मन घमण्डी है उस को मैं न सहूंगा॥

६। मेरा नेत्र देश के विश्वस्त लोगों पर लगा रहेगा कि वे मेरे संग बसें। जो खरे मार्ग पर चलता है सोई मेरा सेवक होवेगा॥

७। जो छलबल करता है सो मेरे घर के भीतर न रहेगा। जो भूठ बोलता है सो मेरी दृष्टि के साम्हने न ठहरेगा॥

८। प्रतिदिन प्रातःकाल को मैं देश के सब दुष्टों को ध्वंस करता जाऊंगा। जिस्तें मैं प्रभु के नगर से सारे दुष्टकर्म्मियों को काट डालूं॥

बीसवा दिन।

प्रातःकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र १०२

१। हे प्रभु मेरी प्रार्थना सुन। और मेरा दोहाई तेरे पास पहुंचे॥

२। मेरे कष्ट के दिन अपना मुख मुझ से न छिपा। अपना कान मेरी ओर झुका जिस दिन मैं पुकारूं मुझे शीघ्र उत्तर दे॥

३। क्योंकि मेरे दिन धूंआं होके बिलाय गये। और मेरी हड्डियां लुकटी की नाईं जल गईं॥

४। मेरा हृदय घास के समान झुलसके सूख गया। क्योंकि मैं ने अपनी रोटी खाने को बिसराया है॥

५। मेरे कहरने के शब्द के हेतु। मेरी हड्डी से मेरा मांस सट गया॥

६। मैं बन के गरुड़ के सदृश हो गया। मैं उस उल्लू के समान हुआ हूं जो उजाड़स्थान में रहता है॥

७। मैं पड़ा जागता हूं। और उस गौरे के समान हो गया हूं जो छत पर अकेला बैठता है॥

८। मेरे शत्रु दिन भर मुझे चिढ़ाते हैं। वे मेरे विरोध में बावले होके मेरा पटतर देके किरिया खाते हैं॥

९। क्योंकि मैं ने राख रोटी की नाईं खाई। और अपने पानी को आंसुओं से मिलाया॥

१०। तेरे क्रोध और रोष के कारण से। क्योंकि तू ने मुझे उठाके पटक दिया है॥

११। मेरे दिन ढलती हुई छाया के समान हैं। और मैं घास की नाईं मुरझा गया हूं॥

१२। पर तू हे प्रभु सदा विराजमान रहेगा। और तेरा स्मारक पीढ़ी से पीढ़ी लों बना रहेगा॥

१३। तू उठके सिय्योन् पर छोह करेगा। क्योंकि उस पर करुणा करने का समय वरन ठीक समय आन पहुंचा है॥

१४। क्योंकि तेरे दास उस के पत्थरों को चाहते हैं। और उस की धूलि पर करुणा करते हैं॥

१५। और जातिगण प्रभु के नाम का भय मानेंगे। और सब भूपति तेरी महिमा का॥

१६। क्योंकि प्रभु ने सिय्योन् को बनाया। और अपनी महिमा में देख पड़ा है॥

१७। वह अनाथ की प्रार्थना की ओर फिरा। और उन की प्रार्थना को तुच्छ नहीं जाना॥

१८। यह आनेहारी पीढ़ी के लिये लिखा जावेगा। और एक लोकगण जो सिरजा जावेगा याह् की स्तुति करेगा॥

१९। क्योंकि उस ने अपने पवित्र उच्चस्थान पर से झांका। प्रभु ने स्वर्ग पर से पृथिवी की ओर दृष्टि किई है॥

२०। जिस्तें वह बंधुवे के कराहने को सुने। और घात किये जानेहारों के बन्धन खोले॥

२१। जिस्तें प्रभु के नाम का वर्णन सिय्योन् में होवे। और यरू-शलेम् में उस की स्तुति किई जावे॥

२२। यह तब होगा जब लोकगण एकट्ठे किये जावेंगे। और समस्त राज्य प्रभु की सेवा करने को आवेंगे॥

२३। उस ने मार्ग में अपने सामर्थ्य से मुझे दुःख दिया। और मेरे दिनों को घटाया॥

२४। मैं ने कहा हे मेरे परमेश्वर मेरी आधी आयुर्दा में मुझ को न उठा ले। तेरे बरस तो पीढ़ी से पीढ़ी लों बने रहते हैं॥

२५। आदि में तू ने पृथिवी की नेव डाली। और स्वर्ग तेरा हस्तकृत है॥

२६। वे तो नष्ट होवेंगे पर तू बना रहेगा। और वे सब कपड़े की नाईं पुराने होंगे तू उन को वस्त्र की नाईं बदलेगा तो वे बदल जावेंगे॥

२७। पर तू वही है। और तेरे बरस समाप्त न होवेंगे॥

२८। तेरे दासों के सन्तान बसे रहेंगे। और उन के वंश तेरे सन्मुख अटल रहेंगे॥

—:०:—

स्तोत्र १०३

१। हे मेरे जीव प्रभु को धन्य कह। और जो कुछ मुझ में है उस के पवित्र नाम को॥

२। हे मेरे जीव प्रभु को धन्य कह। और उस के किसी उपकार को मत बिसरा॥

३। वह तेरे सारे अधर्म्म को क्षमा करता। वह तेरे सब रोगों को चंगा करता है॥

४। वह तेरे जीवन को विनाश से छुड़ा लेता। वह तेरे सिर पर दया और छोह का मुकुट धरता है॥

५। वह तेरे उमंग की लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता। तेरी तरुणाई उकाब की सी नई होती है॥

६। प्रभु सब अन्धेर उठानेहारों के लिये। धर्म्म और न्याय के कर्म्म करता है॥

७। उस ने मोशे को अपने मार्ग विदित किये। यिस्राएल्‌वंशियों को अपने महाकार्य्य॥

८। प्रभु वत्सल और करुणामय है। कोप करने में धीमा और बड़ा दयालु॥

९। वह सदा लों झगड़ता न रहेगा। और न वह सर्वदा ताक में लगा रहेगा॥

१०। उस ने हमारे पापों के अनुसार हम से व्यवहार नहीं किया। और न हमारे अधर्म्म के समान हम को प्रतिफल दिया है॥

११। क्योंकि जैसे स्वर्ग पृथिवी से ऊंचा है। तैसे ही उस की दया उस के डरवैयों पर बहुत हुई है॥

१२। जितना पश्चिम पूरब से दूर है उतना ही उस ने हमारे अपराधों को हम से दूर किया है॥

१३। जैसे पिता अपने लड़कों पर मया करता है। तैसे ही प्रभु ने अपने डरवैयों पर मया किई है॥

१४। क्योंकि वह हमारे गढ़न को जानता है। उस को स्मरण रहता है कि हम धूल ही हैं॥

१५। मनुष्य जो है उस की आयुर्दा घास के समान होती है। वह चौगान के फूल की नाईं फूलता है॥

१६। क्योंकि पवन उस पर से बहा तो वह न रही। और न उस का स्थान उस को पहिचान सकेगा॥

१७। परन्तु प्रभु की दया सदा से सदा लों उस के डरवैयों पर रहती है। और उस का धर्म्म पुत्रों और पोतों लों रहता है॥

१८। अर्थात् उन पर जो उस की बाचा को पालते। और उस के आदेशों को उन पर चलने के लिये स्मरण रखते हैं॥

१९। प्रभु ने अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थिर किया। और उस का राज्य विश्व पर है॥

२०। हे प्रभु के दूतगण उस को धन्य कहो। तुम जो बड़े बीर हो और उस के वचन को पालते और उस के शब्द को कान लगाके सुनते हो॥

२१। हे प्रभु की सारी सेनाओ उस को धन्य कहो। उस के सेवको तुम जो उस की इच्छा पूरी करते हो॥

२२। हे प्रभु की सब कृतियो उस के राज्य के सब स्थानों में उस को धन्य कहो। हे मेरे जीव प्रभु को धन्य कह॥

संध्याकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र १०४।

१। हे मेरे जीव प्रभु को धन्य कह। हे प्रभु मेरे ईश्वर तू अत्यन्त महान् है तू ने विभव और गौरवरूपी वस्त्र पहिना है॥

२। वह उंजियाले को चादर की नाईं ओढ़े रहता। वह आकाश को तंबू के छत के समान तानता है॥

३। वह अपनी अटारियों की कड़ियां जल पर धरता। वह मेघों को अपना रथ बनाता और पवन के डैनों पर चलता है॥

४। वह अपने दूतों को पवन। और अपने सेवकों को धधकती आग बनाता है॥

५। उस ने पृथिवी को उस के पांयों पर स्थिर किया। सो युगानयुग अटल रहेगी॥

६। तू ने उस को गहिराव से ऐसा ढांपा जैसा वस्त्र से। जल पहाड़ों के ऊपर रहा॥

७। तेरी घुड़की से वह भाग गया। तेरी गरज के शब्द से वह फुरती करके बह गया॥

८। वह पहाड़ों पर चढ़ गया और तराइयों से उतर गया। उस स्थान को जो तू ने उस के लिये सिद्ध किया था॥

९। तू ने एक सिवाना ठहराया जिस को वह लांघ नहीं सकता। न स्थल को ढांपने के लिये लौट सकता है॥

१०। वह सोतों को खढ़ों के मार्ग से भेजता है। वे पहाड़ों के बीच में से बहते हैं॥

११। उन से चौगान के सब जीव जन्तु पीते हैं। बनैले गदहे अपनी प्यास बुझा लेते हैं॥

१२। उन के ऊपर आकाश के पक्षी बसते हैं। और डालियों पर से बोलते हैं॥

१३। वह पहाड़ों को अपनी अटारियों में से सींचता है। पृथिवी तेरे कार्य्यों के फल से परितृप्त है॥

१४। वह घास को पशु के लिये उपजाता है और अन्न को मनुष्य की किसनई के लिये जिस्तें वह भूमि में से रोटी निकाले॥

१५। और दाखमधु जो मनुष्य के हृदय को आनन्दित करता

और तेल जो उस के मुख को चमकाता है। और रोटी जो मनुष्य के हृदय को सम्भालती है॥

१६। प्रभु के वृक्ष तृप्त होते हैं। अर्थात् लबानोन् के देवदारु जो उसी ने लगाये॥

१७। जिन में चिड़ियाएं अपने घोंसले बनाती हैं सारस जो है उस का घर चीरवृक्षों में है॥

१८। ऊंचे ऊंचे पहाड़ साबरों के लिये हैं। ऊंची चटानें खरहों के शरणस्थान हैं॥

१९। उस ने चन्द्रमा को पर्ब्बों के लिये बनाया। सूर्य्य अपने अस्त होने का समय जानता है॥

२०। तू अंधियारा ले आता है तो रात हो जाती है। जिस में अरण्य के सब जीव जन्तु निकलने लगते हैं॥

२१। युवा सिंह अहेर के लिये गरजते हैं। और अपना आहार परमेश्वर के घर में ढूंढ़ते हैं॥

२२। सूर्य्य उदय होता है तब वे एकट्ठे होते हैं। और अपने निवास्थानों में जा बैठते हैं॥

२३। मनुष्य निकलके अपना कार्य्य और अपनी किसनई। संध्या लों करता रहता है॥

२४। हे प्रभु तेरे काम क्या ही चित्र विचित्र हैं तू ने ज्ञान ही से उन सब को बनाया। पृथिवी तेरी सम्पत्ति से परिपूर्ण है॥

२५। वह समुद्र जो बड़ा और बहुत चौड़ा है। वहां अगरान्य जलचर हैं छोटे और बड़े जीव जन्तु॥

२६। वहां नावें चली जाती हैं। और लिब्यातान् जिस को तू ने उस से खेलने के लिये बनाया॥

२७। ये सब तेरी बाट जोहते हैं। कि तू उन का आहार समय पर दिया करे॥

२८। जो तू उन्हें देता है सो वे चुनते हैं। तू अपनी मुट्ठी खोलता है तो वे अच्छे पदार्थों से तृप्त होते हैं॥

२९। अपना मुख छिपाता तो वे घबरा जाते हैं। तू उन का प्राण ले लेता तो वे प्राण छोड़के अपनी धूलि में फिर मिलते हैं॥

३०। तू अपना आत्मा भेजता है तो वे सिरजे जाते हैं। और तू भूतल को नया कर देता है॥

३१। प्रभु की महिमा सदा लों रहे प्रभु अपनी कृतियों में आनन्द करे॥

३२। वह पृथिवी पर दृष्टि करता है तो वह कांप उठती है! वह पहाड़ों को छूता है तो उन से धूंआं निकलता है॥

३३। मैं जीवन भर प्रभु के गीत गाता रहूंगा। जब लों मेरी अस्ति रहेगी तब लों मैं अपने ईश्वर का स्तुतिगान करता रहूंगा॥

३४। मेरा ध्यान उस को प्रिय लगे। मैं तो प्रभु में आनन्दित रहूंगा॥

३५। पापी पृथिवी पर से मिट जावें और दुष्ट आगे को न रहें। हे मेरे जीव प्रभु को धन्य कह हल्लूयाह्॥

एक्कीसवां दिन।

प्रातःकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र १०५

१। प्रभु का धन्यवाद करो उस का नाम लेके पुकारो। लोकगणों में उस के महाकार्य्य विदित करो॥

२ उस के लिये गाओ उस का स्तुतिगान करो। उस के सब आश्चर्य्यकर्म्मों पर ध्यान करो॥

३। उस के पवित्र नाम पर घमण्ड करो। जो प्रभु को ढूंढ़ते हैं उन का हृदय आनन्दित होवे॥

४। प्रभु और उस के सामर्थ्य को खोजो। निरन्तर उस के दर्शन के खोजी रहो॥

५। उस के आश्चर्य्यकर्म्मों को जो उस ने किये स्मरण करो। उस के अचम्भों को और उस के मुंह के न्यायों को॥

६। हे उस के दास अब्राहाम् के वंश। हे याकोब् के सन्तान तुम जो उस के चुने हुए हो॥

७। हमारा ईश्वर प्रभु वही है। उस के न्याय समस्त पृथिवी पर विदित हैं॥

८। उस ने सदा अपनी बाचा को स्मरण रक्खा। उस श्रीमुख वचन को जिसे उस ने सहस्र पीढ़ियों के लिये कहा॥

९। उस बाचा को जो उस ने अब्राहाम् से बांधी। और उस किरिया को जो उस ने यिस्हाक् से खाई॥

१०। जिसे उस ने याकोब् से भी विधि करके स्थिर किया। और यिस्राएल् से सनातन बाचा की रीति से॥

११। यह कहके कि मैं तुझे कनान का देश देऊंगा। वह तुम्हारे भाग का बांट होवेगा॥

१२। उस समय तो वे गिनती में थोड़े ही थे। बहुत ही थोड़े और उस में परदेशी॥

१३। और वे एक जाति से दूसरी जाति में। एक राज्य से दूसरे लोकगण में फिरते थे॥

१४। उस ने किसी मनुष्य को उन पर अन्धेर न करने दिया। वरन राजाओं को भी उन के निमित्त डांटा॥

१५। कि मेरे अभिषिक्तों को मत छूओ। और मेरे प्रवक्ताओं की हानि मत करो॥

१६। और उस ने अकाल को देश पर बुलाया। और रोटी सारी टेक को तोड़ा ॥

१७। उस ने उन के आगे एक पुरुष भेजा था। योसेफ् दास होने के लिये बेंचा गया ॥

१८। लोगों ने उस के पैरों को बेड़ियों से दुःख दिया। वह लोहे की सिक्कड़ियों में जकड़ा गया ॥

१९। जब लों उस का वचन पूरा न हुआ। तब लों प्रभु का वाक्य उसे ताता रहा ॥

२०। राजा ने भेजके उसे उबार दिया। लोकगणों के प्रभु ने उस के बन्धन खुलवाये ॥

२१। उस ने उस को अपने घर का स्वामी। और अपनी सारी सम्पत्ति का अध्यक्ष बनाया ॥

२२। ऐसा कि वह उस के अधिपतिन को अपनी इच्छा के अनुसार बांधे। और उस के पुरनियों को ज्ञान सिखावे ॥

२३। और यिस्राएल् मिसर में आया। और याकोब् हाम् के देश में परदेशी भया ॥

२४। और उस ने अपने निज लोगों को अत्यन्त फलवन्त किया। और उन्हें उन के रिपुओं से अधिक बलवन्त बनाया ॥

२५। उस ने उन के मन को फेर दिया कि वे उस के निज लोगों से बैर रक्खें। और उस के दासों से छल छिद्र करें ॥

२६। उस ने अपने दास मोशे को भेजा। और अहरोन को जिसे उस ने चुना था ॥

२७। इन्हों ने उस के नाना प्रकार के चिन्ह उन के बीच दिखाये। और अचम्भे हाम् के देश में ॥

२८। उस ने अंधियारा भेजा तो अंधियारा हो गया। तब वे उस के वचनों के बिरोधी न रहे ॥

२९ । उस ने उन के सब जल को लहू कर डाला । और उन की मछलियों को मार डाला ॥

३० । उन की भूमि ने दादुर उपजाये । वरन उन के राजाओं की कोठरियों में भी ॥

३१ । उस ने कहा तो दंश आये । और मच्छड़ उन के समस्त देश में ॥

३२ । उस ने झड़ियों की सन्ती ओले भेजे । और धधकती आग उन के देश में ॥

३३ । और उस ने उन के दाख और अंजीर के वृक्ष मारे । और उन के देश के पेड़ों को तोड़ डाला ॥

३४ । उस ने कहा तो टिड्डी आई । और कीड़े गिन्ती से बाहर ॥

३५ । और उन्हों ने उन के देश की सारी उपज खा लिई । और उन की भूमि के फलों को चट कर गये ॥

३६ । और उस ने उन के देश में के सब पहिलौठों को मारा । उन के सारे पौरुष्य के पहिले फल को ॥

३७ । और उन को सोने और रूपे सहित निकाला । और उन के गोत्रों में कोई थकनेहारा न था ॥

३८ । उन के निकल जाने से मिसर आनन्दित भ.ा । क्योंकि उन का डर उन पर पड़ा था ॥

३९ । उस ने एक बादल चांदनी की नाईं फैलाया । और आग जो रात को प्रकाश देवे ॥

४० । उन्हों ने मांगा तो वह बटेरों को ले आया । और उन को स्वर्ग की रोटी से तृप्त किया ॥

४१ । उस ने चटान को खोला तो जल बह निकला । एक महानद मरुभूमि में बहने लगा ॥

४२। क्योंकि उस का पवित्र वचन उस के स्मरण में आया। और उस का दास अब्राहाम् ॥

४३। और उस ने अपने निज लोगों को आह्लाद से निकाला। और अपने चुने हुओं को आनन्द की ललकार के साथ ॥

४४। और उन्हें अन्यजातियों के देश दिये। और वे लोकगणों के श्रम के फल के अधिकारी हुए ॥

४५। इस अभिप्राय से कि वे उस के विधिन को मानें। और उस की व्यवस्थाओं को पालन करें हल्लूयाह् ॥

संध्याकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र १०६।

१। हल्लूयाह् प्रभु का धन्यवाद करो क्योंकि वह भला है। और उस की दया सनातन है ॥

२। प्रभु के पराक्रम के कार्य्यों का वर्णन कौन कर सकता। उस का सारा गुणानुवाद कौन सुना सकता है ॥

३। धन्य वे हैं जो न्याय को पालन करते। और वह जो प्रतिक्षण धर्म्म के कर्म्म करता है ॥

४। हे प्रभु जो अनुग्रह तू अपने निज लोगों पर करता है उसी से मुझे स्मरण कर। अपने त्राण सहित मेरी सुधि लेने के लिये आ॥

५। जिस्तें मैं तेरे चुने हुओं का कल्याण देखूं और तेरे निज लोगों के आनन्द से आनन्द करूं। और तेरे निज भाग के संग घमण्ड करूं ॥

६। हम ने अपने पुरखाओं समेत पाप किया। हम ने कुटिलता किई हम ने दुष्टता किई है ॥

७। हमारे पुरखाओं ने मिसर में तेरे आश्चर्य्यकर्म्मों को नहीं सोचा

न तेरी अपार दया को स्मरण किया । पर समुद्र के तीर पर वरन सूफ् ही समुद्र के तीर पर दगा किया ॥

८ । पर उस ने अपने नाम के निमित्त उन को बचाया । जिस्तें वह अपने पराक्रम को विदित करे ॥

९ । और उस ने सूफ् समुद्र को दपटा तो वह सूख गया । और उन को गहिरावों में से ऐसे ले गया जैसे बन में से ॥

१० । और उस ने उन्हें बैरी के हाथ से बचाया । और शत्रु के हाथ से उन को छुड़ा लिया ॥

११ । और जल ने उन के रिपुओं को ढांपा । उन में से एक भी नहीं बचा ॥

१२ । तब उन्हों ने उस के वचनों का विश्वास किया । और उस की स्तुति गाने लगे ॥

१३ । वे शीघ्र उस के कामों को भूल गये । उन्हों ने उस के परामर्श की बाट नहीं जोही ॥

१४ । और बन में अतिशय कामना किई । और मरुभूमि में परमेश्वर की परीक्षा किई ॥

१५ । और उस ने उन का मांगा वर उन को दिया । परन्तु उन के प्राण में क्षयरोग भेजा ॥

१६ । और उन्हों ने छावनी में मोशे से डाह किया । और प्रभु के पवित्र अहरोन् से भी ॥

१७ । भूमि ने फटके दातान् को निगल लिया । और अबीराम् के समाज को ढांप लिया ॥

१८ । और उन के समाज में आग भडकी । ज्वाला दुष्टों को भस्म कर गई ॥

१९ । उन्हों ने होरेब् में बछडा बनाया । और ढली हुई मूर्त्ति को दण्डवत किया ॥

२० । और अपनी महिमा को । एक घासखानेहारे बैल की प्रतिमा से बदल डाला ॥

२१ । वे अपने त्राता परमेश्वर को भूल गये । जिस ने मिसर में बड़े कार्य्य किये थे ॥

२२ । हाम् के देश में आश्चर्य्यकर्म्म । और सूप् समुद्र के तीर पर भयंकर काम ॥

२३ । और उस ने कहा कि मैं उन्हें नाश करूंगा । परन्तु उस का चुना हुआ मोशे दरार में उस के साम्हने खड़ा हुआ कि उस के क्रोध को ठण्डा करे न हो कि वह उन्हें नष्ट करे ॥

२४ । और उन्हों ने मनभावने देश को अग्राह्य किया । और उस के वचन का विश्वास नहीं किया ॥

२५ । पर अपने डेरों में कुड़कुड़ाये । उन्हों ने प्रभु की वाणी नहीं सुनी ॥

२६ । सो उस ने अपना हाथ उठाके उन के विषय में किरिया खाई । कि मैं उन को बन में गिराऊंगा ॥

२७ । और उन के वंश को अन्यजातियों के बीच में गिराऊंगा । और उन्हें देश विदेश तितर बितर करूंगा ॥

२८ । और वे बाल्पोर् से जुट गये । और मृतकों के बलिदान खाने लगे ॥

२९ । और अपने कार्य्यों से उस को रिस दिलाया । ऐसा कि मरी उन में टूट पड़ी ॥

३० । तब पीनहास् ने उठके न्यायदण्ड दिया । तो मरी थम गई ॥

३१ । और यह उस के लेखे में धर्म्म गिना गया । पीढ़ी से पीढ़ी लों वरन युगानयुग ॥

३२ । उन्हों ने मरीबा के जल के पास भी उस का कोप भड़काया । ऐसा कि उन के कारण से मोशे की हानि हुई ॥

३३ । क्योंकि उन्हों ने उस के आत्मा से दंगा किया । ऐसा कि वह अपने होंठों से अनर्थ बात बोला ॥

३४ । उन्हों ने लोकगणों को नाश नहीं किया। जैसे प्रभु ने उनसे कहा था॥

३५ । परन्तु अन्यजातियों के संग हिल मिल गये । और उन के कामों को सीख लिया ॥

३६ । और उन की मूर्त्तियों की सेवा करने लगे । सो उन के लिये फंदा हो गईं ॥

३७ । और उन्हों ने अपने पुत्र और अपनी पुत्रियां । पिशाचों को बलिदान चढ़ाईं ॥

३८ । और निर्दोष लहू बहाया अर्थात् अपने पुत्रों और पुत्रियों का लहू जिन्हें वे कनान् की मूर्त्तियों को चढ़ाते थे । और देश रक्तपात से अशुद्ध हो गया ॥

३९ । और वे अपने कामों से अशुद्ध हो गये । और अपने कार्य्यों से व्यभिचारी बने ॥

४० । तब प्रभु का कोप उस के निज लोगों पर भड़का । और उस ने अपने निज भाग से घिन्न किई ॥

४१ । और उन्हें अन्यजातियों के हाथ में सौंप दिया । और उन के बैरी उन के प्रभु हुए ॥

४२ । और उन के शत्रु उन पर अन्धेर करने लगे । और ये उन के हाथ तले दब गये ॥

४३ । बारम्बार उस ने उन्हें छुड़ाया । परन्तु वे अपनी ही इच्छा के अनुसार दंगा करते गये और अपने अधर्म्म से क्षीण हो गये ॥

४४ । पर जब उस ने उस का चिल्लाना सुना । तब उन के कष्ट पर दृष्टि किई ॥

४५ । और उन के निमित्त अपनी वाचा को स्मरण किया । और अपनी दया की बहुतायत के अनुसार पछताया ॥

४६। और जो उन्हें बंधुए करके ले गये थे। उन से उन पर छोह कराया॥

४७। हे प्रभु हमारे ईश्वर हम को बचा और जातियों में से एकट्ठा कर। जिस्तें हम तेरे पवित्र नाम का धन्यवाद करें और तेरी स्तुति करते हुए घमण्ड करें॥

४८। धन्य होवे प्रभु यिस्राएल् का ईश्वर अनादिकाल से अनन्त-काल लों। और सारा लोकगण कहे आमेन् हल्ललूयाह्॥

बाईसवां दिन।

प्रात:काल की प्रार्थना।

स्तोत्र १०७।

१। प्रभु का धन्यवाद करो क्योंकि वह भला है। और उस की दया सनातन है॥

२। प्रभु के छुड़ा लिये हुए ऐसा कहें। जिन्हें उस ने रिपु के हाथ से छुड़ा लिया है॥

३। और देशों में से उन्हें एकट्ठा किया। पूरब से और पच्छिम से उत्तर से और समुद्र से॥

४। वे बन में वरन मरुभूमि में भटकते फिरते थे। उन्हों ने बसने के लिये कोई नगर न पाया॥

५। वे भूखे और प्यासे हो गये। उन का प्राण मूर्छित भया॥

६। तब वे अपने कष्ट में प्रभु से चिल्लाये। उस ने उन को उन की सकेतियों से छुड़ाया॥

७। और उन को सीधे मार्ग से ले गया। जिस्तें वे बसने के योग्य नगर को पहुंचें॥

८। हाय कि लोग प्रभु की दया के हेतु उस का धन्यवाद करते। और उस के आश्चर्य्यकर्म्मों के कारण जो वह मनुष्यजाति के लिये करता है॥

९। क्योंकि उस ने आकांक्षी जीव को तृप्त किया। और भूखे जीव को उत्तम पदार्थों से भर दिया॥

१०। जो अन्धकार और मृत्युच्छाया में बैठे थे। और दुःख और लोहे से जकड़े गये थे॥

११। इस लिये कि उन्हों ने परमेश्वर के वचनों से विरोध किया। और परात्पर के परामर्श को तिरस्कार किया था॥

१२। सो उस ने उन के मन को श्रम से दबाया। वे ठोकर खाके गिर पड़े और कोई सहायक न था॥

१३। तब वे अपने कष्ट में प्रभु से चिल्लाये। उस ने उन्हें उन की सकेतियों से बचाया॥

१४। उस ने उन को अन्धकार और मृत्युच्छाया से निकाला। और उन के बन्धनों को तोड़ डाला॥

१५। हाय कि लोग प्रभु की दया के हेतु उस का धन्यवाद करते। और उस के आश्चर्य्यकर्म्मों के कारण जो वह मनुष्यजाति के लिये करता है॥

१६। क्योंकि उस ने पीतल के फाटकों को तोड़ दिया। और लोहे के बेण्डों को काट डाला॥

१७। मूर्ख अपने अपराध की चाल से। और अपने अधर्म्मों के कारण से अति दुःखित भये॥

१८। उन का जीव सब प्रकार के भोजन से घिन्न करता था। और वे मृत्यु के फाटकों लों पहुंच गये॥

१९। तब वे अपने कष्ट में प्रभु से चिल्लाये। उस ने उन्हें उन की सकेतियों से बचाया॥

२० । उस ने अपना वचन भेजके उन को चंगा किया । और उन्हे उन के गड़हों में से उबारा ॥

२१ । हाय कि लोग प्रभु की दया के हेतु उस का धन्यवाद करते । और उस के आश्चर्य्यकर्म्मों के कारण जो वह मनुष्यजाति के लिये करता है ॥

२२ । और धन्यवाद के बलिदान चढ़ावें । और ऊंचे स्वर से उस के कामों का वर्णन करें ॥

२३ । जो नावों पर चढ़के समुद्र में जाते । और महासागर में अपना कार्य्य करते हैं ॥

२४ । उन्हों ने प्रभु के काम देखे । और उस के आश्चर्य्यकर्म्मों को जो वह गहिराव में करता है ॥

२५ । उस ने कहा तो आंधी चली । और उस के तरंगों को ऊंचा करने लगी ॥

२६ वे आकाश पर चढ़ गये और फिर गहिराव में उतर गये । क्लेश के मारे उन के जी में जी न रहा ।

२७ । वे चक्कर खाते और मतवाले की नाईं डगमगाते हैं । और उन की सारी बुद्धि नष्ट हो गई ॥

२८ तब वे अपने कष्ट में प्रभु से चिल्लाये । और उस ने उन्हें उन की सकेतियों से निकाला ॥

२९ । उस ने आंधी को नीवा कर दिया । और उस के तरङ्ग चुप हो गये ॥

३० । तब वे आनन्दित भये क्योंकि उन को चैन मिला । और उस ने उन्हें उन की इच्छा के अनुसार बंदर में पहुंचा दिया ॥

३१ । हाय कि लोग प्रभु की दया के हेतु उस का धन्यवाद करते । और उस के आश्चर्य्यकर्म्मों के कारण जो वह मनुष्यजाति के लिये करता है ॥

३२ । और लोकगण की मण्डली में उस को सराहें । और पुरनियों के बैठक में उस की स्तुति करें ॥

३३ । वह महानदों को बन बना डालता । और जल के सोतों को प्यासी भूमि कर देता है ॥

३४ । वह फलवन्त भूमि को नोना करता है । उस के बासियों की बुराई के कारण से ॥

३५ । फिर वह बन को जल का ताल बनाता । और मरुभूमि को जल के सोते कर देता है ॥

३६ । और वहां वह भूखों को बसाता : कि वे बसने के लिये एक नगर सिद्ध करें ॥

३७ । और खेत बोएं और दाख की बारियां लगावें । और नाना भांति के फल उपजावें ॥

३८ । और वह उन को आशीष् देता है तो वे बहुत बढ़ जाते हैं । और वह उन के ढोर को घटने नहीं देता ॥

३९ । फिर वे घट गये और दीन हुए । अन्धेर और कष्ट और दु:ख के कारण से ॥

४० । तब वह अधिपतियों को अपमान से लाद देता । और उन को शून्य स्थानों में भटकते फिराता ॥

४१ । पर दरिद्र को दु:ख से निकालके ऊंचा करता । और उन को भेड़ों की झुण्डों की नाईं परिवार परिवार करके बसाता है ॥

४२ । सीधे जन देखके आनन्द करेंगे । और सारी कुटिलता अपना मुंह मूंदेगी ॥

४३ । जो कोई ज्ञानी हो सो इन बातों को ध्यान से देखा करेगा । और प्रभु की समस्त दया को भली भांति बिचारे ॥

संध्याकाल की प्रार्थना ।

स्तोत्र १०८

१ । हे ईश्वर मेरा हृदय स्थिर है । मैं गाऊंगा और स्तुतिगान करूंगा अपनी महिमा से भी ॥

२ । हे कानून और बीणा जागो । मैं तड़के उठूंगा ॥

३ । हे प्रभु मैं जातियों में तेरी स्तुति करूंगा । मैं लोकगणों में तेरा स्तुतिगान करूंगा ॥

४ । क्योंकि तेरी दया आकाश से ऊंची है । और तेरी सच्चाई मेघों लों पहुंची ॥

५ । हे ईश्वर स्वर्ग के ऊपर उन्नत हो । और तेरी महिमा समस्त पृथिवी के ऊपर हो ॥

६ । जिस्तें तेरे प्यारे छुड़ाये जावें । तू अपने दहिने हाथ से बचा और हम को उत्तर दे ॥

७ । ईश्वर अपनी पवित्रता में बोला मैं प्रमुदित होऊंगा । मैं शकेम् को बांटूंगा और सुक्कोत् की तराई को मापूंगा ॥

८ । गिलाद् मेरा ही है मनश्शे मेरा ही है और एफ्रैम् मेरे सिर की रक्षा के लिये दृढ़ गढ़ है । यहूदा मेरा व्यवस्थादायक है ॥

९ । मोआब् मेरे धोने धाने का पात्र है मैं एदोम् पर अपना जूता फेंकूंगा । मैं पलेशेत् पर जयध्वनि करूंगा ॥

१० । कौन मुझे सुदृढ़ नगर में पहुंचावेगा । कौन मझे एदोम् लों पहुंचा चुका है ॥

११ । क्या तू ही नहीं हे ईश्वर तू जिस ने हम को मन से उतार दिया था । और हमारी सेनाओं के साथ नहीं निकला हे ईश्वर ॥

१२ । रिपु से हमारी सहायता कर । कि मनुष्य की सहायता व्यर्थ ही है ॥

१३। ईश्वर की शक्ति से हम बीरता करेंगे। कि वही हमारे रिपुओं को रौंदेगा॥

—:o:—

स्तोत्र १०९

१। हे मेरी स्तुति के ईश्वर। चुप न रह॥

२। क्योंकि दुष्ट का मुंह और कपट का मुंह मुझ पर खुल गया। लोग झूठी जीभ से मेरे विरुद्ध बोले हैं॥

३। और मुझ को बैर के वचनों से घेरा। और निष्कारण मुझ से लड़े हैं॥

४। मेरे प्रेम की सन्ती वे मुझ से द्वेष रखते हैं। पर मैं तो प्रार्थना में लवलीन रहता हूं॥

५। और उन्हों ने भलाई के पलटे में मुझ से बुराई किई। और मेरे प्रेम के प्रतिफल में बैर रक्खा है॥

६। तू उस के ऊपर एक दुष्ट को स्थापित कर। और द्वेषी उस की दाहिने ओर खड़ा रहे॥

७। जब उस का न्याय किया जावे तब वह दोषी निकले। और उस की प्रार्थना पाप गिनी जावे॥

८। उस के दिन थोड़े होवें। और उस का पद दूसरा लेवे॥

९। उस के लड़के बाले पितृहीन होवें। और उस की स्त्री बिधवा हो जावे॥

१०। और उस के लड़के मारे मारे फिरें और भीख मांगें। और अपने उजड़े हुए घर से दूर जाके रोटी ढूंढें॥

११। महाजन फन्दा लगाके उस का सर्व्वस्व ले लेवे। और परदेशी उस के परिश्रम का फल लूटें॥

१२। कोई न होवे जो आगे को उस पर दया करे। अथवा उस के पितृहीन बालकों पर करुणा करे॥

१३। उस का वंश नाश होवे। दूसरी पीढ़ी में उन का नाम मिटाया जावे ॥

१४। उस के पुरखाओं का अधर्म्म प्रभु के साम्हने स्मरण रहे। और उस की मा का पाप मिटाया न जावे॥

१५। वे निरन्तर प्रभु के साम्हने रहें। कि वह उन के स्मरण को पृथिवी पर से मिटा डाले॥

१६। इस लिये कि वह दया करने को स्मरण न करता था। पर दुःखी और दरिद्र पुरुष को सताया और चूर्ण मनवाले को कि उस को मार डाले॥

१७। वह स्राप से प्रीति रखता था सो उस पर पड़ गया। वह आशीर्वाद नहीं चाहता था सो वह उस से दूर हो गया॥

१८। और वह स्राप को चादर की नाईं ओढ़ता था। सो वह उस के भीतर जल की नाईं पैठा और तेल के समान उस की हड्डियों में समा गया है॥

१९। वह उस के लिये उस वस्त्र के समान होवे जो वह ओढ़ लेता है। और उस पटुके के सदृश जिसे वह नित्य कसे रहता है॥

२०। प्रभु की ओर से मेरे द्वेषियों का यही पलटा होगा। और उन का जो मेरे जीव के बिरुद्ध बुरा कहते हैं॥

२१। पर तू हे प्रभु भगवान् अपने नाम के निमित्त मुझ से सुव्यवहार कर। क्योंकि तेरी दया भली है तू मुझ को छुड़ा॥

२२। क्योंकि मैं दुःखी और दरिद्र हूं। और मेरा हृदय मेरे भीतर घायल हुआ है॥

२३। मैं ढलती हुई छाया की भाईं जाता रहा। मैं टिड्डी के समान हांक दिया गया हूं॥

२४। मेरे घुटने उपवास करते करते दुर्बल हो गये। और मेरा मांस मेद बिना सूख गया है॥

२५ । और मैं तो उन से दुर्नाम हुआ हूं । जब मुझे देखते हैं तो अपना सिर हिलाते हैं ॥

२६ । हे प्रभु मेरे ईश्वर मेरी सहाय कर । अपनी दया के अनुसार मुझ को बचा ॥

२७ । जिस्तें वे जानें कि यह तेरा ही हाथ है । तू ही ने हे प्रभु यह किया है ॥

२८ । वे स्राप देते रहें पर तू आशीर्वाद दे । वे उठें तब लज्जित होंगे पर तेरा दास आनन्दित होवेगा ॥

२९ । मेरे द्वेषियों को अनादररूपी वस्त्र पहिनाया जावे । और वे अपनी लज्जा को चादर की नाईं ओढ़ें ॥

३० । मैं अपने मुंह से प्रभु का बड़ा धन्यवाद करूंगा । और बहुत से लोगों में उस की स्तुति करूंगा ॥

३१ । क्योंकि वह दरिद्र की दहिनी ओर खड़ा होगा । जिस्तें उस को उन से बचावे जो उस के जीव को न्याय में दोषी ठहराते हैं ॥

तेईसवां दिन ।

प्रातःकाल की प्रार्थना ।

स्तोत्र ११० ।

१ । प्रभु की वाणी मेरे स्वामी से यह है कि तू मेरी दहिनी ओर बैठा रह । जब लों मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पैरों की पीढ़ी न कर देऊं ॥

२ । प्रभु तेरे सामर्थ्य का राजदण्ड सिय्योन् में से भेजेगा । तू अपने शत्रुओं के मध्य में शासन कर ॥

३ । तेरे निज लोग तेरे पराक्रम के दिन आप ही स्वेच्छापूर्व्वक भेंटें बनते हैं । पवित्रता की शोभा के साथ भोर के गर्भ से तेरे तरुण तेरे लिये ओस के समान आते हैं ॥

४। प्रभु ने किरिया खाई और न पछतावेगा। कि मिल्कीसेदेक् की रीति पर सदा लों याजक है॥

५। प्रभु ने जो तेरी दाहिनी ओर है। अपने कोप के दिन राजाओं को छेदा है॥

६। वह जातियों में न्याय चुकावेगा। उस ने रणभूमि को लोथों से भर दिया है उस ने सिर को दूर दूर लों छेदा है॥

७। वह मार्ग में नाले में से पीवेगा। इस कारण से वह अपना सिर उठावेगा॥

—:o:—

स्तोत्र १११

१। हल्ललूयाह् मैं सारे अन्तःकरण से प्रभु का धन्यवाद करूंगा। सीधे लोगों की सभा में और मण्डली में भी॥

२। प्रभु के काम बड़े हैं उन का भेद उन सब से जो उन से प्रसन्न रहते हैं खोजा जाता है॥

३। उस का कर्म्म विभव और गौरव से भरे है। और उस का धर्म्म सदा लों बना रहता है॥

४। उस ने अपने आश्चर्य्यकर्म्मों का एक स्मारक ठहराया है। प्रभु करुणामय और वत्सल है॥

५। उस ने अपने डरवैयों को अहेर दिया। वह अपनी वाचा को सदा स्मरण रक्खेगा॥

६। उस ने अपने निज लोगों पर अपने कामों का सामर्थ्य प्रगट किया। जिस्तें वह उन को अन्यजातियों का भाग देवे॥

७। उस की हस्तक्रिया सत्य और न्याय है। उस के सारे आदेश विश्वासयोग्य हैं॥

८। वे युगानयुग स्थिर हैं और सच्चाई और सीधाई से किये हुए हैं॥

९। उस ने अपने निज लोगों को उद्धार भेजा उस ने अपनी वाचा को अपने श्रीमुख से ठहराया है। उस का नाम पवित्र और भयंकर है॥

१०। ज्ञान का प्रारंभ प्रभु का भय है जितने ये काम करते हैं उन की अच्छी बुद्धि है। उस की स्तुति सदा लों बनी रहती है॥

—:०:—

स्तोत्र ११२।

१। हल्लिलूयाह् धन्य है वह पुरुष जो प्रभु से डरता है। जो उस की आज्ञाओं से अति प्रसन्न रहता है॥

२। उस का वंश पृथिवी पर पराक्रमी होगा। सीधे लोगों के सन्तान आशीष् पावेंगे॥

३। उस के घर में धन और सम्पत्ति है। और उस का धर्म्म सदा लों बना रहता है॥

४। सीधे लोगों के लिये अन्धकार के बीच ज्योति उदय होती है। वह करुणामय और वत्सल और धर्म्मी है॥

५। जो पुरुष करुणा करके उधार देता है उस का कल्याण होता है। वह न्याय से अपने कार्य्यों का प्रबन्ध करेगा॥

६। निश्चय वह कभी न टलेगा। धर्म्मी सदा स्मरण में रहेगा॥

७। वह बुरे समाचार से न डरेगा। उस का हृदय स्थिर है और प्रभु पर भरोसा रखता है॥

८। उस का मन स्थिर है वह न डरेगा। जब लों वह अपने रिपुओं पर दृष्टि न करे॥

९। उस ने धन बिथराया और दरिद्रों को दान दिया। उस का धर्म्म सदा लों बना रहता है उस का सींग महिमा में ऊंचा होगा॥

१०। दुष्ट देखके कुढ़ेगा वह अपने दांत पीसेगा और गल जावेगा। दुष्टों की कामना भंग होवेगी॥

—:०:—

स्तोत्र ११३ ।

१ । हल्लूयाह् हे प्रभु के दासो स्तुति करो । प्रभु के नाम की स्तुति करो ॥

२ । प्रभु का नाम धन्य होवे । अब से ले सर्वदा लों ॥

३ । सूर्य्य के उदय से ले उस के अस्त लों । प्रभु का नाम अति स्तुत्य है ॥

४ । प्रभु समस्त जातियों के ऊपर उन्नत है । उस की महिमा स्वर्ग के ऊपर है ॥

५ । प्रभु हमारे ईश्वर के समान कौन है । जो ऊंचे पर विराजमान है ।

६ । और स्वर्ग और पृथिवी पर दृष्टि करने के लिये । अपने को नीचा करता है ॥

७ । वह कंगाल को धूलि में से उठाता । और दरिद्र को घूरे पर से ऊंचा करता है ॥

८ । जिस्तें उस को प्रधानों के संग विराजमान करे । अर्थात् अपने निज लोगों के प्रधानों के संग ॥

९ । वह बांझ का घर बसाता । और उस को लड़कों की आनन्द करनेहारी माता बनाता है हल्लूयाह् ॥

संध्याकाल की प्रार्थना ।

स्तोत्र ११४ ।

१ । जब यिस्राएल् ने मिसर से पयान किया । और याकोब् के घराने ने अन्यभाषावालों में से ॥

२ । तब यहूदा उस का पवित्रस्थान । और यिस्राएल् उस का राज्य हो गया

३। समुद्र देखके भागा। यर्दन् उटली फिरी॥

४। पहाड़ मेंढ़ों की नाईं उछलने लगे। और पहाड़ियां भेड़ों के बच्चों के समान॥

५। हे समुद्र तुझे क्या भया कि तू भागता है। हे यर्दन् तुझे क्या भया कि तू उलटी फिरती है॥

६। हे पहाड़ो तुम्हें क्या हुआ कि तुम मेंढ़ों की नाईं। हे पहाड़ियो तुम्हें क्या हुआ कि तुम भेड़ों के बच्चों के समान उछलती हो॥

७। हे पृथिवी स्वामी के साम्हने थरथरा। याकोब् के ईश्वर के साम्हने॥

८। जिस ने चटान को जल का ताल बना डाला। चकमक को जल का सोता कर दिया है॥

—:0:—

स्तोत्र ११५।

१। हे प्रभु हम को नहीं हम को नहीं पर अपने नाम को महिमा दे। अपनी दया और अपनी सच्चाई के निमित्त॥

२। अन्यजातियां क्यों कहें। कि अब उन का ईश्वर कहां है॥

३। हमारा ईश्वर तो स्वर्ग में है जो कुछ उस की इच्छा भई सो उस ने किया है॥

४। उन की मूर्त्तियां सोना और रूपा हैं। मनुष्यों के हाथों की कृति॥

५। उन के मुंह तो रहते हैं पर वे बोलती नहीं। उन की आंखें तो हैं पर वे देखती नहीं॥

६। उन के कान तो हैं पर वे सुनती नहीं। उन के नाक तो हैं पर वे सूंघती नहीं॥

७। उन के हाथ तो हैं पर वे स्पर्श नहीं करतीं उन के पांव तो हैं पर वे चलती नहीं। वे अपने गले से कोई शब्द नहीं निकालतीं॥

८। जैसे वे हैं तैसे ही उन के बनानेहारे भी हैं। और जितने उन पर भरोसा रखते हैं॥

९। हे यिस्राएल् प्रभु पर भरोसा रख। उन का सहायक और उन की फरी वही है॥

१०। हे अहरोन् के घराने प्रभु पर भरोसा रक्खो। उन का सहायक और उन की फरी वही है॥

११। हे प्रभु के डरवैयो प्रभु पर भरोसा रक्खो। उन का सहायक और उन की फरी वही है॥

१२। प्रभु ने हम को स्मरण किया वह आशीष् देगा। वह यिस्राएल् के घराने को आशीष् देगा वह अहरोन् के घराने को आशीष् देवेगा॥

१३। वह प्रभु के डरवैयों को आशीष् देगा। क्या छोटों को क्या बड़ों को॥

१४। प्रभु तुम को बढ़ाता जावे। तुम को और तुम्हारे लड़कों को भी॥

१५। तुम प्रभु के आशीषित हो। जो स्वर्ग और पृथिवी का कर्त्ता है॥

१६। स्वर्ग जो है स्वर्ग तो प्रभु का है। पर पृथिवी उस ने मनुष्यजाति को दिई है॥

१७। मृतक तो याह् की स्तुति नही करते। और न उन में से कोई जो मौनलोक में उतर जाते हैं॥

१८। परन्तु हम याह् को धन्य कहते रहेंगे। अब से ले सर्वदा लों हल्लूयाह्॥

चौबीसवां दिन ।

प्रातःकाल की प्रार्थना ।

स्तोत्र ११६ ।

१ । मुझ को प्रेम उपजा है । क्योंकि प्रभु ने मेरी वाणी और विनतियों को सुना है ॥

२ । क्योंकि उस ने अपना कान मेरी ओर झुकाया है । और मैं जन्मभर पुकारा करूंगा ॥

३ । मृत्यु की रस्सियों ने मुझ को घेरा और मैं पाताल की सकेती में फंसा । मैं ने कष्ट और क्लेश भोगा ॥

४ । तब मैं ने प्रभु का नाम लेके पुकारा । "हे प्रभु कृपा करके मेरे प्राण को बचा ले" ॥

५ । प्रभु करुणामय और धर्म्मी है । और हमारा ईश्वर छोह करता है ॥

६ । प्रभु भोलों की रक्षा करता है । मैं दुर्बल हो गया था और उस ने मुझे बचाया ॥

७ । हे मेरे जीव अपने विश्राम में फिर आ । क्योंकि प्रभु ने तेरा उपकार किया है ॥

८ । क्योंकि तू ने मेरे जीव को मृत्यु से मेरी आंख को आंसू बहाने से । और मेरे पांव को फिसलने से बचाया है ॥

९ । मैं प्रभु के आगे जीवतों के देशों में । चलता फिरता रहूंगा ॥

१० । मैं ने जो ऐसा कहा विश्वास करके कहा । पर मैं तो बहुत दुःखित हुआ था ॥

११ । वरन मैं ने अपनी उतावली में कहा था । कि सब मनुष्य झूठे हैं ॥

१२। प्रभु ने मेरे जितने उपकार किये हैं। उन का मैं उस को क्या प्रतिफल देऊं ॥

१३। मैं त्राण का कटोरा उठाऊंगा। और प्रभु का नाम लेके पुकारूंगा ॥

१४। मैं अपनी मनौतियां प्रभु के लिये पूरी करूंगा। सो प्रगट में उस के सब लोगों के साम्हने होवे ॥

१५। प्रभु के भक्तों की मृत्यु। उस की दृष्टि में बहुमूल्य है ॥

१६। हे प्रभु निश्चय मैं तेरा दास हूं मैं तेरा दास वरन तेरी दासी का बेटा हूं। तू ने मेरे बन्धन खोले हैं ॥

१७। मैं तुझे धन्यवाद का बलिदान चढ़ाऊंगा। और प्रभु का नाम लेके पुकारूंगा ॥

१८। मैं अपनी मनौतियां प्रभु के लिये पूरी करूंगा। सो प्रगट में उस के सब लोगों के साम्हने होवे ॥

१९। प्रभु के घर के आंगनों में। तेरे मध्य में हे यरूशलेम हल्लूयाह् ॥

—:o:—

स्तोत्र ११७।

१। हे सारी जातियो प्रभु की स्तुति करो। हे समस्त लोकगणो उस की प्रशंसा करो ॥

२। क्योंकि उस की दया हम पर बहुत हुई है। और प्रभु की सच्चाई सनातन है हल्लूयाह् ॥

—:o:—

स्तोत्र ११८

१। प्रभु का धन्यवाद करो क्योंकि वह भला है। कि उस की दया सनातन है ॥

२। यिस्राएल् कहे। कि उस की दया सनातन है

३। अहरोन् का घराना कहे। कि उस की दया सनातन है।

४। प्रभु के डरवैये कहें। कि उस की दया सनातन है॥

५। मैं ने सकेती में से याह् को पुकारा। याह् ने मुझे उत्तर देके मुझे खुले चौगान में रक्खा॥

६। प्रभु मेरी ओर है मैं न डरूंगा। मनुष्य मेरा क्या करेगा॥

७। प्रभु मेरी ओर मेरे सहायकों में से है। सो मैं अपने बैरियों पर दृष्टि करूंगा॥

८। प्रभु की शरण लेनी। मनुष्य पर भरोसा रखने से उत्तम है॥

९। प्रभु की शरण लेनी। प्रधानों पर भरोसा रखने से उत्तम है॥

१०। सब जातियों ने मुझ को घेरा था। पर प्रभु के नाम से मैं निश्चय उन्हें काट डालूंगा॥

११। उन्हों ने मुझ को घेरा उन्हों ने मुझे घेर रक्खा तो था। पर प्रभु के नाम से मैं निश्चय उन्हें काट डालूंगा॥

१२। उन्हों ने मधुमक्खियों की नाईं मुझे घेरा था पर कांटों की आग की नाईं बुझ गये हैं। प्रभु के नाम से मैं निश्चय उन्हें काट डालूंगा॥

१३। तू ने मुझे बड़ा धक्का दिया था कि मैं गिर पड़ूं। परन्तु प्रभु ने मेरी सहाय किई॥

१४। याह् मेरा सामर्थ्य और गीत है। और वह मेरा त्राण हुआ है॥

१५। जयध्वनि और त्राण का शब्द धर्म्मियों के डेरों में होता है। प्रभु का दहिना हाथ पराक्रम करता है॥

१६। प्रभु का दहिना हाथ ऊंचा है। प्रभु का दहिना हाथ पराक्रम करता है॥

१७। मैं न मरूंगा परन्तु जीता रहूंगा। और याह् के कामों का वर्णन करता रहूंगा।

१८। याह् ने मेरी बड़ी ताड़ना तो किई। परन्तु मृत्यु को मुझे नहीं सौंपा॥

१९। धर्म्म के द्वार मेरे लिये खोलो। मैं उन से प्रवेश करके याह् का धन्यवाद करूंगा॥

२०। यह द्वार प्रभु ही का है। उस में से धर्म्मी ही प्रवेश करेंगे॥

२१। मैं तेरा धन्यवाद करूंगा क्योंकि तू ने मुझे उत्तर दिया और तू मेरा त्राण हुआ है॥

२२। जिस पत्थर को थवइयों ने अग्राह्य किया। सो कोने के सिरे का पत्थर हो गया है॥

२३। यह तो प्रभु ही की ओर से भया। वह हमारी दृष्टि में अनूप है॥

२४। यह वह दिन है जो प्रभु ने बनाया। हम उस में आह्लादित और आनन्दित होवेंगे॥

२५। हे प्रभु कृपा कर कृपा करके त्राण दे। हे प्रभु कृपा कर कृपा करके हमें कृतार्थ कर॥

२६। धन्य वह होवे जो प्रभु के नाम से आता है। हम ने प्रभु के घर में से तुम्हें आशीर्वाद दिया है॥

२७। प्रभु परमेश्वर है और हम को प्रकाश दिया है। पर्व्व के यज्ञपशु को रस्सियों से वेदी के सींगों लों बांधो॥

२८। तू मेरा परमेश्वर है और मैं तेरा धन्यवाद करूंगा। तू मेरा ईश्वर है और मैं तुझे सराहूंगा॥

२९। प्रभु का धन्यवाद करो क्योंकि वह भला है। कि उस की दया सनातन है॥

संध्याकाल की प्रार्थना

स्तोत्र ११६

१। धन्य वे हैं जो मार्ग में खरे हैं। और प्रभु की व्यवस्था पर चलते हैं॥

२। धन्य वे हैं जो उस की साक्षियों को पालते हैं। और सारे अन्तःकरण से उस को खोजते हैं॥

३। और वे कुटिलता नहीं करते। पर उस के मार्गों पर चलते हैं॥

४। तू ने अपने आदेश अपने श्रीमुख से उच्चारे। जिस्तें वे यत्न से पाले जावें॥

५। हाय कि मेरे मार्ग। तेरे विधिन को पालने के लिये सिद्ध होते॥

६। तब मैं लज्जित न होऊंगा। जब मैं तेरी सब आज्ञाओं की ओर दृष्टि करूंगा॥

७। मैं तेरा धन्यवाद मन की सिधाई से तब करूंगा। जब तेरे धर्म्म के न्यायों को सीखूंगा॥

८। मैं तेरे विधिन को पालूंगा। तू मुझे सर्व्वथा न तज।

—:o:—

९। तरुण किस प्रकार से अपना पथ शुद्ध करे। तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने से॥

१०। मैं ने अपने सारे अन्तःकरण से तुझे खोजा है। मुझे अपनी आज्ञाओं से भटकने न दे॥

११। मैं ने तेरा वाक्य अपने हृदय में छिपा रक्खा है। जिस्तें मैं तेरा पाप न करूं॥

१२। हे प्रभु तू धन्य है। मुझे अपनी विधि सिखा॥

१३। मैं ने तेरे मुख के सब न्यायों का। अपने होंठों से वर्णन किया है॥

१४। मैं तेरी साक्षियों के मार्ग में ऐसा मगन हुआ हूं ! जैसे समस्त धन से ॥

१५। मैं तेरे आदेशों पर ध्यान करूंगा। और तेरे पथों की ओर दृष्टि किये रहूंगा ॥

१६। मैं तेरे विधिन में अत्यन्त मगन होऊंगा। मैं तेरे वचन को नहीं भूलूंगा ॥

—:0:—

१७। अपने दास का उपकार कर तो मैं जीता रहूंगा। और तेरे वचन को पालन करूंगा ॥

१८। मेरे नेत्र खोले कि मैं दृष्टि करूं। और तेरी व्यवस्था में से अनूप बातें देखूं ॥

१९। मैं पृथिवी पर परदेशी हूं। अपनी आज्ञाओं को मुझ से गुप्त न रख ॥

२०। मेरा जीव प्रतिक्षण। तेरे न्यायों की आकांक्षा से क्षीण हो गया है ॥

२१। तू ने अभिमानियों को जो स्रापित हैं घुड़का है ! कि वे तेरी आज्ञाओं से भटकते हैं ॥

२२। निन्दा और अपमान मुझ पर से उतार। क्योंकि मैं ने तेरी साक्षियों को पालन किया है ॥

२३। अधिपति भी बैठके मेरे विरुद्ध बातें करते थे। पर तेरा दास तेरे विधिन पर ध्यान करता था ॥

२४। और तेरी साक्षियां मेरा अत्यन्त आल्हाद। और मेरे मंत्री हैं ॥

—:0:—

२५। मेरा जीव धूल से सट गया। तू अपने वचन के अनुसार मुझ को जिला ॥

२६। मैं ने अपने मार्गों का वर्णन किया और तू ने मुझे उत्तर दिया। अपने विधि मुझे सिखा॥

२७। अपने आदेशों का मार्ग मुझे समझा। तो मैं तेरे आश्चर्य्य-कर्म्मों पर ध्यान करूंगा॥

२८। मेरा जीव शोक से गल गया है। अपने वचन के अनुसार मुझे सम्भाल॥

२९। झूठ का मार्ग मुझ से दूर कर। और करुणा करके मुझे अपनी व्यवस्था दे॥

३०। मैं ने विश्वस्तता का मार्ग चुना है। तेरे न्यायों को मैं ने अपने साम्हने रक्खा है॥

३१। मैं तेरी साक्षियों से लिपट गया। हे प्रभु मुझे लज्जित न कर॥

३२। मैं तेरी आज्ञाओं के मार्ग में तब दौड़ूंगा। जब तू मेरे हृदय को बढ़ावेगा॥

पचीसवां दिन।

प्रातःकाल की प्रार्थना।

३३। हे प्रभु मुझे अपने विधिन के मार्ग की शिक्षा दे। तो मैं अन्त लों उस पर चलूंगा॥

३४। मुझे समझ दे तो मैं तेरी व्यवस्था को पालूंगा। और समस्त अन्तःकरण से उस पर चलूंगा॥

३५। अपनी आज्ञाओं की डगर में मुझे चला। क्योंकि मैं उसी से प्रसन्न हूं॥

३६। मेरे मन को अपनी साक्षियों की ओर फेर। न कि लोभ की ओर॥

३७। मेरे नेत्रों को व्यर्थता के देखने से फेर दे। अपने वचन से मुझ को जिला॥

३८। अपना वह वाक्य अपने दास के लिये दृढ़ कर। जो तेरे डरवैयों के लिये है॥

३९। मेरी उस निन्दा को जिस से मैं डरता हूं हटा दे। क्योंकि तेरे न्याय अच्छे हैं॥

४०। देख मैं तेरे आदेशों का आकांक्षी हूं। तू मुझे अपने धर्म्म से जिला॥

—:o:—

४१। हे प्रभु तेरी समस्त दया मुझ लों भी पहुंचे। अर्थात् तेरा त्राण तेरे वाक्य के अनुसार॥

४२। तो मैं अपने चिढ़ानेहारे को कुछ उत्तर दे सकूंगा। क्योंकि मैं ने तेरे वचन पर भरोसा रक्खा है॥

४३। और सत्य का वचन मेरे मुंह से सर्व्वथा न छीन ले। क्योंकि मैं ने तेरे न्यायों की बाट जोही है॥

४४। तो मैं तेरी व्यवस्था को पालूंगा। निरन्तर वरन युगानयुग॥

४५। और मैं चौड़े में चलूं फिरूंगा। क्योंकि मैं ने तेरे आदेशों को खोजा है॥

४६। और मैं तेरी साक्षियों की चर्चा राजाओं के साम्हने भी करूंगा। और नहीं लजाऊंगा॥

४७। और मैं तेरी आज्ञाओं में अति मगन होऊंगा। क्योंकि मैं ने उन से प्रीति रक्खी है॥

४८। और मैं तेरी आज्ञाओं की ओर अपने हाथ भी उठाऊंगा क्योंकि मैं ने उन से प्रीति किई है। और मैं तेरे विधिन पर ध्यान करूंगा॥

—:o:—

४९ । जो वचन तू ने अपने दास से कहा है उसे स्मरण कर। क्योंकि तू ने मुझे आशा दिई है ॥

५० । मेरे दुःख में यही मेरा प्रबोध है। क्योंकि तेरे वाक्य ने मुझे जिलाया है ॥

५१ । अभिमानियों ने मुझे अत्यन्त ठट्ठे में उड़ाया है। पर मैं तेरी व्यवस्था से नहीं हटा ॥

५२ । हे प्रभु मैं ने तेरे सनातन न्यायों को स्मरण किया। और प्रबोध प्राप्त किया है ॥

५३ । मैं उन दुष्टों के कारण से रोमांचित हो गया। जो तेरी व्यवस्था को छोड़ देते हैं ॥

५४ । तेरे विधि मेरे टिकाश्रय में। मेरे गीत हुए हैं ॥

५५ । रात को मैं ने तेरा नाम हे प्रभु स्मरण किया। और तेरी व्यवस्था पर चला हूं ॥

५६ । यह सब इस लिये मुझे हुआ। कि मैं ने तेरे आदेशों को पालन किया है ॥

—:0:—

५७ । मैं ने कहा कि प्रभु मेरा भाग है। मैं तेरे वचनों पर चलूंगा ॥

५८ । मैं ने तेरी प्रसन्नता के लिये सारे अन्तःकरण से याचना किई है। अपने वाक्य के अनुसार मुझ पर करुणा कर ॥

५९ । मैं ने अपने मार्गों को सोचा। और अपने पैरों को तेरी साक्षियों की ओर फेरा ॥

६० । मैं ने शीघ्रता किई और आलस्य नही किया। जिस्तें तेरी आज्ञाओं को पालूं ॥

६१ । दुष्टों की रस्सियों ने मुझे घेरा। पर मैं तेरी व्यवस्था को नहीं भूला ॥

६२। आधी रात को मैं तेरा धन्यवाद करने को उठूंगा। तेरे धर्म्म के न्यायों के कारण से ॥

६३। मैं तेरे सब डरवैयों का संगी हूं। और उन का जो तेरे आदेशों को पालते हैं ॥

६४। हे प्रभु तेरी दया से पृथिवी परिपूर्ण है। तू मुझे अपनी विधि सिखा ॥

—:o:—

६५। हे प्रभु अपने वचन के अनुसार। तू ने अपने दास के साथ भलाई किई है ॥

६६। मुझे अच्छा विचार और ज्ञान सिखा। क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं का बिश्वास किया है ॥

६७। उस से पहिले कि मैं दुःखित भया मैं भटकता था। पर अब मैं ने तेरे वाक्य को पालन किया है ॥

६८। भला है तू और भलाई करता है। अपने विधि मुझे सिखा ॥

६९। अभिमानियों ने मेरे विरुद्ध एक झूठ बनाया है। पर मैं सारे अन्तःकरण से तेरे आदेशों पर चलूंगा ॥

७०। उन का हृदय मेद के तुल्य मोटा हो गया। पर मैं तेरी व्यवस्था में अति मगन हुआ हूं ॥

७१। मेरे लिये भला भया कि मैं ने दुःख उठाया। जिस्तें मैं तेरे विधिन को सीखूं ॥

७२। तेरे मुख की व्यवस्था मेरे लिये सहस्रों मुहरों और रुपैयों से उतम है ॥

संध्याकाल की प्रार्थना।

७३। तेरे हाथों ने मुझे बनाया और सिद्ध किया। मुझे समझ दे तो मैं तेरी आज्ञाओं को सीखूंगा॥

७४। तेरे डरवैये मुझे देखके आनन्दित होवेंगे। क्योंकि मैं ने तेरे वचन की बाट जोही है॥

७५। हे प्रभु मैं जान गया कि तेरे न्याय यथार्थ हैं। और तू ने विश्वस्तता ही से मुझे दुःख दिया है॥

७६। तेरी दया मेरे प्रबोध का कारण होवे। जैसे तू ने अपने दास से वाक्य कहा है॥

७७। तेरी मया मुझ लों पहुंचे तो मैं जी जाऊंगा। क्योंकि तेरी व्यवस्था मेरा अति आह्लाद है॥

७८। अभिमानी लज्जित होवें क्योंकि उन्हों ने झूठ से मुझ को उ ट दिया। पर मैं तेरे आदेशों पर ध्यान करूंगा॥

७९। तेरे डरवैये मेरी ओर फिरें। तो वे तेरी साक्षियों को समझेंगे॥

८०। मेरा मन तेरे आदेशों के पालने में खरा होवे। न हो कि मैं लज्जित हो जाऊं॥

—:o:—

८१। मेरा जीव तेरे त्राण की आकांक्षा से क्षीण हो गया। पर मैं ने तेरे वचन की बाट जोही है॥

८२। मेरे नेत्र तेरे वाक्य की आकांक्षा से क्षीण हो गये। मैं कहता हूं कि तू कब मुझे शान्ति देवेगा॥

८३। क्योंकि मैं धूंएं में टंगे हुए कुप्पे के समान हुआ हूं। पर तेरे विधिन को मैं भूला नहीं॥

८४। तेरे दास के और कितने दिन हैं। तू कब मेरे सतानेहारों को न्याय दण्ड देवेगा॥

८५ । अभिमानियों ने मेरे लिये गड़हे खोदे हैं । इस लिये कि वे तेरी व्यवस्था के अनुसार नहीं चलते ॥

८६ । तेरी सब आज्ञाएं विश्वासयोग्य हैं । वे झूठमूठ मुझे सताते हैं तू मेरी सहाय कर ॥

८७ । निकट था कि वे मुझे पृथिवी पर से नाश कर डालते । पर मैं ने तेरे आदेशों को नहीं छोड़ा ॥

८८ । अपनी दया के अनुसार मुझे जिला । तो मैं तेरे मुख की साक्षी को पालन करूंगा ॥

—:o:—

८९ । हे प्रभु तेरा वचन । स्वर्ग में सदा लों स्थिर है ॥

९० । तेरी विश्वस्तता पीढ़ी से पीढ़ी लों बनी रहती है । तू ने पृथिवी को सिद्ध किया तो वह स्थिर हो गई ॥

९१ । वे आज के दिन लों तेरे न्यायों के अनुसार खड़े रहते हैं । क्योंकि वे सम्पूर्ण पदार्थ तेरे दास हैं ॥

९२ । यदि तेरी व्यवस्था मेरा अति आह्लाद न होती । तो मैं उस समय अपने दुःख में नष्ट हो जाता ॥

९३ । मैं तेरे आदेशों को कभी न भूलूंगा । क्योंकि उन के द्वारा तू ने मुझे जिलाया है ॥

९४ । मैं तेरा हूं मुझे बचा । क्योंकि मैं ने तेरे आदेशों को खोजा है ॥

९५ । दुष्ट मेरे घात में लगे जिस्तें मुझे नाश करें । पर मैं तेरी साक्षियों को मनन करूंगा ॥

९६ । समस्त पूर्णता का मैं ने अन्त देखा है । पर तेरी आज्ञा अत्यन्त विशाल है ॥

—:o:—

९७ । अहा मैं तेरी व्यवस्था से कैसी प्रीति रखता हूं । दिन भर मैं उस पर ध्यान करता हूं ॥

९८ । तेरी आज्ञाएं मुझ को मेरे शत्रुओं से अधिक ज्ञान देती हैं । क्योंकि वे सदा मेरे पास रहती हैं ॥

९९ । मैं अपने सब शिक्षकों से अधिक बुद्धि रखता हूं । क्योंकि मैं तेरी साक्षियों पर ध्यान करता हूं ॥

१०० । मैं पुरनियों से भी अधिक समझता हूं । क्योंकि मैं ने तेरे आदेशों को पाला है ॥

१०१ । मैं ने अपने पांव सारे बुरे पथों से रोक रक्खा है । जिस्तें मैं तेरे वचन पर चलूं ॥

१०२ । मैं तेरे न्यायों से नहीं हटा । क्योंकि तू ही ने मुझे शिक्षा दिई है ॥

१०३ । तेरे वाक्य मेरी रसना को कैसे मीठे लगते हैं । वे मेरे मुंह में मधु से भी मधुर है ॥

१०४ । तेरे आदेशों से मैं समझ प्राप्त करता हूं । इस कारण से मैं सब झूठे पथों से बैर रखता हूं ॥

छब्बीसवां दिन ।

प्रातःकाल की प्रार्थना ।

१०५ । तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक । और मेरी डगर के लिये ज्योति है ॥

१०६ । मैं ने किरिया खाई और दृढ़ संकल्प किया है । कि मैं तेरे धर्म्म के न्यायों पर चलूंगा ॥

१०७ । मैं अत्यन्त दुःखित हुआ हूं । हे प्रभु अपने वचन के अनुसार मुझ को जिला ॥

१०८ । हे प्रभु मेरे मुंह की स्वेच्छापूर्वक भेंट कृपा करके स्वीकार कर । और अपने न्याय मुझे सिखा ॥

१०६। मेरा जीव निरन्तर मेरी हथेली पर है। परन्तु मैं तेरी व्यवस्था को नहीं भूला॥

११०। दुष्टों ने मेरे लिये फंदा लगाया। पर मैं तेरे आदेशों से नहीं भटका॥

१११। मैं ने तेरी साक्षियों को अपना निज भाग करके सदा के लिये चुना है। क्योंकि वे मेरे हृदय के हर्ष हैं॥

११२। मैं ने अपने मन को इस बात की ओर तत्पर किया है। कि सदा वरन अन्त लों तेरे विधिन पर चलता रहूं॥

—:o:—

११३। मैं दुचित्तों से बैर रखता हूं। पर तेरी व्यवस्था से प्रीति रखता हूं॥

११४। तू मेरे छिपने का स्थान और मेरी फरी है। तेरे वचन की मैं ने बाट जोही है॥

११५। हे कुकर्म्मियो मुझ से दूर होओ। तो मैं अपने ईश्वर की आज्ञाओं को पालन करूंगा॥

११६। अपने वाक्य के अनुसार मुझे संभाल तो मैं जीऊंगा। और मैं अपनी आशा से लज्जित न होने पाऊं॥

११७। मुझे थांभ तो मैं बचा रहूंगा। और निरन्तर तेरे विधिन की ओर ताकता रहूंगा॥

११८। जितने तेरे विधिन से भटक जाते हैं उन को तू तुच्छ करता है। क्योंकि उन की युक्ति झूठ ही है॥

११६। तू ने पृथिवी के सब दुष्टों को धातु के मैल की नाईं दूर कर दिया है। इस लिये मैं तेरी साक्षियों से प्रीति रखता हूं॥

१२०। मेरा शरीर तेरे भय से रोमांचित है। और मैं तेरे न्यायों से डरता हूं॥

—:o:—

१२१ । मैं ने न्याय और धर्म्म किया है । तू कभी मुझे उन के हाथ में न छोड़ जो मुझ पर अन्धेर करते हैं ॥

१२२ । मेरी भलाई के लिये मेरा बिचवई हो । अभिमानी मुझ पर अन्धेर न करने पावें ॥

१२३ । मेरे नेत्र तेरे त्राण की । और तेरे धर्म्ममय वाक्य की आकांक्षा में क्षीण हो गये ॥

१२४ । अपने दास के संग अपनी दया के अनुसार व्यवहार कर । और मुझे अपने विधि सिखा ॥

१२५ । मैं तेरा दास हूं तू मुझे समझ दे । तो मैं तेरी साक्षियों को समझूंगा ॥

१२६ । प्रभु के काम करने का समय आया है । क्योंकि उन्हों ने तेरी व्यवस्था को निरर्थक किया है ॥

१२७ । इस कारण से मैं ने तेरी आज्ञाओं से । सोने से वरन कुन्दन से भी अधिक प्रीति रक्खी है ॥

१२८ । इस कारण से मैं तेरे सब आदेशों को सब विषयों में यथार्थ जानता हूं । और सब झूठे पथों से बैर रखता हूं ॥

—:0:—

१२९ । तेरी साक्षियां अनूप हैं । इस कारण से मेरे जीव ने उन्हें पालन किया है ॥

१३० । तेरे वचनों के खुलने से प्रकाश होता है । वह भोलों को समझ देता है ॥

१३१ । मैं मुंह खोलके हांफने लगा । क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं की आकांक्षा किई ॥

१३२ । मेरी ओर फिर और मुझ पर करुणा कर । जैसी उन से तेरी रीति है जो तेरे नाम से प्रीति रखते हैं ॥

१३३। मेरे डगों को अपने वाक्य में दृढ़ कर। और कोई अनर्थ बात मुझ पर प्रभुता न करने पावे॥

१३४। मनुष्य के अन्धेर से मुझ को छुड़ा ले। तो मैं तेरे आदेशों पर चलूंगा॥

१३५। अपने मुख का प्रकाश अपने दास पर पड़ने दे। और मुझे अपने विधि सिखा॥

१३६। जल की धाराएं मेरे नेत्रों से बहती हैं। इस लिये कि लोग तेरी व्यवस्था पर नहीं चलते॥

—:o:—

१३७। हे प्रभु तू धर्म्मी है। और तेरे न्याय सीधे हैं॥

१३८। जो साक्षियां तू ने अपने श्रीमुख से उच्चारी हैं सो धर्म्म-मय। और अत्यन्त विश्वासयोग्य हैं॥

१३९। मेरे ज्वलन ने मुझे भस्म किया है। इस लिये कि मेरे रिपुओं ने तेरे वचनों को बिसरा दिया है॥

१४०। तेरा वाक्य अत्यन्त ताया हुआ है। और तेरा दास उस से प्रीति रखता है॥

१४१। मैं छोटा और तुच्छ हूं। पर मैं तेरे आदेशों को नहीं भूला॥

१४२। तेरा धर्म्म सनातन धर्म्म है। और तेरी व्यवस्था सत्य है॥

१४३। मैं कष्ट और संकट में फंसा हूं। परन्तु तेरी आज्ञाएं मेरे अति आल्हाद हैं॥

१४४। तेरी साक्षियां सदा लों धर्म्ममय हैं। तू मुझे समझ दे तो मैं जीऊंगा॥

संध्याकाल की प्रार्थना ।

१४५ । मैं ने सारे अन्तःकरण से पुकारा हे प्रभु मुझे उत्तर दे । तो मैं तेरी विधिन को पालूंगा ॥

१४६ । मैं ने तुझ को पुकारा तू मुझे बचा । तो मैं तेरी साक्षियों पर चलूंगा ॥

१४७ । मैं ने भोर को फुरती करके दोहाई दिई । मैं ने तेरे वचनों की बाट जोही ॥

१४८ । मेरे नेत्रों ने रात के पहरों से अधिक फुरती किई । जिस्तें मैं तेरे वाक्य पर ध्यान करूं ॥

१४९ । हे प्रभु अपनी दया के अनुसार मेरी वाणी सुन । अपनी रीति के अनुसार मुझे जिला ॥

१५० । जो बुरी युक्ति का पीछा करते हैं सो निकट आये हैं । वे तेरी व्यवस्था से दूर हैं ॥

१५१ । निकट है तू हे प्रभु । और तेरी सब आज्ञाए सत्य हैं ॥

१५२ । चिरकाल से मैं तेरी साक्षियों से जानता हूं । कि तू ने उन को सनातन नेव पर डाला है ॥

—:o:—

१५३ । मेरे दुःख को देख और मुझे छुड़ा । क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था को नहीं भूला ॥

१५४ । मेरा झगड़ा झगड़ और मुझे छुड़ा ले । अपने वाक्य के अनुसार मुझ को जिला ॥

१५५ । त्राण दुष्टों से दूर है क्योंकि वे तेरी विधिन को नहीं खोजते ॥

१५६ । हे प्रभु तेरी मया बड़ी है । अपने न्यायों के अनुसार मुझे जिला ॥

१५७। मेरे सतानेहारे और रिपु बहुत हैं। पर मैं तेरी साक्षियों से नहीं हटा॥

१५८। मैं दंगइतों को देखके उदास भया। क्योंकि वे तेरे वाक्य पर नहीं चलते॥

१५९। देख कि मैं तेरे आदेशों से कैसी प्रीति रखता हूं। हे प्रभु अपनी दया के अनुसार मुझे जिला॥

१६०। तेरे वचन का सार सत्य है। और तेरे धर्म्म का प्रत्येक न्याय सदा लों स्थिर है॥

—:०:—

१६१। अधिपतियों ने निष्कारण मुझे सताया है। पर मेरा हृदय तेरे वचनों से भयमान है॥

१६२। मैं तेरे वाक्य से ऐसा मगन हूं। जैसा कोई बड़ी लूट पाके होता है॥

१६३। मैं झूठ से बैर और घिन रखता हूं। पर तेरी व्यवस्था से प्रीति रखता हूं॥

१६४। मैं तेरे धर्म्ममय न्यायों के हेतु। प्रतिदिन सात बार तेरी स्तुति करता हूं॥

१६५। जो तेरी व्यवस्था से प्रीति रखते हैं उन को बड़ी शांति होती है। और उन को कुछ ठोकर नहीं लगती॥

१६६। हे प्रभु मैं ने तेरे त्राण की बाट जोही। और तेरी आज्ञाओं पर चला हूं॥

१६७। मेरे जीव ने तेरी साक्षियों को पाला है। और मैं उन से अत्यन्त प्रीति रखता हूं॥

१६८। मैं ने तेरे विधिन और तेरी साक्षियों को पाला है। क्योंकि मेरे सारे मार्ग तेरे साम्हने हैं॥

—:०:—

१६९ । हे प्रभु मेरा चिल्लाना तेरे सन्मुख पहुंचे । अपने वचन के अनुसार मुझ को समझ दे ॥

१७० । मेरा विनय तेरे साम्हने आवे । अपने वाक्य के अनुसार मुझ को छुड़ा ॥

१७१ । मेरे होंठों से स्तुति उमड़े । क्योंकि तू मुझे अपने विधि सिखाता है ॥

१७२ । मेरी जीभ तेरे वाक्य के विषय में गावे । क्योंकि तेरी सारी आज्ञाएं धर्म्ममय हैं ॥

१७३ । तेरा हाथ मेरा सहायक होवे । क्योंकि मैं ने तेरे आदेशों को चुन लिया है ॥

१७४ । हे प्रभु मैं ने तेरे त्राण की आकांक्षा किई है । और तेरी व्यवस्था मेरा हर्ष है ॥

१७५ । मेरा जीव जीता रहे तो वह तेरी स्तुति करेगा । और तेरे न्याय मेरी सहाय करें ॥

१७६ । मैं खोई हुई भेड़ की नाईं भटक गया । तू अपने दास को ढूंढ़ क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं को नहीं भूला ॥

सत्ताईसवा दिन ।

प्रात:काल की प्रार्थना ।

स्तोत्र १२० ।

१ । अपने कष्ट में मैं ने प्रभु को पुकारा । और उस ने मुझे उत्तर दिया ॥

२ । हे प्रभु मेरे जीव को झूठे होंठ से । और छली जीभ से बचा ले ॥

३ । हे छली जीभ तुझ को क्या मिलेगा । और तुझे क्या अधिक दिया जावेगा ॥

४ । बीर के नोकीले बाण । भाऊ के कोएलों समेत ॥

५ । हाय हाय क्योंकि मैं मेशेक् में टिका हूं । और केदार् के डेरों के बीच बसता हूं ॥

६ । बहुत काल से मेरे जीव को मेल के बैर रखनेहारे के संग । बसना पड़ा है ॥

७ । मैं तो मेल ही चाहता हूं । पर जब मैं बोलता हूं तब वे लड़ने को खड़े होते हैं ॥

—:0:—

स्तोत्र १२१ ।

१ । मैं पर्व्वतों की ओर अपने नेत्र उठाऊंगा । मेरी सहाय कहां से आवेगी ॥

२ । मेरी सहाय प्रभु ही की ओर से आती है । जो स्वर्ग और पृथिवी का कर्त्ता है ॥

३ । वह तेरे पांव को टलने न देवे । तेरा रक्षक न ऊंघे ॥

४ । देख यिस्राएल् का रक्षक । न ऊंघता न सोता है ॥

५ । प्रभु तेरा रक्षक है । प्रभु तेरी दहिनी ओर तेरी छाया है

६ । दिन को धूप से कुछ तुझे हानि न होवेगी । और न रात को अंजोरिया से ॥

७ । प्रभु सारी बुराई से तेरी रक्षा करेगा । वह तेरे जीव की रक्षा करेगा ॥

८ । प्रभु तेरे बाहर भीतर आने जाने में । अब से ले सर्वदा लों तेरी रक्षा करता रहेगा ॥

—:0:—

स्तोत्र १२२

१। मैं आनन्दित भया जब लोगों ने मुझ से कहा। कि हम प्रभु के घर चलें तब॥

२। हे यरूशलेम् तेरे फाटकों के भीतर। हमारे पांव जम गये हैं॥

३। हे यरूशलेम् तू जो ऐसी बनी हुई है। जैसे एक नगर जो अपने में संयुक्त है॥

४। वहां गोत्र अर्थात् याह् के गोत्र प्रभु के नाम का धन्यवाद करने को चढ़ जाते हैं। सो यिस्राएल् के लिये साक्षी है॥

५। क्योंकि वहां न्याय के सिंहासन धरे हुए हैं। दावीद् के घराने के सिंहासन॥

६। यरूशलेम् के लिये शान्ति का वर मांगो। तेरे प्रेमी कुशल से रहें॥

७। तेरी भीतों के भीतर शान्ति। तेरे महलों में कुशल होवे॥

८। अपने भाइयों और संगियों के निमित्त। मैं अब कहूंगा कि तुझ में शान्ति होवे॥

९। प्रभु अपने ईश्वर के घर के निमित्त। मैं तेरी भलाई के लिये यत्न करूंगा॥

—:o:—

स्तोत्र १२३।

१। हे स्वर्ग में बिराजमान। मैं तेरी ओर अपने नेत्र उठाता हूं॥

२। देख जैसे दासों के नेत्र स्वामियों के हाथ की ओर और जैसे दासी के नेत्र स्वामिनी के हाथ की ओर लगे रहते हैं। तैसे ही हमारे नेत्र प्रभु हमारे ईश्वर की ओर लगे हुए हैं जब लों वह हम पर करुणा न करे॥

३। हे प्रभु हम पर करुणा कर हम पर करुणा कर। क्योंकि हम अपमान से परितृप्त हो गये हैं॥

४। हमारा जीव सुखियों के ठट्ठों से। और अहंकारियों के अपमान से परितृप्त हुआ है॥

—:0:—

स्तोत्र १२४।

१। यदि हमारा पक्षी प्रभु ही न होता। ऐसा यिस्राएल् कहे॥

२। यदि हमारा पक्षी प्रभु ही न होता। जब मनुष्य हम पर चढ़े॥

३। तब तो वे हम को जीते निगल जाते। जब उन का कोप हम पर भड़का था॥

४। तब तो जल हमारे ऊपर से बह जाता। नदी हमारे जीव पर से बह जाती॥

५। तब तो अभिमानी जल। हमारे जीव पर से बह जाता॥

६। धन्य होवे प्रभु। कि उस ने हम को उन के दांतों का अहेर न होने दिया॥

७। हमारा जीव चिड़िया की नाईं चिड़ीमार के जाल से छूट गया। जाल फट गया और हम बच निकले॥

८। हमारी सहाय प्रभु के नाम में है। जो स्वर्ग और पृथिवी का कर्त्ता है॥

—:0:—

स्तोत्र १२५।

१। जो प्रभु पर भरोसा रखते हैं सो सिय्योन् पर्व्वत के समान हैं। जो टलता नहीं पर सदा बना रहता है॥

२। जैसे यरूशलेम् की चारों ओर पर्व्वत हैं। इसी रीति से प्रभु अपने निज लोगों की चारों ओर अब से ले सर्व्वदा लों रहेगा॥

३। क्योंकि दुष्टता का राजदण्ड धर्म्मियों के भाग पर पड़ा नहीं रहेगा। न हो कि धर्म्मी अपने हाथ कुटिलता की ओर बढ़ावें॥

४। हे प्रभु भलों को भलाई कर। और उन को जो अपने मन में सीधे हैं॥

५। परन्तु जो अपने कुपथों की ओर निकल जाते हैं उन को प्रभु दुष्टकर्म्मियों के संग ले जावेगा। पर यिस्राएल् को शान्ति मिले॥

संध्याकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र १२६।

१। जब प्रभु सिय्योन् के फिरनेहारों की ओर फिरा। तब हम स्वप्न देखनेहारों के समान हो गये॥

२। तब हमारा मुंह हंसी से और हमारी जीभ ऊंचे स्वर के गीत से भर गई। तब अन्यजातियों में लोग कहने लगे कि प्रभु ने उन के लिये महाकार्य्य किये हैं॥

३। हां प्रभु ने हमारे लिये महाकार्य्य किये हैं। इस से हम आनन्दित भये हैं॥

४। हे प्रभु हमारे बंधुओं को यथावस्थित कर। जैसे दक्षिण के नाले होते हैं॥

५। जो आंसू बहाते हुए बोते हैं। सो ऊंचे स्वर से गाते हुए लवेंगे॥

६। वह बीज की दौरी लिये हुए रोता हुआ चला जाता तो है। पर फिर वह पूलियां लिये हुए ऊंचे स्वर से गाता हुआ चला आवेगा॥

—:o:—

स्तोत्र १२७।

१। यदि प्रभु घर को न बनावे तो उस के बनानेहारों ने उस में जो परिश्रम किया है सो व्यर्थ है। यदि प्रभु नगर की रखवाली न करे तो रखवाल का जागना व्यर्थ है॥

२। तुम जो सबेरे उठते और अबेर करके बिश्राम करते और कष्ट की रोटी खाते हो तुम्हारे लिये यह सब व्यर्थ है। यूंही वह अपने प्रिय को नींद देता है॥

३। देखो लड़के प्रभु के दिये हुए भाग हैं। गर्भ का फल उस की ओर से प्रतिफल है॥

४। जैसे बीर के हाथ में बाण। तैसे ही तरुणाई के लड़के होते हैं॥

५। धन्य वह पुरुष जिस ने अपने तूण को उन से भरा है। वे लजावेंगे नहीं पर शत्रुओं के साथ फाटक पर बोलेंगे॥

—:0:—

स्तोत्र १२८।

१। धन्य है प्रत्येक जो प्रभु से डरता है। जो उस के मार्गों पर चलता है॥

२। तू अपने हाथों की कमाई निश्चय खावेगा। तू धन्य है और तेरा कुशल होगा॥

३। तेरी पत्नी तेरे घर के भीतर फलवन्त दाखलता के समान होगी। तेरे बालक तेरे भोजनमंच की चारों ओर जलपाई के पौधों के शदृश होवेंगे॥

४। देखो जो पुरुष प्रभु से डरता है। सो ऐसी ही आशीष् पावेगा॥

५। प्रभु तुझ को सिय्योन् में से आशीष् देवे। और तू जीवन भर यरूशलेम् का कुशल देखता रह॥

६। वरन अपने लड़कों के लड़के देख। यिस्राएल् को शान्ति मिले॥

—:0:—

स्तोत्र १२९ ।

१ । बहुत बार मेरे बचपन से ले लोगों ने मुझ को कष्ट दिया । ऐसा यिस्राएल् कहे ॥

२ । बहुत बार मेरे बचपन से ले उन्हों ने मुझ को कष्ट दिया । परन्तु मुझ पर प्रबल नहीं हुए ॥

३ । हलवाहों ने मेरी पीठ के ऊपर हल जोता । उन्हों ने अपनी रेघारियों को लम्बी किया ॥

४ । प्रभु धर्म्मी है । उस ने दुष्टों की रस्सियों को काट डाला ॥

५ । जितने सिय्योन् से बैर रखते हैं । सब लज्जित होवें और उलटे फेरे जावें ॥

६ । वे छत की घास की नाईं हों । जो बढ़ने से पहिले सूख जाती है ॥

७ । जिस से कोई घसियारा अपनी मुट्ठी नहीं भरता । और न पूलियों का बांधनेहारा अपनी अंकवार को ॥

८ । और न आने जानेहारे कहते हैं कि प्रभु की आशीष् तुम पर होवे । हम तुम्हें प्रभु के नाम से आशीर्वाद देते हैं ॥

—:0:—

स्तोत्र १३० ।

१ । हे प्रभु मैं ने गहिरावों में से । तुझ को पुकारा है ॥

२ । हे प्रभु मेरी वाणी सुन । तेरे कान मेरी बिनतियों के शब्द की ओर लगे रहें ॥

३ । हे याह् यदि तू अधर्म्म का लेखा लेवे । तो हे प्रभु कौन खड़ा रह सकेगा ॥

४ । परन्तु तेरे पास पापमोचन है । जिस्तें तेरा भय माना जावे ॥

५ । मैं ने प्रभु का आसरा देखा मेरे जीव ने आसरा देखा । और उस के वचन पर मैं ने आशा धरी है ॥

६। पहरुए जितनो बिहान की बाट जोहते हैं पहरुए जितनो बिहान की बाट जोहते हैं। उस से भी अधिक मेरा जीव प्रभु की बाट जोहता है॥

७। हे यिस्राएल् प्रभु पर आशा रख। क्योंकि प्रभु के पास दया है और उस के पास बहुतायत से उद्धार है॥

८। और वही यिस्राएल् को। उस के समस्त अधर्म्मों से छुड़ा लेवेगा॥

—:०:—

स्तोत्र १३१।

१। हे प्रभु मेरा मन अभिमानी नहीं न मेरी दृष्टि ऊंची है। और न मैं ने बड़ी बातों से और उन बातों से जो मेरे लिये अनूठी हैं काम रक्खा है॥

२। परन्तु मैं ने अपने जीव को शान्त और चुप कर दिया है। जैसे दूध छुड़ाया हुआ लड़का अपनी मा के साथ में होता है तैसे ही दूध छुड़ाये लड़के के समान मेरा जीव मेरे साथ रहता है॥

३। हे यिस्राएल् प्रभु पर आशा रख। अब से ले सर्व्वदा लों॥

अट्ठाईसवां दिन

प्रातःकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र १३२

१। हे प्रभु दावीद् के निमित्त। उस की सारी दुर्दशा को स्मरण कर॥

२। कि उस ने प्रभु से किरिया खाई। और याकोब् के शक्तिमान की मनौती मानी॥

३। कि मैं अपने घर के डेरे में प्रवेश न करूंगा। न अपने पलङ्ग के बिछौने पर चढ़ूंगा॥

४। मैं अपनी आंखों में नींद आने न दूंगा। न अपने पलकों में झपकी॥

५। जब लों मैं प्रभु के लिये एक स्थान न पाऊं। याकोब् के शक्तिमान के लिये वासस्थान॥

६। देख हम ने उस की चरचा येफ्राता में सुनी। हम ने उसे अरण्य के खेतों में पाया है॥

७। हम उस के वासस्थान में प्रवेश करेंगे। हम उसके चरणों को पीढ़ी के आगे दण्डवत करेंगे॥

८। हे प्रभु उठके अपने बिश्रामस्थान में आ। तू और तेरे सामर्थ्य की मंजूषा॥

९। तेरे याजक धर्म्म का वस्त्र पहिनें। और तेरे भक्त ऊंचे स्वर से गावें॥

१०। अपने दास दावीद् के निमित। अपने अभिषिक्त का मुंह न फेर॥

११। प्रभु ने दावीद् से सच्चाई के साथ किरिया खाई और वह उस से न फिरेगा। कि तेरी देह के फल में से मैं तेरे सिंहासन पर बिठाऊंगा॥

१२। यदि तेरे पुत्र मेरी वाचा को और मेरी साक्षियों को जो मैं उन्हें सिखाऊंगा पालें। तो उन के पुत्र भी युगानयुग तेरे सिंहासन पर बैठते चले जावेंगे॥

१३। क्योंकि प्रभु ने सिय्योन् को चुन लिया। उस ने उस को अपने निवास के लिये चाहा है॥

१४। यह युगानयुग के लिये मेरा विश्रामस्थान है। यहीं मैं रहूंगा क्योंकि मैं ने उस को चाहा है॥

१५ । मैं उस के भोजन पर बड़ी आशीष दूंगा । उस के दरिद्रों को मैं रोटी से तृप्त करूंगा ॥

१६ । और उस के याजकों को मैं त्राण के वस्त्र पहिनाऊंगा । और उस के भक्त अति ऊंचे स्वर से गावेंगे ॥

१७ । वहां मैं दावीद् के लिये एक सींग जमाऊंगा । मैं ने अपने अभिषिक्त के लिये एक दीपक सिद्ध कर रक्खा है ॥

१८ । उस के शत्रुओं को मैं लज्जा का वस्त्र पहिनाऊंगा । पर उस पर उस का मुकुट खिला रहेगा ॥

—:o:—

स्तोत्र १३३ ।

१ । देखो क्या ही अच्छी और क्या ही मनोहर बात है । कि भाई आपस में एकमत रहें ॥

२ । यह उस उत्तम तेल की नाईं है जो सिर पर ढाला गया और दाढ़ी लों अर्थात् अहरोन् की दाढ़ी लों बह गया । और उस के वस्त्र के छोर पर बह गया ॥

३ । वह हेर्म्मोन् की ओस के समान है जो सिय्योन् के पर्व्वतों पर गिरती है । क्योंकि वहां प्रभु ने अपने श्रीमुख से आशीर्वाद दिया अर्थात् अनन्त जीवन का आशीर्वाद ॥

—:o:—

स्तोत्र १३४ ।

१ । देखो हे प्रभु के सब दासो प्रभु को धन्य कहो । तुम जो रात्रि के समय प्रभु के घर में खड़े रहते हो ॥

२ । अपने हाथ पवित्रता में उठाओ । और प्रभु को धन्य कहो ॥

३ । प्रभु सिय्योन् में से तुझे आशीष् देवे । जो स्वर्ग और पृथिवी का कर्त्ता है ॥

—:o:—

स्तोत्र १३५ ।

१ । हल्ललूयाह् प्रभु के नाम की स्तुति करो । हे प्रभु के दासो स्तुति करो ॥

२ । तुम जो प्रभु के घर में खड़े रहते हो । हमारे ईश्वर के घर के आंगनों में ॥

३ । प्रभु की स्तुति करो क्योंकि प्रभु भला है । उस के नाम का स्तुतिगान करो क्योंकि वह मनोहर है ॥

४ । क्योंकि याह् ने अपने लिये याकोब् को चुन लिया है । यिस्राएल् को अपना निज धन होने के लिये ॥

५ । क्योंकि मैं जान गया कि प्रभु महान् है । और हमारा प्रभु समस्त देवों से बड़ा ॥

६ । जो कुछ प्रभु ने चाहा सो उस ने किया है । स्वर्ग में और पृथिवी पर और समुद्रों में और सब गहिरावों में ॥

७ । वह कुहासों को पृथिवी की सीमा पर से उठाता और वृष्टि के लिये बिजलियां बनाता है । वह पवन को अपने भण्डारों में से निकालता है ॥

८ । उस ने मिसर के पहिलौठों को मारा । क्या मनुष्य क्या पशु के ॥

९ । उस ने चिन्ह और अचंभे तेरे बीच हे मिसर भेजे । परो और उस के सारे दासों पर ॥

१० । उस ने बहुत सी जातियां मारीं । और महाबली राजाओं को घात किया ॥

११ । एमोरियों के राजा सीहोन् को और बाशान् के राजा ओग् को । और कनान के सारे राज्यों को ॥

१२ । और उन के देश को भाग में दे डाला । अपने निज लोग यिस्राएल् के भाग में ॥

१३ । हे प्रभु तेरा नाम सदा लों है । हे प्रभु तेरा स्मारक पीढ़ी से पीढ़ी लों बना रहता है ॥

१४ । क्योंकि प्रभु अपने निज लोगों का न्याय करेगा । और अपने दासों के विषय में पछतावेगा ॥

१५ । अन्यजातियों की मूर्त्तियां सोना और रूपा ही हैं । मनुष्यों के हाथों के काम ॥

१६ । उन के मुंह तो हैं पर वे बोलती नहीं । उन की आंखें तो हैं पर वे देखती नहीं ॥

१७ । उन के कान तो हैं पर वे सुनती नहीं । वरन उन के मुंह में कुछ भी सांस नहीं है ॥

१८ । जैसी वे हैं तैसे ही उन के बनानेहारे भी हैं । और जितने उन पर भरोसा रखते हैं ॥

१९ । हे यिस्राएल् के घराने प्रभु को धन्य कहो । हे अहरोन के घराने प्रभु को धन्य कहो ॥

२० । हे लेवी के घराने प्रभु को धन्य कहो । हे प्रभु के डरवैयो प्रभु को धन्य कहो ॥

२१ । सिय्योन् में से प्रभु धन्य होवे । जो यरूशलेम् में बास करता है हल्लूयाह् ॥

संध्याकाल की प्रार्थना ।

स्तोत्र १३६ ।

१ । प्रभु का धन्यवाद करो क्योंकि वह भला है । क्योंकि उस की दया सनातन है ॥

२ । देवों के देव का धन्यवाद करो । क्योंकि उस की दया सना-तन है ॥

३। प्रभुओं के प्रभु का धन्यवाद करो। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

४। उस का जो निष्केवल महा आश्चर्य्यकर्म्म करता है। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

५। उस का जिस ने स्वर्ग को बुद्धि से बनाया। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

६। उस का जिस ने पृथिवी को जल के ऊपर फैला दिया। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

७। उस का जिस ने बड़ी बड़ी ज्योति बनाईं। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

८। सूर्य्य को जिस्तें वह दिन को राज्य करे। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

९। चन्द्रमा और तारागण को जिस्तें वे रात को राज्य करें। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

१०। उस का जिस ने मिसरियों को उन के पहिलौठों समेत मारा। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

११। और यिस्राएल् को उन के बीच से निकाला। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

१२। बलवन्त हाथ से और बढ़ाई हुई भुजा से। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

१३। उस का जिस ने सूफ् समुद्र को फाड़के दो खण्ड कर दिया। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

१४। और यिस्राएल् को उस के बीच से पार कर दिया। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

१५। और फरो और उस की सेना को सूफ् समुद्र में झटक दिया। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

१६। उस का जिस ने बन में अपने निज लोगों की अगुवाई किई। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

१७। उस का जिस ने बड़े बड़े राजा मारे। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

१८। और प्रतापी राजाओं को घात किया। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

१९। एमोरियों के राजा सीहोन् को। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

२०। और बाशान् के राजा ओग् को। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

२१। और उन के देश को भाग में दे डाला। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

२२। अपने दास यिस्राएल् के भाग में। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

२३। जिस ने हमारी दुर्दशा में हम को स्मरण किया। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

२४। और हम को हमारे रिपुओं से उबारा। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

२५। जो समस्त शरीरधारियों को रोटी देता है। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

२६। स्वर्ग के परमेश्वर का धन्यवाद करो। क्योंकि उस की दया सनातन है॥

—:०:—

स्तोत्र १३७।

१। बाबेल् की नहरों के तीर पर वहां हम बैठ गये। और जब हम ने सिय्योन् को स्मरण किया तब हम रोने लगे॥

२। उन मजनू वृक्षों पर जो उस के बीच में थे। हम ने अपनी बीणाओं को टांग दिया॥

३। क्योंकि जो हमें बंधुआ करके ले गये थे उन्हों ने वहां हम से गीत के पद गवाने चाहा और जो हम पर अन्धेर करते थे उन्हों ने हम से आनन्द कराने चाहा। और कहा सिय्योन् के गीतों में से हमारे लिये एक गीत गाओ॥

४। और हम प्रभु के गीत को। बिरानों की भूमि पर क्योंकर गावें॥

५। हे यरूशलेम् यदि मैं तुझ को भूल जाऊं। तो मेरा दहिना हाथ अपना काम भूल जावे॥

६। यदि मैं तुझे स्मरण न करूं यदि मैं यरूशलेम् को अपने सारे आनन्द से श्रेष्ठ न जानूं। तो मेरी जीभ मेरे तालू से सट जावे॥

७। हे प्रभु एदोमवंशियों के दण्ड के लिये यरूशलेम् के दिन को स्मरण कर। कि वे कहते थे ढाओ ढाओ उस की नेव लों उसे ढा दो॥

८। हे बाबेल् की पुत्री तू जो उजड़नेहारी है। धन्य वह होगा जो तुझ से वह व्यवहार करेगा जो तू ने हम से किया है॥

९। धन्य वह होगा जो तेरे बच्चों को पकड़के। ऊंची चटान् पर पटक देवेगा॥

—:o:—

स्तोत्र १३८

१। मैं सारे अन्तःकरण से तेरा धन्यवाद करूंगा। मैं देवों के सन्मुख तेरा स्तुतिगान करूंगा॥

२। मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत करूंगा। और तेरी दया और सच्चाई के हेतु तेरे नाम का धन्यवाद करूंगा। क्योंकि तू ने अपने वाक्य को अपने सारे नाम से अधिक बड़ा किया है॥

३। जिस दिन मैं ने पुकारा तू ने मुझे उत्तर दिया और मेरे जीव में बल देके मुझे ढाढ़स दिई ॥

४। हे प्रभु पृथिवी के समस्त राजा तेरा धन्यवाद करेंगे। क्योंकि उन्हों ने तेरे मुख के वचन सुने हैं ॥

५। और वे प्रभु के मार्गों में गावेंगे। क्योंकि प्रभु की महिमा बड़ी है ॥

६। क्योंकि यद्यपि प्रभु उन्नत है तथापि वह नम्र पर दृष्टि करता है। पर अहंकारी को वह दूर ही से जानता है ॥

७। यद्यपि मैं कष्ट के बीच में चलूं तौभी तू मुझे जिलावेगा। तू मेरे शत्रुओं के कोप पर अपना हाथ बढ़ावेगा और तेरा दहिना हाथ मुझे बचावेगा ॥

८। प्रभु मेरे लिये सब कुछ पूरा करेगा। हे प्रभु तेरी दया सनातन है अपने हाथों के काम न तज ॥

उन्तीसवां दिन।

प्रातःकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र १३९।

१। हे प्रभु तू ने मेरे अन्तर की बात को खोजा। और सब कुछ जान गया है ॥

२। तू मेरा उठना और बैठना जानता। तू मेरे विचार को दूर से समझता है ॥

३। मेरा चलना और लेटना तू ने भली भांति जान लिया। और मेरे सारे मार्गों को पहिचानता है ॥

४। क्योंकि मेरी जीभ पर कोई ऐसी बात नहीं। जिसे तू हे प्रभु सर्वथा नहीं जानता ॥

५। आगे और पीछे तू मुझ को घेर रखता है। और अपना हाथ मुझ पर रक्खे रहता है॥

६। यह ज्ञान मेरे लिये अति अनूठा है। वह ऊंचा है मैं उस लों पहुंच नहीं सकता॥

७। तेरे आत्मा से मैं कहां जाऊं। और तेरे साम्हने से मैं कहां भागूं॥

८। यदि मैं स्वर्ग पर चढूं तो वहां तू है। और यदि मैं पाताल में अपना बिछौना बिछाऊं तो क्या देखूंगा कि तू वहां भी है॥

९। यदि मैं भोर के पंख लेके। समुद्र के अन्त में जा बसूं॥

१०। तो वहां भी तेरा हाथ मेरी अगुवाई करेगा। और तेरा दहिना हाथ मुझे पकड़े रहेगा॥

११। और यदि मैं कहूं पर अन्धकार तो मुझे छिपावेगा। और मेरी चारों ओर का उजियाला रात हो जावेगा॥

१२। तौभी अन्धकार तेरे लिये अंधियारा न होगा पर रात दिन के तुल्य प्रकाश देगी। जैसा उजियाला है तैसा ही अंधियारा भी होगा॥

१३। क्योंकि तू मेरे अन्त:करण का स्वामी है। तू ने मेरी मा के गर्भ में मुझे ढांप रक्खा॥

१४। मैं तेरा धन्यवाद करूंगा क्योंकि मैं भयानक और आश्चर्य्य रीति से रचा गया। तेरे काम आश्चर्य्य के हैं और मेरा जीव इसे भली भांति जानता है॥

१५। मेरा तत्त्व तुझ से छिपा न था जब मैं गुप्त में बनाया जाता। और पृथिवी के नीचे स्थानों में बिना जाता था॥

१६। तेरे नेत्र मेरे पिण्ड को देखते थे और तेरी पुस्तक में सब लिखे रहे। अर्थात् मेरे दिन जो ठहराये हुए थे जब उन में से कोई अब लों न था॥

१७। और मुझ को हे परमेश्वर तेरे विचार क्या ही प्रिय हैं। उन की संख्या क्या ही बड़ी है ॥

१८। यदि मैं उन को गिनने लगूं तो वे बालू से भी अधिक हैं। जब मैं जाग उठता हूं तब भी मैं तेरे संग हूं ॥

१९। हे ईश्वर क्या तू दुष्ट को घात न करेगा। रे हत्यारो मुझ से दूर होओ ॥

२०। क्योंकि वे कपट से तेरी चर्चा करते हैं। तेरे शत्रुओं ने तेरा नाम झूठमूठ लिया ॥

२१। हे प्रभु क्या मैं तेरे बैरियों से बैर न रक्खूं। क्या मैं तेरे विरोधियों से उदास न होऊं ॥

२२। मैं उन से पूर्ण बैर रखता हूं। मैं उन को शत्रु गिनता हूं ॥

२३। हे परमेश्वर मेरे अन्तर की बात खोज और मेरे हृदय को जान। मुझे जांच और मेरी चिन्ताओं को जान ॥

२४। और देख कि मुझ में कोई शोककारक मार्ग तो नहीं। और सनातन मार्ग में मेरी अगुवाई कर ॥

—:०:—

स्तोत्र १४०।

१। हे प्रभु मुझ को बुरे मनुष्य से बचा ले। अत्याचारी पुरुष से मेरी रक्षा कर ॥

२। जिन्हों ने मन में बुरी युक्तियां निकाली हैं। प्रतिदिन वे लड़ाइयां उत्पन्न करते हैं ॥

३। उन्हों ने अपनी जीभ को सर्प की नाईं तीक्ष्ण किया। नाग का विष उन के होंठों में है ॥

४। हे प्रभु मुझे दुष्ट के हाथों से बचा अत्याचारी पुरुष से मेरी रक्षा कर। जिन्हों ने मेरे पैरों को खसकाने की युक्ति निकाली है ॥

५। घमण्डियों ने मेरे लिये फंदा और रस्सियां गुप्त में फैलाईं और डगर के छोर पर जाल बिछाया है। उन्हों ने मेरे लिये फंदे लगाये हैं॥

६। मैं ने प्रभु से कहा तू मेरा परमेश्वर है। हे प्रभु मेरी विनतियों की वाणी की ओर कान लगा॥

७। हे प्रभु भगवान् तू मेरे त्राण का बल है। तू ने युद्ध के दिन में मेरे सिर की रक्षा किई॥

८। हे प्रभु दुष्ट की कामना पूरी न कर। उस की युक्ति को सफल न कर नहीं तो वे घमण्ड करेंगे॥

९। मेरे घेरनेहारों का सिर जो है। उस को उन्हीं के होंठों का उपद्रव ढांपे॥

१०। उन पर अंगारे डाले जावेंगे। वे आग में गिरा दिये जावें और ऐसे गड़हों में जिन में से वे कभी निकल न सकेंगे॥

११। बकवादी पृथिवी पर स्थिर न होगा। अत्याचारी पुरुष जो है उस को बुराई अहेर करके गिरावेगी॥

१२। मैं जान गया कि प्रभु दुःखी का झगड़ा। और दरिद्रों का न्याय चुकावेगा॥

१३। निश्चय धर्म्मी तेरे नाम का धन्यवाद करेंगे। सीधे लोग तेरे सन्मुख बसेंगे॥

—:0:—

स्तोत्र १४१

१। हे प्रभु मैं ने तुझे पुकारा है मेरे लिये शीघ्र कर। जब मैं तुझ को पुकारूं तब मेरी वाणी की ओर कान लगा॥

२। मेरी प्रार्थना तेरे साम्हने धूप की नाईं अर्पण किई जावे। मेरे हाथों का उठाना संध्याकाल की भेंट के समान॥

३। हे प्रभु मेरे मुंह पर पहरा बैठा। मेरे होंठों के द्वार पर पहरा दे ॥

४। मेरा मन किसी बुरी बात की ओर न फिरे अर्थात् मैं दुष्ट-कर्म्मी पुरुषों के संग दुष्टता से दुष्कर्म्म न करूं। और न मैं उन के सुस्वादित भोजन में से कुछ खाऊं ॥

५। धर्म्मी मुझ को मारे तो दया ही होगी और मुझे ताड़ना दे तो मानों सिर का तेल होगा। मेरा सिर उस को अग्राह्य न करे क्योंकि बुरे दुष्ट बुराइयां करते रहें तौभी मैं प्रार्थना करता रहूंगा॥

६। उन के न्यायी ऊंची चटान पर से गिराये गये। और वे मेरे वाक्य सुनके मान लेंगे कि वे मधुर हैं ॥

७। जैसे कोई भूमि को चीरे और फाड़े। तैसे ही हमारी हड्डियां पाताल के मुंह पर छितराई गईं ॥

८। परन्तु हे प्रभु भगवान् मेरे नेत्र तेरी ओर लगे हैं। मैं तेरा शरणागत हूं तू मेरे प्राण को न निकाल ले ॥

९। जो फन्दा उन्हों ने मेरे लिये लगाया है उस से मेरी रक्षा कर। और दुष्टकर्म्मियों के जालों से ॥

१०। दुष्ट अपने अपने जाल में फंसें। और तब लों मैं निकल जाऊं ॥

संध्याकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र १४२।

१। मैं अपनी वाणी से प्रभु की ओर चिल्लाता हूं। अपनी वाणी से प्रभु से विनय करता हूं ॥

२। मैं अपना ध्यान उस के साम्हने उंडेलता हूं। मैं अपना कष्ट उस के साम्हने वर्णन करता हूं ॥

३। जब मेरा आत्मा मेरे ऊपर मूर्छित पड़ा रहता है तब भी तू मेरी डगर को जानता है। जिस पथ से मैं चलनेहारा हूं उसी में उन्हों ने मेरे लिये फन्दा छिपाके लगाया है॥

४। दहिनी ओर दृष्टि करके देख कोई मुझ को चीन्हता नहीं। शरण मुझ से जाती रही मेरे जीव का कोई पूछनेहारा नहीं रहा॥

५। हे प्रभु मैं तेरी ही ओर चिल्लाया मैं ने कहा तू मेरा शरणस्थान है। जीवतों के लोक में तू ही मेरा भाग है॥

६। मेरे चिल्लाने की ओर कान धर क्योंकि मैं अति दुर्बल हो गया हूं। मुझे मेरे सतानेहारों से बचा क्योंकि वे मुझ से अधिक बलवन्त हैं॥

७। मेरे जीव को बन्दीगृह से निकाल जिस्तें मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूं। धर्म्मी मेरे निमित्त मुकुट प्राप्त करेंगे क्योंकि तू मेरा उपकार करेगा॥

—:0:—

स्तोत्र १४३।

१। हे प्रभु मेरी प्रार्थना सुन मेरी बिनतियों की ओर कान लगा। अपनी विश्वस्तता और अपने धर्म्म से मुझे उत्तर दे॥

२। और अपने दास को न्यायस्थान में न ले जा। क्योंकि कोई जीवता प्राणी तेरे साम्हने धर्म्मी न ठहरेगा॥

३। क्योंकि शत्रु ने मेरे जीव को सताया और मेरे जीवन को कुचलके मिट्टी में मिलाया। उस ने मुझ को अंधेरे स्थानों में उन की नाईं बसाया जो ढेर दिन हुए कि मर मिटे हैं॥

४। और मेरा आत्मा मेरे अन्तर में मूर्छित पड़ा है। मेरा हृदय मेरे भीतर विकल है॥

५। मैं ने प्राचीन काल के दिनों को स्मरण किया और तेरे सब

अद्भुत कार्य्यों पर ध्यान किया। मैं ने तेरी हस्तक्रिया पर ध्यान किया॥

६। मैं ने तेरी ओर अपने हाथ फैलाये। मेरा जीव प्यासी भूमि की नाईं तुझे तक रहा है॥

७। हे प्रभु शीघ्र करके मुझे उत्तर दे मेरा आत्मा मूर्छित हो चला। अपना मुख मुझ से न छिपा न हो कि मैं गड़हे में उतरनेहारों के समान हो जाऊं॥

८। प्रातःकाल को अपनी दया की बात मुझ को सुना क्योंकि मैं ने तुझ पर भरोसा रक्खा है। जिस मार्ग पर मुझे चलना है सो मुझ को विदित कर क्योंकि मैं ने तेरी ओर अपना जीव उठाया है॥

९। हे प्रभु मुझ को मेरे शत्रुओं से बचा ले। मैं तेरी शरण में आ छिपता हूं॥

१०। तू अपनी इच्छा पूरी करनी मुझ को सिखा क्योंकि तू मेरा ईश्वर है। तेरा दयामय आत्मा समथर भूमि पर मेरी अगुवाई करे॥

११। हे प्रभु अपने नाम के निमित्त तू मुझ को जिलावेगा। अपने धर्म्म के हेतु तू मेरे जीव को कष्ट से उबारेगा॥

१२। और अपनी दया से तू मेरे शत्रुओं को ध्वंस करेगा और मेरे जीव के सब सतानेहारों को नाश करेगा। क्योंकि मैं तेरा दास हूं॥

तीसवां दिन

प्रातःकाल की प्रार्थना

स्तोत्र १४४ ।

१। धन्य होवे प्रभु मेरी चटान । जो मेरे हाथों को युद्ध करना और मेरी अंगुलियों को लड़ाई करना सिखाता है ॥

२। मेरा दयालु और मेरा दुर्ग मेरा ऊंचा गढ़ और मेरा छुड़ाने हारा। मेरी फरी और मेरा शरणस्थान जो मेरी प्रजा को मेरे वश में करता है ॥

३। हे प्रभु मनुष्य क्या है कि तू उस की सुधि लेवे। मनुष्य का पुत्र क्या है कि तू उस को गिनती में ले आवे ॥

४। मनुष्य तो व्यर्थता के सदृश है। उस के दिन नाशमान छाया के समान हैं ॥

५। हे प्रभु अपना स्वर्ग झुकाके उतर आ। पहाड़ों को छू तो उन से धूआं उठेगा ॥

६ बिजली कड़काके उन्हें छिन्न भिन्न कर। अपने बाण चलाके उन्हें घबरा दे ॥

७। अपने हाथ ऊपर से बढ़ाके मुझे छुड़ा और महासागर से उबार। अर्थात् परदेशी के वंश के हाथ से ॥

८। जिन का मुंह व्यर्थ बात बोलता है। और जिन का दहिना हाथ झूठ का दहिना हाथ है ॥

९। हे ईश्वर मैं तेरे लिये नया गीत गाऊंगा। मैं कानून का बाजा बजाके तेरा स्तुतिगान करूंगा ॥

१०। तू जो राजाओं को त्राण देता है। और अपने दास दाविद् को नाशक खड्ग से बचाता है ॥

११। मुझे उबार और परदेशी के वंश के हाथ से बचा ले। जिन का मुंह व्यर्थ बात बोलता है और जिन का दाहिना हाथ झूठ का दाहिना हाथ है॥

१२। जिस्तें हमारे पुत्र पौधों की नाईं अपनी तरुणाई में बढ़ जावें। और हमारी पुत्रियां उन पत्थरों के समान हों जो कोने में लगे हैं और मन्दिर की नाईं खुदे हुए हैं॥

१३। हमारे खत्ते भरे रहें और नाना भांति का अन्न उन से निकला करे। हमारी भेड़ें हमारे चौगानों पर सहस्रों लाखों जनें॥

१४। हमारे बैल लदे हुए रहें। न कोई उपद्रव न विदेशी किया जाना न हमारी सड़कों में कुछ चिल्लाहट होवे॥

१५। धन्य है वह लोकगण जिस की ऐसी ही दशा है। धन्य है वह लोकगण जिस का ईश्वर प्रभु है॥

—:०:—

स्तोत्र १४५।

१। हे मेरे ईश्वर तू जो राजा है मैं तुझ को सराहूंगा। और युगानयुग तेरे नाम को धन्य कहता रहूंगा॥

२। प्रतिदिन मैं तुझ को धन्य कहूंगा। और युगानयुग तेरे नाम की स्तुति करता रहूंगा॥

३। प्रभु महान् और अति स्तुत्य है। और उस की बड़ाई अनन्त है॥

४। एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी से तेरे कामों की प्रशंसा करेगी। और तेरे पराक्रम का वर्णन करेगी॥

५। तेरे विभव की महिमा के गौरव पर। और तेरे नाना प्रकार के आश्चर्य्यकर्म्मों पर मैं ध्यान करूंगा॥

६। और लोग तेरे भयानक कर्म्मों के सामर्थ्य की चर्चा करेंगे। और मैं तेरे बड़े कामों का वर्णन करूंगा॥

७। लोग तेरी बहुत प्रकार की भलाई को उच्चारेंगे। और तेरे धर्म्म के विषय ऊंचे स्वर से गावेंगे॥

८। प्रभु करुणामय और वत्सल है। क्रोध में धीमा और बड़ा दयालु॥

९। प्रभु विश्व के लिये भला है। और उस की मया उस की सब कृतियों पर है॥

१०। हे प्रभु तेरी सब कृतियां तेरा धन्यवाद करेंगी। और तेरे भक्त तुझे धन्य कहेंगे॥

११। वे तेरे राज्य की महिमा की चर्चा करेंगे। और तेरे पराक्रम के विषय बोलेंगे॥

१२। जिस्तें मनुष्यवंशियों को तेरा पराक्रम। और तेरे राज्य के गौरव की महिमा विदित करें॥

१३। तेरा राज्य युगानयुग का राज्य है। और तेरी प्रभुता समस्त पीढ़ियों लों बनी रहेगी॥

१४। प्रभु सब गिरनेहारों को सम्भालता। और सब झुके हुओं को सीधा करता है॥

१५। सब की आंखें तेरी बाट जोहती हैं। और तू समय पर उन का आहार उन को देता है॥

१६। तू अपनी मुट्ठी खोलता है। और सब प्राणियों को उन की इच्छा के अनुसार तृप्त करता है॥

१७। प्रभु अपने सारे मार्गों में धर्म्मी। और अपने सब कामों में वत्सल है॥

१८। प्रभु उन सब के निकट रहता है जो उस को पुकारते हैं। उन सब के जो सच्चाई से उसे पुकारते हैं॥

१९। वह अपने डरवैयों की इच्छा को पूरी करेगा। और उन की दोहाई सुनके उन्हें बचावेगा॥

२० । प्रभु अपने सब प्रेमियों की रक्षा करता है । पर सब दुष्टों को ध्वंस करेगा ॥

२१ । मेरा मुंह प्रभु की स्तुति उच्चारेगा । और समस्त प्राणी उस के पवित्र नाम को युगानयुग धन्य कहते रहें ॥

—:o:—

स्तोत्र १४६

१ । हल्लूयाह् । हे मेरे जीव प्रभु के नाम की स्तुति कर ।

२ । मैं अपने जीवन भर प्रभु की स्तुति करूंगा । मैं जब लों मेरी अस्ति रहेगी तब लों अपने ईश्वर का स्तुतिगान करता रहूंगा ॥

३ । तुम अधिपतियों पर भरोसा मत रक्खो । और न किसी मनुष्य बंशी पर जिस में त्राणशक्ति नहीं ॥

४ । उस का प्राण निकलता है वह अपनी मिट्टी में मिल जाता है । उसी दिन उस की युक्तियां नष्ट भईं ॥

५ । धन्य वह है जिस का सहायक याकोब् का परमेश्वर है जिस की आशा प्रभु अपने ईश्वर पर है ॥

६ । जो स्वर्ग और पृथिवी और समुद्र और जो कुछ उन में है सब का कर्त्ता है । जो सच्चाई को सदा लों स्थिर रखता है ॥

७ । जो अन्धेर उठानेहारों का न्याय करता और भूखों को रोटी देता है । प्रभु बंधुओं को छुड़ाता है ॥

८ । प्रभु अन्धों के नेत्र खोलता प्रभु झुके हुओं को सीधा करता । प्रभु धर्म्मियों को प्यार करता है ॥

९ । प्रभु परदेशियों की रक्षा करता है वह पितृहीन बालक और विधवा को सम्भालेगा । पर दुष्टों के मार्ग को वह टेढ़ा करेगा ॥

१० । प्रभु सदा लों राज्य करता रहेगा । अर्थात तेरा ईश्वर हे सिय्योन् पीढ़ी से पीढ़ी लों हल्लूयाह् ॥

संध्याकाल की प्रार्थना।

स्तोत्र १४७।

१। हल्लूयाह् क्योंकि हमारे ईश्वर का स्तुतिगान करना भला है। क्योंकि वह मनोहर है स्तुति करनी फबती है॥

२। प्रभु यरूशलेम् को बना रहा है। वह यिस्राएल् के हांके हुओं को एकट्ठा करता है॥

३। वही है जो चूर्ण मनवालों को चंगा करता। और उन के शोक के घावों पर पट्टी बांधता है॥

४। वह तारागण की गिनती करता। और उन सब के नाम रखता है॥

५। हमारा प्रभु महान् है और बड़ा सामर्थी। उस की बुद्धि अपार है॥

६। प्रभु सौम्यस्वभावों को सम्भालता। और दुष्टों को भूमि लों गिराता है॥

७। धन्यवाद करते हुए प्रभु के लिये गाओ। हमारे ईश्वर का स्तुतिगान वीणा बजाके करो॥

८। जो आकाश को मेघों से ढांपता और पृथिवी के लिये वृष्टि सिद्ध करता। और पहाड़ों पर घास उगाता है॥

९। वह पशु को उस का आहार देता है। वरन कौवे के बच्चों को भी जब वे पुकारते हैं॥

१०। वह घोड़े के बल से प्रसन्न नहीं होता। और न उस को पुरुष की टांगों का प्रयोजन है॥

११। प्रभु अपने डरवैयों से प्रसन्न रहता है। उन से जो उस की दया की बाट जोहते हैं॥

१२। हे यरूशलेम् प्रभु की प्रशंसा कर। हे सिय्योन् अपने ईश्वर की स्तुति कर॥

१३। क्योंकि उस ने तेरे फाटकों के बेण्डों को दृढ़ किया। उस ने तेरे पुत्रों को तुझ में आशीष् दिई है॥

१४। वही है जो तेरी सीमा में मेल देता। वह तुझे उत्तम से उत्तम गोहूं से तृप्त करता है॥

१५। वही है जो अपना वाक्य पृथिवी पर भेजता है। उस का वचन अति शीघ्र दौड़ता है॥

१६। वही है जो हिम को ऊन की नाईं देता है। वह पाले को राख के समान छितराता है॥

१७। वह अपने तुषार को टुकड़े टुकड़े गिराता है। उस की ठण्ड के साम्हने कौन खड़ा रह सकता है॥

१८। वह अपना वचन भेजके उन्हें गलाता है। वह अपना वायु चलाता तब जल बहने लगता है॥

१९। वह अपना वचन याकोब् को बताता। यिस्राएल को अपने विधि और न्याय॥

२०। उस ने किसी जाति से ऐसा व्यवहार नहीं किया। और उस के न्यायों को तो वे जानते ही नहीं हल्लूयाह॥

—:o:—

स्तोत्र १४८।

१। हल्लूयाह् स्वर्ग में से प्रभु की स्तुति करो। ऊंचे स्थानों में उस की स्तुति करो॥

२। हे उस के सब दूतो उस की स्तुति करो। हे उस की सारी सेना उस की स्तुति करो॥

३। हे सूर्य्य और चन्द्रमा उस की स्तुति करो। हे सब ज्योतिमय तारो उस की स्तुति करो॥

४। हे स्वर्गों के स्वर्ग उस की स्तुति कर। और तू भी हे आकाश पर के जल॥

५। वे प्रभु के नाम की स्तुति करें। क्योंकि उस ने आज्ञा दिई तो वे सृष्ट भये॥

६। और उस ने उन को युगानयुग के लिये स्थिर किया। उस ने उन के लिये एक अटल विधि ठहराई॥

७। पृथिवी पर से प्रभु की स्तुति करो। हे मगरमच्छो और सब गहिरावो॥

८। अग्नि और बिनौरी हिम और कुहासे। प्रचण्ड बयार तू जो उस के वचन को पूरा करती है॥

९। पहाड़ो और सब पहाड़ियो। फलतरुओ और सब देवदारुओ॥

१०। बनपशुओ और सब ग्रामपशुओ। रेंगनेहारो और नभचर पक्षियो॥

११। भूपतियो और सब प्रजाओ। अधिपतियो और पृथिवी के समस्त न्यायियो॥

१२। तरुणो और कुमारियो भी। बूढ़ो और बालको।

१३। वे प्रभु के नाम की स्तुति करें क्योंकि केवल उसी का नाम महान् है। उस का विभव पृथिवी और स्वर्ग के ऊपर है॥

१४। और उस ने अपने निज लोगों के लिये एक सींग उन्नत किया है जो उस के सब भक्तों की स्तुति का कारण होगा अर्थात् यिस्रा-येलवंशियों की जो उस का समीपवर्त्ती लोकगण है हल्लूयाह्॥

—:o:—

स्तोत्र १४६।

१। हल्लूयाह् प्रभु के लिये नया गीत गाओ। उस की स्तुति भक्तों की मण्डली में होवे॥

२। यिस्राएल् अपने कर्त्ता में आनन्दित होवे। सिय्योन् के पुत्र अपने राजा मे आह्लादित होवें॥

३। वे नाचते हुये उस के नाम की स्तुति करें। डफ और वीणा बजाते हुए वे उस का स्तुतिगान करें॥

४। क्योंकि प्रभु अपने निज लोगों से प्रसन्न रहता है। वह सौम्य-स्वभावों को त्राण से सुशोभित करेगा॥

५। भक्त महिमा में प्रमुदित होवें। वे अपने बिछौनों पर पड़े पड़े ऊंचे स्वर से गावें॥

६। परमेश्वर का सराहना उन के कण्ठ में। और दुधारी तलवार उन के हाथ में होवे॥

७। जिस्तें वे जातियों से पलटा लेवें। और लोकगणों को दण्ड देवें॥

८। और उन के राजाओं को सिकड़ियों से बांधें। और उन के प्रतिष्ठित जनों को लोहे की बेड़ियों से जकड़ें॥

९। जिसतें वे उन को लिखे हुए न्याय के अनुसार दण्ड देवें। यह उस के सब भक्तों का विभव है हल्लूयाह्॥

—:o:—

स्तोत्र १५०।

१। हल्लूयाह् परमेश्वर की स्तुति उस के पवित्रस्थान में करो। उस के सामर्थ्य के अन्तरिक्ष में उस की स्तुति करो॥

२। उस के पराक्रम के कर्म्मों के हेतु उस की स्तुति करो। उस की अत्यन्त बड़ाई के अनुसार उस की स्तुति करो॥

३। नरसिंगा फूंकते हुए उस की स्तुति करो। कानून और वीणा बजाते हुए उस की स्तुति करो॥

४। डफ बजाते और नाचते हुए उस की स्तुति करो। तार और फूंक के बाजे बजाते हुए उस की स्तुति करो॥

५। ऊंचे शब्दवाली झांझों से उस की स्तुति करो। आनन्द के महाशब्दवाली झांझों से उस की स्तुति करो॥

६। जितने श्वासधारी हैं सब प्रभु की स्तुति करें। हल्लूयाह्॥

सम्पूर्ण।

बिशपों के संस्कार

और प्रीष्टों के स्थापन और डीकनों के बनाने की पद्धति और विधि

अंगलखण्ड की एक्लेसिया की रीति के अनुसार

भूमिका

जितने लोग पवित्र शास्त्र और प्राचीन ग्रन्थों को यत्न से पढ़ते हैं उनपर प्रगट है कि प्रेरितों के समय से लेके ख्रीष्ट की एक्लेसिया में सेवकों के ये पद चले आए हैं अर्थात् बिशप प्रीष्ट और डीकन। और इन पदों का सदा ऐसा सम्मान होता था कि जब लों कोई बुलाया और परखा और जांचा नहीं जाता था और जब लों यह प्रगट नहीं होता था कि उस में वे गुण हैं जो उन पदों के लिये आवश्यक हैं और जब लों कोई यथार्थ अधिकारी मण्डली की प्रार्थना और हाथ रखने के द्वारा उन को योग्य समझके उस पर स्थापित नहीं करता था तब लों वह उन में से किसी पद का काम करने का हियाव करने न पाता था। और इस हेतु जिस्तें ये पद अंग्लखण्ड की एक्लेसिया में बने रहें और आदर के साथ काम में आवें और सम्मानित होवें इस लिये यदि कोई नीचे लिखी हुई पद्धति के अनुसार जांचा और परखा और इन में से किसी पद पर स्थापित न किया जावे अथवा पहले किसी बिशप से संस्कार वा स्थापन किया गया न होवे तो वह उन की एक्लेसिया में यथार्थ बिशप वा प्रीष्ट वा डीकन समझा न जावे। और २३ बरस के नीचे बिशप की बिशेष आज्ञा बिना कोई डीकन न बने। और जो प्रीष्ट बनने चाहे सो पूरे २४ बरस का होवे। और जो बिशप का संस्कार पाने चाहे अवश्य है कि वह पूरे ३० बरस का होवे। और जब बिशप चाहे आप से चाहे पक्की साक्षी से जानता होवे कि अमुक जन की चाल चलन अच्छी है और उस पर कोई भारी दोष नहीं लगा और उस की परीक्षा लेके उस को लतीनी भाषा और पवित्र शास्त्र में शिक्षित पावे तो कनोन्न के ठहराए हुए समयों में अथवा यदि आवश्यकता होवे तो किसी और इतवार वा पवित्र दिन में उस को एक्लेसिया के सम्मुख नीचे लिखी हुई पद्धति और विधि के अनुसार डीकन बनावे

डीकनों के बनाने की पद्धति और विधि

जब वह दिन आवे जिस को बिशप ने ठहराया हो वे तो प्रातःकाल की प्रार्थना के समाप्त होने पर एक ऐसा उपदेश सुनाया जावे जिस में यह वर्णन होवे कि जो डीकन बनने को आए हैं उनका क्या पद और काम है कि ख्रीष्ट की एक्लीसिया में वह पद कैसा आवश्यक है और मण्डली के लोगों को उनके पद के कारण उन का कैसा सम्मान करना चाहिये।

जो डीकन बनने चाहते हैं उनमें से प्रत्येक योग्य वस्त्र पहिनके आवे और बिशप पवित्र भोजनमंच के पास अपनी चौकी पर बैठ जावे। तब आर्चडीकन अथवा उसका बदली उन को उस के साम्हने ले आके ये शब्द कहे।

ईश्वर में हे मान्य पिता मैं इन पुरुषों को आप के साम्हने उपस्थित करता हूं कि वे डीकन बनें।

बिशप

सावधान रहो कि जिन जनों को तुम हमारे साम्हने उपस्थित करते हो सो अपनी विद्या और भक्तियुक्त चाल चलन के कारण से अपनी सेवकाई का काम उचित रीति से ईश्वर की महिमा और उस की एक्लीसिया की बढ़ती के लिये करने के योग्य होवें।

आर्चडीकन उत्तर देवे।

मैं ने उन के बिषय में पूछ पाछ किई और उन की परीक्षा भी लिई है और समझता हूं कि वे वैसे ही हैं।

तब बिशप मण्डली से कहे।

हे भाइयो यदि तुम में से कोई इन पुरुषों में से जो डीकन बनने के लिये उपस्थित किये गए हैं किसी में कोई ऐसी रोकनेवाली बात वा भारी दोष जानता होवे जिस के कारण से उस को इस पद पर स्थापित करना नहीं चाहिये तो वह ईश्वर के नाम से साम्हने आकर बतावे कि वह दोष वा रोकनेवाली बात क्या है।

डीकनों के बनाने की पद्धति

और यदि कोई भारी दोष वा रोकनेवाली बात बताई जावे तो जब लों वह जन जिस पर दोष लगाया गया उस दोष से निर्दोष न ठहरे तब लों बिशप उसके स्थापित करने से थमा रहे।

तब बिशप उनके लिये जो स्थापित होने के योग्य ठहरें मण्डली की प्रार्थना चाहके उन सेवकों और मण्डली के लोगों समेत जो उपस्थित होवें लितनिया और उस के पीछे की प्रार्थनाएं जैसा नीचे लिखा है गावे वा कहे

लितनिया और उस के साथ की प्रार्थनाएं

हे ईश्वर पिता स्वर्गवासी। हम दुर्गत पापियों पर दया कर॥

हे ईश्वर पिता स्वर्गवासी। हम दुर्गत पापियों पर दया कर॥

ईश्वर पुत्र जगत्राता। हम दुर्गत पापियों पर दया कर॥

हे ईश्वर पुत्र जगत्राता। हम दुर्गत पापियों पर दया कर॥

हे ईश्वर पवित्रात्मा तू जो पिता और पुत्र से निकलता है। हम दुर्गत पापियों पर दया कर॥

हे ईश्वर पवित्रात्मा तू जो पिता और पुत्र से निकलता है। हम दुर्गत पापियों पर दया कर॥

हे पवित्र धन्य और तेजस्वी त्रय तीन पुरुष और एक ईश्वर। हम दुर्गत पापियों पर दया कर॥

हे पवित्र धन्य और तेजस्वी त्रय तीन पुरुष और एक ईश्वर। हम दुर्गत पापियों पर दया कर॥

हे प्रभु हमारे अपराधों को स्मरण न कर और न हमारे पुरखाओं के अपराधों को और न हमारे पापों का पलटा ले। हे दयालु प्रभु हम को छोड़ दे अपने निज लोगों को जिन्हें तू ने अपना अनमोल लहू देके छुड़ा लिया है छोड़ दे और सदा लों हम से कुपित न रह॥

हे दयालु प्रभु हमें छोड़ दे॥

सारी बुराई और हानि से पाप से दुष्टात्मा के छल बल और हल्लों से अपने क्रोप और सदा के दण्ड से॥

डीकनों के बनाने की पद्धति

हे दयालु प्रभु हमें बचा ॥

मन के अन्धेपन से अहंकार से व्यर्थ महिमा की अभिलाषा और कपट से डाह बैर दुष्टबुद्धि और सब प्रकार की अप्रीति से ॥

हे दयालु प्रभु हमें बचा ॥

व्यभिचार और दूसरे सब मृत्युकारक पाप से और संसार शरीर और दुष्टात्मा की सारी माया से ॥

हे दयालु प्रभु हमें बचा ॥

बिजली और आंधी से मरी और अकाल से लड़ाई और हत्या और अचानक मृत्यु से ॥

हे दयालु प्रभु हमें बचा ॥

बलवे कपट प्रबन्ध और राजद्रोह से झूंठी शिक्षा पाषण्ड और फूट से मन की कठोरता और तेरे वचन और आज्ञा के तुच्छ समझने से ॥

हे दयालु प्रभु हमें बचा ॥

अपने पवित्र शरीरधारण के रहस्य के कारण अपने पवित्र जन्म और परिच्छेद के कारण अपने बप्तिस्मा उपवास और परीक्षा के कारण ॥

हे दयालु प्रभु हमें बचा ॥

अपनी अति व्याकुलता और लहू के पसीने के कारण अपने क्रूस और दुःख भोग के कारण अपनी बहुमूल्य मृत्यु और समाधि में रक्खे जाने के कारण अपने महिमायुक्त पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के कारण और पवित्रात्मा के आगमन के कारण ॥

हे दयालु प्रभु हमें बचा ॥

हमारे प्रत्येक दुःख के समय हमारे प्रत्येक सुख के समय मरण काल और न्याय के दिन में ॥

हे दयालु प्रभु हमें बचा ॥

हे प्रभु परमेश्वर हम पापी तुझ से विनती करते हैं हमारी सुन और कृपा करके अपनी पवित्र सार्व एक्लीसिया की सुमार्ग पर प्रेरणा और अगुवाई कर ॥

डीकनों के बनाने की पद्धति

हे दयालु प्रभु हम विनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके अपनी दासी विक्तोरिया हमारी परम अनुग्राहिणी महारानी और शासनकर्त्री को अपनो यथोचित आराधना और चाल चलन की धार्मिकता और पवित्रता में रख और दृढ़ कर ॥

हे दयालु प्रभु हम विनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके उस के मन को अपने विश्वास और भय और प्रेम की ओर तत्पर रख और ऐसा कर कि वह सदा तुझ पर भरोसा रक्खे और सब बातों में तेरी प्रतिष्ठा और महिमा के लिये यत्न करे ॥

हे दयालु प्रभु हम विनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके उस के सब शत्रुओं से उस की आड़ हो और उस का रक्षक रह और उन पर उसे जयवन्त कर ॥

हे दयालु प्रभु हम विनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके अल्बर्ट एड्वर्ड युवराज और युवराज पत्नी और समस्त राजकुटुम्ब को आशीष् दे और कुशल से रख ॥

हे दयालु प्रभु हम विनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके सब बिशपों और प्रीष्टों और डीकनों को अपने वचन के यथार्थ ज्ञान और समझ से प्रकाशित कर और ऐसा कर कि वे अपने उपदेश से उस को प्रचारें और अपने चाल चलन से उस को प्रगट करें ॥

कृपा करके अपने इन दासों को जो अभी डीकन (वा प्रीष्ट) के पद पर स्थापित होनेवाले हैं आशीष् दे और उन पर अपना अनुग्रह उण्डेल कि वे अपने पद का काम योग्य रीति से करें जिस्तें तेरी एक्लीसिया की बढ़ती और तेरे पवित्र नाम की महिमा होवे ॥

हे दयालु प्रभु हम विनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके राजमंत्रियों और सब उच्चपद धारियों को अनुग्रह बुद्धि और समझ से परिपूर्ण कर ॥

बीकनों के बनाने की पद्धति

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके इस देश के वैसराय गवर्नरों और जजों की रक्षा कर और अनुग्रह करके अपने परामर्श से उन की अगुवाई कर ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके माजिष्ट्रेटों को आशीष् दे और उन की रक्षा कर और उन पर ऐसा अनुग्रह कर कि वे न्याय करें और सत्य को स्थिर रक्खें ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके अपने सब लोगों को आशीष् दे और उन की रक्षा कर ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके सब जातियों को एकता संधि और मेल मिलाप प्रदान कर ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके हम को ऐसा मन दे कि हम तुझ से प्रेम रक्खें और तेरा भय मानें और तेरी आज्ञाओं के अनुसार यत्न करके चलें ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके अपने सब लोगों में अपना अनुग्रह ऐसा बढ़ा कि वे तेरा वचन नम्रता से सुनें और मन के शुद्ध भाव से उस को अंगीकार करें और आत्मा के फल फलें ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके सब भटके और भरमाये हुओं को सत्य के मार्ग पर फेर ले आ ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके स्थिरों को दृढ़ कर कच्चेमनवालों को ढाढ़स दे और सम्भाल गिरे हुओं को उठा और अन्त में सातान को हमारे पांव तले कुचल डाल ॥

हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

डीकनों के बनाने की पद्धति

कृपा करके जितने जोखिम में हैं उन्हें सम्भाल जो संकट में हैं उन की सहाय कर और जो बिपत्ति में हैं उन को शान्ति दे ॥

हे दयालु प्रभु हम विनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके जल थल के सब यात्रियों की सब स्त्रियों की जिन्हें पीरें लगी हैं सब रोगियों और नन्हे बच्चों की रक्षा कर और सब बन्धुओं पर और शत्रुओं के वश में पड़े हुए लोगों पर अपनी करुणा प्रगट कर ॥

हे दयालु प्रभु हम विनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके पितृहीन बालकों और बिधवाओं और सब अनाथों और अंधेर उठानेहारों की आड़ हो और उन की सुधि ले ॥

हे दयालु प्रभु हम विनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके समस्त मनुष्यजाति पर दया कर ॥

हे दयालु प्रभु हम विनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके हमारे बैरियों सतानेहारों और अपवाद लगानेहारों को क्षमा कर और उन के मन को फेर ॥

हे दयालु प्रभु हम विनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके भूमि की नाना भांति की उपज को उपजाके हमारे लिये उन की ऐसी रखवाली कर कि समय पर वे हमारे काम आवें ॥

हे दयालु प्रभु हम विनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

कृपा करके हमें सच्चा पश्चात्ताप दे हमारे सब पाप निश्चिन्तता और अज्ञानता क्षमा कर और अपने पवित्रात्मा के अनुग्रह से हमें ऐसा परिपूर्ण कर कि हम अपना चाल चलन तेरे पवित्र वचन के अनुसार सुधारें ॥

हे दयालु प्रभु हम विनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

हे ईश्वर के पुत्र हम विनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

हे ईश्वर के पुत्र हम विनती करते हैं कि तू हमारी सुन ॥

डीकनों के बनाने की पद्धति

हे ईश्वर के मेम्ने तू जो जगत के पाप उठा ले जाता है ॥
अपनी शान्ति हमें दे ॥
हे ईश्वर के मेम्ने तू जो जगत के पाप उठा ले जाता है ॥
हम पर दया कर ॥
हे खीष्ट हमारी सुन ॥
हे खीष्ट हमारी सुन ॥
हे प्रभु हम पर दया कर ॥
हे प्रभु हम पर दया कर ॥
हे खीष्ट हम पर दया कर ॥
हे खीष्ट हम पर दया कर ॥
हे प्रभु हम पर दया कर ।
हे प्रभु हम पर दया कर ॥

तब प्रीष्ट मण्डली समेत प्रभु की प्रार्थना करे ।

हे हमारे पिता । तू जो स्वर्ग में है । तेरा नाम पवित्र किया जावे । तेरा राज्य आवे । तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है पृथ्वी पर भी होवे । हमारी प्रतिदिन की रोटी आज हमें दे । और हमारे अपराधों को क्षमा कर । जैसे हम ने भी अपने अपराधियों को क्षमा किया है । और हमें परीक्षा में न ला । परन्तु उस दुष्ट से बचा । आमेन् ॥

प्रीष्ट । हे प्रभु हमारे पापों के अनुसार हम से व्यवहार न कर ॥
उत्तर । और न हमारे अधर्म्मों के अनुसार हमें प्रतिफल दे ॥

प्रार्थना करें ॥

हे ईश्वर दयालु पिता तू चूर्ण मन की हाय और शोक करनेहारों की अभिलाषा को तुच्छ नहीं जानता जब कभी दुःख और

कष्ट का भार हम पर पड़े तब जो जो प्रार्थना हम तेरे आगे करें उन में दया करके उपस्थित हो और अनुग्रह करके हमारी सुन कि दुष्टात्मा वा मनुष्य अपने छल और चतुराई से हमारी बुराई के लिये जितने यत्न करें सब व्यर्थ निकलें और तेरी दया के प्रबन्ध से छिन्न भिन्न हो जावें कि हम तेरे दास किसी के सताने से हानि न उठाके तेरी पवित्र एक्लीसिया में निरन्तर तेरा धन्यवाद करते रहें हमारे प्रभु येशु ख्रीष्ट के द्वारा ॥

हे प्रभु उठ हमारी सहाय कर और अपने नाम के लिये हमें छुड़ा ॥

हे ईश्वर हम ने अपने कानों सुना और हमारे पुरखाओं ने हम से वर्णन किया कि तू ने उन के दिनों में और उन से पहिले प्राचीन-काल में क्या ही अनूप कार्य्य किये थे ॥

हे प्रभु उठ हमारी सहाय कर और अपनी प्रतिष्ठा के लिये हमें छुड़ा ॥

पिता को और पुत्र को । और पवित्रात्मा की महिमा होवे ॥

जैसी आदि में थी और अब है । और सदा वरन युगानयुग रहेगी । आमेन् ॥

हे ख्रीष्ट हमारे शत्रुओं से हमारी आड़ हो ॥

हमारे कष्टों पर अनुग्रह की दृष्टि कर ॥

करुणा करके हमारे मन के शोक को देख ॥

दया करके अपने निज लोगों के पापों को क्षमा कर ॥

हमारी प्रार्थनाओं को अनुग्रह करके सुन ॥

हे दाविद् के पुत्र हम पर दया कर ॥

हे ख्रीष्ट अब और सदा कृपा करके हमारी सुन ॥

हे ख्रीष्ट अनुग्रह करके हमारी सुन हे प्रभु ख्रीष्ट अनुग्रह करके हमारी सुन ॥

प्रीष्ट । हे प्रभु तेरी दया हम पर होवे ॥

उत्तर । कि तुझी से हमारी आशा है ॥

डीकनों के बनाने की पद्धति

प्रार्थना करें ॥

हे पिता हम नम्रता से विनती करते हैं हमारी दुर्बलता पर दया की दृष्टि कर और जिन दुःखों के भोगने के हम न्याय के अनुसार अति योग्य ठहरे हैं अपने नाम की महिमा के लिये उन सब को हम से टाल दे और यह वर दे कि हम अपने सब कष्टों में तेरी दया पर अपना पूरा आसरा और भरोसा रक्खें और पवित्र और शुद्ध चाल चलन से निरन्तर तेरी सेवा करते रहें जिस्तें तेरी प्रतिष्ठा और महिमा होवे हमारे एक ही मध्यस्थ और पक्षवादी हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

तब सहभागिता की विधि गाई वा कही जावे और उस में की प्रार्थना पत्री और सुसमाचार ये होवें।

प्रार्थना।

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू ने अपने ईश्वरीय प्रबन्ध से अपनी एक्लेसिया में सेवकों के भिन्न भिन्न पद ठहराये हैं और अपने प्रेरितों को ऐसी प्रेरणा किई कि उन्हों ने डीकनों के पद के लिये प्रथम साक्षी पवित्र स्तेफन और औरों को चुन लिया। दया करके अपने इन दासों पर दृष्टि कर जो अभी उसी पद और सेवकाई के लिये बुलाए गए हैं उन को अपनी शिक्षा के सत्य से ऐसा परिपूर्ण और चाल चलन की निर्दोषता से ऐसा आभूषित कर कि वचन और सुचाल से वे इस पद में तेरी सेवा विश्वस्तता से करें जिस्तें तेरे नाम की महिमा और तेरी एक्लेसिया की बढ़ती होवे हमारे त्राता येशू खीष्ट के पुण्य के द्वारा। जो तेरे और पवित्रात्मा के संग अब और युगानयुग जीता और राज्य करता है। आमेन्॥

पत्री १ तीम ३। ८

उसी रीति से चाहिये कि डीकन गम्भीर होवें दो जिभे नहीं न

डीकनों के बनाने की पद्धति

दाखमधु के बहुत पीनेहारे न नीच लाभ के लोभी पर विश्वास के रहस्य को शुद्ध अन्तर्विवेक से धरे रहें । और ये भी पहले परखे जावें तब यदि निर्दोष निकलें तो डीकन का काम करें । स्त्रियां भी उसी रीति से गम्भीर होवें अपवाद लगानेवाली नहीं न मद्यप पर सब बातों में विश्वस्त । डीकन एक ही एक पत्नी के पति होवें और अपने लड़कों और अपने निज घरों की प्रधानता अच्छी रीति से करें क्योंकि जिन्हों ने डीकन का काम भली भांति किया है सो अपने लिये एक अच्छा स्थान और ख्रीष्ट येशू के विश्वास में बड़ी ढाढ़स प्राप्त करते हैं ।

अथवा यह जो प्रेरितों के कर्म्मों के ६ वे में से लिया गया ।

प्रेरितों ६ । २ ।

तब बारह प्रेरितों ने शिष्यों के समाज को अपने पास बुलाके कहा यह अच्छी बात नहीं कि हम ईश्वर के वचन को छोड़के खिलाने पिलाने के धंधों में फंसे रहें । सो हे भाइयो अपने में से सात सुनामी पुरुषों को खोजो जो आत्मा और बुद्धि से भरपूर होवें जिन को हम इस कार्य्य पर ठहरावें । पर हम प्रार्थना और वचन सम्बन्धी परिचर्य्या में लवलीन रहेंगे । और सारा समाज इस बात से प्रसन्न भया और उन्हों ने स्तेफन को जो विश्वास और पवित्र आत्मा से भरा हुआ पुरुष था और फिलिप्प और प्रोखोर् और नीकानोर और तीमोन और पर्मेना और नीकलाव को जो अन्त्योखिया में का एक नवयहूदी था चुन लिया । उन्हों ने इन को प्रेरितों के आगे खड़ा किया और इन्हों ने प्रार्थना करके उन पर हाथ रक्खे । और ईश्वर का वचन बढ़ने लगा और यरूशलेम् में शिष्यों की गिनती अत्यन्त बढ़ने लगी और याजकों की बड़ी मण्डली विश्वास के आधीन हो गई ॥

डीकनों के बनाने की पद्धति

और सुसमाचार के पहले बिशप अपनी चौकी पर बैठा हुआ सब स्थापित होनेहारों की परीक्षा मण्डली के साम्हने इस रीति से लेवे ॥

क्या तुम्हें ऐसा जान पड़ता है कि पवित्रात्मा ने तुम्हारे मन को प्रेरणा किया है कि इस पद और सेवकाई को अपने ऊपर लेओ जिस्तें तुम ईश्वर की सेवा उस की महिमा और उस के लोगों के लाभ के लिये करो ॥

उत्तर । हां मुझे ऐसा ही जान पड़ता है ॥

बिशप ।

क्या तुम समझते हो कि तुम हमारे प्रभु येशू खीष्ट की इच्छा और इस राज्य के यथार्थ विधि के अनुसार एक्लेसिया की सेवकाई करने के लिये सचमुच बुलाये गए हो ।

उत्तर । हां मैं ऐसा ही समझता हूं ।

बिशप ।

क्या तुम पुरानी और नई वाचाओं की सब कनोनी पुस्तकों पर निष्कपट विश्वास रखते हो ।

उत्तर । हां मैं उन पर विश्वास रखता हूं

बिशप ।

क्या तुम जिस एक्लेसिया में सेवकाई करने के लिये ठहराए जाओगे उस में की मण्डली को वेही पुस्तकें पढ़के सुनाया करोगे ।

उत्तर । हां मैं ऐसा ही करूंगा ॥

बिशप ।

डीकन का यह काम है कि जिस एक्लेसिया में वह सेवा करने के लिये ठहराया जावे उस में उपासना के समय और विशेष करके जब प्रीष्ट पवित्र सहभागिता सम्बन्धी परिचर्य्या करता होवे तब उस की

सहायता करे और उस के बांटने में उस का सहायक होवे और एक्लेसिया में पवित्र शास्त्र और होमीलियाएं पढ़े और लड़कों को कत्तेखिस्म की शिक्षा देवे और प्रीष्ट के न रहते बालकों को बप्तिस्मा देवे और यदि बिशप से आज्ञा मिले तो उपदेश भी करे। और फिर यह भी उस का काम है कि जहां ऐसा प्रबन्ध किया गया होवे तहां परोकिया के रोगी कंगाल और अशक्त लोगों को खोज खोजके उन की दशा नाम और वासस्थान पालक को बतावे जिस्तें उस के समझाने से वे परोकिया बासियों अथवा दूसरे लोगों के दान से सहायता पावें। क्या तुम यह काम आनन्द से और इच्छा पूर्वक करोगे॥

उत्तर। ईश्वर की सहायता से मैं ऐसा ही करूंगा॥

बिशप।

क्या तुम पूरा यत्न करोगे कि अपना चाल चलन और अपने अपने परिवार का चाल चलन ख्रीष्ट की शिक्षा रूपी सांचे में ढालो और अपने को और उन को शक्ति भर ख्रीष्ट की झुण्ड के अच्छे उदाहरण बनाओ॥

उत्तर। हां प्रभु मेरा सहायक होवे तो मैं ऐसा ही करूंगा॥

बिशप।

क्या तुम अपने बिशप और एक्लेसिया के और और प्रधान सेवकों की आज्ञा और उन की आज्ञा भी जिन को तुम्हारे ऊपर अधिकार सोम्पा गया होवे सम्मान से मानोगे और प्रसन्नता से उन की धार्मिक चितावनी के अनुसार चलोगे॥

उत्तर। हां प्रभु मेरा सहायक होवे तो मैं ऐसा ही यत्न करूंगा॥

तब वे बिशप के आगे नम्रता से घुटने टेकें और वह अलग अलग उन में से प्रत्येक के सिर पर अपने हाथ रखके कहे।

ईश्वर की एक्लेसिया में जो डीकन का पद तुझे सोम्पा जाता है

उस का काम करने का अधिकार ले। पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से। आमिन्॥

तब बिशप उन में से प्रत्येक को नई वाचा की पुस्तक सोन्पके कहे।

ईश्वर की एक्लेसिया में सुसमाचार को पढ़ने का और यदि बिशप आप आज्ञा देवे तो उस को प्रचार करने का भी अधिकार ले॥

तब उन में से एक जिस को बिशप ठहरावे सुसमाचार को पढ़े

पवित्र लूका। १२। ३५।

तुम्हारी कटि कसी और तुम्हारे दीपक बरते रहें और तुम आप उन मनुष्यों के समान होओ जो अपने प्रभु की बाट जोहते होवें कि वह कब विवाह से लौटेगा जिस्तें जब वह आके खट खटावे तो वे तुरन्त उस के लिये खोलें॥

धन्य वे दास जिन्हें प्रभु आके जागते पावे। मैं तुम से सत्य कहता हूं कि वह अपनी कटि कसेगा और उन को भोजन पर बैठावेगा और पास आके उन की टहल करेगा। और यदि वह दूसरे अथवा तीसरे पहर में आके उन को उसी दशा में पावे तो वे दास धन्य हैं॥

तब बिशप सहभागिता की अवशिष्ट विधि को करे और जितने स्थापित भए हैं सब ठहरे रहें कि उसी दिन बिशप के संग पवित्र सहभागिता को लेवें।

तब सहभागिता समाप्त होवे तब पिछली प्रार्थना के अनन्तर आशीर्बाद से पहले ये प्रार्थनाएं कही जावें।

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर सब उत्तम पदार्थों के दाता तू ने बड़ी कृपा से अपने इन दासों को अपनी एक्लेसिया में डीकनों के पद के लिये ग्रहण किया है॥

डीकनों के बनाने की पद्धति

हे प्रभु हम विनती करते हैं कि तू ऐसा कर कि वे अपनी सेवकाई में संकोची नम्र और दृढ़ होवें और सब आत्मिक शासन के मानने को प्रसन्न रहें जिस्तें वे सर्वदा अन्तर्विवेक की अच्छी साची पाके और तेरे पुत्र खीष्ट में सदा स्थिर और दृढ़ रहके इस छोटे पद का काम ऐसी अच्छी रीति से करें कि तेरी एक्लेसिया को बड़ी सेवकाइयों पर बुलाये जाने के योग्य ठहरें उसी तेरे पुत्र हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। जिस की महिमा और प्रतिष्ठा युगानयुग होती रहे। आमेन् ॥

हे प्रभु हमारे सब कार्य्यों में अपने अत्यन्त अनुग्रह से हमारी अगुवाई कर और अपनी निरन्तर सहायता से हमें आगे बढ़ा कि हम अपने सब कार्य्यों को तुझ में आरम्भ करें तुझ में करते रहें और तुझी में समाप्त भी करें जिस्तें तेरे पवित्र नाम की महिमा होवे और हम अन्त को तेरी दया से अनन्त जीवन प्राप्त करें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन् ॥

ईश्वर की शान्ति जो सारी समझ से परे है तुम्हारे हृदय और मन को ईश्वर और उस के पुत्र हमारे प्रभु येशू खीष्ट के ज्ञान और प्रेम में रक्षा करे और ईश्वर सर्वशक्तिमान् पिता पुत्र और पवित्रात्मा की आशीष् तुम पर होवे और सर्वदा तुम्हारे संग रहे। आमेन् ॥

और इसी अवसर में डीकन को बताना चाहिये कि यदि योग्य कारणों से बिशप को और प्रकार से करना अच्छा न लगे तो उस को बरस भर डीकन के उसी पद में रहना चाहिये जिस्तें एक्लेसिया की सेवकाई से जो कुछ सम्बन्ध रखता है उस में वह पक्का और निपुण हो जावे। और यदि वह इस में विश्वस्त और परिश्रमी ठहरे तो कनोन में ठहराये हुए समय अथवा यदि बड़ी आवश्यकता होवे तो किसी और इतवार वा पवित्र दिन में वह प्रीष्ट के पद पर अपने बिशप से ठहराया जा सकता है तब वह एक्लेसिया के सम्मुख नीचे लिखी हुई पद्धति के अनसार प्रीष्ट बने ॥

प्रीष्टों के स्थापन की पद्धति और विधि

जब बिशप का ठहराया हुआ दिन आवे तब प्रातःकाल की प्रार्थना के समाप्त होने पर एक ऐसा उपदेश सुनाया जावे जिस में यह वर्णन होवे कि जो प्रीष्ट बनने को आए हैं उन का क्या पद और काम है कि ख्रीष्ट की एक्लेसिया में वह पद कैसा आवश्यक है और मण्डली के लोगों को उन के पद के कारण उन का कैसा सम्मान करना चाहिये ॥

जो प्रीष्ट बनने चाहते हैं उन में से प्रति एक योग्य वस्त्र पहिनके आवे और बिशप पवित्र भोजनमंच के पास अपनी चौकी पर बैठ जावे। तब आर्चडीकन अथवा उस का बदली उन को उस के साम्हने ले आके ये शब्द कहे ॥

ईश्वर में हे मान्य पिता मैं इन पुरुषों को आप के साम्हने उपस्थित करता हूं कि वे प्रीष्ट बनें ॥

बिशप।

सावधान रहो कि जिन जनों को तुम हमारे साम्हने उपस्थित करते हो सो अपनी विद्या और भक्तियुक्त चाल चलन के कारण से अपनी सेवकाई का काम उचित रीति से ईश्वर की महिमा और उस की एक्लेसिया की बढ़ती के लिये करने के योग्य होवें ॥

आर्चडीकन उत्तर देवे।

मैं ने उन के विषय में पूछ पाछ किई और उन की परीक्षा भी लिई है और समझता हूं कि वे वैसे ही हैं ॥

तब बिशप मण्डली से कहे।

प्यारे लोगो ये वे ही हैं जिन्हें ईश्वर की इच्छा होवे तो हम आज प्रीष्ट के पवित्र पद के लिये ग्रहण करने चाहते हैं क्योंकि उन की परीक्षा भली भान्ति करने से हमें यही जान पड़ता है कि वे इस काम और सेवकाई पर यथार्थ रीति से बुलाए गए और उस के योग्य हैं।

पर तौ भी यदि तुम में से कोई इन में से किसी में कोई ऐसी रोक-नेवाली बात वा भारी दोष जानता होवे जिस के कारण से उस को इस पवित्र सेवकाई के लिये ग्रहण करना नहीं चाहिये तो वह ईश्वर के नाम से साम्हने आकर बतावे कि वह दोष वा रोकनेवाली बात क्या है ॥

और यदि कोई भारी दोष वा रोकनेवाली बात बताई जावे तो जब लों वह जन जिस पर दोष लगाया गया उस दोष से निर्दोष न ठहरे तब लों बिशप उस के स्थापित करने से थमा रहे ॥

तब बिशप उन के लिये जो स्थापित होने के योग्य ठहरे मण्डली की प्रार्थना चाहके उन सेवकों और मण्डली के लोगों समेत जो उपस्थित होवें लितानिया और उस के पीछे की प्रार्थनाएं जैसा डीकनों के स्थापन करने की विधि में ठहराया गया है गावे वा कहे। परन्तु यह स्मरण रहे कि उस में जो विशेष विनती बढ़ाई गई है उस में डीकन शब्द छोड़ देना और उस की सन्ती प्रीष्ट शब्द पढ़ना चाहिये ॥

तब सहभागिता की विधि गाई वा कही जावे और उस में की प्रार्थना पत्री और सुसमाचार ये होवे ॥

प्रार्थना।

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर सब उत्तम पदार्थों के दाता तू ने अपने पवित्रात्मा के द्वारा अपनी एक्लीसिया में सेवकों के अनेक पद ठहराये हैं दया करके अपने इन दासों पर जो अभी प्रीष्ट के पद के लिये बुलाये गए हैं दृष्टि कर और उन को अपनी शिक्षा के सत्य से ऐसा परिपूर्ण और चाल चलन की निर्दोषता से ऐसा आभूषित कर कि वचन और सुचाल से वे इस पद में तेरी सेवा विस्वस्तता से करें जिस्तें तेरे नाम की महिमा और तेरी एक्लीसिया की बढ़ती होवे हमारे त्राता येशू ख्रीष्ट के पुण्य के द्वारा जो तेरे और पवित्रात्मा के संग अब और युगानुयुग जीता और राज्य करता है। आमेन् ॥

ख्रीष्टों के स्थापन की पद्धति और विधि

पत्री । एफेसियों । ४ । ७ ।

हम में से प्रत्येक जन को ख्रीष्ट के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह दिया गया । इस लिये वह कहता है वह ऊंचे पर चढ़के बंधुवों को बंधुवा करके ले गया और मनुष्यों को दान दिये । (और वह जो चढ़ा इस का अर्थ क्या है यही कि वह पहिले पृथिवी के निचले स्थानों में उतर गया था । जो उतरा था सो वही है जो समस्त स्वर्गों के ऊपर चढ़ गया जिस्तें वह सब कुछ भर देवे ।) और उस ने कितनों को तो प्रेरित करके दिया और कितनों को प्रवक्ता और कितनों को सुसमाचारी और कितनों को पालक और शिक्षक करके दिया । जिस्तें पवित्रों के पूर्ण होने के लिये परिचर्य्या का काम किया जावे और ख्रीष्ट की देह की उन्नति होवे । जब लों हम सब के सब ईश्वर के पुत्र के विश्वास और ज्ञान की एकता को और पूर्ण पुरुष को और ख्रीष्ट के पूर्ण डील के परिमाण को न पहुंचें । जिस्तें हम आगे को बच्चे न रहें कि मनुष्यों की माया से और धूर्त्तता से भरमानेहारों की युक्तियों के अनुसार शिक्षा के प्रत्येक झकोरे से लहराये और फिराये जावें । परन्तु प्रेम के साथ सत्य बर्त्ताव करते हुए सब बातों में बढ़ते बढ़ते उसी में जो सिर है अर्थात् ख्रीष्ट में मिल जावें । उस के कारण से समस्त देह जो कुछ प्रत्येक गांठ से प्राप्त होता है उस के द्वारा जुटती और गठती हुई प्रत्येक अंग की उस कार्य्यकारिता के अनुसार जो वह परिमाण से करता है अपनी उन्नति के लिये प्रेम में देह की बढ़ती करती है ॥

इस के अनन्तर पवित्र मत्तय के ९वें अध्याय में से यह सुसमाचार पढ़ा जावे॥

पवित्र । मत्तय । ९ । ३६ ।

जब येशू ने भीड़ को देखा तब उस ने उन पर छोह किया इस लिये कि वे उन भेड़ों के समान जिन का कोई गड़ेरिया न होवे क्लेश

में और छिन्न भिन्न थे। तब उस ने अपने शिष्यों से कहा कि पक्के खेत तो बहुत हैं पर बनिहार थोड़े ही हैं। इस लिये खेतों के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेतों में बनिहार भेजे॥

अथवा यह सुसमाचार जो पवित्र योहानान् के १० वें अध्याय में से लिया गया॥

पवित्र। योहानान्।१०।१।

मैं तुम से सत्य सत्य कहता हूं कि जो भेड़शाला में द्वार से होके प्रवेश नहीं करता पर किसी और मार्ग से चढ़ जाता है सो चोर और डाकू है। पर जो द्वार से होके प्रवेश करता है सो भेड़ों का गड़ेरिया है। उस के लिये द्वारपाल खोलता है और भेड़ें उस की वाणी को सुनती हैं और वह अपनी निज भेड़ों को नाम ले लेके पुकारता और उन्हें बाहर ले जाता है। जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर ले जा चुकता है तब वह उन के आगे आगे चलता है और भेड़ें उस के पीछे पीछे जाती हैं क्योंकि वे उस की वाणी को पहिचानती हैं। पर वे पराये के पीछे नहीं जावेंगी वरन उस के पास से भागेंगी क्योंकि वे पराये की वाणी को नहीं पहिचानतीं। इस दृष्टान्त को येशू ने उन से कहा पर उन्हों ने नहीं समझा कि वह हम से क्या कहता है। सो येशू ने फिर उन से कहा मैं तुम से सत्य सत्य कहता हूं कि भेड़ों का द्वार मैं हूं। जितने मुझ से पहिले आये सब चोर और डाकू थे पर भेड़ों ने उन की न सुनी। द्वार मैं हूं मुझ से होके यदि कोई प्रवेश करे तो वह त्राण पावेगा और बाहर भीतर आया जाया करेगा और चराव पावेगा। चोर केवल इसी लिये आता है कि चुरावे और बध करे और नाश करे पर मैं इस लिये आया कि वे जीवन पावें और अधिक बढ़ती पावें अच्छा गड़ेरिया मैं हूं अच्छा गड़ेरिया भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है। पर चाकर जो गड़ेरिया नहीं है भेड़ें जिस की अपनी नहीं हैं हुण्डार को आते देखता है और भेड़ों को

छोड़ भागता है और हुण्डार उन्हें पकड़ता और छिन्न भिन्न करता है क्योंकि वह चाकर ही है और भेड़ों की चिन्ता नहीं करता। अच्छा गड़ेरिया मैं हूं और अपनी जानता हूं और मेरी मुझे जानती हैं जैसा पिता मुझे जानता है और मैं पिता को जानता हूं और मैं भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूं। और मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस भेड़-शाला की नहीं हैं अवश्य है कि मैं उन्हें भी ले आऊं और वे मेरा शब्द सुनेंगी और एक झुण्ड और एक गड़ेरिया होगा॥

तब बिशप अपनी चौकी पर बैठा हुआ उन से नीचे लिखी हुई बातें कहे॥

हे भाइयो जो परीक्षा हम ने घर में तुम से लिई और जो उपदेश अभी तुम को सुनाया गया और जो पवित्र पाठ सुसमाचार और प्रेरितों की पुस्तकों में से पढ़े गए उन में तुम ने सुना है कि यह पद जिस पर तुम बुलाये जाते हो कैसे आदर का और कैसा बड़ा है। और अब हम फिर तुम्हें अपने प्रभु येशू खीष्ट के नाम से समझाते हैं कि तुम स्मरण रक्खो कि तुम कैसे ऊंचे पद और कैसे भारी काम और अधि-कार के लिये बुलाये जाते हो अर्थात् प्रभु के दूत पहरू और भण्डारी होने के लिये कि तुम प्रभु के परिवार को सिखाओ चिताओ खिलाओ और पालो और खीष्ट की जो भेड़ें छिन्न भिन्न हैं और उस को जो लड़के इस दुष्ट संसार के बीच में हैं उन्हें ढूंढ़ो जिस्तें वे खीष्ट के द्वारा सदा का त्राण पावें॥

सो यह बात तुम्हारे मन में गड़ी रहे कि कैसा बड़ा धन तुम्हें सौम्पा गया है। क्योंकि वे खीष्ट की भेड़ें हैं जिन्हें उस ने अपनी मृत्यु से मोल लिया और जिन के लिये उस ने अपना लहू बहाया। जिस एक्लेसिया और मण्डली की सेवा तुम्हें करनी होवेगी सो उस की दुल्हिन और उस की देह है। और यदि ऐसा होवे कि वह एक्लेसिया अथवा उस का कोई अंग तुम्हारी निश्चिन्तता के कारण कुछ हानि

उठावें वा ठोकर खावे तो तुम जानते हो कि यह अपराध कैसा बड़ा और उस का दण्ड कैसा भयानक है। इस लिये अपने मन में सोचो कि ईश्वर के लड़कों और खीष्ट की दुल्हिन और देह के लिये तुम्हारी सेवकाई का क्या अभिप्राय है और सावधान रहो कि अपना परिश्रम चिन्ता और यत्न कभी न छोड़ो पर जैसा तुम्हारा धर्म्म है शक्ति भर इस का उपाय करो कि जितने तुम्हारे अधिकार में सौंपे गए वा सौंपे जावेंगे उन को ईश्वर के विश्वास और ज्ञान की ऐसी एकता लों और खीष्ट में के ऐसे पूरे डील लों पहुचाओ कि तुम्हारे बीच न धर्म्म की बातों में भ्रम न चाल चलन में दोष रहने पावे॥

सो जब कि तुम्हारा पद ऐसा उत्तम है और इतना कठिन भी है तो प्रत्यक्ष है कि तुम को कैसी बड़ी चिन्ता और यत्न करनी चाहिये कि जिस प्रभु ने तुम को ऐसे ऊंचे पद पर ठहराया है तुम उस के साम्हने विश्वस्त और कृतज्ञ होओ और सावधान भी रहो कि न तुम आप अपराध करो न औरों के अपराधी होने के कारण होओ। तिस पर भी इस काम के लिये जैसा मन और इच्छा चाहिये सो तुम आप से प्राप्त नहीं कर सकते क्योंकि वह मन और शक्ति केवल ईश्वर ही से मिलती है इस लिये तुम्हें चाहिये वरन यह अवश्य है कि उस के पवित्रात्मा के पाने के लिये जी से प्रार्थना किया करो। और जब कि तुम ऐसे भारी काम को जो मनुष्य के त्राण से सम्बन्ध रखता है केवल उस शिक्षा और उपदेश से जो पवित्र शास्त्र में से लिया गया होवे और ऐसी चाल चलन से जो उस के अनुसार होवे कर सकते हो तो सोचो कि तुम को शास्त्र के पढ़ने और सीखने और अपना और अपने सम्बन्धियों की चाल व्यवहार को उसी शास्त्र के नियम के अनुसार बनाने में कितना यत्न करना चाहिये और इसी अभिप्राय से तुम को शक्ति भर सब सांसारिक चिन्ताओं और धन्धों को छोड़ना और दूर करना चाहिये॥

प्रीष्टों के स्थापन की पद्धति और विधि

हमें बड़ी आशा है कि तुम ने बहुत दिन से इन बातों को अपने मन में तौला और सोचा होगा और तुम ने भली भान्ति ठाना भी होगा कि जिस पद पर ईश्वर की इच्छा भई कि तुम्हें बुलावे उस में अपने को लवलीन कर देओगे ऐसा कि तुम शक्ति भर इसी एक बात की ओर तत्पर रहोगे और अपनी सब चिन्ता और यत्न इसी ओर लगाओगे और ईश्वर पिता से हमारे एक ही चाता येशू खीष्ट की मध्यस्थता के द्वारा नित्य प्रार्थना करोगे कि वह स्वर्ग से पवित्रात्मा की सहायता भेजे जिस्तें शास्त्र को प्रतिदिन पढ़ने और उस पर ध्यान करने से तुम अपनी सेवकाई में अधिक पक्के और दृढ़ हो जाओ और अपने और अपनों के चाल चलन को पवित्र करने और खीष्ट के नियम और शिक्षा के सांचे में ढालने के लिये समय समय ऐसा यत्न करो कि तुम मण्डली के लिये अच्छे और भक्तियुक्त उदाहरण बनो॥

और अब जिस्तें खीष्ट की यह उपस्थित मण्डली भी जान सके कि इन विषयों में तुम्हारा क्या मन और इच्छा है और जिस्तें तुम अपनी इस प्रतिज्ञा से अपने कर्त्तव्य कर्म्मों के करने के लिये अधिक उभारे जाओ इस लिये जो प्रश्न हम ईश्वर के और उस की एक्लीसिया के नाम से उन विषयों में तुम से करेंगे उन का स्पष्ट उत्तर देओ॥

क्या तुम अपने मन में समझते हो कि तुम हमारे प्रभु येशू खीष्ट की इच्छा और अंगलखंड की इस एक्लीसिया की रीति के अनुसार सच मुच बुलाये गए हो।

उत्तर। हां मैं ऐसा ही समझता हूं॥

बिशप।

क्या तुम्हें निश्चय है कि जितनी शिक्षा उस अनन्त चाण के लिये आवश्यक है जो येशू खीष्ट के विश्वास के द्वारा मिलता है सो सब पवित्र शास्त्र में यथावश्यक रीति से पाई जाती है। और क्या तुम ने

ठाना है कि जो लोग तुम को सोम्पे गए उन को उसी शास्त्र में से शिक्षा देओगे और जिस बात के विषय में तुम्हें निश्चय होवे कि उसी शास्त्र से उस का पक्का प्रमाण हो सकता है उस को छोड़ और किसी बात को अनन्त त्राण के लिये आवश्यक कहके न सिखाओगे ॥

उत्तर। हां मुझे ऐसा ही निश्चय है और मैं ने ठाना भी कि ईश्वर के अनुग्रह से ऐसा ही करूंगा ॥

बिशप।

सो क्या तुम विश्वस्तता से यत्न करोगे कि ख्रीष्ट की शिक्षा और सक्रामेन्तों और शासन के विषय में इस रीति से परिचर्य्या सदा किया करो जैसा प्रभु ने आज्ञा दिई और इस एक्लेसिया और राज्य ने ईश्वर की आज्ञाओं के अनुसार उन्हें पाया है ऐसा कि जो लोग तुम्हारे अधिकार और पालन में सोम्पे गये उन्हें तुम सिखा सको कि वे पूरे यत्न से उन्हें मानें ॥

उत्तर। हां मैं प्रभु की सहायता से ऐसा ही करूंगा ॥

बिशप।

क्या तुम सिद्ध रहोगे कि पूरी विश्वस्तता और यत्न से सब झूठी और बिरानी शिक्षा को जो ईश्वर के वचन के विरुद्ध हो निकालके दूर करो और तुम्हारी परोकियों के भीतर जो रोगी और भले चंगे हैं दोनों को आवश्यकता और अवसर के अनुसार मण्डली में और घर में भी चिताओ और समझाओ ॥

उत्तर। हां प्रभु मेरा सहायक होवे तो मैं ऐसा ही करूंगा ॥

बिशप।

क्या तुम प्रार्थना करने और पवित्र शास्त्र के पढ़ने और उन विषयों में मन लगाने में जिन से उस के समझने के लिये सहायता मिलती है

यत्न करोगे और सांसारिक और शारीरिक बातों में मन न लगाओगे ॥

उत्तर। हां प्रभु मेरा सहायक होवे तो मैं ऐसा ही करूंगा ॥

बिशप।

क्या तुम आप को और अपने परिवारों को खीष्ट के शिक्षा रूपी सांचे में ढालने और अपने को और उन को शक्तिभर खीष्ट की झुण्ड के लिये अच्छे उदाहरण बनाने में यत्न करोगे ॥

उत्तर। हां प्रभु मेरा सहायक होवे तो मैं इसी यत्न में लगा रहूंगा ॥

बिशप।

क्या तुम सब खीष्टियानों में और विशेष करके उन में जो तुम्हारे अधिकार में सौंपे गए वा सौंपे जावेंगे शान्ति मेल मिलाप और प्रेम को शक्तिभर स्थिर रक्खोगे और बढ़ाओगे ॥

उत्तर। हां प्रभु मेरा सहायक होवे तो मैं ऐसा ही करूंगा ।

बिशप।

क्या तुम अपने बिशप की आज्ञा और और प्रधान सेवकों की आज्ञा जिन को तुम्हारे ऊपर अधिकार सौंपा गया है सम्मान से मानोगे और प्रसन्नता से उन की धार्म्मिक चितावनी के अनुसार चलोगे और जो कुछ वे धर्म्म से निर्णय करें उस को मानोगे ॥

उत्तर। हां प्रभु मेरा सहायक होवे तो मैं ऐसा ही करूंगा ॥

तब बिशप खड़ा होके कहे।

सर्वशक्तिमान् ईश्वर जिसने तुम्हें इन सब बातों के करने की ऐसी इच्छा दिई है तुम्हें उसे पूरा करने को भी शक्ति और सामर्थ्य देवे जिस्तें वह अपने कार्य्य को जो उस ने तुम में आरम्भ किया है समाप्त भी करे। हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन् ॥

प्रीष्टों के स्थापन की पद्धति और विधि

इस के अनन्तर मण्डली से यह कहा जावे कि अपनी प्रार्थना में ईश्वर से वे सब बातें नम्रता से चुपचाप मांगें और इस प्रार्थना के लिये सब लोग थोड़े समय लों चुप रहें॥

इस के अनन्तर बिशप वेनी क्रेआतोर स्पीरितुस को गावे वा कहे ऐसा कि बिशप एक चरण कहे और प्रीष्ट लोग और और जितने उपस्थित हैं दूसरा चरण जैसा नीचे लिखा है। और जो प्रीष्ट बननेहारे हैं सो घुटने टेके रहें॥

हे शांतिदाता अब उतर।
और हम में स्वर्गीय अग्नि भर॥
तू अभिषेक है करनेहार।
तू सतगुण दान देनेहार॥

तू ऊपर से उंडेलता है
जीवन और शांति और प्रेम अक्षय
मिटा अनन्त उजाले से
धुंधलापन को हम सभों के

हम व्याकुल हैं विराम तू दे
अनुग्रह की भरपूरी से
दे बैरी से बचाके सुख
तू होता साथ न मिलता दुःख

पिता और पुत्र और तुझी को
एक जानना भाग हमारा हो
हम गावेंगे तब अच्छी रीति
निरन्तर यह आनन्द का गीत
धन्य होवें सारी सृष्टि से
नाम पिता पुत्र और आतमा के

अथवा यह

---

१ हे कर्त्ता प्रेम और शान्ति के
सनातन पूतात्मा ।
हे निकले बाप और पुत्र से
ऊपर से हम पर आ ॥

२ हमारे पापी मनों में
अपना अनुग्रह दे
कि ढूंढें धर्म्म और भक्ति को
उद्योग और इच्छा से ॥

३ दुःख क्लेश उद्वेग और पीड़ा में
तो शान्तिदाता है ।
तिस का बखान न इहलोक में
कोई कर सकता है ॥

४ तू सोता बारहमासी है
स्वर्गीय आनन्द का ।
नेत्रों का अञ्जन प्रीतिमय
और अग्नि चमकता ॥

५ नाना दानों का दाता तू
आधार एक्लेस्या का ।
भक्तों के मन में लिखता तू
ईश्वर की व्यवस्था ॥

६ मधुर बोली बुलवाता तू
बात तेरी सत्य है ।
ईश्वर की स्तुति सुनवाता तू
हर ठौर और हर समय ॥

प्रीष्टों के स्थापन की पद्धति और विधि

७ हे आत्मा ! भेज अपना प्रकाश
हमारे हृदय में ।
कि ईश्वर के उद्योगी हो
दिन रात सेवा करें ॥

८ तू हमें निर्बल जानता है
सो बल नित हमें दे ।
कि हारें न हम पापात्मा
न देह न जगत से ॥

९ हे नाथ ! हमारे रिपु को ॥
हम से नित दूर हटा ।
और ईश्वर और मनुष्य से
हम से मिलाप करा ॥

१० हमारा अगुआ तू ही हो
कि फन्दों से बचें ।
और तुझ से हे दयालु नाथ !
कदापि न हटें ॥

११ भरपूर कर हमें शक्ति से
और शान्तिदाता हो ।
हमारा आश्रय तू ही हो
न्याय की घोर घड़ी को ॥

१२ सब फूट विवाद निष्प्रेमता
और झगड़ा दूर तू कर ।
और भाइयों के सब घरों को
प्रीति और प्रेम से भर ॥

१३ सर्व्व सामर्थी पिता का
अब हमें दे विज्ञान ।

और धन्य दर्शन पुत्र का
परलोक में कर प्रदान ॥
१४ स्तुति हो ईश्वर पिता की
और पुत्र की भी हो।
स्तुति हो पूतात्मा की भी
तीनों की एक सी हो ॥
१५ हे दीनानाथ ! तेरे जितने
नाम के लिवैये हों।
उन सब पर अपना आत्मा डाल
अब से और प्रलय लों ॥

जब यह समाप्त होवे तब बिशप यूं प्रार्थना करें ॥

प्रार्थना करें ।

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर और स्वर्गीय पिता तू ने अपने अपार प्रेम और कृपा से जो तू ने हम पर किई है अपने एकलौते और अत्यन्त प्रिय पुत्र येशू ख्रीष्ट को हमें दिया कि वह हमारा छुड़ानेहारा और अनन्त जीवन का कर्त्ता होवे । उस ने हमारे छुटकारे को अपनी मृत्यु से पूरा करके और स्वर्ग पर चढ़के अपने प्रेरितों प्रवक्ताओं सुसमाचारियों शिक्षकों और पालकों को सारे संसार में भेज दिया और उन के परिश्रम और सेवकाई के द्वारा उस ने पृथिवी के सब देशों में एक बड़ा झुण्ड बटोर लिया जिस्तें तेरे पवित्र नाम की अनन्त स्तुति प्रचारी जावे । तेरी अनन्त कृपा के इन ऐसे बड़े उपकारों के लिये और इस लिये भी कि तू ने दया करके अपने इन दासों को उसी पद और सेवकाई के लिये जो मनुष्यजाति के त्राण के निमित्त ठहराई गई बुलाया है हम पूरे अन्तःकरण से तेरा धन्यवाद और स्तुति और आराधना करते हैं । और हम नम्रता से यह विनती करते हैं कि तू अपने

उसी धन्य पुत्र के द्वारा उन सब को जो यहां वा और कहीं तेरा पवित्र नाम लेके पुकारते हैं यह वर दे कि हम तेरे इन और और सब उपकारों के लिये अपनी कृतज्ञता को प्रगट करते रहें और पवित्रात्मा के द्वारा तेरे और तेरे पुत्र के ज्ञान और विश्वास में प्रतिदिन वृद्धि करते और आगे बढ़ते जावें; इस रीति से तेरे इन सेवकों के द्वारा और उन के द्वारा भी जिन पर वे तेरे सेवक होने के लिये ठहराए जावेंगे तेरे पवित्र नाम की महिमा सदा हुआ करे और तेरे धन्य राज्य की वृद्धि होवे उसी तेरे पुत्र हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा जो तेरे संग उसी पवित्रात्मा की एकता में युगानयुग जीता और राज्य करता है। आमेन्॥

इस प्रार्थना के समाप्त होने पर बिशप (उन प्रीष्टों समेत जो उपस्थित हों) प्रीष्ट बननेहारों में से प्रत्येक के सिर पर अलग अलग अपने हाथ रक्खें प्रीष्ट के पद के पानेहारे नम्रता से घुटने टेके रहें और बिशप कहे॥

ईश्वर की एक्लेसिया में प्रीष्ट का जो पद और कार्य्य अभी हमारे हाथों के रखने के द्वारा तुझ को सौंपा जाता है उस के लिये पवित्र आत्मा को ले। जिन के पापों को तू क्षमा करे उन के क्षमा किये जाते हैं और जिन के पापों को तू रक्खे रहे उन के रक्खे हुए हैं और तू ईश्वर के वचन और उस के पवित्र सक्रामेन्तों का विश्वस्त बांटनेहारा हो पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से। आमेन्॥

तब वे घुटने टेके रहें और बिशप उन में से प्रत्येक के हाथ में धर्म्म पुस्तक देके कहे॥

जिस मण्डली में तू ईश्वर के वचन के प्रचारने और और पवित्र सक्रामेन्तों सम्बन्धी परिचर्य्या करने के लिये यथार्थ रीति से बुलाया जावेगा उस में ऐसा करने का अधिकार ले॥

प्रीष्टों के स्थापन की पद्धति और विधि

इस के अनन्तर नीकिया का विश्वासवचन गाया वा कहा जावे और इस के उपरान्त बिशप सहभागिता की अवशिष्ट विधि को करे और जितने अभी प्रीष्ट बन गये वे सब एकट्ठे उस को लें और जिस स्थान में उन पर हाथ रक्खे गए उसी स्थान में वे सहभागिता के पाने लों रहें ॥

जब सहभागिता हो चुके तब पिछली प्रार्थना के अनन्तर और आशीर्वाद के पहिले ये प्रार्थनाएं कही जावें ॥

हे अत्यन्त दयालु पिता हम बिनती करते हैं कि तू अपने इन दासों को अपनी स्वर्गीय आशीष दे कि उन को धर्म्म का वस्त्र पहिनाया जावे और तेरा वचन जो उन के मुंह से कहा जावे ऐसा सफल होवे कि वह कभी व्यर्थ न हो। और हम को यह अनुग्रह भी दे कि जो कुछ वे तेरे अति पवित्र वचन में से अथवा उस के अनुसार सुनावें उस को हम अपने त्राण का कारण समझ के सुनें और ग्रहण करें जिस्तें हम अपने सब वचनों और कर्म्मों में तेरी महिमा और तेरे राज्य की वृद्धि के लिये यत्न करें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन् ॥

हे प्रभु हमारे सब कार्य्यों में अपने अत्यन्त अनुग्रह से हमारी अगुवाई कर और अपनी निरन्तर सहायता से हमें आगे बढ़ा कि हम अपने सब कार्य्यों को तुझ में आरम्भ करें तुझ में करते रहें और तुझी में समाप्त भी करें जिस्तें तेरे पवित्र नाम की महिमा होवे और हम अन्त को तेरी दया से अनन्त जीवन प्राप्त करें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन् ॥

ईश्वर की शान्ति जो सारी समझ से परे है तुम्हारे हृदय और मन की ईश्वर और उस के पुत्र हमारे प्रभु येशू खीष्ट के ज्ञान और प्रेम में रक्षा करे और ईश्वर सर्वशक्तिमान् पिता पुत्र और पवित्रात्मा की आशीष तुम पर होवे और सर्वदा तुम्हारे संग रहे। आमेन् ॥

प्रीष्टों के स्थापन की पद्धति और विधि

और यदि एक ही दिन में डीकन का पद कितनों को और प्रीष्ट का पद कितनों को दिया जावे तो चाहिये कि पहले डीकन उपस्थित किये जावें और तदनन्तर प्रीष्ट और लितनिया दोनों के लिये एक ही बार कही जावे। सहभागिता के विधि में दोनों विशेष प्रार्थनाएं काम आवें पहले डीकनों की और तदनन्तर प्रीष्टों की। पत्री एफेसियों ४। ७ – १३ होवे जैसा इसी पद्धति में ठहर चुका है। इस के अनन्तर जो डीकन बननेहारे हैं उन से परीक्षा लिई जावे और वे स्थापित किये जावें। जैसा ऊपर आज्ञा भई तब उन में से एक जन सुसमाचार को पढ़े सो चाहे पवित्र मत्तय ९। ३६—३८ होवे जैसा इसी पद्धति में ठहर चुका है चाहे पवित्र लूका १२। ३५ – ३८ जैसा डीकनों के स्थापन की पद्धति में ठहरा है तब प्रीष्ट बननेहारों से भी परीक्षा लिई जावे और वे स्थापित किये जावें जैसा इसी पद्धति में ठहर चुका है॥

आर्चबिशप अथवा बिशप

के स्थापन वा संस्कार

की विधि

जो सदा किसी इतवार वा तेवहार को किया जावे

जब एक्लेसिया में सब कुछ सिद्ध और निष्पन्न हो चुके तो प्रातःकाल की प्रार्थना के अनन्तर आर्चबिशप अथवा और कोई नियुक्त बिशप सहभागिता की विधि को आरम्भ करे। इस में पत्री से पहिले की प्रार्थना यही होवे॥

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू ने अपने पुत्र येशू खीष्ट के द्वारा अपने पवित्र प्रेरितों को बहुत से उत्तम दान देके उन को आज्ञा दिई कि मेरे झुण्ड को चराओ हम विनती करते हैं कि तू सब बिशपों को जो तेरी एक्लेसिया के पालक हैं यह अनुग्रह दे कि वे तेरा वचन यत्न से प्रचारें और उस के अनुसार धार्मिक शासन यथार्थ रीति से किया करें और मण्डलियों को यह वर दे कि वे अधीनता से उस के अनुगामी होवें जिस्तें सब के सब अनन्त महिमा का मुकुट पावें हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

तब कोई दूसरा बिशप पत्री को पढ़े॥

१ तीम। ३। १।

यह वचन विश्वास योग्य है कि यदि कोई बिशप के काम की आकांक्षा करे तो वह भले कार्य्य की इच्छा करता है। सो उचित है कि बिशप निष्कलंक एक ही स्त्री का पति मिताचारी संयमी नियम से चलनेहारा अतिथि सेवक सिखाने के योग्य होवे न मद्यप न मार पीट करनेहारा परन्तु कोमल मिलनसार निर्लोभ अपने घर की प्रधानता भली भान्ति करनेहारा होवे और उस के बालक सारी गम्भीरता से बश में रहते होवें क्योंकि यदि कोई अपने घर की प्रधानता करना

नहीं जानता तो वह किस रीति से ईश्वर की एक्लेसिया की सुधि लेगा। फिर वह नवशिष्य न होवे न हो कि गर्व से फूलके दुष्टात्मा के दण्ड में पड़े। और बाहरवालों से भी उस को शुभ नाम होना चाहिये न हो कि वह कलंक में और दुष्टात्मा के फंदे में फंसे॥

अथवा यह॥

पत्री की सन्ती प्रेरितों। २०। १७।

पौल ने मीलेत से एफेस में लोग भेजके एक्लेसिया के प्रीष्टों को बुलवाया। और जब वे उस के पास पहुंचे तो उस ने उन से कहा कि तुम आप जानते हो कि जिस दिन से मैं ने आसिया में प्रवेश किया तब से मैं सदा तुम्हारे संग कैसे रहा कि मैं मन की सारी नम्रता और आंसू बहाने और उन परीक्षाओं से जो यहूदियों के घात में रहने से मुझ पर पड़ती थीं प्रभु की सेवा करता रहा कि मैं ने कोई लाभदायक बात तुम को बताने और मण्डली में और घर घर तुम को सिखाने से नहीं हटा यहां लों कि मैं यहूदियों और यवनों के साम्हने ईश्वर के आगे पश्चात्ताप और हमारे प्रभु येशू खीष्ट पर विश्वास करने के विषय में साक्षी देता रहा। और अब देखो मैं आत्मा में बंधा हुआ यरूशलेम् को जाता हूं और नहीं जानता कि वहां मुझ पर क्या क्या बीतेगा केवल इतना ही जानता हूं कि पवित्रात्मा प्रत्येक नगर में यह साक्षी देके मुझे बताता है कि मेरे लिये बन्धन और क्लेश धरे हुए हैं। परन्तु मैं अपने प्राण को अपना प्रिय जानके कुछ गिनती में नहीं ले आता जिस्तें मैं अपनी दौड़ को और उस सेवकाई को जो मैं ने प्रभु येशू से पाई कि ईश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार के विषय साक्षी देऊं पूरा कर सकूं। और अब देखो मैं जानता हूं कि तुम सब जिन के बीच में राज्य का प्रचार करता हुआ फिरता था मेरा मुख फिर कभी न देखोगे। इस लिये मैं आज के दिन तुम्हारे

साम्हने साक्षी देता हूं कि मैं सब के लहू से निर्दोष हूं। क्योंकि मैं ईश्वर के सारे अभिप्राय में से कुछ तुम को बताने से नहीं हटा। अपनी और उस समस्त झुण्ड की चौकसी करो जिस में पवित्रात्मा ने तुम्हें बिशप ठहराया है कि तुम ईश्वर की एक्लेसिया की चरवाही करो जिस को उस ने अपने निज रुधिर से मोल लिया। मैं जानता हूं कि मेरे चले जाने के पीछे क्रूर हुंडार तुम में प्रवेश करेंगे और झुण्ड को न छोड़ेंगे वरन तुम में से भी ऐसे पुरुष उठेंगे जो उलटी बातें कहेंगे जिस्तें शिष्यों को अपने पीछे खींच लेवें। इस लिये जागते रहो और स्मरण रक्खो कि तीन बरस लों मैं रात दिन प्रत्येक जन को आंसू बहा बहाके चिताने से नहीं रुका। और अब मैं तुम्हें ईश्वर और उस के अनुग्रह को सौम्पता हूं जो तुम्हारी उन्नति कर सकता और तुम्हें सब पवित्री कृतों में भाग दे सकता है। मैं ने किसी के सोने वा रूपे के वस्त्र का लालच नहीं किया। तुम आप जानते हो कि मैं ने इन्हीं हाथों से अपनी और अपने संगियों की आवश्यकताओं को दूर किया सब बातों में मैं ने तुम को उदाहरण दिखाया कि तुम को उसी रीति से श्रम कर करके दुर्बलों की सहायता करनी और प्रभु येशू के शब्दों को स्मरण रखना चाहिये कि उस ने आप कहा कि देना लेने से अधिक धन्य है॥

तब दूसरा बिशप सुसमाचार को पढ़े॥

योहानान्। २१। १५।

येशू ने शिमोन् पेत्र से कहा कि हे योहानान् के पुत्र शिमोन् क्या तू मुझ से इन से अधिक प्रेम रखता है। उस ने उस से कहा हां हे प्रभु तू जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूं। उस ने उस से कहा मेरे मेम्नों को चरा। उस ने उस से फिर दूसरी बार कहा कि हे योहानान् के पुत्र शिमोन् क्या तू मुझ से प्रेम रखता है। उस ने उस

से कहा हां हे प्रभु तू जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूं उस ने उस से कहा मेरी भेड़ों की चरवाही कर उस ने तीसरी बार उस से कहा हे योहानान् के पुत्र शिमोन् क्या तू मुझ से प्रीति रखता है। पेत्र इस से शोकित भया कि उस ने उस से तीसरी बार कहा क्या तू मुझ से प्रीति रखता है और उस से कहा हे प्रभु तू तो सब कुछ जानता है तू देखता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूं। येशू ने उस से कहा मेरी भेड़ों को चरा॥

अथवा यह॥

पवित्र योहानान्। २०। १६।

उसी दिन जो सप्ताह का पहिला दिन था सांझ के समय जब जहां शिष्य थे तहां के द्वार यहूदियों के डर के मारे बन्द थे तब येशू आया और बीच में खड़ा होके उन से कहा तुम को शान्ति मिले। और यह कहके उस ने उन को अपने हाथ और अपना पांजर दिखाया। तब शिष्य प्रभु को देखके आनन्दित भये। सो येशू ने उन से फिर कहा तुम को शान्ति मिले जैसे मेरे पिता ने मुझ को भेजा है तैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं। और यह कहके उस ने उन पर फूंका और उन से कहा पवित्रात्मा को लेओ जिन के पापों को तुम क्षमा करो उन के क्षमा किये जाते हैं जिन के तुम रक्खे रहो उन के रक्खे हुए हैं॥

अथवा यह॥

प० मत्तय। २८। १८।

येशू पास आया और उन से यह कहके बातें किईं कि स्वर्ग में और पृथ्वी पर का समस्त अधिकार मुझे दिया गया। सो तुम जाके

बिशप के स्थापन वा संस्कार की विधि

समस्त जातियों को पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम में बप्तिस्मा देके और जितनी बातें की मैं ने तुम्हें आज्ञा दिई सो उन्हें सिखाके शिष्य करो और देखो मैं युग की समाप्ति लों प्रतिदिन तुम्हारे संग हूं ॥

सुसमाचार और नीकिया के विश्वासवचन और उपदेश के अनन्तर दो बिशप चुने हुए बिशप को जो अपना रोचित पहिने हुए रहे उसी प्रदेश के आर्चबिशप अथवा किसी और बिशप के साम्हने जो अधिकारवालों से नियुक्त हुआ होवे उपस्थित करें । आर्चबिशप पवित्र भोजनमंच के पास अपनी कुरसी पर बैठा रहे और उपस्थित करनेहारे बिशप कहें ॥

ईश्वर में अतिमान्य पिता हम इस भक्तिमान् और विद्यावान् पुरुष को आप के साम्हने उपस्थित करते हैं कि वह बिशप के पद पर स्थापित और संस्कार किया जावे ॥

तब आर्चबिशप संस्कार के लिये महारानी के आज्ञापत्र को मांगके पढ़वावे ॥
तब वह यह कहके मण्डली को जो उपस्थित है प्रार्थना करने को उभाड़े ॥

हे भाइयो प० लूका के सुसमाचार में लिखा है कि जब हमारा त्राता ख्रीष्ट अपने बारह प्रेरितों को चुनके भेजने पर था तो उस से पहिले उस ने सारी रात प्रार्थना करने में बिताई । फिर प्रेरितों के कर्म्मों में लिखा है कि जो शिष्य अन्त्योखिया में रहते थे उन्हों ने जब पौल और बर्णबूआ पर हाथ रखके उन्हें भेजने पर थे तब उपवास और प्रार्थना किई सो हम अपने त्राता येशू ख्रीष्ट और उस के प्रेरितों के उदाहरण के अनुसार पहिले प्रार्थना करें और तब इस जन को जो हमारे साम्हने उपस्थित किया गया उस कार्य्य में भागी करें और उस काम के करने को भेजें जिस के लिये हमें जान पड़ता है कि पवित्रात्मा ने उस को बुलाया है ॥

बिशप के स्थापन वा संस्कार की विधि

तब लितनिया कही जावे जैसे डीकनें के स्थापन की विधि में लिखी है पर केवल इस वाक्य के अनन्तर कि कृपा करके सब बिशपों इत्यादि जो बिशेष वाक्य उस विधि में आता है सो छोड़ दिया जावे और उस की सन्ती यह वाक्य कहा जावे ॥

कृपा करके हमारे इस चुने हुए भाई पर आशीष दे और अपना अनुग्रह उस में उंडेल कि जिस पद के लिये वह बुलाया जाता है उस के कार्य्य को वह योग्य रीति से करे जिस्तें तेरी एक्लीसिया की उन्नति और तेरे नाम की प्रतिष्ठा स्तुति और महिमा होवे ॥

उत्तर। हे दयालु प्रभु हम बिनती करते हैं कि तू हमारी सुन॥

इस के अनन्तर यह प्रार्थना पढ़ी जावे ॥

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर सब उत्तम पदार्थों के दाता तू ने अपने पवित्रात्मा के द्वारा अपनी एक्लीसिया में सेवकों के अनेक पद ठहराए हैं दया करके अपने इस दास पर जो अभी बिशप के कार्य्य और सेवकाई के लिये बुलाया गया है दृष्टि कर और उस को अपनी शिक्षा के सत्य से ऐसा परिपूर्ण और चाल चलन की निर्दोषता से ऐसा आभूषित कर कि वचन से और कर्म्म से भी वह इस पद में तेरी सेवा विश्वस्तता से करे जिस्तें तेरे नाम की महिमा और तेरी एक्लीसिया की बढ़ती और सुशासन होवे हमारे त्राता येशू खीष्ट के पुण्य के द्वारा जो तेरे और पवित्रात्मा के संग अब और युगानयुग जीता और राज्य करता है। आमेन् ॥

तब आर्चबिशप अपनी कुरसी पर बैठा हुआ संस्कार होनेवाले से यूं कहे ॥

हे भाई पवित्र शास्त्र और प्राचीन कनोन यह आज्ञा करते हैं कि हम किसी पर हाथ रखने और उसे खीष्ट की उस एक्लीसिया के शासन

करने में जिसे उस ने अपने रुधिर ही बहाने के दाम से मोल लिया है भागी करने में उतावली न करें इस लिये तुम को इस सेवकाई में भागी करने से पहिले मैं कई एक विषयों में तुम्हारी परीक्षा लेऊंगा जिस्तें यह मण्डली तुम को जांचके साक्षी दे सके कि तुम ईश्वर की एक्लेसिया में कैसी चाल चलने का संकल्प करते हो ॥

क्या तुम को निश्चय है कि तुम हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट की इच्छा और इस राज्य की रीति के अनुसार इस सेवकाई के लिये सच मुच बुलाए गए हो ॥

उत्तर। हां मुझ को यह निश्चय है ॥

आर्चबिशप।

क्या तुम्हें निश्चय है कि जितनी शिक्षा उस अनन्त त्राण के लिये आवश्यक है जो येशू ख्रीष्ट के विश्वास के द्वारा मिलती है सो सब पवित्र शास्त्र में यथावश्यक रीति से पाई जाती है। और क्या तुम ने ठाना है कि जो लोग तुम को सौंपे गए उन को उसी शास्त्र में से शिक्षा देओगे और जिस बात के विषय में तुम्हें निश्चय होवे कि उसी शास्त्र से उस का पक्का प्रमाण हो सकता है उस को छोड़ और किसी बात को अनन्त त्राण के लिये आवश्यक कहके न सिखाओगे ॥

उत्तर। हां मुझे ऐसा ही निश्चय है और मैं ने ठाना भी है कि ईश्वर के अनुग्रह से ऐसा ही करूंगा ॥

आर्चबिशप।

सो क्या तुम उसी पवित्र शास्त्र पर नेम से ध्यान किया करोगे और उस की यथार्थ समझके प्राप्त करने के लिये प्रार्थना करके ईश्वर को पुकारा करोगे ऐसा कि तुम उस के द्वारा गुणदायक शिक्षा देके सिखा और समझा सकोगे और जो विरुद्ध कहनेहारे हैं उन का साम्हना और उन को निरुत्तर कर सकोगे ॥

उत्तर। हां मैं ईश्वर की सहायता से ऐसा ही करूंगा ॥

बिशप के स्थापन वा संस्कार की विधि

आर्चबिशप ।

क्या तुम सिद्ध हो कि पूरी विश्वस्तता और यत्न से सब झूठी और बिरानी शिक्षा को जो ईश्वर के वचन के विरुद्ध होवे निकालके दूर करो और घर घर और मण्डली में भी औरों को वही करने के लिये आज्ञा देओगे और उभाड़ोगे ॥

उत्तर । हां प्रभु मेरा सहायक होवे तो मैं सिद्ध हूं ॥

आर्चबिशप

क्या तुम सब अभक्ति और संसारिक इच्छाओं को त्यागके इस वर्त्तमान् युग में संयम धर्म्म और भक्ति से जीवन बिताओगे जिस्तें तुम सब बातों में अपने को औरों के लिये सुकर्म्मों का उदाहरण दिखाओ ऐसा कि बादी जब तुम पर कुछ कलंक न लगा सकेगा तो लज्जित हो जावे ॥

उत्तर । हां प्रभु मेरा सहायक होवे तो मैं ऐसा ही करूंगा ॥

आर्चबिशप ॥

क्या तुम सब मनुष्यों में शांति मेल मिलाप और प्रेम को शक्तिभर स्थिर रक्खोगे और बढ़ाओगे और तुम्हारी दियोकेसि में जितने झगड़ालू आज्ञाभंगी और कुकर्म्मी होवें उन को उस अधिकार के अनुसार जो तुम को ईश्वर के वचन से प्राप्त है और इस राज्य के प्रबन्ध से तुम को सौंपा जावेगा ताड़ना करोगे और उन को दण्ड देओगे ॥

उत्तर । हां मैं ईश्वर की सहायता से ऐसा ही करूंगा ॥

आर्चबिशप ॥

क्या तुम औरों को स्थापन करने और भेज देने और उन पर हाथ रखने मे विश्वस्त रहोगे ॥

उत्तर । हां मैं ईश्वर की सहायता से ऐसा ही रहूंगा ॥

बिशप के स्थापन वा संस्कार की विधि

आर्चबिशप ।

क्या तुम अपना कोमल स्वभाव दिखाओगे और कंगाल और दरिद्र लोगों पर और सब निरालम्भ परदेशियों पर खीष्ट के निमित्त दयालू रहोगे ॥

उत्तर । हां ईश्वर की सहायता से मैं अपने को ऐसा ही कर दिखाऊंगा ॥

तब आर्चबिशप खड़ा होके कहे ॥

सर्वशक्तिमान् ईश्वर जिस ने तुम्हें इन सब बातों के करने की सुइच्छा दिई है तुम्हें उसे पूरा करने की भी शक्ति और सामर्थ्य देवे जिस्तें वह अपने कार्य्य को जो उस ने तुम्मे आरम्भ किया है समाप्त भी करे और तुम अन्तदिन में पूर्ण और निष्कलंक ठहरो हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा । आमेन् ॥

तब चुना हुआ बिशप बिशप के अवशिष्ट वस्त्रों को पहिनके घुटने टेके और वेनी क्रेआतोर स्पीरितुस नामक गीत उस पर गाया वा कहा जावे अर्थात् आर्चबिशप आरम्भ करे और बिशप लोग अरु और जो उपस्थित होवें बारी बारी उत्तर देवें ॥

जब यह समाप्त होवे तो आर्चबिशप कहे ॥

हे प्रभु हमारी प्रार्थना सुन ।

उत्तर । और हमारी दोहाई आप लों पहुंचने दे ॥

प्रार्थना करें ।

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर और अत्यन्त दयालु पिता तू ने अपनी अपार कृपा से अपने एकलौते और अति प्रिय पुत्र येशू खीष्ट को दिया कि वह हमारा छुड़ानेहारा और अनन्त जीवन का कर्त्ता होवे । उस ने हमारे छुटकारे को अपनी मृत्यु से पूरा करके और स्वर्ग पर चढ़के

अपने दान मनुष्यों पर बहुतायत से बरसाये और कितनों को प्रेरित कितनों को प्रवक्ता कितनों को सुसमाचारी कितनों को पालक और शिक्षक बनाया जिस्तें उस की एक्लेसिया बनती और पूर्ण होती जावे। हम बिनती करते हैं अपने इस दास को ऐसे अनुग्रह का दान दे कि वह तेरा सुसमाचार जो तेरे संग मिलाप का मंगल सँदेश है फैलाने पर सदा सिद्ध रहे और जो अधिकार उसे दिया जावेगा उसे नाश के लिये नहीं पर त्राण के लिये हानि के लिये नहीं पर सहाय के लिये काम में ले आवे ऐसा कि वह बुद्धिमान और बिश्वस्त सेवक की नाईं तेरे परिवार का भाग ठीक समय पर उन को दे देके अन्त में अनन्त आनन्द में भागी किया जावे हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा जो तेरे और पवित्रात्मा के संग एक ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता है। आमेन्॥

तब आर्चबिशप और जो बिशप उपस्थित होवें सो चुने हुए बिशप के सिर पर जो उन के साम्हने घुटने टेके हुए रहे अपने अपने हाथ रक्खें और आर्च- बिशप कहे॥

ईश्वर की एक्लेसिया में बिशप का जो पद और कार्य्य अभी हमारे हाथों के रखने के द्वारा तुझ को सौम्पा जाता है उस के लिये पवित्रात्मा को ले। पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से। आमेन्। और चेत रख कि ईश्वर का जो अनुग्रह हमारे इन हाथों के रखने के द्वारा तुझ को दिया जाता है उसे सुलगाया कर क्योंकि ईश्वर ने हम को भीरुता का नहीं परन्तु सामर्थ्य का और प्रेम का और संयम का आत्मा दिया है॥

तब आर्चबिशप उस को यह कहके एक धर्म्मपुस्तक सौम्पे॥

पढ़ने समझाने और सिखाने पर मन लगा। जो बातें इस पुस्तक में हैं उन पर ध्यान कर। उन में उद्योगी हो जिस्तें जो बढ़ती इस

से निकले सो सब पर प्रगट होवे। अपनी श्रोर शिक्षा की चैाकसी कर श्रोर उन बातों के करने में उद्योगी हो क्योंकि ऐसा करने से तू अपने को श्रोर अपने सुननेहारों को बचावेगा। ख्रीष्ट की झुण्ड के लिये हुण्डार नहीं पर गड़ेरिया हो उन्हें फाड़ मत खा परन्तु चरा। दुर्बलों को सम्भाल रोगियों को चंगा कर टूटे हुओं को जोड़ हांके हुओं को फेर लेश्रो खोए हुओं को ढूंढ़। दयालु ऐसा होश्रो कि तुम शिथिल स्वभाव न होश्रो शासन ऐसा करो कि तुम दया करने को न भूलो। जिस्तें जब प्रधान गड़ेरिया प्रगट होगा तब तुम महिमा का ऐसा मैार पाश्रो जो कभी न मुर्झावेगा हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमिन् ॥

तब आर्चबिशप सहभागिता की पद्धति को समाप्त करे श्रोर नया संस्कार किया हुआ बिशप श्रोरों समेत उस के संग उस में भागी होवे ॥

आशीर्वाद से पहिले पिछली प्रार्थना की सन्ती ये प्रार्थनाएं कही जावें ॥

हे अत्यन्त दयालु पिता हम विनती करते हैं कि अपने इस दास पर अपनी स्वर्गीय आशीष भेज श्रोर अपने पवित्रात्मा से उस को ऐसा परिपूर्ण कर कि वह तेरे वचन के प्रचारने में न केवल सारे धीरज श्रोर शिक्षा के साथ दोष दिखाने विनती करने श्रोर डांटने में उद्योगी होवे परन्तु विश्वासियों के लिये वचन में चाल चलन में प्रेम में विश्वास में जितेन्द्रियता में पवित्रता में गुणदायक उदाहरण होवे ऐसा कि वह अपनी दैाड़ को विश्वस्तता से पूरी करके अन्त्यदिन में धर्म्म के उस मुकुट को प्राप्त करे जिसे प्रभु ने जो धर्म्मी न्यायी है रख छोड़ा है वह पिता श्रोर पवित्रात्मा के संग एक ईश्वर युगानयुग जीता श्रोर राज्य करता है। आमिन् ॥

हे प्रभु हमारे सब कार्य्यों में अपने अत्यन्त अनुग्रह से हमारी अगुवाई कर श्रोर अपनी निरन्तर सहायता से हमें आगे बढ़ा कि हम

अपने सब कार्य्यों को तुझ में आरम्भ करें तुझ में करते रहें और तुझी में समाप्त भी करें जिस्तें तेरे पवित्र नाम की महिमा होवे और हम अन्त को तेरी दया से अनन्त जीवन प्राप्त करें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

ईश्वर की शान्ति जो सारी समझ से परे है तुम्हारे हृदय और मन को ईश्वर और उस के पुत्र हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के ज्ञान और प्रेम में रक्षा करे और ईश्वर सर्वशक्तिमान् पिता पुत्र और पवित्रात्मा की आशीष तुम पर होवे और सर्वदा तुम्हारे संग रहे। आमेन्॥

सर्वशक्तिमान् ईश्वर से धन्यवाद सहित प्रार्थना की पद्धति

जो इस राज्य की सब एक्लेसियाओं में प्रति वर्ष जून के २० दिन को जिस में श्रीमती महारानी ने अपना कुशलयुक्त राज्य आरम्भ किया काम में आया करे ॥

उपासना सब बातों में वही होवे जो तेवहारों में व्यवहृत होता है केवल जहां इस पद्धति में और आज्ञा भई वहीं उस से भिन्न होवे ॥

यदि जून का २० दिन इतवार को पड़े तो यह सारी पद्धति सर्वांग व्यवहार में आवे ॥

प्रातःकाल की उपासना इन वाक्यों से आरम्भ होवे ॥

सब से पहिले मैं यह उपदेश देता हूं कि विनतियां प्रार्थनाएं निवेदन धन्यवाद समस्त मनुष्यों के लिये किये जावें राजाओं और सब उच्चपदधारियों के लिये जिसतें हम चैन और शान्ति से अपना जीवन सारी भक्ति और गम्भीरता के साथ बितावें कि यह हमारे त्राता ईश्वर की दृष्टि में भला और ग्राह्य है। १ तीम। २। १, २, ३. ॥

यदि हम कहें कि हम निष्पाप हैं तो हम अपने को धोखा देते हैं और हम में सच्चाई नहीं पर यदि हम अपने पापों को अंगीकार करें तो वह ऐसा विश्वस्त और न्यायी है कि हमारे पापों को क्षमा करे और हम को सारे अधर्म्म से शुद्ध करे। १ योहानान् १। ८, ९॥

वेनीते की सन्ती यह गीत कहा वा गाया जावे। प्रीष्ट एक पद को और मण्डली दूसरे पद को बारी बारी कहें ॥

हे प्रभु हमारे स्वामी तेरा नाम सारी पृथिवी पर क्या ही प्रतापमय है। स्तोत्र। ८। १।

धन्यवाद सहित प्रार्थना की पद्धति

हे प्रभु मनुष्य क्या है कि तू उस की सुधि लेवे। मनुष्य का पुत्र क्या है कि तू उस को गिनती में ले आवे। १४४। ३।

उस ने अपने आश्चर्य्यकर्म्मों का एक स्मारक ठहराया है। प्रभु करुणामय और वत्सल है। १११। ४।

लोग प्रभु की दया के हेतु उस का धन्यवाद करते। और उस के आश्चर्य्यकर्म्मों के कारण जो वह मनुष्यजाति के लिये करता है। १०७।२१।

हे ईश्वर हमारी फरी देख। और अपने अभिषिक्त के मुख पर दृष्टि कर। ८४। ६।

उस के पांव अपने मार्गों पर स्थिर रख। उस के पग न टलने पावें। १७। ५।

महारानी को चिरंजीव कर। उस को अपने मुख के आनन्द से आह्लादित कर। ६१। ६। और २१। ६।

वह तेरे साम्हने युगानयुग बनी रहे। उस की रक्षा करने के लिये दया और सत्य को स्थापित कर। ६१। ७।

उस के दिनों में धर्म्मी फूले फले। और हमारे समस्त देश में मेल रहे। ७२। ७। और १४७। १४।

उस के शत्रुओं को लज्जा का वस्त्र पहिना। परन्तु उस के सिर पर उस का मुकुट शोभित रहे। १३२। १८।

धन्य होवे प्रभु परमेश्वर जो यिस्राएल् का ईश्वर है। कि केवल वही आश्चर्य्यकर्म्म करता है। ७२। १।

और उस का महिमायुक्त नाम सदा धन्य होवे। और सम्पूर्ण पृथिवी उस की महिमा से परिपूर्ण होवे आमेन् और आमेन्॥

पिता की और पुत्र की। और पवित्रात्मा की महिमा होवे।

जैसी आदि में थी और अब है। और सदा वरन युगानयुग रहेगी। आमेन्॥

धन्यवाद सहित प्रार्थना की पद्धति

विशेष स्तोत्र- २०-२१-१०१।

विशेष पाठ ।

पहिला । येशू १ । १ से ६ के अन्त लों ।
तेदेउम् ।

दूसरा । रोमियों । १३ ।
यूबिलाते देओ ।

विश्वास वचन के अनन्तर के वाक्य येही होवें ॥

प्रीष्ट । हे प्रभु अपनी दया हम पर प्रगट कर ॥
उत्तर । और अपना त्राण हमें दान दे ॥
प्रीष्ट । हे प्रभु महारानी की रक्षा कर ॥
उत्तर । कि वह तुझ पर भरोसा रखती है ॥
प्रीष्ट । अपने पवित्रस्थान में से उस के लिये सहायता भेज ॥
उत्तर । और सदा अपनी शक्ति से उस की रक्षा करता रह ॥
प्रीष्ट । उस के शत्रु उस पर कुछ दांव न पावें ॥
उत्तर । दुष्ट उस की हानि करने को उस के निकट फटकने न पावें ॥
प्रीष्ट । अपने सेवकों को धर्म्म का वस्त्र पहिना ॥
उत्तर । और अपने चुने हुए लोगों को आनन्दित कर ॥
प्रीष्ट । हे प्रभु अपने निज लोगों की रक्षा कर ॥
उत्तर । और अपने निज भाग को आशीष दे ॥
प्रीष्ट । हे प्रभु हमारे दिनों में मेल रहे ॥
उत्तर । क्योंकि तुझे छोड़ हे ईश्वर दूसरा कोई नहीं जो हमारे लिये लड़े ॥
प्रीष्ट । हे प्रभु हमारे लिये एक दृढ़ गढ़ हो ॥
उत्तर । हमारे शत्रुओं के साम्हने ॥
प्रीष्ट । हे प्रभु हमारी प्रार्थना सुन ॥
उत्तर । और हमारी दोहाई आप लों पहुंचने दे ॥

धन्यवाद सहित प्रार्थना की पद्धति

प्रातःकाल की उपासना में की पहिली प्रार्थना की सन्ती यह प्रार्थना जिस में महारानी के गद्दी पर बैठने के लिये धन्यवाद भी है पढ़ी जावे ॥

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तू जगत के समस्त राज्यों पर प्रभुता रखता और अपनी इच्छा ही के अनुसार उन का प्रबन्ध करता है हम अन्तःकरण से तेरा धन्यवाद करते हैं कि तू मानो आज के दिन अपनी दासी हमारी स्वामिनी महारानी विक्तोरिया को इस राज्य के सिंहासन पर विराजमान करने को प्रसन्न हुआ तेरी बुद्धि उस की अगुआई करे और तेरी भुजा उस को सम्भालती रहे। न्याय सच्चाई पवित्रता मेल मिलाप प्रेम और जितने गुण खीष्टीय धर्म्म को शोभा देते हैं सो सब उस के दिनों में बढ़ते रहें उस के सब परामर्शों और यत्नों से अपनी महिमा और उस की प्रजा की भलाई करा और हम को अनुग्रह दे कि उस की आज्ञाएं प्रसन्नता से अपना धर्म्म समझके माना करें जिस्तें जो यत्न वह प्रजा की भलाई के लिये करती है सो न हमारी कुइच्छाओं से न हमारे स्वार्थ से रुकें उस की प्रजा सदा उस से स्नेह रक्खें जिस्तें वे सदा उस का आदरभाव करें और उस के अधिकार को नम्रता से मानते रहें तू यह वर दे कि वह कुशल मंगल से चिरकाल लों राज्य करती रहे और परलोक में अमरतारूपी मुकुट पावे हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन् ॥

इस दिन लितानिया सदा काम में आवे और उस के अन्त में उस प्रार्थना के अनन्तर जिस के आरम्भ में यह है कि हे पिता हम नम्रता से विनती करते हैं यह प्रार्थना महारानी और राज्य कुटुम्ब के लिये पढ़ी जावे ॥

हे प्रभु हमारे ईश्वर तू स्वर्ग और पृथिवी पर की समस्त वस्तुन को सम्भालता और उन का प्रबन्ध करता है हम अपनी महास्वामिनी विक्तोरिया के निमित्त जो मानो आज के दिन हमारी महारानी

धन्यवाद सहित प्रार्थना की पद्धति

होने के लिये हमारे ऊपर ठहराई गई जो प्रार्थनाएं नम्रता से और जो धन्यवाद अन्त:करण से करते हैं उन्हें ग्रहण कर। और उस के साथ अल्वर्ट एडवर्ड युवराज और युवराजपत्नी और समस्त राज-कुटुम्ब को आशीष दे जिस्तें वे सब तेरी कृपा पर सदा भरोसा रख के और तेरी शक्ति से रक्षा पाके और तेरे अनुग्रह और अनन्त दया से आभूषित होके स्वास्थ्य शान्ति आनन्द और प्रतिष्ठा में तेरे साम्हने बने रहें और इस लोक में चिरंजीव और कुशल से रहें और परलोक में स्वर्ग के राज्य में अनन्त जीवन और महिमा प्राप्त करें हमारे त्राता खीष्ट येशू के पुण्य और मध्यस्थता के द्वारा जो पिता और पवित्रात्मा के संग सदा एक ईश्वर युगानयुग जीता और राज्य करता है। आमेन्॥

इस के अनन्तर यह प्रार्थना कि ईश्वर महारानी की उस के सब शत्रुओं से रक्षा करे पढ़ी जावे॥

हे अति अनुग्राही ईश्वर तू ने अपनी दासी हमारी महारानी विक्तोरिया को उस के पुरुखाओं के सिंहासन पर विराजमान किया है हम अति नम्रता से विनती करते हैं कि तू उन सब जोखिमों से जिन में उस के पड़ने का डर हो उस की रक्षा कर हठीलों के समागम और दुष्ट कर्म्मियों के द्रोह से उस की आड़ हो उस के सब शत्रुन के हाथों को स्तम्भन कर उन के परामर्शों को भंग और उन के उपायों को व्यर्थ कर ऐसा कि न किसी गुप्त दुष्ट प्रबन्ध से न किसी खुला-खुली द्रोह से उस के राज्य के चैन में हानि होवे परन्तु वह तेरे पंख की छाया तले सुरक्षित रहके और तेरे सामर्थ्य से सम्भलके सारे विरोधियों पर ऐसी जयवन्त होवे कि संसार को मानना पड़े कि सब क्लेशों और विपत्तियों में तू ही उस का रक्षक और सामर्थी बचानेहारा है हमारे प्रभु येशू खीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

धन्यवाद सहित प्रार्थना की पद्धति

तब पार्लमेण्ट की श्रेष्ठ सभा के लिये जो प्रार्थना है सो यदि वह एकट्ठी रहे तो यहां पढ़ी जावे ॥

सहभागिता की पद्धति में पत्री के पढ़ने के पहिले ही महारानी विषयक प्रार्थना और उस दिन की प्रार्थना दोनों की सन्ती यह प्रार्थना पढ़ी जावे जिस में महारानी को इस एक्क्लीसिया की प्रधान स्वामिनी जानके उस के निमित्त प्रार्थना किई जाती है ॥

हे धन्य प्रभु तू ने ख्रीष्टियान राजाओं को इस लिये बुलाया है कि तेरे विश्वास की रक्षा करें और उन का धर्म्म ठहराया है कि अपनी प्रजा की न केवल लौकिक भलाई पर अलौकिक मंगल के लिये भी यत्न करें हम नम्रता और कृतज्ञता से तेरी इस बड़ी कृपा को मानते हैं कि तू ने अपनी दासी हमारी अति अनुग्राहिणी महारानी को इस एक्क्लीसिया और देश के ऊपर ठहराया है। हम बिनती करते हैं कि तू उन सब स्वर्गीय गुणों को जो ऐसे ऊंचे पद के लिये आवश्यक हैं उसे दान कर तू जो उस का ईश्वर है तेरा काम उस के हाथों में सफल होवे और तेरा जो सत्य धर्म्म हमारे बीच में स्थापित भया है उस की सेवा के लिये जो जो उपाय वह करती है उन को वह अपने नेत्रों से सफल भी देखने पावे और जहां जहां तेरा सत्य रोका और दबाया जाता है तहां तहां तू उस की रक्षा और वृद्धि का उस को एक धन्य कारण कर। कपट धर्म्मापमान असारधर्म्म और मूर्त्तिपूजा उस के साम्हने से भाग जावें पाषण्डों और झूठे मतों से एक्क्लीसिया के चैन में बाधा न पड़े और न वह फूटों और अनर्थ विभेदों से दुर्बल होवे परन्तु हमें यह वर दे कि हम तुझ अपने ईश्वर की सेवा करने में और तेरी इच्छा के अनुसार उस की आज्ञा मानने में एक मन और एक मत होवें और इस लिये कि ये आशीषें पीढ़ी से पीढ़ी लों बनी रहें उस के वंश में उस की राजगद्दी पर कोई न कोई बैठनेहारा सदा बना रहे जिस्तें हमारा वंश उस के पोतों

पर पोतों को और यिस्राएल् में शान्ति देखने पावे । तो हम जो तेरी प्रजा और तेरे चराव की भेड़ें हैं सदा तेरा धन्यवाद करेंगे और युगानयुग तेरा गुणानुवाद करते रहेंगे । आमेन् ॥

पत्री । १ पेत्र । २ । ११ ।

हे प्रियो मैं तुम को प्रवासी और परदेशी जानके तुम से विनती करता हूं कि शारीरिक अभिलाषाओं से जो जीव के विरुद्ध लड़ती हैं परे रहो और तुम्हारा चालचलन अन्यजातियों में अच्छा रहे जिस्तें जिस बात में वे तुम को कुकर्म्मी जानके बुरा कहते हैं उसी में वे तुम्हारे सुकर्म्मों को देखके उन के हेतु उस दिन जिस में उन पर कृपा दृष्टि होगी ईश्वर की महिमा करें । प्रभु के निमित्त मनुष्यों के प्रत्येक विधान के अधीन रहो चाहे राजा होवे क्योंकि वह सब के ऊपर है चाहे अधिपति होवें क्योंकि वे उसी के द्वारा कुकर्म्मियों को दण्ड और सुकर्म्मियों की प्रशंसा करने के लिये भेजे जाते हैं । क्योंकि ईश्वर की यही इच्छा है कि तुम सुकर्म्म करने से निर्बुद्धि मनुष्यों के अज्ञान का मुंह चुप करो । अपने को निर्बन्ध तो समझो पर तुम्हारी निर्बन्धता दुष्टता की आड़ न हो वरन अपने को ईश्वर के दास जानो । सब का आदर करो भ्रातृगण से प्रेम रक्खो ईश्वर का भय मानो राजा का आदर किया करो

सुसमाचार । मत्तय । २२ । १६

और उन्हों ने अपने शिष्यों को हेरोदियानों समेत यह पूछने के लिये भेजा कि हे गुरू हम जानते हैं कि तू सच्चा है और ईश्वर के मार्ग को सच्चाई से सिखाता है और तुझ को इस की चिन्ता नहीं कि कौन क्या कहेगा क्योंकि तू मनुष्यों की मुंहदेखी नहीं करता । सो हम से कह तू क्या समझता है कैसर् को कर देना उचित है कि नहीं ।

पर येशू ने उन की दुष्टता को जानके कहा रे कपटियो तुम मेरी परीक्षा क्यों करते हो कर की मुद्रा मुझे दिखाओ। और वे उस के पास एक अठन्नी ले आये। और उस ने उन से कहा यह मूर्त्ति और यह नाम किस के हैं। उन्हों ने उस से कहा कैसर् के। तब उस ने उन से कहा भला जो कुछ कैसर् का है सो कैसर् को और जो कुछ ईश्वर का सो ईश्वर को देओ। और यह सुनके उन्हों ने अचम्भा किया और उस को छोड़के चले गये॥

नोकया के विश्वास वचन के अनन्तर उपदेश होवे॥

अर्पण की विधि में यह वाक्य पढ़ा जावे॥

तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने ऐसा चमके कि वे तुम्हारे सुकर्म्मों को देखकर तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है महिमा करें। मत्तय। ५। १६।

उस प्रार्थना की सन्ती जो खीष्ट की समस्त एक्लीसिया इत्यादि के लिये है ये प्रार्थनाएं काम आवें॥

एकता के लिये प्रार्थना।

हे ईश्वर तू जो हमारे एक ही त्राता और सन्धिपति हमारे प्रभु येशू खीष्ट का पिता है हम को अनुग्रह दे कि यह भली भांति मन लगाके सोचें कि अपने हानिकारक विभेदों के कारण हम कैसे बड़े जोखिमों में पड़े हैं सब बैर और पक्षपात और जो कुछ हम को भक्ति-युक्त मेल मिलाप से रोकता है उसे दूर कर। ऐसा कि जिस रीति से एक देह और एक आत्मा और हमारी बुलाहट की एक आशा और एक प्रभु और एक विश्वास और एक बप्तिस्म और हम सभों का एक ईश्वर और पिता है उसी रीति से हम अब से सब के सब एक चित्त

धन्यवाद सहित प्रार्थना की पद्धति

और एक प्राण होवें और सत्य और सान्ध विश्वास और प्रेम के एक पवित्र बन्धन से मिले रहें और एक मन और एक मुंह से तेरी महिमा करते रहें हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

हे प्रभु हम विनती करते हैं यह वर दे कि इस संसार के प्रवाह का प्रबन्ध तेरे शासन से ऐसी शान्ति के साथ होवे कि तेरी एक्लीसिया पूर्ण भक्तियुक्त चैन से तेरी सेवा आनन्द के साथ करे। हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर हम विनती करते हैं तू यह वर दे कि जो बातें आज हम ने अपने शारीरिक कानों से सुनी हैं सो तेरे अनुग्रह से हमारे हृदय में ऐसी जड़ पकड़ें कि वे हम में सुचाल का फल फलें जिस्तें तेरे नाम की प्रतिष्ठा और स्तुति होवे। हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के द्वारा। आमेन्॥

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर सम्पूर्ण ज्ञान के सोते तू हमारे मांगने से पहिले हमारी आवश्यकताओं को और मांगने में हमारी अज्ञानता को जानता है हम विनती करते हैं कि तू हमारी दुर्बलता पर करुणा की दृष्टि कर और जिन बातों को हम अपनी अयोग्यता के कारण मांगने का हियाव नहीं रखते और अपने अन्धेपन के कारण मांग नहीं सकते उन को तू कृपा करके अपने पुत्र हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट की योग्यता के हेतु हमें प्रदान कर। आमेन्॥

ईश्वर की शान्ति जो सारी समझ से परे है तुम्हारे हृदय और मन की ईश्वर और उस के पुत्र हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट के ज्ञान और प्रेम में रक्षा करे और ईश्वर सर्वशक्तिमान् पिता पुत्र और पवित्रात्मा की आशीष तुम पर होवे और सर्वदा तुम्हारे संग रहे। आमेन्॥

३९ धर्म्म सम्बन्धी निर्णय

जिन पर दोनों प्रदेशों के आर्चबिशप और बिशप और समस्त धर्म्म सेवक उस सभा में जो सन् १५६२ में लंडन में हुई सम्मत भये। इन निर्णयों का अभिप्राय यह था कि मत भेद न होने पावे और सत्य धर्म्म के विषय में सम्मति होवे। ये निर्णय राजा की आज्ञा से फिर छापे गये और उस का राजाधिकारयुक्त आज्ञावचन उन से पहिले लिखा गया॥

राजा का आज्ञावचन।

हम जो ईश्वर के विधान से अपनी यथार्थ पदवी के अनुसार अपने इस राज्य में विश्वास के रक्षक और एक्लीसिया के परम अधिपति हैं इस लिये हम समझते हैं कि हमारे इस राजपद और हमारे निज धर्म्मसम्बन्धी उद्योग के अति योग्य यह है कि जो एक्लीसिया हमें सौंपी गई है उस को सत्य धर्म्म की एकता और मेल के बन्धन में सुरक्षित रक्खें और ऐसे व्यर्थ बाद बिबाद वा सन्देह न होने देवें जिन से एक्लीसिया में और राज्य प्रबन्ध में भी पक्षपात हो सकता है। इस लिये हम ने भली भान्ति बिचारके और हमारे बिशपों में से जितने सुभीते से एकट्ठे हो सकते थे उन से परामर्श लेके यह आज्ञावचन कहना उचित जाना है॥

१। अंग्लखण्ड की एक्लीसिया के जो निर्णय ग्रहण हो चुके और हैं और जिन पर हमारे अधिकार से स्थापित किये गये सब धर्म्मसेवक अपने हस्ताक्षर कर चुके हैं उन में अंग्लखण्ड की एक्लीसिया की वह सत्य शिक्षा है जो ईश्वर के अनुकूल है। इस लिये हम उन को दृढ़ीकृत करते हैं और अपनी समस्त विश्वस्त प्रजा को आज्ञा देते हैं कि वे सब के सब उन को अंगीकार करने में स्थिर रहें और उन को बरजते हैं कि वे उक्त निर्णयों से कुछ भी भेद न रक्खें। और इसी

अभिप्राय से हम आज्ञा देते हैं कि वे निर्णय फिर छापे जावें और हमारा यह आज्ञा वचन उन के संग प्रचारा जावे ॥

२। अंग्लखण्ड की एक्लेसिया के परम अधिपति हम हैं और यदि उस की बाहरी नीति वा विधिन वा कनोनों वा और किसी प्रकार के प्रबन्ध के विषय में कुछ मत भेद होवे तो धर्म्मसेवक गण हमारी मुद्रित अनुमति पाके अपनी निज सभा में उस भेद को दूर करें। और तब यदि वे देश की व्यवस्थाओं और रीतियों के विरुद्ध कुछ न ठहरावें तो हम उन के ठहराये हुए प्रबन्धादि पर अपनी प्रसन्नता प्रगट करेंगे ॥

३। हम जो राजा योग्य चिन्ता करते हैं कि एक्लेसिया के पदधारी अपना निज काम किया करें इस लिये बिशप गण और धर्म्मसेवक गण जब कभी कभी नम्रता पूर्व्वक प्रार्थना करें तो हम उन को अपनी मुद्रित अनुमति देवेंगे कि एक्लेसिया की सभा में एकट्ठे हो होके अंग्लखण्ड की एक्लेसिया की शिक्षा और शासन की स्थिति विषयक जो जो बातें वे प्रगट करें और हम भी मान लेवें उन सब का बिचार और अनुष्ठान करें। और जब यह बातें इस प्रकार से ठहराई जावें तब हम किसी को उन से एक डग भी हटने न देवेंगे ॥

४। इस वर्त्तमान काल में यद्यपि कुछ कुछ मत भेद भया है तौ भी हम को इस से बड़ी शान्ति होती है कि हमारे राज्य में जितने धर्म्मसेवक हैं उन्हों ने ठहराये हुए निर्णयों पर सदा बड़ी प्रसन्नता से हस्ताक्षर किया है। क्योंकि इस से हम यह बात निकालते हैं कि वे सब उक्त निर्णयों के उस सत्य और प्रचलित अर्थ में जो उन के अक्षरों ही से निकलता है सम्मत हैं और जिन सूक्ष्म विषयों में आज कल मत भेद होता है उन में भी सब पक्षों के लोग अंग्लखण्ड की एक्लेसिया के निर्णयों को अपने अपने पक्ष के समझते हैं जिस से यह

सिद्ध होता है कि उन में से कोई इन ठहराये हुए निर्णयों से हटना नहीं चाहता ॥

५। इस कारण से जो जो सूक्ष्म और शोच्य मत भेद अब कई सैकड़ों बरसों से नाना समयों और स्थानों में खीष्ट की एक्लीसिया में रहे हैं उन के बिषय में हमारी यह इच्छा है कि अब यह सारी व्यर्थ पूछ पाछ दूर किई जावे और लोग इन बाद विवादों को छोड़ के केवल ईश्वर की प्रतिज्ञाओं को ऐसे मानें जैसे पवित्र शास्त्र में साधारण रीति से उन का वर्णन हुआ है और जैसे अंग्लखण्ड की एक्लीसिया के निर्णयों के जो शास्त्र के समान हैं साधारण अर्थ से प्रगट होता है। और अब कोई मनुष्य किसी निर्णय का अर्थ पुस्तक छपवाने अथवा उपदेश करने से न बिगाड़े परन्तु उस के स्पष्ट और पूर्ण अर्थ की अधीनता से माने। और न कोई अपने ही लगाये हुए अर्थ वा टीका को किसी निर्णय का अभिप्राय कहे परन्तु उस को उस के व्याकरणानुसारी अक्षरार्थ के अनुसार समझे ॥

६। यदि हमारी किसी यूनिवर्षिटि में का कोई नियुक्त पाठक अथवा किसी विद्यालय का अध्यक्ष वा अध्यापक अथवा दोनों में कोई और पुरुष किसी निर्णय का कोई नया अर्थ लगावे वा किसी यूनिवर्षिटि वा विद्यालय में उस के प्रतिकूल वा उस के अनुकूल प्रगट में वक्तृता पढ़े वा विचार करे वा बाद विवाद का प्रबन्ध करे अथवा यूनिवर्षिटियों में का कोई ईश्वर विद्या शिक्षक उस बात को छोड़ जो एक्लीसिया की सभा में हमारी राजानुमति से ठहर चुकी है और कोई बात चाहे प्रतिकूल होवे उपदेश में कहे वा पुस्तक में छपवावे तो ऐसा अपराधी हमारी अप्रसन्नता के योग्य ठहरेगा और एक्लीसिया हमारी आज्ञा से अथवा और किसी प्रकार से उस को दोषी ठहरावेगी। और हम इस में सावधान रहेंगे कि ऐसे पुरुष को योग्य दण्ड मिलेगा ॥

---

३६ धर्म्म सम्बन्धी निर्णय

१। पवित्र त्रय के विश्वास के विषय में ॥

एक ही जीवता और सत्य ईश्वर है जो सनातन निः शरीर निः क्षोभ है। उस की शक्ति बुद्धि और भलाई अनन्त हैं और वह क्या दृश्य क्या अदृश्य सब पदार्थों का कर्त्ता और रक्षक है और इस अद्वितीय ईश्वर में तीन पुरुष हैं जिन का तत्त्व और शक्ति और सनातनत्व एक ही है अर्थात् पिता पुत्र और पवित्रात्मा ॥

२। वचन अर्थात् ईश्वर के पुत्र के विषय में जो
वास्तविक मनुष्य बना।

पुत्र ने जो पिता का वचन और अनादिकाल से पिता से जनित और सत्य और वास्तविक ईश्वर और पिता के साथ एकतत्त्व है धन्य कुमारी के गर्भ में उसी के तत्त्व से मनुष्य की प्रकृति को लिया ऐसा कि दो समूची और पूरी प्रकृतियां अर्थात् ईश्वरत्त्व और मनुष्यत्त्व एक पुरुष में अवियोज्य रीति से मिलाये गये। इन से एक खीष्ट भया जो वास्तविक ईश्वर और वास्तविक मनुष्य है। उस ने वास्तविक दुःख भोगा क्रूस पर चढ़ाया गया मर गया और समाधि में रक्खा गया जिस्तें वह अपने पिता को हम से मिलावे और न केवल जन्मपाप के लिये पर मनुष्यों के सब कर्म्म पापों के लिये भी बलिदान होवे ॥

३। खीष्ट के पाताल में उतर जाने के विषय में।

जैसे खीष्ट हमारे लिये मरा और समाधि में रक्खा गया तैसे ही यह भी विश्वास करना चाहिये कि वह पाताल में उतर गया ॥

४। ख्रीष्ट के पुनरुत्थान के विषय में ॥

ख्रीष्ट सचमुच मृत्यु से जी उठा और अपनी देह को मांस अस्थि और उस सब समेत जो पूर्णमनुष्य की प्रकृति के लिये आवश्यक है फेर ले लिया। और इन समेत वह स्वर्ग पर चढ़ गया और वहां उस समय लों विराजमान रहेगा जब वह अन्त दिन को समस्त मनुष्यों का न्याय करने को फिर आवेगा ॥

५। पवित्रात्मा के विषय में ॥

पवित्रात्मा का जो पिता और पुत्र से निकलता है पिता और पुत्र के साथ एक ही तत्त्व पताप और महिमा है अर्थात् वह वास्तविक और सनातन ईश्वर है ॥

६। इस विषय में कि पवित्र शास्त्र त्राण के लिये पर्य्याप्त है।

जो कुछ त्राण के लिये आवश्यक है सो सब पवित्र शास्त्र में है ऐसा कि जो कुछ उस में लिखा नहीं है न उस से सिद्ध हो सकता है उस के विषय में किसी से यह कहना नहीं चाहिये कि उस को विश्वास की मूल बात समझके मानना अथवा त्राण के लिये आवश्यक जानना अवश्य है ॥

जब हम पवित्र शास्त्र का नाम लेते हैं तब हमारा तात्पर्य्य पुरानी और नई वाचा की उन कनोनी पुस्तकों से है जिन की प्रामाणिकता के विषय एक्लीसिया में कभी कुछ सन्देह नहीं हुआ ॥

धर्म्म सम्बन्धी निर्णय

कनौनी पुस्तकों के नामों और संख्या के विषय में

उत्पत्ति ।
निर्गम ।
लैवीय ।
गिनतियां ।
द्वितीय व्यवस्था ।
योशू ।
न्यायी ।
रूत् ।
शमूएल् की पहिली पुस्तक ।
शमूएल् की दुसरी पुस्तक ।
राजाओं की पहिली पुस्तक ।
राजाओं की दुसरी पुस्तक ।
परिशिष्ट बातों की पहिली पुस्तक ।
परिशिष्ट बातों की दूसरी पुस्तक ।
एज्रा की पहिली पुस्तक ।
एज्रा की दुसरी पुस्तक ।
एस्तेर् की पुस्तक ।
इय्योब् की पुस्तक ।
स्तोत्रसंहिता ।
कहावतें ।
एक्लेसियस्ता अर्थात् उपदेशक ।
कान्तिका अर्थात् शलोमो के गीत ।
प्रवक्ताओं की चार बड़ी पुस्तकें ।
प्रवक्ताओं की बारह छोटी पुस्तकें ।

और दूसरी पुस्तकों को जैसे ह्येरोनुम कहता है एक्लेसिया चाल चलन के उदाहरण प्राप्त करने और मनुष्यों में सदाचरण उत्पन्न करने के लिये पढ़ा करती है। परन्तु वह उन को किसी सिद्धान्त के सिद्ध करने के लिये काम में नहीं ले आती यथा

एज्रा की तिसरी पुस्तक ।
एज्रा की चौथी पुस्तक ।
तोबीत् की पुस्तक ।
यहूदीत् की पुस्तक ।
एस्तेर् की पुस्तक का परिशिष्ट भाग ।
ज्ञान की पुस्तक ।
सीरा का पुत्र येशू ।
बारूक् प्रवक्ता ।
तीन तरुणों का गीत ।
शुशन्ना की कथा ।
बेल् और अजगर के विषय में ।
मनश्शे की प्रार्थना ।
मक्काबियों की पहिली पुस्तक ।
मक्काबियों की दूसरी पुस्तक ।

धर्म्म सम्बन्धी निर्णय

नई बाचा की सब पुस्तकों को जैसे सब मानते हैं तैसे ही हम भी मानते और कनोनी समझते हैं ॥

७। पुरानी वाचा के विषय में ॥

पुरानी वाचा नई वाचा के विरुद्ध नहीं क्योंकि दोनों में अनन्त जीवन मनुष्य जाति को खीष्ट ही के द्वारा जो ईश्वर और मनुष्य के बीच निष्केवल मध्यस्थ और आप ईश्वर और मनुष्य भी है दिया जाता है। इस लिये उन की न सुननी चाहिये जो कल्पना करते हैं कि प्राचीनकाल के पुरखा अनित्य प्रतिज्ञात वस्तुन की अपेक्षा करते थे। यद्यपि जो व्यवस्था ईश्वर ने मोशे को दिई उस में के क्रिया कर्म्म में खीष्टियान लोग बंधे नहीं और न उस में के राज्य सम्बन्धी विधिन को किसी देश में मानना अवश्य है तथापि जो आज्ञाएं उस धर्म्म के विषय में हैं मानुषी स्वभाव से सम्बन्ध रखता है उन से कोई खीष्टियान कोई क्यों न हो निर्बन्ध नहीं ॥

८। तीनों विश्वास वचनों के विषय में।

तीनों विश्वास वचन अर्थात् नीकया का अथनस्य का और जो प्रायः प्रेरितों का विश्वास वचन कहावता है सर्व्वथा मानने और विश्वास करने के योग्य हैं क्योंकि वे शास्त्र के अति दृढ़ प्रमाणों से सिद्ध हो सकते हैं॥

९। जन्म पाप के विषय में ॥

जन्मपाप का अर्थ आदाम् का अनुसरण नहीं है जैसे पेलग्य के मतावलम्बी व्यर्थ बकते हैं परन्तु प्रत्येक मनुष्य की जो आदाम् के वंश में स्वभाविक नियम के अनुसार उत्पन्न होता है प्रकृति का ऐसा दोष और विकार है कि मनुष्य आद्यधार्म्मिकता से बहुत ही दूर जा पड़ा है और अपने ही स्वभाव से बुराई की ओर प्रवण है ऐसा कि

शरीर आत्मा के विरुद्ध कामना करता है और इस लिये वह प्रत्येक जन में जो जगत में उत्पन्न होता है ईश्वर के कोप और दण्ड के योग्य है और यह विकार पुनर्जीनितों में भी बना रहता है ऐसा कि शरीर का अभिलाष जिस को यवनभाषा में फ्रोनेमत् साक्रोस् कहते हैं (इस का अर्थ कितने तो शरीर की बुद्धि कितने उस की इन्द्रिय-वशता कितने उस का अभिलाष और कितने उस का अनुराग बताते हैं) ईश्वर की व्यवस्था के अधीन नहीं हैं। और यद्यपि उन के लिये जो विश्वास करते और बप्तिस्म लेते हैं दण्ड की आज्ञा नहीं तथापि प्रेरित स्पष्ट कहता है कि कुकामना में स्वतः पाप का स्वभाव रहता है॥

१०। स्वतन्त्रता के विषय में ॥

आदाम् के भ्रंश के उपरान्त मनुष्य की ऐसी दशा भई है कि वह अपनी स्वाभाविक शक्ति और सुकर्म्मों से अपने को विश्वास करने और ईश्वर को पुकारने के लिये न फेर सकता न सिद्ध कर सकता है। इस कारण से यदि ईश्वर का वह अनुग्रह जो खीष्ट के द्वारा मिलता है हमारी अगुवाई इस लिये न करे कि हम सुइच्छा करें और सुइच्छा के होने पर हमारे संग काम न करे तो हम ऐसे सुकर्म्म करने का जो ईश्वर को भावते और ग्राह्य होते सामर्थ्य नहीं रखते ॥

११। मनुष्य के धर्म्मीकरण के विषय में ॥

हम जो ईश्वर के साम्हने धर्म्मी ठहरते हैं सो केवल हमारे प्रभु और त्राता येशू खीष्ट के पुण्य के कारण से विश्वास के द्वारा होता है और हमारे कर्म्मों और पुण्य के कारण से नहीं होता। इस लिये यह सिद्धान्त कि हम केवल विश्वास ही से धर्म्मी ठहरते हैं अति गुण-दायक और प्रबोध से परिपूर्ण है जैसे उस होमिलिया में जो धर्म्मी-करण के विषय में लिखी है अधिक विस्तार से वर्णन किया गया है॥

धर्म्म सम्बन्धी निर्णय

१२। सुकर्म्मों के विषय में ॥

जो सुकर्म्म विश्वास के फल हैं और धर्म्मी ठहरने के उपरान्त होते हैं सो यद्यपि हमारे पापों के प्रायश्चित नहीं हो सकते और न ईश्वर के न्याय की तीक्ष्णता के साम्हने ठहर सकते तथापि वे खीष्ट में ईश्वर को भावते और ग्राह्य होते हैं और सच्चे और जीवते विश्वास से अवश्य ही निकलते हैं ऐसा कि जिस भांति से वृक्ष अपने फल से पहिचाना जा सकता है उसी भांति उन से जीवता विश्वास स्पष्टता से जाना जा सकता है ॥

१३। धर्म्मीकरण से पहिले के कर्म्मों के विषय में ॥

जो कर्म्म खीष्ट के अनुग्रह और उस के आत्मा के विश्वास के प्राप्त करने से पहिले होते हैं सो ईश्वर को नहीं भावते क्योंकि वे येशू खीष्ट पर के विश्वास से नहीं निकलते और न वे योग्यता के कारण से अनुग्रह को कमाते हैं जैसे स्खोलास्तिक लोग कहते हैं वरन जब कि वे इस रीति से नहीं किये गये जैसे ईश्वर ने चाहा और आज्ञा भी दिई है कि वे किये जावें इस लिये हमें सन्देह नहीं कि उन में पाप का स्वभाव रहता है ॥

१४। विहिताधिक कर्म्मों के विषय में ॥

यह सिखाना कि विहिताधिक कर्म्म जिन को कहते हैं अर्थात् जिन के विषय में ईश्वर ने आज्ञाएं दिई हैं उन से अधिक कर्म्म किये जा सकते हैं अभिमान और अभक्ति रहित नहीं हो सकता। क्योंकि ऐसे कर्म्मों के माननेहारे इस से अपना यह मत दिखाते हैं कि वे केवल उतना ही नहीं जो उन का धर्म्म है ईश्वर के लिये करते हैं पर उस के निमित्त अपने धर्म्म से अधिक भी करते हैं। परन्तु खीष्ट

स्पष्ट कहता है कि जब तुम सब कुछ जिस की आज्ञा तुम्हें दिई गई कर चुको तब कहो हम निकम्मे दास हैं ॥

१५। इस विषय में कि केवल खीष्ट ही निष्पाप है।

खीष्ट जिस की प्रकृति सचमुच हमारी सी थी पाप को छोड़के सब बातों में हमारे समान बन गया पर पाप से तो वह शरीर में और आत्मा में भी सर्वथा रहित था। वह इस लिये आया कि निष्कलंक मेम्ना होके अपने को एक ही बार बलिदान करने से जगत के पाप उठा ले जावे और उस में पाप था ही नहीं जैसे पवित्र योहानान् कहता है। पर उस को छोड़ हम सब जो अवशिष्ट हैं यद्यपि हम ने बप्तिस्म पाया और खीष्ट में पुनर्जात भये तौ भी बहुत सी बातों में अपराध करते हैं और यदि हम कहें कि हम में पाप नहीं तो हम अपने को धोखा देते हैं और सत्य हम में नहीं है ॥

१६। बप्तिस्म के उपरान्त किये हुए पाप के विषय में ॥

जितने मृत्युकारक पाप बप्तिस्म के उपरान्त इच्छा पूर्वक किये जाते हैं सो सब तो पवित्रात्मा के विरुद्ध और अक्षम्य पाप नहीं हैं। इस कारण से जो लोग बप्तिस्म पाके पाप में फंस जाते हैं उन के पश्चात्ताप करने को अशक्य न कहना चाहिये। पवित्रात्मा के प्राप्त करने के उपरान्त भी हो सकता है कि हम दिये हुए अनुग्रह से हटके पाप में फंसें और फिर ईश्वर के अनुग्रह से उठके अपना चाल चलन सुधारें। और इस कारण से जो कहते हैं हम जन्मभर और पाप नहीं कर सकते अथवा सच्चा पश्चात्ताप करनेहारों के पाप-मोचन को अनहोना कहते हैं सो दोषी हैं ॥

१७। पूर्व्वनियोजन और वृति के विषय में ॥

जीवन के लिये पूर्व्वनियोजन का अर्थ ईश्वर का वह अनादि

संकल्प है जिस से जगत की सृष्टि से पहिले उस ने अपने उस अभि-प्राय से जो हम से गुप्त है यह दृढ़ता से ठान लिया कि जिन को मैं ने मनुष्य जाति में से खीष्ट में चुना है उन को मैं स्राप और नाश से बचाके और आदर के लिये रचे हुए पाच बनाके खीष्ट के द्वारा अनन्त चाण को पहुंचाऊंगा। इस लिये जिन को ईश्वर की ओर से ऐसा उत्कृष्ट दान मिला है सो उस के आत्मा से जो ठीक समय पर काम करता है ईश्वर के संकल्प के अनुसार बुलाये जाते हैं फिर वे अनुग्रह के द्वारा उस बुलाहट को मानते और सेंत से धर्म्मीकृत होते और ईश्वर के लेपालक पुच बनते और उस के एकलौते पुच येशू खीष्ट के स्वरूप के समान किये जाते और भक्ति और सुकर्म्मों से चलते और अन्त को ईश्वर की दया से अनन्त आनन्द मंगल को पहुंचते हैं॥

जो सचमुच भक्त हैं और जिन के मन में खीष्ट के आत्मा की उस शक्ति का अनुभव होता है जिस से वह शरीर के कर्म्मों और उन के पृथिवीस्थ अंगों को मृत करता और उन के मन को ऊंची और स्वर्गीय बातों की ओर खींचता है उन को तो पूर्व्वनियोजन को और हमारे खीष्ट में चुने जाने को भक्ति के साथ सोचने से मधुर मनोहर और अकथ्य शान्ति होती है क्योंकि उस के कारण से एक तो उस अनन्त चाण का विश्वास जो खीष्ट के द्वारा प्राप्त होनेहारा है बहुत ही स्थिर और दृढ़ होता है और दूसरे ईश्वर का प्रेम उन के मन में अत्यन्त सुलगाया जाता है। परन्तु जब व्यर्थ कुतूहली और शारीरिक लोग जिन में खीष्ट का आत्मा नहीं ईश्वर के पूर्व्वनियोजन को निरन्तर अपनी दृष्टि के साम्हने रखते हैं तब उन को अधःपात का बड़ा ही जोखिम रहता है कि उस के द्वारा दुष्टात्मा उन को निराशता में डालता अथवा उन्हें निश्चिन्त करके अपविच चाल चलन में डाल देता है जो निराशता के तुल्य नाशक है। फिर ईश्वर की प्रतिज्ञाएं जिस भांति से पविच शास्त्र में साधारण रीति से वर्णन किई गई हैं

उसी भांति से उन्हें समझना चाहिये और अपने कर्म्मों में ईश्वर की उसी इच्छा का अनुसरण करना चाहिये जो ईश्वर के वचन में स्पष्ट प्रगट किई गई है ॥

१८। इस विषय में कि अनन्त त्राण केवल ख्रीष्ट ही के नाम से प्राप्त होता है ॥

जो ढिठाई करके कहते हैं कि जो जन जिस धर्म्म वा पन्थ को माने उसी से वह त्राण पावेगा यदि उस धर्म्म के और सहज ज्ञान के अनुसार आचरण करे उन्हें भी स्रापित मानना चाहिये । क्योंकि पवित्र शास्त्र में केवल येशू ख्रीष्ट ही का नाम मनुष्यों के त्राण का द्वार प्रगट किया गया है ॥

१६। एक्लीसिया के विषय में ॥

ख्रीष्ट की दृश्य एक्लीसिया विश्वासियों की एक ऐसी मण्डली है जिस में ईश्वर का वचन बिना मिलावट प्रचारा जाता और सक्रामेन्तों का उन सब बातों में जो अति आवश्यक हैं ख्रीष्ट के विधान के अनुसार यथार्थ रीति से अनुष्ठान होता है ॥

जिस प्रकार से यरूशलेम् अलेक्सन्द्रिया और अन्त्योखिया की एक्लीसियाएं भ्रान्त भई हैं उसी प्रकार से रोमा की एक्लीसिया भी न केवल कर्त्तव्य विषयों में परन्तु मन्तव्य विषयों में भी भ्रान्त भई है ॥

२०। एक्लीसिया के अधिकार के विषय में ॥

एक्लीसिया को क्रिया कर्म्म के ठहराने में और विश्वास विषयक विवादों में अधिकार है तथापि एक्लीसिया ईश्वर के लिखे हुए वचन के विरुद्ध कोई बात ठहरा नहीं सकती और न वह शास्त्र के एक स्थल का अर्थ दूसरे स्थल के विरुद्ध लगा सकती है । इस कारण से यद्यपि एक्लीसिया पवित्र शास्त्र की साक्षी और रक्षिका है तौ भी उस

को न उस के विरुद्ध कुछ ठहराना न उस से अधिक किसी बात की आज्ञा त्राण के लिये आवश्यक कहके देनी उचित है ॥

२१। साधारण सभाओं के विषय में ।

साधारण सभाएं अधिपतियों की आज्ञा और इच्छा के बिना नहीं हो सकतीं । और जब वे होती हैं तब वे भ्रम में पड़ सकती हैं और कभी कभी पड़ी भी हैं वरन ईश्वरविषयक बातों में भी क्योंकि वे ऐसे मनुष्यों से बनती हैं जिन में सब के सब ईश्वर के आत्मा और वचन के वश में नहीं रहते । इस कारण से जो बातें उन में त्राण के लिये आवश्यक कहके ठहराई जाती हैं सो यदि इस का प्रमाण भी न होवे कि वे पवित्र शास्त्र में से निकाले गये हैं तो उन को न सामर्थ्य है न अधिकार ॥

२२। पुर्गातोर्य्य के विषय में ॥

पुर्गातोर्य्य और क्षमाओं के विषय में प्रतिमाओं और शेष भागों की पूजा और आराधना के विषय में और पवित्रों के पुकारने के विषय में रोमियों का जो मत है सो एक व्यर्थ बात है जो निरर्थ कल्पित किई गई और शास्त्र के किसी प्रमाण से सिद्ध नहीं वरन ईश्वर के वचन के विरुद्ध भी है ॥

२३। मण्डली में सेवकाई करने के विषय में ॥

उचित नहीं कि कोई जन मण्डली में प्रचार अथवा सक्रामेन्तों का अनुष्ठान करने का अधिकार उस से पहिले अपने ऊपर लेवे कि वह उन्हीं कामों के करने के लिये यथार्थ रीति से बुलाया और भेजा जावे । और जो इस काम के लिये उन मनुष्यों से चुने और बुलाये

गये होवें जिन्हें सेवकों को बुलाने और उन्हें प्रभु की दाखबारी में भेजने का अधिकार एक्लीसिया में सर्वसम्मत रीति से दिया गया होवे उन्हीं को यथार्थ रीति से बुलाये और भेजे हुए समझना चाहिये ॥

२४। मण्डली में ऐसी भाषा में बोलने के विषय में
जो लोग समझते हैं।

स्पष्ट है कि जो भाषा लोग नहीं समझते उस में एक्लीसिया में साधारण प्रार्थना करनी अथवा सक्रामेन्तों का अनुष्ठान करना ईश्वर के वचन और प्रथमकाल की एक्लीसिया की रीति के विरुद्ध है ॥

२५। सक्रामेन्तों के विषय में।

जो सक्रामेन्त ख्रीष्ट ने ठहराये हैं सो न केवल ख्रीष्टियानों के अंगीकार के लक्षण हैं परन्तु वे इस से अधिक अनुग्रह के और ईश्वर की हमारी ओर की सुइच्छा के निश्चयदायक साक्षी और ऐसे कार्य्यकारी चिन्ह भी हैं कि उन के द्वारा ईश्वर हम में अदृश्य रीति से कार्य्य करता और हमारे विश्वास को जो उस पर है न केवल जगाता पर सामर्थ्य देता और दृढ़ भी करता है ॥

दो सक्रामेन्त हैं जो हमारे प्रभु ख्रीष्ट ने सुसमाचार में ठहराये हैं अर्थात् बप्तिस्म और प्रभु की व्यारी। वे पांच जो बहुधा सक्रामेन्त कहावते हैं अर्थात् दृढ़ीकरण पश्चात्ताप स्थापन विवाह और अन्त्याभिषेक इन्हें सुसमाचार के सक्रामेन्त न समझना चाहिये क्योंकि उन में से कितने तो प्रेरितों का अनुसरण भ्रष्ट रीति से करने से निकले हैं और कितने ऐसे अवस्था विशेष हैं जिन की अनुमति तो शास्त्र में है परन्तु बप्तिस्म और प्रभु की व्यारी के समान सक्रामेन्त का स्वभाव उन में नहीं है क्योंकि उन का कोई ईश्वर विहित चिन्ह अथवा क्रिया नहीं है ॥

सक्रामेन्त ख्रीष्ट से इस लिये नहीं ठहराये गये कि हम उन्हें ताका करें अथवा लिये फिरें परन्तु इस लिये कि हम उन्हें यथोचित रीति से काम में ले आवें। और जो उन्हें योग्य रीति से लेते हैं केवल उन्हीं में उन का गुणदायक फल होता है परन्तु जो उन्हें अयोग्य रीति से लेते हैं सो पवित्र पैाल के कहने के अनुसार अपने लिये दण्ड प्राप्त करते हैं॥

२६। इस विषय में कि सेवकों की अयोग्यता
से सक्रामेन्तों का गुण नहीं रुकता।

दृश्य एक्क्लेसिया में भलों के साथ बुरे भी मिले जुले रहते तो हैं और कभी कभी वचन और सक्रामेन्तों की सेवा में अधिकार भी रखते हैं। तौभी वे इसे अपने नाम से नहीं पर ख्रीष्ट ही के नाम से करते और उसी की आज्ञा और उस के दिये हुए अधिकार से सेवा करते हैं इस लिये हम ईश्वर के वचन के सुनने में और सक्रामेन्तों के लेने में भी उन की सेवकाई को अपने काम में ले आ सकते हैं। और जो उन के दिये हुए सक्रामेन्तों को विश्वास और यथोचित रीति से लेते हैं वे न उन सेवकों की दुष्टता के कारण से ख्रीष्ट के विधान के फल से रहित रहते हैं न ईश्वर के दानों से जो अनुग्रह मिलता है सो कुछ न्यून होता है। क्योंकि ख्रीष्ट के नियम और प्रतिज्ञा के कारण से वे यद्यपि बुरों के द्वारा दिये जाते हैं तथापि गुणदायक होते हैं॥

तिस पर भी एक्क्लेसिया के शासन का एक भाग यह है कि बुरे सेवकों के विषय में अनुसन्धान किया जावे और जो उन के अपराधों को जानते हैं सो उन पर दोष लगावें और निदान यदि दोषी ठहरें तो यथार्थ न्याय से पदच्युत किये जावें॥

धर्म्म सम्बन्धी निर्णय

८७। बप्तिस्म के विषय में।

बप्तिस्म न केवल अंगीकार का एक लक्षण और ऐसा विभेदक चिन्ह है जिस से ख्रीष्टियान लोग उन से जो ख्रीष्टियान नहीं है भिन्न जाने जाते हैं परन्तु वह पुनर्जन्म का एक ऐसा चिन्ह भी है जिस के द्वारा मानो किसी उपकरण के द्वारा जो बप्तिस्म को यथोचित रीति से लेते हैं सो एक्लेसिया में कलम लगाये जाते हैं और पापमोचन के विषय में और पवित्रात्मा के द्वारा ईश्वर के लेपालक पुत्र होने के विषय में जो प्रतिज्ञाएं दिई गई हैं उन पर प्रगट में हस्ताक्षर और छाप किई जाती है और विश्वासदृढ़ होता और ईश्वर की प्रार्थना के प्रताप से अनुग्रह बढ़ जाता है। छोटे बालकों का बप्तिस्म एक्लेसिया में सर्व्वथा प्रचलित रखना चाहिये क्योंकि ख्रीष्ट के विधान के ठीक अनुसार वही है॥

८८। प्रभु की व्यारी के विषय में

प्रभु की व्यारी न केवल उस प्रेम का चिन्ह है जो ख्रीष्टियानों को एक दूसरे से रखना चाहिये पर इस से अधिक वह हमारे उस उद्धार का एक सक्रामेन्त भी है जो ख्रीष्ट की मृत्यु से हुआ है। और इस लिये जो उसे यथोचित और योग्य रीति और विश्वास से लेते हैं उन के लिये जिस रोटी को हम तोड़ते हैं सो ख्रीष्ट की देह की सहभागिता है और उसी प्रकार से धन्यवाद का कटोरा ख्रीष्ट के लहू की सहभागिता है॥

प्रभु की व्यारी में रोटी और दाखमधु का द्रव्यान्तरी भाव पवित्र शास्त्र से सिद्ध नहीं हो सकता वरन वह शास्त्र के अक्षर के स्पष्ट विरुद्ध है और सक्रामेन्त के स्वरूप को नष्ट करता है और बहुत से निर्मूल मतों का कारण हुआ है॥

खीष्ट की देह व्यारी में केवल स्वर्गीय और आत्मिक रीति ही से दिई लिई और खाई जाती है। और जिस द्वार से खीष्ट की देह व्यारी में लिई और खाई जाती है सो विश्वास ही है॥

खीष्ट के विधान का तात्पर्य्य यह नहीं था कि प्रभु की व्यारी का सक्रामेन्त रक्ख छोड़ा फिराया उठाया अथवा पूजा जावे॥

२९। इस विषय में कि दुष्ट लोग प्रभु की व्यारी के लेने में खीष्ट की देह नहीं खाते

दुष्ट लोग और जितने जीवते विश्वास से रहित हैं सो यद्यपि पवित्र आगुस्तीन के कहने के अनुसार खीष्ट की देह और लहू के सक्रामेन्त को शारीरिक और दृश्य रीति से अपने दांतों से चबाते हैं तथापि कदापि खीष्ट के भागी नहीं होते वरन इस के उलटा वे ऐसे बड़े पदार्थ के सक्रामेन्त अर्थात् चिन्ह को अपने दण्ड ही के लिये खाते और पीते हैं

३०। दोनों पदार्थों के विषय में

प्रभु के कटोरे को मण्डली के लोगों से रोक रखना नहीं चाहिये क्योंकि प्रभु के सक्रामेन्त के दोनों अंश खीष्ट के विधान और आज्ञा के अनुसार से सब खीष्टियानों को तुल्य रीति से देना चाहिये॥

३१। खीष्ट के उस एक ही चढ़ावे के विषय में जो क्रूस पर समाप्त किया गया।

खीष्ट का जो चढ़ावा एक ही बार किया गया सो सम्पूर्ण जगत के समस्त जन्मपापों और कर्म्मपापों के लिये पूर्ण उद्धारमूल्य और पूर्ण प्रायश्चित्त है और उस एक ही प्रायश्चित्त को छोड़ पाप का कोई

प्रायश्चित्त नहीं है। इस कारण से मिस्साओं के जिन बलिदानों के विषय में साधारण लोग कहते थे कि याजक खीष्ट को जीवतों और मृतकों को दण्ड वा पाप से छुड़ाने के लिये चढ़ाता है सो ईश्वर निन्दा और नाशक प्रबंचना की कल्पित बातें थीं॥

३२। प्रीष्टों के विवाह के विषय में।

बिशपों प्रीष्टों और डीकनों को ईश्वर की व्यवस्था में यह आज्ञा नहीं मिली कि अविबाहित रहने की प्रतिज्ञा करें अथवा अविबाहित रहें। इस लिये और सब खीष्टयानों के तुल्य वे भी जब उन के विचार में भक्ति के लिये उपयोगी है तो अपनी समझ के अनुसार विवाह कर सकते हैं॥

३३। इस विषय में कि बहिष्कृत लोगों से परे रहना चाहिये।

जो जन एक्लीसिया की उस बहिष्कारान्त से जो मण्डली में किई जावे एक्लीसिया की संगति से छिन्न और बहिष्कृत किया जाता है सो जब लों पश्चात्ताप के द्वारा एक्लीसिया से मिलाया न जावे और अधिकारयुक्त न्यायी के द्वारा उस में भागी न किया जावे तब लों विश्वासियों के समस्त समूह को चाहिये कि उसे इतरधर्म्मी और करग्राहक समझें॥

३४। एक्लीसिया के सम्प्रदायों के विषय में

यह कुछ आवश्यक नहीं कि सब स्थानों के सम्प्रदाय और क्रिया कर्म्म एक ही वा पूरी रीति से समान होवें क्योंकि वे सब कालों में भिन्न भिन्न रहे हैं और देशों कालों और रीति व्यवहारों के अनुसार

बदले जा सकते हैं केवल ईश्वर के वचन के विरुद्ध कोई बात ठहराई न जावे। एक्लीसिया के जो सम्प्रदाय और क्रियाकर्म्म ईश्वर के वचन के विरुद्ध नहीं और सर्व्व सम्मत अधिकारयुक्त लोगों से ठहराये और ग्राह्य किये गये हैं उन को जो कोई अपनी ही मति से जान बूझके और इच्छापूर्वक तोड़े उस को प्रगट में डांटना चाहिये जिस्तें और लोग वैसाही करने से डरें क्योंकि वह एक्लीसिया के सर्व्व सम्मत प्रबन्ध के विरुद्ध अपराध करता और अध्यक्ष के अधिकार में विघ्न डालता और दुर्ब्बल भाइयों के अन्तर्विवेक की हानि करता है॥

प्रत्येक देश के विशेष एक्लीसिया को अधिकार है कि एक्लीसिया के जो क्रियाकर्म्म केवल मनुष्य ही के अधिकार से ठहराये गये हैं उन को ठहरावे वा पलटे वा उठा देवे केवल यह कि सब बातें लाभ ही के लिये होवें॥

३५। होमीलियों के विषय में।

होमीलियों की दूसरी पुस्तक में जिन के अलग अलग नाम हम ने इस निर्णय के नीचे लिखे हैं ऐसी भक्तियुक्त गुणदायक और इन दिनों के लिये उपयोगी शिक्षा है जैसी होमीलियों की उस पहिली पुस्तक में भी है जो छठवें एडवर्ड के समय में प्रचलित किई गई और इस लिये हमारी मति यह है कि सेवक उन को एक्लीसियाओं में मन लगा के और स्पष्टता से पढ़ा करें जिस्तें मण्डली के लोग उन्हें समझ सकें॥

होमीलियों के नाम।

१ एक्लीसिया के यथोचित रीति से काम में ले आने के विषय में।
२ मूर्त्तिपूजा में जो जोखिम है उस के विषय में।
३ एक्लीसियाओं के जीर्णोद्धार करने और स्वच्छ रखने के विषय में।
४ सुकर्म्मों के विषय में और उन में से पहिले उपवास के विषय में।

धर्म्म सम्बन्धी निर्णय

५ खाऊपन और मतवालेपन के दोष के विषय में।
६ ओढ़ने पहिनने में अतिरिक्तता के दोष के विषय में।
७ प्रार्थना के विषय में।
८ प्रार्थना के देशकाल के विषय में।
९ इस विषय में कि साधारण प्रार्थना और सक्रामेन्तों का अनुष्ठान विदित भाषा में करना चाहिये।
१० ईश्वर के वचन के आदर सन्मान करने के विषय में।
११ दान के विषय में।
१२ खीष्ट के जन्म के विषय में।
१३ खीष्ट के दुःख भोग के विषय में।
१४ खीष्ट के पुनरुत्थान के विषय में
१५ खीष्ट के देह और लोहू के सक्रामेन्त के योग्य रीति से लेने के विषय में।
१६ पवित्रात्मा के दानों के विषय में।
१७ विनती के दिनों के लिये।
१८ गार्हस्थ्य के विषय में।
१९ पश्चात्ताप के विषय में।
२० आलस्य के दोष के विषय में।
२१ राजद्रोह के दोष के विषय में

३६। बिशपों और सेवकों के संस्कार के विषय में

आर्चबिशपों और बिशपों के संस्कार और प्रीष्टों और डीकनों के स्थापन की जो पुस्तक बहुत दिन नहीं भये कि छठवें एड्वर्ड के समय में प्रचलित किई गई और उसी समय में पार्लमेण्ट की आज्ञा से दृढ़ीकृत किई गई उस में उस संस्कार और स्थापन के लिये जो कुछ आवश्यक है सो पाया जाता है और न उस में ऐसी कोई बात

है जो स्वतः निर्मूल मत वा अभक्ति की होवे। और इस हेतु पूर्वोक्त राजा एड्वर्ड के दूसरे बरस से लेके जितने उस पुस्तक में के क्रिया कर्म्मों के अनुसार संस्कार वा स्थापित्त किये गये हैं अथवा इस के उपरान्त उन्हीं क्रियाकर्म्मों के अनुसार संस्कार वा स्थापित किये जावेंगे उन सब को हम यथोचित रीति से और नियम और व्यवस्था की रीति से संस्कार और स्थापित ठहराते हैं॥

३७। देश के अध्यक्षों के विषय में।

अंग्लखण्ड के इस राज्य में और जहां कहीं महारानी का राज्य है तहां श्रीमती महारानी को मुख्य अधिकार है और इस राज्य के सब पदधारियों की चाहे वे एक्लीसिया से चाहे देश से सम्बन्ध रखते हों सब कार्य्यों में अध्यक्षता उसी को है और किसी पराये अध्यक्ष को न है न होनी चाहिये॥

हम जो कहते हैं कि श्रीमती महारानी को मुख्य अधिकार है इस से हम ने सुना है कि कितने अपवादी अप्रसन्न होते हैं परन्तु हम अपने अधिपतियों को ईश्वर के वचन वा सक्रामेन्तों सम्बन्धी परिचर्य्या करने का अधिकार नहीं देते और यह बात उन आज्ञाओं से जो थोड़े दिन भये कि हमारी महारानी एलीसबेत ने प्रचलित किईं अति स्पष्ट है परन्तु हम केवल यह अधिकार देते हैं जिसे हम पवित्र शास्त्र में देखते हैं कि ईश्वर ने आप सर्वदा भक्तिमान अधिपतियों को दिया कि जितने पदधारी ईश्वर ने उन के हाथ में सौंप दिये चाहे वे एक्लीसिया से चाहे देश से सम्बन्ध रखते हों उन सब पर वे राज्य करें और हठीलों और कुकर्म्मियों को राजखड्ग से रोक रक्खें॥

हम अंग्लखण्ड के राज्य में रोमा के बिशप को कुछ अधिकार नहीं॥

धर्म्म सम्बन्धी निर्णय

राज्य की ऐसी व्यवस्थाएं हो सकती हैं जिन से ख्रीष्ट्रियानों को घोर पापों और बड़े अपराधों के कारण से मृत्युदण्ड होवे ॥

ख्रीष्ट्रियान लोग अध्यक्ष की आज्ञा से हथियार बांध के युद्ध में जा सकते हैं ॥

३८। इस विषय में कि ख्रीष्ट्रियानों की सम्पत्ति सर्व्व समान्य नहीं

ख्रीष्ट्रियानों का धन सम्पत्ति जो है सो स्वाम्य और धारण में सर्व्वसामान्य नहीं जैसे कितने अनाबप्तिस्ते व्यर्थ बकते हैं। तिस पर भी प्रत्येक जन को चाहिये कि जो कुछ उस के पास है उस में से अपनी शक्ति के अनुसार दरिद्रों को उदारता के साथ दान दिया करे ॥

३९। ख्रीष्ट्रियान के सपथ के विषय में।

एक ओर तो हम मानते हैं कि हमारे प्रभु येशू ख्रीष्ट और उस के प्रेरित याकोब् ने ख्रीष्ट्रियानों को व्यर्थ और बिन सोचे शपथ करना बरजा है पर दूसरी ओर यह भी हम समझते हैं कि अध्यक्ष की आज्ञा से विश्वास और प्रेम के कार्य्य में शपथ करना निषिद्ध नहीं है पर केवल वह प्रवक्ता की शिक्षा के अनुसार न्याय विचार और सत्य से किया जावे ॥

नाते का चक्र

जिस के अनुसार जितने आपस में सम्बन्ध रखते हैं उन एक दूसरे से विवाह करना शास्त्र और हमारे कानानों में वर्ज्जित है ॥

पुरुष अपनी इन नातेवालियों से विवाह नहीं कर सकता ॥	स्त्री अपने इन नातेवालों से विवाह नहीं कर सकती ॥
दादी वा नानी ॥	दादा वा नाना ॥
सौतेली दादी वा नानी ॥	सौतेला दादा वा नाना ॥
ददिया वा ननिया सास ॥	ददिया वा ननिया ससुर ॥
फूफी ॥	चाचा वा काका ॥
मौसी ॥	मामा ॥
चाची वा काकी ॥	फूफा ॥
मामी ॥	मौसा ॥
फुफिया सास ॥	चचेरा वा ककेरा ससुर ॥
ममिया सास ॥	मौसिया ससुर ॥
माता ॥	पिता ॥
सौतेली मा ॥	सौतेला बाप ॥
सास ॥	ससुर ॥
पुत्री ॥	पुत्र ॥
सौतेली बेटी ॥	सौतेला बेटा ॥
पतोह ॥	जमाई ॥
बहिन ॥	भाई ॥
साली ॥	जेठ वा देवर ॥
भौजाई वा भयहू ॥	बहिनोई ॥

नाते का चक्र

पोती ॥	पोता ॥
नतिनी ॥	नाती ॥
पोत बहु ॥	पोत जमाई ॥
नात बहु ॥	नात जमाई ॥
सौतेली पोती ॥	सौतेला पोता ॥
सौतेली नतिनी ॥	सौतेला नाती ॥
भतीजी ॥	भतीजा ॥
भांजी ॥	भांजा ॥
भतीज बहू ॥	भतीज जमाई ॥
भांज बहू ॥	भांज भाई ॥
साले की बेटी ॥	जेठ वा देवर का बेटा ॥
साली की बेटी ॥	ननद का बेटा ॥

PRINTED BY WILLIAM CLOWES AND SONS, LIMITED, LONDON AND BECCLES.